॥ विज्ञापनम् ॥



इस अनादि अनंत संसार मे अनादि काल से वारवार जन्म मरण करते करते जीव थावर योनि मे रहा, किसी एक अशुभ कर्मकी लघुता से जैसे पहाडी नदी मे पत्थर गुडते गडते आपस चिकना और गोल हो जाता है, तैसे जीव भी जन्म मरण करते करते पुण्यप्रकृतिरूप यथाप्रवृत्ति नाम करण से थावरपणे को छोड त्रसपने बेइन्द्रियादिक में उपजता है, अथवा पंचेंद्रियतिर्यंचयोनि मे, फेर किसी एक कर्मकी लघुता से मनुष्ययोनि मे पैदा होता है, उसमे भी शक यवन म्लेच्छ देशको छोड आर्य मगधादि जो साढे पचीस देश हैं उनमे जन्म होना—आर्यदेश मे जन्म होने पर भी अन्त्यजादि जाति को छोड उत्तमजाति और कुल मे जन्म होना—उत्तम जाति और कुल पाने पर भी सब अंगोपांग सुंदर प्रमाण सहित होना, शरीर के सुंदर होने पर भी दीर्घायु होना—सब अशुभकर्म के कम होजाने और शुभकर्म के बढजाने से होते हैं, नहीं

थोड़े आयुवाला पुरुष इसलोकसंबंधी वा परलोकसंबंधी काम कुछ कर सक्ता है, इसी कारण भगवान् वीत रागने भी हे आयुष्मन् (हे बड़े आयुवाले) गौतम ऐसा कहके आयुको सब गुणों से बड़ा दिखलाया है, और भी अशुभकर्म के लघुता से और शुभकर्मके उदय से धर्मकी रुचि, धर्म का उपदेश करने वाला गुरु और उसके वचन का सुनना मिलजाने पर भी देव गुरु धर्म रूप तत्वपर सच्ची श्रद्धा होना बहुत दुर्लभ है, जिनोक्त तत्वपर सच्ची श्रद्धा होना यही सम्यक्त है, और सब तो मिथ्यादृष्टियों को भी होताहै, यह सब अशुभकर्म के कम होजाने और शुभकर्म बढने से जीव को मिलते हैं, इस हेतु अशुभकर्म का क्षय और शुभकर्म के बढने मे यत्न करना अवश्य है, अशुभकर्मका क्षय और शुभ को बढाने के लिये धर्म के भवा य और कोई भी यत्न नहीं है, इस हेत धर्म करो २ धर्म ही का सेवन करो, जैसा क घरके कार्य सिद्ध करने में अनेक तरह स परिश्रम करत हो कुछ काल धर्म के वास्ते भी परिश्रम करते रहो, कारण के धर्मी धर्म सेवन करने वाले पुरुष) की इन्द्र आदि देवता भी केवल प्रशंसा, अनुमोदना और भक्ति करके अप ना जन्म सफल करत हैं, इतनी ऋद्धि पाके भी उस को धर्म का सेवन करना दुर्लभ है और भी धर्मी को त्रिभुवन की लक्ष्मी, कल्पवृक्ष, चिंतामणि और कामधेनु आपसे दास हो मिलते हैं, तो पुत्र मित्र कलत्र घर सवारी और राज्य मिलजाना क्या बड़ी चीज है ? धर्म सेवन करने वाले का दो घड़ी का जीना भी सफल और कार्यकारक है, परन्तु धर्महीन (अर्थात् पेय, अपेय, कृत्य, अकृत्य, गम्य, अगम्य, भक्ष्य

और अनद्य इत्यादि विचार रहित) का कोटाकोटि वर्ष जीना भी निष्फल और अकिंचित्कर है, पशुवत् अपना आयु पूर्ण कर मरता है, इंद्रिय का निग्रह कराने वाला, सकल कल्याण और सुगति का कारण, भवसागर तरन के लिये नौका रूप तीर्थंकरो का कहा हुआ केवल धर्म ही है और धर्म का मूल दया "बिना मतलब पराये दुःख को दूर करने की इच्छा,, है दया से धर्म की प्राप्ति और धर्म से जीव मुक्त होते हैं, इसलिए दया सर्वोत्कृष्ट पदार्थ है। जैनदर्शन में दया के अनेक "स्वदया परदया द्रव्यदया भावदया निश्चयदया व्यवहारदया स्वरूपदया अनुबंधदया,, भेद विस्तार से वर्णन किये हैं सर्वदर्शनी दया का उपयोग रखते हैं परन्तु सर्वांशो दया का उपयोग तो जैनदर्शन ही में स्वीकार है इसवास्ते जैनमत श्रेष्ठ भी कहाता है, दयाके सर्वांश उपयोग होनेकी रीति यही है कि जैसे भोजन के वास्ते कोई एक पक्वान्न बनाया जाय तो घृत पिष्ट चीनी इत्यादि सामग्री अवश्य अपेक्षित होती है सामग्री होनेपर भी यथाविधि यथार्थ एकत्र होने से तथाविध स्वादिष्ट पक्वान्न तयार होता है परन्तु हीनाधिक वस्तु होजाने से कदापि वैसा पक्वान्न नही होता तैसे ही यथाविधि दया पालीजाय तो तथाविध धर्मोपलब्धि होय, यद्यपि सर्वदर्शनो मे दयाका मान है परन्तु उसके स्वरूप में फेरफार करदेने से गतप्राय (अर्थात् अकिंचित्कर तृथा) है, जब के उनका स्वरूपही यथानुसार यथार्थ नही जानसक्ते हैं तो पालन करना कैसे हो सके, फेरफार ऐसा के कोई कहते हैं पशुप्राणघात अर्थात् पशुजन्म से छोड़ाना दया है, कोई जिस शरीर को धारण करके जीव

सुखी न होय प्रत्युत दु:खित होय व्याधिग्रस्तादि दोष युक्त होय तो एसे प्राणीको तादृश शरीर से मुक्तकर
दना भी दया ही है, कोई सूक्ष्म अथवा स्थूल प्राणी जो मनुष्यको दुख दत हैं उनका नाश करना दया है,
कोई यति यागादिक में प्राणिवधकरने से भी पुण्य मानत हैं और कोई स्थूल प्राणिरक्षामात्र को दया कहत
हैं, इस तरह दया का उपयोग अन्यदर्शनी रखते हैं लेकिन यह भ्रम हैं, और एकरीत से—आचारधर्म दया
धर्म क्रियाधर्म और वस्तुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारो धर्मो के दान शील तप और भाव
चार कारण हैं, जब धनबल होय तो दान होय, मनबल होय तो शील पाला जाय, शरीरबल होय तो
तप होय, और सम्यग्ज्ञान होय तो भाव होय, यह भावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के भा
वधर्म का कारण ज्ञानबल है "जिस्से वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उसको ज्ञान कहत हैं,, ज्ञानसे जैसी
आत्मधर्म की वृद्धि और सरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नही, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमा
ण, चारों अनुयोग का विचार, सप्तभंगी, षट्द्रव्यविचार, आदिक सर्व ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त हो
त हैं। दशवैकालिक में लिखा है के—ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्लेशरूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी दा
सी है, और मरुदेवी तथा भरत महाराज वैसी अवस्थामे भी रहके जो कर्म विमुक्त भए यह ज्ञानहीका
माहात्म्य है, ज्ञानकी जो तीक्ष्णता सोही अवधचारित्र है, जो निकाचित कर्म कोटिवर्षपर्यंत दानादि कर
नसे भी नष्ट नही होता वह ज्ञानी के एक स्वासोस्वास मे नष्ट होसक्ता है इसीलिए ज्ञानीगुरु को रत्नाकर

श्रीर क्रियागुरु को पीपल के पान श्रेसा कहा है, ज्ञान विना सम्यक्त श्रहिंसा श्रीर सिद्धान्तोक्त समस्तक्रिया का मूल श्रद्धा नही होते यह कारण ज्ञानोपार्जन के लिए श्रवश्य यत्न करना चाहिए ज्ञानके पांच मत्-मति श्रुत श्रवधि मनपर्यव श्रीर केवल हैं परन्तु श्रुतज्ञान सबसे श्रधिकोपयोगी है क्यो कि यह पदार्थमात्र लोकालोक स्वमत परमत का प्रकाशक श्रज्ञानतिमिर को दूर करने के वास्ते सूर्य श्रीर दुस्समकालरूप रात्री में दीप सदृश है, उद्देश समुद्देश श्राज्ञा इत्यादि व्यवहार का लाभ भी श्रुतज्ञान सेही होता है इस श्रुतज्ञान के सुनने से शुद्ध स्वरूप विशुद्ध श्रद्धान की प्राप्ति होती है इससे शुद्धात्माका आचरण श्रासेवन श्रनुभवन होता है और इस्से परमपदप्राप्ति होती है, यही श्रुतज्ञान से पूर्वकाल में श्रीगौतमादिक केवली हो ससार से मुक्त हुए वर्त्तमान में महाविदेहक्षेत्र से विरहमान जिनेन्द्रों से सुनके जीव मुक्त होते हैं, श्रागामिकालमें पद्मनाभ आदि तीर्थंकरोंसे सुन श्रनेक जीव मुक्त होंगे, इस श्रुतज्ञान की वाचना पृच्छना परावर्तना श्रनुप्रेक्षा श्रीर धर्मकथा होती है, श्रीउवाई सूत्रमे धर्मकथा चार प्रकार की कही है—आक्षेपिणी विक्षेपिणी निर्वेदिनी श्रीर संवेदिनी, जिस्से तत्वमार्ग मे प्रवृत्ति होय उस्को श्राक्षेपिणी, जिस्से मिथ्यात्व की निवृत्ति होय उस्को विक्षेपिणी, जिस्से मोक्ष की श्रभिलाषा होय उस्का निर्वेदिनी, जिस्से वैराग्य की भावना होय उस्को संवेदिनी कहते हैं यह श्रुतज्ञान रूप कथा श्री श्ररिहन्त देवाधिदेव तीर्थंकर परमेश्वर समवसरणमें बैठ "उपन्नेइवा विगमेइवा धुवेइवा,, त्रिपदी उच्चारण पूर्वक करते हैं श्रीर त्रिपदी से ही गणधर द्वादशांग

सुखी न होय प्रत्युत दु खित होय व्याधिग्रस्तादि दोष युक्त होय तो ऐसे प्राणीको तादृश शरीर से मुक्तकर देना भी दया ही है, कोई सूक्ष्म अथवा स्थूल प्राणी जो मनुष्यको दुख देते हैं उनका नाश करना दया है, कोई वलि यागादिक में प्राणिवधकरने से भी पुण्य मानते हैं और कोई स्थूल प्राणिरक्षामात्र को दया कहते हैं, इस तरह दया का उपयोग अन्यदर्शनी रखते हैं लेकिन यह भ्रम है, और एकरीत से–आचारधर्म दया धर्म क्रियाधर्म और वस्तुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारों धर्मो के दान शील तप और भाव चार कारण हैं, जब धनवल होय तो दान होय, मनवल होय तो शील पाला जाय, शरीरवल होय तो तप होय, और सम्यग्ज्ञान होय तो भाव होय, यह भावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के भावधर्म का कारण ज्ञानवल है "जिस्से वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उस्को ज्ञान कहते हैं,, ज्ञानसे जैसी आत्मधर्म की वृद्धि और संरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नहीं, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमाण, चारों अनयोग का विचार, सप्तभंगी, षड्द्रव्यविचार, आदिक सर्व ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त होते हैं। दशवैकालिक में लिखा है के–ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्लेशरूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी दासी है, और मरुदेवी तथा भरत महाराज वैसी अवस्थामे भी रहके जो कर्म विमुक्त हुए यह ज्ञानहीका माहात्म्य है, ज्ञानकी जो तीक्ष्णता सोही अयथचारित्र है, जो निकाचित कर्म कोटिवर्षपर्यंत दानादि करनसे भी नष्ट नही होता यह ज्ञानी के एक स्वासोत्स्वास में नष्ट होशक्ता है इसीलिए ज्ञानीगुरु को रत्नाकर

भूमिका।

—०—

पणवणा, इसकी प्रकृति प्रज्ञापना है, प्राकृत शब्द संस्कृत शब्दको आदेश निर्देश करने से सिद्ध होताहै। प्रज्ञापना शब्द का समुदायार्थ यह है कि (प्र) प्रकर्षसे (ज्ञा) जानिये (प) पदार्थ जिस्से सो प्रज्ञापना अर्थात्–समस्त दर्शनी जिसरीति से पदार्थ का निरूपण नही करसक्ते केवल तीर्थंकर ही यथावस्थित स्वरूप से पदार्थ निरूपण करशक्ते हैं तो, यथावस्थितस्वरूप निरूपण कर्के शिष्योंकी बुद्धि मे आरोपण कियाजाय जीवाजीव आदिक पदार्थ जिस्से वह प्रज्ञापना कहाती है। यद्यपि अन्यदर्शनी भी जीवाजीवादि पदार्थोंको शिष्य की बुद्धि मे आरोपण कर्ते हैं परन्तु यथार्थ स्वरूप "जैसा २ जिस २ पदार्थ का स्वरूप है वैसाही ठीक ठीक स्वरूप,, निरूपण तीर्थंकर सर्वज्ञ ही करशक्ते हैं अन्यका सामर्थ्य नही और वह पदार्थ का यथावस्थित स्वरूप इस ग्रन्थ के द्वारा शिष्यों की बुद्धि के गोचर होता है इस्से इस का प्रज्ञापना यह नाम सार्थकहै।

समवायाङ्ग में कहे हुए पदार्थों का निरूपण इस्मे है इस्से समवायाङ्ग चतुर्थ अङ्ग का उपाङ्ग है ॥

कहे का फिरसे कहना निरर्थक है ऐसा नही, क्यो कि कहे पदार्थों को भी फिरसे विस्तार पूर्वक कहना

की रचना करते हैं (उस्को सूत्र कहते हैं) इस कालमें जितने सूत्र है सब श्रुतज्ञान के भेद हैं यह श्रुतज्ञान सर्वोपकारी है इसलिए इस्की वृद्धि और सरक्षण के हेतु अवश्य यत्न करना चाहिये वर्त्तमान कालमे जितने ज्ञानवृद्धि के उपाय है सब से उत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कारण पुस्तक सुलभता ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अति सुगम रीति को स्वीकार करना जो के पूर्वाचार्योंने बडे परिश्रम से परोपकार के हेतु ग्रंथ बनाये हैं छपवाके प्रसिद्ध करना हर एक विद्वानोंको द्रना इस्से अधिक और कोई श्रेष्ठ कार्य नही है , यही सब कारण सोच श्रीमुर्शिदाबाद निवासी श्रीराय धनपतिसिंह बहादुर ने ४५ आगम छपवाके हरेक जगे भंडार स्थापन किये हैं आप लोग भी यथाशक्ति इस्के करने को प्रवृत्त होय के जिस्से पुन जैनमत बृथावस्था को प्राप्त होय इति शम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

बनारस जैनप्रभाकर

नानक चन्द्र यती

का परिश्रम भी व्यर्थ है विनाप्रयोजन मूर्ख भी किसी कार्य मे प्रवृत्त नही होता तो तीर्थंकर कैसे प्रवृत्त हुए
कोइ प्रयोजन इनको भी कहना चाहिये ऐसा न कहो , कारण के अर्थरूप से कहने का परिश्रम तीर्थंकर
नामकम के विपाक का उदय से होता है " कहा है के–तीर्थंकरनामकर्म अग्लान धर्मदेशना के देने ही से
भोगाजाता है,, अर्थात्–तीर्थंकरनामकर्म आधीनता स धर्मदेशनाव्यापार होता है उसकर्म का यह भोगही है ॥
कोइ प्रयोजन अस्मदादिवत् उनको नही है ।

श्रोता का अनन्तर प्रयोजन जो अध्ययन कहा जायगा उस्के अर्थ का ज्ञान है और परम्परप्रयोजन
मोक्षप्राप्ति है, श्रोता विवक्षित अध्ययन को अर्थ से अच्छीतरह सुनकर ससार से विरक्त होते हैं, विरक्त
होके ससार से निकलने की इच्छा से सयममार्ग में यथागम प्रवृत्त होते हैं , यथागम सयम मार्ग में प्रवृत्त
होने से सयम का प्रकर्ष होता है उस्से सकल कर्मक्षय और उस्से मोक्षप्राप्ति होती है , लिखा है के–सम्यक्
पदार्थ ज्ञान से जीव विरक्त होते हैं, विरक्त हो क्रिया में आसक्त और क्रिया मे आसक्त होने से परमगति
को पहुचते हैं ॥ इस ग्रन्थ में अभिधेय जीव अजीव पदार्थ का स्वरूप है । ॥

सम्बन्ध दो प्रकार है उपायोपेय लक्षण दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण , तहा पहिला नैयायिक के–जैसे कि
वचनरूपापन्न प्रकरण उपाय और उस प्रकरण का परिज्ञान उपेय है । दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण केवल
श्रद्धानुसारि के–जैसा के सूत्रकार आगे कहेंगे , जानना चाहिये ॥

मन्दबुद्धि वाले शिष्य लोगो के अनुग्रह के लिये होता है इस्से सार्थक है निरर्थक नही। ॥

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग भी सब जीव अजीव आदिक पदार्थो के शासन (कहने) से शास्त्र है और शास्त्र की आदि में बुद्धिमान् पुरुषों की प्रवृत्ति के लिये प्रयोजन आदि तीन और मङ्गल अवश्य कहना चाहिये नहीं तो वृथा कटकशाखामर्दन की तरह कोई भी इस्में प्रवृत्त न होगा ॥

इहा प्रयोजन दो प्रकार है, येक पर और दूसरा अपर है, पर भी दो प्रकार और अपर भी कर्त्तागत श्रो तागत होने से दो प्रकार है, तहा द्रव्यास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम नित्य है और आगम के नित्य होजाने से कर्त्ता का अभाव ही है "जैसा के कहा है—यह द्वादशागी कधी नही थी कधी नही है कधी न हागी ऐसा नही (किन्तु) ध्रुव है नित्य है शास्वती है,, ॥

पर्यायास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम अनित्य है अनित्य का सद्भाव अवश्य होगा, तत्वदृष्टिसे देखिये तो आगम सूत्र और अर्थ उभयरूप है इसलिए अथ की अपेक्षा से नित्य और सूत्र की अपेक्षा से अनित्य होने से कर्त्ता का अवश्य सद्भाव है ॥ ॥

ग्रन्थकर्त्ता का अनन्तर प्रयोजन सत्वानुग्रह और परम्पर प्रयोजन अपवर्गप्राप्ति है "कहाहै—के जो दुखी जीवों को सर्वज्ञ के कहे उपदेश का उपदेश देके कृपा करते हैं वो थोडेही काल में मुक्त हो जाते हैं,, अर्थ से कहनेवाले अरिहन्त को क्या प्रयोजन है क्यों के वह तो कृतकृत्य हैं और प्रयोजन विना अर्थरूप से कहने

॥ विज्ञापनम् ॥



आसीदूमकमीवज पधुधमाः श्रीवीरदासाभिधसत्सुधीगुर्णासिषकर्मितथयास्तुगुत्कटीयोदुभौ । तस्मात्श्रीसमतापर्थिवविजयी प्रायोतुरीयाश्रमी तस्यश्रीमदवावनामविदिताकुलसादीयात्मभूत् ॥ १ ॥ जयरकीर्तिलदारवमद्दवी लक्ष्मीपते सांदर श्रीमद्रायवहादुरोचनपतिः सिद्धोगुणपासकी । श्रीजैनागमबद्धरत्नकरोशोकोपलम्बैचिरम् टीकावार्तिकसंयुतसुसिपिभिःसंमुद्र्यपत्रागुनम् ॥ २ ॥ सत्वापव्ययतस्यसवुषपुमस्तावस्थपोपुसका पर रास्येपुषपुस्तकानिसवनाभ्यस्यापयत्सादरम् । कुशस्त्वाणगपाठमव्यपठनं यस्साधव श्रावकाः ।स्वत्येश्रीजिनशासनस्यपुनरविशामधमर्दये ॥ ३ ॥ श्राम पञ्चदशयतसगुरुकःप्रधापनास्योपुना नानापुस्तकपाठभेदयुतोसमसादाद्यपि । दुर्वोध्यसपुरांतिवार्तिकपृतपाठस्तथाप्रावने श्रीमत्पूज्यि रामचन्द्रगणिविनीतव्यपुष्पामया ॥ ४ ॥ सश्लोभ्याविपरिश्रमेवनितरां चावरेसेंद्रयते स्यात्तथापिपविनिविरीतवणोमासादत्सुदपदि । यास्त्या शोध्यमुदारबुद्धिविमर्दविवदैः कृपाद्रष्टितो भिन्याकुण्ठतमस्तुनवववसासमर्थये सज्जनान् ॥ ५ ॥



बनारस
जैनप्रभाकर
माणकचन्द यती

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग सम्यग्ज्ञान का कारण है, इसी हेतु परंपरा से मुक्तिपद को देनेवाला है, इसीसे स्वय श्रेयो भूत है सोजी विघ्न की शान्ति के लिये आदि मध्य और अन्त में मगल कहाजाता है ॥

ग्रन्थ की आदि में मङ्गल निर्विघ्न शास्त्रपरिसमाप्ति के लिये है, मध्यमगल अवगृहीतशास्त्र की स्थितिके लिये है, और अन्तमगल शिष्य प्रशिष्यो के शास्त्र अव्यवच्छेद हो इसलिये है ॥

छत्तीस पदात्मक यह प्रज्ञापना सूत्र है इसमे जीव अजीव आस्रव बन्ध सवर निर्जरा और मोक्ष का प्ररूपण किया है तहा प्रज्ञापना वक्तव्यता विशेष चरमपरिणाम सज्ञक पाच पदमें जीव अजीव की प्रज्ञापना, प्रयोगपद और क्रियापद में आस्रव (काय वचन मन कर्मयोग) की प्रज्ञापना, कर्मप्रकृतिपदमें बन्ध प्रज्ञापना, समुद्घातपद में सवर निर्जरा बन्ध और मोक्ष की प्ररूपणा, बाकी स्थान आदि पदोंमें कही किसी कीसी प्रज्ञापना कीहै, ॥ ॥

अथवा इसमे द्रव्य क्षेत्र काल और भाव की प्रज्ञापना है क्योंके इन चारपदार्थों के सेवाय और कोई प्रज्ञापनीय पदार्थ नहीं है इन्ही पदार्थों के जानने से तत्वज्ञानरूप परमपुरुषार्थ सिद्ध होता है इस कारण इस्के पढन पढाने में अवश्य यत्न करना चाहिये, परन्तु पढने का अधिकार उस्को है जोके मोक्षमार्ग का अभिलाषी और गुरूका आज्ञाकारी हो, और इस्के देने का अधिकार भी यही है। इतिशम् ॥ ॥

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस नानकचन्द यती ।

॥ श्रीजिनाय नमः ॥ जयति नमदमरमुकुटप्रतिबिम्बच्छद्मविहितबहुरूपः । उद्धर्तुमिव समस्तं विश्वं भवपङ्कतो वीरः ॥ १ ॥ जिनवचनामृतजलधिं वन्दे यद्बिन्दुमात्रमादाय अभवन्नूनं सत्त्वा जन्मजराव्याधिपरिहीनाः ॥ २ ॥ प्रणमत गुरुपदपङ्कजमधरीकृतकामधेनुकल्पलतं । यदुपास्तिवशान्निरुपममश्नुवते ब्रह्म तनुभाजः ॥ ३ ॥ जडमतिरपि गुरुचरणोपास्तिसमुद्भूतविपुलमतिविभवः । समयानुसारतोऽहं विदधे प्रज्ञापनाविवृतिम् ॥ ४ ॥ अथ प्रज्ञापनेति कः शब्दार्थः? उच्यते प्रकर्षेण निःशेषकुतीर्थितीर्थकरासाध्येन यथावस्थितस्वरूपनिरूपणलक्षणेन ज्ञाप्यन्ते शिष्यबुद्धावारोप्यन्ते जीवाजीवादयः पदार्था अनयेति प्रज्ञापना ॥ इयं च समवायाख्यस्य चतुर्थाङ्गस्योपाङ्गं तदुक्तार्थप्रतिपादनात् उक्तप्रतिपादनमनर्थकमिति चेत् न उक्तानामपि विस्तरेणाभिधानस्य मन्दमतिविनेयजनानुग्रहार्थतया सार्थकत्वात् इयं चोपाङ्गमपि प्रायः सकलजीवाजीवादिपदार्थज्ञापनात् शास्त्रं शास्त्रस्य चादौ प्रेक्षावतां प्रवृत्त्यर्थमवश्यं प्रयोजनादित्रितयं मङ्गलं च वक्तव्य उक्तं च-प्रेक्षावतां प्रवृत्त्यर्थं फलादित्रितयं स्फुटं मङ्गलं चैव शास्त्रादौ वाच्यमिष्टार्थसिद्धये

इति ॥ १ ॥ तत्र प्रयोजनं द्विधा परमपरं च पुनरेकैकं द्विधा कर्तृगतं श्रोतृगतं च तत्र द्रव्यास्तिकनयमतपर्यालोचनाया मागमस्य नित्यत्वात् कर्तुरभाव एव यथोक्तं-एषा द्वादशाङ्गी न कदाचिन्नासीत् न कदाचिन्न भवति न कदाचिन्न भविष्यति ध्रुवा नित्या शाश्वतीत्यादि पर्यायास्तिकनयमतपर्यालोचनायां त्वनित्यत्वात् तदवश्यंभावी तत्सद्भावः तत्त्वपर्यालोचनायां तु सूत्रार्थोभयरूपस्यागमस्यार्थापेक्षया नित्यत्वात् सूत्रापेक्षया चानित्यत्वात् कथंचिदिति तत्र सूत्रकर्तुरनन्तरं प्रयोजनं सत्त्वानुग्रहः परम्परं त्वपवर्गप्राप्तिः उक्तं च-सर्वज्ञोक्तोपदेशेन यः सत्त्वानामनुग्रहं करोति दुःखतप्तानां स प्राप्नोत्यचिराच्छिवम् ॥ २ ॥ तदर्थप्रतिपादकस्यार्हतः किं प्रयोजनमिति चेत्? न किंचित् कृतकृत्यत्वात् प्रयोजनमन्तरेणार्थप्रतिपादनप्रयासो निरर्थक इति चेत्? न तस्य तीर्थकरनामकर्मविपाकोदयप्रभवत्वात् उक्तं च - तं च कहं वेइज्जइ अगिलाए धम्मदेसणाईहिं इति, श्रोतृणामनन्तरं प्रयोजनं विवक्षिताध्ययनार्थपरिज्ञानं परम्परं तु निःश्रेयसावाप्तिः, ते हि विवक्षितमध्ययनमधीयानाः सम्यगवगमसंसाराद्विरज्यन्ते विरक्ताश्च सन्तः संसारा

नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादसम्यग्दृष्टिप्रकाशितधर्मरतेषु श्री ५ रायधनपतिसिंहबहादुरेषु सविनयमावेदनम् ।

आगे मैंने सुनाहै आप की ऐसी इच्छाहै कि पैंतालिसों जैनागम की पुस्तकें मूल टीका और भाषाटीका सहित पांच ५ सौ छापी जावें और साधु श्रावकों के पठन पाठन के लिये पांचसौ स्थानमें पुस्तकालय स्थापित होवें सो यह अति धार्मिकी बातहै परंतु जिन महाशयों को द्रव्य देके पुस्तक लेने की इच्छा हो उनलोगों के निमित्त भी यदि आप की आज्ञा हो तो बेचने के वास्ते पांचसौ छापी जैनयुवसुसाइटी की ओरसे भी छपवा ली जावें यह पुस्तकें में धर्मीमंडल के प्रकाश अर्थ भये शुभम्, सम्वत् । १९५३ । मि० । चै० । सु० । ११

द० जैन युव सुसाइटी

शहर मुरसीदाबाद

कार्यसम्पादक

अजीमगंज

सुबुद्धि सेठ

नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैनयुवसुसाइटी कार्यसम्पादक महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जोकि यह आपका द्रव्य देके खरीदनवाले लोगों के लिये सुसाइटी की ओरसे पैंतालिसों जैनागम की पांचसौ पुस्तकें छपवा लेने की आज्ञा के विषय में आया सो मैं स्वीकार करताहूं कि आप जैनयुव सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पांच ५ सौ पुस्तकें बेचन के वास्ते छपवा लेवें परंतु पांचसौ से अधिक छपन की आज्ञा मैं नहीं देता, यदि और कोइ छपवाना चाहे तो उचित है कि पहले मुझ से आज्ञा लेलेवे क्योंकि इन ग्रन्थोंपर रजस्टरी हुईहै, भये शुभम् । सम्वत् । १९५३ । मि० । चै० । सु० । १३

द० रायधनपतिसिंह बहादुर

शहर मुरसीदाबाद

अजीमगंज

णा ॥ दिमंगल मिष्टदेवतास्तवस्य परममङ्गलत्वात् उपयोगपदगतेन कदविशेषजते । उपयोगे पनसे? इत्यादिना मध्यमङ्गल मुपयोगस्य ज्ञानरूप स्वात् ज्ञानस्य कमक्षयप्रति प्रधानकारणतया मङ्गलत्वात् मथ कमक्षयंप्रति प्रधानकारणता तस्य ममसिद्धा तस्या साक्षादागमे शिघाना तथावाण मः जंमयावीकर्म यवरमनुयाहिंवासकोडीहिं ॥ तंनाणीतिहिगुत्तो खवेइऊसासमित्तेण ॥ १ ॥ तयासमुद्घातपदगतम केवलिसमुद्घातपरिसमाप्त लरकालमाविना सिद्धाधिकारमतिपद्येन मिश्चियसद्वुष्का आजरामरणबन्धविमुक्ता सासयमिद्धाबाहं चिट्ठंतिसुहीसुहपत्ता ॥ १ ॥ इत्यादिना ऽयसानमङ्गल मधुना दिमङ्गलसूत्र व्याख्यायते ॥ ववगयइत्यादि ॥ सित बद्ध मष्टप्रकार कर्मेधनं ध्मातं दग्धं आज्वल्यमानशुक्लध्यानानलेन यैस्ते निरुक्तविधिना सिद्धा अथवा षिधुगतौ सेधतिस्म अपुनरावृत्त्या निर्वृतिपुरी मगच्छन्, यदिवा षिधसंराद्धौ सिद्ध्यन्ति स्म मिष्टितार्थो भवन्ति स भद्रा; षिधूशास्त्रे माङ्गल्येच सेधतिस्म शासितारो ऽभवन् मङ्गलरूपता वानुभवन्तिस्मेति सिद्धाः अथवा सिद्धा नित्याअपर्यवसानस्थिति कत्वात् प्रख्यातावापभव्यै रुपलब्धगुणसन्दोहत्वात् उक्तच – ध्मातसितयेनपुराणकर्म योवागतोनिर्वृतिसौधमूर्ध्नि ख्यातोऽनुशास्तापरिनिष्ठितार्थो य सोऽस्तुसिद्धःकृतमङ्गलोमे ॥ १ ॥ सिद्धाय नामादिनेदतो नेकधा ततो यथोक्तसिद्धप्रतिपत्त्यर्थं विशेषण माह—अपगतजरामरणभयान्, जरावयोहा मिलक्षणा मरणंप्राणत्यागरूप भयमिह लोकादिभेदा त्सप्तप्रकारं मुक्तञ्च—इहपरलोमादाण मकम्हाआजीवमरणमसिलोए ॥ इति विप्रयतो ऽपुन र्जीवत्यागरूपतया अपगतानि ध्वष्टानि जरामरणभयानि येभ्यस्ते तथा तान् त्रिविधेन मनसा वाचा कायेन अनेन योगत्रयव्यापारविकल द्रव्यवन्द न मित्याह अभिवन्द्य अभिमुखं वन्दित्वा प्रणम्येत्यथः अनेन समानकर्तृकतया पूर्वकाले क्त्वाप्रत्ययविधानात् नित्यानित्यैकान्तपक्षव्यवच्छेद

ववगयजरमरणभए सिद्धेअभिवंदिऊणतिविहेण । वंदामिजिणवरिंद तेलोक्कगुरुंमहावीरं ॥ १ ॥

व्यरिचमुप रत्नाचे जिवे तोनयाने विवस्थित पोयपदने नमं, हिवे ववगयजरमरणभए सिद्धेअभिवंदिऊणतिविहेण । वंदामिजिणवरिंदे तिलोकगुरु महावीर ॥ १ ॥ चरम तीर्थंकर शासन नायक तेहभणी नमस्कारकरीजेछे अपगत ववगयाछे जरामरण ८ कर्मरूपवैरी ते बाठकर्मरूपाजो सिद्ध

द्विनिश्चिमभिपवः सुयमाध्वनि यथागमं सम्यक् प्रवृत्ति मातन्वते महत्तामाच मयमप्रकर्षवशात उपजायते सकलकर्मक्षया भिप्रयसावाप्ति रिति उक्तं च—सम्यगभावपरिज्ञाना द्विरक्तात्मवतोमनाः । क्रियासक्ताव्यविघ्नेन मध्वनिपरमांमतिमिति ॥ १ ॥ अभिधेय जीवाजीवस्वरूप तच प्राक्प्रदर्शितमा मध्युत्पत्तिसामग्र्यमात्रा स्वगत सम्बन्धो द्विधा उपायोपेयभावलक्षणो गुरुपर्वक्रमलक्षणश्च तत्राद्य स्तर्कानुसारिणः प्रति तद्यथा—वचनरूपापन्न प्रक रणमुपाय सत्परिज्ञानं चोपेयं गुरुपर्वक्रमलक्षणः श्रेयसमद्धानुसारिण प्रति तथापि स्वयमेव सूत्रकृ दभिधास्यति इदञ्च प्रज्ञापनाख्य मुपाङ्ग सम्यग् ज्ञानहेतुत्वा दतएव परम्परया मुक्तिपदप्रापकत्वात् श्रेयोभूत मतो माभू दत्र विघ्न इति विघ्नविनायकोपशान्ताय शिष्याणा मङ्गलबुद्धिपरिग्रहाय स्ततो मङ्गलभूतस्या प्यस्यादिमध्यावसानेषु मङ्गलमभिधातव्य मादिमङ्गल मविघ्नेन शास्त्रपारगमनाय मध्यमङ्गल मवगृहीतशास्त्रस्थिरीकरणार्थं मन्तमङ्गलं शिष्यप्रशिष्यपरम्परया शास्त्रस्या ऽव्यवच्छेदनाय मुक्तञ्च—तमंगलमादिम मज्झेपज्जतमयसत्थस्स । पढमसत्थत्थाविग्घ पारगमणायनिद्दिठ ॥ १ ॥ तस्सेवयथिज्जत्थं मज्झिमयमतिमपितस्सेव अव्वोच्छित्तिनिमित्तं सिस्सपसिस्साइवंसस्स ॥ २ ॥ तत्र प्रथमपदगतेन ॥ ववगयजरमरणभये त्यादि

श्रवाम्ययोमहावीर नताशेषसुरेश्वरम् प्रज्ञापनाख्यसूत्रस्य वक्ष्येबालावबोधका ॥ १ ॥ मतिसूरिवशाहोत्था श्वार्थ्यवाममनोहरा महाख्यपरशिष्याणा विनाशकर्णोम्यहम् ॥ २ ॥ सद्गुरुविरहतः विसर्गविसर्ताभिधम् सपरस्वात्ममोदाय म्यवशाम्यिम्यतेमया ॥ ३ ॥ परिहत १ पसरीर २ भाचार्य ३ उपाध्याय ४ मनि ५ एहना भादि भक्षरा पांचा भौंकार नीपजे तिके पदवीने नमस्कारकरीजेछे साम्प्रतापद विचारे । णमोअरिहंताण । अरिहंतामणो नमस्कार हवो मारहा सौनवर्णे १२ गुण सहितरणः गुणे विषमहित । णमोसिद्धाण । सिद्धामणो नमस्कार हवो गुणे ८ रक्तवर्ण मशेकपे त्रिभसहित । णमोआयरियाण । नमस्कारहवो भाचार्यामणो सोनवर्णे ३६ गुणे गतामांहि भामकरे विचित्तहित । णमोउवज्झायाण । नमस्कारहुवो उपाध्यायामणो नीलवर्णे शियामांहि भामकर जिवांरी २५ गुणेसहित । णमोलोएसव्वसाहूणं । नमस्कारहुवो सर्वगुणसहित साधुके जिवाभणो श्यामवर्ण २७ गुणस

गृहस्थ माह ननुश्रमणादीन् स्तुवस्य किमर्थं भगवतो महावीरस्य वंदन ? उच्यते वर्तमानतीर्थाधिपतित्वेना सन्नोपकारित्व दर्शयति ॥ सुयरय इत्यादि ॥ अत्र प्रधानमेति विशेष्य शेष सामानाधिकरण्येन वैय्यधिकरण्येनच विशेषणं ॥ जिनवरत्ति ॥ जिना सामान्यकेवलिन स्तेषामपि वर उत्तम स्तीर्थकरत्वात् जिनवरस्तेन सामर्थ्यात् महावीरेणा न्यस्य वर्तमानतीर्थाधिपतित्वाभावात् इह छद्मस्थवीतमोहजिनापेक्षया सामान्यकेवलि नोपि जिनवरा उच्यंते तत सत्करणमाशासी द्विनेयजन इति तीर्थकरत्वप्रतिपत्तये विशेषणान्तर माह भगवता भग समग्रैश्वर्यादिरूप उक्तंच–ऐश्व यस्यसमग्रस्य रूपस्ययशसःश्रियः ॥ धर्मस्याथप्रयत्नस्य षण्णांभग इतीङ्गना ॥ १ ॥ भगो स्यास्तीति भगवान् अतिशयन वतुप्रत्ययो ऽतिशायीच भगो वद्भुमानस्वामिन शेषप्राणिमपापेक्षया त्रैलोक्याधिपतित्वात् तेन भगवता परमार्हत्यमहिमोपेतेने त्यर्थः पुनः कथंभूतेने त्याह–भव्यजननिर्वृतिकरे ण भव्य सत्यायिभामादिपरिणामिकभावात् सिद्धिगमनयोग्यः सचासौ जनश्च भव्यजनः, निर्वृतिर्निर्वाण सकलकर्ममलापगमनेन स्वस्वरूपलाभतः परमस्वास्थ्य तद्धेतुः सम्यक्दर्शनाद्यपि कारणेकार्योपचारा निर्वृति स्तत्करणशीलो निर्वृतिकर भव्यजनस्य निर्वृतिकरो भव्यजननिर्वृतिकर स्तेन माह भव्यग्रहण मभव्यव्यवच्छेदाय मन्यथा तस्य नैरर्थक्यप्रसङ्गात् तत इद मापतितं भव्यानामेव सम्यग्दर्शनादिक करोति नाभव्याना नचैत द्रुप पन्न भगवतो वीतरागत्वेन पक्षपातासम्भवात् नैतत्सार सम्यग्वस्तुतत्त्वापरिज्ञानात् भगवान्हि सवितेव प्रकाश मविशेषेण प्रवचनार्थ मातनोति केवल मभव्यानां तथास्वाभाव्या देव तामसरागकुलानामिव सूर्यप्रकाशो मप्रवचनार्थ उपदिश्यमानोपि उपकाराय प्रभवति तथाचाह वादिमुख्य–सद्धर्मबीजवपनानघकौशलस्य यल्लोकबान्धवतवापिखिलान्यभूवन् ॥ तन्नाद्भुतंखगकुलेष्विहतामसेषु सूर्यांशवोमधुकरीचरणावदाताः ॥ १ ॥ ततो भव्या

सुयरयणनिहाणजिण वरेणभवियजणणिव्वुइकरेण ।

वर्द्धमान ताम शासना गच्छे ते महावीरस्वामी प्रति श्रावणानास प्रति । १ । सुयरयणनिहाणजिणवरेणभवियजणनिव्वुइकरेण । उवदंसियाभगवया पवयणपासमभावाय २ । सिद्धांतरत्न तेहना निधान घरवे ते भगवंत श्रीवीतरागे भविकजीवने माथ सुपनानुं कहार कहा भगवंते परिहते प्रशा

आह एकान्तनित्यानित्यपक्षे क्त्वाप्रत्ययस्या सम्भवात् तथा च प्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वभाव मित्य तस्य कथं त्रिककालक्रियाप्रयुक्तत्वोपपत्ति
रामास मेकस्वभावत्व नै कस्याप्य कस्याचित् क्रियाया सदाभावमसङ्गात् अनित्य मपि प्रकृत्यैकक्षणस्थितिधमकं तत तस्यापि त्रिककालक्रिया
द्युपयुक्तृत्वायोगो वस्यानाभावा दित्यत विस्तरेण न्यत्र सुचर्चितत्वात् क्त्वाप्रत्ययस्तो तरक्रिया सापेक्षस्या तुतरा क्रिया आह—वदामिजिनवरि
दमित्यादि ॥ सूरवीरविक्कान्तो वीरयतिस्म कषायादिशत्रून् मति विक्रामतिस्मति वीरः महादासौ वीरश्च महावीर इदम्भ महावीर इतिनाम
नवावृत्तिक किंतु यथावस्थित मनम्यसाधारण परोपतापसमोदिविषय वीरत्वमपेक्ष्य सुरासुरकृत मुक्तम—भयलेजपत्तेरवात सतितमेपरीस
हावसमाव देवोभि कृत महावीरे इति अनेना पापापगमातिशयो प्यन्यत तकथभूत मित्याह जिनवरेन्द्र जयन्ति रागादिशत्रू नतिजयन्ति
जिना सोच चतुर्विधा सद्यथा श्रुतजिना अवधिजिनाः मनःपर्यायजिना केवलिजिना तत्र केवलिजिनत्वप्रतिपत्तये वरग्रहणं जिनानां वरा उ
त्तमा नूतनकृताविनाशस्वभावावभासिकेवलज्ञानकलितत्वात् जिनवरा सोचा तीर्थकरा अपि सत सामान्यकेवलिनो भवन्ति तत तीर्थङ्करत्वप्र
तिपत्त्यय मिन्द्रग्रहणं जिनवराणा मिन्द्रो जिनवरेन्द्र मकष्टपुण्यस्कन्धरूपतीर्थंकरनामकर्मोदया तीर्थकर इत्यर्थ अनेन ज्ञानातिशय पूजातिशय
श्चाह ज्ञानातिशयमन्तरेण जिनेषु मध्ये उत्तमत्वस्य पूजातिशयमन्तरेण जिनवराणामपि मध्ये इन्द्रत्वस्या योगात् तपुनः किंभूत मित्याह—त्रैलो
क्यपूर्ण यकाति यथावस्थितं प्रवचनमायमिति गुरू त्रैलोक्यस्य गुरु त्रैलोक्यगुरु तथाच भगवान् अधोलोकनिवासिभवनपतिदेवेभ्य स्तिर्यग्लो
कनिवासिव्यन्तरनरपशुविद्याधरज्योतिष्कभ्य ऊर्ध्वलोकनिवासिवैमानिकदेवेभ्यश्च धम विवेद तं अमन वागतिशय आह एतथा पापापगमातिशयादय
श्चत्वारोप्यतिशया देशतीर्थकरादीना मतिशयाना मुपलक्षण तामन्तरेण तेषामसम्भवा तत चतुस्त्रिंश दतिशयोपेतं भगवन्त महावीर यमे इत्युक्त

रूपा तेषभवा साहमा बद वादोम सम वचन कावायैवरी सिवामे वादृश सामान्यकेवलीमाषि प्रधान दृष्टमान त त्रिवेद्र परिहत केवलोके वोर

वाचकप्रधाना सर्वा वंशः प्रवाहो वाचकवरवंश तास्मिन् सूत्रेच पंचमीनिर्देशा प्राकृतत्वात्, प्राकृतेहि सर्वासुविभक्तिषु सर्वापि विभक्तयो यथा योगं प्रवर्तन्ते तथाचाह पाणिनिः स्वप्राकृतव्याकरणे—व्यत्ययोप्यासामिति, त्रयोविंशतितमेन तथाच सुधर्मस्वामिन आरभ्य जगयानार्मेर्यास त्रयो विंशतितमएव किंभूतेन धीरपुरुषेण, धीबुद्धि तया राजत इतिधीरः धीरश्चासौ पुरुषश्च धीरपुरुष स्तेन, तथा दुर्धराणि प्राणातिपातादिनिवृत्ति लक्षणानि पञ्चमहाव्रतानि धारयतीति दुर्धरधर स्तेन तथा मन्यते जगतस्त्रिकालावस्था मिति मुनि स्तेन विशिष्टसंवित् समन्वितेनेत्यर्थः पुनः कथंभूतेनत्याह–पूर्वश्रुतसमृद्धबुद्धिना पूर्वाणिच ततश्रुतंच पूर्वश्रुतं तेन समृद्धा वृद्धिमुपागता बुद्धि र्यस्य सः पूर्वश्रुतसमृद्धबुद्धि स्तेन, आह यो वा चकवरवंशान्तर्गत स पूर्वश्रुतसमृद्धबुद्धिरेव भवति ततः किमनेन विशेषणेन? सत्यमेतत् किन्तु पूर्वविदोपि षट्स्थानकपतिता भवन्ति, तथाच च तुर्दशपूर्वविदामप्य विकल्प षट्स्थानक वक्ष्यति तत आधिक्यप्रदर्शनार्थ मिदं विशेषण मित्यदोषः, समिद्धबुद्धीत्यत्र धाराब्दस्य ह्रस्वत्व द्विव प्रसक्त दीर्घता प्राकृतत्वात्, तथा श्रुतमनर्वाक्पारत्वा स्वसुजायितरत्नयुक्तत्वाच सागरइव श्रुतसागरः व्याघ्रादिभि र्गौणैः सद्गुणानुक्तावितिसमा स तस्मात् ॥ विरउवाति ॥ दशीवचनमेतत् साम्प्रतकालीनपुरुषयोग्य वीनयित्वा इत्यर्थः यनेद प्रज्ञापनारूपं श्रुतरत्न मुत्तम प्रधानं, प्राधान्यच म शेषश्रुतरत्नापेक्षया किन्तु स्वरूपतो, दत्त शिष्यगणाय तस्मै भगवते ज्ञानैश्वर्यधर्मादिवते आरात् सर्वहेयधर्मेभ्यो यातः प्राप्तो गुणै रित्यार्यः सचासौ श्यामश्च आर्यश्याम तस्मै सूत्रेचषष्ठी चतुर्थ्यर्थे द्रष्टव्या ॥ छठिविभत्तीएभण्णइचउत्थीतिवचनात् अधुनोक्तसंबंधं गाथा ॥ अज्झयणमित्यादि ॥

वायगवरवंसाउ तेवीसइमेणधीरपुरिसेण । दुद्धरधरेणमुणिणा पुव्वसुयसमिद्धबुद्धीण ॥ ३ ॥ सुयसागराविएऊण जेणसुयरयणमुत्तमदिन्न । सीसगणस्सभगवउ तस्सणमोअज्जसामस्स ॥ ४ ॥ अज्झयणमिणचित्त सुय

॥ प्रधान वंशानुक्रमे सुधर्मास्वामी आरम्भ तेवीसमा धीर पुरुष स्वामाचार्य दुद्धर महाव्रतना धरनहार मुनि तिणे पूर्वरूप श्रुत तिणें संचितहे बुद्धि जि णारी ॥ ३ ॥ सुयसागराविएऊण जेणसुयरयणमुत्तमदिन्न । सीसगणस्सभगवउ तस्सणमोअज्जसामस्स ॥४॥ श्रुत सागरमांहिथी वीणने काड्यो जिणें ए

नामेव भगवद्वचना दुपकारो जायते इति भव्यजननिर्वृतिकरेत्युक्तं किमित्याह॥ उवदंसियत्ति॥ उपसामीप्येन यथाभोगृवा झटिति यथावस्थित वस्तुतत्त्वावबोधो भवति तथा स्फुटवचनै रित्यर्थः दर्शिता भवकनोचरमीता उपदिष्टा इत्यर्थ , का सौ प्रज्ञापना ? प्रज्ञाप्यन्ते जीवादयो भावा अनया शब्दसंहत्या इतिप्रज्ञापना किंविशिष्टे त्यत आह–श्रुतरत्ननिधानं इह रत्नानि द्विविधानि भवन्ति तद्यथा द्रव्यरत्नानि भावरत्नानि तत्र द्रव्यर त्नानि वैडूर्यमरकतेन्द्रनीलादीनि भावरत्नानि श्रुतव्रतादीनि तत्र द्रव्यरत्नानि मतास्विकानीति भावरत्नै रिहाधिकार स्तत एवसमासः श्रुतान्यवरत्नानि श्रुतरत्नानि ननु श्रुतानिरत्नानिव नापि श्रुतानि रत्नानीवेति कुत इतिचे ? दुच्यते प्रथमपक्षे श्रुतव्यतिरिक्तै द्रव्यरत्नै रिहाधिकाराभावात् द्वितीयप क्षेतु श्रुतानामेव तात्त्विकरत्नत्वात् शेषरत्नै रुपमाया अयोगा निधानमिव निधाम श्रुतरत्नानां निधानं श्रुतरत्ननिधानं कथा प्रज्ञापने त्यत आह सर्वभावानां सर्वेच ते भावाच सर्वभावा जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षा , तथा ह्यस्यां प्रज्ञापनायां षट्त्रिंश त्पदानि तत्र प्रज्ञापनाल्पबहुत्व विशेषचरमपरिणामसंज्ञेषु पंचसु पदेषु जीवाजीवानां प्रज्ञापना प्रयोगपदे क्रियापदेचास्रवस्य कायवाङ्मनःकर्मयोग आस्रव इतिवचनात् कर्मप्रकृ तिपदे बन्धस्वरूपका समुद्घातपदेकेवलिसमुद्घातप्रतिपादनाया संवरनिर्जरामोक्षाणां प्रज्ञापना शेषेषुतु स्थानादिषु पदेषु क्वचि त्कस्यचिदिति अथवा सर्वभावाना मिति द्रव्यक्षेत्रकालभावाना मेतद्व्यतिरेकेणा न्यस्य प्रज्ञापनीयस्या भावात् तत्र प्रज्ञापनापदे जीवाजीवद्रव्याणां प्रज्ञापना, स्थानपदे जीवाधारस्य क्षेत्रस्य स्थितिपदे नारकादिस्थितिनिरूपणात् कालस्य शेषपदेषु सम्यग्ज्ञानादिपर्यायप्रच्छ्वासोच्छ्वासादीनां भावाना मिति अस्याच गाथाया अवक्षयमिव चितमित्यनया सहाभिसम्बन्धः कथम नेयं सत्वानुग्रहाय श्रुतसागरादुद्धृता अतस्तस्य प्यासन्नतरोपकारित्वा दसद्विधानां नमस्का रार्ह इति तन्नमस्कारविषय मिदमपान्तरालएवा न्यकर्तृकं गाथाद्वय–वायगवरवंसाओ इत्यादि॥ वाचका पूर्वविदोः वाचकाश्च तेवराश्च वाचकवरा

उवदंसियाभगवया पन्नवणासव्वभावाण ॥ २॥

यणा वयावया सयभाव जीवा जीवादिपदाय । २ । वायगवरवंसाओ तेवीसइमेणधीरपुरिसेण । दुद्धरधरेणमुणिणा पुव्वसुयसमिद्धबुद्धीण । ३ । वाय

नवम योनिः । ८ । दशम चरमाचि चरमाचीति प्रश्नमुद्दिश्य प्रवृत्तत्वात् । १० । एकादश भाषा । ११ । द्वादश शरीर । १२ । त्रयोदश परि
णामः । १३ । चतुर्दशं कषाय । १४ । पञ्चदश मिन्द्रिय । १५ । षोडश प्रयोग । १६ । सप्तदशं लेश्या । १७ । अष्टादशं कायस्थितिः । १८ ।
एकोनविंशतितमं सम्यक्त्वम् । १९ । विंशतितम मन्तक्रिया । २० । एकविंशतितम मवगाहनास्थान । २१ । द्वाविंशतितमं क्रिया । २२ ।
त्रयोविंशतितम कर्म । २३ । चतुर्विंशतितमं कर्मणो बन्धकः तस्मिन् हि यथाजीव कर्मणो बन्धको भवति तथा प्ररूप्यत इति तथानाम । २४ ।
अथ पञ्चविंशतितमं कर्मवेदक । २५ । षड्विंशतितमं वेदस्य बन्धकइति वेदयते ऽनुभवतीति वेद तस्य बन्धएव बन्धक किमुक्तम्भवति कति
प्रकृती र्वेदयमानस्य कतिप्रकृतीनां बन्धो भवतीति तत्र निरूप्यते तत सद्वेदस्य बन्ध इति नाम । २६ । एव कां प्रकृतिं वेदयमानः कतिप्रकृती र्वे
दयत इत्यर्थप्रतिपादकं वदवेदकनाम सप्तविंशतितम । २७ । अष्टाविंशतितम माहारप्रतिपादकत्वा दाहारः । २८ । एव मकोनत्रिंशत्तम मुपयोग

परिणा, म १३ कसाय १४ इंदिय १५ पओगेय १६ । लेसा १७ कायठिइया १८, सम्मत्ते १९ अंतकिरियाय २०
॥ २ ॥ ओगाहणसंठाणा २१, किरिया २२ कम्मेय २३ कम्मस्स । बंधए २४ कम्मवेयए २५, वेयस्सबंधए २६
वेयवेयए २७ ॥ ३ ॥ आहारे २८ उवओगे २९, पासणया ३० सन्नि ३१ संजमे ३२ चेव । ओही ३३ पवियारण ३४

[illegible] । ० । [illegible] भासापद ११ सरीरकारणपद १२ परिणामपदाधिकार १३ कसायपद १४ इन्द्रियपद १५ पयोगद्वारपद
१६ लेश्यापद १७ कायस्थितिपदद्वार १८ सम्यक्त्वनामपद १९ अन्तक्रियाधिकारपद २ । ० । ओगाहणसंठाणे किरियाकम्मेयवागरेयणा । कम्मबंधएकम्मवेयए
वेयबंधए वेयवेयए । ८ । अवगाहनाख्यानपद २१ क्रियापद २२ कर्मपद २३ कर्मरे ओगरे बधक्रिमयाच ओघ कर्मने किमवाधे २४ कर्मना वेदवा भागवो
२५ वेदबंधक [illegible] २६ वेदना [illegible] बंधकरे कर्मप्रकृतिकरे, विरमे बांधीने वेदेकिम २० । ८ । आहारेउवयोगे पासणयासन्निमसंजमेय । आहो
पवियारणवेयणावतासमुग्घाए । ८ । आहारपद २८ उपयोगपद २९ पासणयापद ३० सन्नापद ३१ संयमपद ३२ निचे अवधिज्ञानपद ३३ प्रविचारणापद ३४

अध्ययनमिदं प्रज्ञापनाख्यं ननु यदीयमध्ययन किमित्यस्यादा अनुयोगादिद्वारोपन्यासो नक्रियते ? उच्यते नायंनियमो यदवश्य मध्ययनादा अप क्रमाद्युपन्यास क्रियत इति अनियमोपि कुतोऽवसीयत इतिचेत् ? उच्यत नन्द्यध्ययनादि अदर्शनात् तथा चित्रार्थाधिकारयुक्तत्वा च्चित्र श्रुतमय रत्न श्रुतरत्नं दृष्टिवादस्य द्वादशस्याङ्गस्य निस्यन्दइव दृष्टिवादनिस्यन्दः सूत्रनपुंसकतानिर्देशः प्राकृतत्वात् यथावर्णित भगवता श्रीमन्महावीरवर्द्धमा नस्वामिना इन्द्रभूतिप्रभृतीना मध्ययनार्थस्य वर्णितत्वात् अध्ययन वर्णितमित्युक्त अहमपि तथा वर्णयिष्यामि आह—कथमस्य छद्मस्थस्य तथावर्णयितु शक्ति ? नैषदोषः सामान्येन विधेयपदार्थवर्णनमात्र मधिकृत्यैव मभिधानात् तथाच अहमपि तथावर्णयिष्यामीति किमुक्तंभवति तदनुसारेण वर्ण यिष्यामि नस्वमनीषिकयेति अस्याश्च प्रज्ञापनायां षट्त्रिंशत्पदानि भवन्ति पद प्रकरण मर्थाधिकारइति पर्याया स्तानिच पदान्यमूनि॥ पन्नव णेत्यादि गाथाचतुष्टये ० तत्र प्रथमम्पद प्रज्ञापनाविषयं प्रथममधिकृत्य प्रवृत्तत्वा त्प्रज्ञापना ।१। एव द्वितीय स्थानानि ।२। तृतीयं बहुवक्तव्यं ।३। चतुर्थं स्थितिः ।४। पञ्चमं विशेषः ।५। षष्ठं व्युत्क्रान्तिः व्युत्क्रान्तिलक्षणाधिकारयुक्तत्वात् ।६। सप्तम मुच्छ्वास ।७। अष्टम सञ्ज्ञा ।८।

रयणादिट्ठियायणीसद । जहवण्णियजगगुरुणा अहमवितहवण्णइस्सामि ॥ ५ ॥ पण्णवणा १ ठाणाइ २, बहुवत्तव्व ३ ठिइ ४ विसेसाय ५। वक्कंती ६ उस्सास, ७ सन्ना ८ जोणीय ९ चरिमाइ १० ॥ १ ॥ भासा ११ सरीर १२

इवा श्रुतसागर मांहिथी श्रुतरत्न उत्तमदोषा जिम समुद्रने भगवत तिम आर्य श्यामाचार्यनै नमस्कार थाओ ॥ ४ ॥ अध्ययनमिदचित्र सुयरयणं दिट्ठिवायणीसदं। जहवण्णियंभगवया अहमवितहवण्णइस्सामि ॥ ५ ॥ अध्ययन प्रज्ञापनानामे अनेकाधिकार यत्र श्रुतरत्न दृष्टिवाद बारमा अंगनो रत्न रूपभूत जिम वर्णव्या भगवन्त वीतरागें ॥ जिवे तेहने अनुसारे तिम वर्णवस्यु ॥ ५ ॥ पन्नवणाठाणाई बहुवत्तव्वठिइविसेसाय। वक्कंतीउस्स सनाजो णीयचरमाइ ॥६॥ जीवादि प्रज्ञापनापद १ तेहनो ठामनो बीजोपद २ अल्पबहुत्व ३ ओवनो तेहना स्थितिपद ४ तेहना विशेषपद प्ररूपना ५ व्युत्क्रा न्ति लक्षणाधिकारपद ६ उस्सासपद ७ सञ्ज्ञाकारपद ८ योनिपद ९ चरमादिभोने प्रवर्त्तना १० ॥६॥ भासासरीरपरिणा मकसाए इंदियपओगेय। लेसा

भावप्राणाय तत्र द्रव्यप्राणा इन्द्रियादयो भावप्राणा ज्ञानादीनि। द्रव्यप्राणैरपि प्राणिन संसारसमापन्नाकारकाद्य, केवलज्ञानभावे प्राणिनो भगवन्तस्तत्सकलसत्त्वा सिद्धा जीवाना प्रज्ञापना जीवप्रज्ञापना अजीवा अजीवा जीवविपरीतस्वरूपा सेव धर्माधर्माकाशपुद्गलास्तिकायाद्धासमयस्या तेषां प्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापना चकारौ द्वयोरपि प्राधान्यख्यापनार्थौ, अल्पस्विवाभ्यन्तरस्या प्रज्ञापनाया गुणभाव एव सम्प्राप्यन्तरगमनिका कार्या। तदेव सामान्येन प्रज्ञापनाद्वयमुपन्यस्य सम्प्रति विशेषस्वरूपावगमार्थं मादावल्पवक्तव्यत्वा दजीवप्रज्ञापना म्प्रतिपिपादयिषु सद्विषयप्रश्नसूत्रमाह–सकिंतं अजीवपण्णवणा? अथ किंतत् अजीवप्रज्ञापनेति अथवा कासा अजीवप्रज्ञापना–सूरिराह? अजीवपण्णवणा दुविहा पण्णत्ता तंजहा इत्यादि॥ अजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा रूप्यजीवप्रज्ञापनाच अरूप्यजीवप्रज्ञापनाच, रूपमेषा मस्तीतिरूपिण रूपग्रहणे गन्धादीना मुपलक्षणं तद्व्यतिरेकेण तस्यासम्भवात् तथाहि प्रतिपरमाणुरूपरसगन्धस्पर्शाः उक्तञ्च–कारणमेवतदन्त्यं सूक्ष्मोनित्यश्चभवतिपरमाणुः। एकरसगन्धवर्णो द्विस्पर्शःकार्यलिङ्गश्च॥१॥ तस्य व्यतिरेकः परस्पर रूपादीनामिति अथवा रूपं नाम स्पर्शरूपादिसम्मूर्छनात्मिकामूर्ति सायेषा मस्तीति रूपिणः रूपिणश्च ते अजीवाश्च रूप्यजीवा तेषां प्रज्ञापना रूप्यजीवप्रज्ञापना पुद्गलस्वरूपा जीवप्रज्ञापनेति यावत् पुद्गलाना मेव रूपादिमत्त्वात्, रूपिव्यतिरेकेण रूपिणो धर्मास्तिकायादय स्तेचते अजीवाश्च अरूप्यजीवा तेषां प्रज्ञापना ऽरूप्यजीवप्रज्ञापना चशब्दौ प्राग्वत्, तत्राल्पवक्तव्यत्वात् प्रथमतो ऽरूप्यजीवप्रज्ञापनाविवक्षुरिदमाह–सेकिंतमित्यादि॥ सेशब्दो ऽथशब्दार्थः अथ का सा अरूप्यजीवप्रज्ञापना? सूरिराह–

णाय अजीवपण्णवणाय। सेकिंत अजीवपण्णवणा २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–रूविअजीवपण्णवणा अरूविअजीवपण्णवणाय। सेकिंत अरूविअजीवपण्णवणा? अरूविअजीवपण्णवणा दसविहा पण्णत्ता तंजहा–

जीवपण्णवणा २ दुविहा पण्णत्ता तंजहा। ते कुण अजीव प्रज्ञापना शिष्यपूछे तमगुरु कहै अजीवप्रज्ञापना ना दायभेद ते कहेछे–ते जिम रूविअजीवपण्णवणा अरूविअजीवपण्णवणाय। रूपी अजीव प्रज्ञापना रूप गुरुत्व गन्धादि सहित कहिये, अरूपी अजीव परमाणु प्रज्ञापना परमाणु सूक्ष्मअरूपी एव विशेषो

। २९ । त्रिंशत्तम पासणयत्ति दर्शनता । ३० । एकत्रिंशत्तमं सञ्ज्ञा । ३१ । द्वात्रिंशत्तम संयमः । ३२ । त्रयस्त्रिंशत्तम मवधिः । ३३ । चतुस्त्रिंशत्तमं प्रविचारणा । ३४ । पञ्चत्रिंशत्तमं वेदना । ३५ । षट्त्रिंशत्तम समुद्घातः । ३६ । तदेव मुपन्यस्तानि पदानि ॥ साम्प्रत यथाक्रमं पदगतानि सूत्राणि वक्तव्यानि तत्र प्रथमपदगत मिद मादिम सूत्र—सेकित पन्नवणा इति ॥ अथास्य सूत्रस्य कः प्रस्ताव ? उच्यते प्रज्ञसूत्रमिदमेतस्यादा वुपन्यस्त मिदं ज्ञापयति पृच्छतो मध्यस्थबुद्धिमतो विनो भगवदर्हदुपदिष्टतत्त्वप्ररूपणाकार्यो मश्नोपस्य तथा चोक्त—मध्यस्थोबुद्धिमानर्थी श्रोतापात्रमितिस्मृत । तत्र सेशब्दो मागधदेशीप्रसिद्धनिपात सत्र अथार्थे अथवा अथशब्दार्थे सच वाक्योपन्यासार्थः किमितिपरप्रश्ने तन्ति तावदितिद्रष्टव्यं' तत्र क्रमो द्योतने तत एषः समुदायार्थ तिष्ठन्तु स्थानादीनि पदानि प्रष्टव्यानि यावत्क्रमवर्तित्वात् प्रज्ञापनानन्तरञ्च तेषा मुपन्यस्तत्वात् तत्र तावदे तावत् पृच्छामि किम्प्रज्ञापनेति ? अथवा प्राकृतशैल्या अभिधेयवल्लिङ्गवचनानि योजनीयानीति न्याया देवन्द्रष्टव्यं । तत्र कातावत् प्रज्ञापनेति ? एव सामान्येन केनचि त्प्रश्ने कृतेसति भगवान् गुरु शिष्यवचनानुरोधेन तदर्थे किञ्चि च्चिथ्योक्त प्रस्तुतार्थो—पन्नवणादुविहा पन्नत्ताइति ॥ अने नपागृहीतमिथ्याभिमानेन निवचनसूत्रेणैतदाख्यात सर्वमेवसूत्र गणधरप्रभृतीर्थंकरनिर्वचनरूपं किन्तु किञ्चिदन्यथापि यादृश्येनतु तथारूप यत उक्त—अत्थभासइअरहा सुत्तगथतिगणहरानिउणं मित्यादि ॥ तत्र प्रज्ञापनेति पूर्ववत् द्विविधा द्विप्रकारा प्रज्ञप्ता प्ररूपिता यदा तीर्थंकराएव निर्वक्तार स्तदा प्रज्ञप्ता मयाऽन्यैरपि तीर्थंकरैः यदा पुन रन्य कश्चि दाचार्य सम्मतानुसारी तदा तीर्थंकरगणधरै रिति द्वैविध्यमेवो पदर्शयति तद्यथा जीवपन्नवणाय अजीवपन्नवणाय ॥ तद्यथेति वक्ष्यमाणभेदकथनप्रकाशनार्थः जीवन्ति प्राणान् धारयन्तीति जीवाः प्राणाश्च द्विधा द्रव्यप्राणा

वे, यणा ३५ यतश्रोसमुग्धाए ३६ ॥ ४ ॥ से कि त पणवणा ? पणवणा दुविहा पणत्ता, तजहा—जीवपणव

वन्नापद ३५ तिवारपद्मा समद्घातपद । ३६ । अथितपत्रवणा २ दुविहापन्नता तयथा । ते कुण ते ११ बारमप्रापना परुगट जिताबधा जीवपद्मारामेद दीयप्र कारे कहा । तेकिम । जीवपन्नवणा अजीवपन्नवणा । जीवरा आपपर्ो ते जीवप्रज्ञापना, अजो अजीवनी प्रातपद्मो प्ररूपणा ते अजीवप्रज्ञापना । सेकित म

रूपश्च प्रतिनासन्ते स्मिन् व्यवस्थिताः पदार्थाः इत्याकाशं, यदास्वजिविभावाद् तदा याकिति सवभावाभिव्याप्त्या काशते इत्याकाशं, अस्त य प्रदेशा स्तया कायो स्तिकाय आकाशञ्च तत् अस्तिकाया याकाशास्तिकाय आकाशास्तिकायस्य इत्यादि पूर्ववत्नवरं प्रदेशा अनन्ता द्रष्टव्या, अलोकस्या नन्तत्वात् ॥ अद्धेति ॥ कालस्याख्या, अद्धा चासौ समयश्च अद्धासमयः, अथवा अद्धायाः समयो निर्विभागोभागः अयञ्च एकएव वर्त मान परमार्थतः सन्ना तीतानागताः समया स्तेषां यथाक्रमं विनष्टामुत्पन्नत्वेना सत्त्वात् ततः कायत्वाभावइतिदेशप्रदेशाकल्पनाविरहः, आवलि कादयस्तु पूर्वसमयविरोधनैवोत्तरसमयसद्भावइति ततः समुदयसमित्याद्यसम्भवेन व्यवहारार्थमेव कल्पिता इति द्रष्टव्य, तथा मीपा सिन्य क्रमोपन्या से किंप्रयोजन ? मुच्यते इह धर्मास्तिकाय इतिपदं मङ्गलभूत मादौ धर्मशब्दान्वितत्वात् पदार्थप्ररूपणाच सम्प्रतिप्रथमत उत्क्षिप्ता वर्त्तते ततो मङ्गलाय मादौ धर्मास्तिकायस्यो पादानं, धर्मास्तिकायप्रतिपक्षभूतया धर्मास्तिकाय स्तदनन्तर मधर्मास्तिकायस्य द्वयोरपि चानयो राधारभूत माकाशमिति तदनन्तर माकाशास्तिकायस्य ततः पुन र्जीवसाधर्म्यो द्वार समयस्य अथवा इह धर्माधर्मास्तिकायौ विभू नभवत स्तद्विभूत्वे तत्सामर्थ्यतो जीवपुद्गलाना मस्खलितप्रचारप्रवृत्तौ लोकालोकव्यवस्थानुपपत्ते, रस्ति च लोकालोकव्यवस्था तत्र २ प्रदेशे सूत्रे साक्षाद्गमनात् ततो यावतिदेश ञ्समाद्रौ तावत्प्रमाणोलोकः शेषस्त्वलाक इति सिद्ध मुक्तञ्च–धर्माधर्मविभुत्वात् सर्वत्रचजीवपुद्गलविचारात् । नालोकःकश्चिरस्या कञ्च सम्मतमेतदार्याणाम् ॥ १ ॥ तस्माद्धर्माधर्मा अवगाढौव्याप्यलोकखसर्व ॥ एवंहिपरिच्छिन्न सिध्यतिलोकस्तदविभुत्वात् ॥ २ ॥ ततएव लोकालोकव्यवस्था

कायस्सपएसा आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्सदेसे आगासत्थिकायस्सप्पदेसा अद्धासमए १० सेत्तंअरूवि

प्रदेश कथोय। अधर्मास्तिकाए अधर्मास्तिकायस्सदेसे अधर्मास्तिकायस्सपएसा ६। धर्मास्तिकायेना प्रतिपक्षो ते अधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायनादेश इम अधर्मास्तिकायनाप्रदेश अधर्मात आकाशाप्रमाण प्रदेशकहिये। आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्सदेसे आगासत्थिकायस्सपएसा ४। आकाशास्ति काय स्वभावे भाषे ते इमहीज ते आकाशास्तिकायनादेश इमहीज आकाशास्तिकायनो प्रदेश। अद्धासमए १ । कालसमय ।१ । सेत्त अरूविअजीव

मरूप्यजीवप्रज्ञापना दशविधा दशप्रकारा प्रज्ञप्ता अरूप्यजीवानां दशविधत्वात् तत्प्ररूपकादिदशविधोक्ता सदेव दशविधत्वं दर्शयति-तद्यथेत्यादि ॥ तद्यथेति वाक्यमाक्षेपकमयोपोतनार्थं तं इत्यविधस्य यदिवा तादि स्यमर्थं सर्वेशिष्यवचनेषु, सा दशविधा अरूप्यजीवप्रज्ञापना यथाभवति तथादर्श्यते ॥ धम्मत्थिकायइति ॥ जीवानां पुद्गलानाञ्च स्वभावतएव गतिपरिणामपरिणतानां तत्स्वभावधरणात् तत्स्वभावपोषणा द्धर्मं अस्तयःप्रदेशा तेषां कायः संघातः अस्तिकायमिकाये संघेवम्यतशेषराशीष इतिवचनात् ॥ अस्तिकाय प्रदेशसंघात इत्यर्थं धर्मश्चासौ अस्तिकायश्च धर्मास्तिकायः अनेनच सकलमेव धर्मास्तिकायरूप मवयविद्रव्यमाह अवयवीनाम अवयवानां तथारूपसंघातपरिणामविशेषएव नपुन रवयवद्रव्येभ्यः पृथगर्थान्तरद्रव्य तथानुपलम्भात् तन्तव एवहि आतानवितानरूपं संघातपरिणामविशेषमापन्ना लोके पटव्यपदेशभाजः उपलभ्यन्ते न तद्व्यतिरिक्तं पटाख्यंनाम द्रव्यान्तरंरपि—तन्त्वादिव्यतिरेकेण नपटाद्युपलम्भनं तन्त्वाद्योविशिष्टाहि पटादिव्यपदेशिनः ॥ १ ॥ कृत प्रसङ्गेना न्यत्र चिन्तितत्वा देतद्वादस्य तथाधर्मास्तिकायस्य देशइति तस्यैव धर्मास्तिकायस्य बुद्धिविकल्पितो द्व्यादिप्रदेशात्मको विभागः ॥ धम्मत्थिकायस्सपदेसा इति ॥ धर्मास्तिकायस्य प्रदेशा इति प्रकृष्टा देशा प्रदेशा निर्विभागाभागा इतिभाव स्तेच संख्येया लोकाकाशप्रमाणत्वा तथा अतएवच इत्यत्र धर्मास्तिकायप्रतिपक्षभूतो ऽधर्मास्तिकायः किमुक्तं भवति जीवपुद्गलानां स्थितिपरिणामपरिणतानां तत्परिणामोपष्टम्भको मूर्तोऽसंख्यातप्रदेशसंघातात्मको ऽधर्मास्तिकायः अधर्मास्तिकायस्य देश इत्यादि पूर्ववत् तथा आङिति मर्यादया स्वस्वभावाऽपरित्यागरूपया काशन्ते स्व

धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपएसा, अधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्सदेसे अधम्मत्थि

अथ—भारचमेवतदंत सूक्ष्मानिःयभवतिपरम।१।एकरसगन्धवर्णो द्विस्पर्शोकार्यलिंगश्च ॥१॥ तेषितपरूपिअजीवपन्नवणा २ दशविधपन्नत्ता तजहा।ते अव अजीवपन्नवणा अरूपीना दशभेद कह्याछे,ते जिम छिवजे गव कहेछे—धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपएसा।१। धर्मास्तिकाय पुद्गलादिकने गमनकरतां साहाय्यदे ते धर्मास्तिकाय, देशसमस्त सवदेशनो केवोइक विभाग ते देशकहिये, तिवारे प्रदेश धर्मास्तिकायनो प्रदेश निर्विभाग सूक्ष्म

मामर्थ इत्यादि ॥ तेऽरूप्यादयो यथासम्भव समासत उद्देशेन पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—वर्णपरिणता वर्णतःपरिणता वर्णमात्रा इत्यर्थः एवं गन्धपरिणता रसपरिणता स्पर्शपरिणता संस्थानपरिणता परिणता इति अतीतकालनिर्देशो वर्तमानानागतकालोपलक्षण वर्तमानानागतत्व मनारता तीतस्वसा सम्भवात् तथाहि—योवर्त्तमानत्व मतिक्रान्तः सोतीतो भवति वर्तमानत्व च सो गुजयति योनागतत्व मतिक्रान्तवा नुत्कम्य—भवतिसमामातीता यःप्राप्तोमामवर्त्तमानत्व ॥ एष्यमामवजवति यःप्राप्स्यतिवर्त्तमानत्वम् ॥ १ ॥ ततो वर्णपरिणता इति वर्णरूपतया परिणताः परिणमन्तीति परिणमिष्यन्तीति द्रष्टव्य मेवं गन्धरसपरिणता इत्याद्यपि परिज्ञावनीयं ॥ जेवण्णपरिणया इत्यादि ॥ येवर्णपरिणता से पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—कृष्णवर्णपरिणता कज्जलादिवत् नीलवर्णपरिणता नील्यादिवत्, लोहितवर्णपरिणता हिङ्गुलकादिवत् हारिद्रवर्णपरिणता हरिद्रादिवत् शुक्लवर्णपरिणता शङ्खादिवत् येगन्धपरिणता ते द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—सुरभिगन्धपरिणताश्च दुरभिगन्धपरिणताश्च यमद्रौ परिणाममवर्म प्रति विवक्षाजावस्थापनार्थो तथाहि—यथावर्यविदवस्थिताः सामग्रीवशतः सुरभिगन्धपरिणाम भजन्ते तथा कदाचिदसभि

परिणया फासपरिणया संठाणपरिणया । जेवण्णपरिणया ते समासउ पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—कालवण्ण परिणया नीलवण्णपरिणया लोहियवण्णपरिणया हालिद्दवण्णपरिणया सुक्किलवण्णपरिणया। जे गंधपरिणया

वर्णपरिणया वर्णपरिणाम भाव इत्यादि, संक्षेपस्थितिकथति १ गन्धपरिणत २ रसपरिणत ३ स्पर्शपरिणत ४ संस्थानपरिणत ५ । जेवण्णपरिणया ते पंचवि धा परूप्या तंजहा । जिके वर्णपरिणतके तिके पांचप्रकारना कह्या ते किम कहेके—कालवर्णपरिणया नीलवर्णपरिणया लोहियवर्णपरिणया हा लिद्दवर्णपरिणया सुक्किलवर्णपरिणया ५ । कृष्णवर्णपरिणत ते काजलनीपरे श्यामवर्ण परिणम्यो, नीलवर्ण परिणत नीलीनीपरे, रक्तवर्णपरिणत हिंगलू नीपरे पीतवर्ण परिणत हलद नीपरे, सेतवर्ण परिणत शंख नीपरे । गंधपरिणया ते दुविहा पन्नत्ता तंजहा । जिके गन्धपरिणत तेहना दोयभेदकह्या ते कहेछे—सुब्भिगंधपरिणया दुब्भिगंधपरिणया । सुगन्ध परिणत चोवानीपरे, दुर्गन्धपरिणत लसुननीपरे । जेरसपरिणया ते पंचविहा पन्नत्ता तंज

हेतू धर्माधर्मास्तिकायौ विवक्षितौ तयोरुपादानं तत्रापि माङ्गलिकत्वात् प्रथमतो धर्मास्तिकायस्य तत्प्रतिपक्षत्वात् ततोऽधर्मास्तिकायस्य ततो लोकालोकव्यापित्वात् आकाशास्तिकायस्य तदनन्तरं लोके समयासमयविभागव्यवस्थाकारित्वात् अद्धा समयस्य, एवमागमानुसारेण यदपि सुस्थमुपा ति वक्तव्यमित्यलं प्रसङ्गेन प्रकृतोपसंहारमाह—सेत्तं अरूविअजीवपन्नवणा ॥ सैषा अरूप्यजीवप्रज्ञापना पुन राह शिष्यः—सेकिंतमित्यादि ॥ अथ का सा रूप्यजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह—रूप्यजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—स्कन्धाः स्कन्दन्ति शुष्यन्ति धीयन्ते च पुष्यन्ते पुद्गलानां विचटनेन चटनेन चेति स्कन्धाः पृषोदरादय इतिरूपनिष्पत्तिः, बहुवचनं पुद्गलस्कन्धानामानन्त्यख्यापनार्थं च, न चा नन्त्यमनुपपन्नमागमे भिधानात् तथा च वक्ष्यति—दव्वओ णं पोग्गलत्थिकाए णं अणंता इत्यादि ॥ स्कन्धदेशाः स्कन्धानामेव स्कन्धत्वपरिणाममजहतो बुद्धिपरिकल्पिता द्व्यादि प्रदेशात्मका विभागा॥ अत्रापि बहुवचनं अनन्तप्रादेशिकेषु तथाविधेषु स्कन्धेषु प्रदेशानन्तत्वसम्भावनार्थं स्कन्धानां स्कन्धत्वपरिणामपरिणताना बुद्धिपरिकल्पिताः प्रकृष्टा देशा निर्विभागा भागाः परमाणव इत्यर्थः, स्कन्धप्रदेशाः अत्रापि बहुवचनं प्रदेशानन्तत्वसम्भावनार्थं परमाणुपुद्गला इति परमाश्च तेऽणवश्च परमाणवो निर्विभागद्रव्यरूपा स्ते च ते पुद्गलाश्च परमाणुपुद्गलाः स्कन्धत्वपरिणामरहिताः केवलाः परमाणव इत्यर्थः। तेऽच

अजीवपन्नवणा ॥ सेकिंतं रूविअजीवपन्नवणा रूविअजीवपन्नवणा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा—खंधा खंधदे सा खंधप्पएसा परमाणुपोग्गला ४। तेसमासओ पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—वण्णपरिणया गंधपरिणया रस

पन्नवणा। ते जिम अरूपी अजीव प्रज्ञापना जाणवी। सेकिं तं रूपीअजीवपन्नवणा २ चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा। ते पिण्डरूप खंध रूपी जिम अजीवपन्ना पना कहि शुकहै अजीव प्रज्ञापनारा चारभेद कह्या ते जिम कहुं छुं। खंधा खंधदेसा खंधप्पएसा परमाणुपुग्गला ४। खंध ते समस्तवस्तु, देश ते को इक विभाग प्रदेश ते कहिये निर्विभाग सूक्ष्मतेप्रदेश परमाणु ते निर्विभागरूप अनन्तप्रदेश निष्पन्न ते परमाणुपुद्गल कहिये। ते समासथी पंचविहा प न्नत्ता तंजहा। ते परमाणुपुद्गल पांचप्रकारेकह्या ते पांचप्रकार जिम कहिये—वण्णपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया संठाणपरिणया ५।

मानहइत्यादि ॥ तरकम्पादयो यथाक्रमेण समासतः सङ्क्षेपेण पञ्चविधाः प्रथमा तद्यथा—वर्णपरिणता वर्णतःपरिणता वर्णमाज इत्यर्थः एवं गन्धप रिणताः रसपरिणताः स्पर्शपरिणताः संस्थानपरिणताः परिणता इति अतीतकालनिर्देशो वर्तमानानागतकालोपलक्षणं वर्तमानानामतत्व मनारूढा तीतस्यसा सम्भवात् तथाहि—यावर्तमानस्य मतिक्रान्तः सोतीतो भवति वर्तमानस्य च सो भुजवति योनागतस्य मतिक्रान्तया मुक्तश्च—नयतिमनानातीता यप्राप्तोमानवर्तमानस्य ॥ एष्यश्चनामसम्भवति याप्राप्स्यतिवर्तमानत्वम् ॥ १ ॥ ततो वर्णपरिणता इति वर्णरूपतया परिणताः परिणमन्तीति परिणमिष्यन्तीति द्रष्टव्य मेवं गन्धरसपरिणता इत्याद्यपि परिज्ञातव्यं ॥ जेवण्णपरिणया इत्यादि ॥ येवर्णपरिणता स्ते पञ्चविधाः प्रथमा तद्यथा—कृष्णवर्णपरिणताः कज्जलादिवत् नीलवर्णपरिणता नील्यादिवत्, लोहितवर्णपरिणता हिङ्गुलकादिवत् हारिद्रव र्णपरिणता हरिद्रादिवत् शुक्लवर्णपरिणताः शङ्खादिवत् येगन्धपरिणता स्ते द्विविधाः प्रथमा तद्यथा—सुरभिगन्धपरिणताश्च दुरभिगन्धपरिणताश्च भवाद्यो परिणामभयम प्रति विशेषाजावस्थापमार्यो तथाहि—यथाकर्पचिदवस्थिताः सामग्रीवशत सुरभिगन्धपरिणामं प्रजन्ते तथा कथञ्चिदवस्थि

परिणया फासपरिणया संठाणपरिणया । जेवण्णपरिणया ते समासओ पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—कालवण्ण परिणया नीलवण्णपरिणया लोहियवण्णपरिणया हालिद्दवण्णपरिणया सुक्किल्लवण्णपरिणया। जे गंधपरिणया

वर्णपरिणया वर्णपरिणाम भाव स्थान, घणासार्वतिमपति १ गन्धपरिणत २ रसपरिणत ३ स्पर्शपरिणत ४ संस्थानपरिणत ५ । जेवण्णपरिणया ते पंचवि ध्य पणता तंजहा । जिमे ते वर्णपरिणत्वे तिके पांचप्रकारना कह्या ते जिम कहेछे—कालवर्णपरिणया नीलवर्णपरिणया हालिद्दवर्णपरिणया रा तिदवर्णपरिणया सक्किलवर्णपरिणया १ । कालवर्णपरिणत ते काजलनीपरे कालवर्ण परिणम्यो, नीलवर्ण परिणत अंगालनीपरे, रक्तवर्णपरिणत हिंगलू नीपरे पीतवर्ण परिणत हलद नीपरे स तेव परिणत शंख नीपरे । गन्धपरिणया ते दुविहा पणत्ता तंजहा । जिके गन्धपरिणत तेहना दोयभेदकह्या ते कहेछे—सुब्भिगंधपरिणया दुब्भिगंधपरिणया । सुगन्ध परिणत चोवकनीपरे, दुर्गन्धपरिणत लसुननीपरे । जेरसपरिणया ते पंचविहा पणत्ता तंज

हेतू धर्मोधर्मास्तिकाया वित्यमयो रादावुपादाम तत्रापि माङ्गलिकत्वात् प्रथमतो धर्मास्तिकायस्य तत्प्रतिपक्षत्वात् ततो ऽधर्मास्तिकायस्य ततो लोकालोकव्यापित्वा दाकाशास्तिकायस्य तदनन्तरं लोके समयासमयक्षेत्रव्यवस्थाकारित्वा दद्धा समयस्य, एवं मागमानुसारेणा न्यदपि युक्त्यनुपा ति वक्तव्य मित्यलं प्रसङ्गेन प्रस्तोपसंहारमाह–सेत्तमरूविअजीवपन्नवणा ॥ सेयं अरूप्यजीवप्रज्ञापना पुन राह विनेयः–सेकितमित्यादि ॥ अथकासा रूप्यजीवप्रज्ञापना ? सूरि राह–रूप्यजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञप्ता तद्यथा–स्कन्धा स्कन्दन्ति शुष्यन्ति धीयन्ते च पुष्यन्ते पुद्गलानां विघटनेन चटनेनचेति स्कन्धाः पृषोदरादय इतिरूपनिष्पत्तिः बहुवचनं पुद्गलस्कन्धानां मानन्त्य स्यापनार्थं च, न पा मन्त्यमनुपपन्न मागमे नियाना तथा च वक्ष्यन्ति–खन्धोगपुग्गलत्थिकायवत्तावसाइत्यादि ॥ स्कन्धदेशाः स्कन्धानामेव स्कन्धत्वपरिणाममजहतो बुद्धिपरिकल्पिता व्यादि प्रदेशात्मका विभागाः अत्रापि बहुवचन मनन्तप्रादेशिकेषु तथाविधेषु स्कन्धेषु प्रदेशानन्तत्वसम्भावनार्थं स्कन्धानां स्कन्धत्वपरिणामपरिणतानां बुद्धिपरिकल्पिताः प्रकृष्टादेशाः निर्विभागाभागाः परमाणव इत्यर्थः स्कन्धप्रदेशाः अत्रापि बहुवचन प्रदेशानन्तत्वसम्भावनार्थं परमाणुपुद्गला इति परमायते अणवश्च परमाणवो निर्विभागद्रव्यरूपा स्ते च ते पुद्गलाश्च परमाणुपुद्गलाः स्कन्धत्वपरिणामरहिताः केवलाः परमाणव इत्यर्थः, सेत्त

मजीवपन्नवणा॥ सेकिंत रूविअजीवपन्नवणा रूविअजीवपन्नवणा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा–खंधा खंधदे सा खंधप्पएसा परमाणुपोग्गला ४। तेसमासउ पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा–वन्नपरिणया गंधपरिणया रस

पन्नवणा । ते त्रिम अरूपी अजीव प्रज्ञापना जाणवी । हेवै ते रूपीअजीवपन्नवणा २ चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा। ते चियार कुण रूपी जिम अजीवपन्ना पना कहि मुनवै अजीव प्रज्ञापनारा चारमेद कह्या ते जिम कहुं । खंधा खंधदेसा खंधप्पएसा परमाणुपुग्गला ४। खंध ते समस्तवस्तु, देश ते को एक विभाग प्रदेश ते कहिये निविभाग सूक्ष्म ते प्रदेश परमाणु ते निविभागरूप अनन्तप्रदेशे जिमव ते परमाणुपुद्गल कहिये। ते समासथी पंचविहा प न्नता तंजहा। ते परमाणुपुद्गल पांचप्रकारेकह्या ते पांचप्रकार जिम कहेछे—वर्णपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया संठाणपरिणया ५।

मानमठइत्यादि ॥ तेरून्यादयो यथासम्भवं समासतः सङ्क्षेपेण पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—वर्णपरिणता वर्णतःपरिणता वर्णमात्र इत्यर्थः एवं गन्धपरिणता रसपरिणताः स्पर्शपरिणताः संस्थानपरिणताः परिणता इति अतीतकालनिर्देशो वर्तमानानागतकालोपलक्षणं वर्तमानानागतस्य मन्तरेणा तीतत्वस्या सम्भवात् तथाहि—यो वर्तमानत्व मतिक्रान्तः सोऽतीतो भवति वर्तमानत्वं च सो गुणवति योऽनागतस्य मतिक्रान्ततया मुक्तश्च—भवतिममासातीता यन्मासोनामवर्तमानत्वं ॥ एष्यद्भमासञ्जनवति यःप्राप्स्यतिवर्तमानत्वम् ॥ १ ॥ ततो वर्णपरिणता इति वर्णरूपतया परिणताः परिणमन्तीति परिणमिष्यन्तीति द्रष्टव्य मेवं गन्धरसपरिणता इत्याद्यपि परिज्ञातव्यमीयं ॥ येवर्णपरिणया इत्यादि ॥ येवर्णपरिणता स्ते पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता, तद्यथा—कृष्णवर्णपरिणताः कज्जलादिवत् नीलवर्णपरिणता नील्यादिवत्, लोहितवर्णपरिणता हिङ्गुलकादिवत्, हारिद्रवर्णपरिणता हरिद्रादिवत् शुक्लवर्णपरिणताः शङ्खादिवत् येगन्धपरिणता स्ते द्विविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—सुरभिगन्धपरिणताश्च दुरभिगन्धपरिणताश्च चशब्दौ परिणामभवनं प्रति विशेषाभावख्यापनार्थौ तथाहि—यथाकर्पविवस्थिता सामग्रीवशतः सुरभिगन्धपरिणामं भजन्ते तथा कदाचिद्विवस्थि

परिणया फासपरिणया सठाणपरिणया । जेवण्णपरिणया ते समासओ पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—कालवण्ण परिणया नीलवण्णपरिणया लोहियवण्णपरिणया हालिद्दवण्णपरिणया सुक्किल्लवण्णपरिणया । जे गंधपरिणया

वर्णपरिणया वर्णपरिणाम भाव इत्यादि, समासअर्थतिअर्थति १ गन्धपरिणत २ रसपरिणत ३ स्पर्शपरिणत ४ संस्थानपरिणत ५ । जेवर्णपरिणया ते पंचविधा पण्णत्ता तंजहा । जिके ते वर्णपरिणत छे तिके पांचप्रकारना कह्या ते जिम कहेछे—कालवर्णपरिणया नीलवर्णपरिणया लोहितवर्णपरिणया हालिद्रवर्णपरिणया सुक्किलवर्णपरिणया ५ । कालवर्णपरिणत ते काजलनीपरे श्यामवर्ण परिणम्यो, नीलवर्ण परिणत नीलनीपरे, रक्तवर्णपरिणत हिंगलूनीपरे पीतवर्ण परिणत हलद नीपरे, श्वेतवर्ण परिणत शंख नीपरे । गंधपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा । जिके गन्धपरिणत तेहना दोयभेद कह्या ते कहेछे—सुब्भिगंधपरिणया दुब्भिगंधपरिणया । सुगन्ध परिणत चीवडनीपरे, दुर्गन्धपरिणत लसुननीपरे । जेरसपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता तंज

ता एव सामग्रीवशतो दुरभिगन्धपरिणाम भजन्ति, सुरभिगन्धपरिणता च यथा श्रीखण्डादयः दुरभिगन्धपरिणता लशुनादिवत्, ये रसपरिणता ते पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—तिक्तरसपरिणता कोशातक्यादिवत् कटुकरसपरिणता शुण्ठ्यादिवत् कषायरसपरिणता अपक्वकपित्थादिवत् आम्लरसपरिणता आम्लवेतसादिवत् मधुररसपरिणता शर्करादिवत्॥ ये स्पर्शपरिणता ते अष्टविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—कर्कशस्पर्शपरिणता पाषाणादिवत् मृदुस्पर्शपरिणता हंसतूलादिवत् गुरुकस्पर्शपरिणता वज्रादिवत् लघुकस्पर्शपरिणता अर्कतूलादिवत् शीतस्पर्शपरिणता मृणालादिवत् उष्णस्पर्शपरिणता वह्न्यादिवत् स्निग्धस्पर्शपरिणता घृतादिवत् रूक्षस्पर्शपरिणता भस्मादिवत्॥ ये संस्थानपरिणता,

ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सुब्भिगंधपरिणया दुब्भिगंधपरिणया। जे रसपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता तंजहा तित्तरसपरिणया कडुयरसपरिणया कसायरसपरिणया अंबिलरसपरिणया महुररसपरिणया। जे फासपरिणया ते अट्ठविहा पण्णत्ता, तंजहा—कक्खडफासपरिणया मउयफासपरिणया गरुयफासपरिणया लहुयफासपरिणया सीयफासपरिणया उसिणफासपरिणया णिद्धफासपरिणया लुक्खफासपरिणया। जे संठाणपरि

णा। जे रस परिणत छै तेहना पांच प्रकारना कह्या छै—तित्तरसपरिणया कडुयरसपरिणया कसायरसपरिणया अंबिलरसपरिणया महुररसपरिणया। तीखारस परिणत छै कासातकीपरे कुसिअव ज्युं कासात ते कुसिअम, कडुयरस परिणत सूंठनीपरे, कसायरस परिणत काचो कोठनीपरे आंबलरस परिणत आंबलवेतनीपरे, मधुररस साकरनीपरे। जेफासपरिणया तेअट्ठविहा पन्नत्ता तंजहा। जिके फरसपणे परिणम्या छै तेहना ८ भेदकह्या ते किम कहै छै—कक्खडफास य मउयफास य गरुयफास य लहुयफास परिणया। कक्खड स्पर्श पाषाणनीपरे, मृदु कोमल स्पर्श हंसनोरुंआ गरुस्पर्श परिणत वज्रनीपरे तिम लघुस्पर्श परिणत अर्कतूलनीपरे। सीयफास य उसिणफास य णिद्धफास य लुक्खफास परिणया। शीत स्पर्श परिणत मृणालनीपरे उष्णस्पर्श परिणत अग्निनीपरे स्निग्ध चीकणस्पर्श परिणत घृतनीपरे रूक्षस्पर्श परिणत भस्मनीपरे। जे संठाण प

ते पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—परिमण्डलसंस्थानपरिणता वलयवत्, वृत्तसंस्थानपरिणताः कुलालचक्रादिवत्' त्र्यस्रसंस्थानपरिणता शृङ्गाटका-
दिवत् चतुरस्रसंस्थानपरिणता कुम्भिकादिवत् आयतसंस्थानपरिणता दण्डादिवत्, एतानि च परिमण्डलादीनि संस्थानानि घनप्रतरभेदेन
द्विविधानि भवन्ति पुनः परिमण्डलं मुक्त्वा शेषाणि ओजःप्रदेशजनितानि युग्मप्रदेशजनितानि इति द्विधा तत्रोत्कृष्टं परिमण्डलादि सर्वमनन्ताणु-
निष्पन्नं असंख्येयप्रदेशावगाढं चेति प्रतीतमेव जघन्यं तु प्रतिनियतसंख्यपरमाण्वात्मकं मता नाभिर्दिष्टं भावतु लक्ष्यते इति विनेयजनानुग्रहाय तदुप-
दर्श्यते—तत्र ओजःप्रदेशप्रतरवृत्तं पञ्चपरमाणुनिष्पन्नं पञ्चाकाशप्रदेशावगाढं च तद्यथा—एकः परमाणुर्मध्ये स्थाप्यते चत्वारः क्रमेण पूर्वादिषु
चतसृषु दिक्षु युग्मप्रदेशप्रतरवृत्तं द्वादशपरमाण्वात्मकं द्वादशप्रदेशावगाढं च तत्र निरन्तरं चत्वारः परमाणवः चतुर्ष्वाकाशप्रदेशेषु रुचकाकारेण
व्यवस्थाप्यन्ते ततः तत्परिक्षेपेण शेषा अष्टौ ॥ ओजःप्रदेशघनवृत्तं सप्तपरमाण्वात्मकं सप्तप्रदेशावगाढं च तत्रैव—तत्रैव पञ्चप्रदेशे प्रतरवृत्तमध्य-
स्थितस्य परमाणोः उपरिष्टाद् अधस्ताच्च एकैकोऽणुः स्थाप्यते तत एवं सप्तप्रदेशं भवति ॥ युग्मप्रदेशं घनवृत्तं द्वात्रिंशत्प्रदेशं द्वात्रिंशत्प्रदेशावगाढं च
तत्रैव—पूर्वोक्तद्वादशप्रदेशात्मकस्य प्रतरवृत्तस्योपरि द्वादश तत उपरिष्टाद् अधस्ताच्च चत्वारश्चत्वारः परमाणवः इति ॥ ओजःप्रदेशं प्रतरत्र्यस्रं त्रिप्र-
देशं त्रिप्रदेशावगाढं च तत्रैव—पूर्वं तिर्यगणुद्वयं न्यस्यते तत आद्यस्य च एकोऽणुः ॥ युग्मप्रदेशप्रतरत्र्यस्रं षट्परमाणुनिष्पन्नं षट्प्रदेशावगाढं च तत्र
तिर्यग्निरन्तरं त्रयः परमाणवः स्थाप्यन्ते तत आद्यस्य च उपर्यधोभावेन अणुद्वयं द्वितीयस्य च एकोऽणुः स्थाप्यते ॥ ओजःप्रदेशं घनत्र्यस्रं पञ्चत्रिं-

णया ते पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—परिमंडलसंठाणपरिणया वट्टसंठाणपरिणया तंससंठाणपरिणया चउर

रिणया ते पंचविहा पण्णत्ता तंजहा। जिके संस्थान परिणत तेहना पांचप्रकार कह्या तेहीज कहे छे—परिमंडलसंठाण य वट्टसंठाण य तंससंठाण य
चउरंससंठाण य आययसंठाण परिणया। परिमण्डलसंस्थान परिणत वलयनीपरे, वृत्तसंस्थान परिणत कुंभारचक्रनीपरे, त्र्यस्र त्रिकोणो संस्थानपरि-
णत सिंघाडानीपरे चतुरस्र चोखूणो संस्थानपरिणत कुंभीनीपरे, आयतसंस्थानपरिणत दंडनीपरे, पंचपरमाणु निष्पन्न पंचाकाशप्रदेशावगाढ इम सघ

प्रत: सस्थानतय धाम्या तत्र कृीगन्धौ पञ्चरसाः मष्टौस्पर्शाः पञ्चसस्थानानि एतेच मीलिता विंशतिरिति ॥ कृष्णवर्णपरिणता एतावन्तो मङ्गानुलमन्ते २०, एवं नीलवर्णपरिणताअपि २० लोहितवर्णपरिणता अपि २० हारिद्रवर्णपरिणता अपि २० शुक्लवर्णपरिणता अपि २० एवं

सठाणर्ह परिमडलसठाणपरिणतावि वट्टसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि । जेवण्णर्ह नीलवण्णपरिणता त गधर्ह सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, रसर्ह तित्तरसपरिणयावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अबिलरसपरिणतावि महुररसपरिण तावि, फासर्ह कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, सठाणर्ह परिमडल

पञ्चभण्डेमो माट कार सुगन्ध परिणतहुवे गुरुस्पर्श परिणत कार लघुस्पर्श परिणतहुवे शीतस्पर्श परिणत उष्णस्पर्श परिणतहुवे स्निग्धपरिणत कार रुक्षस्पर्श परिणतहुवे । सठाणथापरिमण्डलसठाणपरिणया । समानवको कोइ परिमण्डल संस्थान परिणतहुवे । वट्टसठाण प० तससंठाण प चउर ससंठाण प आयतसठाणपरिणया । कार वृत्तसंस्थानपरिणतहुवे त्र्यस्रसंस्थान परिणतहुवे कार चतुरस्रसंस्थाने परिणतहुवे आयतसंस्थान परिणत हुवे जेवण्णथानीलवर्णपरिणया । जिवेवर्णको नीलवर्ण परिणतहुवे । तेमधयो सब्भिगंध प दुब्भिगंध परिणयावि । ते गन्धको सुगन्ध परिणतहुवेदु र्गन्ध परिणतहुवे । रसथा । रसवको । तित्तरस प कडुयरस प कसायरस प अंबिलरस प महुररसपरिणया । तिक्तरस परिणत हुवे कटुक रस परिणतहुवे कषायरस परिणतहुवे आंबिलरस परिणतहुवे मीठारस परिणतहुवे । फासथा । स्पर्शवको । कक्खडफास प० मउयफास प गरुयफा स प लहुयफास प सीयफास प उसिणफास प णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयावि । कर्कशस्पर्श परिणतहुवे मृदुस्पर्शपरिणतहुवे गुरुस्पर्श परिण तहुवे लघुस्पर्शपरिणतहुवे शीतस्पर्शपरिणत हुवे उष्णस्पर्शपरिणतहुवे स्निग्धस्पर्शपरिणतहुवे रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे । संठाणथो परिमंडलसठाणपरि

घउरंससंठाणपरिणताऽवि आयतसंठाणपरि
सठाणपरिणताऽवि वट्टसंठाणपरिणताऽवि तंससंठाणपरिणताऽवि घउरंससंठाणपरिणताऽवि आयतसंठाणपरि
णताऽवि। जे वण्णओ लोहियवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणताऽवि दुब्भिगंधपरिणताऽवि, रसओ तित्तरस
परिणताऽवि कडुयरसपरिणताऽवि कसायरसपरिणताऽवि अंबिलरसपरिणताऽवि महुररसपरिणताऽवि, फासओ
कक्खडफासपरिणताऽवि मउयफासपरिणयाऽवि गरुयफासपरिणताऽवि लहुयफासपरिणताऽवि सीतफासपरिण
ताऽवि उसिणफासपरिणताऽवि णिद्धफासपरिणताऽवि लुक्खफासपरिणताऽवि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिण
ताऽवि वट्टसंठाणपरिणताऽवि तंससंठाणपरिणताऽवि चउरंससंठाणपरिणताऽवि आयतसंठाणपरिणताऽवि।

णवा। संठाणथकी परिमंडलसंठाण परिणतहवे। वट्टसंठाण प० तंससंठाण प० चउरंससंठाण प० आयतसंठाणपरिणयाऽवि। इम संठाणपरिणत हवे वार त्र्यस्रसंठाणपरिणतहवे वार चतुरस्रसंठाणपरिणतहुवे आयतसंठाणपरिणतहुवे। वेणषा लोहियवण्णपरिणया। वेणथकी लोहितवर्ण परिणतहवे। ते गंधषा। ते गन्धथकी। सुब्भिगंध प० दुब्भिगंध परिणयाऽवि। सुगन्ध परिणत पिणहुवे दुगन्धपरिणत पणिहुवे। रसथो। रसथकी। तित्तरस प० कडुयरस प० कसायरस प० अंबिलरस प० महुररसपरिणयाऽवि। तिक्तरसपरिणतहुवे कटुकरसपरिणतहुवे कषायरसपरिणतहुवे आंबिलरसपरिण तहवे मधुररसपरिणत हवे। फासथा। स्पर्शथकी। कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफासप लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफासप णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयाऽवि। कर्कशस्पर्शपरिणतहवे सुकुमारस्पर्शपरिणतहवे गुरुस्पर्शपरिणतहवे लघुस्पर्शपरिणतहवे शीतस्पर्शपरिणतहुवे उष्णस्पर्श परिणतहुवे स्निग्धस्पर्शपरिणतहवे रूक्षस्पर्शपरिणतहवे। संठाणषा। संस्थानथकी। परिमंडलसंठाणपरिणया। परिमंडलसंस्थान परिणत हवे। वट्टसं ठाण प० तंससंठाण प० चउरंसआयतसंठाण परिणयाऽवि। वार वृत्तसंस्थान परिणतहुवे वार त्र्यस्रसंस्थानपरिणतहुवे वार चतुरस्रआयतसं स्थानते परिणत हवे। आ०षा। व रणथकी। हालिद्दवण्णपरिणया। हालिद्दवण पीतवर्ण परिणत हुवे। ते गंधषो। ते गन्धथकी। सुब्भिगंध दुब्भि

प्रात मन्यामतव वाच्या: तत्र द्वीतभ्यौ पञ्चरसा अष्टौस्पर्शौ पञ्चसस्थानानि एतेव मीलिता विंशतिरिति ॥ कृष्णवर्णपरिणता एतावन्तो भङ्गामुममग्ते २० एव नीलवर्णपरिणतापि २० लोहितवर्णपरिणता अपि २० हारिद्रवर्णपरिणता अपि २० शुक्लवर्णपरिणता अपि २० एव

सठाणहे परिमंडलसठाणपरिणतावि वट्टसठाणपरिणतावि तंससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि । जेवरूते नीलवन्नपरिणता त गधह सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, रसह तित्तरसपरिणयावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासह कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, सठाणह परिमंडल

प्रभुभणीयो माट कोई मृदुस्पर्श परिणत हुवे मृदुस्पर्श परिणत कोई लघुस्पर्श परिणत हुवे सीतस्पर्श परिणत उष्णस्पर्श परिणत हुवे स्निग्धपरिणत कोई रूक्षस्पर्श परिणत हुवे । सठाणथापरिमंडलसठाणपरिणता । सस्थानथको कोई परिमंडल संस्थान परिणत हुवे । वट्टसठाण प० तंससठाण प चउरंससंठाण प आयतसठाणपरिणया । कोई वृत्तसंस्थानपरिणत हुवे त्र्यस्रसंस्थान परिणत हुवे कोई चतुरस्रसंस्थाने परिणत हुवे आयतसंस्थान परिणत हुवे जेवन्नथाणीलवन्नपरिणया । जिकेवर्णथकी नीलवर्ण परिणत हुवे । तेगधथी सुब्भिगध प दुब्भिगंध परिणयावि । ते गन्धथकी सुगन्ध परिणत हुवे दुर्गन्ध परिणत हुवे । रसथा । रसथकी । तित्तरस प कडुयरस प कसायरस प अंबिलरस प महुररसपरिणया । तिक्तरस परिणत हुवे कटुक रस परिणत हुवे कषायरस परिणत हुवे आंबिलरस परिणत हुवे मीठारस परिणत हुवे । फासथी । स्पर्शथकी । कक्खडफास प मउयफास प गरुयफास प लहुयफास प सीयफास प उसिणफास प णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयावि । कर्कशस्पर्श परिणत हुवे मृदुस्पर्शपरिणत हुवे गुरुस्पर्श परिणत हुवे लघुस्पर्शपरिणत हुवे सीतस्पर्शपरिणत हुवे उष्णस्पर्शपरिणत हुवे स्निग्धस्पर्शपरिणत हुवे रूक्षस्पर्शपरिणत हुवे । सठाणथी परिमंडलसठाणपरि

पवि नीलवर्णपरिणतापि लोहितवर्णपरिणतापि हारिद्रवर्णपरिणतापि शुक्लवर्णपरिणतापि ८ एवं रसतः ५ स्पर्शतः ८ संस्थानतः ५ एतेच मीलिता त्रयोविंशति रिति सुरभिगन्धपरिणता त्रयोविंशति भङ्गामूलनन्ते, एवं दुरभिगन्धपरिणतापि २३ ततो गन्धपदेन सर्वा भङ्गानां पट्च त्वारिंशत् रसमधिकृत्याह–ये रसतो रसमधिकृत्य तिक्तरसपरिणता स वर्णतः ५ गन्धतः २ स्पर्शतः ८ संस्थानतः ५ एत सर्वेपि एकत्र मीलिता विंशतिरिति॥ तिक्तरसपरिणता विंशतिभङ्गा लभन्ते २० एवं कटुकरसपरिणता २० कषायरसपरिणताः २० अम्लरसपरिणताः २०, मधुररसप

फासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, सठाणओ परिमंडलसठाणपरिणतावि वट्टसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि। जेरसओ कडुयरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणतावि नीलवण्णपरिणतावि लोहितवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणतावि सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासप० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासप० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणओ परिमंडलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणप० आयतसठाणप

जो परिमंडलसंस्थानपरिणत हुवे इम यावत् आयतसंस्थान परिणत हुवे। जे रसथी कडुरसपरिणता। तिके रसथकी कटुकरस परिणत हुवे। तत्वथी कालवर्णपरिणतावि। ते वर्णथकी काला वर्णे परिणत हुवे। आवत शुक्लवर्णपरिणतावि। यावत् धारे शुक्लवर्ण परिणत हुवे। गंधथी सुब्भिगंध प दुब्भिगंध परिणतावि। गन्धथकी सुगन्ध गन्ध परिणत हुवे दुगन्ध परिणत हुवे। फासथी कक्खडफास प आवत लुक्खफास परिणतावि। स्पर्शथकी कर्कश स्पर्शपरिणत हुवे इम यावत् लुक्खस्पर्शपरिणत हुवे। सठाणथी परिमंडलसठाण प० जाव आयतसंठाणपरिणतावि। संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान परिणत पिण हुवे यावत् सर्वे त्रिकोणे आयतसंस्थान परिणत संस्थान हुवे। जे रसथी कसायरस पवित मधुररस परिणता। जे रसथकी कषायरस भो

पन्नवणि वर्णेसंव्ये सूत १०० गन्धमधिकृत्याह—जेगन्धओइत्यादि ॥ ये गन्धतोगन्धमधिकृत्य सुरभिगन्धपरिणामपरिणता स्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता

नीलवन्नपरिणतावि लोहितवन्नपरिणतावि हालिद्दवन्नपरिणतावि सुक्किलवन्नपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि मह्नररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जेरसओ तित्तरसपरिणता ते वन्नओ कालवन्नपरिणतावि नीलवन्नपरिणतावि लोहियवन्नपरिणतावि हालिद्दवन्नपरिणतावि सुक्किलवन्नपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिण

तावि। ते वर्णतो कालं यावत् परिणतवे इम यावत् काल यावत् परिणतवे। रसपा तित्तरस प यावत् मह्नररसपरिणयावि। रसतो तित्तरस परिणतवे इम यावत् मधुररसपरिणतवे। फासपा कक्खडफास प० यावत् लुक्खफासपरिणयावि। स्पर्शतो कर्कशस्पर्श परिणतवे यावत् रूक्षस्पर्श परिणतवे। संठाणपा परिमंडलसंठाण प यावत् आयतसंठाणपरिणयावि। संस्थानतो परिमंडलसंस्थान परिणतवे यावत् आयतसंस्थान परिणतवे। जे रसपो तित्तरसपरिणता। जे रसतो तित्तरस परिणतवे। तेवन्नपो कालवन्न यावत्सुक्किलवन्नपरिणता। ते वर्णतो कालवर्ण परिणतवे इम यावत् शुक्लवर्ण परिणतवे। गन्धपो सुब्भिगंध दुब्भिगंध परिणयावि। गन्धतो सुगन्ध दुर्गन्ध परिणतवे। फासपो कक्खडफास यावत्लुक्ख फास परिणयावि। कर्कशस्पर्श परिणतवे इम यावत् रूक्षस्पर्श परिणतवे। संठाणपो परिमंडलसंठाण प० यावत् आयतसंठाणपरिणयावि। संस्थान

प्रपि नीलवर्णपरिणतामपि लोहितवर्णपरिणतामपि हारिद्रवर्णपरिणतामपि शुक्लवर्णपरिणतामपि ८ एवं रसत ५ स्पर्शत: ८ संस्थानत ५ एतेच मीलिता त्रयोविंशति रिति सुरभिगन्धपरिणता त्रयोविंशति भङ्गानुत्पन्नो एव दुरभिगन्धपरिणतामपि २३ ततो गन्धपदेन लब्धा भङ्गानां षट्च त्वारिंशत् रसमधिकृत्याह-ये रसतो रसमधिकृत्य तिक्तरसपरिणता स वर्णत: ५ गन्धत: २ स्पर्शत: ८ संस्थानत: ५ एते सर्वेपि एकत्र मीलिता विंशतिरिति ॥ तिक्तरसपरिणता विंशतिभङ्गा भवन्ते २० एवं कटुकरसपरिणता २० कषायरसपरिणता: २०, अम्लरसपरिणता २० मधुररसप

फासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जेरसओ कडुयरसप रिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणतावि नीलवण्णपरिणतावि लोहितवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणतावि सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासप० मउयफा सपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासप० लुक्खफासपरिण तावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणप० आयतसंठाणप

वो परिमण्डलसंस्थानपरिणतपणे इम यावत् आयतसंस्थान परिणतपुवे। जे रसथी कडुयरसपरिणता। जिके रसथकी कटुकरस परिणतहुवे। तयथकी कालावर्णपरिणयावि। ते वर्णथकी कार्ड कालेवर्ण परिणतहुवे। आवसुक्किलवण्णपरिणयावि। यावत् कार्ड शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गंधथी सुब्भिगंध प दुब्भिगंध परिणयावि। गन्धथकी सुगन्ध गन्ध परिणत हुवे दुगन्ध परिणत हुवे। फासथी कक्खडफास प आवलुक्खफास परिणयावि। स्पर्शथकी कर्कश स्पर्शपरिणत हुवे इम यावत् रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे। संठाणथी परिमंडलसंठाण प जाव आयतसंठाणपरिणयावि। संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान परि णत थिकी यावत् गमे जिकाको आयतसंस्थान परिणत संस्थान हुवे। जे रसथी कसायरस परिणा मधुररस परिणया। जे रसथकी कषायरस भा

पुष्फवि वर्णसेवं सूत्रं १०७ गन्धमधिकृत्याह–जेगन्धओइत्यादि ॥ ये गन्धतोगन्धमधिकृत्य सुरभिगन्धपरिणामपरिणता ते वर्णतः कालवर्णपरिणता

नीलवन्नपरिणतावि लोहितवन्नपरिणतावि हालिद्दवन्नपरिणतावि सुक्किलवन्नपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जेरसओ तित्तरसपरिणता ते वन्नओ कालवन्नपरिणतावि नीलवन्नपरिणतावि लोहियवन्नपरिणतावि हालिद्दवन्नपरिणतावि सुक्किलवन्नपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिण

तावि। ते वर्णथकी काळवर्णपणे परिणतहुवे इम यावत् धोळावर्णपणे परिणतहुवे। रसथी तित्तरस प जाव मधुररसपरिणयावि। रसथकी तित्तरस परिणतहुवे इम यावत् वारक मधुररसपरिणतहुवे। फासथी कक्खडफास प० जावलुक्खफासपरिणयावि। स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श परिणतहुवे यावत् रूक्षस्पर्श परिणतहुवे। संठाणथी परिमंडलसंठाण प जाव आयतसंठाणपरिणयावि। संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान परिणतहुवे यावत् आयतसंस्थान परिणतहुवे। जे रसथी तित्तरसपरिणया। जे रसथकी तित्तरस परिणतहुवे। तेवर्णथी कालवर्ण जावसुक्किलवर्णपरिणया। ते वर्णथकी कालावर्णे परिणतहुवे इम यावत् धोळावर्ण परिणतहुवे। गंधथी सुब्भिगंध दुब्भिगंध परिणयावि। गंधथकी सुगंध दुरगंध परिणतहुवे। फासथी कक्खडफास जावलुक्ख फास परिणयावि। कर्कशस्पर्श परिणतहुवे इम यावत् रूक्षस्पर्श परिणतहुवे। संठाणथी परिमंडलसंठाण प० जावआयतसंठाणपरिणयावि। संस्थान

यपि नीलवर्णपरिणतापि लोहितवर्णपरिणतापि हारिद्रवर्णपरिणतापि शुक्लवर्णपरिणतापि ८ एवं रसत ५ रूपतः ८ संस्थानतः ५ एतेच मीलिता त्रयोविंशति रिति सुरभिगन्धपरिणता त्रयोविंशति मङ्गानुक्तम्, एवं दुरभिगन्धपरिणतापि २३ ततो गन्धपदेन सर्व्या मङ्गानां पट्च त्वारिंशत् रसमधिकृत्याह—ये रसतो रसमधिकृत्य तिक्तरसपरिणता स वर्णतः ५ गन्धतः २ स्पर्शतः ८ संस्थानतः ५ एते सर्वेपि एकत्र मीलिता विंशतिरिति ॥ तिक्तरसपरिणता विंशतिरङ्का क्रमतः २० एवं कटुकरसपरिणता २० कषायरसपरिणताः २० अम्लरसपरिणता २० मधुररसप

फासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जे रसओ कडुयरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणतावि नीलवण्णपरिणतावि लोहितवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणतावि सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासप० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासप० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरससंठाणप० आयतसंठाणप

की परिमण्डलसंस्थानपरिणत हुवे इम यावत् आयतसंस्थान परिणत हुवे। जे रसथी कडुयरसपरिणता। तिके रसथकी कटुकरस परिणत हुवा। तेवर्णथी कालवर्णपरिणतापि। ते वर्णथकी काल वर्णेपण परिणत हुवे। यावत्शुक्लवर्णपरिणतापि। यावत् काइ शुक्लवर्ण परिणत हुवे। गंधथी सुब्भिगंध प दुब्भिगंध परिणतापि। गन्धथकी सुगन्ध गन्ध परिणत हुवे दुगन्ध परिणत हुवे। फासथी कक्खडफास प यावत्लुक्खफास परिणतापि। स्पर्शथकी कर्कश स्पर्शपरिणत हुवे इम यावत् रूक्षस्पर्शपरिणत हुवे। संठाणथी परिमंडलसंठाण प याव आयतसंठाणपरिणतापि। संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान परिणत हिवकवे यावत् कर्णे त्रिकोणगे आयतसंस्थान परिणत संस्थान हुवे। जे रसथी कसायरस भणिक मधुररस परिणता। ते रसथकी कषायरस प।

रिणतावि । जे रसओ कसायरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि , गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि , फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणप० चउरंससंठाणप० आयतसंठाणपरिणतावि । जे रसओ अंबिलरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे रसओ महुररसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णप० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि , गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिण

विमरस मधुररस परिणत हुवे। ते वण्णओ कालवण्ण ने जाव सुक्किलवण्णपरिणतावि। ते वर्णथकी कालवर्ण परिणत पिण हुवे यावत् शुक्लवर्ण परिणत हुवे। गंधओ सुब्भिगंध ने दुब्भिगंधपरिणतावि । ते गन्धथकी सुगन्धपरिणत पिण हुवे दुर्गन्धपरिणत पिण हुवे। फासओ कक्खडफास ने जाव लुक्खफासपरिणतावि। स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श परिणत पिण हुवे यावत् रूक्षस्पर्श परिणत पिण हुवे । संठाणओ परिमंडलसंठाण ने जाव

फासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तसस ठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि ॥ जे फासतो कक्खडफासपरि० ते वण्णतो कालव ण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिण तावि, फासतो गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्ख फासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जे फासतो मउयफासपरि० ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्ण

भावयसंठाणपरिणयावि । परिमंडलसंठाणवालो परिणत पिणहुवे यावत् आयतसंठाणपरिणत पिणहुवे ॥ जे फासथा कक्खडफास प० ते वणथो कालवण्ण । जे स्पर्शवालो कर्कश परिणतहुवे ते वर्णथको कालेवर्ण परिणत पिणहुवे । यावत्शुक्लवर्णपरिणयावि । यावत् शुक्लवर्ण परिणत हुवे । गंधथा सुब्भिगंध प० दुब्भिगंध परिणयावि । गन्धथको सुरभिगंध परिणतहुवे दुरभिगंध परिणतहुवे । रसथो तित्तरस प० यावमहुररस परिणयावि । रस थको तिक्तरस परिणतहुवे यावत् मधुररस परिणत हुवे । फासथो गरुयफास प लहुयफास प सीयफास प उसिणफास प णिद्धफास प लुक्खफा सपरिणयावि । स्पर्शथको गुरुस्पर्श परिणतहुवे लघुस्पर्श परिणत हुवे शीतस्पर्श परिणत हुवे उष्णस्पर्श परिणतहुवे स्निग्धस्पर्श परिणतहुवे रूक्षस्पर्श परि णतहुवे । संठाणथा परिमंडलसंठाण प जाव आयतसंठाणपरिणयावि । संस्थानथको परिमंडलसंस्थानपरिणत पिण हुवे यावत् आयतसंस्थानपरिण तहुवे । जेफासथो मउयफास प । जे स्पर्शथको मृदुस्पर्श परिणतहुवे । ते वण्णथा कालवण्ण प जाव सुक्किलवण्ण परिणयावि । ते वर्णथको कालेवर्ण परिण

रिणतावि । जे रसओ कसायरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणप० चउरंससंठाणप० आयतसंठाणपरिणतावि । जे रसओ अंबिलरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे रसओ महुररसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णप० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिण

विमरस मधुररस परिणतवुवे। ते वर्णतः कालवर्ण च यावत् शुक्लवर्णपरिणताऽपि । ते वर्णतको कालवर्ण परिणत पिणवुवे यावत् शुक्लवर्ण परिणत वुवे । गंधथा सुरभिगंध च दुरभिगंधपरिणताऽपि । ते गन्धतको सुगन्धपरिणत पिणवुवे दुर्गन्धपरिणत पिणवुवे। फासथो कर्कशस्पर्श च यावत् रूक्षस्पर्शपरिणताऽपि । रसतको कटुकरसम परिणत पिणवुवे यावत् मधुररसम परिणत पिणवुवे । संठाणथो परिमंडलसंठाण च यावत्

फासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि ॥ जे फासओ कक्खडफासपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासओ मउयफासपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्ण

[illegible] । परिमंडलसंस्थानतो परिणत अपि भवेयुः यावत् आयतसंस्थानपरिणत अपि भवेयुः । ये स्पर्शत: कर्कशस्पर्श प० ते वर्णतो [illegible] । [illegible] परिणता भवेयुः ते वर्णतो कालवर्ण परिणत अपि भवेयुः । कालवर्णपरिणता अपि । यावत् शुक्लवर्ण परिणत भवेयुः । गं[illegible] । गन्धतो सुरभिगंध परिणता भवेयुः दुरभिगंध परिणता भवेयुः । रसतो तिक्तरस प यावन्मधुररस परिणता अपि । रस[illegible] । स्पर्शतो गुरुस्पर्श प लघुस्पर्श प शीतस्पर्श प उष्णस्पर्श प स्निग्धस्पर्श प रूक्षस्पर्श[illegible] परिणता भवेयुः शीतस्पर्श परिणत भवेयुः उष्णस्पर्श परिणता भवेयुः स्निग्धस्पर्श परिणता भवेयुः रूक्षस्पर्श परि[illegible] । संस्थानतो परिमंडलसंस्थानपरिणत अपि भवेयुः यावत् आयतसंस्थानपरिण[illegible] । ते वर्णतो कालवर्ण प० यावत् शुक्लवर्ण परिणता अपि । ते वर्णतो कालवर्ण परिण

वता से यवत ५ गन्धतः २ रसतः ५ स्पर्शतः ८ मतिपक्षस्पर्शप्रयोगाभावात् संस्थानतः ५ एते सर्वेऽप्येकत्रमीलिता त्रयोविंशति एतावन्तो जङ्गाक्षमम्मे

परि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किलवन्नपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्त रसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परि मंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाण० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासओ गरुयफासपरिणता ते वन्नओ कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहितवन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किलव न्नपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरस परि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि सीय

त भवे। यावत् शुक्लवर्ण परिणतभवे। गंधता सुरभिगन्ध प दुरभिगन्धपरिणतावि। गन्धतको सुरभिगन्ध परिणतभवे दुरभिगन्ध परिणतभवे। रसतो तिक्तर स प यावन्मधुररस परिणतावि। रसतको तिक्तरस परिणतभवे यावत् मधुररस परिणतभवे। फासतो गरुयफास प लहुयफास प सीतफास प उसिणफास प निद्धफास प लुक्खफास परिणतावि। स्पर्शतको गुरुस्पर्श प लघुस्पर्श प शीतस्पर्श प कोई उष्णस्पर्श प कोई स्निग्धस्पर्श प कोई रूक्षस्पर्श परिणतभवे। संठाणता परिमंडलसंठाण प यावदायतसंठाणपरिणतावि। संस्थानतको परिमंडलसंस्थान परिणतभवे यावत् आयतसं स्थान परिणतभवे। जेफासता गरुयफास प ते वन्नता कालवन्न प जाव सुक्किलवन्नपरिणतावि। जेस्पर्शतको गुरुस्पर्श प० ते वर्णतको कालवर्ण प यावत् शुक्लवर्ण परिणतभवे। गंधता सुब्भिगंध दुब्भिगंध परिणतावि। गन्धतको सुगन्ध दुर्गन्ध परिणत भवे। रसतो तित्तरस प जाव महुररस परि णतावि। रसतको तिक्तरस प यावत् मधुररस परिणतभवे। फासतो कक्खडफास प मउयफास प सीयफास प उसिणफास प णिद्धफास प

फासपरिणतावि उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणतो परिमंडलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तंससठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जेफासतोलहुयफासपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणतो परिमंडलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तंससठाणपरि० चउरंससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जे फासतो सीतफासपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नी

रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । स्पर्शतः कर्कशस्पर्श च मृदुस्पर्श च शीतस्पर्श च उष्णस्पर्श च कार स्निग्धस्पर्श च रूक्षस्पर्श परिणता भी है । संठाणथा च परिमंडलसंठाण च जाव आयतसंठाणपरिणता अपि । संस्थानतः परिमंडलसंस्थान च यावत् आयतसंस्थानपरिणत भी है । जेफासथी लघुस्पर्श ते वर्णथी कालवर्ण च यावत् शुक्लवर्णपरिणता अपि । जे स्पर्शथी लघुस्पर्श परिणत है । ते वर्णथकी कालवर्ण च यावत् शुक्लवर्णपरिणत है । गंधथा सुभिगंध दुभिगंध परिणता अपि । गंधथकी सुगंध दुर्गन्ध परिणत है । रसथी तित्तरस च जाव मधुररसपरिणता अपि । रसथकी तिक्तरस च यावत् मधुररस परिणत है । फासथा कक्खडफास च मउयफास च सीयफास च उसिणफास च णिद्धफास च लुक्खफासपरिणता अपि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श च मृदुस्पर्श च शीतस्पर्श च उष्णस्पर्श च कार स्निग्धस्पर्श च रूक्षस्पर्शपरिणत है । संठाणथी परिमंडलसंठाण च जावआयतसंठाणपरिणता अपि । संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान च यावत् आयतसंस्थान परिणत पिण है । जेफासथा सीयफास च ते वण्णथा कालवण्ण च जावसुक्किलव

लवन्नपरि० लोहितवन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किलवन्नपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासओ उसिणफासपरि० ते वन्नओ कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहियवन्नप० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किलवन्नपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाण

णपरिणत भी। जे स्पर्शथकी शीतस्पर्शपरिणत ते वर्णथकी कालोवर्ण प यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गंधथा सुब्भिगंध दुब्भिगंधपरिणत भी। गंधथकी सुगंध दुगंध परिणतहुवे। रसथी तित्तरसपरिणत जाव महुररसपरिणत भी। रसथकी तित्तरस प यावत् मधुररसपरिणतहुवे। फासथी कक्खडफास प मउयफास प गरुयफास प लहुयफास प णिद्धफास प लुक्खफासपरिणत भी। स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श प मृदुस्पर्श प गुरुस्पर्श प लघुस्पर्श प स्निग्धस्पर्श प रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे। संठाणथी परिमंडलसंठाण प जाव आयतसंठाणपरिणत भी। संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान प यावत् आयतसंस्थान परिणतहुवे। जे फासथी उसिणफास प तेवन्नथी कालवन्न प जाव सुक्किलवन्नपरिणत भी। जे स्पर्शथकी उष्णस्पर्श प ते वर्णथकी कालोवर्ण प यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गंधथा सुब्भिगंध दुब्भिगंध परिणत भी। गंधथकी सुगंध दुर्गन्धपरिणतहुवे। रसथी तित्तरस प जाव महुररस परिणत भी। रसथकी तिक्तरस प यावत् मधुररस परिणतहुवे। फासथा कक्खडफास प मउयफास प गरुयफास प० लहुय

परि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासतो णिद्ध फासपरिणया ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णप रिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसप० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुय फासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंस संठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासतो लुक्खफासपरिणता ते वण्णतो काल वण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधप०

फास च निद्धफास च लुक्खफास परिणयावि । स्पर्शतो कर्कशस्पर्शतया मृदुस्पर्श च गुरुस्पर्श च० लघुस्पर्श च स्निग्धस्पर्श च रूक्षस्पर्श परिणत रूप संठाणओ परिमंडलसंठाण च जाव आयतसंठाणपरिणयावि । संस्थानतो परिमंडलसंस्थान यावत् आयतसंस्थानपरिणतरूपे। अफासओ णिद्धफा स च ते वण्णओ कालवण्ण च जावसुक्किलवण्णपरिणयावि । अथवा ये स्पर्शतो स्निग्धस्पर्श परिणतरूपे ते वर्णतो कालेवर्ण च यावत् शुक्लवर्ण परि णतरूपे । गंधओ सुब्भिगंध दुब्भिगंधपरिणयावि । गंधतो सुगंध दुर्गन्धपरिणतरूपे । रसओ तित्तरस च जाव महुररसपरिणयावि । रसतो तिक्त रस च यावत् मधुररसपरिणतरूपे । फासओ कक्खडफास च मउयफास च गरुयफास च लहुयफास च सीयफास च उसिणफासपरिणयावि । स्पर्शतो कर्कशस्पर्शपरिणतरूपे मृदुस्पर्शपरिणतरूपे गुरुस्पर्श च लघुस्पर्श च शीतस्पर्श च उष्णस्पर्श परिणतरूपे । संठाणओ परिमंडलसंठाण च जा च आयतसंठाणपरिणयावि । संस्थानतो परिमंडलसंस्थान परिणतरूपे यावत् आयतसंस्थानपरिणतरूपे । जेफासओ लुक्खफास च ते वण्णओ काल वण्ण च जावसुक्किलवण्णपरिणयावि । ये स्पर्शतो रूक्षस्पर्श परिणतरूपे ते वर्णतो कालेवर्ण परिणतरूपे यावत् शुक्लवर्णपरिणतरूप । गंधओ सुब्भि

स्निग्धस्पर्शपरिणता: २३ रूक्षस्पर्शपरिणता २३ एवमा मेकत्रमीलने जात मङ्गानां चतुरशीत्यधिकं शत १८४ संस्थानमधिकृत्याह–जेसठाणउप रिमंडलसठाणपरिणयाइत्यादि॥ ये संस्थानत परिमंडलसंस्थानपरिणता स्ते वर्णत ५ गन्धत: २ रसत ५ स्पर्शत: ८ एते सर्वेप्येकत्र मीलिता

दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरि० । जे संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफास

गंध दुब्भिगंधपरिणयावि। गन्धतो सगन्ध दुर्गन्धपरिणतश्चे । रसओ तित्तरस य जावमहुररस परिणयावि। रसतो तिक्तरसपरिणतश्च यावत् मधुररसपरिणतश्चे। फासओ कक्खडफास य मउयफास य गुरुयफास य लहुयफास य सीयफास य उसिणफास परिणयावि। स्पर्शतो कर्कश स्पर्श च गुरुस्पर्श च मृदुस्पर्श च शीतस्पर्श च उष्णस्पर्श परिणतश्चे। संठाणओ परिमंडलसंठाण य० जाव आययसंठाणपरिणयावि। संस्थानतो परिमंडलसंस्थानपरिणतश्चे यावत् आयतसंस्थानपरिणतश्चे। जे संठाणओ परिमंडलसंठाण य ते वण्णओ कालवण्ण य जाव सुक्किल्लवण्ण परिणया वि। ते वर्णतो कालवर्णपरिणतश्चे यावत् शुक्लवर्ण परिणतश्चे। गंधओ सुब्भिगंध दुब्भिगंधपरिणयावि। गन्धतो सुगन्ध दुर्गन्धपरिणतश्चे। रसओ तित्तरस य जावत् महुररसपरिणयावि। रसतो तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणतश्चे। फासओ कक्खडफास य मउयफास य गरुयफास य लहु

विंशति २० मतावन्तो भङ्गान् परिमण्डलसंस्थानपरिणता सप्तमो अथ वृत्तसंस्थानपरिणता २० ॥ त्र्यस्रसंस्थानपरिणताः २० चतुरस्रसंस्थान परिणता २० आयतसंस्थानपरिणताः २० ॥ अमीषां चैकत्रमीलनेन सर्व भङ्गकानां शतं पञ्च वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानानां सकलभङ्गसङ्कलने

परि० लुक्खफासपरिणतावि । जेसंठाणओ वट्टसंठाणपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलपरिणतावि , गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि , रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासप० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जेसंठाणओ तंससंठाणपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि , फासओ कक्खडफासपरि०

वर्णतः परि० स्पर्शतः इत्यादि ... कक्खडस्पर्शपरिणतः मृदुस्पर्शपरिणतः गुरुस्पर्शपरिणतः लघुस्पर्शपरिणतः शीतस्पर्शपरिणतः उष्णस्पर्शपरिणतः स्निग्धस्पर्शपरिणतः रूक्षस्पर्शपरिणतः ॥ ये संस्थानतो वृत्तसंस्थानपरिणताः ते वर्णतः कालवर्णपरिणताः यावत् शुक्लवर्णपरिणताः । ये वर्णतः कालवर्णपरिणताः यावत् शुक्लवर्णपरिणताः । गन्धतः सुरभिगन्धपरिणताः दुरभिगन्धपरिणताः । गन्धतः सुगन्धपरिणताः । रसतो तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणताः । रसतो तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणताः । स्पर्शतः कर्कशस्पर्श प० यावत् रूक्षस्पर्शपरिणताः । स्पर्शतो कर्कशस्पर्शपरिणताः यावत् रूक्षस्पर्शपरिणताः ॥ ये संस्थानतः त्र्यस्रसंस्थान प० ते वर्णतः कालवर्ण प० यावत् शुक्लवर्णपरिणताः । ये संस्थानतः त्र्यस्रसंस्थानपरिणताः ते वर्णतः कालवर्णपरिणताः यावत्

णासानि त्रिंशदधिकानि पञ्चशतानि इह यद्यपि बादरेषु स्कन्धेषु पञ्चापि वर्णा द्वावपि गन्धौ पञ्चापि रसा प्राप्यन्ते ततोऽपि वर्णादीनामेकतरेणैकेन केनापि व्यवहारः क्रियते तथापि तेष्वेव बादरेषु स्कन्धेषु व्यवहारतः शेषस्कन्धवर्णाद्युपेता अपान्तरालस्कन्धा यथोदेशस्कन्धएव साधनस्कन्धः कृष्ण स्तदन्तर्गतएव कश्चिद्दोषितोऽन्य सादन्तर्गतएव शुक्लत्वादि ते दर्शविकल्पस्ते तेषाञ्च मध्यवर्णान्तरादि मसम्भवति स्पर्शचिन्ताया

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जे संठाणओ चउरससंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहियवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतायि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसप० कडुयरसप० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरि० । जे संठाणओ आयतसंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णप०

लोहितवर्णपरिणतद्रव्ये । गन्धतः सुरभिगन्ध दुरभिगन्धपरिणतान्यपि । गन्धतो सुगन्ध दुर्गन्धपरिणतद्रव्ये । रसतो तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणतान्यपि । रसतो तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणतद्रव्ये । स्पर्शतो कर्कशस्पर्श च यावत् रूक्षस्पर्शपरिणतान्यपि । स्पर्शतो कर्कशस्पर्श च रूक्षस्पर्शपरिणतद्रव्ये । ये संठाणतः चतुरस्रसंठाणपरिणतान्यपि । ये संस्थानतो चतुरस्रसंस्थानपरिणतद्रव्ये । ते वर्णतोकालवर्णपरिणता यावत् शुक्लवर्णपरिणतान्यपि । ते वर्णतो कालवर्णपरिणत यावत् शुक्लवर्णपरिणतद्रव्ये । गन्धतो सुरभिगंध दुरभिगंधपरिणतान्यपि । रसतो सुगन्धदुर्गन्धपरिणतद्रव्ये । रसतो तिक्तरस च यावत् मधुररसपरिणतान्यपि । रसतो तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणतद्रव्ये । स्पर्शतो कर्कशस्पर्श यावत् रूक्षस्पर्शपरिणतान्यपि । स्पर्शतो कर्कशस्पर्श परिणतद्रव्ये यावत् रूक्षस्पर्शपरिणतद्रव्ये । ये संठाणतः आयतसंठाणपरिणता । ये संस्थानतो आयतसंस्थानपरिणतद्रव्ये । ते वर्णतः कालवर्ण च

त्ययचीकृतस्पर्शमपि प्रतिपद्यव्यतिरेकेणान्ये स्पर्शालोकेऽप्यविरोधिनो दृश्यन्ते ततो यथोक्तैव भङ्गसङ्ख्या सापि च परिस्थूरन्यायमङ्गीकृत्य लिखिता ऽन्यथा प्रत्येक मप्येषां तारतम्येन मनन्तत्वात् अनन्तभङ्गाः सम्भवन्ति एषाञ्च वर्णादिपरिणामानां जघन्यतो वस्थान मेक समय मुत्कर्षतो सङ्ख्येयं कालं सम्प्रत्युपसंहारमाह—सेतं रूविअजीवपण्णवणा ॥ सेतमजीवपण्णवणा सैषा रूप्यजीवप्रज्ञापना ॥ सैषा ऽजीवप्रज्ञापना ॥ साम्प्रतं जीवप्रज्ञापनां मभिधित्सु स्तद्विषयं प्रश्नसूत्र माह—सकितमित्यादि ॥ अथ का सा जीवप्रज्ञापना ? सूरिराह—जीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाच असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाच तत्र संसरणं संसारो नारकतिर्यग्नरामरभवानुभवलक्षण स्त सम्यगेकीभावेनापन्ना संसारवर्तिन इत्य

हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरस परि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० म उयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफा सपरि० ॥ सेत्तं रूविअजीवपण्णवणा ॥ सेत्तं अजीवपण्णवणा ॥ से किंत जीवपण्णवणा ? जीवपण्णवणा दुवि हा पण्णत्ता, तंजहा—संसारसमावण्णजीवपण्णवणाय असंसारसमावण्णजीवपण्णवणाय । से किंत असंसार

यावत्सुक्लवर्णपरिणता अपि । ते गन्धतो सुरभिगन्ध परिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि । रसतः तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणता अपि । स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । सैषा रूप्यजीवप्रज्ञापना सैषा अजीवप्रज्ञापना । ते किम् सव रूपी अजीवप्रज्ञापनासु एतेषु रूपीका भाव अरूपीका भावभेद प्रकाश्य तेषाम् इति पांचसौतीस ५३ भेद

जातानि त्रिंशदधिकानि पञ्चशतानि इह यद्यपि बादरेषु स्कन्धेषु पञ्चापि वर्णा द्वावपि गन्धौ पञ्चापि रसा प्राप्यन्ते ततोऽष्टावपि स्पर्शा दिश्यन्ते एकैका शीतस्पर्शादिभिरपि भङ्गाः सम्भवन्ति तथापि तेष्वेव बादरेषु स्कन्धेषु व्यवहारतः कोमलस्पर्शवर्णाद्युपेता यथान्तरालस्कन्धा यथावेकस्कन्धएव लोचनस्कन्धः कृष्ण इत्यन्तर्गतएव कश्चिल्लोहितोऽन्य इत्यन्तर्गतएव शुक्लत्यादि ते इह विवक्ष्यन्ते तेषाञ्चा न्यवर्णान्तरादि न सम्भवति स्पर्शचिन्तायां

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जे संठाणओ चउरससंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहियवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसप० कडुयरसप० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरि० । जे संठाणओ आयतसंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णप०

लोहितवर्णपरिणत हुवे। गन्धथी सुरभिगन्ध दुरभिगन्धपरिणतावि। गन्धथकी सुगन्ध दुर्गन्धपरिणत हुवे। रसथी तिक्तरस जाव मधुररसपरिणतावि। रसथकी तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणत हुवे। फासथी कर्कशफास प जाव रूक्षफासपरिणतावि। स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श प रूक्षस्पर्शपरिणत हुवे। जे संठाणथी चउरससंठाणपरिणतावि। जे संस्थानथकी चतुरस्रसंस्थानपरिणत हुवे। ते वर्णथी कालवर्णपरिणता जाव सुक्किलवर्णपरिणतावि। ते वर्णथकी कालवर्णपरिणत यावत् शुक्लवर्णपरिणत हुवे। गंधथी सुरभिगंध दुरभिगंधपरिणतावि। गन्धथकी सुगन्धदुर्गन्धपरिणत हुवे। रसथी तिक्तरस प जाव मधुररसपरिणतावि। रसथकी तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणत हुवे। फासथी कर्कशफास जाव रूक्षफासपरिणतावि। स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श परिणत हुवे यावत् रूक्षस्पर्शपरिणत हुवे। जे संठाणथी आयतसंठाणपरिणता। जे संस्थानथकी आयतसंस्थानपरिणत हुवे। ते वर्णथी कालवर्ण प

परम्पराय तत्सिद्धाश्च परम्परसिद्धा विवक्षितसिद्धस्य प्रथमसमयात्प्राक् द्वितीयादिसमये सिद्धा यावदनन्ता इतिभाव, ते च ते असंसारसमा पन्ना श्च परम्परसिद्धासंसारसमापन्ना स्तेच ते जीवा श्च तेषां प्रज्ञापना परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अत्रा पि च शब्दः स्वगतानेक भेदसूचक ॥ गणित मित्यादि ॥ अथ का सा अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरि राह—अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चदशविधा प्रज्ञप्ता अनन्तरसिद्धाना मुपाधिभेदतः पञ्चदशविधत्वात् तदेव पञ्चदशविधत्वतेषामाह—तत्थेत्यादि ॥ तत्थेति । पञ्चदशस्वेव पदेषु मध्ये तीर्थसिद्धाः तीर्यते संसारसागरो ऽनेनेति तीर्थं यथावस्थितसकलजीवाजीवादिपदार्थसार्थप्ररूपकं परमगुरुप्रणीतं प्रवचनं तच्च निराधारं न भवती तिसंघः प्रथमगणधरोवा वेदितव्यः उक्तंच—तित्थंभंतेतित्थं तित्थयरेतित्थं ? गोयमा अरिहातावं तित्थयरे तित्थं पुण चाउव्वणो समणसंघो पढमगणहरो वा इति तस्मि न्नुत्पन्ने ये सिद्धा स्ते तीर्थसिद्धाः ।१। तथा तीर्थस्याभावो ऽतीर्थं, तीर्थस्या भावश्चा नुत्पादो ऽपान्तराले व्यवच्छेदो वा तस्मिन् ये सिद्धा स्ते ऽतीर्थसिद्धाः तत्र तीर्थस्या नुत्पादे सिद्धा मरुदेवीप्रभृतयः, नहि मरुदेव्यादिसिद्धिगमनकाले तीर्थ मुत्पन्न मासीत् तथा तीर्थस्य व्यवच्छेदः सुविधिस्वाम्याद्यपान्तरालेषु तत्र च जातिस्मरणादिना ऽपवर्गमार्गमवाप्य सिद्धा स्तेतीर्थव्यवच्छेदसिद्धाः ।२। तथा तीर्थं कराः सन्तो ये सिद्धा स्त तीर्थकरसिद्धाः ।३। सामान्यकेवलिनः सन्तो ये सिद्धा स्ते ऽतीर्थकरसिद्धाः ।४। स्वयम्बुद्धा संतो ये सिद्धा स्तेस्वयम्बुद्ध सिद्धाः ।५। प्रत्येकबुद्धाः संतो य सिद्धा स्त प्रत्येकबुद्धसिद्धाः अथ स्वयम्बुद्धप्रत्येकबुद्धानां कः प्रतिविशेषः ? उच्यते बोध्युपधिश्रुतलिङ्गकृतो विशेषः, तथाहि—स्वयम्बुद्धा बाह्यप्रत्यय मन्तरेणैव निजजातिस्मरणादिना बुद्धाः स्वयम्बुद्धा इति व्युत्पत्ते स्ते च द्विधा तीर्थकरा स्तीर्थकरव्यतिरिक्ताश्च

मूला ? अणंतरसिद्धअसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा पण्णरसविहा पण्णत्ता, तंजहा—तित्थसिद्धा १ अतित्थसिद्धा २ तित्थगरसिद्धा ३ अतित्थगरसिद्धा ४ सयंबुद्धसिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७

लोपरे ते प्रब्बकूपथ १ जम्बूद्दीपपन्नत्ती सचेतन तथा भवनम दृष्टोजातिस्मरण भ्रामणी करवकूलमिथमंगार बुद्धबोधितसिद्ध ७ भाषार्थगणधरैर्मतिवाच्या

च तेषते जीवाश्च तेषां प्रज्ञापना संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना असंसारो ऽसंसारो मोक्ष स समापन्ना असंसारसमापन्ना मुक्ता इत्यर्थः तेचते जीवाश्च तेषां प्रज्ञापना असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना चशब्दौ स्वगत् तत्रास्पवक्तव्यत्वा दप्रथमतो ऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना मभिधित्सुः स द्वियर्थं प्रश्नसूत्रमाह—सेकितमित्यादि ॥ अथ कासा असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह—असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाच परम्परसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाच तत्र न विद्यते ऽन्तरं व्यवधानं समयेन येषांते ऽनन्तरा स्तेचते सिद्धा श्चानन्तरसिद्धाः सिद्धत्वप्रथमसमये वर्त्तमाना इत्यर्थः तेचते असंसारसमापन्नजीवाश्च अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवा स्तेषां प्रज्ञापना अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना चशब्द स्वगतानेकभेदसूचक स्तथा विवक्षिते प्रथमसमये य सिद्ध स्तस्य यो द्वितीयसमयसिद्धः सपरः तस्यापि यस्तृतीयसमयसिद्धः सपरश्च मभ्येपिवाच्याः परेपरेचेति वीप्सायां, पृषोदरादय इति परम्परशब्दनिष्पत्तिः

समावन्नजीवपन्नवणा असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किंतं अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्न

पजीवप्रज्ञापना जाणवी कही । १ । संसारसमावन्नजीवपन्नवणा आगयपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता तंजहा । हिवे बठा भागे जीवराभेदकहा पहे जीवरा जाणवा भिन्नपूर्वे जीवप्रज्ञापनानाभेद गुरुकहे—ते जीवप्रज्ञापना दाप्रकारे तेजिम । संसारसमावन्नजीवपन्नवणा । संसारमाह ते संसारीजीव समारमांहिरहे ते जीवप्रज्ञापना । असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । असंसारमाह असंसारीजीव ते सिद्धना जीव कमरहित ते असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सेकिंतं असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा २ दुविहा पन्नत्ता तंजहा । ते किमह तिमं असंसार समाह जीवप्रज्ञापनामा दायभेदकह्या तेहीजकहे—असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । ते संसारस्य जीवप्रज्ञापना । असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । असंसारस्य जीवप्रज्ञापना सेकितं असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । ते कुण असंसारसमाह जीवप्रज्ञापना । असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा दुविहा प तंजहा । असंसार समाह

यदः शरीरनिर्वृत्तिः नेपथ्यन तत एव शरीरनिवृत्त्या प्रयोजनं न वदनेपथ्याभ्यां वेदेसति सिद्धत्वामवात नेपथ्यस्य वा प्रमाणत्वात् भाष्य– मन्द्राप्ययमपूविहत्–इस्थीव लिगं इत्यिपलिम इत्थीए उपसम्पयति वुत्तं जवइ तं च तिविहं वदो सरीरनिव्वत्तीए मेवत्थेव एव सरीरनिव्वत्तीए पडिगारो न येयनवत्थेहिति । तत तस्मिन् सिद्ध्यतमानाःसतो ये सिद्धा सते खीसिद्धाद्याः एतेन यदाहु राशाबरा नस्त्रीणांनिर्वाणमिति तद् पास्तं द्रष्टव्य स्त्रीनिर्वाणस्य साक्षा दनेन सूत्रेणा भिधानात् न स्मतिषेधस्य युक्त्यनुपपन्नत्वा तथाहि–मुक्तिपथो ज्ञानदर्शनचारित्राणि न सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग इतिवचनात् सम्यग्दर्शनादीनि पुरुषाणामिव स्त्रीणा म प्यविकलानि दृश्यन्ते तथाहि–दृश्यन्ते स्त्रियोपि सक लमपि प्रवचनाथ मभिरोचयमाना जानते च षडावश्यककालिकोत्कालिकादिभेदभिन्न श्रुत परिपालयन्ति चसप्तदशप्रकार मकलङ्क संयमं धारय न्ति च देवासुराणामपि दुर्द्धरं ब्रह्मचर्य तप्यंत च तपांसि मासक्षपणादीनि ततः कथ मिव न तासा मोक्षसंभवः ? (सम्मःप्राह)स्या देतद् स्ति स्त्रीणां सम्यग्

दर्शनं ज्ञान वा न पुनश्चारित्रं संयमाभावात् तथाहि–स्त्रीणा मवश्य वस्त्रपरिभोगेन भवितव्य मन्यथा विवृताङ्ग्या सा स्तियैकस्त्रियइव पुरुषाणा मभिगमनीया भवेयुः, लोकेच गर्हा षजायते ततो यद्य तानि वस्त्र परिभोक्तव्य, वस्त्रपरिभोगे च सपरिग्रहता, सपरिग्रहत्वे च संयमाभाव इति (सैद्धान्तिकः)तदसमीचीन सम्यक् सिद्धान्तापरिज्ञानात् परिग्रहो हि परमार्थतो मूर्च्छा भिधीयते मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इतिवचनात् तथा हि–मूर्च्छारहितो भरत चक्रवर्ती शक्त पुरो प्या दर्शगृहे वतिष्ठमानो निष्परिग्रहो गीयते अन्यथाकेवलोत्पादो न सम्भवेत् अपिच–यदिमूर्च्छाया मभावेपि वस्त्रससर्गमात्र परिग्रहो भवे ततोजिनकल्पप्रतिपन्नस्य कस्यचि स्साधो स्सुपारक्षानुपस्ते प्रपतति शीते केना प्यविपन्नो धर्मापत मह्य मीत मिति विभाव्य धर्माधिमा शिरसि वस्त्रे प्रक्षिप्ते तस्य सपरिग्रहता भवेत् नचैं तदिष्ट तस्मा न्न वस्त्रससर्गमात्र परिग्रहः कि तु मूर्च्छा सा च स्त्रीणां वस्त्रादिषु न विद्यते धर्मोपकरणमात्रतया तस्यो पादानात् न खलु ता वस्त्र मंतरेण स्थान रक्षयितु मीशते नापि शीतकालादिषु

हस्तीयकरव्यतिरिक्ते रधिकार भावव मन्द्याध्ययनभूविकत्-दुविहा सयमुद्रा तित्थयरा तित्थयरवइरित्ता य इह वइरित्ते हि अहिगारो इति, प्र त्यकबुद्धा स्तु बाह्यमत्यय मपक्ष्य प्रत्येक बाह्य वृषभादिक कारण मभिसमीक्ष्य बुद्धा प्रत्येकबुद्धा इतिव्युत्पत्तेः तथाच श्रूयते बाह्यप्रत्ययसापेक्षा करकण्ड्वादीनां बोधि बहिःप्रत्यय मपेक्ष्य च तेबुद्धाः ततो नियमतः प्रत्येक मेव विहरन्ति न गच्छवासिनइव सहताः आहच नन्द्यध्ययनचूर्णिकृत्- पत्तेय बाह्यं वृषभादिक कारण मभिसमीक्ष्य बुद्धाः बहिःप्रत्ययप्रतिबुद्धाना पत्तेयं नियमा विहारो जम्हातम्हा य ते य पत्तेयबुद्धा इति तथा स्वयम्बुद्धाना मुपधि द्वादशविधएव पात्रादिकः प्रत्येकबुद्धानातु द्विधा जघन्यत उत्कर्षतश्च तत्र जघन्यतो द्विविधः उत्कर्षतो नवविधः प्रावरणवर्ज उक्तंच-पत्तेयबुद्धाण जहन्नेण दुविहो उक्कोसेणं नवविहो नियमा पाउरणवज्जो भवइ त्ति तथा स्वयम्बुद्धाना पूर्वाधीतं श्रुत भव ति वानवा यदिभवति ततो लिङ्गं देवतावा प्रयच्छति गुरुसन्निधौवा गत्वा प्रतिपद्यते यदिच एकाकी विहरणसमर्थ इच्छा च तस्य तथारूपा जा

यते तत एकाकी विहरति अन्यथा गच्छवासे ऽवतिष्ठते अथ पूर्वाधीतं श्रुत तस्य नभवति तर्हि नियमा गुरुसन्निधौ गत्वा लिङ्गप्रतिपद्यते गच्छ च्चा वश्य मनुसरति तथाचोक्त-पुव्वाहीय सुय से हवइ वाम वा अइ से नत्थि तो लिंग नियमा गुरुसन्निहि पडिवज्जिय गच्छेय विहरइत्ति अह पुव्वाहीय सुयसंभवो अत्थि तो ससिन देवया पडिच्छइ गुरुसन्निहेवा पडिवज्जइ जइ य एगविहारविहरणसमत्थो इच्छावा से तो एक्को चेव विहरइ अन्नहा गच्छ विहरइत्ति । प्रत्येकबुद्धानातु पूर्वाधीत श्रुतं नियमतो भवति तच्च जघन्यत एकादशाङ्गान्यु त्कर्षत किञ्चिन्न्यूनानि दशपूर्वाणि तथा लिङ्गं तस्मै देवता प्रयच्छति लिङ्गरहितोवा कदाचि द्भवति तथाचोक्त-पत्तेयबुद्धाण पुव्वाहीय सुय नियमा हवइ जहन्नेणं एक्का रसअंगा उक्कोसेण भिन्नदसपुव्वी लिंगच से देवया पयच्छइ लिंगवज्जिओ वा भवइ जओ भणियं रूप्प पत्तेयबुद्धा इति । ६। तथा बुद्धा आचार्या स्तै र्बोधिताः सतो य सिद्धा स्ते बुद्धबोधितसिद्धाः । ७। एतेच सर्वेपि केचि त्स्त्रीलिङ्गसिद्धाः स्त्रियालिङ्ग स्त्रीलिङ्ग स्त्रीत्वस्यो पलक्षणमित्यर्थ तच्च त्रिधा

सवति कि स्वतव्योत्सा, उत्त
त्वजावोदृट सतो न वसीयते नतु यदि तत्र दृट सर्हि कथ मत्रावसीयते न खलु मदि श्योंसिमात्रेण हेतु र्गमको भवति कि
थ्योंसि च प्रतिबन्धयसन न चा त्र प्रतियन्धो विद्यते न खलु सप्तमपृथिवीगमनं निर्वाणगमनस्यकारण मा पि सप्तमपृथिवीगमनाविनाभावि नि
र्वाणगमनं चरमशरीरिणां सप्तमपृथिवीगमन मन्तरेण निर्वाणगमनाभावात् न च प्रतिबन्ध मन्तरेण एकस्या भावे,ऽन्यस्या श्वश्यं भावो नामाप
त् यस्य तस्य वा कस्यचित् भावे सर्वस्य भावप्रसङ्गा यद्येवं तर्हि कथं समूर्छिमादिषु निर्वाणगमनाभाव इति? उच्यते—तथाभवस्वाभाव्यात् त
थाहि—समूर्छिमादयो भवस्वभावतएव न सम्यग्दर्शनादिकं यथाव दुत्पतिपत्तुं क्षमन्ते ततो न तेषां निर्वाणसम्भवः स्त्रियस्तु प्रागुक्तप्रकारेण य
थाव दुत्सम्यग्दर्शनादिरत्नत्रयसम्पद्योग्या ततस्तासां न निर्वाणगमनाभावः अपि च भुजपरिसर्प्पा द्वितीया मेव पृथिवीं याव द्गच्छन्ति न परतः
परपृथिवीगमनहेतुतथारूपमनोवीर्यपरिणत्यभावात् तृतीयांयावत्पक्षिण श्चतुर्थी चतुष्पदा पञ्चमी उरगा अथ च सर्वे प्यू र्द्ध मुत्कर्षतः
सहस्रार याव द्गच्छन्ति तस्मा द्गतिविषय मनोवीर्यपरिणतिवैषम्यदर्शना दूर्द्धगताव पि च न त द्वैषम्यं भाव्य—विषमगतयो प्यधस्ता दुपरिष्टा
दुत्यमासहस्रार। गर्भजतिर्यञ्च सर्वभोगत्यूनतात्वतः॥ १ ॥ तथाचसति सिद्ध स्त्रीपुंसा मधोगतिवैषम्ये पि निर्वाणे समं, यद प्यु क्त मपि च
यासां वादलब्धा वित्यादि तद प्ययुक्त यादिविकुर्वणत्वादिलब्धिविरहे पि विशिष्टपूर्वगतश्रुताभावे पि माषतुषादीनां निर्मेपसपदाधिगमश्रवणा
त्त एव—वादविकुर्वणत्वादिलब्धिविरहे श्रुते कनीयसि च जिनकल्पमनःपर्यवविरहे पि न सिद्धिविरहो स्ति अपि च यदि वादादिलब्ध्यभाववत्
निःश्रेयसाभावा पि स्त्रीणा मभविष्यत् तत तथैव सिद्धान्ते प्रत्यपादयिष्यत् यथा जम्बूगो दारात् केवलज्ञानाभावो न च प्रतिपाद्यते तस्मा दु

इत्थीलिंगसिद्धा ८ पुरिसलिंगसिद्धा ९ नपुंसकलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अन्नलिंगसिद्धा १२ गि

उपदेशस्येश्वरो अभवत्। इत्थीलिंगसिद्धा ८। स्त्रीलिंगेनिर्वर्त्तितशरीर ते स्त्रीसिद्ध। पुरिसलिंगसिद्धा ९। पुरुषचिह्नसिद्धस्त्रथा गणधरसाधुउपाध्याय। नपुंसक
लिंगसिद्धा १०। कृत्रिम नीयाकानपुंसक तेसिद्धथया। सलिंगसिद्धा ११। सलिंगोसिद्धपामेने। अन्नलिंगसोधा १२। अन्यवेषेकरीसिद्धा। गिहिलिंगसिद्धा १३।

याग्इशाया स्वाध्यायादिक कर्तुं तनी दुंपतरसंयमपरियालमाय यतनया वर्क्ष परिभुञ्जामा न ता परिग्रहवत्य अयो ध्येत संजवति नाम स्त्री
गा मपि सम्यग्दर्शनादिकरत्नत्रयं परं न तत्सत्रवमात्रेण मुक्तिपदप्रापक भवति कि तु प्रकर्षप्राप्त मन्यथादीशानंतर मेव सर्वथा मप्य विशेषेण
मुक्तिपदप्राप्तिप्रसक्ति सम्यग्दर्शनादिरत्नत्रयप्रकर्ष य स्त्रीणा मसम्भवी ततो न निर्वाण मिति तद प्य युक्त स्त्रीपुरत्नत्रयप्रकर्षे स्वसम्भवति स
म्भवयाधक प्रमाणं विजृम्भते देशकालविप्रकृष्टपु मत्यक्षस्यामवृत्त सद प्रवृत्तौ वा नुमानस्या प्य सम्भवात् नापि तासु रत्नत्रयप्रकर्षासम्भवमति
पान्दका प्यागमो विद्यत प्रत्युतसम्भवप्रतिपादकः स्थाने २ सि यथा इद मेव प्रस्तुत सूत्रं ततो न तासा रत्नत्रयप्रकर्षासंजवो ऽथ मन्येथाः स्वभाव
तपवा तपेनेव च्छाया विरुध्यते स्त्रीत्वेन सह रत्नत्रयप्रकर्षे, सत सदसंभवो नुमीयत तदयुक्त युक्त युक्तिविरोधात् तथाहि–रत्नत्रयप्रकर्ष स उ
च्यत ततो मनतरं मुक्तिपदप्राप्ति स वा योग्यवस्था चरमसमयभावी ययोग्यवस्था वा स्यादृग प्रत्यक्षा तत कथं विरोधगतिः ? नहि मदृष्टेन स

ह विरोधः प्रतिपत्तुं शक्यत, मामापत् पुरुषेष्वपि प्रसङ्गः (नन्वः) ननु जगति सर्वोत्कृष्टपदप्राप्ति सर्वोत्कृष्टेनाध्यवसायेना वाप्यते ना न्यथा, एत श्चो न
यो रण्या वयी रागममामास्ववसतःसिद्ध सर्वोत्कृष्टदुःखस्थानं सर्वोत्कृष्टसुखस्थानं च, तत्रसर्वोत्कृष्टदुःखस्थानं सप्तमनरकपृथ्वी यत पर परमदुःखस्था
मन्या भावात् सर्वोत्कृष्टसुखस्थान तु निःश्रेयस तत्रस्त्रीणासप्तमनरकपृथिवीगमन मागमे निषिद्ध निषेधस्य च कारण तद्गमनयोग्यतथाविधसर्वो
त्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्य भाव सत सप्तमपृथिवीगमनवत्वाभावात् संमूर्च्छिमादिवत् अपि च यासां वादलब्धौ विकुर्वणत्वादिलब्धी पूर्वगतमुताधिग
तौ च न सामर्थ्यमति तासा मोक्षगमनसामर्थ्य मित्य तिदुःश्रद्धयं (सैद्धान्तिक) तदतदयुक्तं यतो यदि नाम स्त्रीणा सप्तमनरकपृथिवीगमनमति सर्वो
त्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्यभाव, सत एतावता कथ मवसीयत निःश्रेयसम पि प्रति तासा सर्वोत्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्य भावो? नहि यो भूमिकर्षणादिक क
र्तुं न शक्नोति स शास्त्राण्यप्य वगाहं न शक्नोती ति मत्येतुं शक्य प्रत्यक्षविरोधात् अथ संमूर्च्छिमादिषु उभयथा पि सर्वोत्कृष्टमनोवीर्यपरिण

त्वजावोवृद्द सतो वा क्लीयते मनु यदि तत्र दृष्ट सर्हि कथ मत्रावसीयते, म खलु यदि व्योंतिमात्रेण हेतु गमको भवति कि त्वत्तथ्योंस्या, ऽन्त
व्योंति य प्रतिबन्धवलन न या च प्रतिबन्धो विद्यते म खलु सप्तमपृथिवीगमम निर्वाणगमनस्यकारण ना पि सप्तमपृथिवीगमनाविनाभावि नि
र्वाणगमनं चरमशरीरिया सप्तमपृथिवीगमन मन्तरेणै व निर्वाणगमनाजावात् म च प्रतिबन्ध ममरेण एकस्या भावे,अन्यस्या वश्यं भावो सामग्र
त् यस्य तस्य वा कस्यचिद भावे सर्वेषा भावप्रसङ्गः यदि व सर्हि कथ समूर्च्छिमादिषु निर्वाणगममाजाव इति? उच्यते—तथाभवस्वाभाव्यात् त
माहि-समूर्च्छिमादयो भवस्वभावतएव न सम्यग्दर्शनादिकं यथाव त्प्रतिपत्तु मक्यन्ते ततो न तयां निर्वाणसंभव स्त्रियस्तु प्रागुक्तप्रकारेण य
थाव त्सम्यग्दर्शनादिरत्नत्रयसम्प्रयोग्या सत तासां न निर्वाणगमनाभाव अपि च भुजपरिसर्प्पा द्वितीया मेव पृथिवीं याव द्गच्छन्ति न परतः
परपृथिवीगमनहेतुतथारूपमनोवीर्यपरिणत्यजावात् तृतीयांयावत्पक्षिण चतुर्थी चतुष्पदा पञ्चमी मुरगा, अथ च सर्वे प्यू र्द्ध मुत्कर्षेतः
सहस्रार याव द्गच्छन्ति तस्मा दधोगतिविषय मनोवीर्यपरिणतिवैषम्यदर्शना दूर्द्धगताव पि च न त द्वैषम्यु माह च—विषमगतयो प्यधस्ता दुपरिष्टा
त्तुल्यमासहस्रारं। गच्छन्तितिर्यञ्च स्तदधोगत्यूनताहेतुः ॥ १ ॥ तथाचसति सिद्ध स्त्रीपुसा मधोगतिवैषम्ये पि निर्वाणं समं मत एव च मपि च
यासा वादलब्धा वित्यादि तद प्ययुक्तं वादिविकुर्वणत्वादिलब्धिविरहे पि विशिष्टपूर्वगतश्रुताभावे पि माषुषादीना निःश्रेयसपदाधिगमश्रवणा
दा वच—वादविकुर्वणत्वादिलब्धिविरहे श्रुत कलीयसि च जिनकल्पमनःपर्यवविरहे पि न सिद्धिविरहो स्ति अपि च यदि वादादिलब्ध्यभाववत्
निःश्रेयसाभावा पि स्त्रीणा मभविष्यत् तत सायैव सिद्धान्ते प्रत्यपादयिष्यत् यथा जघुषो द्वारात् केवलज्ञानाभावा न च प्रतिपाद्यते तस्मा दु

इत्थीलिंगसिद्धा ८ पुरिसलिंगसिद्धा ९ नपुसकलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अन्नलिंगसिद्धा १२ गि

रुपदेशदेवेन्द्रो लब्धत्। स्त्रीलिंगसिद्धा ८। कोलिंगेनिवर्णनीशरीर तेस्त्रीसिद्ध। पुरिसलिंगसिद्धा ९। पुरुषलिंगसिद्धा गणधरसाधुउपाध्याय। नपुसक
लिंगसिद्धा १ ।कृत्रिम बीर्याशनपुंसक तेसिद्धहुवा। सलिंगसिद्धा ११। सलिंगेसिद्धयामिते। अन्नलिंगसिद्धा १२। अन्यवेषेकरीसिद्धा। गिहिलिंगसिद्धा १३।

पपद्यते स्त्रीवा निर्वाण मिति कृतं प्रसङ्गेन ॥ तथा पुल्लिङ्गे शरीरनिर्वृत्तिरूपे व्यवस्थिताः सन्तो ये सिद्धा स्ते पुल्लिङ्गसिद्धा एव नपुंसकलिङ्गसिद्धाः ॥ १० ॥ तथा स्वलिङ्गे रजोहरणादिरूपे व्यवस्थिता संतो ये सिद्धा स्ते स्वलिङ्गसिद्धाः ॥ ११ ॥ तथा ऽन्यलिङ्गे परिव्राजकादिसम्बन्धिनि वल्कलकाषायादिरूप द्रव्यलिङ्गेव्यवस्थिता संतो ये सिद्धा स्ते ऽन्यलिङ्गसिद्धाः ॥ १२ ॥ गृहिलिङ्गसिद्धा गृहिलिङ्गसिद्धा मरुदेवीप्रभृतयः, तथा एकस्मिन् समये एकका एवसन्तः सिद्धा एकसिद्धाः ॥ अनेकसिद्धा इति ॥ एकस्मिन् समये ऽनेके सिद्धा अनेकसिद्धाः अनेके च एकस्मिन् समये सिध्यन्त उत्कर्षतो ऽष्टोत्तरशतसङ्ख्या वेदितव्या यस्मा दुक्तं—बत्तीसा अडयाला सट्ठी बावत्तरीय बोधव्वा ॥ चुलसीई छन्नउई दुरहियमट्ठुत्तरसयं च ॥ १ ॥ अस्या विनयजनानुग्रहाय व्याख्या—अष्टौ समयान् याव निरन्तर मेकादयो द्वात्रिंशत्पर्यन्ताः सिध्यन्तः प्राप्यन्ते, किमुक्तं भवति? प्रथम समये जघन्यत एको द्वौ वा उत्कर्षतो द्वात्रिंशत्सिध्यन्तः प्राप्यन्ते द्वितीये पि समये जघन्यत एको द्वौ वा उत्कर्षतो द्वात्रिंशत् एवं यावदष्टमे पि समये एको द्वा उत्कर्षतो द्वात्रिंशत् ततः परम वश्य मन्तरं तथा त्रयस्त्रिंशदादयो ऽष्टचत्वारिंशत्पर्यन्ता निरन्तरं सिध्यन्तः सप्तसमयान् याव त्प्राप्यन्ते परतो नियमा दन्तरं तथा एकोनपञ्चाशदादयः षष्टिपर्यन्ता निरन्तरं सिध्यन्त षट्समयान् यावत् प्राप्यन्ते परतो ऽवश्य मन्तरं तथा एकषष्ट्यादयो द्विसप्ततिपर्यन्ता निरन्तरं सिध्यन्त उत्कर्षतः पञ्चसमयान् यावत् प्राप्यन्ते ततः परम न्तरं त्रिसप्तत्यादय चतुरशीतिपर्यन्ता निरन्तरं सिध्यन्त उत्कर्षत चतुरःसमयान् याव त्तत ऊर्ध्व मन्तरं, तथा पञ्चाशीत्यादयः षण्णवति पर्यन्ता निरन्तरं सिध्यन्त उत्कर्षत स्त्रीन्समयान् याव त्परतो नियमा दन्तरं तथा सप्तनवत्यादयो द्व्युत्तरशतपर्यन्ता निरन्तरं सिध्यन्त उत्कर्षतो द्वौ समयौ परतो ऽवश्यमन्तरं तथा त्र्युत्तरशतादयो ऽष्टोत्तरशतपर्यन्ताः सिध्यन्तो नियमा देकमेवसमयं यावत् प्राप्यन्ते न द्विव्यादिसमयान् तद् च एकस्मिन् समये उत्कर्षतो ऽष्टोत्तरशतसङ्ख्याः सिध्यन्तः प्राप्यन्ते इत्य

हिलिंगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणेगसिद्धा १५। सेत्तं अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किं

मरुदेविप्रमुख प्रथमजिनमाताप्रभृतयोपरे। एगसिद्धा १४। एकैकस्मिन्समये सिद्धा ते एकसिद्ध। अणेगसिद्धा १५। अनेकसिद्ध एकैकस्मिन्समये सिद्ध ते। सेत्तमणन्तरसि

स्या चिनयजनानुग्रहाय व्याख्या—यष्टौ समयान् याव निरन्तर मेकादयो द्वात्रिंशत्पर्यन्ताः सिध्यन्त प्राप्यन्ते कि मुक्त भवति ? प्रथम समय जघन्यत एको द्वौ या उत्कर्षतो द्वात्रिंशत्सिध्यन्तः प्राप्यंते द्वितीय पि समये जघन्यत एको द्वौ वा उत्कर्षतो द्वात्रिंशत्, एव यावदष्टमे पि समये एको द्वा उत्कर्षतो द्वात्रिंशत् तत पर मवश्य मन्तर तथा त्रयस्त्रिंशदादयो ऽष्टचत्वारिंशत्पर्यन्ता निरन्तर सिध्यन्तः सप्तसमयान् याव दवाप्यन्ते परतो नियमा दन्तर' तथा एकोनपञ्चाशदादयः षष्टिपर्यन्ता निरन्तर सिध्यन्त षट्समयान् यावद वाप्यन्त परतो ऽवश्य मन्तरं तथा एकषष्ट्यादयो द्वि सप्ततिपर्यन्ता निरन्तर सिध्यन्त उत्कर्षतः पञ्चसमयान् याव दवाप्यन्ते ततः पर मन्तर त्रिसप्तत्यादय चतुरशीतिपर्यन्ता निरन्तर सिध्यन्त उत्कर्षत श्चतुरःसमयान् याव ततऊर्ध्व मन्तर तथा पञ्चाशीत्यादयः षण्णवतिपर्यन्ता निरन्तर सिध्यन्त उत्कर्षत स्त्रीन् समयान् याव त्परतो नियमा दन्तर तथा सप्तनवत्यादया द्व्युत्तरशतपर्यन्ता निरन्तर सिध्यन्त उत्कर्षतो द्वौ समयौ परतो ऽवश्यमन्तरं तथा त्र्युत्तरशतादयो ऽष्टोत्तरशतपर्यन्ताः सिध्यन्तो नियमा एकमेवसमयं यावदवाप्यन्त न द्विसमयादिसमयान् तद व मेकस्मिन् समये उत्कर्षतो ऽष्टोत्तरशतसङ्ख्याः सिध्यन्त प्राप्यन्ते इत्य नन्तरसिद्धाः उत्कर्षतो ऽष्टोत्तरशतप्रमाणा वेदितव्याः आह—तीर्थसिद्धातीर्थसिद्धरूपभेदद्वय एव शेषभेदा अन्त भवन्ति त त्किमर्थ शेषभेदोपादानं ? अन्तर्भवन्ति पर न तीर्थसिद्धाऽतीर्थसिद्धभेदद्वयोपादानमात्रा च्छेषभेदपरिज्ञान भवति विशेषपरिज्ञानार्थश्च एष शास्त्रारम्भप्रयास इति शेषभेदोपादान उपसहारमाह— सेत मित्यादि ॥ सै या अनन्तरसिद्धाऽससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ॥ सक्षिप्तमित्यादि । अथ का सा परम्परसिद्धा

त परपरसिद्धअससारसमावण्णजीवपण्णवणा ? परपरसिद्धअससारसमावण्णजीवपण्णवणा अणेगविहा प० तंजहा—अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव सखेज्जसमयसिद्धा असखेज्ज

द्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा ततिभावोक जिम अनन्तरसिद्धअससारप्राप्तजीवप्रज्ञापना कही । सेति त । [illegible] वेदे । परपरसिद्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा २ । परपरसिद्धअससारप्राप्तजीवप्रज्ञापना । अनेकविध । त [illegible] ते कहे छे । अपढमस

असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह-परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता परम्परसिद्धानामनेकविधत्वात् त देवा नकविधत्व माह-तत्रेत्यादि ॥ तद्यथे त्यनेकविधत्वोपदर्शने अप्रथमसमयसिद्धा इति न प्रथमसमयसिद्धा अप्रथमसमयसिद्धाः परम्परसिद्धविशेष प्रथमसमयवर्त्तिनः सिद्धत्वसमया द्वितीयसमयवर्त्तिन इत्यर्थः आदिपुरुषसमयेषु द्वितीयसमयसिद्धादय उच्यते-यद्वा सामान्यतः प्रथम समयसिद्धा पत्युक्तं तत एव द्विसंख्यतो आचष्टे द्विसमयसिद्धा त्रिसमयसिद्धा चतुःसमयसिद्धा इत्यादि यावच्छब्दकरणात् पञ्चसमयसिद्धादयः परिगृह्यन्ते सत्तमित्यादिनिगमनद्वयसुगमं तदेव मुक्ता असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सम्प्रतिसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनामभिधित्सु स्तद्विषय प्रश्नसूत्र माह मकितमित्यादि । अथ का सा संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह-संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-एकेन्द्रियसंसार समापन्नजीवप्रज्ञापना इत्यादि तत्र च स्पर्शनलक्षणमिन्द्रियं येषान्ते एकेन्द्रियाः पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयो वक्ष्यमाणस्वरूपा स्ते चते संसारस

समयसिद्धा अणतसमयसिद्धा , सेत्त परंपरसिद्धअससारसमावण्णजीवपण्णवणा । सेत्त असंसारसमावण्णजीवपण्णवणा । से कित संसारसमावण्णजीवपण्णवणा ? ससारसमावण्णजीवपण्णवणा पचविहा पण्णत्ता तजहा एगिंदियससारसमावण्णजीवपण्णवणा बेइंदियससारसमावण्णजीवपण्णवणा तेइंदियससारसमावण्णजीवपण्णव

मयसिद्धा । अपढमसमयसिद्ध अप्रथमसमयका आर्यसमये सौधात पढमसमयसिद्ध । दुसमयसिद्धा । द्विसमयसिद्ध । तिसमयसिद्धा । त्रिसमयसिद्ध । चउसमयसिद्धा । चतुःसमयसिद्ध । जावसखिज्जसमयसिद्धा । यावत् सख्यातसमयसिद्ध । असंखिज्जसमयसिद्धा । असंख्यातसमयसिद्ध । अणतसमयसिद्धा । अनन्तसमयसिद्ध । सेत्तं परंपरसिद्ध असंसारसमावण्णजीवपण्णवणा । तदेतत् परम्परसिद्ध असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सेत्तं असंसारसमावण्णजीवपण्णवणा । तदेतदसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना इति । से कित संसारसमावण्णजीवपण्णवणा ? अथ का संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? ससारसमावण्णजीवपण्णवणा पंचविहा पण्णत्ता । संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता । तजहा तद्यथा । एगिंदियससारसमावण्णजीवपण्णवणा । एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । बे

मापन्नजीवास्तेषामप्रापना एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, एवं सर्वपदे प्रवरघटना कार्या नवरं द्वे स्पर्शनरसनलक्षणे इन्द्रिये येषां ते द्वीन्द्रियाः शंखशुक्तिकादयः त्रीणि स्पर्शनरसनघ्राणलक्षणानि इन्द्रियाणि येषां ते त्रीन्द्रियाः यूकामत्कुणादयः चत्वारि स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुर्लक्षणानि इन्द्रियाणि येषां ते चतुरिन्द्रियाः दंशमशकादयः पञ्च स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्रलक्षणानि इन्द्रियाणि येषां ते पञ्चेन्द्रियाः मत्स्यमकरमनुजादयः अमीषाञ्चादि सङ्ख्या मिन्द्रियाणां स्पर्शादीनामसंव्यवहारराशेरारभ्य प्रायोऽमेनैव क्रमेण लाभ इति सम्प्रत्ययार्थ मित्थं क्रमेणैकेन्द्रियाद्युपन्यासः इन्द्रियाणि च द्विधा—द्रव्येन्द्रियाणि भावेन्द्रियाणि च तत्र द्रव्येन्द्रियाणि निर्वृत्त्युपकरणरूपाणि तानि च सविस्तरं मध्ययनटीकाया व्याख्यातानीति भूयो व्याख्यायन्ते भावेन्द्रियाणि क्षयोपशमोपयोगरूपाणि तानि च नियतानि एकेन्द्रियाणामपि क्षयोपशमोपयोगरूपं भावेन्द्रियपञ्चकसम्भवः केषाञ्चित्तत्फलदर्शनात् तथाहि—बकुलादयो मत्तकामिनीगीतध्वनिमदवदनविलासकटाक्षनिरीक्षणसुखलब्धसुरागवरूपगन्धाघ्राणरसास्वादपदाघातस्पर्शनतः प्रमोदभावेनकालमेव मुपलभ्यन्ते पुष्पफलानिप्रयच्छन्ते उक्तञ्च—"…कुरवकसाहवं दीसइ वेसं दिग्धवसजोवितेकत्वितलायरस…" ॥ १ ॥ ततो भावेन्द्रियाणि लौकिकव्यवहारपथातीतैकेन्द्रियादिव्यपदेशनिबन्धनं किन्तु द्रव्येन्द्रियाणि, तथाहि—येषामेकं बाह्यं द्रव्येन्द्रियरूपमस्ति ते एकेन्द्रियाः येषां द्वे ते द्वीन्द्रिया एवं यावत् येषां पञ्च ते पञ्चेन्द्रियाः आह च—पंचिदियत्ति

गा चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । से किं तं एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—पुढविकाइया

सोम० १। एगिंदियसंसारसमावन्नजीव । बेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा २। तेइंदियसंसारसमावन्नजीव । तेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ३। चउरिंदियसंसार पंचिंदियसंसा०। चउरिंदियपंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ४। सेकिंतं ५। एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा २ पंचविहा पन्न० । तेसिं पञ्चण्हं … एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा … गुरुकहे … । पुढ

संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह–परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता परस्परसिद्धानां अनेकविधत्वात्, तदेवा नेकविधत्व माह–तद्यथे त्यादि । तद्यथे त्यनेकविधत्वोपदर्शने अप्रथमसमयसिद्धा इति न प्रथमसमयसिद्धा अप्रथमसमयसिद्धाः परम्परसिद्धविशेष णमपथमसमयवर्त्तिनः सिद्धत्वसमया द्वितीयसमयवर्त्तिन इत्यर्थः आदिपुरुसमयेषु द्वितीयसमयसिद्धादय उच्यते–यद्वा सामान्यतः प्रथम समयसिद्धा इत्यर्थः तत अत द्विशेषता माचष्टे द्विसमयसिद्धा स्त्रिसमयसिद्धा चतुःसमयसिद्धा इत्यादि, यावच्छब्दकरणात् पञ्चसमयसिद्धादयः परिगृह्यन्ते सतमित्यादिनिगमनद्वयंसुगम तदेव मुक्ता असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सम्प्रतिसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनामभिधित्सु स्तद्विषय प्रश्नसूत्र माह अकितमित्यादि । अथ का सा संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह–संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा–एकेन्द्रियसंसार समापन्नजीवप्रज्ञापना इत्यादि तत्रै क स्पर्शनलक्षणमिन्द्रियं येषान्ते एकेन्द्रियाः पृथिव्यम्बुतेजोवायुवनस्पतयो वक्ष्यमाणस्वरूपा स्ते चते संसारस

समयसिद्धा अणंतसमयसिद्धा, सेत्त परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । सेत्त असंसारसमावन्नजी वपण्णवणा । से किंत संसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? संसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचविहा पन्नत्ता तंजहा एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा बेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा तेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नव

समयसिद्धा । पढमसमयसिद्ध अप्रथमसमयको धाभेसमवे सोधात अपढमसमयसिद्ध । दुसमयसिद्धा । इसकोआसमयनासिद्ध । तिसमयसिद्धा । तोआसमयना सिद्ध । चउसमयसिद्धा । इमचोआसमयनासिद्ध । जावसंखिज्जसमयसिद्धा । इमयावत् संख्यातसमयनासिद्ध । असंखिज्जसमयसिद्धा । इमअसंखेज्जसमय नासिद्ध अणंतसमयसिद्धा इत्यादि । सेत्तपरंपरसिद्ध असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । तत्थिमचैव परंपरायेसिद्ध असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाकही । से असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ।। तेतिसपतले असमारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाकहीइतिसपूर्ण । सेकितसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? पंचविहापन्नत्ता । द्वितीयपाठा पांचभेदकहेछे कुणतिसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? पंचप्रकारेकही तेतिम । एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । एकेंद्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाएक

काय सूक्ष्मनामकर्मोदयात्सूक्ष्मा बादरनामकर्मोदयाद्बादरा कर्मोदयजनितं खल्वतो सूक्ष्मबादरत्वं नापेक्षिकं बदरामलकयोरिव सूक्ष्माश्च ते पृथिवीकायिकाश्च सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः चशब्दः स्वगतपर्याप्तापर्याप्तभेदसूचकः बादराश्च ते पृथिवीकायिकाश्च बादरपृथिवीकायिकाः अत्रापि चशब्दः स्वगतशर्करावालुकादिभेदसूचकः तत्र सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः समुद्गकप्रक्षिप्तगन्धावयववत् सकललोकव्यापिनो बादराः प्रतिनियतदेशचारिणः तच्च प्रतिनियतदेशचारित्वं द्वितीयपदे प्रकटयिष्यते तत्र सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां स्वरूपं जिज्ञासुः पृच्छति — से किं तमित्यादि ॥ अथ कतमे सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः ? सूरिराह — सूक्ष्मपृथिवीकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा — पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका चापर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च तत्र पर्याप्तिर्नाम आहारादिपुद्गलग्रहणपरिणमनहेतुरात्मनः शक्तिविशेषः स च पुद्गलोपचयादुपजायते, किमुक्तं भवति — उत्पत्तिदेशमागतेन प्रथमसमये ये गृहीताः पुद्गलास्तेषां तथान्येषामपि प्रतिसमयं गृह्यमाणानां तत्सम्पर्कतस्तद्रूपतया जातानां यः शक्तिविशेष आहारादिपु

द्गलखलरसरूपतापादनहेतुः यथा उदरान्तर्गतानां पुद्गलविशेषाणां आहारपुद्गलखलरसरूपतापरिणमनहेतुः सा च पर्याप्तिः षोढा — आहारपर्याप्तिः शरीरपर्याप्तिरिन्द्रियपर्याप्तिः प्राणापानपर्याप्तिः भाषापर्याप्तिः मनःपर्याप्तिश्च तत्र यया बाह्यमाहारमादाय खलरसरूपतया परिणमयति साहारपर्याप्तिः यया रसीभूतमाहारं रसासृग्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्रलक्षणसप्तधातुरूपतया परिणमयति सा शरीरपर्याप्तिः यया धातुरूपतया परिणमितमाहारमिन्द्रियरूपतया परिणमयति सा इन्द्रियपर्याप्तिः [illegible] तथा चायमर्थोऽन्यत्रापि ग्रन्थान्तरे वा यया पञ्चानामिन्द्रियाणां प्रायोग्यान् पुद्गलान् गृहीत्वा अनाभोगनिर्वर्तितेन वीर्येण तद्भावनयनशक्तिरिन्द्रियपर्याप्तिरिति यया पुनरुच्छ्वासप्रायोग्यान् पुद्गलानादाय उच्छ्वासरूपतया परिणमय्य तांश्च मुञ्चति सा उच्छ्वासपर्याप्तिः यया तु भाषाप्रायोग्यान् पुद्गलानादाय भाषात्वेन परिणमय्य तांश्च मुञ्चति सा भाषापर्याप्तिः, यया पुनर्मनःप्रायोग्यान् पुद्गलानादाय मनस्त्वेन परिणमय्य तांश्च मुञ्चति सा मनःपर्याप्तिः एताश्च

मउला मराधुमङ्गविमयायमभाढं नरयिमन्नमस्पच विशेतिसंख्येदियाजावा ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ कासा एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह—एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता एकेन्द्रियाणां पञ्चविधत्वात् तदेवपञ्चविधत्वमाह ॥ तद्यथेत्यादि ॥ पृथिवी काठिन्यादिलक्षणा प्रतीता सैव कायः शरीरं येषांते पृथिवीकायाः पृथिवीकाया एव पृथिवीकायिकाः स्वार्थेकप्रत्ययः आपो द्रवाः ताश्च प्रतीता एव ताः कायः शरीरं येषांतेऽप्कायाः अप्काया एव अप्कायिकाः तेजो वह्निः सएवकायः शरीरंयेषां ते तेजस्कायाः तेजस्काया एव तेजस्कायिकाः वायुः पवनः सएव कायो येषांते वायुकायाः वायुकाया एव वायुकायिकाः वनस्पतिर्लतादिरूपः सएव कायः शरीरं येषान्ते वनस्पतिकायाः व नस्पतिकाया एव वनस्पतिकायिकाः सर्वसद्भूताधारत्वात् पृथिवीकायिकानां प्रथममुपादानं तदनन्तरं तत्प्रतिष्ठितत्वात् अप्कायिकानां अप्कायि काः तत्प्रतिपक्षभूता तदनन्तरं तेजस्कायिकानामुपादानं तेजश्च वायुसम्पर्कतः प्रवृद्धिमुपयाति तत एतदनन्तरं वायुकायिकग्रहणं वायुश्च दूर स्थिता पृथ्वाग्रादिकम्पनतः लक्ष्यते तत एतदनन्तरं वनस्पतिकायिकोपादानं सम्प्रतिपृथिवीकायिकं समवबुध्यमानः सम्यक् शिष्यः प्रश्नं करो ति—सेकिंतमित्यादि—अथ के ते पृथिवीकायिकाः ? सूरिराह—पृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च बादरपृथिवीकायि

आउक्काइया तेउक्काइया वाउक्काइया वणस्सइकाइया । से किंत पुढविकाइया पुढविकाइया दुविहा प०, तंजहा—सुहुमपुढविकाइया बादरपुढविकाइया । से किंत सुहुमपुढविकाइया सुहुमपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाय अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाय, सेत्तसुहुमपुढविकाइया । से

[illegible] पाउकाइया तेउकाइया वाउकाइया [illegible] । पृथ्वीकायिक जीव १ अपकायिक जीव २ तेजकायिक जीव ३ वायुकायिक जीव वनस्पतिकायिक । ५ । सेकितपढविकाइया २ । तशिष्य [illegible] पृथ्वीकाय [illegible] प्रकार । दुविहा पत्त । गुरु कहे दोयप्रकारे । सुहुमपुढविकाइया । सूक्ष्मपृथ्वीकाय । बायरपुढविकाइया । बादरपृथ्वीकाय २ । सेकिंतसुहुमपुढविकाइया २ । ते शिष्य कहे सूक्ष्म [illegible] केता तिम गुरु कहे । दुविहा पणत्ता तंजहा । ते दोयप्रकारना ते कहेछे पज्जत्तसुहुमपुढवि

पते ते लब्ध्यऽपर्याप्तकाः ये पुनः करणानि शरीरेन्द्रियादीनि न तावन्निर्वर्तयन्ति अथ चावश्यं निर्वर्तयिष्यन्ति ते करणाऽपर्याप्ताः, उपसंहार मा ह-सत्त मित्यादि ॥ त एते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः सव च सूक्ष्मपृथिवीकायिकानभिधाय सम्प्रति बादरपृथिवीकायिका नभिधित्सु स्तद्विषयं प्रश्नसूत्र माह-सकितमित्यादि ॥ अथ के ते बादरपृथिवीकायिकाः ? सूरिराह-बादरपृथिवीकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिका श्च खरबादरपृथिवीकायिका श्च तत्र श्लक्ष्णा नाम चूर्णितलोष्टकल्पा मृदुपृथिवी तदात्मका जीवा अप्युपचारतः श्लक्ष्णा स्ते च ते बादरपृथिवीकायिकाश्च श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः, अथवा श्लक्ष्णाश्च साबादरपृथिवीचसाकायः शरीरयेषांते श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायाः स्तएव स्वार्थिके क प्रत्यय विधा नात् श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः च शब्दौ वक्ष्यमाणस्वगतानेकभेदसूचकौ खरा नाम पृथिवीसङ्घातविशेषकाठिन्यविशेष माप्ता पृथिवी तदात्मकाजीवा अपि खरा स्ते च ते बादरपृथिवीकायिका श्च खरबादरपृथिवीकायिकाः अथवा पूर्ववत् मकारान्तरेण समास श्च शब्द स्वगतवक्ष्यमाणचत्वारिंशद्भे दसूचकः ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः ? सूरिराह-श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः सप्तविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा सप्तविधत्व मु पपत्यादिभो पदर्शयति-कृष्णमृत्तिका कालमृत्तिकारूपा एवनीलमृत्तिका लोहितमृत्तिका हारिद्रमृत्तिका शुक्लमृत्तिका इत्येवमेकदेशपञ्चविधत्व मु क्तम् पाण्डुमृत्तिकानाम देशविशेषेयाधूलीरूपासतीपाण्डूरितिप्रसिद्धा तदात्मकाजीवा अप्यभेदोपचारात् पाण्डुमृत्तिके त्युक्ता ॥ पनकमृत्तिकेति ॥ नद्यादि

छोहियमत्तिया हालिद्दमत्तिया सुक्किलमत्तिया पंडुमत्तिया पणगमत्तिया । सेत्तं सण्हबादरपुढविकाइया ।

गुणरहेछे, अथवा बादरपुढविकाइयाने खरबादरपुढविकाइयाने । सूक्ष्मनामकर्मोदयथी सूक्ष्म। बादरपृथिवीकाय पृथिवीकाय कठिननामकर्मोदयथीबादर तेखरबादरपृथिवीकाय। सेकितंसण्हबादरपुढविकाइया२ सत्तविहा पं तंजहा । बादरपृथिवीकायनाभेद्र कोतलेप्रकारे गुरुकहे ते सातप्रकारे कहवा छेकहेछे, किण्हमट्टियाकोसम नीलियम लोहिदम सुक्किलम पंडुम पणगमट्टिया । कालीमट्टी १ नीलीमट्टी २ रातीमट्टी ३ पीलीमट्टी ४धोलीमट्टी ५स्वेतरजवेम लिनीरमाटी धूल६ पनकमाटी७। सत्तनपए बादरपुढविकाइया। ते तिमबोम कोमलबादरकायनाभेदकह्या। सेकितखरबादरपुढविकाइया२ अणेगविहा

यथाक्रम मेकेन्द्रियाणां संज्ञिवर्जानां द्वीन्द्रियादीनां संज्ञिनां चतुःपञ्च षट् संख्या भवन्ति, उक्तञ्च प्रज्ञापनामूलटीकायां–एकेन्द्रियाणां चतस्रो विकलेन्द्रियाणां पञ्च संज्ञिनां षडि ति उत्पत्तिप्रथमसमयएव ता यथायथं सर्वा अपि युगपन्निष्पादयितु मारभ्यन्ते क्रमेण च निष्ठां यान्ति, त द्यथा–प्रथम माहारपर्याप्ति स्ततः शरीरपर्याप्ति स्तत इन्द्रियपर्याप्ति रित्यादि आहारपर्याप्ति श्च प्रथमसमयमेव निष्पत्ति मुपपद्यते शेषा स्तु प्र त्येकं मन्तर्मुहूर्तेन कालेन अथाहारपर्याप्तिः प्रथमसमय एव निष्पद्यत इति कथ मवसीयते ? उच्यते–यत आहारपदे द्वितीयोद्देशके सूत्र मिद आहारपज्जत्तीए अपज्जत्तए णं भंते किं आहारए अणाहारए गो० णोआहारए अणाहारए इति, तत आहारपर्याप्त्या अपर्याप्तो विग्रहगतावेवो पप द्यते नो उपपातक्षेत्र मागतो पि उपपातक्षेत्र मागतस्य प्रथमसमय एवा हारकत्वात् तत एकसामायिकी आहारपर्याप्तिनिर्वृत्ति यदि पुन रुपपात क्षेत्रमागतो पि आहारपर्याप्त्या पर्याप्तः स्या तत एवं सति व्याकरणसूत्र मित्थं भवेत् "सिय आहारए सिय अणाहारए यथा शरीरादिपर्याप्तिषु सि य आहारए सिय अणाहारए इति सर्वासाम पि च पर्याप्तीनां परिसमाप्तिकालो ऽन्तर्मुहूर्तप्रमाण पर्याप्तयो विद्य न्ते येषान्ते पर्याप्ता अभ्रादिभ्य इ ति मत्वर्थीयो ऽप्रत्यय पर्याप्तका श्च ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च पर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिका च शब्दो लब्धिपर्याप्तकरणपर्याप्तरूपस्वगतभेदद्वयसूच को, ये पुनः स्वयोग्यपर्याप्तिपरिसमाप्तिविकला स्त ऽपर्याप्ता अपर्याप्ता श्च ते सूक्ष्मपृथिवीकायिका श्च अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका श्च शब्दः स्वग तलब्धिनिमित्तस्वगतभेदद्वयसूचकः तथा हि–द्विविधाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्ता स्त द्यथा–लब्ध्या करणे न, तत्र ये अपर्याप्तका एव सन्तो म्रि

सेकिंतं बादरपुढविकाइया बादरपुढविकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–सण्हबादरपुढविकाइयाय खरबादर पुढविकाइयाय । से किंतं सण्हबादरपुढविकाइया २ सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा–किण्हमत्तिया नीलमत्तिया

कायिका अपज्जत्तगा य २। एकेंद्रियपर्याप्ता सूक्ष्मपृथिवीकाय अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकाय २ । जिनसूक्ष्मपुढविकाइया ते तिमजोग सर्वपृथिवीकायना जीवमेद कह्या तिम, जिवबादरना। सेकिंतं बादरपुढविकाइया २ दुविहा पंनत्ता । हिवे ते भिन्नपूछे गुरुप्रते कुण ते बादरते,बादर पृथिवीकायना दोयभेदकह्या ते

स्वन घातव्या तान्ये य मणिविधानानि दमयति–गोमज्जम इत्यादि॥ गोमेद्यकः २३ च समुचये तथक २४ मकः २५ स्फटिक २६ च मूत्रमग् सौगि तावः २७ मरकत २८ मसारगल्ल २९ भुजमोचक ३० इन्द्रनील ३१ चन्दनो ३२ गैरिको ३३ हंसगर्भः ३४ पुलकः ३५ सौगन्धिकश्च ३६ चन्द्रप्रभो ३७ वै डूर्यो ३८ जलकान्तो ३९ सूर्यकान्तश्च ४० तदेव माद्यगाथया पृथिव्यादयस्तत्र षट्त्रिंशत्‌भेदा द्वितीयगाथया ऽष्टौ हरितालादयः स्तृतीयगाथया गो मेद्यकादयो मय चतुर्थगाथया नवे तिसृणां चत्वारिंशत् अथावशेषतदप्यगारा इति॥ ये पि चा न्ये तथा प्रकारा मणिभेदाः पद्मरागादय स्ते पि खरबादरपृथिवीकायत्वेन वदितव्या॥ तेसमासओ इत्यादि॥ तत्सामान्यतो बादरपृथिवीकायिका समासतः सङ्क्षेपेण द्विविधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा–पर्याप्त का अपर्याप्तका य तत्र ये ऽपर्याप्तका स्ते स्वयोग्या पर्याप्ती साकल्येन असम्प्राप्ता इति, यथवा ऽसम्प्राप्ता इति विशिष्टान् वर्णादीन् अनुपगता तथाहि–वर्णादिभेदविवक्षया नैते न शक्यन्ते कृष्णादिवर्णभेदेन व्यपदेष्टुं किंकारणमि ति चेत्? उच्यते इह शरीरादिपर्याप्तिषु परिपूर्णासु सतीषु बादराणां वर्णादिविभागः प्रकटो भवति नापरिपूर्णासु ते चा पर्याप्ता उच्छ्वासपर्याप्त्याऽपर्याप्ता एव म्रियन्ते ततो न स्पष्टतरवर्णादिविभाग इस्य

मरगयमसारगल्ले भुयमोयगइंदनीलेय ॥ ३ ॥ चंदणगेरुयहंसे पुलएसोगंधिएयबोधव्वे । चंदप्पहवेरुलिए ज लकंतसूरकंतेय ॥ ४ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा – पज्जत्तगाय अपज्जत्त

त्विदे मणिनाम भेदा वक्ष्ये–गोमेज्जएयरुयए अंकफलिहेयलोहियक्खेय । मरगयमसारगल्ले भुयमोयग इंदनीलेय ॥ ३ ॥ गोमेदमणि १ रुचकमणि २ अं कमणि ३ स्फटिकमणि ४ लोहिताक्षमणि ५ मरकतमणि ६ मसारगल्ल ७ भुजमोचकरत्न ८ इन्द्रनीलरत्न ९ ॥ ८ ॥ चंदणगेरुयहंसे पुलएसोगंधिएयबोधव्वे । चद प्पहवेरुलिए जलकंते सूरकंतेय ॥ ४ ॥ चन्दनरत्न १० गैरिकरत्न ११ पुलकरत्न १२ सौगन्धिकरत्न १३ एतद्वैभासे कथका चन्द्रप्रभरत्न वैडूर्य जलकान्तरत्न सूर्यकान्तरत्न ॥ ४ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा तेसमासओ दुविहा पन्नत्ता तंजहा । जेहवा अनराओ तथा प्रकारना ते सर्वेपण बादरभेदे कह्या छे कहिये । पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्र वली ते अपज्जत्तगा तेह अपर्याप्ता तथा वली ते पज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता तथा तिहां जे पर्याप्ता एतला मध्ये अपो

पूरप्लावितदेशे नद्यादिपूरेऽपगते यो भूमौ श्लक्ष्णमृदुरूपो जलमलापरपर्याय पङ्कः सापनकमृत्तिका तदात्मकाजीवा अप्यजदोपचारात् पनकमृत्ति का मित्यमनमाह—सेत्तसण्हबायरपुढविकाइया ॥ सूत्रम सचित्तमित्यादि ॥ अथ के ते खरबादरपृथिवीकायिका ? सूरिराह—खरबादरपृथिवीकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ता चत्वारिंशद्भेदा मुख्यतः प्रज्ञप्ता इत्यर्थः तानेवचत्वारिंशद्भेदाना ह—तद्यथा पुढवीय इत्यादिगाथाचतुष्टय पृथिवी ति नामा सत्यनामावत् शुद्धपृथिवी नदीतटभित्त्यादिरूपा अवान्तरभेदापेक्षया समुच्चय शर्करा लघूपलशकलरूपाः । २ । वालुकाः सिकताः । ३ । उपल टङ्काद्युपकरणपरिकर्मणायोग्य पाषाणः । ४ । शिला घटनयोग्या देवकुलपीठाद्युपयोगी महान्पाषाणविशेष । ५ । लवणंसामुद्रादि । ६ । ऊ षोपद्मादूषरंक्षेत्रं । ७ । अयस्ताम्रत्रपुसीसकरूप्यसुवर्णानिप्रतीतानि । १३ । वज्रोहीरकः । १४ । हरितालहिङ्गुलकमनःशिलाःप्रतीताः सीसकं पारदजः । १८ । अञ्जन सौवीराञ्जनादि । १९ । प्रवाल विद्रुम । २० । अभ्रपटल अभ्रकं । २१ । अभ्रवालुका अभ्रपटलमिश्रावालुका । २२ । बादरका य इति ॥ बादरपृथिवीकाये अमी भेदा इति शेषः मणिविधाना इति च प्रदस्य गम्यमानत्वात् मणिविधानानिमणिभेदाय बादरपृथिवीकायभेद

से किंत खरबादरपुढविकाइया ? खरबादरपुढविकाइया अणेगविहा पण्णत्ता , तंजहा—पुढवीयसक्करावा लुयाय उवलेसिलायलोणूसे । अयतंबतउयसीसे रुप्पसुवण्णेयवइरेय ॥ १ ॥ हरियालेहिंगुलुए मणोसिलासास गंजणपवाले । अब्भपडलब्भवालुय बादरकाएमणिविहाणा ॥ २ ॥ गोमेज्जएयरुयए अंकेफलिहेयलोहियक्खेय

पं तं । ते किवे कुण ते कहे छे परपृथिवीकठिनबादरपृथिवी ते किम खर कठिनबादर पृथिवीकायना अनेकभेदकह्या ते कहे छे पुढवीयसक्करावा सचासव सम्मिलायलावूमे । अयतंबतउयसीसेरुप्पसुवण्णेयवइरेय ॥ १ ॥ पृथिवी माकरासचित १ वालू २ उपल टांकणायोग्य ३ सिलाघडवायोग्य ४ लेच ते मोटापाषाण (?) लियर ५ पत्थरखार जाति ६ तांबा ७ तरवो ८ सीसा ९ रूपा १० सोना ११ वज्र ते हीरा १२ ॥ १ ॥ हरियालेहिंगुलुए मणोसिलासासगंजणपवाले । अब्भपडलब्भ वालुय बादरकायमणिविहाणा ॥ २ ॥ हरिताल १३ हींगलू १४ मणसिल १५ पवालो प्रवाल नाम भोडल पडल अभ्रवेलू ए बादर पृथिवीकायना २ ॥

स्वम ज्ञातव्याः ताम्बे म मणिविधानामानि दर्शयति-गोमज्जए इत्यादि॥ गोमेद्यक २६ च रुचकवे तवक २४ अंक २५ स्फटिक २६ च पूर्ववत् लोहि ताक्षः २७ मरकतः २८ मसारगल्ल २९ भुजमोचक ३० इन्द्रनील ३१ चन्दनो ३२ गैरिको ३३ हंसगर्भ ३४ पुलक ३५ सौगन्धिक ३६ चन्द्रप्रभो ३७ वै डूर्यो ३८ जलकान्तः ३९ सूर्यकान्तश्च ४० तत्र च आद्यगाथया पृथिव्यादयश्चतुर्दशाभेदा द्वितीयगाथया ऽष्टौ हरितालादय स्तृतीयगाथया गो मेद्यकादयो नव तुर्यगाथया मवे तिसृभ्या गाथया अष्टादश। जेयावन्नत्थप्पगारा इति॥ ये पि चान्ये तथा प्रकारा मणिभेदाः मन्नरागादय स्ते पि खरबादरपृथिवीकायत्वेन वेदितव्याः॥ तेसमासओ इत्यादि॥ तेषामन्यतो बादरपृथिवीकायिका समासतः संक्षेपेण द्विविधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा-पर्याप्त का अपर्याप्तका च, तत्र ये ऽपर्याप्तका स्ते स्वयोग्या पर्याप्तीः सामस्त्येन सम्प्राप्ता इति अथवा ऽसम्प्राप्ता इति विशिष्टान् वर्णादीन् अनुपगता ताप्यादि-वर्णादिभेदविवक्षया मैते न शक्यन्ते कृष्णादिवर्णभेदेन व्यपदेष्टुं किंकारणमि ति चेत्? उच्यते इह शरीरादिपर्याप्तिषु परिपूर्णासु सतीषु बादराणां वर्णादिविभागः प्रकटो भवति नापरिपूर्णासु ते चा पर्याप्ता उच्छ्वासपर्याप्त्याऽपर्याप्ता एव म्रियन्ते ततो न स्पष्टतरवर्णादिविभाग इस्य

मरगयमसारगल्ले भुयमोयगइंदनीलेय ॥ ३ ॥ चंदणगेरुयहंसे पुलएसोगंधिएयबोधव्वे । चंदप्पहवेरुलिए ज लकंतेसूरकंतेय ॥ ४ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा — पज्जत्तगाय अपज्जत्त

त्रिवे मणिनाम भेदं करोते—गोमेज्जएरुयए अंकफलिहेयलोहियक्खेय । मरगयमसारगल्ले भुयमोयगइंदनीलेय ॥३॥ गोमेदमणि १ रुचकमणि २ अं कमणि ३ स्फटिकमणि ४ लोहिताक्षमणि ५ मरकतमणि ६ मसारगल्ल ७ भुजमोचकरत्न ८ इन्द्रनीलरत्न ९ ॥ ८ ॥ चंदणगेरुयहंसे पुलएसोगंधिएयबोधव्वे । चंद प्पहवेरुलिए जलकंते सूरकंतेय ॥ ४ ॥ चन्दनरत्न १ गैरिकरत्न ११ पुलकरत्न १२ सौगन्धिकरत्न १३ एहवे नामे जाणवा चन्द्रप्रभरत्न वैडूर्य जलकान्तरत्न सूर्यकान्तरत्न ॥ ४ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा तंसमासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा । जेहवा अनेराइ वली प्रकारना ते संक्षेपथकी दोयभेदे कह्या ते कहेछे । पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता तत्थण जेते पज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता तथा तिहां जे पर्याप्ता एतलेअण नथी

मप्राप्ता इत्युक्त नन् कस्मा दुष्प्रामपर्याप्तै वा ऽपर्याप्ता खियन्ते नो वा? शरीरेन्द्रियपर्याप्तिभ्या मपर्याप्ता अपि? उच्यते तस्मा दागामिभवा यु बद्ध्वा म्रियन्त एव मब इहिनो ना यथ्वा तत्र शरीरेन्द्रियपर्याप्तिभ्या पर्याप्तानां मध्यमा यान्ति ना न्यथा इति अन्ये तु व्याचक्षते सामा न्यता वर्णादी नसम्प्राप्ता इति त च म युक्तं यतः शरीरमात्रभाविनो वर्णादयः शरीरं च शरीरपर्याप्त्या सञ्जात इति ॥ तत्र य ये ते पर्याप्त गा इत्यादि ॥ तत्र य त पर्याप्तका परिसमाप्तस्वयोग्यसमस्तपर्याप्तय एतेषां वर्णादेशेन वर्णादविवक्षया एव गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशः सहस्रसङ्ख्याविधानानि भवन्ति तद्यथा—वर्णाः कृष्णादिभेदात्पञ्च, गन्धौ सुरभीतरभेदाद् द्वौ रसा स्तिक्तादय पञ्च स्पर्शा मृदुकर्कशा दयो ऽष्टौ एकैकस्मि च वर्णादौ तारतम्यभेदना मेके वातरभेदा तथाहि—भ्रमरकोकिलकज्जलादिषु तरतमभावा दित्यादिरूपतया ऽनेके कृष्ण भेदा नवनीतादिष्व प्या योज्य तथा गन्धरसस्पर्शेष्व पि तथा परस्परं वर्णाना संयोगतो धूसरकर्बुरत्वादयो भेदे सङ्ख्याभेदा एव गन्धादीनाम पि परस्परं गन्धादिभि समायाना दतो भवन्ति वर्णाद्याश्रयैः सहस्राग्रशो भेदाः ॥ सङ्ख्येयाह जोणिप्पमुहसयसहस्साइ इति ॥ सङ्ख्येयानि योनिप्रमु खानि योनिद्वाराणि शतसहस्राणि तथाहि—एकैकस्मिन् वर्णे गन्धे रसे स्पर्शे च संवृतायोनिः पृथिवीकायिकानां सा पुन स्त्रिधा सचित्ता अचित्ता

गाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण असपत्ता तत्थण जेते पज्जत्तगा एतेसि वण्णादेसेण गंधादेसेण रसादे सेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइ संखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगाय

पाम्मा विभिन्न एव मध एक रूपस ए समाप्त पूरी बनाविना न प्रगटे। तेसिच वर्णाएसेच। तिनोमाहि वर्णादिभेदकरी। गंधाएसर्व रसाएसेच। गंधा दसकरी रसादभेदकरी। फासाएसेच महस्रप्रमाणविधानाई संख्यात। स्पर्शादिभेदकरी वर्ण भेदकरी सहस्रगमे भेदचुवे वर्णादि २५ भेदना वर्णादि तर तमभेदे अनेकभेदचे ते भिन्न भावसहुवे भ्रमर कोकिल तेहथको काजल एम स्याम सदस्रभेदे थथवा २ कहिवाण संस्याते भेदहुवे। जोणिप्पमहस सयसहस्साइं पज्जत्तगहसाए भपज्जत्तगावक्कमति। काय यानि शतसहस्रकरतो कायगमेवे पर्याप्ताना निश्राये अपर्याप्ताउपजे ते कोरभाव करीके।

मिश्रा च, पुन रेकैकास्त्रिधा शीता उष्णा शीतोष्णा शीतादीना मपि प्रत्येक तारतम्यभेदा दनेकभेदत्व । केवल मेव विशिष्टवर्णादियुक्ता सस्याS तीता अपि स्वस्थाने व्यक्तिभेदेन योमयो जातिमधिकृत्य चैव योनि गंस्यते, ततः सङ्ख्यामि सप्तपृथिवीकायिकानां योनिप्रमतसहस्राणि भवन्ति तासि च सूक्ष्मबादरमतसर्वसङ्ख्या सप्त॥ पज्जत्तगनिस्साए इत्यादि॥ पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तका भुत्कामन्ति उत्पद्यन्ते कियन्त इत्या ह—यत्र एकः पर्याप्त स्तत्र नियमा तन्निश्रया असङ्ख्याः सङ्ख्यातीता अपर्याप्तकाः उपसंहारमाह—सेत मित्यादि॥ निगमनमथ सुगम सर्वे प्य मुक्ताः पृथिवीकायिकाः स म्प्रत्य प्कायिकप्रतिपादनायमाह—से कि त मित्यादि सुगम ओसा इत्य वश्यायः हिमः हिम स्त्यानोदक महिका गर्भमासेषु सूक्ष्मवर्षे करको घ

क्कमंति, जत्थ एगो तत्थ णियमा असंखेज्जा । सेत्तखरबादरपुढविकाइया । सेत्तबादरपुढविकाइया ॥ सेत्तपु ढविकाइया ॥ से किंत आउकाइया ? आउकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सुहुमआउकाइयाय बादर आउकाइयाय । से किंत सुहुमआउकाइया ? सुहुमआउकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तसुहुम आउकाइयाय अपज्जत्तसुहुमआउकाइयाय॥ सेत्त सुहुमआउकाइया॥ से किंत बादरआउकाइया ? बादर

असंख्यातअवश्यमा असंखेज्जा । जिहां एकजीवपर्याप्ता उपजे तिहां निश्चे असंख्याता अपर्याप्ता उपजे । सेत्तखरबादरपुढविकाइया । ते कहिये । कठि नबादर पृथिवीकाय । सेत्तबादरपुढविकाइया । एतले बादर पृथिवीकायनाभेद कह्या । सेत्तपुढविकाइया । एतले सर्वपृथिवीकायना भेद कह्या जिवे । अप्काय कहे । सेकिंतअप्पकाइया २ दुविहा पन्नत्ता तंजहा । ते शिष्य पूछे कुण अप्काय गुरु कहे—हेमहानुभाव । अप्काय दोयभेद कह्यो ते कहे छे—सूक्ष्मअपकाइया बादर अप्ठ । सूक्ष्म अप्काय १ बादरअप्काय २ जिवे । सेकिं त सुहुमआउकाइया २ दुविहा पन्नत्ता । ते कुण ते कहो स्वामीजी सू क्ष्मअप्काय तिहां गुरु कहे—हेदेवानुप्रिय । महानुभाव दोयप्रकारे कह्या ते कहे—पज्जत्तसुहुमआउकाइया । पर्याप्ता सूक्ष्मअप्काय १ । अपज्जत्तसुहु मआउकाइया । अपर्याप्ता सूक्ष्मअप्काय । ते जिवे । सेत्तसुहुमआउकाइया । ते सूक्ष्मअप्काय कह्या । अठा थकी बादर कहे—सेकिंत बादरआउका

नोपल्न हरतनु र्वा नुव मुद्रिय गोभूमाकुरुवायादिषु बद्धो यिन्दु रुपजायते, सुद्धोदक मस्तरिपसमुद्भय नद्यादिगतं च त च स्पर्शरसादिभेदा
एनेकभेदं त दवा नेकमदत्वदर्शयति–शीतोदकं नदीतडागायटवापीपुष्करिण्यादिषु शीतपरिणामं उष्णोदकं स्वभावत एव क्वचि निर्झरादा
वुष्णपरिणाम क्षारोदक मीषल्लवणस्वभावं यथा सातदेशादी केषुचिदवटेषु खट्टोदक मीषदम्लपरिणामं अम्लोदक मतीवस्वभावत एवा म्लपरि
णामं काञ्जिकवत् लवणोदकं लवणसमुद्रे, वारुणं वारुणसमुद्रे' क्षीरोदकं क्षीरसमुद्रे क्षोदोदक मिक्षुसमुद्रे रसोदकं पुष्करवरसमुद्रादिषु ये पि
चा न्ये तथा प्रकारा रसस्पर्शादिभेदभिन्ना घृतोदकादयो बादराप्कायिका ते सर्वे बादराप्कायिकतया प्रतिपत्तव्या ते समासतो इत्यादि

आउकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—उसाहिमए महिया करए हरतणूए सुद्धोदए सीतोदए उसिणोदए
खारोदए खट्टोदए अंबिलोदए लवणोदए वारुणोदए खीरोदए खोदोदए रसोदए जेयावन्नेतहप्पगारा तेसमा
सउ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण असंपत्ता, तत्थण जेते
पज्जत्ता एतेसिणवन्नादेसेण गंधादेसेणं रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइं संखेज्जाइं जोणिप्पमु

हणा २ भवेमभिहिता भवंते। ते हिवे जुव बादरयप्काय भनभमकारकहेछे—तिकारो हरमावेछे। उसाहिमपमिहिया। ठार मध्यमेह १ हिम २ धूअर ३
करग हरतणूए मुद्धाहए सोदए। भडानापाणी ४ हरीतेमपणीछे बकबिन्दु बरसातना ५ मेघपाणी ६ मोतकस ७। उसिणोदए खारोदए खट्टोदए अवि
लाइए लवणादए वरुणादए खीरोदए घयादए खोदादए रसोदए। उष्णजल ८ खारजल ८ खाटो १ पाणिसरसपाणी ११ तून बेहवो १२ वारुणीसम
दृना पाणी डाक केहवो १३ दूधसरीखापाणी १४ घृतसरीखापाणी १५ इक्षुरस सेहडोरस १६ रस पटरस तेहवापाणी १७। जेयावन्नेतहप्पगारा ते स
मासपोदुविहा पन्नत्ता। जे एहवा अनेरा तथा प्रकारना तेह सम संक्षेपथी दायप्रकारे कह्या तेकहेछे—पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २।
तत्थणजेतेअपज्जत्तगा। जेते अपर्याप्ता। तेअसंपत्ता। तेवे गवेषपाम्या वर्णादिकनो विशता नहि। तत्थणजेतेपज्जत्तगा। तिहां जेते पर्याप्ता। एएसिणंवन्ना

प्रागवत् नवरं, सङ्ख्येयानि योनिप्रमुखानि शतसहस्राणी त्यभि सम्प्रवदितव्यानि। उक्ता अप्कायिकाः सम्प्रति तेजस्कायिकान् प्रतिपिपाद
यिषु राह—सकितमित्यादि॥ सुगमं नवरं अङ्गारो विगतधूमः ज्वाला आज्वल्यमान, खादिराद्यग्निवालानलसम्बद्धादीपशिखेत्यन्ये मुमुर फुम्फुका

हसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा । सेत्तं बादर आउकाइया ॥ सेत्तं आउकाइया ॥ से किंत तेउकाइया ? तेउकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सुहुमतेउकाइया य बादरतेउकाइयाय, से किंत सुहुमतेउकाइया सुहुमतेउकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । सेत सुहुमतेउकाइया । से किंत बादरतेउकाइया २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा इंगाले जाला मुम्मुरे अच्ची अलाए सुद्धागणी उक्का विज्जू असणी णिग्घाए संघरिससमुट्ठिए सूरकंतमणिणि

०सेव गंधाएसेव रसाएसेव फासाएसेव। वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन । सहस्रसंख्यावित्रागात् । सहस्राय ततो मान पदस्तेनासे। संविज्ञाः आविष्णुहसयसहस्साइ । सख्याता सतसहस्रयोनिप्रमुखाणि । पज्जत्तगणीसाए। पर्याप्तानो निश्राये। अपज्जत्तगा वक्कमति अपर्याप्ता भाषो उपजे। जत्थएगोतत्थनियमा असंखेज्जा । जिहां एक जीव तिहां निश्चये असंख्याताजीव कहया। सेत्तबादरआउकाइया। ते बादर अ प्कायना भेदकह्या। सत्तआउकाइया। एतले ते सूक्ष्मबादर सर्व अप्काय कह्या। हिवे सेकित तेउकाइया २ दुविहा प त। तेउकाय पूछे शिष्य कुण ते तद गुरु कहे तेउकाय बिहु प्रकारे कह्या तेकहेछे—सुहुमतेउकाइया बायरते । सूक्ष्मतेउकाय १ बादरतेउकाय २। सेकितसुहुमतेउकाइया २ दुविहा प त। हिवे शि ष्य कहे कुण ते सूक्ष्म कहे सूक्ष्म तेउकाय तेहना दोयभेदकह्या ते गुरु कहे छे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २। सेत्तसुहुमतेउकाइया। ते तिम सूक्ष्मतेउकाय। सेकितबादरतेउकाइया २ अणेगविहा प त। शिष्य पूछे कुण बादर तेउकाय गुरु कहे अनेकप्रकारेकह्या तेकहेछे—इंगाले जालमुम्मुरे। अगा रा धूमरहित १ ज्वाला दीपशिखा अग्नि प्रतिबद्ध २ अमूर्तमिश्या अग्नि कण। अच्चीअलाएसुद्धागणी। अप्रतिबद्धज्वाला शुद्ध अग्नि। उक्का विज्जू। उल्का

मोपल॰ हरतनु र्मो नुव मुद्गिय मोभूमाकुसवबाग्रादिषु मधो बिन्दु रूपजायते, शुद्धोदक मन्तरिक्षमुद्भव नद्यादिगतं च त च स्पर्शरसादिभेदा रनेकभेदं त दवा मकजेदसंदर्शयति-शीतोदक नदीतळागावटवापीपुष्करिण्यादिषु शीतपरिणाम उष्णोदकं स्वभावत एव क्वचि निर्झरादा वुष्णपरिणामं क्षारोदक मीषल्लवणस्वभाव यथा लाटदेशादौ केषुचिदवटेषु खट्टोदक मीषदम्लपरिणाम अम्लोदक मतीवस्वभावत एवा म्लपरि णामं काञ्जिकवत्, लवणोदकं लवणसमुद्रे, वारुण वारुणसमुद्रे क्षीरोदक क्षीरसमुद्रे, क्षोदोदक मिक्षुसमुद्रे रसोदकं पुष्करवरसमुद्रादिषु ये पि चा न्ये तथा प्रकारा रसस्पर्शादिभेदभिन्ना घृतोदकादयो बादराप्कायिका स्ते सर्वे बादराप्कायिकतया प्रतिपत्तव्या स्ते समासतो इत्यादि

आउक्काइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—उसाहिमए महिया करए हरतणूए सुद्धोदए सीतोदए उसिणोदए खारोदए खट्टोदए अंबिलोदए लवणोदए वारुणोदए खीरोदए खोदोदए रसोदए जेयावन्नेतहप्पगारा तेसमा सओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण असंपत्ता, तत्थण जेते पज्जत्ता एतेसिणवन्नादेसेणं गंधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइं संखेज्जाइं जोणिप्पमु

हरा २ पर्यवसिता प तं । ते द्विवे सूक्ष्म बादरभेदात पञ्चमप्रकारकवेंके—तिकाको हरसावेवे । उष्णाहिमवमिहिवा । ठार मध्यमेन १ धिम २ भूहर ३ करक हरतणुए सुद्धोदए सोत्तए । मतामायाचो ४ हरीतेषयोः अवबिन्दु करस्नातको ५ अवर्षाचो ६ मोतवस ७ । उसिणोदए खारोदए खट्टोदए अंबि लोदए लवणोदए वरुणोदए खोरोदए मधोदए इक्षोदए रसोदए । उष्णजल ८ क्षारजल ९ खाटो १० यांबिलरसपाचो ११ लूण बेरवो १२ वारुणीसम मास पाचो दाव बेरवो १३ दूधसरोखापाचो १४ घृतसरोखापाचो १५ इक्षुरस सेवडीरस १६ रस मठरस तेहमापाचो १७ । जेयावन्नेतहप्पगारा ते स मानपातुविधा प तं । जे एहवा अनेरा तथा प्रकारना तेह सब सर्वेयवो दोयप्रकारे कया ते कहे छे—पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ । तत्थणं जेते अपज्जत्तगा । जेते अपर्याप्ता । तेणअसंपत्ता । तेवे मडोपामा वर्णादिकवो अवता न । तत्थणं जेतेपज्जत्तगा । तिहा जेते पर्याप्ता १ एएसिणंवन्ना

प्राप्यत नवरं सङ्ख्येयानि योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणी त्यत्रा पि सम्बध्यते इत्यर्थः। उक्ता अप्कायिकाः, सम्प्रति तेजस्कायिकान् प्रतिपिपादयिषु राह-सेकिंतमित्यादि ॥ सुगमं नवरं अङ्गारो विगतधूमः ज्वालो आज्वल्यमान, खादिरादिज्वालामलसम्बद्धा दीपशिखा त्यन्ये मुर्मुर फुम्फुका

इसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा । सेत्तं बादर आउकाइया ॥ सेत्तं आउकाइया ॥ से किंतं तेउकाइया? तेउकाइया दुविहा पणत्ता, तंजहा—सुहुमतेउकाइयाय बादरतेउकाइयाय, से किंतं सुहुमतेउकाइया सुहुमतेउकाइया दुविहा पणत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । सेत्तं सुहुमतेउकाइया । से किंतं बादरतेउकाइया २ अणेगविहा पणत्ता, तंजहा इंगाले जाला मुम्मुरे अच्ची अलाए सुद्धागणी उक्का विज्जू असणी णिग्घाए संघरिससमुट्ठिए सूरकंतमणिणि

०सेवं गंधाएसेणं रसाएसेणं फासाएसेणं। वर्ण से गंधादेशेकरी गंधादेशेकरी रसादेशेकरी फरसादेशेकरी । सहस्रसंख्याविधानात् । सहस्राय एतले भाग एकदेशमें । संख्यात जातिप्रमुखसहस्रात् । सख्यात सतसहस्रयोनिप्रमुखवे । पर्याप्तसमवीसाए । पर्याप्तामी निश्राये । अपर्याप्तकावक्रमति अपर्याप्ता आवी उपजे । जत्थएगोतत्थनियमाअसंखेज्जा । जिहां एकजीव तिहां निश्राये असंख्याताजीव कहया । सेत्तंबादरआउकाइया । ते बादर अपकायना भेद कह्या । सेत्तंआउकाइया । एतले ते सूक्ष्मबादर सर्व अपकाय कह्या ॥ हिवे सेकिंत तेउकाइया२ दुविहा पं त । तेउकाय पूर्वे शिष्य कुण ते तद गुरु करे दोयप्रकारे कह्या तेकहेछे—सुहुमतेउकाइया बादरते । सूक्ष्मतेउकाय १ बादरतेउकाय २ । सेकिंतसुहुमतेउकाइया २ दुविहा पं त । हिवे शिष्यकहे वलि तेगुणकहे सूक्ष्म तेउकाय तेहना दोयभेदकह्या ते गुरुकहेछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ । सेत्तंसुहुमतेउकाइया । ते तिम सूक्ष्मतेउकाय । सेकिंतबादरतेउकाइया २ अणेगविहा पं त । शिष्यपूछे वलबादरतेउकाय गुरुकहे अनेकप्रकारेकह्या तेकहेछे—इंगाले जालमुम्मुरे । अंगारा धूमरहित १ ज्वाला दीपशिखा अग्नि प्रतिबद्ध २ अभूतमिश्र अग्निकण । अचोअच्चाएसुद्धागणी । अग्निविशुद्धा सुद्धाग्नि । उक्का विज्जू । उल्का

मोपल० इरतनु र्मो प्रुव मुद्गिय मोपूमाकुल्वयायादिपु बद्गो बिन्दु रुपजायते सुद्धोदक मन्तरिचसमुद्भव मयाविगत च त च रुपर्शरसादिभेदा दनेकभेदं त दवा मकजदत्वयप्रेपति—शीतोदक मवीतलागावटवापीपुष्करिस्यादिषु शीतपरिणाम उष्णोदकं स्वभावत एव क्वचि निर्झरादा वुष्णपरिणामं, चारोदक मीषल्लवणस्वभावं यथा लाटदेशादौ केषुचिदवटेषु खट्टोदक मीषदम्लपरिणामं अम्लोदक मतीवस्वभावत एवा म्लपरि णामं काञ्जिकवत् लवणोदकं लवणसमुद्रे, वारुण वारुणसमुद्रे क्षीरोदक क्षीरसमुद्रे खोदोदक मिक्षुसमुद्रे, रसोदकं पुष्करवरसमुद्रादिषु ये च्पि चा न्ये तथा प्रकारा रसस्पर्शादिभेदभिन्ना घृतोदकादयो बादराप्कायिका स्ते सर्वे बादराप्कायिकतया प्रतिपत्तव्या स्ते समासतो इत्यादि

आउकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—उसा हिमए महिया करए हरतणूए सुद्धोदए सीतोदए उसिणोदए खारोदए खट्टोदए अंबिलोदए लवणोदए वारुणोदए खीरोदए खोदोदए रसोदए जेयावन्नेतहप्पगारा तेसमा सउ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण असंपत्ता, तत्थण जेते पज्जत्ता एतेसिणवन्नादेसेणं गंधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइं संखेज्जाइं जोणिप्पमु

हा २ पर्याप्तिका प र्त । त द्विवे कुत्र बादरपञ्चकाय प्रजनप्रकारकत्वे—तिकाहो एरमावेवे । उस्साहिमयमिश्रिया । ठार मम्भमेक १ धिम २ धूअर ३ करम हरतणए सुहादए सोउदए । गरमापाणी ४ शरीनेपचोथे पनबिन्दु बरसातना ५ खटपाणी ६ मोतखत ७ । उसिणोदए खारोदए खाहोदए अवि लाद्य लवणादए वरुणोदए खीरोदए खयादए रसादए रसोदए । लवणजल ८ भारजल ९ खाटो १० पांणिकरसपाणी ११ दूध जेहवो १२ घडुयोसम इखा पाणी डाठ जेहवो १३ दूधसरोखापाणी १४ घृतसरोखापाणी १५ इखरस सेवडीरस १६ रस पठरस तेहवोपाणी १७ । जेयावन्नेतहप्पगारा ते स मानपोदुविहा प र्त । जे पहवा अनेरा तथा प्रकारना तेह सव सचेपथी दोयप्रकारे कह्या तेकहे छे—पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ । तत्थणजेतेअपज्जत्तगा । जेते अपर्याप्ता । तेणअसंपत्ता । तेपि गर्द्धोपाम्या पर्याप्तिनयी कहता ते । तत्थणजेतेपज्जत्तगा । तिहां जेते पर्याप्ता । एएसिवन्नादेसेण

कायिकप्रतिपादनार्थं माह–सेकिंतमित्यादि॥ प्रतीत नवर॥ पाइणवाए इति॥ यः प्राच्यादिशः समागच्छति वातः स प्राचीनवात एवं प्रतीचीनवातो दक्षिणवात उदीचीनवात य वक्तव्य ऊर्ध्वमुद्गच्छन् यो वाति वात स ऊर्ध्ववात एव मधोवात तिर्यग् वातावपि परिज्ञावनीयौ विदिग्वातोयो विदिग्भ्यो याति वातो द्भ्रामो ऽनवस्थितो वातो वातोत्कलिकाः समुद्रस्ये व वातोत्कलिकाः वातमण्डली वातोली उत्कलिकावातउत्कलिकाभिः प्रचुरतराभिः सम्मिश्रितो यो वातो मंडलिकावातो मण्डलिकाभि मूलत आरभ्य प्रचुरतराभि समुत्थोयो वात गुञ्जावातो यो गुञ्जनमव्दं कुर्वन्

हा पण्णत्ता, तंजहा–सुहुमवाउकाइयाय बादरवाउकाइयाय, से किंत सुहुमवाउकाइया? सुहुमवाउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–पज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय अपज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय। सेत्तं सुहुमवाउकाइया। से किंत बादरवाउकाइया? बादरवा० अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा–पाईणवाए पडीणवाए दाहिणवाए उदीणवाए उड्ढवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसीवाए वाउब्भामेवा उक्कलिया वायमंडलिया उ

विधा प्र त। अथपूर्वे कथगुक्तवे वायुकायिका द्वयभेदकथा ते कथेके—सुहुमवाउकाइया। सूक्ष्मवायुकाय। बादरवाउकाइया। बादरवायुकाय। सेकिंतसुहुमवाउकाइया २ दुविधा प्रं तं। किंवे कथ सूक्ष्मवायुकाय तेहना दोयभेद कह्या ते कथेके—पज्जत्तसुहुमवाउकाइया अपज्जत्तसुहुम वा०। पर्याप्ता सूक्ष्मवायुकाय अपर्याप्ता सूक्ष्मवायुकाय। सेत्तसुहुमवाउकाइया। एतले सूक्ष्मवायुकायना भेदकह्या। सेकिंतबादरवाउकाइया २ अणेगविधा पं तं। किंवे बादर वायुकायना केटलाएक भेदकथेके—अनेकप्रकारे कह्या वायुकायना ते कथेके—पाईणवाए पडीणवाए दाहिणवाए उदीण वाए। पूर्वदिशिना उपनो पश्चिमदिशिना उपना दक्षिणदिशिना उपना वायु उत्तरदिशिना उपना वायु। उड्ढवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसिवा ए वाउब्भाए। ऊर्ध्वदिशिनाउपन्या नीचोदिशिना वायु तिरछोदिशिना विदिशिनाय अनवस्थितोवात। वाउक्कलिया वायमंडलिया। उत्कलवायु समुद्रना मण्डलिकावायु मास। उक्कलियवाए मंडलियवाए। वेग उत्कलोपाडे मण्डलावर्तवायु। गुंजावाए झंझावाए संवट्टवाए घणवाए तणुवाए सुद्धवाए।

शे प्रसमिमिताग्निकल्पः पवि रमसामतिपद्राज्वाला मासात मूरमुक शुद्धाग्नि रप पिवबाद्री उल्का मुमुरो विधु स्मतीता असमि रामाद्रो पतदग्निमयः कव निर्पातो वैधिपातानिप्रपातः सङ्घर्षसमुपस्थितो ऽरण्यादिकाष्ठनिर्मथनसमुद्भूतः सूर्यकान्तमणिनिसृतः सूर्यकरकिरणसम्पर्के सूर्यकान्तमणे प समुपजायते ॥ सेयावन्नेतहप्पगारा इति ॥ ये पि चा न्ये तथाप्रकारा एवम्प्रकारा तेजस्कायिका ते पि बादरतेजस्कायिकतया वे दितव्या लोकमायोगे इत्यादिमागृवत् नवर मत्रापि सङ्ख्येयानि योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि समवेदितव्यानि उक्ता तेजस्कायिकाः सम्प्रतिवायु

स्सिए, जेयावन्नेतहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता, तत्थणं जेते पज्जत्तगा एएसिं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसाएसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसोनिहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थएगो तत्थणियमा असंखेज्जा ॥ सेत्तं बादरतेउकाइया ॥ सेत्तं तेउकाइया ॥ से किंतं वाउकाइया ? वाउकाइया दुवि

पान वोचनी । धमिभोविरमार । पाकामे धम्मिमयो बव वैद्युतधग्नि । सघरिमसमद्विव । चरवीमादिमववो जपनी । सूर्यकान्तमणिनिस्रित । सूपने त।पेवरो जपजे मणिको जपजे त भगिन । सेयावन्नतप्पगारा ती समासथा दुविहा पं त । जे वरो पवरा पमेरा तथा प्रकारागमिद तेसर्वं स चेरवो पोजवकारेकथा ते कवेवे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तमाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । तत्थवजेतेअपज्जत्तगा तेअसंपत्ता । तिहांजेते अपर्याप्ता वर्णादि बेनको पाम्या पूरा । तत्थवजेतेपज्जत्तगा । तिहां जेते पर्याप्ता । एविषे वणाएसेव गंधाएसेवं रसाएसेवं फासाएसेव । एवाएा वर्णादेभेकरी मन्वादेवो करो रसादेभेकरी मर्मादेभेकरी । सहस्सग्गसोविहाणाइ । सहस्राप एतवे मातवाय भेदेकरी । संखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणीसाए संख्याता ततमपराणि प्रमम ऊपजे पर्याप्तायोनिधारें । अपज्जत्तगावक्कमंति । अपर्याप्ता ऊपजे । जत्थएगोतत्थणियमा । जिहां एकजीव तिहां नि चे । असंखिज्जा । असंख्यातजीव ऊपजे । सेत्तंबायरतेउकाइया । एतले बादर तेउकाय । सेत्तंतेउकाइया । ते बव तेउकायकहा । सेकिंतंवाउकाइया २ कु

कायिकप्रतिपादनार्थ माह—सेकितमित्यादि॥ प्रतीतं नवरं॥ पाईणवाए इति॥ यः प्राच्यादिशः समागच्छति वातः स प्राचीनवात एवं प्रतीचीनवातो दक्षिणवात उदीचीनवात च वक्तव्य ऊर्ध्वमुच्छ्रयन् यो वाति वात स ऊर्ध्ववात, एवं अधोवात तिर्यग् वातावपि परिभावनीयौ विदिग्वातोयो विदिग्भ्यो वाति वातो भ्रामो ऽनवस्थितो वातो वातोत्कलिका: समुद्रस्ये व वातोत्कलिका: वातमण्डली वातोली, उत्कलिकावातउत्कलिकाभि मधुरतराभिः सम्मिश्रितो यो वातो मण्डलिकावातो मण्डलिकाभि मूलत आरभ्य मधुरतराभि समुत्थोयो वात गुञ्जावातो यो गुञ्जनभव्यं कुर्वन्

हा पण्णत्ता, तंजहा—सुहुमवाउकाइयाय बादरवाउकाइयाय, से किंत सुहुमवाउकाइया? सुहुमवाउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय अपज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय। सेत्तं सुहुमवाउकाइया। से किंत बादरवाउकाइया? बादरवा० अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—पाईणवाए पदीणवाए दाहिणवाए उदीणवाए उड्ढवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसीवाए वाउब्भामेवा उक्कलिया वायमण्डलिया उ

विधा प्र त। मिथपूर्वे कथमवक्तव्ये वाउकायना वायभेदकथा ते कहेछे—सुहुमवाउकाइया। सूक्ष्मवाउकाय। बादरवाउकाइया। बादरवाउकाय। सेकिंतंसुहुमवाउकाइया २ दुविहा प त। तिमे कुण सूक्ष्मवाउकाय तेहना केटलाभेद कह्या ते कहेछे—पज्जत्तसुहुमवाउकाइया अपज्जत्तसुहुम वा०। पर्याप्ता सूक्ष्मवाउकाय अपर्याप्ता सूक्ष्मवाउकाय। सेत्तसुहुमवाउकाइया। एतले सूक्ष्मवाउकायना भेदकह्या। सेकिंतंबादरवाउकाइया २ अणेगविहा पं त। तिके बादर वाउकायना भेदकरो भेद कहेछे—अनेकप्रकारे कह्या वाउकायबादरना ते कहेछे—पाईणवाए पईणवाए दाहिणवाए उदीण वाए। पूर्वदिशिनो उपनो पश्चिमदिशिनो उपनो दक्षिणदिशिनो उपनो वायु उत्तरदिशिनो उपनो वायु। उड्ढवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसिवा ए वाउब्भामे। ऊर्ध्वदिशिनोउपनो नीचोदिशिनो वायु तिरछोदिशिनो विदिशिनाव अथवा भमतो वाय। वाउक्कलिया वायमंडलिया। उत्कलवायु समु द्रनो मण्डलिकावायु वाल। उक्कलियवाए मंडलियवाए। मेलु उत्कलीपर्छे मण्डलावर्तवायु। गुंजावाए झंझावाए संवट्टवाए घणवाए तणुवाए सुद्धवाए।

ही जसमिभिताम्भिकयरूपः यचि रससामतिमद्वाग्वाला मासात मुक्मुक मुमुाग्नि रय पियकादी तस्का मुमुक्षी विद्यु रमतीता मश्मनि राकालो पतदग्निमय मशः निर्पातो वैक्रियाशनिप्रपातः सङ्घर्षसमुपस्थितो ऽरस्यादिकाष्ठनिर्मथनसमुद्भूतः सूर्यकान्तमणिनिसृतः सूर्यकरनिकरसम्पर्के सूर्यकान्तमणौ यः समुपजायते ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा इति ॥ ये पि चा न्ये तथाप्रकारा एवम्प्रकारा तेजस्कायिका ते पि बादरतेजस्कायिकतया वे दितव्या तेसमासतो इत्यादिप्राग्वत् नवरं मत्रापि सङ्ख्येयानि योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि सप्तवेदितव्यानि उक्ता तेजस्कायिकाः सम्प्रतिवायु

सिसए, जेयावन्नेतहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण असंपत्ता, तत्थण जेते पज्जत्तगा एएसिं वन्नादेसेण गंधादेसेण रसाएसेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थएगो तत्थणियमा असंखेज्जा ॥ सेत्तं बादरतेउकाइया ॥ सेत्तं तेउकाइया ॥ से किंतं वाउकाइया ? वाउकाइया दुवि

पात्र बोल्मी। भमिचोभिरुपाए। पावाये भम्मिमघो मन पतिवपन्नि। सपरिससमहित। धरनीयादिकमघो अपनी। सूर्यकांतमणिनिस्त्रिए। मूळने त॰पेकरो अपचे मणिको अपजे त भग्नि। जेयावन्नेतहप्पगारा ते समासथा दुविधा पं त। जे वली पहवा अनेरा तथा प्रकारनाभेद तेसवे स घेवो रोपप्रकारेकह्या ते कहेछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता अपर्याप्ता। तत्थणजेतेअपज्जत्तगा तेअसंपत्ता। तिहांजेते अपर्याप्ता वर्णादि केनवो पाम्या पूरा। तत्थणजेतेपज्जत्तगा। तिहां जेते पर्याप्ता। एसिवं वन्नाएसेणं गंधाएसेणं रसाएसेणं फासाएसेण। इणारा वर्णादेशेकरी गन्धादेशे करी रसादेशेकरी स्पर्शादेशेकरी। सहस्सग्गसोविहाणाइं। सहस्राग्र पतले धातनाभेदेकरी। संखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणीसाए संख्याता लक्षयोनि प्रमुख ऊपजे पर्याप्तानीनिश्राये। अपज्जत्तगावक्कमति। अपर्याप्ता ऊपजे। जत्थएगोतत्थणियमा। जिहां एकजीव तिहां नि श्चे। असंखिज्जा। असंख्यातजीव ऊपजे। सेत्तंबादरतेउकाइया। एतले बादर तेउकाय। सेत्तंतेउकाइया। ते सव तेउकायकह्या। सेकिंतंवाउकाइया२ कु

त सुहुमवणस्सइकाइया ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते बादरवनस्पतिकायिका २ द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्त यथा–प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका श्च साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका श्च तत्रै क मेक जीव म्प्रतिगत म्प्रत्येक शरीर येषान्ते प्रत्येकशरीरा स्ते च ते बादरवनस्पतिकायिका श्च प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका श्च शब्दः स्वगतानेकभेदसूचकः समान स्तुल्य प्राणापानाद्युपभोग यथाभवति एव मासमन्ता देकीभावेना नन्तानां जन्तूनां साधारणं सम्बद्धं येन त त्साधारणं साधारणं शरीर येषां ते साधारणशरीरा स्ते च ते बादरवनस्पतिकायिका श्च साधारणबा दरवनस्पतिकायिकाः च शब्दो त्रा पि स्वगतानेकभेदसूचक ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः ? सूरि राह–प्रत्ये

तंजहा–सुहुमवणस्सइकाइयाय बादरवणस्सइकाइयाय, से किंत सुहुमवणस्सइकाइया २ दुविहा पण्णत्ता, तं०–पज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय अपज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय। सेत्त सुहुमवणस्सइकाइया। से किंत बादरवणस्सइकाइया २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाय साहारणसरीरबादरव

सूक्ष्मवनस्पतिकाया। सूक्ष्मवनस्पतिकाय। बादरवनस्पतिकाया १। बादरवनस्पतिकाय २। सेकिंतसुहुमवणस्सइकाइया २ दुविहा प त । किमे ते शि ष्यपूछे गुरू समझावेछे सूक्ष्मवनस्पतिकायना दोयप्रकार कह्या ते कहेछे–पज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइया। पर्याप्ता सूक्ष्मवनस्पतिकाय। अपज्जत्तसुहुम वणस्सइकाइया। अपर्याप्ता सूक्ष्मवनस्पतिकाय। सेत्तसुहुमवणस्सइकाइया। एतले सूक्ष्मवनस्पतिकाय कह्या। सेकिंतबादरवणस्सइकाइया २ दुविहा प त । ते शिष्य पूछे बादरवनस्पति कह्या स्वामीजी तदगुरु कहेछे–हेशिष्य। दोयप्रकारेकह्या ते कहेछे–पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया। प्रत्येक शरीर बादरवनस्पतिकाय पहिला। साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया। दूजा साधारणशरीर बादरवनस्पतिकाय। सेकिंत पत्तेयसरीरबादरवणस्स इकाइया २ दुवालसविहा पं त । शिष्य ते गुरुप्रति कहे कुण ते प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकाय शिष्य प्रते गुरु कहेछे–प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकायना १२ बारे भेद कह्या ते कहेछे। रुक्खागुच्छागुम्मा लयावल्लीयपव्वगाचेव। तणवलयहरियाओसहि जलरुहकुहणायबोधव्वा। १। वृक्ष आम्रादि १ गुच्छावृन्ता

याति ऊभावातः मयूरेह रमुमनिमुर इत्य न्ये सम्यक्तवात सुखादिसयतनस्थभाव, घनवातो घनपरिणामो रत्नप्रभापृथिव्याद्य धोघतो तनुवा तो गिरमपरिणामो घनवातस्या घ स्यायाशुद्धवातो मदसिमिसो थस्त दृत्यादिगत इत्य न्ये॥ ते समासतो इत्यादि प्रागवत्, अप्रा पि सङ्ख्येयानि योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि मता वसेयानि उक्ता वायुकायिका सम्प्रति वनस्पतिकायिकप्रतिपादनार्थ माह—सकितमित्यादि॥ सुगम यावत् से

कालियावाए मंडलियावाए गुंजावाए ऊभावाए संवट्टवाए घणवाए तणुवाए सुद्धवाए, जेयावन्ने तहप्पगा रा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असंप त्ता, तत्थणं जेते पज्जत्तगा एतेसिणं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसोविहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमाअसं खेज्जा॥ सेत्तं बादरवाउकाइया॥ सेत्तं वाउकाइया॥ से किंतं वणस्सइकाइया वणस्सइकाइया दुविहा प०,

मुखारव वायुता प्रथम चलितवायु मन्दवायु वघ्यवाले ते वायु घनवात तनुवायु पछे रत्नप्रभा हेठे घनवायु। जेवावळेतहप्पगारातेसमासओ दुविहा पं त। वे वळी अनेरा तथा प्रकारनावाय ते संक्षेपथकी दोयप्रकारेकह्या ते कहेछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता अपर्याप्ता। तत्थणंजेतेअप ज्जत्तगा तेणंअसंपत्ता। तिहां जेते अपर्याप्ता ते वर्णादिकने अणपामवेकरी। तत्थणंजेते पज्जत्तगा एएसिणं। तिहांजेते पर्याप्ता इहारा। वण्णादेसेण गन्धादेसेण रसादेसेण फासादेसेणं। वर्णादिके गन्धादिके स्पर्शादिके। सहस्सग्गसोविहाणाइं। संखेज्जाइं जोणिप्पमुह सयसहस्साइं। सातलाख योनिने भेदेकरी। संखेज्जाइं जोणिप्पमुह सयसहस्साइं। मातेसाथे संख्यातायोनिविषे। पज्जत्तगणीसाए। पर्याप्ताने निश्राये। अपज्जत्तगावक्कमंति। अपर्याप्ता उपजे। जत्थएगोतत्थनियमाअसं खेज्जा। जिहां एकजीव तिहां निश्चे असंख्याता। सेत्तंबादरवाउकाइया। से तिमकह्यो बादर वाउकाय। सेत्तंवाउकाइया। कहाते सर्व सूक्ष्मबादर वायु भेदयो कह्या। से किंतं वणस्सइकाइया २ दुविहा पं त। हिवे वनस्पतिकायना भेदकहेछे गुरु शिष्यप्रते कहेछे हेशिष्य। दोयप्रकारे कहेछे, तेविम।

मेऽविया मदहा स यथा-निर्यवे इत्यादि ॥ पाया प्रर्य तप निंयाग्रजम्बूकोसम्बाः प्रतीताः शाल सज ॥ संकोसमिति ॥ मङ्कोठः प्राकृतत्या १सूत्रे च ठकारस्य सादेश मङ्कोठेम इति वचनात् पीलुः प्रतीतः मेलुः श्लेष्मातक शल्लकी गजप्रिया मालिकीमालकी देशविशेषप्रतीतौ, बकुलः केसरः, पलाशः किंशुक करञ्जो नक्तमालः पुत्रजीवको देशविशेषप्रतिबद्धः, अरिष्टः पिचुमन्द , विभीतकोऽक्षः, हरीतकः कोङ्कणदेशप्रसिद्धः कषायवृक्षः भल्लातको पम्य शिलातकाभिधानानि पलाशि लोकप्रसिद्धानि , उम्बेभरिकाक्षीरवीधातकीप्रियालपूतिकरञ्जसश्लक्ष्णशिंशपाअशनपुन्नागनागवृक्षपर्ण्यशोका लोकप्रतीताः जे या यन्न तहप्पगारा इति ॥ ये पि चा न्ये तथाप्रकारा एव म्प्रकारा सास्तवृक्षविशेषमाविन स सर्वे प्ये कास्थिका वदितव्याः, एते या मथास्थिकानां मूलान्य प्य सङ्ख्येयजीवकानि असङ्ख्येयमस्येकशरीरजीवात्मकानि ॥ एव कन्दा अपि स्कन्धा अपि त्वचो पि शाखा अपि प्रवाला

यजयुकोस यसाउज्ञकोल्लपेलुसल्लया । सल्लइमोयइमालुय यउलपलासेकरजेय ॥ १ ॥ पुत्तंजीवयरिठे यिजेल एहरिङएयजल्लाए । उंबेजरियाखीरिणि ओधइधायइपियाले ॥ २ ॥ पूइयनिंयकरए सराहातहसीसवायअस गय । पुणागनागरुक्खे सिरिवणीतहयसोगेय ॥ ३ ॥ जेयायन्नेतहप्पगारा एतेसिणमूलायिअसंखिज्जजीविया कंदायि खंधायि तयायि सालायि पयालायि , पत्तापत्तेयजीविया , पुप्फा अणेगजीवा , फला एगट्ठिया ॥ सेत्तं

१८ माचको १ मालक ११ ममर १२ पलास ममम १३ वनगच ॥१॥ पुत्तजीवचरिठे विभएहरिडएयभल्लाए । उंबेभरियाखीरणि धावइधायइपिया ल ॥ २ ॥ जीवापाता हेगोभाया भगरी सा काठागोचाको पारौठा बहेडा हरडे भिलामा उबभरिया मोरवो आविया धातकी प्रियाल ॥ २ ॥ पूइय निंयकरजे सरहातइसीसवायअसनाय । पुणागनागरुक्खे सिरिवणीतइयसोगेय ॥ ३ ॥ पूतिका नींव करंज सहदा मगधदेश प्रसिद्ध तिम शीशम टींव पुंनागवृक्ष नागवृक्ष श्रीपर्णी तिम अशोकवृक्ष ॥३॥ जयायन्नेतहप्पगारा । जे एहवा अनेरा तथाप्रकारना । एएसिणंमूलावि असंखिज्ज जीविया । एह ना मूलनाविषे असंख्याता आश्रयाजीवहुँच । कदावि खंधावि तयावि सालावि । मूलथकी हेठला उपरिला कंद स्कंधनेतुज छाल शाखामुख । पवाला

कसरीरबादरवनस्पतिकायिका द्वादशविधा प्रज्ञप्ता स यथा–रुक्खेत्यादि ॥ यथा चूतादयः गुच्छा वृन्ताकीप्रभृतयः, गुल्मानि नवमालिकाप्रभृतीनि लता चंपकलतादय, इह यत्र स्कन्धप्रदेशे विवक्षितोर्ध्वगतैकशाखाव्यतिरेकेण न्यत् शाखान्तरं परिस्थूरं न निर्गच्छति ते लता विज्ञेया स च चम्प कादय इति वल्ल्यः कूष्माण्डीत्रपुषीप्रभृतय, पर्वगा इक्ष्वादयः, तृणानि कुशकुशकार्जुनादीनि, वलयानि केतकीकदल्यादीनि तेषां हि त्वचा वलयाका रेण व्यवस्थित ति हरितानि तन्दुलीयकवस्तुलप्रभृतीनि ओषध्य फलपाकान्ता, ते च शाल्यादयः जले रुहन्तीति जलरुहा, उदकावकपनकाद यः कुहुणा भूमिस्फोटा भिधाना ते चा यकायप्रभृतयः तत्र यथोद्देशं निर्देश इति न्यायात प्रथमतो वृक्षप्रतिपादनार्थमाह–से किं त मित्या दि ॥ अथ के ते वृक्षाः? सूरि राह–वृक्षा द्विविधा प्रज्ञप्ता स यथा–एकास्थिका च बहुबीजका च, तत्र फल २ प्रतिएक मस्थि येषान्ते एकास्थि का च शब्दो वक्ष्यमाणस्वगतानेकभेदसूचकः, तथा प्रायो स्थिवन्त मन्तरेणैव फलान्तर्वर्तीनि बहूनि बीजानि येषान्ते बहुबीजकाः, प्रायोद्ग्रहे ति कः प्रत्ययः, अत्रा पि च शब्दो वक्ष्यमाणस्वगतानेकभेदसूचकः, तत्रै कास्थिकप्रतिपादनार्थमाह–से किं त मित्यादि ॥ अथ के त एकास्थिका च

गस्सइकाइयाय, से किंतं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया २ दुवालसविहा पण्णत्ता, तजहा–रुक्खागुच्छा गुम्मा लतायवल्लीयपव्वगाचेव । तणवलयहरियओसहि जलरुहकुहणाययोधव्वा ॥ १ ॥ से किंत रुक्खा २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा–एगट्ठियाय बहुबीयगाय, से किंत एगट्ठिया २ अणेगविहा पण्णत्ता, तजहा निंब

वारि १ नवमालिकादि २ लता चंपकवृक्ष ४ नागरवल ५ वेरवल्ली ६ निचे वणवास ७ मक्कबेतको ८ हरिमाक ९ ओषधि १० पानीमांहिलगे ११ भूफोड १२ नाविश । सेकितरुक्खा २ दुविहा पं त । विष गुफला मेरूकव्रा हषमा गुरूकचे वे विध । बीजभेद कव्रा ते कहेछे—एगट्ठियाय बहुबीजा व । एकसिता एकबीज घने बहुबीजा २ । सेकितंएगट्ठिया २ अनेकविहा पं तं । ते विधे एकबीजवालाना अनेकभेदकव्रा ते कहेछे–चिमतथनुवोल व पायर्भशाखपोलुमेयूव । सहर्मीवरमागुम वजषपलालेकरंजेव ॥ १ ॥ नीव १ थांब २ जबू ३ कासव ४ सागवण ५ अंकोट ६ पोलू ७ मिलोडा ८ वाव

मे अविपा प्रथमा स यथा–निर्मये इत्यादि ॥ गाया पर्म तत्र नियाखअम्बू कोशम्बा: प्रतीता शाल सज ॥ यंकोल्लति ॥ मक्कोठ: प्राकृतत्वा त्सूत्रे च ठकारस्य सादम अक्कोठश इति वचनात् पीलु: प्रतीत शेलु: श्लेष्मातक शल्लकी गजप्रिया माविकीमालकी देशविशेषप्रतीतौ, बकुल केसर: प लाश: किंशुक करञ्जो नक्तमाल पुत्रजीवको देशविशेषप्रतिबद्ध अरिष्ट पिचुमन्द विभीतकोच, हरीतकशकोकुण्यदेशप्रसिद्ध: कषायवकुल:, मल्लात को यस्य भिल्लातकाभिधानानि फलानि लोकप्रसिद्धानि , उम्बेजरिकाक्षीरखीधातकीप्रियालपूतिकरञ्जसल्लकीशिंशपाशमपुंनागनागवृक्षपर्णशोका लोकप्रतीता:, जे या वन्न तहप्पगारा इति ॥ ये पि चा न्ये तथाप्रकारा एव मकारा सातद्रुमविशेषमाविम ते सर्वे प्ये कास्थिका वदितव्या, एते या मकास्थिकानां मूलान्य प्य सङ्ख्येयजीवकानि प्रत्यक्षु यमस्येकशरीरजीवात्मकानि ॥ एव कन्दा अपि स्कन्धा अपि त्वचो पि शाखा अपि प्रवाला

अजयुकोस यसालश्चक्कोल्लपेलुसल्लया । सल्लइमोयइमालुय यउम्बपलासेकरजेय ॥ १ ॥ पुत्तंजीवअरिठे यिन्नेल एहरिफएयज्ञल्लाए । उम्बेजरियाखीरिणि थोधइथायइपियाले ॥ २ ॥ पूठयनियकरए सराहातहसीसवायअस सर्वे पुणागनागरुक्के सिरियणीतहअसोगेय ॥ ३ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा एतेसिणमूलाथिमसखिज्जजीविया कन्दाथि खथाथि तयाथि सालाथि पयालाथि, पत्तापत्तयजीविया, पुप्फा अणेगजीवा, फला एगठिया ॥ सेत्त

२८ मायको १ मालव ११ कमर १२ पलास असम ११ कनगप ॥१॥ पुत्तजीवयरिठे विभलएहरिलएयभल्लाए । उम्बेअरिवाखीरणि भावखेपायइपिया ल ॥ २ ॥ जीवापाता देगोभाषा पगरा मा काठानेवाणी मारोठा बहेडा हरडे भिलामा उम्बरिया थोरणी जाविया भातकी प्रियाल ॥ २ ॥ पूतय निअकरञ्जे सण्हातहसीसवायपसणाव । पुन्नागनागरुक्खे सिरिवणीतहअसोगेय ॥ ३ ॥ पूतिका नींब करञ्ज सण्हा मगधदेश प्रसिद्ध तिम श्रीशम टींब च पुनागवृक्ष नागवृक्ष श्रीपर्णी तिम अशोकवृक्ष ॥३॥ जयावन्नेतहप्पगारा । जे एहवा अनेरा तथाप्रकारना । एएसिंणंमूलावि असंखिज्ज जीविया । एह ना मूलतथिमे असंख्याता भावज्ञानाजीवछुप । कन्दावि खंधावि तयावि सालावि । मूलसंधि थेठगा उपरिला थड छालनेमुंल खथा सालमुख । पवाला

कनरीरयादरयनस्पतिकायिका द्वादशविधा प्रज्ञप्ता स्त यथा—रुक्खेत्यादि ॥ वृक्षा चूताद्यः गुच्छा वृन्ताकीप्रभृतयः, गुल्मानि नवमालिकाप्रभृतीनि लता चम्पकलताद्यः, इह यदा स्कन्धप्रदेशे विवक्षितोर्ध्वगतैकशाखाव्यतिरेकेणा न्यत् शाखान्तरं परिस्थूरं न निगच्छति ते लता विज्ञेया स्त च चम्प कादय इति यस्सः कूष्माण्डीत्रपुषीप्रभृतयः, पर्वेपा इक्ष्वादयः, तृणानि कुशकुशकार्जुनादीनि वलयानि केतकीकदल्यादीनि, तेषां हि त्वचा वलयाका रेण व्यवस्थित ति हरितानि तन्दुलीयकवस्तुलप्रभृतीनि ओषध्य शालिप्रभृतयः फलपाकान्ता, ते च पाक्यादय जले रुहन्तीति जलरुहा, उदकावकपनकाद यः, कुहुणा भूमिस्फोटा भिधाना ते च मकायप्रभृतयः तत्र यथोद्देशं निर्देश इति न्यायात् प्रथमतो वृक्षप्रतिपादनार्थमाह—से किं त मित्या दि ॥ अथ के ते वृक्षा ? सूरि राह—वृक्षा द्विविधा प्रज्ञप्ता स्त यथा—एकास्थिका च बहुबीजका च, तत्र फल २ प्रतिएक मास्थि येषान्ते एकास्थि का च शब्दो वक्ष्यमाणस्वगतानेकभेदसूचकः, तथा मायो स्थिबन्ध मन्तरेणे व फलान्तर्वर्त्तीनि बहूनि बीजानि यषान्ते बहुबीजकाः, चोपाद्वे ति क मत्यया, यथा पि च शब्दो वक्ष्यमाणस्वगतानेकभेदसूचक तत्रै कास्थिकप्रतिपादनार्थमाह—से किं त मित्यादि ॥ अथ के त एकास्थिका अ

पस्सइकाइयाय, से किंत पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया २ दुवालसविहा पन्नत्ता, तजहा—रुक्खागुच्छा गुम्मा लतायवल्लीयपव्वगाचेव । तणवलयहरियओसहि जलरुहकुहणायबोधव्वा ॥ १ ॥ से किंत रुक्खा २ दु विहा पन्नत्ता, तजहा—एगट्ठियाय बहुबीयगाय, से किंत एगट्ठिया २ ऋणेगविहा पन्नत्ता, तजहा निंब

कादि १ नवमालिकादि १ लता चम्पकघृष ४ नागरबल ५ सेरडी ६ निवे वचवास ७ मसमकेतको ८ वरिमाल ९ मोषधि १० पाचोमाहिलमे ११ भूफोड १२ जाणिवा । सेकितरुक्खा २ दुविहा पं त । जिष कुलसा भेदकामा हयमा गुरुकहे है भिच । दोयभेद कामा ते कहेछे—एगट्ठियाय बहुबीया य । एकसिता एकबीज पने बहुबीजा २ । सेकितंएगट्ठिया २ अनेगविहा पं त । ते किवे एकबीजमासाना अनेकभेदकामा ते कहेछे—चिबकजबुकोस ब सामर्षबाभपोलुमेगूर । ककरमारवमामुख बउलपलासेकरंजेय । १ । नीव १ चांव २ जबू ३ कासब ४ सालतम ५ अंकोठ ६ पीलू ७ सिलोडा ८ साल

मे न्निया मप्रहा स्त यथा–मिर्यंबे इत्यादि ॥ माथा यर्य तम मियाग्रजम्बूकोऽम्या मतीता श्रालः सम ॥ अंकोल्लसि ॥ मकूाठः प्राकृतस्था रसूत्रे च ठकारस्य लाक्ष्ण मकूोठेम इति वचनात् पीलुः मतीसः शेलु प्रमान्तक, शामकी गजभिया मोचिकीमासकी देशविशपमतीतौ मपुस्सः केसरः प लाजः किशक. करञ्जो मत्तमालः पुत्रजीवको देशविशपप्रतिबद्धः मरिष्टः पिचुमन्द विजीतकोचः, हरीतकःकोकूमदेशमसिद्धः कपायमधुसः मल्लात को यम्य जिम्नातकाभिधानानि फलानि लोकमसिद्धानि उम्बेजरिकाजीरणीघातकीप्रियासपूतिकरञ्जमरूत्तशिंशपाशनपुत्रागनागमीपस्पशोका लोकमतीताः, जे या वन्न तहप्पगारा इति ॥ ये पि चा न्ये तथाप्रकारा एव म्रकारा सातद्देशविशपमाविन स्त सर्वे प्ये कास्थिका वदितव्या एते पा मकास्थिकानां मूलान्य प्य सद्धेपजीवकानि असङ्ख्येयप्रत्येकशरीरजीवात्मकानि ॥ एव कन्दा अपि स्कन्धा अपि त्वचो पि शाला अपि प्रवाला

यजयुकोस घसालअंकोल्लपेलुसल्लूया । सल्लइमोयइमालुय बउलपलासेकरंजेय ॥ १ ॥ पुत्तंजीयअरिठे विभेलए हरिडयभल्लाए । उंबेजरियाखीरिणि धोयइधायइपियाले ॥ २ ॥ पूइयानिंबकरए सएहातहसीसवायअस गाय । पुण्णागनागरुक्के सिरिवण्णीतहअसोगेय ॥ ३ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा एतेसिणमूलाविअसंखिज्जजीविया कन्दावि खंधावि तयावि सालावि पवालावि, पत्तापत्तेयजीविया, पुप्फा अणेगजीवा, फला एगट्ठिया ॥ सेत्त

२८ मायको १ मासक ११ समर १२ पलास ससभ १९ वनगप ॥१॥ पुत्तजीवमरिठ्ठे विभलएहरितयभल्लाए । उंबेभरियाखीरणि धायधेधायहपिया ल ॥ २ जीवापाता हिंगोभाया पमरी या काठामोबाको भारोठा मकेडा हरडे भिलामा उंबेभरिया चोरचो कांचिया धातकी प्रियाल ॥ २ ॥ पूरिय निंबकरंजे सएहातहसीसवायसमसवाय । पुन्नागनामकल्ले सिरिवषीतहअसोगेय ॥ ३ ॥ पूतिका नींब करंज सेलरा मगधदेश प्रसिद्ध तिम पीपल टींब रू पुन्नागहक्ष नागक्ष श्रीपर्णी तिम अशोकवृक्ष ॥ ३ ॥ अनामचेतहप्पगारा । जे एहवा अनेरा तथाप्रकारना । एएसिणमूलावि असंखिज्ज जीविया । ए व्हा मूलमाहिये असंख्याता प्राणधारी जीवछुन । कंदावि खधावि तयावि सालावि । मूलमधि केठला उपरिला माहे स्कन्धनेपुख त्वचा सालप्रमुख । प्रवाला

अपि प्रत्येक गसङ्ख्यमत्यकशरीरजीवका तत्र मूलानियानिकन्दस्या धत्ता भूमे रत्त प्रसरन्ति तथा सुपरि दन्धा स्ते च लोकप्रतीता। स्कन्धा
स्फुटाः, त्वचः सरस्यः शाखा शाखा प्रवाला पल्लवाङ्कुराः॥ पत्तापत्तेयजीवयति॥ पत्राणि प्रत्येकजीवकानि एकैक पत्र मेकैकेन जीवेना धिष्ठित मि
ति भाव', पुष्पाणि अनेकजीवानि प्राय' प्रतिपुष्पपत्र जीवजाया त्वसाम्ये कास्थिकानि उपसंहारमाह–से त एगट्ठिया॥ सुगम बहुबीजकप्रतिपा
दनायमाह–सेकितमित्यादि॥ अथ क त बहुबीजका॰ सूरि राह–बहुबीजका अनेकविधाः प्रज्ञप्ता स यथा–अत्थियत्यादिगाथाद्वयं॥ एते च अस्थि
कतिन्दुककपित्थाम्रातकमातुलिङ्गबिल्वामलकपनसदाडिमाश्वत्थोदुम्बरवटन्यग्रो धनन्दिवृक्षपिप्पलीशतावरीप्लक्षकादुम्बरिकुस्तुम्बरिदेवदालितिलकास
मकरुचीपशरीपमसप्तवर्दधिपर्णलोध्रधवचन्दनार्जुननीपकुटजकदम्बकानां मध्य केचिदतिप्रसिद्धा' कचि द्देशविशेषत वेदितव्या' नवर मिह्ना

एगट्ठिया॥ से किंत बहुबीयगा२ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा–अत्थियतेंदुकविठे अंबाडगमाउलिंगबिल्लेय
आमलगफणसदालिम आसोत्थेउंबरवडेय॥ १॥ णग्गोहणंदिरुक्के पिप्परिसयरीपिलुरुक्करुक्खेय। काउंबरि
कुत्थुंबरि देवदालीय॥ २॥ तिलएलउएच्छत्तो हसिरीसेसत्तवन्नदहिवन्ने। लोद्धधवचंदणज्जुण णीमेकु

थि पत्तापत्तेयजीवियापुप्फापनेगजीवा एगट्ठिया। प्रमाण पमुख घणा पत्रप्रत्येक प्रत्येकजीव के पत्रपत्रे प्रत्येक आन हुवे एकफले एकजीवहुवे पू
लविषे अनेकजीवहुवे। सततएगट्ठिया। एतल एकास्थिना जीव कह्या। सेकितबहुबीयगा२ अणेगविहा पं तं। जिवे गिणमांहे गणमले कन बहुबीज तस
गरबहे बहुबीजना अनेकभेदकहे ते कह्या तिम। अत्थियतिंदुकविठे। अस्थिकग्रामाहन १ तिंदुकपूरन् कोठ। अंबाडगमाउलिंगबिल्लेय। अंबाडगबीजोरा
बिल। आमलगफणसदालिम आसोत्थेउंबरवडेय॥ १॥ आमला फणस दाडिम अश्वत्थ पीपर बट। णिग्गोह णंदिरुक्के पिप्परिसयरीपिलुरुक्खेय।
काउंबरि कुत्थुंबरि बापथा देवदालीय॥ १॥ न्यग्रोध नन्दिवृक्ष पीपर सतावर प्लक्षवृक्ष काउंबरी धणिया कालिया देवदारू॥ १॥ तिलएउलएच्छत्तो
हसिरीसेसत्तवन्नदहिवन्ने। लोद्धधवचंदणज्जुण णीमेकुडयकयंबेय। तिलकवृक्ष पालाउक छत्र सरीष सप्तपर्णआमाहल दधिपर्ण लोधक धव चन्दन।

मसब्रादयो म मोपे प्रविष्टा॰ प्रतिपत्तव्या सोपा मेकास्थिकत्वात् किन्तु देशविशेषप्रसिद्धा बहुबीजका मय कथन ॥ जे या वन्ने तहप्प गारत्ति ॥ य चा न्य तथाप्रकारा एवं प्रकारा स पि बहुबीजका मन्तव्या, एतया मपि मूलकन्दस्कन्धत्वक्शाखा प्रवाला॰ प्रत्यक मसङ्ख्येय प्रत्येकशरीरजीवका॰ पत्राणि प्रत्येकजीवकानि पुष्पाणि मनकजीवकानि फलानि बहुबीजकानि उपसंहारमाह—से त मित्यादि ॥ जिगमनह

फ़एकयमेय ॥ ३ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा एतासिणमूलावि असखिज्जजीविया, कंदावि खधावि तयावि सालावि पवालावि, पत्ता पत्तेयजीविया, पुप्फायअणेगजीविया, फलाबहुबीया, सेत्त बहुबीयगा ॥ सेत्त रुक्खा ॥ से कित गुच्छा २ अणेगविहा पण्णत्ता, तजहा—वाइगिणिसल्लइपुण्डईयतहकच्छुरीयजासुमणा। रूवीआढ इणीली तुलसीतहमाउलिगाय ॥ १ ॥ कुत्थुम्भरिपिप्पलिया अतसीविल्लीयकायमाईय। चुयपडोलाकन्दलि वाउच्चावल्लुलेयबदरे ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवइतहजवासएयबोधव्वे। णिग्गुण्डिअक्कतूवरि अट्टईचेयतलउडा

घञ्जुन नाव कञ्ज बदरमय। अयावचतप्पगारापसिणमूला विमसखिज्जजीविया। जे वन्ने चनेरा तथाप्रकारना एहना मूलपिण असंख्यातजीवपणि त हुवे कांदनामूल घनतजीवहुवे। कंदावि खंधावि तयावि सालावि पवालावि। कन्दनविषे खन्धनेविषे त्वचानेविषे शाखानेविषे प्रवाल पत्रनेवि षे। पत्ता पत्तेयजीविया मत्ता बहुबीया। पत्रनेविषे प्रत्येकजीवहुवे फलमें बहुबीजहुवे तेहनाभेदकह्या। सेत्तबहुबीयगा। एतले बहुबीजनाभेद कह्या। सेत्तरुक्खा। त निम वृक्ष। सेकितगच्छा २ चनेगविहा प न्नं। किवे, गच्छानाभेद किंपरूप्या गच्छावेहे—गच्छानाभेद अनेक प्रकारे कह्या ते कहेछे— वाइगिणिसल्लइ वेंगणपण्डईयतहकच्छुरीयजासुमणा। रूवीआढइणीली तुलसीतहमाउलिगीय ॥ १ ॥ वेंगण साल्लकी सवकी तिम कछुरीमा जच्छा जाशिवा रूपो आढो नीलकडो तुलसी तिम बीजोरा मनोरम ॥ १ ॥ कुत्थुम्भरिपिप्पलिया अतसीवल्लीयकायमाइया। चुयपडोलाकन्दलियावाउच्चावल्लुलेयबदरे ॥ २ ॥ वटारो पीपरच पसो वल्लीय आदिमा आदि च्यम पडोल कदलिका। वाउलिया वालमा बदरमूल ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवइतहजवासएयबोधव्वे।

प मुणम, मम्मति गच्छप्रतिपाद्नापमाए–सक्षि त मित्यादि ॥ मते गुल्मादिभेदा प्राय स्वरूपत एव प्रतीता केपि देशविशेषा द्यगन्त
व्या यत्र गृहादिषु यस्ये कस्य नाम गृहीत्वा परत्रा पि त स्नाम गृहीत तत्रा प्यो जिसव्रातीय सदृग् नामा प्रतिपत्तव्य अथवा एकोपि क

ज्ञा ॥ ३ ॥ सणपाणकासमद्दग अग्घाडगसामसिंदुवारेय । करमद्दअद्दरूसग करीरएरावणमहत्थे ॥ ४ ॥ जाउलतमालपरिली गयमारिणिकुव्वकारियाभंडी । जावइकेयइतहग जपाडलादासिअंकोल्ले ॥ ५ ॥ जेयावणे तहप्पगारा सेत्त गुच्छा॥ से कित गुम्मा २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—सेरियएणोमालिय कोरंटय यत्थुजीयगमणोज्जे। पीइयपाणकणइर कुज्जायतहसिंदुवारेय ॥ १ ॥ जाईमोग्गरतहजूहियायतहमल्लियायवासंती। यत्थुलकच्छुलसेरी गठिमगदंतियाचेव ॥२॥ चंपगजाईणवणी इयायकुंदतहामहाजाई। एवमणेगागारा

निग्गुडिपद्दूरि पाठरवेतनपाठ १ । पननृष्ण तरसो तरत पुवे तिम सवास खाविता निर्गुंडो मज पाठ तूअरकौमिवे तेवाडापृष । ३ । सण पाणवामम‍दन पन्ना:डनमामसिंदुवारेय । करमदमरूसम करीरएरावणमहत्थे । ४ । सण पान कासमदृष भाषाडौ स्याम सिंदुवार मर मरू मा बेर बडाला रावण । ५ । जाउलतमालपरिलो गयमारिविकमकारिया भंडो । जावइकेयइतहगं जपाडलादासिमंकोले । ५ । जाउल तमाल परि मोवरोयगिरि मजनारपो कगवारिया भो डो यावत् कतको तिम गडपाडल एववा मकोल । ६ । जेयावणेतहप्पगारा । ज पनेरा तथाप्रकारना । बेत मच्छ । ते तिम गुच्छावच्छा । सेकित गुम्मा २ मणेगविहा प त । ते कुण मच गच्छे ते पनेकप्रकारे कह्या ते कहेछे—सेरियए णामालिय कोरंटयबोज्जमणोज्ज । पोइयपाणकणइर कुज्जायतहसिंदुवारेय । १ । सेरीयनामा नवमालिका कोरटक बधुजीवक विपकुरिया फूल मगाजनामा मुच्छ पोतिकर पानतर प्रसिद्ध कनयर कणकनामा तिम निर्गुंडो ।१। जा:इ मुग्गरतहजू हियायतहमल्लियायवासंती । वत्थुलकच्छुल मा। मगडिमगदंतियाचेव ।२। जायमाफूल मोगरा तिम जूहो तिम मालतीगुल्म वासंती वत्थुल कच्छुलगच्छ सेनागुल्म गठिमगनामे दंतिमग ।२।

हवतिगुम्मामुणेयव्वा ॥ ३ ॥ सेत्त गुम्मा ॥ से कित लयाउ लयाउ अणेगविहाउ पणत्ताउ, तजहा—पउमलयानागलया असोगचंपयलयायचूतलता । वणलतवासंतिलता अइमुत्तयकुंदसामलता ॥ १ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा सेत लयाउ॥ से कित वल्लीउ २ अणेगविहाउ पणत्ताउ, तजहा—पूसफलीकालिंगी तुंबीतपुसीय एलवालुंकी । घोसालइपंडोला पंचंगुलिआयणालीय ॥ १ ॥ कंगूलयाकदुइया कक्कोडइकारियल्लईसुभगा । कुयवायवागलीपा यावल्लीतहदेवदालीय ॥ २ ॥ अप्फोआअइमुत्तय नागलयाकण्हसूरवल्लीय संघट्टसुमिण साथि जायसुमणकुविंदवल्लीया ॥ ३ ॥ मुद्दियअप्पावल्ली वीरावीरालीजियतिगोयाली । पाणीसामायल्ली गुंजा

अनेकप्रकारनथो यावत्कुदातवामवाभार्द । एवदवेगागारा हवतिगम्मासुवेयव्वा ॥ ३ ॥ अपव जातो नवरगो अपवन्द तिम मवाकाय हम अनेकभेद पाकारके गुम्म जाविजाविवा ॥ ३ ॥ मत्तगुम्मा सेकित ल्यार अनेमविहा प तंजहा । ते तिम गम्म ॥ ते छिवे जिम लताजातिपूवेगर्‌व्हे हेमवागुभाय। लताजाति अनेक प्रकारनी कही तेकहेछे—पउमलताभामलया असोमचंपलसलासभूवलया । वनलसवासतिलया अइमुत्तलकुंदसामलया ॥ १ ॥ पद्मलता नागलता असोकलता चंपकलता भूतलता वनलता वासतीलता अतिमुक्तकलता कुंदलता श्यामलता ॥ १ ॥ तथावली तहप्पगारा । ज अपि वीर तवा प्रकारना ते लता कहिये । सेत्तलतावो । लता वनस्पति कही। सेकित वल्लीया वल्लीया अनेगविहावा प त । छिवेजिमपूछे कुण ते वल्ली वल्ली अनेक प्रकारनी कही तेकहेछे—पूसफलीकालिंगी तवीतउसीयएलवालुकी । वासालइपडोला पंचगलिआयणालीय ॥ १ ॥ कगूलाकडइया कक्कोलाकारियल्लईसु भगा । कुयवायवगलिपावे वल्लीतहदेवदालीय ॥ २ ॥ अप्पाअाभइमत्तय नागलताकण्हसूरवल्लीय । समद्दसुमिणसाविय जासवणकुविंदवल्लीय ॥ ३ ॥ मु द्दिअअावल्ली वेरावीरवर्यतिगायाली । पाणीमासावल्ली गंजावल्लीवच्छाणी ॥ ४ ॥ सेसिविंदुगोत्तफसिया गिरिकन्नइमालुयासमअजणवई । दहफुल्लवल्ली गसिमा मल्लीयतदभवर्गोदोवा ॥ ५ ॥ पूसफलोका लिंगी तुंबी तीउसी एलची चीभडी घासातकी पटोल पचांगुली नालिका ॥१॥ कमू कटुकी कर्कोटा

पि दसेकजातीयको पतति ममामासिकेरीतह रेकास्थिक स्सबो वसमाकारस्ता व वसय सतो नेकजातीयस्वा दसेकस्वा दपि त स्नाम निर्दिश्य

यह्नीययत्याणी ॥ ४ ॥ ससविदुगोत्तफुसिया गिरिकच्छमालुयायञ्जजणई । दहफुसयकागलिमा गलीयतह अक्कयोंदीया ॥ ५ ॥ जेयावसे तहप्पगारा सेसं वह्नीठ॥ से किंत पव्वगा २ अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा— इक्खूयाइक्कुयकये वीरुणातहडक्कानेयमासेय । सुठेसरेयवेत्ते तिमिरेसतपोरगणले ॥ १ ॥ यसेवेलूकणए कंका यंसेपथययसेय । उदएकुकएग्गिमए कनावेलूयकल्लाणे ॥ २ ॥ जेयावसे तहप्पगारा सेसं पव्वगा॥ से किंत तणा १ तणा अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—सेक्रियगतियहोत्तिय दब्भकुसेपव्वएयपोकइला । अज्जुणअसाढए रा क्षियसितुयवेयस्रोरजुसे ॥ १ ॥ एरकेकुरुविंदे करकरसुठेतह्नाविजगूय । मकुरतणछुरयासिप्पिय वोधव्वे सुकलितणेय ॥ २ ॥ जेयावसे तहप्पगारा सेसं तणा॥ से किंत वलया २ अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—ताले

करेमा मभना कृषधा बामका पत्रको तिमज सुसरासा ॥ २ ॥ मपीक मतिमुक्ता मागत्वक कृषबको सघयं स्मनसा आसपर्व कुविटवको ॥ २ ॥ मुद्रि का पंका बिराजी बपतो पापाको बाणो मामावको मजाषत्री बत्वाणी ॥ ४ ॥ रोमवतो दुमाभा पारसो गिरिकर्णी मालुका पंजना दूशे फाथिका वf मणो मामरो तिम पत्रार्बीदी ॥ ५ ॥ जेयावसे तहप्पगारा सेसंवल्लीणी । जे चान्य पिप तथा प्रकारता तेवल्लोवल्लिये पतलेवल्लीवको ॥ सेकिंत पव्वगा २ पवेभविहा पं तं०—तेकुष पर्वग पर्वग पमेश प्रकारतानश्रा तेकबेके—सेकडो इक्षवाटिका बीसबो इक्कड मासा सुठ समरिह पोरमत्र बांस सेच्छव ना भवानसो भाजसो उदक कुठक विसुक मठवेस ब्रह्माणो ॥ १ ॥ चेवा । वेएकवा पमेरा विच ते पर्वग कहिये । सेत पव्वगा । पतके पवग कहा । सेकित तवा तवा पवेगविहा प त । तेकुष तृण तृण पमेकप्रकारना कह्या ते कहेवे । मेठिबत्ति ॥ सेटित मृतिका शोतिका काभ कुश पवग पोठम पजुन पापाड रोहिस सुयवक गीरमुम ॥ १ ॥ परड कुरुविद करकर सूंठ विभगू मधुरतृष कुरक सिप्पव सुकलतन २ ॥ कहा० । पल्यपिच एहवा ते

माम न विरुध्यते सांप्रतमुक्तानुक्तार्थसंग्रहार्थमिदमाह-नाणाविहेत्यादि ॥ नानाविधं नानाप्रकारं सस्थानं आकृतिर्येषां तानि नानाविधसं

तमालतक्कलि, तेयालीसालिसारकल्लाणे । सरलेजायतिकेयइ, कंदलितद्धपउमरुक्खेय ॥ १ ॥ भुयरुक्खहिं गुरुक्खे, लवंगरुक्खेयहोइबोधव्वे । पूयफलीखज्जूरी, बोधव्वानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं वलया । से किंत हरिया ? हरिया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—अज्झोरुहवोडाणे, हरितगतहतंदुलेज्ज गतणेय । वत्थुलपोरगमज्जा, रपोइयवल्लीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदव्वी सोत्थियसाएतहेयमंडुक्की । मूलगसरिसवअंबिल, साएयजियंतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकण्हउराले फणिज्जअज्जयभूयणए । चोरगदमण

ते एहवा अनेरा तथाप्रकारना वनस्पतिना वृक्षभावपामें । सेत्तंतया । ते तिम छव कहवा । सेकित वलया २ अनेगविहा पं० तं० । तेमिस्य पूछे कुब व वत भेद, पद गुरु वलयनाभेद अनेकप्रकारे कह्या ते कहेछे—ताल तमालेतक्कलि तेयालिसालसारकल्लाणे सरलेजायतिकेयइ कदलितद्धधम्मरुक्खेय । १ । तालवृक्ष तमालवृक्ष तमालिक सालिका सारकल्याण सरले जावंत्री केतकी वरसो तथा धमवृक्ष । भुयरुक्खहिंगुरुक्खे लवंगरुक्खयहोइबोधव्वे पूयफली खजूरीबोधव्वा नालिएरीय । २ । भूतवृक्ष हींगवृक्ष लवंगवृक्ष एहवेनामे ते जांणिवा पूंगीफल खिजूरी जांणिवी नालिएर । २ । जेयावन्नेतहप्पगारा । एहवा अनेरा तथाप्रकारे अनेरा । सेत्तंवलया २ । सेकितं हरिया अनेगविहा पं० तं० । एतले वनस्पतीना वलयानाभेद कह्या तें हिवे हरितनाभेद पूछे शिष तद गुरु कहे हरितभेद तिम केटलाएक हरितभेद अनेकप्रकारे कह्या ते कहेछे—अज्झारुहवोडाणे हरितगतहतंदुलिज्जगतणेय वत्थुलपोरगमज्जार पोईय चीयपालक्का । १ । अध्यारोह वोडाण हरित तथा तंदुल वनस्पतीना पोर माज्जार पायवली पालक्का । २ । दगपिप्पलियादव्वी सोत्थियसाएतहेवमंडुक्की मूलगसरिसवअंबिल साएयजियंतएचेव । १ । दगपीपल दर्वी सोत्थिका तिराडीज मडुकी मूलग सरषव अंबिल साबल जयेतो जिवे । तुलसीकण्हउराल फणिज्जअज्जयभूयणए चोरगदमणगमरुयग सयपुप्फिंदीवरेयतहा । २ । तुलसी कृष्ण उदार फणिज अर्जुन भूषण चोरग दमण मरुयग इंदीवर सय

वि दमेकजातीयको मवति यथानासिकेरीतरु रेकास्थिक स्वको मतमाकारस्था च वसय सतो नेकजातीयस्था दनेकस्था दपि त काम निर्दिश्य

यल्लीयवत्याणी ॥ ४ ॥ ससविकुगोत्तफुसिया गिरिकण्णडमालुयायअजणई । दहफुल्लयकागलिमा गलीयतह अक्कबोंदीया ॥ ५ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं वल्लीउ ॥ से किंत पव्वगा २ अणेगविहा पण्णत्ता , तंजहा— इक्कूयाइक्कुयन्ये वीरुणातहइक्कडेयमासेय । सुठेसरेयवेस्से तिमिरेसतपोरगणले ॥ १ ॥ वसेवेलूकणए कंका यसेयययवसेय । उदएकुडएयिमए कडावेलूयकल्लाणे ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त पव्वगा ॥ से कित तणा ? तणा अणेगविहा पण्णत्ता , तंजहा—सेडियगतियहोत्तिय दब्भकुसेपव्वएयपोडइला । अज्जुणअसाढए रो हियसिसुयवेयसीरजुसे ॥ १ ॥ एरंडेकुरुविंदे करकरसुठेतहाविभगूय । मज्जुरतणवुरयासिप्पिय योधव्वे सुक्कलितणेय ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त तणा ॥ से किंतवलया २ अणेगविहा पण्णत्ता , तंजहा—ताले

बरेमा ममगा कुबधा बामणा पबना तिमञ दतदाया । २ । मपाल पतिमुखा नागरवल कूपवको सपर्य मममसा भामपप कुर्पिदमको । १ । मुरि का पंगा विता‍नो वयतो मोपामी वानो मामावशो मजावनो वमाणो । ४ । सेमवतो पुगाणा परमो गिरिकर्णी मालुका पतमा पुरो फालिका वर्ग गणो मामरो तिम पतावोशो । ५ । जेयावन्ने तहप्पगारा सेसंवल्लीओ । वे पन्व पिव तथा प्रकारणा तेवल्लीवर्ण्यिवे एतकेयलोवशो । सेकिंत पव्वया २ पवेयविहा पं तं०—तेकुप पर्वंग पर्वा पनेक प्रकारणाभ्या तेवरेके—सेकरो एवर्वाटका कोलको दवड मालो संठ वमरिस पोरयव वांव सेव्वक ना वबावसो वावपमो उदक कुठव विमुक्त संठवेस कल्याणो । १ । वेया । वेएवया पमेरा पिव ते पर्वग कहिये । सेत पव्वगा । पतले पवम काया । नेकित मवा तवा पवेगविहा प० त । तेकुष तृष तृष पनेकप्रकारणा कथा ते कहेवे । सेठिकमति । सेठित मृत्तिका शीतिक डाभ कुष पवग पोटल पजुन पापाठ रोहिय सुपवक नीरकुम । १ । एरड कुरविंद करवर संठ विभगू मधुरतृष कुरव सिप्पय सुमतृष । २ । वेषा । पन्यपिव एतका ते

माम न विरुध्यते, साम्प्रतमुत्तानुत्तार्थसङ्ग्रहार्थमिदमाह-नीलाविहेत्यादि ॥ नानाविध नानाप्रकारं संस्थानं आकृतिर्येषां तानि नानाविधसं

तमालेतक्काळि, तेयालीसालिसारकल्लाणे । सरलेजाग्रतिकेयइ, कंदलितहपउमरुरुकेय ॥ १ ॥ चुयरुरुकाहि गुरुक्के, लवंगरुरुकेयहोइयोधव्वे । पूयफलीखज्जूरी, बोधव्वानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावयो तहप्पगारा सेत्त वलया । से किं तं हरिया ? हरिया ष्णेगविहा पयाशा, तजहा—चुज्जोरुहयोदाणो, हरितगतहतुलेज्ज गतणेय । वत्थुलपोरगमज्जा, रंपोइयल्लीयपालक्का ॥ १ ॥ दगापिप्पलीयदव्वी सोत्थियसाएतहेयमण्डुक्की । मूलगसरिसवब्वयिल, साएयजियतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकराहरालेफणज्जुएअज्जएयभूयणए । चोरगदमंग

जे यवया बनेरा तथाप्रकारना वलयविशा स्यीभापाये । सेत्तवया । ते तिम वच वलया । सेकित मवसा २ पवेगविदा पं तं । तेमिग्ध पूवे कुंच व
वच भेद, तद गुद वलयनाभेद पनेकप्रकारे कह्या ते कहेछे—ताल तमालेतक्खि तेयविसालसारकलाणे परलजाबाइकयर कदलतहधम्मचलय । १ ।
तालवृक्ष तमालवृक्ष तक्कालित सालिका पारवल्लाव सरले यावयो केतकी कदली तथा चमवृक्ष । भुवचकोलिगुरुक्के लवंगवलयचोरयाधरवे पूयफलो
पज्जूरोबोधव्वा नालिएरीय । २ । भूतवृक्ष वोंगवृक्ष लवंगवृक्ष एववेनामे ते जाणिवा पूगोफल खज्जूरी जाणवो नालियेर । २ । जेयावलेतहप्पगारा ।
वलया पवा तथाप्रकारे पनेरा । सेतवलया २ सेकित हरिया पवेगविहा पं तं । पतले वनस्पतीना वलयानाभेद कह्या ते किवे हरितगाभेद पूवे गि
ष्य तद गुरु कहे हरितभेद तिम केमिष्य हरितभेद पनेकप्रकारे कह्या तेकहछे—चज्जारुहवोडाणे हरियमतहतुलिच्छंगतवेय वत्थुलपोरगमज्जार पोइय
लोवपालक्का । १ । पज्झावह वाठाव हरित तथा तंदुल वनवच्छव पोर मार्जार पोयवली पालक्का । २ । दगपिप्पलियादब्बी सात्थीयसाएयतहेवमण्डुक्की
मूलगसरिसववायिल सायवजियतिवचेव । १ । दगपीपल दर्वी स्वस्तिका तिगावोम मंडुकी मूलग सरसव चांविल सायत जयंती तिवे । तुलसीकरवेठ
राल प.णिज्जएप्रज्जयभूयणए चारएगमचगमचगा सवपुप्फोदेवरेयवला । २ । तुलसी कृष्ण उदार फाणिज अर्जुन भूयन चारएग मनक दुपक सव

ग्यामानि पयाणामिति पयग्रवमुपलक्षण तेन गुच्छगुल्मादीनामपि द्रष्टव्य, यद्यपि एकजीवका न्येकजीवाधिष्ठितानि वेदितव्यानि, स्कन्धोपि

गमरुयग वत्तपुप्फिदीयरेपत्तहा ॥ ३ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं हरिया । से किं तं ओसहीओ ? ओसहीओ अणेगविहाओ पण्णत्ताओ, तंजहा—सालीवीहीगोधूम जवाकलमसूरतिलमुग्गा । मासणिप्फावकुलत्थ अलिसंद सतीणपलिमंथा ॥ १ ॥ अयसीकुसुंभकोद्दव कंगूरालगवरट्टकोदूसा । सणसरिसवमूलगबीया जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं ओसहीओ । से किं तं जलरुहा २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—उदए अवए पणए सेवाले कलंबुया हढे कसेरुया कच्छभाणी उप्पले पउमे कुमुदे णलिणे सुभए सुगंधिए पोंडरीए महापोंडरीए सयपत्ते सह

पुष्प इत्यर तिम । जेयावन्नतहप्पगारा सेत हरिया । जिके अनेरा तथाप्रकारे ते तिमहीज हरितकायभेद कह्या । सेकिंत ओसिही २ अनेगविधा प० त० । ते किम ओषधिभेद मूळे गुरु ओषधीभेद अनेकप्रकारे कह्या तिम—सालीवीहीगोधूम जवकलमसूरतिलमुग्ग मासनिप्फावकुलत्थ अलिसंद सतीणपलिमंथा । १ । अयसीकुसुंभकोद्दव कंगूरालगवरट्टकोदूसा सणसरिसवमूलगबीयाजेव । २ । सालो व्रीहो गोधूम जव कलम मसूर तिलमुग तिल मग उडद अ्यावर कलत्थ चवळो दमतोण अलिसंद अयसीया कसुंभा कोद्रव कांग राल मास कोद्रव सामण सरिसव मूळाबीज तिमहीज बीजे । जेयावन्नतहप्पगारा सेत ओसहीओ । जे अनेरा तथा प्रकारे ते ओषधीनाम कह्या । सेकिंत जलरुहा २ अनेगविहा प० त० । किसे ते पुण जलरुहभेद पूछे छे गुरु जलरुहाभेद अनेकप्रकारे कह्या ते कहे छे—उदयअवयपणय सेवाळकलंबुयाहढे कसेयाकच्छभाणी उप्पलपउमकुमुद । १ । उदक अवक पाण से वाळ कलंबुय हढ कसेरु कच्छभाणी उत्पल पद्म कुमुद । नलिनसुभगसोगंधिक पुंडरीकमहापुंडरीक सयपत्तसहस्सपत्त कल्हारकोकनद । १ । नलिन सुभग सौगंधिक पुण्डरीक महापुण्डरीक सतपत्र सहस्रपत्र कल्हार कोकनद । अरविंदतामरसे तिलेतिसमभासपुक्खलपुक्खलत्थिभए । अरविंद ताम रस तिसेतिस मुणाल पुष्कर पुष्करास्तिभ । १ । जेयावन्नेतहप्पगारा सतजलरुहा । जे अनेरा तथाप्रकारे ते सर्व जलरुहनाभेद कह्या ते जिण कहे ।

मूलजीव एकजीवाधिष्ठितः किं सर्वथा अपि ने त्याह—तालसरलनालिकेरीणा तालसरलनालिकेरीग्रहणमुपलक्षणं तेषां स्कंधा अपि यथागमं एक जीवाधिष्ठितत्व स्कन्धस्य प्रतिपत्तव्यं अन्येषां तु स्कन्धाः प्रत्येक मनन्तप्रत्येकशरीरजीवात्मका इति सामर्थ्यात् द्रवय ॥ नानाविधकजीविया इति पूर्वमभिधानात् अथ यदि प्रत्येकमनन्तशरीरजीवाधिष्ठिता ततः कथ मेकरूपशरीराकारा उपलभ्यन्ते इति तदऽवस्थानस्वरूपमाह—जहसगले त्यादि ॥ यथा सकलसर्षपाणां श्लेषमिश्राणा प्रसम्यगविमिश्रितानां वर्तिसावत्तिरूपा भवति अथ ते सकलसर्षपाः परिपूर्णशरीराः सन्तः पृथक् स्वस्वावगाहनया तिष्ठन्ति तथा तथा एवो पमया प्रत्येकशरीरिणा जीवानां शरीरसंघाताः पृथक् स्वस्वावगाहना भवन्ति, इति एव जीवा

रूसयरो करहारे कोकणदे ऋरविदे तामरसे भिमे भिसमुणालो पोरकले पोरकलंच्छिलए जेयावसो तहप्प गारा सेत जलरुहा। से कित कुहणा? कुहणा ऋणेगविहा पणत्ता, तजहा—ऋाए काए कुहणे कुणक्को दव्वहलिया ऋफाए सज्जाए छत्ताए वसीणहिया कुरए १ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत कुहणा। णाणाविहस ठाणा रुक्खाणएगजीवियापत्ता। खंधोविएगजीवो तालसरलनालिएरीण ॥ १ ॥ जहसगलसरिसवाण सिलेस

सेकिंत कुहणा २ अनेकविधा प० त । अथ कुहणते अनेकप्रकारे कहेछे, कुहणानामा वनस्पतीनाभेदछे तिके कुहणभिन्न कहेछे अथो। आयकायकुहणे कु णक्क दव्वहलिया अफाए सज्जाए छत्ताए वसीणहियाकुरए। आय काय कुहण कुणक्क द्रव्यहलिया अफाए सज्जाए छत्ताए वसीणहित कुरएनामा। जेयावन्नतहप्पगारा सेत कुहणा। जे अनेरा तथाप्रकारे सव कुहण कहिये। णाणाविहसठाणारुक्खाणं एगजीविया पणत्ता। नानाप्रकारे संस्थान आ कारे वृक्षादिकना अवयवादि एकजीवछे तेकहा—खंधोविएगजीवो तालसरलनालिएरीणं जहसगलसरिसवाणं सिलेसमिस्सावहियावट्टी। ज्य विय एकजीवछे ताल खजूरी नालेरी प्रवेरट सवा गाना कहछे, जिम सकल सरसव ग्रम द्रव्य चीकणोद्रव्य तेणे मिश्रकीधा एकठावाय जिम। पत्तेयसरीराणं तहहोंतिसरीरसंघाया जहवातिसपप्पडिया अणुपविसतिसविसपथाअन्नो। अनेक शरीरमतें तिमहुवे शरीरसंघात एकठाकै जिम तिलपा

पिकारे सेसमुम्यस्पानीये रागमूपीपविर्त तपाविधं कमे सकलसपेपत्यानीया प्रत्येकशरीराः सकलसर्पपरीढ्धं सपपवैसित्त्यप्रतिपत्या पृथक् स्व स्वावगाहकप्रत्यकशरीरवैविक्त्यप्रतिपत्यर्थं यथैव दृष्टान्तान्तर माह-बहयेत्यादि ॥ बाह्यव्यो दृष्टान्तान्तरसूचने यथा सिसमपकुसिका तिलप्रधाना पिष्टमयी अपूपिका बहुभि स्तिलै र्मिमिता सती यथा पृथक् २ स्वस्वावगाहतिलात्मिका भवति, कथञ्चि देकरूपा च तथा यमये वो पमया प्रत्यकशरीरिणां जीवानां शरीरसङ्घाताः कथ ञ्चि दकरूपाः पृथक् स्वस्वावगाहमा च भवन्ति, उपसंहारमाह-सेत्तमित्यादि ॥ युग्म ॥ स सम्प्रति साधारणवनस्पतिकायिकप्रतिपादनायमाह-सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-अव पत्यादि ॥ एतेष कश्चिदाविप्रसिद्धत्वा स्तपि द्विविशेषतः स्वयं मेव ज्ञातव्याः ॥ बेयावमतस्याविशड्डति ॥ ये चि वा न्ये उक्तव्यतिरिक्ता स्तथा प्रका

मिस्साणयहियात्रहा । पतेयसरीराणं तहहोंतिसरीरसघाया ॥ २ ॥ जहयातिलपप्पडिया बहुएहितिलेहि सहतासती । पत्तेयसरीराणं तहहोंतिसरीरसघाया ॥ ३ ॥ सेत्त पत्तेयसरीरबादरवणप्फइकाइया । से किंत साहारसरीरबादरवणस्सइकाइया ? २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—अवए पणए सेवाले लोहिणी निहू त्थिभगा अस्सकण्णी सिहकण्णी सिउंठावतोमुसढीय ॥ १ ॥ रुरुकुण्डहरियाजारु, छीरयिरालीतहेसकिट्टीया ।

पत्रो बहुतिया एकठ्याये याकेहवे । पत्तेयसरीराणं तहहोंतिसरीरसघाया सेत्तपत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइ । मत्रेकशरीर विमधुवे शरीरसघात भवा पतये तिम प्रत्यकशरीर बादर वनस्पतीकायमा भेदकधा । से कत साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया २ अनेगविधा प तं० । ते विवे साधारण शरीर वनस्पतीनामद कैतया, तद युक्ते साधारणशरीर बादरवनस्पतीना अनेकमद कथा ते कवेवे—अवकपणएसेवाले लोहिणीमिहूथीहुथिभगा पवोवविमोडवको सिउठितनामम छोय रुरुकुण्डरिया । पवश पनक सेवाल राहिणी मियलो अश्विअमनामधमकर्णी सिहकर्णी संसडि तसकन्द मुशंठ द कन्द कन्दरो । बोकवीरविराको तवेवविदारयवासिदसिमवरे पाससउवामूलपर्ण कयुकंदसूमलपापावसईपतवेष । औरो कीरविराको तिमकोल को

हलिद्दासिगवेरेय, ज्ञालुगमूलए इ यकेंचूय कणककत्तूमजपोगलईतहेव मज्ञासिगी थिरुहा सप्पसुगधा छिन्नरुहा चेव धायरुहा पाढामियवालुकी मजाररसा चेव रायवल्ली य पउमा य माढरी दति चक्किहाति यायरामासपन्नी मुग्गपन्नि जीवियरिसिके य रेणुया चेव काहली खीरकाढली तया जंगीणहाईयाकिमिरा सिन्नहमुत्थाणगलईपेलुगाईय किराहे पउले य हठेहरतणुया चेव लोयाणी कराहकदेवज्ञो सूरणकदे तहेव खहूके एए अणतजीवा जेयावन्नो तहाविहा ॥ तणमूलकदमूलो वसीमूलित्तियावरे। सखेज्ज मसखिज्जा बोध अणतजीवाय॥१॥ सिघाडगस्सगुच्छो अणेगजीवोउ होंति णायव्वो। पत्ता पत्तेयजिया दोणियजीवाउ फले

टो हालिद्र सङ्गवेर आलू रताल मूलो कंद कणककन्द मधुपा पावव तिमशोक। मुबसिमोसिवशा सप्पसुर्वधाच्छिन्नरुहाचेव बीजरुहा पाठामियवालुकोम हररसंचेव। मधुसिगो विकठो सप्पनापन्ना छिवरश सिवे बीजरुहा पाठावहा मितवालुका मधुररस सिवे। रायवल्लीपउमाय माढईताचक्कोचि ठित्तिवरा एम्‍ मासपविसम्मपन्नी बोविवरस ईसरगुपाचव। रायवेल पद्मा माठरी दांतो चक्को विविमलिमरा मापपर्णी मुग्दपर्णी जीविवरसभ रेणुका सिवे। काचाविपीरकाकली तजमोचवनिशोपय किमराविमहमुस्ताच गुर्वापगिलोयपिकस्मए। काहलो पीरकाहली तच तिम भाग सिवे कमरा गि भद्रमाथ मुस्तो मिस्राय बहुका। विवेपकसहडे हरतचवाचैवबीजकपीलके भर्देवल्लीमूरच पांदेवबेवशूरे। कष्पपटाव शणकन्द हरताल सिवे वावा चो वापकन्द वजकन्द सूरनकन्द तिमशोक पिमाहा। ए पर्वतयोगा जेवानंतजाविशाच। एवो कम्दामावि अनन्तजीवहे जे पवमा अनेराबीज तथा प्रकारना। तवमूलवर्मूले वंसीमूलेत्तिवावरे सविसामसविसा बोधमानंतजीवाय। तृणमूल कन्दमूल वंशोमूल इत्यादि सख्याता असख्याता या विवा अनन्ताजीव। सिघाडमस्यगुच्छो अनेकजीवोकरीरजायवो पत्तापत्तेयजिया दोविवजीवावकलेभणिवा। सिघोडाणो जे गुच्छपुवे तेहमावि अनेक जीव जाणिवा हुवे पातडे २ प्रसके वेबे जीवहुवे फलमाहि जाणा। सक्षमूलस्यभंगस्य समीभंगीवडोवरे अनंतजीवेजसेमूखे सेयापत्तेजावियरा १२।

पिकारे मेसमूयस्थामीधे रागद्वेषीपचितां तायाविधं कर्मे षफलमपंपरयामीया। प्रत्येकशरीरा। धवलसपंपयप्रभं सर्वपर्यैवित्तप्रतिपत्या पृथक् स्यावनात्वप्रत्येकशरीरवैवित्तप्रतिपत्यर्थं, यथैव दृष्टान्ताकार माह-जहयेत्यादि ॥ गाथाद्वयी दृष्टान्तान्तरसूचने यथा तिलप्रपुलिका तिलप्रधाना विग्रमयी अपूपिका बहुभि तिलैः सिंचिता सती यथा पृथक् २ स्वस्वायगाहतिलासिका भवति, कथञ्चि देकरूपा च, तथा प्रत्येक शरीरिणां जीवानां शरीरसङ्घाताः कथञ्चि देकरूपाः पृथक् स्वस्वायगाहना च भवन्ति, तदर्थं द्वारमाह-सत्तमित्यादि ॥ सुगमं ॥ ता सम्प्रति साधारणवनस्पतिकायिकप्रतिपादनार्थमाह-सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-अवए पणए इत्यादि ॥ एतेषु केचिद्देशविशेषात् स्वरूपं देशविशेषात् ज्ञातव्याः ॥ सेयावक्तव्या विज्ञातव्या इति ॥ ये ऽपि चा न्ये तद्व्यतिरिक्ता तथा प्रकाः

मिस्त्राणगाहियाभवा। पत्तेयसरीराणं तहहोंतिसरीरसंघाया ॥ २ ॥ जहयातिलपप्पडिया बहुएहिंतिलेहिं संहतासती। पत्तेयसरीराणं तहहोंतिसरीरसंघाया ॥ ३ ॥ सेत्त पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया। से किंतं साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया? २ अणेगविहा पणत्ता, तंजहा—अवए पणए सेवाले लोहिणी निहू थिभगा अस्सकणी सिंहकणी सिउंढातप्रमुसंढीय ॥ १ ॥ रुरुकुण्डहरियाजारु, छीरविराळीतहेयकिट्टीया।

यको बहुतिला एकठ्वाये वाकेवे। पत्तेयसरीराणं तहहोंतिसरीरसंघाया सेत्तपत्तेयसरीर बादरवणस्पतिकाय। प्रत्येकशरीर तिलपूपे शरीरसंघात भवा सवते तिण प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकायना भेदकह्या। सर्वते साधारणशरीरबादरवणस्सइकाइया २ अनेकविधा पं० तं०। ते किसे साधारण शरीर वनस्पतीकायनु भेदकह्या, तद सुबके साधारणशरीर बादरवनस्पतीना अनेकभेद कह्या ते कहेछे—अवएपणएसेवाले काहिणीनिहूथोभ्रस्थिभगा पद्मोवनिबोधकबो विउढितनामसं छोय बबकुडरिया। पवन पनक सेवाल रोपिवो मिथुनो अश्वकर्णी सिंहकर्णी सिउंढि ताकन्द मुसंढि कबन कमरो। छीरविराळो तहेवकिट्टीया विरलिणवरे भाषकण्यामूलपर्व कनुकंदगूमघाया बसदेपसेप। जीरी भीरविराली तिमभोज की

यानि तथाप्रकाराणि अविरूसमूलमनन्तसमप्रकाराणि तान्य प्य मनन्तजीवानि ज्ञातव्यानि, यथ कन्दस्कन्धत्वक्शाखाप्रवालपत्रपुष्पफलबीजादि यथा ष्रवि नव व्याख्यया: सम्प्रति प्रत्येकशरीरलक्षणाभिधानार्थं गाथादशकं माह-जस्सत्यादि ॥ यस्य मूलस्य भग्नस्य सतो भङ्ग प्रदेश हीरो

जस्सपत्तस्सभग्गस्स समोभ्नगोपदीसइ । ष्णणतजीवेउसेपत्ते जेयाबन्नेतहाविहा ॥७॥ जस्सपप्फस्सभग्गस्स समोभ्नगोपदीसइ । ष्णणतजीवेउसेपुप्फे जेयाबन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सभग्गस्स समोभ्नगोपदीसइ । ष्णणतजीवेफलेसेउ जेयाबन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सबीयस्सभग्गस्स समोभ्नगोपदीसइ । ष्णणतजीवेउसेबीए जेयाबन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सभग्गस्स हीरोभ्नगोपदीसइ । परित्तजीवेउसेमूले जेयाबन्नेतहाविहा १ जस्सकंदस्सभग्गस्स हीरोभ्नगोपदीसइ । परित्तजीवेउसेकंदे जेयाबन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सभग्गस्स

मामवा अनन्तजीवपत्राससे जेयावन्नेतहाविहा । जे वासभागेयके समाभग दीसे तमात अनन्तजीवम कन छि एहवा बगरा तथाप्रकारे । जस्सपत्तस्स भग्गस्स समभ अनन्तजीवसेपत्त जेयावन्नतहाविहा । जिन पानडे भांगतायका समाभंग दीसे ते पत्र अनन्तजीव कहे जे अनेरा पिण तिणप्रकार नाविहा । जस्सपुप्फस्सभग्गस्स समाभंगावदीसइ अनन्तजीवेउसेपुप्फ जयावन्नेतहाविहा । जिन फूलभागेयका समाभगथके दीसे ते अनन्तजीव कहे फूल ने अनेरा तथाप्रकारे । जस्सफलस्सभग्गस्स समाभ अनन्तजीवफलसेप जयावन्नेतहाविहा । जिनफल भांगतेथके समाभग दीसे ते फल अनन्तजीवसे कव जे एहवा तथाप्रकारे । जस्सबीजस्सभग्गस्स समाभ अनन्तजीवेबीज ए जयावन्नतहाविहा । जे बीज भागेथके समाभंग दीसे ते अनन्तजीव बीज अनेराप्रकारे तथाविध हुवे । जस्समूलस्सभग्गस्स हीराभगावदीसए परित्तजीवउसमूल जयावन्नेतहाविहा । जिसमूल भागेथके विषमभग ह से रमूल प्रत्ये क जीवसहित कहिये अनेरा तथाप्रकारे । जस्सकंदस्सभग्गस्स हीराभगावदीसए परित्तजीवकंदेसरे जयावन्नतहाविहा । जे कन्द भागेथके विष मभग दीसे तो कन्दमांहि प्रत्येक जीवमांहि हुव जे अनेरा तथाप्रकार । जस्सखंधस्सभग्गस्स हीराभ परित्तजीवेउसखंध जयावन्नतहाविहा । जे

रा उक्तप्रकारा ज्ञेय्य मनन्तजीवा ज्ञातव्या ॥ तर्वेत्यादि ॥ वृक्षमूलं कन्दमूलय घा पर घण्मीमूल एतेषां मध्ये क्वचि ज्ञातिभेदतो देशभेदतो वासङ्ख्या ता जीवाः क्वचिदसङ्ख्याताः क्वचि दनन्ता य ज्ञातव्या ॥ सिघाडमस्सेत्यादि ॥ श्रृङ्गाटकस्य यो गुच्छः सो ऽनेकजीवो भवति ज्ञातव्यः ' स्यक्तुषाद्दी नाममनन्तजीवात्मकत्वात् केवल तथापि यानि यथाकि तानि प्रत्येकजीवानि फले पुनः प्रत्येकमेकैकस्मिन् द्वी २ जीवी भवितो ॥ जस्समूलस्सेत्यादि ॥ यस्यमूलस्य भग्नस्य सतः समएकाम्तरूप चक्राकारो भङ्ग प्रकर्षेण दृश्यते तन्मूलमनन्तजीवमवसेय ॥ जेयावन्नेतहाइति ॥ याम्य ऽपि यान्यानि

न्निणिया ॥२॥ जस्समूलस्सभग्गस्स समोभंगोयदीसए । अणतजीवेउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा ॥१॥ जस्सकंदस्स भग्गस्स समोभगोयदीसई । अणतजीवेउसेकंदे जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सभग्गस्स समोभगोय दीसई । अणतजीयेउसेखंधे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससयाएभग्गाए समोभगोयदीसई । अणतजीवा तयासाउ जेयावन्नातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सभग्गस्स समोभगोपदीसई अणतजीवेउसेसाले जेयावन्ने तहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सभग्गस्स समोभगोपदीसई । अणतजीवेपवालेसे जेयावन्नातहाविहा ६ ॥

हिवे साधारण प्रत्येकरो लक्षण कुहे जिणमूलभागी थके समाभंग होसे ते मूल अनन्तजीव ते जाणिवो थे वली अनेरा तथाप्रकारे इम १० । जस्सकंदस्स मूलस्स समाभंगोयदीसए अणतजीवेसेकंदे जेयावन्नेतहाविहा ११ । जिण कन्दमूल समोभंग चक्राकार होसे ते कन्दमें अनन्तजीव कुहे ते कन्दनेविषे जी अनेरा तथाप्रकारना वैकन्द जाणिवा । जस्सखंधस्सभग्गस्ससमाभ अणतजीवेसेखंधे जेयावन्नेतहाविहा । जिण स्कन्धभांये थके समोभागतो भगहोसे ते स्कन्ध अनन्तजीव जिनकुहे इस स्कन्ध जिके अनेराप्रकारना जाणिवा । जोसेतयाएभागएसमाभ अणतजीवतयासाया जेयावन्नेतहाविहा । जिण नो त्वचा भांगयके भागता समाभंग होसे ते त्वचा अनन्तजीवने कुहे एहवो अनेरीत्वचा जाणिवी तथाप्रकारे । जस्ससालस्सभग्गस्स समोभ अणतजीवेउ सेसाले जेयावन्नेतहाविहा । एह मयासटोसो सालेथके समाभग होसे ते प्रवाल अनन्तजीव होसे जे एहवा अनेरा तथाप्रकारे । जस्सपवालस्सभग्गस्स स

व्या यय कम्दस्कन्धसारतायिपया अपि तिस्रो गाथा परिनावनीया' अधुना सामामे य छल्लीमा प्रत्येकजीवस्यपरित्तानाय मघयमाप-अस्समू लस्सस्यादि ॥ गाथाचतुष्टय यस्य मूलस्य काष्ठात मध्यसारात् छल्ली वरकलरूपा तनुतरानयति सा परित्तजाया प्रत्यकशरीरजीवात्मिका द्रष्टव्या प्रयाधप्रतशासि ॥ या पि चास्या अधिकतया प्रत्यकशरीरजीवात्मकत्यम निदिसपा वस्स्या समानरूपा छल्ली सा पि तथाविधा प्रत्यकशरीर जीवात्मिका ययगन्तव्या एव कन्दादिविपया अपि तिस्रो गाथा जावनीयाः पदुक-जस्समूलस्सतक्रस्सतसमासक्कापदीसइ ॥ इत्यादि तदव सवच

स्स हीरोन्नगेपढीसइ । परित्तजीयेउसेवप्फ जेयावणोतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सन्नग्गस्स हीरोन्नगेपढीस इ । परित्तजीवेफलसेउ जेयावखोतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सवीयस्सन्नग्गस्स हीरोन्नगेपदीसइं । परित्तजीवेउसे वीउ जेयावणोतहायिहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकठाउ छल्लीबहलतरीभवे । अणतजीवाउसाछल्ली जायाव ण्णातहायिहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्सकठाउ छल्लीबहलतरीन्नवे । अणतजीवाउसाछल्ली जायाव्वणातहायिहा २ ॥

व मूल मांमतावका समाममदासे ते मूल पनमतजीवम हुवे ते पमेरा नागापकारे त पिण जाणिवा । अच्छमच्छभागम समार्भ ादोसह पचतयोवे वमूमस जयावपनशाविहा । से फल भांमतिवचे समाभमदोसे ते फल पनमतजीवमें हवे वे ०हवा पमेरा तथा नामाप्रकारे इम जाणवा । अच्छदोयच भमग ममाभगावदीसर पचतजीवेहमबीय जयावचेनशाविहा । स वीवभागतावका समाभग वोसे तवीम पनरा न मापकारना तेपिण इमजोण जाणिवा । जरससवरममगरम होराभमावदोसए परित्तजीवेहसेमूल समावचतशाविहा । हिवे मूलभागेवका विपमभग वासे ते मूल प्रत्येकजीव सहि त कहिये पमेरा तथाप्रकारना तेपिण इम जाणिवा । जस्सकदस्समस्स भाराभगावदोसए परित्तजीवेहसेकदे जयावचेतशाविहा । जे कन्द तेमिपके विपमभंग होमे तेकन्दमाहि प्रत्येकजीव हवे जे पमेरा तथाप्रकारना ते पिण इम जाणिवा । जस्सखधस्समभमस्स भीराभगा परित्तजीवेहसेखधे जेया वचेतशाविहा । स खन्धभागवका विपमभगदीसे ते खन्ध प्रत्यकशरीर कहिये पहवा पमेरा तथाप्रकारना ते पिण इम जाणिवा । जोसेतईयाएभगाए

विषमच्छेदमुद्गमद् या प्रदृश्यते प्रकर्षेण स्पष्टरूपतया लक्ष्यते ततो मूलं परित्तजीवं प्रत्येकशरीरजीवात्मकं ज्ञातव्यं ॥ समाप्तमेतद्गाथिन्यायेन ॥ या न्य पि या स्यामि यत्नेनात तथाप्रकाराणि पश्चित्यसरीरमन्नमूलसदृशानि मूलानि ता न्यपि प्रत्येकशरीरगाथासाकानि मन्तव्यानि एवं कन्दा दिविषया अपि नव गाथा भावनीया यत्र कुत्रापि लिङ्गव्यत्ययः स प्राकृतत्वात् ऽवसेय अधुना मूलादिगतानां वल्कलरूपाया छल्लीनामन न्तजीवत्वपरिणामायलक्षणं माह-जस्समूलस्सत्यादिगाथाचतुष्टय ॥ यस्य मूलस्य काष्ठात् मध्यसारात छल्लीवल्कलरूपा बहलतरा भवति सा अनन्त काया ज्ञातव्या ॥ अयायमर्थः ॥ यापि या न्या अधिकतया अनन्तभावस्येन निश्चितया समानरूपा छल्ली सापि तथाविधा अनन्तजीवात्मका ज्ञात

हीरोत्तगेपदीसइ । परित्तजीउसेसथे जेयावणातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएत्तग्गाए हीरोत्तगेपदीसइ । परि
त्तजीयातयासाउ जयावणातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्समालस्सत्तग्गस्स हीरोत्तगेपदीसइ । परित्तजीवेउसेसाले
जेयावत्रेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सत्तग्गस्स हीरोत्तगेपदीसइ । परित्तजीवेपवालेऊ जेयानन्नतहाविहा
६ ॥ जस्सपत्तस्सत्तग्गस्स हीरोत्तगेपदीसइ । परित्तजीवेउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुष्फस्सत्तग्ग

न ऽभाजेवजे विषमभग दीसे ते मूलप्रत्येकशरीरे कहिये अथवा अ पनेरा तथाप्रकारे ते पिण जाणिवा । जीसतयाएभगाए हीराभगो परित्तजीवे तयामांया अयावन्नतहाविहा । अथवो त्वचा भागतांथका विषमभगदीसे त्वचा प्रत्येकजीवमें कहिये अथवा अ पनेरा ते पिण इम जाणवा । जस्सा लस्सभग्गस्स हीराभगो परित्तजीवेउसेसाले जयावन्नेतहाविहा । अ मासमाअथवे विषमभग दीसे त साल प्रत्येक जीवमें कवे अ अथवा अनेरा पिण ए मजीव जाणिवा तिणप्रकारे । जस्सपवालस्सभंगस्स हीराभगो परित्तजीवेपवालेऊ जयावन्नतहाविहा । जे साल भागियथे विषमभंग दीसे तेसाल प्रत्येक जीवमें कव अथवा अ अनेरा ते पिण इमजीव जाणवा । जस्सपत्तस्सभगस्स समासमायदीसे अपतजीवमेंपत्ते जयावन्नतहाविहा । जेपत्र भागताथका समासम दीसे तपत्र अनन्तजीवमें कव वे अनेरापिण इमजीव जाणिवा । जस्सपुष्फस्सभगस्स समासमायदीसइ अपतजीवेउसेपुष्फे जेयावन्नेतहाविहा ।

जीयाउसाळसी जायावयातहायिहा ॥ २ ॥ जस्सखधस्सकठाद ठसीतणुयरीनवे । परिसजीवाउसाळसी जायायणातहावि
जायायणातहायिहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाइकठाद ठसीतणुयरीनवे । परिसजीवाउसाळसी जायायणातहावि
हा ॥ ८ ॥ चक्कागनज्झमाणस्स गठोचुमघणोनवे । पुढवीसरिसएणनेदेण मणतजीवावियाणाहि ॥ १ ॥

हिरसो थाम वाडोचये ते वाभिमाहि घमन्ताकोव थाव मवुतवाडोचवे घमन्तकोवमें हुवे हम घमेरा तधामवारे पिच कवचा । वळकन्घळकझाघा
वसोवकततरोभवे पवतवोवाउसाळको लेयावचतवाविशा । वकन्मी वाटमोक व वाडोहुवे तेहमे घमन्तकोव हवे लेवको घमेरा तधामवारे तेपिच
हमबोक ववचा । वळवटरसवझाघा वसोवकततरोभवे पवतकोवाउसाळको वयावचतवाविशा । से वगद वाटघावआवी हुवे ते वाळमें घमन्ता
बोनवरे से वठी घमेरा तधामवारे हमचोल वाविका । किवेशासावझाघा वसोवकततरोभवे पवतवोवाउसाळसो बेयावचतवाविशा । से सावमा
वाटनी थाव वाडोचवे वाकुव कप हवे ते वाळा घमन्नवोवमें वविय तधामवारे । वोससावावझाघा वसोवटवततरोभवे पवतवोवाउसाळसी वया
ववेतवाविशा । वेसाव वाटमे वावकवाडोचवे तेसाळमे घमन्ताकोव वरिये पवका घमेरा पिचहमचोल वाविवा । वरमसूवरसवझाघा वसोतपवयरोभवे
परित्तवोवाउसाळसो वचाय । वमूकमा वाटमाइव घवी हुवे वाविरसो थाव पातको हुवे ते प्रत्येवकप वाविको व पवका घमेरा पिच हमचोल
वाविवा । वरसवदरसवझाघी वसोतपवयरोभवे परित्तवोवाउसाळसो वेयाय । सेवकस्ना वाटमोळास पातकोचवे ते थाव प्रत्येकगरोरमें वरिये प
वना घमेरा पिच हमचोज । वरसर्षवरसवझाघा वसोतपवयरोभवे परित्तवोवाउसाळसो वेयावचतवाविशा । से वाग्ध वाटमीळास प्रत्येकगरीरमें व
रिये पवका घमेरा पिच हमचोज । ववेशासावझाघा वसोतवुयरोभवे परित्तवोवाउसाळसो वेयाव । स सावमा वाटमीवाळा पातकोचवे तेवा
व प्रत्येकमोवमें वरिये पवमा वे घमेरा पिच हमचोज । ववाम वमावरस गठोचुमघवोभवे पढवोसविसेवभेदव पवतवावियापवि । वे भानमेव
वे पवावार हुवे समार्व,स्थानवमूल वन्दादिक हुवे व गाठभावते चूरवित हुवे पृथिवोगोपरे पव वर्षभरे रंगहुवे ते पिच घमन्तकोवमें हुवे ते मूल

स्पष्ट प्रतिपिपादयिषु रिदमाह-चक्कागेत्यादि ॥ चक्रवं चक्राकारमक्रमेण सम भङ्गस्थान यस्य भज्यमानस्य मूलकन्दस्कन्धत्वक्शाखापत्रपुष्पादेर्भवति स मूलादिकम नन्तजीव विजानीहि इति सम्बन्ध तथागठीचूर्णघनोभवेद्विति पर्वसामान्यतो भङ्गस्थान वा स यस्य भज्यमानस्य पूर्वेन रजसा घनो व्याप्तो भवति अथवा यस्य पर्वादे भज्यमानस्य चक्राकार भङ्गं रजसा पन्थिस्थान व्याप्तं च विना पृथिवीसदृशेन भेदेन भङ्गस्या

जस्सखंधस्सकट्ठाउ छल्लीबहलतरीभवे । अणंतजीवाउसाछल्ली जायावण्णातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाइ क ठाउ छल्लीबहलतरीभव । अणंतजीवाउसाछल्ली जायावण्णातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्समूलस्सकट्ठाउ छल्लीतणु यरीभवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायावण्णातहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सकंदस्सकट्ठाउ छल्लीतणुयरीभवे । परित्त

जीवो परित्तजीवोतयारापा जयावणेतदाविहा । जेहनो मूल भागता विषमभंग होसे तथा प्रत्येकजीवमें कहिये एहवा जे पनेरा पिण इमहीज जांणिवा । जस्मखांधस्यभागस्य होराम परित्तजीवेतसेसाले जेयावणतहाविहा । जेसाल भांगवके विषमभंग होसे ते साल प्रत्येकजीवमे हुवे जे एह वा पनेरा तेपिण इमहीज जांणवा । जस्यपवालस्यभगस्य हीराभ परित्तजीवेपवालेसे जेयावणतहाविहा । जे प्रवालभागेवके विषमभग होसे ते पवाल प्रत्येकजीवमें कहिये जे पनेरा तथाप्रकारे इमहीज जांणिवा । जस्सपत्तस्सभगस्स हीरामगोवदीसई परित्तजीवेसेपत्ते जेयावणेतहाविहा । जे प च भांगवके विषमभंग होसे ते पत्र प्रत्येकजीवमें हुवे एहवा जे पनरा ते पिण इमहीज जांणिवा । जस्स पुप्फस्सभगस्स हीराभ परित्तजीवेसेपुप्फे जी रायणतहाविहा । जे पुष्प भांगवके विषमभंग होसे ते पुष्प प्रत्येकशरीरमें कहिये जे एहवा पिण तिमहीज जांणिवा । जस्सफलस्सभगस्स हीराभओ परित्तजीवफलेसेउ जयावणतहाविहा । जे फल भांगताथका विषमभंग होसे प्रत्येकफल कहीजे जे पनेरा पिण तथाप्रकारे जांणिवा इमहीज । जस्स बीयस्सभगस्स हीराभ परित्तजीवेसेबीए जेयावणतहाविहा । जेबीज भांगताथकां विषमभंग होसे ते बीज प्रत्येकशरीरमें कहीजे एहवा पनेरा पिण तथाप्रकारे जांणवा । जस्समूलकट्ठाओ छल्लीबहलतरीभव अणंतजीवाउसाछल्ली जयावणेतहाविहा । जे मूलना काठनाभागथकी छाल जाडी होय घने ना

जीवाउसाउब्बी जायाथ्यातहायिहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सकठाहे ब्बीतणुयरीन्नवे । परित्तजीवाउसाउब्बी
जायाथ्यातहायिहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाइकठाहे ब्बीतणुयरीन्नवे । परित्तजीवाउसाउब्बी जायाथ्यातहायि
हा ॥ ४ ॥ चक्कागन्नज्जमाणस्स गठीचुण्णघणोन्नवे । पुढवीसरिसएणन्नेदेण अणंतजीवंवियाणाहि ॥ १ ॥

फिरतो छाल काढीये ते छालिमांहि अनन्ताजीव छाल मजुतकाढीये अनन्तजीवमें हुवे एम अनेरा तथाप्रकारे पिण करवा । जस्सकंदस्सकठाथी
छल्लीबहलतरीभवे अनन्तजीवाउसाउल्लो जेवाअवतजाणिवा । जस्सन्नी काठनोय स काढीहुवे तेहने अनन्तजीव हुवे जेपवो अनेरा तथाप्रकारे तदिप
हमचीज करवा । जस्सखंदस्सकठाथी छल्लीबहलतरीभवे अनन्तजीवाउसाउल्लो अयाअवेतजाणिवा । जे कन्द काष्टछालगारी हुवे ते छालमें अनन्ता
वोरवे वे वली अनेरा तथाप्रकारे हमचीज जाणिवा । जिसेसालाइकठाथी छल्लीबहलतरीभवे अनन्तजीवाउसाउल्लो जेवाअवसतजाणिवा । जे शाखा
काठनो छाल काढीये वाकुभाकुप हुवे ते काछा अनन्तजीवमें कहिये तथाप्रकारे । जोसेसालाइकठाथी छल्लीबहलतरीभवे अनन्तजीवाउसाउल्ली जया
अवेतजाणिवा । जेसाल काठसे काठकाढीये तेसालमें अनन्ताजीव कहिये एहवा अनेरा पिण हमचीज जाणिवा । जस्समूलस्सकठाथी छल्लीतणुयरीभवे
परित्तजीवाउसाउल्लो जवाव । अमूलना काष्टमांहथी पर्यो हुवे काढिरतो छाल पातली हुवे ते प्रत्येकरूप जाणिवो ए एहवा अनेरा पिण हमचीज
जाणिवा । जस्सकंदस्सकठाथी छल्लीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाउल्ली जेयाव । अकन्दना काष्टनोछाल पातलीहुवे ते छाल प्रत्येकशरीरमें कहिये प
हवा अनेरा पिण हमचीज । जस्सखंदस्सकठाथी छल्लीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाउल्ली जेयाअवेतजाणिवा । जे स्कन्ध काष्टनोछाल प्रत्येकशरीरमें क
हिये एहवा अनेरा पिण हमचीज । जिसेसालाइकठाथी छल्लीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाउल्लो जेयाव । जे साखना काष्टनीछाल पातलीहुवे तेहा
स प्रत्येकजीवमें कहिये एहवा जे अनेरा पिण हमचीज । चक्काग भज्जमाणस्स गठीचुण्णघणोभवे पुढवीसरिसभेएण अणंतजीवंवियाणाहि । जे भांजतां
जे चक्राकार हुवे समाविरल्लागकसूल कडकादिक हुवे जे गांठभांगते चूर्णित हुवे पृथिवीनीपरे पंच वर्णसिद्ध रंगहुवे ते पिण अनन्तजीवस हुवे ते मूल

न यातीति भंगस्थानमितरप्रदेशाद् इतरप्रदेशान्तरसंस्थस्य समो भंगो भवतीति भावस्तमनन्तकायं विजानीहि ॥ पुनरपि लक्षणान्तरमाह-गूढसि रागमित्यादि ॥ पत्रं सक्षीरं निःक्षीरं वा गूढशिराकमलक्ष्यमाणशिराविशेषं यदपि च प्रणष्टसन्धि सर्वथा अनुपलक्ष्यमाणपत्रार्द्धद्वयसन्धि तदऽनन्त जीवं विजानीहि ॥ सम्प्रति पुष्पादिगतं विशेषमभिधित्सुराह-पुष्पाणि चतुर्विधानि तद्यथा-जलजानि सहस्रपत्रादीनि स्थलजानि कोरण्टकादीनि एतान्यपि प्रत्येकं द्विधा तद्यथा-कानिचित् वृन्तबद्धानि अतिमुक्तकप्रभृतीनि कानिचिन्नालबद्धानि जातिपुष्पप्रभृतीनि तत्र तेषां मध्ये कानिचि

गूढसिरागपत्तं सच्छीरं जं च होइ निच्छीरं। जं पि य पणट्ठसंधि अणंतजीवं वियाणाहि ॥ २ ॥ पुप्फा जलया थलया य विंटबद्धा य णालिबद्धा य। संखिज्जमसंखेज्जा बोधव्वाणंतजीवा य ॥ ३ ॥ जे केइ नालियाबद्धा पुप्फा संखेज्जजीविया। णिहुया अणंतजीवा जे यावन्ने तहाविहा ॥ ४ ॥ पउमुप्पलिणीकंदे अंतरकंदे तहेव झिल्ली य। एते

अन अनन्तो। गूढसिरागंपत्तं सच्छीरं जं च होइ निच्छीरं जं पि य पणट्ठसंधि अणंतजीवं वियाणाहि। गूढ सिरा नसा छे जेहनी क्षीरसहित हवे जे क्षीरविना हुवे अथवो प्रतिरा गुप्तसंधि हुवे ए सर्वेवली अनन्तकायना जीव जाणिवा, हिव फूल फलनासम्बन्धना भेद कहेछे—पुप्फा जलया थलया विंटबद्धा य णालबद्धाय संखिज्जामसंखिज्जा बोधव्वा अणंतजीवाय। फूल च्यारभेदवंत जलना कमलादिक थलना चंपकादिक एहना बेभेद एके बीटवद्ध चपकादिक नालबद्ध जाइजूई आदिक एहनाविषे केटलाएकमां जीव संख्याता केटलाएकमां असंख्याता केटलाएक अनन्तजीव पिण जाणिवा। जे केइ नालियाबद्धा पुप्फा संखिज्जजीविया णिहुया अणंतजीवा जेयावन्नेतहाविहा। जे केई नालबद्ध जाई जूई आदिक ते फूल संख्याता जीवात्मक कह्या वीतरागे स्निग्ध फूलमे अनन्तजीव हुवे ए हवा अनेरा पिण एहवे प्रकारे सर्व जाणिवा। पउमुप्पलिणीकंदे अंतरकंदे तहेव झिल्ली य एए अणंतजीवा एगा जीवा भिसमुणाले। पद्मनीनामवनस्पति उत्पलनामवनस्पति अनन्तजीव कहया ते कंद मांहि अंतरकंद अनन्तजीव एहना जाणिवा पद्मनीने विषे मृणालनेविषे एगजीव। पलंडुलसणकंदेय कंदुकुंदुरुए य परित्तजीवा जेयावन्ने तहाविहा। पलाण्डुकंद लसणकंद अनन्तजीवा कुडुवकन्तो निश्चयप एहना प्रत्येकजीवात्मक जाणिवा अनेरा पिण

त्वगादिगतजीवापेक्षया सङ्ख्येयजीवानि कतिचित् असङ्ख्येयजीवानि कानिचिदनन्तजीवानि यथागमं बोद्धव्यानि, यत्रैव किञ्चिद्विशेषमाह-एकेत्यादि ॥ यानि कानिचित् नालिकाबद्धानि पुष्पाणि जात्यादिगतानि तानि सर्वाण्यपि सङ्ख्यातजीवकानि भणितानि तीर्थकरगणधरैः। स्निहू स्निहूपुष्प पु मरनन्तजीवं यान्यपि चान्यानि स्निहूपुष्पकल्पानि तान्यपि तथाविधानि अनन्तजीवात्मकानि ज्ञातव्यानि ॥ पउमुप्पलिणीकन्देत्यादि ॥ पद्मिनी कन्द उत्पलिनीकन्दः अन्तरकन्दश्च जलजवनस्पतिविशेषः कन्दः झिल्लिका वनस्पतिविशेषरूपा एते सर्वेऽप्यनन्तजीवा नवरं पद्मिन्यादीनां बिसं मृणाल च एकजीवात्मकं बिसमृणालं इतिभाव ॥ पलण्डूत्यादि ॥ पलण्डुकन्दो लसुनकन्दः कन्दुको वनस्पतिविशेषः, कुस्तुम्बको व्यवहारतः एते सर्वेऽपि प रित्तजीवाः प्रत्येकशरीरजीवात्मकाः प्रतिपत्तव्याः, यऽपि चान्ये एवं प्रकारा अनन्तजीवात्मकलक्षणविरहिता तेऽपि तथाविधाः प्रत्येकशरीरजीवा त्मका वक्तव्याः, पउमुप्पलेत्यादिगाथाद्वय ॥ पद्मानां उत्पलानां नलिनानां सुभगानां सौगन्धिकानां अरविन्दानां कोकनदानां शतपत्राणां सह स्रपत्राणां प्रत्येकं यद्वृन्तं प्रसवबन्धनं यानि च बाह्यपत्राणि प्रायो हरितरूपाणि पत्रकर्णिका पत्राधारभूता एतानि त्रीण्यपि एकजीवात्मकानि या

ण्णतजीया एगोजीवोजिसमुणाले ॥ ५ ॥ पलण्डूलहसुणकन्देय कन्दलीयकुत्थुम्बए । एएपरित्तजीवा जेयावन्नेत हाविहा ॥ ६ ॥ पउमुप्पलणलिणाण सुभगसोगन्धियाणय । अरविंदकोकणाणं सतवत्तसहस्सपत्ताण ॥ ७ ॥ विंटबाहिरपत्ता यकणियाचेवएगजीवस्स अब्भितरगापत्ता पत्तेयंकेसरामिजा ॥ ८ ॥ वेणुनलइक्खुवाडिय

तथाप्रकारे प्रत्र कणिका । पदमसउप्पलनलिण सुभगसोमधियाभव अरविंदकोकनाण सयपत्तसहस्सपत्ताणं । पद्म उत्पल नलिन सुभग सौगन्धिक अरविंद कोकन शतपत्र सहस्रपत्र। विंटवा हरपत्ता वर्णियापएगजावस्य अभितरगापत्ता पत्तयकसरामिजा । एषमा इत्त बा ह्यपत्र प्राय रूपसहित कर्णिका ए चिवनाश्रये एकजीवकवे अभ्यन्तर कर्णिकाश्रिते एकजीव दर्शिता मांसिकाप्रभ पांचको केसरामिजी एतानि प्रत्येकका त्मुके। वेणनडाक्षुवाडिय सभमासइक्कडकडे करकणमूठविविरू सवाचसवपत्रमापथ। वणुनग इत्तुवाडिकादि तक वनस्पती एरड स्यादि यकारज्ञा

नि पुनरन्यमराणि पत्राणि यानि च समराणि वा दाडिम फलानि यानि प्रत्येक मफेन जीयाधिष्ठितानि ॥ वकुलसप्ल्यादिगाथाद्वय ॥ येषु वक्षो नकः तृणविशेषः इक्षु वाडिमादया लोकत प्रत्येतव्या वृक्षानि दूबाडीनि यानि च पवगानि पर्वापेमानि एतया यवनि यस्य पव यस यासिसोअप्रति– पयपरिघट्टग वकाकार एतानि मवजीवस्य सम्बधीनि भवन्ति एकजीवात्मकानि भवन्तीति भावः, पत्राणि एतया मेकजीवाधिष्ठानानि पुष्पास्य नमनाथात्मकानि ॥ पुसफलमित्यादि ॥ पुष्पफल यय कालिग तुय त्रपुष ॥ एलवालुगि ॥ चिभटविभपकूप वालुक चिभट तथा घोषातक पटोल त स्तुक ततून च्च य स्फलं एतपु प्रत्यक वृन्त समं ॥ सकटाहेति ॥ समास सगिर तथा कटाह एतानि प्रोक्स कस्य जीवस्य भवन्ति एकजीवात्मका न्यतानि श्रीणि नयमीत्यथ तथा एतया मेव पुष्पफलादीना सन्दुकपयन्तामा पत्राणि पृथक् प्रत्येक मिति प्रत्यकसरीराधिष्ठिता न्येकैकजीवाधिष्टि

समासडरकूयडक्कफेरफ्रे । करकरसुठिविहगु तगागतहपसुगाणच ॥ ९ ॥ पच्छिपत्तपलिमो झत्तयएगस्सहो तिजीअम्स । पत्तेयपत्ताइ पुप्फाइयणगजीयाइ ॥ १० ॥ पुस्सफलकालिग तुयतउसेलुवालुक । घोसालय पफोल तिंदूयचेचतिदूस ॥ ११ ॥ येटमसकफाह एयाइहयतिएगजीयस्स । पत्तेयपत्ताइ सकेसरमकेसरामिजा

र स्ते से मथ्रीव पसवी पव सोविता । रम वय तथा पर्वे वरो सहित । पच्छि पत्त पत्तिमा कज्ञवएगस्स जीतिजीयस्स पत्तेयपत्ताइ पुप्फयमणगजी च मार्यंप्ठाम तिदूयच रतदूम । फूनफल वाइला कालिगा तूबा चिभट घोषातक फलविशेष पटोल तिंदुक टिडसी । चिटमसकडाहं एयाइभव तिजीवस्य पत्तेयपत्ताइ सकेसरमकेसरमिजा । सर्व समास गिर कटाह पत्त मिले एक जीवकृत येषां पत्तेगरा एवं जीवादिष्ठित । सप्फासेमज्झाए न तेहिंयाचकवबंदुवे एयवंतजोवा कंदरे वासभयवाए । सम त सम्मा तवा उवेइहिया कह कदुक ननन्तो यनन्ताजीवात्मक मधुकदुवे भ वमाणे मनन्तोनियप एसज यनन्तकाय । आविभूणबोए जीवावयमसाविपणाका आविजमूलजोवा सावियपत्तेयपकमाए । जिगारे जीवयानि पच

तामीत्यथः तया ऽग्रेसरा स्वकेसरा या मिञ्जायीजानि प्रत्येक मर्कजीवाधिष्ठितानि ॥ सप्फाएत्यादि ॥ एते कुहणादिवनस्पतिविशेषा लोक
तः प्रत्येतव्या एते वा मत्तजीवास्तथा नवरं कन्दुक्के तभना स हि वा पि दशविशपा दनन्तोऽनतजीवो भवति को प्य सङ्क्षेपजीवास्तक इति
चाह-जि बीजजीव चय मूलादिजीवो भवति तदा ऽन्य स्तिम कऽपक्रान्त कल्पयते इतिपरप्रश्नमाशङ्क्याह योएजोणिअूएइत्यादि ॥ बीज योनि
भूते याम्यवस्थां प्राप्त योनिपरिणाम मुज्जइतो ति भावः बीजस्य हि द्विविधा ऽवस्था तद्यथा-योन्यवस्था चयोन्यवस्था च तत्र यदा बीजं यो
न्यवस्थाम जहाति अयथा जित जन्तुना तदा तत् यामिभूत मित्यभिधायत उज्झित च जन्तुना मिथ्यतो ना यगत्तु मुच्यते तते ऽमासिद्धायिना
ससाति सचेतन मचेतनं वा च विध्वस्तयोनि योनिभूत मिति व्यपदिश्यते विध्वस्तयोनि त मिथमा द्यचेतनत्वा दयोनिभूत मिति च्य योनिरिति
किम निपीयत) उच्यत-जन्मोत्पत्तिस्थान मविध्वस्तशक्तिकं तत्रस्यजीवपरिणमनशक्तिसम्पन्न मितितात्वः तस्मिन बीजे योनिभूत जीवो व्युत्क्र
मति उद्यते स एव पूर्वको बीजजीवो ऽन्यो वा आगत्य तत्र त्पद्यत कि मुक्त भवति तदा बीजजीवेन आयुष क्षयात बीजपरित्यागः
कृतो भवति तस्य च बीजस्य पुनः स्वकालाऽवनिसयोगरूपसामग्रीसम्भव स्यादा कदापि स एव प्राक्तनो बीजजीवो मूलादिनामगोत्र निबध्य
तत्रा गत्य परिणमति कदाचि दन्यः पृथिवीकायिकादिजीवः यो पि च मूल जीव इति स एव मूलतया परिणमत जीवः सो पि पत्र प्रथमतये
ति च स यव प्रथमपत्रतया पि च परिणमत इत्येकजीवकर्तृकमूलप्रथमपत्रे इति भाव-मयोय ॥ सव्वोविकिसलइत्यलु उग्गममाणोअणन्तजीवोविर्ठ ॥

---

१२ ॥ सप्फाएसज्जाए छत्तेहलियायकुहणकुड्डक्के । एएअणतजीवा कुड्डक्कोदोइन्नयणगाते ॥ १३ ॥ जोगिअूएबीए जीवोवक्कमइसोवअणोवा । जोविअमूलजीवो सोविअपत्तेपढमयाए ॥ १४ ॥ सव्वोविकिसलइखलु उग्गम

किलकाओ तिर्वा ते पूर्वोक्त साधारण जीव च नि यनेकोचमा चाभोया तयमे मूलसाधारण कुल पद्म एकतीक । सर्वाविकिसलयोऽपि उग्गममाणो
पर्वतपामविधा सावेश्वविपदता सारपरत्तापयताया । सर्व किसलय मिये उगता पनस्पाकाय कथिये तदीय नवतबदे पदे पत्तमुङ्गर पत्रो प्रत्येक

इत्यादि वक्ष्यमाणं कथं न विरुध्यते ? उच्यते इह बीजजीवो ऽन्यो वा बीजमूलत्वेनो त्पद्य संमुच्छूनावस्था कुरोति तत सो ऽप्रथमपत्रं प्राविनी कि
मसयावस्था नियमतो ऽनन्ताकायाः कुर्वन्ति पुन स तपु स्थितिक्षया त्परिणतपु यथा वेव मूलजीवो ऽनन्ताजीवतनु स्वशरीरतया परिणमय्य ताव
द्दत्त याव द्प्रथमपत्रमिति न विरोध यत्तो तु व्याख्यात्ते-प्रथमपत्रमि इ या सौ बीजस्य समुच्छूनावस्था तम एकजीवकत्वके मूलप्रथमपत्र इति
कि मुक्तं भवति-मूलसमुच्छूनावस्य एकजीवकर्तृके एस व नियमप्रदर्शनाय मुक्त मूलसमुच्छूनावस्थे एकजीवपरिणामिते एव शेष तु किशलयादिमा
ऽवश्य मूलजीवपरिणामादि भौविततमिति तत । सव्वो ऽवि किसलयो खलु उग्गममाणो अणतओ भणिओ । इत्यादि वक्ष्यमाणमविरुद्ध मूलसमु
च्छूनावस्थानियतमारम्भकाले किसलयस्याभावा दिति आह-प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिकाना सर्वकालशरीरावस्थामधिकृत्य कि प्रत्येकशरीरत्वमु
त कस्मिश्चदवस्थाविशेषे ऽनन्तजीवत्वमपि सम्भवति तथा साधारणवनस्पतिकायिकानामपि कि सर्वकालमनन्तजीवत्वमुत कदाचित्प्रत्येकशरी
रत्वमपि भवति ततः आह-सव्वोवि किसलओइत्यादि । इह सव्वव्वो परिसमंताभी सर्वोपि वनस्पतिकाय प्रत्येकशरीरः साधारण एव किसल
यावस्थामुपगत सन् अनन्तकाय तीर्थकरगणधरैः भणितः स एव किसलयरूप अनन्तकायिक प्रवृद्धिं गच्छन् अनंतो वा भवति परित्तो वा यथ ?
उच्यते-यदि साधारणं शरीरं निवर्त्यते तत्साधारण एव भवति यथ प्रत्येकशरीरं ततः प्रत्येक इति, कियतः काला दूर्द्धं प्रत्येको भवति ? इति
चे दुच्यते-अन्तर्मुहूर्ता त्तयादि निगोदामा मुत्पत्तो ऽप्यन्तर्मुहूर्तं काल यावत् स्थिति रुक्ता ततो ऽन्तर्मुहूर्ता त्परतो विवक्षमाणः प्रत्येको भवती
ति सम्प्रति साधारणलक्षणमाह-समयमित्यादिगाथाद्वयं । समय युगपदुत्पन्नाना मुत्पन्नाना सतां तथा साधारणजीवाना समकमेककाल शरीर

माणोछुणतहन्नाणिहृ । सोचेयमियहुतो होइपरित्तोछणतोत्रा ॥ १५ ॥ समयवक्कंताण समयतेसिसरीरणि

अमण ते साधारण ते साधारण हुवे साधारणजीव तेमसे समकाल उपजेसके । समयवकताण समयतेसिसरीरनिबत्ती समकपाणुमाण समयकमास
घोमासे । साधवको तेहना शरीरनी निपजेसहुवे समयकाल सासोस्वास ग्रहण करे समकाले उसास नोसास मूका करे । इत्यादिकपाका

निर्वृत्ति र्भवति समकं च प्राणापानग्रहणं प्राणापानयोग्य पुद्गलोपादानं ततः समकं समकालं तदुत्तरकालमपि च उच्छ्वासनिश्वासौ तथा एकस्य यदाहारादिपुद्गलानां ग्रहणं तदेव बहूनां अपि साधारणजीवानां भवसेय किमुक्तं भवति यदाहारादिगं मेको गृह्णाति जीवा अपि तच्छरीरा श्रिता बहवो पि तदेव गृह्णन्ति तथा च यद्बहूना ग्रहणं तत्स्वरूपा एकच्छरीर समावेशात् एकस्यापि ग्रहणं, समस्तमुक्तार्थोपसंहारमाह-साहार णमित्यादि॥ सर्वेषामप्येकशरीराश्रितानां जीवानामुक्तप्रकारेण यत्साधारणं साधारणसूत्रे नपुंसकतानिर्देशः प्राकृतत्वात् आहारयोग्यपुद्गलोपादानं यच्च साधारणं प्राणापानयोग्यपुद्गलोपादानं उपलक्षणं मेतत् यौ साधारणावुच्छ्वासनिश्वासौ या च साधारणशरीरनिर्वृत्ति एतत् साधारणजीवानां लक्षणं सम्प्रतिवर्षे कस्मिन् निगोदशरीरे अनन्ता जीवाः परिणताः प्रतीति पथ मवतरन्ति तथा प्रतिपादय न्नाह-अयगोलोइत्यादि॥ यथा- ऽयोगोलो ध्मातः सन् स सततपनीयमङ्गाग्न सर्वोग्निपरिणतो भवति तथा निगोदजीवान् जानीहि निगोदरूप एकस्मिन् शरीरे तच्छरीरात्म

वृत्ती। समयवृाणग्गहणं समयउस्सासनीसासो॥१६॥ एक्कस्सउजगहणं बहूणगसाहारणाणतचेव। जयङ्ग याणगहणं समासउतपिएगस्स॥१७॥ साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणंच। साहारणजीवाणं सा हारणलक्खणएय॥१८॥ जहग्गयगोलोधतो जाउतक्षतवणिज्जसंकासो। सव्वोग्गिपरिणउ णिउयजीवे

साहारणाणितवेव अबहुणाणमहव समासपातपि गहरस। एकवा पाणाहार प्रतिग्रहण करे समकालमके मनो साधारणना तिमहोज निपजावो व। य ज्यो तेहना घणो पाहारादिकग्रहण ते निगोदियाजीव ते समास एकठो रचिया जिमहुवे सूक्ष्मनसवोगे तेहने अनन्तशरीर एकवासावे जिम र हेहे तिहां बहा पचमालाधतो एगाया संघव करिया। साहारणमाणुपाणगहणंच साहारणजीवाण साहारणलक्खणएय अबपयगासाधता। पाहार पाणवोना साधारणपाहार सवजीवमेंके साधारणके पनुपान सासास तना सवा सवजीव साधारण एकठाछे ए साधारणनो लक्षणप्रमा णिवे दृष्टांत कहेछे-जिम लोहना मासा धम्यावला माय तस तपनीय राता सोनरसरीषा ते सव पग्निकरी परिणतहुवे। पामातप्ततपविण्यसकासा सव्वापग

इत्यादि वक्ष्यमाणं कथं न विरुध्यते ? उच्यते यः बीजजीवो ऽन्यो वा बीजमूलत्वेनो त्पद्य संतुस्पूनावस्था करोति तत स एव ऽदमनन्तर भाविनी कि सलयावस्थां नियमतो ऽनन्ताकायाः कुर्वन्ति पुन न तप् स्थितिक्षया त्परिणतप् यथा येव मूलजीवो ऽनन्तजीवतमु स्वशरीरतया परिणमय्य ताव द्वते याव स्प्रथमपत्रमिति न विरोधः अन्ये तु व्याचक्षते-प्रथमपत्रमि इ या सो बीजस्य समूर्छनावस्था तम एकजीवकायके मूलप्रथमपत्र इति कि मुक्त भवति-मूलसमुच्छूनावस्य एकजीवकमुके मत स नियमप्रदर्शनाय मुक्त मूलसमुच्छूनावस्थे एकजीवपरिणमिते एव शेष तु किसलयादिना ऽन्नय मूलजीवपरिणामावि भवितमिति ततः ॥ सव्वो ऽवि किसलयो खलु उग्गममाणो भवतई भणिओ ॥ इत्यादि वक्ष्यमाणमविरुद्ध मूलसमु च्छूनावस्थानिवृत्तमारम्भकाल किसलयस्थानाया विति आह-प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिकाना सवकालशरीरावस्थामपिहत्य कि प्रत्येकशरीरत्वम् त कस्मिश्चदवस्थाविशेषे ऽनन्तजीवत्वमपि सम्भवति तथा साधारणवनस्पतिकायिकानामपि कि सर्वकालमनन्तजीवत्वमुत कदापि स्प्रत्येकशरी रत्वमपि भवति ततः आह-सव्वोवि किसलइत्यादि ॥ इह सर्वशब्दो परिक्षयवाची सर्वोपि वनस्पतिकाय प्रत्येकशरीरः साधारण एव किसल यावस्थामुपगत सन् अनन्तकाय सोपकर्षपरैः भणितः स एव किसलयरूप अनन्तकायिकः प्रवृद्धि गच्छन् अनन्तो वा भवति परित्तोवा कथं ? उच्यते-यदि साधारणं शरीरं निबध्यते तदसाधारण एव भवति अथ प्रत्येकशरीरं ततः प्रत्येक इति, कियतः काला दूर्ध्व प्रत्यको भवति ? इति न उच्यते-अन्तमुहूर्त तथाहि निगोदाना मुत्पत्तो ऽप्यन्तमुहूर्त काल यावत् स्थिति कृत्वा ततो न्तर्मुहूर्ता त्परतो विवक्षमाणः प्रत्येको भवती ति सम्प्रति साधारणलक्षणमाह-समयमित्यादिगाथाद्वयं ॥ समय युगपदुत्पन्नानाना मुत्पद्यमाना सतां तेषा साधारणजीवाना समकमेककाल शरीर

माणोञ्चणतर्जनणिद्व । सोपेयवियह्रुतो होइपरिसोञ्चणतोया ॥ १५ ॥ समयवक्कंताण समयतेसिसरीरणि

पमेव इवे साधारण ते साधारण हुवे साधारणजीव तेममें समकाम अपनेवक । समयवक्कताण समयतेसिसरीरनिव्वत्ती समयंआणुग्गहणं समयऊसास णीसासे । सायवको तेहमा,सरीरनी निर्वृत्तिहुवे समकाल सासाच्छ्वास ग्रहण करे समकाले ऊसास नीसास मूकवा करे । इक्कस्सजंगहण बहुवि

मानाः प्रत्येकतरुजीवा असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा भवन्ति सम्प्रतिपर्याप्ताऽपर्याप्तभेदेन प्रत्येकसाधारणवनस्पतिजीवानां प्रमाणमाह–पत्तेयाप मानाः प्रत्येकतरुजीवा असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा जय न्तात्यादि ॥ पर्याप्ताः प्रत्येकवनस्पतिजीवाः घनीकृतस्य लोकस्य सम्बन्धिनः प्रतरस्य असङ्ख्येये भाग यावन्त आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणा जय न्ति अपर्याप्तास्तु पुनः प्रत्येकतरुजीवाना असङ्ख्येया लोकाः परिमाण पर्याप्तापर्याप्तानां च साधारणजीवानामनन्तलोकाः किमुक्तं भवति असङ्ख्येयलोका काशप्रमाणा अपर्याप्ताः प्रत्येकतरवो ऽनन्तलोकाकाशप्रमाणाः पर्याप्ता अपर्याप्ता च साधारणजीवा इति ॥ जयावन्तइति ॥ यपि चाम्य ऽमुत्तरूपा साधारणाः प्रत्येकतरूपा च ते पि वनस्पतिकायत्वेन प्रतिपत्तव्याः तेसमासओइत्यादि प्राग्वत् नवरं यत्र को बादरपर्याप्त स्तत्र तन्निश्रया अपर्याप्ताः कदाचि त्सङ्ख्येयाः कदाचित् सङ्ख्येयाः कदाचिद नन्ताः । प्रत्येकतरवः सङ्ख्या असङ्ख्या वा, साधारणा तु नियमा दनन्ता इतिनाय ,

ज्ञागमित्ताहं । लोगाअसंखाअप जाव्यागसाहारणमणंता ॥ २३ ॥ एएहिंसरीरेहिं पच्चक्खतेपरूयियाजीवा सुहुमाआणागिज्झा चक्खुप्फासनतेइति ॥ २४ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, त० पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य, तत्थण जे ते अपज्जत्तगा तेण असंपत्ता, तत्थण जेते पज्जत्तगा तेसिण वन्ना

णारणमनन्ता । पर्याप्त अपर्याप्त साधारणजीव सर्वे एकैके लोकाकाशप्रदेशे प्रत्येकजीव एकैक स्थापिये तथापि ये प्रतरना असङ्ख्यातभागनो मानासे एम बापतावता असङ्ख्यात लोकाकाशप्रदेशे थाय असङ्ख्यातालोकाकाश एवं पर्याप्त प्रत्येकजीव अनन्तलोकासे नायतकाव प्रतरने असङ्ख्यातमेभाग जेतला थाकाश प्रदेशमान अपर्याप्ता प्रत्येक तद अनन्तालोक प्रदेशप्रमाण पर्याप्तापर्याप्ता साधारणजीवेति, लोकालोक असङ्ख्याता अपर्याप्तमाहे साधा रणे अनन्तजीव । एरहिंसरीरेहिं पच्चक्ख पर्कविया जीवा सुहुमापच्चायतिज्झा चक्षुफासनतेइति । एक्के अनन्तशरीरे करी एतला प्रत्येकजीव प्रत्या ते सम्म एतला अनागिज्झा थया ते गृह्य नथाय तेणे ग्रासेनहो । जयावन्नतहप्पगारा ते समासओ दुविहा प त । ज एतला अनेरा तथाप्रकारे ते संक्षेपको द्विप्रकार कह्या ते कहेछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । तत्थजते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता । तिहां ज अपर्या

कतेया अनन्तानाम् जीवानाम् शरीराणि एव भवन्ति ॥ एगस्सत्यादि ॥ एकस्य द्वयो त्रयाणां यावत् संख्येयानां वा असंख्येयानां वा निगोदजीवानां शरीराणि द्रष्टुं न शक्यानि कुत इति च दृश्यते-अनन्तानां मध्ये कादिजीवपुद्गलानि अनन्तवनस्पतिशरीराणि सन्ति अनन्तजीवपिण्डात्मकत्वात् तथा एव तत्त्वानि पलव्यानीत्यत आह-दीसतीत्यादि ॥ दृश्यन्ते शरीराणि निगोदजीवानां बादरनिगोदजीवानां अनन्तानां ननु सूक्ष्मनिगोदजीवानां तथा शरीराणि ममनन्तजीवसमुदायात्मकत्वे ऽप्य मपसज्यस्वनायत्वात् तथा सूक्ष्मपरिणामपारवतत्वात् अथ कथम् तदवसीयते निगोदसूक्ष्मशरीरं नियमात् दनन्तजीवपरिणामाविनाभावि प्रथतीति उच्यते ? जिनवचनात् तथाहि ॥ गोयलाअसंखा होतिनिगोया असंखयागोले । एकेको य निगोदे अणंतजीवा मुणेयव्वो ॥ १ ॥ सम्प्रत्ये तथा अथ निगोदजीवानां प्रमाणमभिधित्सुः राह-लोगागासेत्यादि ॥ एकैकस्मिन् लोकाकाशप्रदेशे एकैकं निगोदजीवं स्थापय एवं एकैकस्मिन् आकाशप्रदेशे एकैकजीवरचनया मीयमाना अनन्तलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा निगोदजीवा भवन्ति सम्प्रति प्रत्येकवनस्पतिजीवप्रमाणमाह-लोगागासपएसइत्यादि ॥ एकैकस्मिन् लोकाकाशप्रदेशे एकैकं प्रत्येकवनस्पतिजीवं स्थापय एवं सूक्ष्मप्रकारेण जीव

तहाजाण ॥ १९ ॥ एगस्सदोण्हतिण्हव संखेज्जाणवपासिउसक्का । दीसतिसरीराइ णिउयजीवाणणंताण २० लोगागासपएसे णिउयजीवठवेहिएक्केक्कं । एवमविज्जमाणा हवंतिलोयाअणंताउ ॥ २१ ॥ लोगागासपदेसे परित्तजीवठवित्तुएक्केक्कं । एवमविज्जमाणा हवंतिलोगाअसंखेज्जा ॥ २२ ॥ पत्तेयापज्जत्ता पयरस्सअसंख

विपरिवत्ता निगोदजीवानस्यादि । तरतम भेदेनरो आभिपूर्वे तिर्यं दर्शते ऐसिया निगोदजीव जानना । एगस्सदोण्हतिण्हव संखिज्जावदिपासिया नहि दीसतिसरीराइ निगोदजीवानणंताण । एक बे त्रिण असंख्याता जीवना शरीरना संयोगथी बादरनिगोदना पिण्डथी दीसता, पण्णो निगोदना जीव सूक्ष्म अनन्तप्रमाण कहिये—लोगागासपएसे निगोदजीवठवेहिएक्केक्कं एवमविज्जमाणा हवंतिलोयाअणंता । एकेके लोकाकाशप्रदेशे एकेक निगोदनाजीव स्थापिये इम स्थापताथका हुवे अनंतलोकाकाशप्रदेश सरीखा । पत्तेयापज्जत्ता पयरस्सअसंखभागमित्ताओ लोगासंखपज्जत्ता

त्ता एकेन्द्रियाः सम्प्रति द्वीन्द्रियप्रतिपादनाय भाष्य-सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते द्वीन्द्रिया ? सूरिराह-द्वीन्द्रिया अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा पु
लाकिमियाइत्यादि ॥ पुलाकिमयानाम पायुप्रदेशोत्पन्नाः कृमयः कुक्षिप्रदेशोत्पन्नाः शङ्खाः समुद्रोद्भवाः प्रतीताः शङ्खनका ते एव लघवः घुल्ला
घुल्लिकाः खुल्ला लघवः शङ्खाः सामुद्रशङ्खाकाराः वराटाः कपर्दकाः ॥ सिप्पिसपुटति ॥ सम्पुटरूपा शुक्तयः चन्दनका अक्षाः शेषा स्तु यथासम्प्रदायं
वाच्याः ॥ जयावन्नतहप्पगाराइति ॥ ये चान्ये तथा प्रकारा एव प्रकारा मृतकलेवरसम्भूतकृम्यादयः ते सर्वे द्वीन्द्रिया ज्ञातव्याः तेसम्मूर्च्छि

तयछल्लिपवालेसुय पत्तपुप्फफलेसुय । मूलग्गमज्झबीएसु जोणीकस्सइकेत्तिया ॥ ३ ॥ सेत्त साहारणसरीर
बादरवणस्सइकाइया । सेत्तबादरवणस्सइकाइया ॥ सेत्त एगिंदिया ॥ से किंत बेइंदिया ? बेइंदिया अणेग
विहा पण्णत्ता, तंजहा-पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गण्डूयलगा गोलोमा णेउरा सोमगलगा वंसीमुहा सू
इमुहा गोजलोया जलोया जालाउया संखा संखणगा घुल्ला खुल्ला खधा वराडा सोत्तिया मोत्तिया कलुया
वासा एगओवत्ता दुहओवत्ता णंदियावत्ता संबुक्का माइवाहा सिप्पि संपुडा चंदणा समुद्दलिक्खा, जेयावन्ने

त्वचा पत्र पंचम फूल षष्ठ फल सप्तमे वीज अष्टमे अङ्कुरा ए १८ । तयछल्लिपवालेसु पत्तपुप्फफलेसुय मूलग्गमज्झबीएसु जोणिकस्सइकित्तिया । त्वचा
छाल वाङ्कुरोप्रवाल पान फूल फल मूलाग्र कांदनामध्य बीज योनिकहणी कह्या । सेत्तं साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया । ते एहवो साधारणवनस्प
ती पर बादरवनस्पति विचार्यो । सत्त बादरवण सत्त वण सेत्त एगिंदिया । सेकिंतं बेइंदिया २ अणेगविहा प त । ते एतले दाय वनस्पतीनाभेद
साधारण बादरनाभेद अधिकार कह्यो पांचा एकेंद्रियजाति जीवव्यादि कह्या, हिवे जिम बेइन्द्रियना विवरा पूछे ते बेइन्द्रियना अनेकभेद छे ते कहे छे
गुरु । पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गडूयलगा गोलोमा णेउरोसा सोमगलगा वंसीमहा । पुलाकिमिका कुक्षिकृमिका गडूयल गोलोमा निउरास सोमगल वंशी
मुख । सूईमहा गोजलोया जलोया जालाउया संखा संखणगा । सूचीमुख गोजलोक जलोक जालाउय संख संखणक । घुल्ला खुल्ला खधा वराडा सोत्ति

पप्फिगिमित्यादि ॥ एतया साधारणप्रत्येकतरूपाणां वनस्पतिविशेषाणां सप्तगाथानामिमा विशेषप्रतिपादिकवक्ष्यमाणा गाथा अनुगन्तव्याः प्र तिपत्तव्या सा यथा–तंजहा–कंदायत्यादि ॥ गाथार्थः कन्दाः सूरणकन्दादयः कन्दमूलानि वृक्षमूलानि वनस्पतिविशेष गुच्छा गुल्मा वल्लय प्रतीता वत्थुला वत्था रत्था न्यजुमादीनि पद्मोत्पलशृङ्गाटकानि प्रतीतानि हठो जलजवनस्पतिविशेषः सेवाल प्रसिद्ध कण्हक पनक अवनक पञ्चत्राणि वत्थुलाः साधारणवनस्पतिविशेषाः एतया सकोमविंशतिसङ्ख्यानां त्वगादिषु मध्ये कस्यापि कापि योनिः' किमुक्तं भवति–कस्यापि त्वक् योनिः कस्यापि यष्टी याव त्वक्स्यापि मूलं कस्या प्यग्र कस्यापि मध्य कस्यापि बीज मिति सेत्तमित्यादिनिगमनचतुष्टय सुगम ॥ तदेव सु

देसेण गधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसो विहाणाइ सखेज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्ज त्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ सिय सखिज्जा सिय असखिज्जा सिय अणता एएसिण इमाओ गाहाओ अणुगतव्वाओ तजहा–कदायकदमूलाय रुक्खमूलाइयावरे। गुच्छायगुम्मवल्लीय वेलुयाणितणा णिय ॥ १ ॥ पउमुप्पलसिंघाडे हढेयसेवालकिण्हएपणए। अवएयकच्छभाणी कदुक्कीकूणवीसइमे ॥ २ ॥

पता च मतां पाम्या वर्णादिक। तत्रवं सत पञ्चतमा तवर्णादेसेवं गधादेसेवं रसादेसेव फासादेसेव सहस्सग्गसोविहाणाइ संखिज्जाइ। तिरो के प आपता वर्णादय गन्धादय रसादय स्पर्शादये ग्रतसवस प्रमस एतस नाम। बादयप्पमहसयसहस्साइ पज्जत्तगोसाए अपज्जत्तगावक्कमति। प्रत्येक प मरतां दमवाणघानि साधारण १३ वास पर्याप्तानिवार्ये अपर्ये अपर्याप्त। अयएगा तत्थ सियसखिज्जा सियअसखिज्जा सिय अणता ए०सिय माया माशाया वक्तव्याया। जिहो एकजीव तिहो कवे सख्याता विचारे असंख्याता विचारे अनन्ता कवे शिवे साधारण वनस्पती योजवाकाजी वदवे तविम तत्रिम। कन्दायकदमूलाय रुक्खमूलाइयावरे गुच्छायगुम्मवल्लीय वेलयाणितणाणिय। कथ सूरणकद कदमूल वृक्षमूल एदचा योक गु च्छा गुल्म वल्लो वत्थुला वधा। पउमुप्पलसंघाडे हढेयसावलकिण्हएपणए अवएयकच्छभाणी कंदुक्कीकूणवीसइमे। तत्र पद्म उत्पल सघाडा हढ सेवाल क

द्यते द्वीन्द्रियाणां सप्तजातिकुलकोटीना प्रसत्सहस्राणा मुपसहार माह-सेत्तमित्यादि॥से पा द्वीन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना सम्प्रति त्रीन्द्रि
यससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाय माह-सकिंतमित्यादि ॥ अथ का सा त्रीन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? भगवानाह-त्रीन्द्रियससारसमापन्नजी
वप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता। तामेव तद्यथेत्यादिना पदर्शयति-एते च औपपातिकप्रभृतयः त्रीन्द्रिया दृष्टाविप्रसतो लोकत या गन्तव्याः। नवर॥
माष्णीकासियासिया अयावगलेतव्यगारा॥ये पि चा न्ये तथा प्रकारा स्ते सर्वे त्रीन्द्रिया ज्ञातव्या इति शेषः ॥ तेसङ्केसमुच्छिमनपुसकाइत्यादि ॥

सेत्त बेइंदियससारसमावण्णजीवपण्णवणा ॥ से किं त तेइंदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तजहा—उवाइया रोहिणिया कुथू पिपीलिया उद्दसगा उद्देहिया उक्कलिया उप्पाया उप्पडा तणहारा कट्ठहारा पत्तहारा मालुया तणविंटिया पत्तविंटिया पुप्फवेंटिया फलविंटिया बीयविंटिया तेपुरुणमिंजिया तउसिमिंजिया कप्पासट्ठिमिंजिया हिल्लिया झिल्लिया झिंगिरा किंगिरिडा बाहुया लहुया सुभगा सोवत्थिया सुयवेंटा इंदकाइया इंदगोवया तुरतुंबगा कोत्थलवाहगा जूया हालाहला पिसुया सत

कुलकोटि पूर्वं तिम आविये ते एतले। सेत बेइ दियससारसमापन्नजीव पन्नवणा। तेइन्द्रिय ससार समापन्नजीव प्रज्ञापना। सेकिं तेइ द्रियससारसमापन्नजीव पन्नवणा २ अनेकविधा प त । त्रिय तेन्द्रियमाश्रु पूर्वे सुच गुरुश्रे तेइन्द्रिय ससार समापन्नजीव प्रज्ञापना ते अनेकप्रकारे कह्या तेकहेछे। उवाइया रोहिणीया कुथु पिपिलिकाथा उद्दसगा उद्देहिया उक्कलिया उप्पया आयका। उत्पातिया रोहिणीया कुथवा पिपीलिया उद्दसा उद्देही उत्कलिता उत्पता उपडाना। तणहारा कट्ठहारा मूलाहारा पत्ताहारा। तृणाहार काष्ठाहार मूलाहार पत्राहार। तणवेंटिया पत्तवेंटिया पुप्फवेंटिया फलवेंटिया बीयवेंटिया ते सुरनमिंजिया। तणबेटो पुषबेटो पुप्फबेटो फलबेटो बीजबेटो बीजबटो सूरणमिंजिया। तपोसिमिंजिया कप्पासट्ठिमिंजिया। तेपाउमजिता कर्पास थकिमिंजी। हलिया भलिया झिगरिया किंगरिया। हलिका झलिका झिंगरिया किंगरिया। बहुया लहुया

मा: सम्मूर्च्छिमस्या देवत्व नपुंसका सम्मूर्च्छिमानाम ऽवश्य नपुंसकत्वात् नारकसम्मूर्च्छिमा नपुंसका इतिवचनात् ॥ तेसमासओ इत्यादि ॥ ते द्वीन्द्रिया: समासत: संक्षेपत द्विविधा: प्रज्ञप्ता तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तका यथष्ठी योनिकुलभेदेन स्वगतानेकभेदसूचकौ एतयो द्वीन्द्रियाणा मवमादीनां पुलकम्यादीनां द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तादीना सर्वसंख्या सप्तजातिकुलकोटीना योनिप्रमुखानि योनिप्रवाहाणि योनिशतसहस्राणि नवानि सप्तजातिकुलकोटिलक्षा भवन्तीतिभाव: इत्याख्यातं तीर्थकृद्भिर्गणधरैः साक्षात्कृतं इयमत्र भावना इह-जातिकुलयोनीना परिमाणार्थं मिदं परिस्फुटं गुरुतरम् पूर्वाचार्य उपदर्शितं तद्यथा-जातिरिति किल तिर्यग् गति: तस्याः कुलानि कृमिकीटवृश्चिकादीनि इमानि च कुला नि योनिप्रमुखानि तथा एक कस्या मव योनी अनेकानि कुलानि भवन्ति यथा छगणयोनौ कृमिकुलं कीटकुलं वृश्चिककुल मित्यादि अथवा जाति कुल मित्य र्थं एव जातिकुलयोन्यो श्च परस्पर विशेषः एकस्या मपि योनौ अनेकजातिकुलसम्भवात् यथा एकस्या मव योनी कृमिजातिकुलं कीट जातिकुलं वृश्चिकजातिकुल मित्यादि मव च एकस्यामव योनावावान्तरजातिभेदभावाद् ऽनेकानि योनिप्रवाहाणि जातिकुलानि सम्भवन्तीत्युपप

तहप्पगारा सव्वे ते समुच्छिमा नपुंसगा ते समासओ दुविहा प०, त०—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य एएसिण एयमादियाण बेइंदियाण पज्जत्ता पज्जत्ताण सत्तजाइकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मक्खायं॥

या भणिया अनुगाशाभा। पुत्रा पत्रा पथा बदर मातिक मौक्तिक अनुपापासा। एगावत्ता दुइआवत्ता नंदियावत्ता। एगोपयुत्ता विधोपयुत्ता अन्याइया। मयूरा मारवाडा सिप्पिसपडा पद्मा ममंदलिका। अंदबा मारवाडा सोप पदगा चमत्कोप। जेयावन्नेतहप्पगारा सव्वे ते समच्छिमा नपुंसगा ते समासओ दुविहा पं त। अ पनेरा तथाप्रकारमा सब त समूर्च्छिम नपुंसकास्तौ ते संक्षेपतो द्विप्रकारे कथ्या तेतद्वेके—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता अपर्याप्ता। एएसिण एयमादियाण बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताण सत्तजाइकुलकाडी। इत्यादि इतरे प्रादिद्वे बेइन्द्रियजीव पर्याप्ता अपर्याप्ता सातलाख कुलकोडी। योनिप्रमुखशतसहस्राणि भवतीति मक्खायं। तेतामांसानि एकती उत्पत्तिस्थानक बने जिम छाणोना अनेक

मित्यादि ॥ उक्ताश्चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सम्प्रति पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनामाह-से किं तमित्यादि ॥ अथ का सा पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह-पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा-नैरयिकेत्यादि ॥ अयमिष्टफलं कर्म निर्गतमयं यस्मात् स निरयः नरकावासः तेषु जाता नैरयिकाः ते च ते पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवा च नैरयिकाः पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवा

कुरु कुक्कुड, नंदावत्ते य सिंगिरिडे। किण्हपत्ता नीलपत्ता लोहियपत्ता हालिद्दपत्ता सुक्किल्लपत्ता चित्तपक्खा विचित्तपक्खा ओहंजलिया जलचारिया गंभीरा णीणिया तंतवा अच्छिरोडा अच्छिवेहा सारंगा नेउरा दोला भमरा भरिली जरुला तोट्टा विंछुया पत्तविंछुया छाणविंछुया जलविंछुया पियंगाला कणगा गोमयकीडा जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते संमुच्छिमा नपुंसगा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। एएसि णं एवमाइयाणं चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं नवजाइकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसह

चतुरिन्द्रियगण ... नन्दावर्तश्च सिंगिरिडे। पक्षिणः ... पतङ्ग ... तिगरका। कृष्णपत्रा नीलपत्रा लोहितपत्रा हारिद्रपत्रा शुक्लपत्रा चित्रपक्षा विचित्रपक्षा। कृष्णपांखा नीलपांखा रातापांखा पीलीपांखा धवलापांखा चित्रपांखा विचित्रपांखा। ओहंजलिया जलचारिया गंभीरा णीणिया तंतवा ... सारंगा नेउरा दोला भमरा भमरी भमरिलो। ... गंभीरनिवत तंतव अच्छिवेध सारंग नेउर दोला भमरा भमरी भमरिलो। ... विंछुया पत्रवृश्चिका छाणवृश्चिका जलवृश्चिका प्रियंग ... गोमयकीडा। ... विंछुवा पत्रविंछुवा छाणविंछुवा जलविंछुवा ... गोबरनाकीडा। जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते स ... सम्मूर्च्छिमा नपुंसका। ... ते समासतो द्विविधा प्र ... । ते संक्षेपथी बे भेदे करता कहेला छे। पर्याप्तका अपर्याप्तका एतेषां एवमादीनां। पर्याप्ता अपर्याप्ता ए आदिदइ। चतुरिन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां नवजातिकुलकोटि योनिप्रमुखशतसह

पूर्ववत् ॥ एतेसिणमित्यादि ॥ एतेषां त्रीन्द्रियाणां मेवमादिकानामौपयिकप्रभृतीनां पर्याप्तापर्याप्तानां सर्वसङ्ख्या अष्टौ जातिकुलकोटीनां योनि प्रमुखानि योनिप्रवाहाणि शतसहस्राणि भवन्ति अष्टौ कुलकोटिसता भवन्तीति भावः इत्याख्यातं तीर्थकृद्भिः उपसंहारमाह-सेत्तमित्यादि ॥ तदेत मुक्ता त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ॥ सम्प्रतिचतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना माह-साकतमित्यादि ॥ एत पि चतुरिन्द्रिया लोकतः प्रत्येतव्याः एतेषां च पर्याप्तापर्याप्तानां सर्वसङ्ख्या जातिकुलकोटीनां नवसता भवति शेषाक्षरगमनिका प्राग्वत् उपसंहारमाह-सेत

याठया गोम्ही हत्यिसौंडा जेयावन्ने त० सव्वे ते समूच्छिमनपुंसगा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । एएसिणं एवमाइयाणं तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं अट्ठजाइकुलकोडिजोणि प्पमुहसयसहस्सा हवतीति मक्खायं । सेत्तं तेइंदियसंसा० । से किंतं चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपण्णव णा? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—अंधिय पोत्तिय मच्छिय, मसगा कीडे तहा पयंगे य । ढंकण कु

मभमा मावस्थिया मुखदंशा रथकाया रथगावथा । माञ्चवा सवृत्ता समग सोवस्तिक सुपविट रम्भकेतिका रम्भगापा । तुवतुवगा कुसत्थलाञ्चगा कृष्णा वामावत्तौ विपुत्रा मयवाचका मामी हस्तिसाया । तुवर्तवग कुलवाञ्चम कृष्णा वावाहक पिप्पल सतवाचक कामशिवाट हस्तिसौंड । जेसावन्येतथप्र कारा भावे ते चर्मक्षिता मपुस्सगा । जे पमेरा तथाप्रकारे सर्वे ते सम्मूर्च्छिम नपुंसक ज्ञातिका । ते समासतो द्विविधा प० त । ते सर्वेपदको दीमवा र बद्धा ते कठेके—पज्जत्तगाय पपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । एएसिणं एवमाइयाणं तेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण । इत्यां ने इचेंपादि तेन्द्रियकुल कोटि पर्याप्ता अपर्याप्ता । अष्टजातिकुलकोटि जातिप्रमुखशतसहस्रा भवतितिमक्खायं । पाठवाय कुलकोटि हुवे बेताच यानि उत्पत्तिस्थान हुवे । से तेइंदिय संसारसमापन्नजीव पण्णवणा । एतले तेन्द्रियसंसार संप्राप्तजीव प्रज्ञापना कही । सेकिं तं चउरिंदिय संसारसमापन्नजीव पण्णवणा २ अणेगवि हा प तं० । ते चउरिन्द्रिय भेदपूछे शिष्य, गुरु कहे चउरिन्द्रिय संप्राप्तजीव प्रज्ञापना अनेकप्रकारे कह्या तेकहेछे—अंधियपुत्तियमच्छिय मसगा कौ

नेरयिकप्रतिपादनार्थं प्रश्नसूत्रमाह-सेकिंतमित्यादि ॥ सप्तविधत्वं नैरयिकाणां पृथिवीभेदेना ऽन्यथा प्रस्तुतभेदत्वमपि घटते तत पृथि वीभेदत एव सप्तविधत्व तद्यथ त्यादि नापञ्चमति-रत्नानि कर्केतनादीनि प्रभाश्च सर्वथा ऽपि स्वभावशाली रत्नानि प्रभा स्वरूप यस्या सा रत्नप्रभा रत्नमयी तिप्रायाथ सा चा ऽसौ पृथिवी च तस्य नैरयिका रत्नप्रभापृथिवीनैरयिका, एव सक्करप्पभा पुढविनेरइयाइत्यादि ॥ तावमी यमुपसंहारमाह। सत्त नेरइया ॥ अधुना क्रमसमायातमुसरगत स्तिर्यक्पञ्चेन्द्रियान् प्रति पादयिषु राह॥ सेकिंतमित्यादि॥ अथकेत पञ्चेन्द्रियतिर्यग् योनिकाः ? सूरिराह-पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका त्रिविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा॥ जलयर त्यादि॥ जलचरति पर्यटंतीति जलचरा आधारादिति प्रत्यये। तथ तपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका य जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका। स्थलचरन्तीति स्थलचराः ख आकाशे चरन्ती ति खचराः प्राकृतत्वादा पत्या

रयणप्पभा पुढविनेरइया सक्करप्पभापुढविनेरइया वालुयप्पभापुढविणेरइया धूमप्पभापुढविणेरइया तम प्पभापुढविणेरइया तमतमप्पभापुढविणेरइया । ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगा अपज्जत्त गा य । सेत्तं णेरइया । से किंत पंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—जलयरपंचिंदि यतिरिक्खजोणिया थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया । से किंत जलयरप

रत्नप्रभापृथिवी नारकी १ शर्करप्रभापृथिवी २ वालुप्रभ ३ पंकप्रभा ४ धूमप्रभा ५ तमप्रभा ६ तमतमप्रभा ७। ते समासथा दुविहा प त । ति संक्षेपथ की दायप्रकार कहा तिकहेछे। पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता अपर्याप्ता। सेत्त नेरइया सेकिंत पंचेंद्रिय तिरिक्खजोणिया २ तिविहा प त०। पतले पातेप्रकारे नारकीकह्या हिव तिर्यंच पूछे पंचेंद्रिय तिर्यग्योनिया तेहना तीनभेद कह्या तिकहेछे ते हिव। जलचर पंचेंद्रिय तिरिक्खजोणिया २ थलचर पं खचर प । जलचर पंचेंद्रिय तिर्यग्योनिया पंचेंद्रिय तिर्यंच जलचर थलचर पंचें द्रिय तिर्यंच ए पूछे शिष्य जलचरभेद गुरुकहे। सेकिंत जलचरपंचेंद्रिय तिर्यंचरा पंचप्रकार कह्या ते कहछे। मच्छा कच्छा गाहा मगरा सुंसमारा। मच्छ कच्छ गाह मगर सुसमार ५। सेकिंत मच्छा

स्येषा प्रज्ञापना तथाच-पञ्चगतौ तिरोऽञ्च तीति तिर्यञ्चः तिरश्च तिर्यग्विश तेषां योनिरुत्पत्तिस्थान तिर्यग्योनि सत्र जातास्तिर्यग्योनिकाः तत्र पञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवा ए तथा प्रज्ञापना तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना तथा मनुष्यशब्दो मनुजयाची यथा राजन्यो राजन्यामिधायिकं मनोर ऽपत्यानि मनुष्याः मनायोर्कोपदेति यः प्रत्ययः पकारश्चा ऽगमः तत्र च यः प्रत्ययो जाता चिति मनुष्यशब्दो जाति वाची राजन्यशब्दवत् ते च से पञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवा ए तयो प्रज्ञापना मनुष्यपञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना तथा दीव्यन्ति स्वच्छ या क्रीडन्ति इतिदेवाः प्रवनपत्यादयः ते च स पञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवा च तेषा प्रज्ञापना देवपञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, तत्र

स्माइ भवतीति सकाय तह चउरिंदियससारसमावण्णजीवपण्णवणा । से किंत पचिंदियससारसमावण्ण जीवपण्णवणा ? पचिंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा चउव्विहा पण्णत्ता, तजहा—नेरइयपचिंदियससारस मावण्णजीवपण्णवणा तिरिक्खजोणियपचिंदियससारसमावण्णजीवपण्णवणा मणुस्सपचिंदियससारसमावण्ण जीवपण्णवणा देवपचिंदियससारसमावण्णजीवपण्णवणा । से किंत नेरइया२ ? सत्तविहा पण्णत्ता, तजहा

स्मात् भवतीति सकाय । चौरिन्द्रियजीव पर्याप्ता अपर्याप्ता मवसावबलकादि ज्ञानिगमका ततवक्त वे पश्चा तार्थकरे कह्या । सेत चउरिंदिय संसारसमापन्नजीव पन्नवणा । एतले चउरिंद्रिय ससारी समापन्नजीव प्रज्ञापना जिम पचेन्द्रिय पूछवे तव गुरुवाण्या । सेकित पचेन्द्रिय ससारसमापन्नजीव पन्नवणा २ चउव्विहा पं त । पंचेन्द्रियससार समापन्नजीव प्रज्ञापना चारप्रकारे कह्या ते कहवे—नेरइय पंचेन्द्रिय ससारसमापन्नजीवपन्न वा । नारकीपंचेन्द्रिय ससारसमापन्नजीव प्रज्ञापनाना । तिरिक्ख पचेन्द्रियससारसमावन्नजीव मणुस्सपचेंद्रिय स देवपचेंद्रिय स । तिर्यंच पचेंद्रिय संसारसमापन्नजीव प्रज्ञापना २ मनुष्य पचेंद्रिय ससार समापन्नजीव ३ देव पचेंद्रिय स ४ । सेकित नेरइया २ सत्तविहा पं त । किसे नारकी प्र पूछवे नारकी सातप्रकारे कह्या तेकहवे—रयणप्पभपुढविनेरइया सक्करप्पभए वालुयप्पभ पंकप्पभए धूमप्पभए तमप्पभए तम २ प्पभए ।

जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका समासतः संक्षेपेण द्विविधाः प्रज्ञप्ताः—सम्मूर्च्छिमा च गर्भव्युत्क्रान्तिका च मूर्च्छा मोहसमुच्छ्राययोः यस्मात् स्वयमेव सम्मूर्च्छन समूर्च्छा अकर्तरीति भावे घञ् प्रत्ययः गर्भोपपातव्यतिरेकेण एवमेव प्राणिना मुत्पादः इतिभावः तेन निर्वृत्ता सम्मूर्च्छिमा तात्रेवा दिम इति इमप्रत्ययः गर्भे व्युत्क्रान्ति रुत्पत्ति र्येषां व्युत्क्रान्तिशब्दो अत्रो त्पत्तिवाची यथा पूर्वाचार्यप्रसिद्धे च दि वा गर्भा द्गर्भावासात् व्युत्क्रान्ति र्निःक्रमणं येषां ते गर्भव्युत्क्रान्तिकाः, शेषाद्वि ति कप् समासान्तः पञ्चम्यौ प्रत्यय स्वगतानेकभेदसूचकौ तत्र ये ते सम्मूर्च्छिमा स्ते सर्वे नपुंसकाः सम्मूर्च्छिमजातस्य नपुंसकत्वा अविना भावित्वात् ये तु गर्भव्युत्क्रान्तिका स्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—स्त्रिय पुरुषा नपुंसकाः एतेषां चा प्रयपा मपि शरीरावगाहनादिषु च चिन्तन च च गर्भव्युत्क्रान्तिकानां स्त्रीपुंनपुंसकानां परस्पर मल्पबहुत्वचिन्तनं त जीवाजिगमटीकायां कृत

से किंत गाहा २ ? पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा देलीवेढगा मुद्धुया पुलगा सीमागारा। सेत्त गाहा॥ से किंत मगरा २ ? दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सोंडमगरा मच्छमगराय। सेत्त मगरा। से किंत सुंसुमारा २ एगागारा प०, सेत्त सुंसुमारा। जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सम्मुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य तत्थणं जे ते सम्मुच्छिमा ते सव्वे नपुंसका, तत्थणं जे ते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा प०,

अथ ग्राहभेद कथ्यते। ग्राहाः कितने प्रकार के हैं? ग्राह पाँच प्रकार के कहे हैं। जैसे कि—देलीवेढगा मद्‌गुया पुलगा सीमागारा। ... ... सीमागारा। सेत्त गाहा। से किंत मगरा २ दुविहा प ... ... मगर शब्द ... शोंडमगरा मत्स्यमगरा। सेत्त मगरा। से किंत सुंसुमारा २ एगागारा प ... एतले मगर कह्या, हवे सुंसुमारना एकभेद कहे छे। सुंसुमारा सेत्तसुंसुमारा। सुंसुमारा एटले सुंसुमार कह्या। जेयावन्नेतहप्पगारा ते समासओ दुविहा प तंजहा। जे बीजा तथाप्रकारे ते संक्षेपथी दोयप्रकारे ते। सम्मुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय। सम्मूर्छिम गर्भ ... ... तत्थणं जे ते सम्मुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा। तिहां जे ते सम्मूर्छिम ते सर्वे नपुंसक। तत्थणं जेते गब्भवक्कंतियाय ते तिविहा प० त।

ग राहवरा इति मूले पाठ तत्त सन यत्रापि पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकगादेम सद विशापणसमास ' सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते जलचरपञ्चेन्द्रि यतिर्यग्योनिकाः ? सूरि राह-जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथापञ्चविधत्व तद्यथेत्यादिना पदर्शयति मत्स्या कच्छपा मूप पकारस्य प्रकारः प्राकृतत्वात् ग्राहाः ३ मकरा ' शिशुमारा ५ प्राकृतत्वात्सूत्रसुसुमारा इतिपाठः मत्स्यादीना च विशापा लोकता व वितव्या मयरम ऽस्थिकच्छपा मांसकच्छपा इति, यऽस्थिबहुलाः कच्छपा स्त ऽस्थिकच्छपाः, यर्मांसबहुला स्त मांसकच्छपा ॥ स समासद्य इत्यादि ॥ स

चिदियतिरिक्खजोणिया २ १ पचविहा पन्नत्ता, तजहा मच्छा कच्छहा गाहा मगरा सुसुमारा । सेकिं त मच्छा २ ? ग्रणगविहा पणत्ता, तजहा सराहमच्छा खवल्लमच्छा जुगमच्छा विज्झिडियमच्छा हलिमच्छा मग्गरिमच्छा रोहियमच्छा हलीसागरा गागरा वडा वडगरा तिमा तिमिगिला णक्का तदुलमच्छा कणिक्का मच्छा सालिसत्थियामच्छा लभगमच्छा पडागा पडागाइपडागा । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्त मच्छा । से कित कच्छभा २ दुविहा पणत्ता, तजहा अट्ठिकच्छभा य मसकच्छभा य । सेत्तं कच्छभा ।

पञ्चविधा प त । किमे मत्स्या अनेकभेद बोध्ये तेमच्छ अनेकभेदे कथा तेकत्थे । सवहमत्स्या खवल्लमत्स्या जुगमत्स्या विज्झिडियमत्स्या हालिद मत्स्या मगरमत्स्या रोहितमत्स्या । मच्छमत्स्य खवल्लमत्स्य जुगमत्स्य विझडमत्स्य हालिद्रमत्स्य मगरमत्स्य रोहितमत्स्य । हली सागरा गागरा वडा व डगरा ग्भगा यममारा तिमितिमिगला । हलीमत्स्य सागरमत्स्य गागरमत्स्य वडामत्स्य वडगरा गभजारि असगारा तिमितिमिंगला १५ । नक्का तदुल मत्स्या कणिका माधि मरिहरा लभणमत्स्या पयम पडागार । नक्र तन्दुलमत्स्य कणकमत्स्य सालि सथिक लभन पतक पताकागामे २१ । सेयावन्नेत हप्पगारा सेत्तमत्स्या । पदथा जे अनेराकाल तथाप्रकारे त कथा । सकित कच्छा दुविधा पं त । किमे त कच्छपा रायभेद कथा ते कहके । अट्ठिक च्छपा मासकच्छपा । अस्थिकच्छप हाडउपराम मांसकच्छपना मांसघनी । सेत्त कच्छपा सकित गाहा पंचविधा प तं । त कच्छप कह्या, किमे ग्राह

जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः समासत संक्षेपेण द्विविधा प्रज्ञप्ताः—सम्मूर्छिमा च गर्भव्युत्क्रान्तिका च मूर्च्छा मोहसमुच्छ्राययाः यस्मा एवम्भूता रसम्मूर्च्छन सम्मूर्च्छा ऽस्तरीति भाव पञ् प्रत्ययः गर्भोपपातव्यतिरेकेण एवमेव प्राणिना मुत्पाद इतिभाव स्तन निवृत्ता सम्मूर्छिमास्तथा दिम इति एमप्रत्ययः गर्भे व्युत्क्रान्ति रुत्पत्ति येषां व्युत्क्रान्तिशब्दो ऽत्रो त्पत्तिवाची तथा पूर्वाचार्यप्रसिद्धे य दि वा गर्भा द्व्युत्क्रान्ति मिःक्रमण येषान्ते गर्भव्युत्क्रान्तिकाः, शाषादि ति कप समासान्तः पक्षद्वौ प्रत्यक्ष स्वगतानकभेदसूचकौ तत्र ये त सम्मूर्छिमा स्ते सर्वे नपुंसकाः सम्मूर्छिमत्वावस्य नपुंसकत्वा ऽविना भावित्वात्, ये तु गर्भव्युत्क्रान्तिका स्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—स्त्रियः पुरुषा नपुंसकाः ' एतेषां चा नयेषा मपि शरीरावगाहनादिषु च चिन्तनं च च गर्भव्युत्क्रान्तिकानां स्त्रीपुंनपुंसकानां परस्पर मल्पबहुत्वचिन्तनं त जीवाजिगमटीकाया कृत

से किंत गाहा २ ? पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा देलीयेढगा मद्दुया पुलगा सीमागारा । सेत्त गाहा ॥ से किंत मगरा २ ? दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सोंडमगरा मच्छमगराय । सेत्त मगरा । से किंत सुसुमारा २ एगागारा प०, सेत्त सुसुमारा । जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सम्मुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य तत्थण जे ते सम्मुच्छिमा ते सव्वे नपुंसका, तत्थण जे ते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा प०,

भगा पांचभेद कह्या ते कहवे । दिली वेठगा मद्दया पुलगा सीमागारा । दिलो वाटका युत पलगा सीमागारा । सत्तगाहा सेकित मगरा २ दुविध प त । एतल ग्राहना भेद कह्या, हिवे मगरना ते मगरना शायभेद कह्या ते कहवे । सोंडमगरा मच्छमगरा । सांडमगर मच्छमगरा । सेत्त मगरा सेकित सुसमारा २ एगागारा प तं । एतले मगर कह्या, हिवे सुसमारना एकभेद कह्या तेकिम । सुसमारा सेत्तसुसमारा । सुसमारा एतले सुसमार कह्या । जयावन्नेतहप्पगारा ते समासओ दुविहा प तंजहा । जे घणेरा तथाप्रकारे ते संक्षेपथी दोयप्रकारे ते । समुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय । समूर्छिम गर्भ ऊपजे गर्भज पिण । तत्थणं जते समुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा । तिहां जते समूर्छिम तेसर्व नपुंसक । तत्थण जते गब्भवक्कंतियाय ते तिविहा प० तं ।

मिति ततो ऽवधार्यं ॥ मएषिकमित्यादि ॥ एतेषा मेव मादिकाना मुपदर्शितप्रकाराणां जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पर्याप्ताऽपर्याप्तानां सवसङ्ख्या ऽद्धयोरसातिकुलकोटीनां योनिप्रमुखाणि योनिप्रवाहाणि शतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यात मनवद्भि सौधर्मै उपसंहारमाह-सेत्त मित्यादि ॥ सदेव सुगम जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका। सम्प्रतिस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानभिधित्सुराह-सकिंतमित्यादि ॥ चत्वारि पदा नि येषा स चतुःपदा। मश्वादय एते च ते स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका च चतुष्पदपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका। उरसा भुजाभ्यां वा परिसर्पन्तीति उरःपरिसर्पाः, भुजपरिसर्पा अहिनकुलादय, तत। पूर्ववत् स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकपदेन सह विशेषणसमासः, चशब्दौ प्रत्येक स्वगतानेक

तजहा इत्थी पुरिसा नपुसगा। एतेसिण एवमाइयाण जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताण अद्धतेरसजाइकुलकोडिजोणीप्पमुहसयसहस्सा भवतीति मक्खाय। सेत्त जलयरपंचिंदिय०। से किंत थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? दुविहा पण्णत्ता, तजहा चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य। से किंत चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? चउव्विहा

तिर्यो जेते गमत तेहना ? भेद कह्या ते कहे—स्त्री पुरिसा नपुंसगा। स्त्री पुरुष नपुंसक। एएसिण एवमाइयाण। एहना इत्यादि पांचेंद्र। जल चर पंचे द्रिय तिरिक्खजोणियाणं। जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया। पज्जत्ता अपज्जत्ताणं। पर्याप्ता अपर्याप्ता। अद्धतेरसजाति कुलकोडी योनीप्रमुख सयसहस्सा भवतितिमक्खाय। साडीबारलाख कुलकोडिप्रमुख शतसहस्र हवे। इम तीर्थंकरे कह्या। सेत्त जलचरे पंचेंदितिरिक्खजोणिया। एतले जल चर पंचेंद्रिय कह्या तिर्यंचयोनिया। सेकिंत थलचर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया २ दुविहा प त । किंवे थलचर ते थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक दायप्रकारे कह्या ते कहे—चउप्पयथलयर पंचेंदियतिरिक्खजोणिया परिसप्प थलयर पंचेंदिय ति । चउपद थलचर पंचेंद्रिय तिर्यचयोनिक उरपर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया। सेकिंत चउप्पय थलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ चउव्विहा प त । किंवे चोपदथलचर पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिया चारभेद

कनदसूचकौ। तदवानेकभेदस्य प्रथम प्रतिपिपादयिषु राह-सेकितमित्यादि ॥ यम के ते चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका' सूरिराह-चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा-एगखुरा इत्यादि ॥ तत्र प्रतिपद मेक खुरो येषां ते एकखुराः अश्वाद यः द्वौ २ खुरौ प्रतिपद येषान्ते द्विखुराः उष्ट्रादय तथा च-एकैकस्मिन् पदे द्वौ द्वौ खुरौ दृश्यते गवली च सुवर्णकारादिवत्स्थाम मिव पद

पणत्ता, तंजहा एगखुरा दुखुरा गंडीपया सणप्फया। से किंत एगखुरा २ ? अणेगविहा पणत्ता, तं० अस्सा अस्सतरा घोडगा गद्दभा गोरक्खरा कंदलगा सिरिकंदलगा आवत्ता। जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्तं एगखुरा। से किंत दुखुरा २ ? अणेगविहा पणत्ता, तंजहा—उट्टा गोणा गवया रोज्झा ससया महिसा सयरा वराहा अया एलगा रुरु सरभ चमर कुरंग गोकण्णमाई सेत्तं दुखुरा। से किंत गंडीपया २ ? अणेगविहा पणत्ता, तंजहा हत्थी हत्थीयणा मकुणहत्थी खग्गा गंडा। जेयावण्णे तहप्पगारा। सेत्तं गंडीपया

कथा ते कथ्यन्ते। एकखुरा दुखुरा गण्डीपदा सनखपदा। एकखुरा अश्वादि द्विखुरा गवादि गण्डीपद गजादि सनखपद श्वानादि ४। सेकित एगखुरा २ अनेकविधा प्रं० त। द्विविधे एकखुराणां अनेकभेद कथ्यन्ते ते यथा- अश्वा अश्वतरा घोटका गर्दभा गोरक्खरा कन्दलगा। श्रीकन्दलगा आवत्ता। घोटा अश्वतर घोटक गर्दभ गोखर कन्दलग श्रीकन्दलग आवर्त। अन्यापि एतत्प्रकारा सर्व एकखुरा। एवंविधा च अपरा तथाप्रकारे त एकखुरा कथ्यन्ते। सेकित दुखुरा २ अनेकविधा प्रं त। द्विविधे ते दुखुरा कथ्यन्ते त अनेकप्रकारे कथ्या त सुणा। उट्टा गोणा गवया रोज्झा ससया महिसा सयरा वराहा अया। एलगा रुरु सरभ चरम कुरंग गोकर्णमाद। ऊँट गाय गवय रोझ शश महिष सूअर वराह छाला गाडर चमरी गाय मृग गोकर्ण। सेत्त दुखुरा। सेकित गण्डीपदा २ अनेकविधा प्र त। एतले सुवर्णकारनी एरण सरिखा पग छे ते गण्डीपद अनेकभेद कथ्या ते कहे छे—हस्ती पूयणया मकुणहस्ती खग्गा। हाथी गेण्डा मुकनहाथी पशु। अन्यापि एतत्प्रकारा सेत्तं गंडीपया। अ अपरा तथाप्रकारना गण्डीपद जाणिवा। सेकित सणप्फया २ अनेकविधा प्र० तं ।

पयागते गब्भीपन्न इस्त्यादय सथा समयानि श्रीघनसपरिकमितानि पदानि येयागते समसपदाः स्यादयः प्राकृतत्वात्सयपक्षयाइतिसूत्रेनिर्देश मधुनायतानव पक्खुरादीम् प्रदत्त क्रमेण प्रतिपिपादयिषु रिदमाह सकितमित्यादि ॥ सुगम नवर य कवि उज्जीवजन्ना अप्रतीता स्ते साक्षतो वदितव्याः ॥ तसमासद दुविहा प इत्यादि सूत्र ॥ प्रागुक्तावनीयं नवरमत्र जातिकुलकोटीना योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि दश भवन्तीति वेदि तव्य सत्रापि च सम्मूच्छिमाना गर्भव्युत्क्रान्तिकानां च प्रत्येक प्रत्येक शरीरादिष द्वारेषु चिन्तन य स स्त्रीपुंनपुंसकाना परस्पर मल्पबहुत्व तज्जीवा

से किंत सणप्फया २ ? सणगविहा पन्नत्ता, तजहा सीहा वग्घा दीविया अच्छा तरच्छा परस्सरा सिया ला सुणगा कोलसुणगा (ग्रथा ५००) काकंतिया ससगा चित्तगा चिल्लगा। जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्त सणप्फया। तेसमासओ दुविहा पन्नत्ता, तजहा समुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय। तत्थण जे त समुच्छि मा ते सव्वे णपुसगा, तत्थण जे त गब्भवक्कंतिया ते तिविहा पन्नत्ता, तजहा इत्थी पुरिसा नपुसगा।

सिंह प्रभृतय भेद यथा त भद पनप्रमाणेना व्यक्ते—सीहा वग्घा दीविया अच्छा परच्छा परस्सरा सियाला बिराला सणगा कालसुणा कोकन्ति या ससगा चित्तगा। सिंह व य चीता अच्छ तरच्छ परासर च स विराल स्वान काल कोकति सगक चित्रक। जेयावन्नेतहप्पगारा सेत्त सणप्फया त समासओ दुविहा प त च पर्नेरा तथाप्रकार ते सणोपद वक्तव्य ते संचपव्यो वायपकारे वया तेवरेवे। समच्छिमाय गब्भवक्कतियाय। समुच्छि म प्रभव। तत्थण जते समच्छिमा ते सव्वे नपुसगा। तिर्यं येते सम्मूर्च्छिम तिके सव नपुसक। तत्थण जते गब्भवक्क तियाय ते तिविहा प त। तिर्य ये गर्भजन्मा तोलभद यथा ते व्यक्ते—इत्थी पुरिसा नपुसगा उपसिच उपमारच। स्त्री पुरुष नपुसक इत्यादि इयतरे पाठिष्टह। थलयर पंचिदिय ति रिक्खजोणियाय। थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिका थलचरपंचेन्द्रिया। पज्जत्तपज्जत्ताय। पर्याप्ता अपर्याप्ता। दसजातिकुलकोडि जोणिपमुहसय सहस्सा भवतीतिमक्खाय। दशजाति कुलकोटि योनि शतसहस्र भवे तीर्थंकर कथा। सेत्त थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया। पत्ते चउप

निगमटीकातो वदितव्य ॥ सेसवउप्पयइत्यादि ॥ सकितमित्यादि ॥ अथ के ते परिसपस्थलचरपञ्चेन्द्रिया। ? तैयगयोनिका प्रथमाः ? सूरिराह-उरःपरिसपस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका द्विविधा द्विप्रकाराः प्रथमा तद्यथा-उरपरिसर्पेत्यादि ॥ उरसा परिसपन्तीति उर परिसर्पा ते च ते स्थलचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका च उरःपरिसपस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः भुजाभ्यां परिसर्पन्ति भुजपरिसर्पा ते च ते स्थलचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका च भुजपरिसपस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका पक्षस्तो प्रत्यक्ष स्वगतामकजदसूचकौ । तत्रो रःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिकप्रतिपादनार्थमाह सेकितमुरपरिसप्पेत्यादि ॥ अथ के ते उर परिसपस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ? सूरिराह-उर परिसपस्थलचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा-अहयो ऽजगरा आसालिका महोरगा एतया मेव यथागा मवगमाय प्रशनियमस्

एएसिण एवमादियाण थलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताण दसजाइकुलकोडिजोणिप्पमुह सयसहस्सा हवतीति मक्खाय । सत्त चउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया । से किंत परिसप्पथलयर पचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? दुविहा पण्णत्ता, तजहा उरपरिसप्पथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया भुय परिसप्पथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया य । से किंत उरपरिसप्पथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? च उव्विहा पण्णत्ता, तजहा अही अयगरा आसालिया महोरगा । से किंत अही २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा

द थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया कहा। सेकित परिसप्प थलचर पचेंद्रिय तिरियचजोनिया २ दुविहा पं त । किये उरपरिसप थलचर पचेंन्द्रिय तिर्यंचजोनिक पहला दोसरे कहा। उरपरिसप थलचर पंचेंद्रिय तिरियचजोनिया भुजपरिसपथलचर । उरपरसप थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचजोनि क भुजपरिसप थलचर भुजासेचाले ते। सेकित उरपरिसप थलचर पंचेंद्रियतिरिक्खजोनिया २ चउव्विहा पं०त । किये उरपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिकाना ४ भद कहा ते कहते—अही अयगरा आसालिया महोरगा। अप अयगर असालीया महोरग। सेकितं अही दुविहा पं त०। किये

भावमाह सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते अहयो गुरुराह-अहयो द्विविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा-दर्वीकरा च मुकुलिनश्च । तत्र दर्वीदर्वीफणास्तत्करणशीला दर्वीकराः मुकुलं फणा विरहयोग्या शरीरावयवविशेषाकृतिः सा विद्यते येषान्ते मुकुलिनः फणाकरणशक्तिविकला इत्यर्थः अत्रापि च सर्वो स्वगतानेकभेदसूचको । तत्र दर्वीकरभेदान् जिघिसु राह-सेकितमित्यादि ॥ आश्यो दंष्ट्रा तासु विषं येषान्ते आशीविषाः, उक्तं च-आशीदादा तन्मयमहाविषा आशीविषा भुजङ्गा इति, दृष्टौ विषं येषान्ते दृष्टिविषाः, उग्रं विषं येषां ते उग्रविषाः भोगः शरीरं तत्र विषं येषां ते भोगविषाः त्वचि विषं येषां ते त्वग्विषाः, प्राकृतत्वात् तयाविसा इति पाठः लाला मुखाम्भाः तत्र विषं येषां ते लालाविषाः नि श्वासे विषं येषान्ते निःश्वासविषाः, कृष्णसर्पादयो जातभेदा लोकतः प्रतिपत्तव्याः उपसंहारमाह-सेत्तं दर्वीकरा । मुकुलिनः प्रतिपिपादयिषुराह-सेकितमित्यादि ॥ एतेपि लोकतो वसेयाः, अजगराश्चाजगरजातिभेदा न विद्यन्ते तत उक्तमेकाकारा अजगराः प्रज्ञप्ताः ॥ आसालिकाप्रति जिघिसु राह सेकितं आसालिगा ॥ अथ का आसालिगा ? एवं प्रश्ने कृते सति भगवान् आर्यश्यामो यद्य ग्रन्थान्तरेषु आसालिकाप्रतिपादिक

दव्वीकरा य मउलिणो य । से किंतं दव्वीकरा २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा आसीविसा दिट्ठीविसा उग्गविसा भोगविसा तयाविसा लालाविसा उस्सासविसा निस्सासविसा कण्हसप्पा सेठसप्पा काओदरा दज्झपुप्फा कोलाहा मेलिमिंदा सेसिंदा जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं दव्वीकरा । से किंतं मउलिणो २ ? अणेग

सपना दाखभर बह्या ते बदले—दर्वीकराय मउलिणाय। दर्वीकरा मलसपना। सेकित दर्वीकरा अणेगविहा पं त । विषे दर्वीकरांना अनेकभेद बह्या त बदल। भामाविसा विट्ठीविसा उग्गविसा भोगविसा तयाविसा लालाविसा उस्सासविसा नीसासविसा। आसीविष दाढविष नेत्रविष दृष्टिविष उग्रविष चामडीविष भोगविष स्वचाविष लालविष उच्छ्वासविष निःश्वासविष। कृष्णसर्प श्वेतसर्प काओदरा दग्धपुष्पा कोलाहा मेलिसदा। उपचय सप्तसप बाढु दर दग्धपुष्प बालाव मौलसद। जयावन्ततहप्पगारा सत्त दर्वीकरा। जे एहवा अनेकभेदे ते दर्वीकर भेदकह्या। सेकित मउ

गौतमप्रश्नं भगवद्विवचनरूप सूत्रमस्ति तद्वागममनुमानतः पठति? कहिणं भंते। इत्यादि॥ कथं यामिति मास्यासङ्गारे भवन्त। परमकल्याणयोगिन्
आसालिका सम्मूर्च्छति? यथा हि गर्भजा न भवति किन्तु सम्मूर्च्छिमैव तत एव सम्मूर्च्छति भगवानाह-गोयमेत्यादि॥ गौतम। मनुष्यक्षेत्रस्य
यदिरेतावता मनुष्यक्षेत्रा इति रस्या उत्पादा न भवतीति प्रतिपादित तत्रापि मनुष्यक्षेत्रे सर्वत्र न भवति किन्तु द्वतीयेषु द्वीपेषु यद तृतीय यथा
ऽर्धतृतीया भवयवन विग्रह समदायः समासाश्च तेषु एतावता लवणसमुद्र कालोदे समुद्रे वा न भवतीत्यावेदित निर्व्याघातेन व्याघातस्या
तायो निर्व्याघातं तत्र यदि पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वैरावतेषु सुषमसुषमादिरूपदुःषमादिरूप स कालो व्याघातहेतुत्वात् व्याघातो न भवति तदा

विहा पन्नत्ता, तंजहा दिहागा गोणसा कसाहीया मउला चित्तलिणो मउलिणो अही अहिसिलागा वाय
डागा। जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्तं मउलिया। सेत्तं अही। से किंतं अयगरा २? एगागारा पन्नत्ता,
सेत्तं अयगरा। से किंतं आसालिया? कहिणं भंते! आसालिया समुच्छति? गोयमा! अंतोमणुस्सखे
त्ते अड्ढाइज्जेसु दीवेसु णिव्वाघाएणं पन्नरससु कम्मभूमीसु वाघातं पडुच्च पंचसुमहाविदेहेसु चक्कवट्टीखंधावा

विधा २ चवेगविहा प त । हिवे मुकलय नाना पकेवम २ कथा ते कंरेहे—दिव्यागा गावसा कसाहिया पद्मचा चित्तलिणा मउलिणो मालिपापझो
पडिमसमा वायडम। हिम गावप कसाइरव वरव विनडोमाडलिन मासवोसपे सहामवर्प। जेयावशेतहप्पगारा सेत्त मउलिणा सेत्त पङ्गो।
से पतरा तवामवारे ते पतव मवममामद कथा। सेकिंतं पयगरा २ एगागारा प त । हिवे ते पनगरमा पवभेहछे—मत्त पयमरा सवित
धालसोया। पतव पजगर हिवे ते पहसियाना एकभ"। कवचभते पवसोया समस्चति। किम ख्यपछे हेभगवन् च पमाया गौतम पृछेहे च —गा
यमा पनामवमरपत्त पडाइमसु दोवस निव्वाघापर्व पवरससुवम्मभूमिसु वाघातं पडप। हेगौतम मनुष्यवमाहि पडारद्वीपमर्जिपे निव्याघ त पमरे
भूम कमभूमिमेविपे व्याघात न पपने। पचसु महाविदेहेसु पचवहिसवावारेसु वासुदेवसवावारेसुवा। पच महाविदहभेचमविमे पक्कवर्तीरा एवा

रास्माह सेकितमित्यादि । अथ के ते अहयो मुकुराह-अहयो द्विविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा-दर्वीकरा च मुकुलिनश्च । तत्र दर्वीयदर्वीफणातस्करणशी सा दर्वीकरा मुकुलं फणा विरहयोग्या शरीरावयवविशेषाकृतिः सा विद्यते येषान्ते मुकुलिनः, फणाकरणशक्तिविकला इत्यर्थः अत्रापि च स्त्री स्वगतानेकभेदसूचकौ । तत्र दर्वीकरभेदान् निरूपयितु राह-सकितमित्यादि ॥ आशयो दंष्ट्रा स्तासु विषं येषान्ते आशीविषाः, उक्त च-आसीदा दा तन्मयमहाविषा आशीविषा भुजगा इति, दृष्टौ विषं येषान्ते दृष्टिविषाः उग्रं विषं येषा ग्ते उग्रविषाः भोग शरीरं तत्र विषं यषा ग्ते भोगविषाः, त्वचि विषं यषा न्ते त्वग्विषाः, प्राकृतत्वा च तयाविसाइतिपाठः लाला मुखास्राव तत्र विषं येषा ग्ते लालाविषा निःश्वास विषं यषाग्ते निःश्वासविषा कृष्णसर्पादयो आतनदा लोकत प्रतिपत्तव्या उपसंहारमाह-सत दर्वीकरा । मुकुलिनःप्रतिपिपादयिषुराह-से किंतमित्यादि ॥ एतेपि लोकता अवसेयाः अजगरान्निरूपयितु-मयान्तरजातिनदा न विद्यन्ते तत एकमेकाकारा अजगराः प्रज्ञप्ताः ॥ आशालिकान्निरूपयितु राह सेकित आसालिगा ॥ अथ का आसालिगा ? एव शिष्येण प्रश्ने कृते सति भगवान् आर्यश्यामो मदय ग्रन्थान्तरेषु आशालिकाप्रतिपादिक

दव्वीकरा य मउलिणो य । से किंतं दव्वीकरा २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा आसीविसा दिट्ठीविसा उग्गविसा भोगविसा तयाविसा लालाविसा उस्सासविसा णिस्सासविसा कण्हसप्पा सेठसप्पा कउदरा दब्भ पुप्फा कोलाहा मेलिमिंदा सेसिंदा जेयावण्णे तहप्पगारा । सेत्तं दव्वीकरा । से किंतं मउलिणो २ ? अणेग

मपना शरभर बधा ते बघावे—दर्वीकरा मुकुलिनाय । दर्वीकरा मवसपर्ना । सोकत दर्वीकरा अनेगविधा पं० त० । जिवे दर्वीकरा ना अनेकभेद बधा त कहत । आसीविसा दिट्ठीविसा उग्गविसा भोगविसा तयाविसा लालाविसा उस्सासविसा णीसासविसा । आसीविष दाढेविष नेत्रविष दृष्टि विष उग्रविष आकारविष भागविष त्वचाविष लालविष उच्छ्वासविष नासासविष । कण्हसप्पाइ सेठसप्पा काउदरा दभपुप्फा कालाहा मेलिमंदा । कणकण सफेदप कादुवरा दभपुप्प कोलाह मेलिमद । अपावण्णतहप्पगारा सेत दर्वीकरा । जे एहवा अनेकभेदे ते दर्वीकरा भेदकह्या । सेकित मउ

गौतमप्रश्नं भगवद्विवचनरूप सूत्रमस्ति तद्वागमप्रमाणत। पठति? कहिणं भंते। इत्यादि॥ कथं यमिति पाल्यालङ्कारे भदन्त। परमकल्याणयोगिन्
आसालिया समुच्छति? यथा हि गर्भजा न भवति किन्तु सम्मूर्छिमैव। तत एव सम्मूच्छति प्रश्नवाक्य-गोयमेत्यादि॥ गौतम। अन्तर्मध्ये मनुष्यक्षेत्रस्य
यच्चिरेतावता मनुष्यक्षेत्रा दृष्टि इत्या उत्पादा न भवतीति प्रतिपादित तत्रापि मनुष्यक्षेत्रे सर्वत्र न भवति किन्तु द्वयतीयपु द्वीपेपु अर्द्ध तृतीय पर्यान्ते
ऽर्द्धतृतीया अवयवेन विग्रह समुदाय समासार्थे लोपु एतावता लवणसमुद्र कालोदे समुद्र वा न भवतीत्या वदित निर्व्याघातेन व्याघातस्या
भावो निर्व्याघात तत्र यदि पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वैरावतेषु सुषमसुषमादिरूपदुःषमादिरूप स कालो व्याघातहेतुत्वात् व्याघातो न भवति तदा

विद्य पञ्चत्ता, तंजहा दिहागा गोणसा कसाहीया यउला चित्तलिणो मऊलिणो अही अहिसिलागा वाय
फागा। जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्तं मउलिया। सेत्तं अही। से किंतं अयगरा २? एगागारा पण्णत्ता,
सेत्तं अयगरा। से किंतं आसालिया? कहिणं भंते! आसालिया समुच्छति? गोयमा! अंतोमणुस्सखे
त्ते अड्ढाइज्जेसु दीवेसु णिव्वाघाएणं पन्नरससु कम्मभूमीसु वाघातं पडुच्च पंचसुमहाविदेहेसु चक्कवट्टीखंधावा

लिया २ पचेगविहा प त०। जिवे मुकलपत्ताना पनेकभेद कथा ते कथ्यन्ते—दिव्वागा गोणसा कसाहिया वइउला चित्तलिणा मउलिणो मालिवामइ
पडिमलमा वायइम। लिम गोणस कसाहारक वइउल चित्तलोमाउलिन मासवोसपे सत्तावसर्प। सेम एवतप्पगारा सेत्त मउलिया सेत पहो।
श्री पनरा तथाप्रकारे ते एतत् मकफलामेद कथा। सेकित पयगरा २ एगागारा प तं। जिवे ते पयगरा एकमेदश्च—मत्त अयगरा सवित
पामसोमा। दलत पजमर जिवे ते पलसिकाना पत्तभि०। भगवभते मसमोया समत्थति। किम छपने केमगवम् च ममाया गौतम पूर्वोक्ते च —गो
यमा पनामनुस्सपत पहाइज्जेसु द्वीपेसु निव्वाघाएणं पनरससुकम्मभूमिसु वाघाते पडच। केमोतस मनुष्यक्षेत्र मध्ये अद्धतृतीपद्वीपे भिन्नोचित पनरे
भूम कर्मभूमिमध्ये व्याघात न उपजे। पचसु महाविदेहेसु चक्कवट्टिखंधावारेसु वासुदेवखंधावारेसुवा। पच महाविदेहक्षेत्रमध्ये चक्रवर्तीरा खधा

पञ्चदशसु कर्मभूमिषु समूर्च्छति' व्याघातं प्रतीत्य किं मुक्तं भवति ? यदि पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वैरवतेषु यथोक्तरूपो व्याघातो भवति तत पञ्चसु महाविदेहेषु सम्मूर्च्छति एतावता विशत्य प्य कर्मभूमिषु नो पञ्चायते इति प्रतिपादित पञ्चदशसु कर्मभूमिषु पञ्चसु यामहाविदेहेषु न सर्वत्र सम्मूर्च्छति किन्तु चक्रवर्तिस्कन्धावारेषु वा शब्द सर्वत्रापि विकल्पार्थो द्रष्टव्यः बलदेवस्कन्धावारेषु माण्डलिक सामान्यराजा, महर्द्धिको महामा ण्डलिकः स यथा नेकदेशाधिपतिः तत स्कन्धावारेषु ग्रामनिवेशेषु इत्यादि। ग्रसति बुध्यादीन् गुणानिति ग्राम' यदि च मम्य; शास्त्रप्रसिद्धानाम ष्टादशानां करादा मिति ग्रामः निगमः प्रभूततरवणिम्‌वर्गावासः प्राकृमाकारनियद्ध खेट क्षुल्लप्राकारवेष्टितकर्वट, अर्धतृतीयगव्यूतान्तर्ग्रामान्त ररहितं मडम्ब॥ पट्टणं॥ पट्टन पत्तनं वा उभयत्रापि प्राकृतत्वेन निर्देशस्य समानत्वात् तत्र य नौभिरेव गम्य त त्पट्टन य त्पुनः शकटै र्घो टकै नौभि वा गम्य तत्पट्टन तथा चाहुश्च तत्त च-पत्तन शकटै र्गम्य घोटकै र्नौभि रेव च। नौभि रेव तु यद्गम्य पट्टन तत्प्रचक्ष्यते॥१॥ द्रोण

रेसु वासुदेवखधावारेसु बलदेवखधावारेसु मंडलियखधावारेसु महामंडलियखधावारेसु गामनिवेसेसु नगर निवेसेसु निगमनिवेसेसु खेडनिवेसेसु कब्बडनिवेसेसु मडंबनिवेसेसु दोणमुहनिवेसेसु पट्टणनिवेसेसु आग रनिवेसेसु आसमनिवेसेसु संबाहनिवेसेसु रायहाणिनिवेसेसु एएसिंण चेव विणासेसु । एत्थणं आसालिया

वार वलिने कटक वासुदेवना कटकनेविषे। बलदेवखधावारसुवा मंडलियखधावारेसुवा महामंडलियखधावारेसुवा। बलभद्रना कटकनेविषे महाम ण्डलीकना कटकनेविषे। गामनिवसेसु नगरनिवेसेसु निगमनिवेसेसु। ग्रामनिवेसनविषे करविना नगर ते नगरनिवेसनेविषे। खेडनिवेसेसु कब्बडनिव सेसु मडंबनिवेसेसु। धूलकोट ते खेडनिवेसनविषे कब्बडनेविषे मडंबनविषे। दोणमुहनिवेसेसु पट्टणनिवेसेसु आगरनिवेसेसु आसमनिवेसेसु। द्रोणमुख स्थल ते निवेसनविषे आगर ते निवेसनेविषे आश्रमनिवेसनविषे। संबाहनिवेसेसु रायहाणिनिवेसेसु। संबाध साधारण स्थानेविषे राजधानीनेविषे। एतेसिंणं चेव विणासेसु एत्थणं आसालिया समुच्छति। ए स्थानके विनाशकाले इहां आसालिया जीव उपजे। जघन्य अंगुलना असंख्यातभागमित्तीए च

मुए बाहुल्येन समिगमप्रवेशं ॥ आकरो हिरण्याकरादिः आश्रम तापसावसथोपलक्षितः, आश्रयः संवाधो यात्रासमागतप्रभूतजननिवेशः, राज धानी राजाधिष्ठानं नगरं ॥ एवमादि इत्यादि ॥ एतेषां चक्रवर्तिस्कन्धावारादीनां यदा विनाशेषु पर्युपस्थितेषु ॥ एतेषु चक्रवर्तिस्कन्धावा रादिषु स्थानेषु आसालिका सम्मूर्च्छति, सा च जघन्यतो ङ्गुलासंख्येयभागमात्रया अवगाहनया समुत्तिष्ठतीति योगः उत्पादप्रथमसमये वदि तथ्यं, उत्कर्षतो द्वादशयोजनानि तदनुरूपं द्वादशयोजनप्रमाणदैर्घ्यानुरूपं ॥ विष्कम्भबाहल्येनेति ॥ विष्कम्भ च बाहल्यं च विष्कम्भबाहल्यं समाहा रो द्वद्व तत्र विष्कम्भो विस्तारो बाहल्यं स्थूलता ॥ भूमिं दारयित्वेति ॥ विदार्य समुत्तिष्ठति सा चक्रवर्तिस्कन्धावारादीनां अधस्तात् भूम एव तत्र घव इतिभावः सा च असंज्ञिनी अमनस्कासम्मूर्च्छिमत्वात् मिथ्यादृष्टिः सास्वादनसम्यक्त्वस्यापि तस्या असम्भवात् अत एवा ऽज्ञानिनी अन्तर्मु हूर्त एव कालं करोति तदवस्थायामेतदर्थ सूत्र पठित्वा सूत्रकृत् समस्तु पसंहारमाह सेत्तं आसालिया ॥ सम्प्रति महोरगानभिधित्सुराह । सेकित

समुच्छति । जहन्नेण अंगुलस्स असंखिज्जइभागमित्ताए ओगाहणाए, उक्कोसेण बारसजोयणाइं । तदणुरू य च णं विक्खंभबाहल्लेण भूमिं दालित्ताणं समुट्ठेति । असन्नी मिच्छद्दिट्ठी अन्नाणी अंतोमुहुत्तद्धाउया चेव कालं करेइ । सेत्तं आसालिया । से किं तं महोरगा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता , तंजहा अत्थेगइया अंगुलं पि अंगुलपुहत्तिया वि वियत्थिं पि वियत्थिपुहत्तं पि रयणिं पि रयणीपुहत्तिया पि कुच्छिं पि कुच्छि

आसालियाए । अधन्नओ अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेण बारसजोयणाइं तदणुरूवं । उक्कोसे १२ योजन अवगाहना पालसाय रोए मधोकय । विष्कम्भबाहल्येन भूमिं दारयित्वा समुट्ठेइ । विष्कम्भ बाहल्य १२ योजन भूमिविदारी असन्निमारणी छद्मोभूमिथी उपजे अमविना उपजी । असन्नी मिथ्यादृष्टि अज्ञानी अज्ञानवन्तस्थितिप कालकरे । अशंघो अनर्थकर तिण हवो अज्ञानी अन्तर्मुहूर्त आउखाना लिये कालकरे । सेत्तं व सविया । एतत आसालिया कह्या । सेकित महोरगा २ अणगविहा प तं० । किये ते शिष्य पूछे छुप महोरग तद्गुरु महोरगनाभेद अनेकप्रकारे

मित्यादि ॥ पुगस ' मन्नर वितस्ति द्वादशाङ्गुलप्रमाणा रवि हस्त कुक्षि द्विहस्तमानो धन चतुर्हस्त नमूर्त द्विधन सहस्रप्रमाणं । चत्वारिंगव्यूतानि योजन इह च वितस्त्यादि उच्छ्रयाङ्गुलापेक्षया द्रष्टव्य शरीरप्रमाणस्य परिचिन्त्यमानत्वात् । तथा-अस्तीति निपातो ऽत्र बहुत्वाभिधायी प्रतिपद न्य सबध्यत ततो यमपः सन्त्य च कथम महोरगा ये अङ्गुलमपि शरीरावगाहनया भवन्ति तथा सन्त्ये के केचन य अङ्गुलपृथक्त्विका अपि अङ्गु लपृथक्त्व विधात यपान्त अङ्गुमपृथक्त्विका अतो मत्स्वरादि ती क प्रत्ययः त पि शरीरावगाहनया भवन्ति अङ्गुलपृथक्त्वमानशरीरावगाहना अपि भ वन्तीतिभावः एव शेषसूत्राण्यपि भावनीयानि तब मित्यादि ॥ ते अनन्तरोदितस्वरूपा महोरगाः स्थलचरविशेषत्वात् स्थलेऽप्यन्ते स्थलेऽपजाता सन्तो जलेऽपि स्थलइव चरन्ति तथा भावस्वाभाव्यात् यद्यव कि मत्स्या दिव मनुष्यक्षेत्रे इत्याशङ्कायामाह-तनत्थिइहमित्यादि ॥ ते यथोक्तस्वरू

पहसिया वि धणु पि धणुपुहत्तिया वि गाउय पि गाउयपुहत्तिया वि जोयण पि जोयणपुहत्तिया वि जोयणसय पि जोयणसयपुहत्तिया वि जोयणसहस्स पि तेण थले जाता जले विचरति थले विचरति ते णत्थि इह बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवति जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्त महोरगा। ते समासतो दुविहा प० ,

यथा ते अत्रे—पत्यनरया भगवपि भमपहत्तियापि वितस्त्यपि वितस्त्यपहत्तयापि। केतमायन्न महोरग भगुलओ अवगाहना केतमायन्न य गुन पयओ भवनो वतमायन्न वेहतनो अवगाहना इव मनमायन्न विहत पयओ अवगाहना। रयणिपरयणपहुत्तियापि। केर यावओ ये र याव पयओ अवगाहना। करमपि करमपहुत्तियापि धनुं पचनपहुत्तियापि। केर ये यावओ केर वेयाव पयओ केर धनुपओ केर धनुपपयत्त लनो। गाउयपि गाउयपहुत्तियापि। केर गाउयओ केर गाउयपयत्तलनो। जोयणपि जोयणपहुत्तियापि। केर योयणओ केर योयणपयत्तलनो। जो यण सयपि जोयणसयपहुत्तिया। केर जोयण सयओ केर जोयण सयपयत्तलनो। जियायण सहस्सपि जोयणसहस्सपहुत्तियापि। केर येयाजनम हस्सओ केर सहस्सयोयण पयत्तलनी। तेण स्थलमाया जले विचरति स्थलमाया थले विचरति। तित्त जलमे जपना थलमे विचरे जलमे जलमे जल

पा महोरगा इह मानुषक्षेत्रे न त्वितिमसन्तिविन्तुबाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति समुद्रेष्वपि च पर्वतदेवनगर्यादिषु स्थलेषु स्वद्यन्ते । न तासेषु स्थलचरत्वात् तत इह न दृश्यन्त अपावमतदप्पगारा इति ये पि चा न्य अङ्गुलदशकादि शरीरावगाहमाना तथा प्रकाराः सन्ति ते पि म हारगा ज्ञातव्या उपसंहारमाह-सत्तमित्यादि ॥ तसमासम्रत्यादिमागृपज्ञावनीय एतया मपि दशजातिकुलकोटीमा योनिप्रमुखानि शतसहस्रा णि मतपा मपि च य च्छरीरादिषु द्वारेषु चिमान य प स्त्रीपुरुषनपुंसकामा मल्पबहुत्व तज्जीवाभिगमटीकातो भावनीय उरःपरिसर्पवक्तव्यतोपसं हारमाह-सतउर परिसर्पाः अधुना भुजपरिसर्पाणा मभिधित्सुराह-सकितमित्यादि ॥ सुगम नवर य भुजपरिविसर्पा अप्रतीता ते लोकतो वसे

त०—सम्मुच्छिमाय गब्भवक्कंतिया य। तत्थण जेते समुच्छिमा ते सव्वे णपुसगा, तत्थण जेते गब्भवक्कंतिया तेण तिविहा प०, त०—इत्थी पुरिसा नपुसगा, एएसिण एवमाइयाण पज्जत्ता२ ण उरपरिसप्पाण दसजा इकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवती ति मक्खाय। सेत्त उरपरिसप्पा। से कित भुयपरिसप्पा२ अणेग

मे विधरे। ते तल्लिाद्यादिरिसमु द्वादसमहमवति। दच मनुष्यक्षेत्रे नत्थो बाहिरखा द्वापसमुद्रमाद्रि भवेइ। सेवावसे तदप्पगारा सेत्त महोरगा ते समासमा दुविहा प त । जे पनेरा तवाप्रकारे कथा त तत्स मशारमा ते सचेपको द्विप्रकारे कथा ते कथ्ये—सम्मच्छिमाय गर्भव्युत्क्रान्तिकाय । सम्मूर्च्छिम न सभत्र। तत्थण जत सम्मच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा। तिर्यं च सम्मूर्च्छिम ते सब नपुंसका लिङ्गे भुवे। तत्थण जते गर्भव्युत्क्रान्तिया तेण तिविहा प तं । तिर्य च गर्भव त तौनप्रकारे कथा ते कथ्ये इत्थी परिसा नपुंसगा। स्त्री पुरुष नपुंसक । एएसिण एवमाइयाण पज्जत्त अपज्जत्ताण उरपरिसप्पा णं दसजाति कुलकोडि जोणिपमुहसयसहस्सा हवतीति मक्खायं। एतेन इत्यादि बाहिर पर्यापा अपर्यापा उरपरिसप एषात् कुलकोटियोनिप्रमुख शतसहस्त्र इत्यादि वीतरागे कथा। सेत्त उरपरिसप्पा। एतत्त उरपरिसप कथा। सेकित भुयपरिसप्पा२ अणेगविहा प त । ते किं भुजपरिसप तेष मा अनेकभेद कथा ते कथ्ये—नउल सहा सरडा सल्ला सरठा सारासारा घरोइला विसभरा मूसा मुगुसा पयलाइया छीरविरालिया जाहा चउप्पद

या। अमीषां च नवजातिकुलकोटीना योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि भवन्ति, च पुनः शरीरादिषु विस्तर स्त्रीपुरुषपुंसकाना मत्स्यवत्त्य तज्जीवा भिगमटीकातो वक्तव्यं ॥ सेत्तमित्यादि ॥ सम्मतिखचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका भजिपिरसुराह-सक्तितमित्यादि ॥ अथ के ते खचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिकाः सूरिराह-खचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता-तद्यथा-चर्मपक्षीत्यादि ॥ चर्मोसको पक्षो चर्मपक्षीतो विज्ञेते यथास्ते चर्मपक्षिणः लोमास्पदो पक्षो लोमपक्षो तद्वन्तो लोमपक्षिणः तथा गच्छता मपि समुद्गकवत् स्थितौपक्षौसमुद्गकपक्षीतद्वन्तः समुद्गकपक्षिणः वित तौ नित्य ममाकुञ्चितौ यथा विततपक्षौ पक्षी तद्वन्तौ विततपक्षिणः से सक्तितमित्यादि ॥ अथ के ते चर्मपक्षिणः चर्मपक्षिणो नेकविधाः तद्यथा-वग्गु

थिहा पण्णत्ता, तजहा—णउला सेहा सरडा सल्ला सरंठा सारा खारा घरोइला विस्संभरा मूसा मगुसा प इलाइया च्छीरविरालिया जाहा चउप्पाइया जेयावन्नेतहप्पगारा। तेसमासउ दुविहा प०, त०—समुच्छि मा य गब्भवक्कंतियाय, तत्थण जेते समुच्छिमा ते सब्वे नपुसगा, तत्थण जेते गब्भवक्कंतिया तेण तिविहा पण्णत्ता, तजहा—इत्थी पुरिसा नपुसगा, एएसिण एवमाइयाण पज्जत्ता२ ण भुयपरिसप्पाण नवजाइकुल

या। नौल सेहवा सरट सल्ल सरंठ सारखार घरपला विसभर मूसा मुगस प्रमुखादि क्षीरविरालो जोधा चउपद इत्यादिभेद। जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासथी दुविहा प त । एहवा अनेरा तथाप्रकारे ते सक्षेपथको दोयप्रकार कह्या ते कहछे—समुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय। समूच्छिम गर्भज। तत्थण जेते समच्छिमा तेसव्व नपुसगा। तिहां समूच्छिम छे सर्व सदा नपुसकछि ?। तत्थण जेते गब्भवक्कंतिया तेण तिविहा पं तजहा। तिहां जे ग र्भज तेहना तीनभेद कहे। इत्थी पुरिसा नपुसगा। स्त्री पुरुष नपुंसक। एएसिणं एवमाइयाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण भुयपरिसप्पाण नवजाइकुलकोडी जोणीपमुह सयसहस्सा हवतीतिमक्खाय। एहने इणतरे भाखिया पर्याप्ता अपर्याप्ता भुजपरसप नवजाति कुलकोडि योनिप्रमुख शतसहस्र हुवे कोत राये कह्या। सेत्तं भुयपरिसप्पथलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया। ते एतले भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच कह्या। सेत्तं परिसप्पथलयर पंचिंदिय

सीत्यादि-एते च मदा सोकतो यसेया, जेयावचेतहप्पमाराइति ॥ ये पि चा म्ये तथा प्रकारा एव रूपा स्ते चमपक्षिणो द्रष्टव्याः, उपसंहारमा ह-सेत्तं चम्मपक्खी । लोमपक्षिप्रतिपादमार्थमाह-से किं तमित्यादि ॥ एते च लोमपक्षिभेदा लोकतो वेदितव्याः, समुद्गपक्षिप्रतिपादनार्थमाह-से किं तमित्यादिपाठसिद्धं ॥ एवं विततपक्षिसूत्र मपि ते समासतो इत्यादि प्राग्वद्भावनीयम्, एतेषां द्वादशजातिकुलकोटीनां योनिप्रमुखानि शतसह

फोडिजोणिप्पमुहसयसहस्साइं हवती तिमक्खाय। सेत्तं भुयपरिसप्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । सेत्तं परिसप्पथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया । से किंत खहयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया २ चउविहा पण्णत्ता, तंजहा—चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी वियतपक्खी । से किंत चम्मपक्खी २ अणेगविहा प०, तं० वग्गुली जलोया अडिल्ला भारंडपक्खी जीवंजीवा समुद्दवायसा कण्णत्तिया पक्खिबिराली जेयावन्नेतहप्पगारा ॥ सेत्तं चम्मपक्खी ॥ से किंत लोमपक्खी २ अणेगविहा प०, तं० ढंका कंका कुरला वायसा चक्का

ति । इतसे उरपरिसप थलचर पचेंद्रिय कह्या । सेकिंत खचर पचेंद्रिय तिरिक्खजोणिया २ चउव्विहा प त । जिके आकाशचर पचेंद्री तिर्यंचनी जि तेहना ४ भेद कह्या ते कहेछे—चर्मपक्षी लोमपक्षी समुग्गपक्षी वितपक्षी । चर्मपंखी लोमपंखी समुद्गपंखी वितनपंखी विस्तारीपांख । सेकिंत च म्मपक्खी अणेगविहा प त । जिके चर्मपंखी, ते चर्मपंखी अनेकप्रकारे कह्या ते कहेछे—वग्गुली जलोया अडला भारंडपक्खी जीवंजीवा समुद्दवायसा । वागुल जलोका अडिल भारण्डपंखी जीवजीवा समुद्रवायस । कर्णत्तिया पक्खविरालीया । कर्णत्तिया पंखविराली । जेयावन्नेतहप्पगारा सेत्त चम्मपक्खी । जे पहवा अनेराइ तथाप्रकारे ओलिखा जिके ते चर्मपंखी कह्या । सेकिंत लोमपक्खी २ अणेगविहा प त । जिके लोमपंखीनाभेद अनेकप्रकारे क ह्या ते कहेछे—ढंका कंका कुरला वायसा चक्कागा हंसा कलहंसा पायहंसा रायहंसा अडासेडी बगा बलागा । ढंकपंखी कंक कुरला कागडा चकवा हंस कलहंस पायहंस राजहंस अडासेडी बग बलाग । पारिप्पावा कुंचासारसा मेसरा मसूरा मयूरा सयवच्छा गहरा पौंडरीया कामा कामिज

याः चमीर्पा च नवचातिकुलकोटीना योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि भवन्ति य त्पुनः शरीरादिपु चिन्तम स्त्रीपुंनपुंसकाना मल्पबहुत्व तच्चीया भिगमटीकातो भावितव्यं ॥ सेत्तमित्यादि ॥ सम्मतिखचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका नजिधिरसुराह-स्वकितमित्यादि ॥ भय के ते खचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिकाः सूरिराह-खचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता-तद्यथा-चर्मपक्षीत्यादि ॥ चर्मात्मको पक्षौ चर्मपक्षौ तौ विद्येते यथास्ते चर्मपक्षिणः लोमात्मको पक्षौ लोमपक्षौ तद्वन्तो लोमपक्षिणः तथा गच्छता मपि समुद्गकवत् स्थितौ पक्षौ समुद्गकपक्षौ तद्वन्तः समुद्गकपक्षिणः वित तौ नित्य मनाकुञ्चितौ यथा विततपक्षौ पक्षौ तद्वन्तौ विततपक्षिण स्तो भक्तिमित्यादि ॥ भय के ते चर्मपक्षिणः चर्मपक्षिणो नेकविधाः तद्यथा-वग्गु

विहा पण्णत्ता, तंजहा-णउला सेहा सरडा सल्ला सरंठा सारा खारा घरोइला विस्संभरा मूसा मंगुसा प ब्वलाइया खीरविरालिया जाहा चउप्पाइया जेयावन्ने तहप्पगारा । तेसमासओ दुविहा प०, तं०-समुच्छि मा य गब्भवक्कंतियाय, तत्थणं जेते समुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा, तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेणं तिविहा पण्णत्ता, तंजहा-इत्थी पुरिसा नपुंसगा, एएसिणं एवमाइयाणं पज्जत्ता२ णं भुयपरिसप्पाणं नवजाइकुल

वा । नौल सेहका सरट थल सरन्त सारखार घरापत्ता विषभर मूषा हुमस मचपादि क्षीरविराली योधा चतुष्पद वृषाविशेष । जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा प ० तं । एवमा च भनेरा तथाप्रकारे ते संक्षेपतो द्विप्रकारे कथा ते कथके-समुच्छिमाव गर्भवक्रान्तियाव । समूर्च्छिम यभज । तत्रथ जेते समुच्छिमा तेसव्वे नपुंसगा । तिर्हा पन् एकम सर्व यदा नपुंसकलिङ्गी । तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेथ तिविहा पं तंजहा । तिवा जे भ भज तेहना तीनभेद कहे । इत्थी पुरिसा नपुंसगा । स्त्री पुरुष नपुंसक । एएसिण एवमाइयाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण भुयपरिसप्पाण नवजाइकुलकोडी जोणीपमुह सयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं । एहने इत्यादिक पर्याप्ता अपर्याप्ता भुजपरिसर्प नवजाति कुलकोडि योनिप्रमुख शतसहस्र कहे गोत रागे कह्या । सेत्तं भुयपरिसप्पथलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया । ते एतले भुजपरिसर्प थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच कह्या । सेत्तं परिसप्पथलयर पंचिंदिय

वि श्रीन्द्रियाणां मष्टौ, चतुरिन्द्रियाणां नव जलचरपञ्चेन्द्रियाणां मर्धत्रयोदशानि चतुःपदस्थलचरपञ्चेन्द्रियाणां दश उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चे न्द्रियाणां दश भुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियाणांनव खेचरपञ्चेन्द्रियाणां द्वादशेति सप्तसारसाद्द—सत्तमित्यादि ॥ तदेव मुक्ताः पञ्चेन्द्रियते यग्योनिकाः सम्प्रतिमनुष्यान जिघित्सु राह-सकितमित्यादि ॥ मत्रापि सम्मूर्छिममनुष्यविषय मवपनवपुमानतः स्त्रियाणामपि च साक्षा द्वग

मासा दुविहा प०, तं० समुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। तत्थ णं जेते समुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा तत्थ णं जेते गब्भवक्कंतिया ते णं तिविहा प०, तं० इत्थी पुरिसा नपुंसगा। एएसि णं एवमाइयाणं खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं बारसजाइकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं, सत्तट्ठ जाइकुलकोडिलक्खनव अद्धतेरसाइं च। दसदस य होंति णवगा तह बारस चेव बोधव्वा ॥१॥ सेत्तं खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया॥ सेत्तं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया॥ सेत्तं तिरिक्खजोणिया॥ से किं तं मणुस्सा? २ दुविहा प०,

तियाय। सम्मूर्छिम गर्भज। तत्र ये समुच्छिमास्ते सर्वे नपुंसका। तिर्यो ये सम्मूर्छिम ते सब नपुंसक। तत्र जेते गर्भवक्रांतियास्ते तिविहा प त। तिर्यो ज गर्भज ते तीनभेद कह्या ते कहेछे—स्त्री पुरिसा नपुंसका। स्त्री पुरुष नपुंसक। एएसिं एवमाइयाणं खहयरपंचेंद्रियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं बारसजाईकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं। खेचरपक्षी पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक पर्याप्ता अपर्याप्ता बारेलाख कुल कोडि योनिप्रमुख ए बेलाख सर्व कह्या वीतराग— सत्तट्ठजाइकुलकोडि लक्खनव अद्धतेरसाइंच दसदसयहुंतिणवगा तहबारसचेवबोधव्वा। बेंद्रियने सा त लाख कुलकोडी तेंद्रिय आठलाख चौरिन्द्रिय नवलाख जलचर पंचेंद्रिय १२॥ लाख चोपद थलचर पंचेंद्रिय १० लाख उरपरसर्प थलचरपंचेंद्रिय दशला ख भुजपरसर्प ९ लाख खेचर १२ लाख। सेत्तं खहयर पंचि दियतिरिक्खजोणिया। एतले खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक जोयवा। सेत्तं तिरि क्खजोणिया सकितं मणुस्सा २ दुविहा प त। हिवे तिर्यंचयोनिया कह्या ते हिवे मनुष्यना भेद पूछेछे, ते मनुष्यना दोयभेद कह्या तेकहेछे—समुच्छिम

त्वाचि ममीपा मपि शारीरादिषु द्वारेषु चिमर्श स्त्रीपुंनपुंसकाना मल्पबहुत्व च जीवाभिगमटीकातः प्रतिपत्तव्य मिथस्तु ग्रन्थगौरवभयात्र लिख्यते। अधुना विनयजनानुग्रहाय द्वीन्द्रियप्रभृतिजातिकुलकोटिगतसंख्यासंख्याप्रतिपादिका सङ्ग्रहगाथा माह-सत्तठजाइकुलकोडिलक्खनवअद्धतेरसा इव। दससयदोतिनवमा सइयारतबेवबोधव्वा ॥ १ ॥ अत्र द्वीन्द्रियस्य यथासङ्ख्येन सङ्ख्यापदयोजना सा चैव-द्वीन्द्रियाणां सप्तजातिकुलकोटिलक्षा

गा हंसा कलहंसा पायहंसा रायहंसा अडा सेडीयगा बलागा पारिप्पवा कुंचा सारसा मेसरा मसूरा मऊ रा सतवच्छा गहरा पोंडरीया कागा कामिंजुगा वंजुलगा तित्तिरा वट्टगा लावगा कवोया कविंजला पारे वया चिडगा चासा कुक्कुडा सुगा बरहिणा मदणसला कोकिला सेणहा वरेल्लग मादी। सेत्तं लोमपक्खी। से किंतं समुग्गपक्खी? एगागारा प०, ते णं नत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवंति। सेत्तं समुग्गपक्खी। से किंतं विततपक्खी? एगागारा प०, ते णं नत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति। सेत्तं विततपक्खी। तेसं

मा विशालता। पारिगवा क्रौंच सारस मसर मसूरी मयूर सतवच्छ गहर पाण्डरक काग कामञ्जुगा विञ्जुगा। तित्तिरा वट्टगा लावगा कपोता कपिञ्जला पारेवया चिडगा चासा कुक्कुडा सुगा बरहिणा। तीतर बटेर लावक कपोत कपिञ्जल पारेवा चिटक चास कूकडा सूवा मोर। मदनशलाका कोयल सेणा वरिल्लकादि। लोमपक्षी समाप्त हुए। अब चर्मपक्षी समुग्गपक्षी कहते हैं। समुग्गपक्षी एक ही प्रकार के हैं। सेतं चर्मपक्षी सेकिंतं समुग्गपक्खी २ एगागारा प० तं। चर्मपक्षी तथाप्रकारे डिब्बे समुद्गपक्षीना एकज भेदवाले पक्षी कहलाते हैं। तेणं नत्थि इह बाहिरिएसु दीवसमुद्देसु हवंति। इस द्वीपमें नहीं बाहिरके द्वीपसमुद्रोंमें होते हैं। सेत्त समुग्गपक्खी सेकिंतं विततपक्खी २ एगागारा पं० त०। एतके समुद्गपक्षी कहा कि वे विततपक्षी ते विततपक्षीना एकज भेद छे। तेणं नत्थि इह बाहिरिएसु दीवसमुद्देसु हवंति। ते इहां अढाईद्वीप में जम्बूद्वीप घातकी पुष्करार्ध नहीं बाहिरके द्वीपसमुद्रोंमें होते हैं। सेत्त विततपक्खी ते समासओ दुविहा प० तं०। एतके विततपक्षी ते संक्षेपथकी दोयप्रकार कह्या तेम कहे—सम्मुच्छिमाय गर्भवक्को

द्वीपा श्रादर्शा यत्र ताश्च श्रमाथा स्ताव दपान्तरासा सम्प्रामान यत्र धिवरिपवतपूर्वापरदिग्व्यवस्थिता श्रपि तसी त्यन्तपृथग्नया व्यक्तिभेद ममपश्य श्रन्तरद्वीपा अष्टाविंशतिसंख्या एव विवक्षिता इति तज्जाता मनुष्या श्रपि अष्टाविंशतिविधा उक्ता सामय नामग्राहमु पदर्शयति–तंजहा श्रनाकृया इत्यादि । एत मनुष्या अष्टाविंशतिसंख्या स् एत च मत्यक हिमवत शिखरिणि तत्र हिमवद्गततपातायङ्गाश्मन्त इह जम्बूद्वीपे भरतस्य हैमवतस्य च क्षत्रस्य सीमाकारा भूमिनिमग्नपश्चविंशतियोजनमयोजनशतोच्छ्रयपरिमाणो भरतक्षत्रापक्षया द्विगुणविस्तरा हेममय चीनपट्टवर्णोभानावच

या विगयकलवरेसु वा इत्थीपुरिससंजोएसु वा नगरनिद्धमणेसु वा सव्वेसुचेव असुइएसु ठाणेसु एत्थण समुच्छिममणुस्सा समुच्छंति, अंगुलस्स असंखिज्जइभागमित्तोए ओगाहणाए असन्नी मिच्छदिठी अन्नाणी सव्वाहिं पज्जत्तीहिं अपज्जत्तगा अंतोमुहुत्ताउया चेव कालं करंति । से किंत गब्भवक्कंतियमणुस्सा २ तिविहा पण्णत्ता, तंजहा–कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा से किंत अंतरदीवया ? अंतरदीवया अट्ठावीसतिविहा पण्णत्ता, तंजहा एगोरुया आहासिया वसाणिया णंगोली १ हयकन्ना गयकन्ना गोक

रायविषे सावित रुधिरमांहि मूत्रमांहि मूत्रापुरुषना माथा तेहमेविषे जीवविना कलेवरमांहि । जो परिमसमाण्मुवा नगरनिद्धमणमेसवा गामनिद्धमणे मवा सर्वमषन्न पमारमठाणमु । जो पवय सयागमांहि नगर पावमांहि ग्राम पावमांहि मगली पर्याप्त पपविना रयानममांहि । इत्यन समच्छि मा मनग्मा मरूपहति । इहां सम्मूर्छिम मनुष्य ऊपजे । मगुलमा पसंखिज्जरभागमित्ताय पगाहणाए । मतसम अंगुलने असंख्यातभागे पवगाहना । पसन्नो मिच्छादिठ्ठी पन्नानी सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पपज्जत्तगा पतामहुत्ताउयापव कालकरति । पसन्नी मिथ्यादृष्टी अज्ञानी सर्वपर्याय पपर्याप्ते पन्तर्मुहूर्त पाउखा तवे कालकरे । सत्त समच्छिमसमपमा । त सम्मूर्छिममनुष्य कहिये । सकिंत गब्भवक्कंतियमणुस्सा २ तिविहा प त । हिवे ते गर्भजमनु ष पूछे शिष्य गुरुकने, ते गर्भजमनुष्यना तीनभेद कह्या तेकहे—कर्मभूमिगा १५ पकर्मभूमिगा १ पन्तरदीवगा २ पठ्ठावीसविहा प त । पमम

घते द मुस्त मिति यद्गुमानोत्पादनाथमत्तगत मालापक पठति-कविय णते इत्यादि ॥ सुगम मवर ॥ सव्वेसु चेव पञ्चु छायेसुत्ति ॥ अन्यास्वपि या निकामिविस मनुष्यसगवथादग्न विभूतानि स्थानानि तपु सर्वेष्विति तथा सम्मूच्छिममनप्या। अधुनागर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यप्रतिपादनार्थमाह सक्कि तमित्यादि ॥ कम्मभूमिगा इति ॥ कम कृषिवाणिज्यादि मोक्षानुष्ठान वा कम प्रधाना भूमि येपाते कर्मभूमा आपस्यात्समासान्ताऽप्रत्ययः कमभूमा यव कमभूमिका एव मकर्मा यथोक्तकमविकला भूमि येषान्त अकमभूमा स एवा कमभूमिका अन्तरशब्दो मध्यवाची अन्तरे लवणसमुद्रस्य मध्ये द्वीपाः अन्तरद्वीपा तद्गता अन्तरद्वीपगा अस्ति पश्चानुपूर्वीतिन्यायख्यापनार्थं प्रथमतोऽन्तरद्वीपगान् प्रतिपादयति ॥ सक्कितमित्यादि ॥ सुगम नय र महाविंशतिविधा इति यादृशा एव यावत्प्रमाणा यावदन्तराला यन्नामानो हिमवत्पर्वतपूर्वापरदिग्व्यवस्थिता अष्टाविंशतिविधाः अन्तर

त० समूच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य। से किंत समुच्छिममणुस्सा, कहिणं भंते। समूच्छिम मणुस्सा समुच्छंति? गोयमा! अन्तो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पण्णरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवएसु गब्भवक्कंतियमणुस्साणं चेव उच्चारेसु वा पासवणेसु वा खेलेसु वा सिंघाणएसु वा वंतेसु वा पित्तेसु वा पूएसु वा सुक्केसु वा सुक्कपोग्गलपरिसाडेसु

ममनुष्याय न्युत्क्रान्तिक मनुष्याव। त समूच्छिममनुष्य गर्भजमनुष्य। सक्कित समूच्छिममनुष्या। क्वि समूच्छिम मनुष्य कहेके—कहण भते समुच्छिम मनुष्या समुत्पद्यति। किम इत्यामिन्। समूच्छिममनुष्य उपजे। मनुष्यक्षेत्र पंचतालीस लाख योजन प्रमाण। ४५ लाख योजन मनुष्यक्षेत्रमाहि। प डाइ द्वीप समुद्र पनरस कर्मभूमीय तीस अकर्मभूमीय छपन अन्तरद्वीपस। अढाइद्वीप समुद्रमाहि १५ कर्मभूमिमाहि ३ अकर्मभूमिमे ।व य ५६ अन्तरद्वीपमाहि। गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्य चेव। गर्भजमनुष्यना शरीरथी उपजे तिके। उच्चारेसुवा पासवणेसुवा खेलेसुवा सिंघाणेसुवा विपसवा। द्वीन्द्रिय विषे शलेष्मविषे प्रथम मालनामसमाहि बमनमाहि। पित्तसुवा पूएसुवा सोणियसुवा सुक्कसुवा सुक्कपुग्गलपरिसाडेसुवा। पित्तमाहि

द्विगव्यूतोच्छ्रितया पद्मवरवेदिकया सर्वतः परिक्षिप्तः तस्या च पद्मवरवेदिकाया वर्णको जीवाभिगमटीकाया मिव वेदितव्यः सा पि च पद्म वरवेदिका सर्वतः सामस्त्येन वनखण्डपरिक्षिप्ता वना च वनखण्डस्या ऽय विग्रहः प्रायो बहूना समानजातीयाना मुत्तमाना महीरुहाणां समुदायो वन यथा अशोकवन चम्पकवनमिति अनेकजातीयाना मुत्तमाना महीरुहाणा समूहो वनखण्डः, उक्त च जीवाभिगममूलटीकाया–एगजाइएहिं रुक्खेहिं वण अणेगजाइएहिं उत्तमेहिं वणसंडे इति। तस्य च वनखण्डस्य चक्रवालतया विष्कम्भो देशोने द्वे योजने परिक्षेप पद्मवरवेदिकाप्रमाणः अस्य च वनखण्डस्य वर्णकः प्रतिपादितोऽस्ति स चा तीयवणीयामिति नो प्रदर्शित ॥ केवलं जीवाभिगमटीकातो ज्ञेयः। तस्यैव हिमवतः पर्वतस्य पर्यन्तादारभ्य दक्षिणपूर्वस्यां दिशि त्रीणि योजनशतानि लवणसमुद्र मवगाह्य द्वितीयदंष्ट्राया उपरि एकोरुकद्वीपप्रमाण आभाषिकनामद्वीपो वक्त तथा तस्यैव हिमवतः पश्चिमाया दिशि पर्यन्ता दारभ्य दक्षिणपश्चिमाया नैऋतकोण इत्यर्थः, त्रीणि योजनशतानि लवणसमुद्र मवगाह्य

दंष्ट्राया उपरि यथोक्तप्रमाणो वैषाणिकनामा द्वीपः, तथा तस्यैव हिमवतः पश्चिमाया दिशि पर्यन्ता दारभ्य पश्चिमोत्तरस्यां दिशि वायव्यकोण इत्यर्थः त्रीणि योजनशतानि लवणसमुद्रमध्ये दंष्ट्रामतिक्रम्या न्तरे पूर्वोक्तप्रमाणो नांगोलिकनामा द्वीपः एव मते चत्वारो द्वीपा हिमवत एत स्यापि विदिक्षु तुल्यप्रमाणा अवतिष्ठन्त उक्तं च–चुल्लहिमवंतपुव्वा वरेणविदिसासुसागरंतिसए। गंतूणंतरदीवा तिण्णिसए हुंति विच्छिन्ना ॥ १ ॥ अउणापन्ननवसए किंचूणपरिहि तेसि म नामा इमासय आभासिय वेसाणिय चव नगूली ॥२॥ तत एषा मेकोरुकादीनां चतुर्णा द्वीपानां परतो यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येक चत्वारि २ योजनशतान्य तिक्रम्य चतुर्योजनशतायामविष्कम्भाः किंचिन्न्यूनपंचषष्ठ्यधिकद्वादशयोजनशतपरि रूपा यथोक्तपद्मवरवेदिकावनखण्डमण्डितपरिसरा जम्बूद्वीपवेदिकात चतुर्योजनशतप्रमाणान्तरा हयकर्णगजकर्णगोकर्णशष्कुलीकर्णनामानश्चत्वारो द्वीपा तद्यथा–एकोरुकस्य परतो हयकर्णः आभाषिकपरतो गजकर्णः, वैषाणिकस्य परतो गोकर्णः, नांगोलिकस्य परत शष्कुलीकर्ण इति, तत

विशिष्टद्युतिमद्विविधरत्नपरिमण्डितोभयपार्श्वः सर्वत्र तुल्यविस्तारो गगनमण्डलोऽल्लेखि रत्नमयैकादशकूटोपशोभितो वज्रमयतलविविधमणिकनकम ण्डिततटभागदशयोजनावगाढपूर्वपश्चिमयोजनसहस्रायामद्विपञ्चाशद्योजनशतविस्तारः पद्मद्रहोपशोभितशिरोमध्यभागः सर्वतः कल्पपादपश्रेणि रमणीयः पूर्वापरपर्यन्ताभ्यां लवणोदार्णवजलस्पर्शी हिमवन्नामपर्वतः तस्य लवणोदार्णवजलसंस्पर्शादारभ्य पूर्वस्यां पश्चिमायां च दिशि प्रत्येकं द्वे द्वे गजदन्ताकारे दंष्ट्रे विनिर्गते तत्र ऐशान्यां दिशि या विनिर्गता दंष्ट्रा तस्यां हिमवतः पर्यन्तादारभ्य त्रीणि योजनशतानि लवणसमुद्रमवगाह्य अत्रान्त रे योजनशतत्रयायामविष्कम्भः । किञ्चिन्न्यूनैकोनपञ्चाशदधिकनवयोजनशतपरिरय एकोरुकनामा द्वीपो वक्तव्यः–प्रथमं पञ्चधनुःशतप्रमाणविष्कम्भया

न्ना सक्कुलिकन्ना २ आयसमुहा मेढमुहा अयमुहा गोमुहा ३ आसमुहा हत्थिमुहा सीहमुहा वग्घमुहा ४ आसकन्ना सीहकन्ना अकन्ना कणपाउरणा ५ उक्कामुहा मेहमुहा विज्जुमुहा विज्जुदंता ६ घणदंता लट्ठदंता गूढदंता सुद्धदंता ७। सेत्तं अंतरदीवगा। से किं तं अकम्मभूमिगा? २ तीसतिविहा पन्नत्ता, तं० पंचहिं हेमवएहिं पंचहिं हेरन्नवएहिं पंचहिं हरिवासेहिं पंचहिं रम्मगवासेहिं पंचहिं देवकुरूहिं पंचहिं

मिका १५ अकर्मभूमिका ३० अन्तरद्वीपकाश्च २८ भेदेन वक्ष्यन्ते तद्यथा—एकोरुका आभासिका वैषाणिका नाङ्गोलिका ४। एतेषामेव आभासिकवैषा णिकनाङ्गोलिकानां हयकर्णा गजकर्णा गोकर्णा शष्कुलीकर्णा ८। हयकर्ण गजकर्ण गोकर्ण शष्कुलीकर्ण। आदर्शमुखा मेण्ढमुखा अयोमुखा गोमुखा अश्वमुखा ह स्तिमुखा सिंहमुखा व्याघ्रमुखा १६। आदर्शमुख मेण्ढमुख अयोमुख गोमुख अश्वमुख हस्तिमुख सिंहमुख व्याघ्रमुख। अश्वकर्णा सिंहकर्णा अकर्णा कर्णप्रा वरणा २ । अश्वकर्ण सिंहकर्ण अकर्ण कर्णप्रावरण। उल्कामुखा मेघमुखा विद्युन्मुखा २१। उल्कामुख मेघमुख विद्युन्मुख। विद्युद्दन्ता घनदन्ता लष्टदन्ता गू ढदन्ता शुद्धदन्ता २८। विद्युद्दन्ता घनदन्ता लष्टदन्ता गूढदन्ता शुद्धदन्ता इति एवमादि २८ ते। सेत्तं अन्तरद्वीपगा। अन्तरद्वीप २८ मिथ्यादृष्टिपर्याप्त पञ्चेन्द्रिय २८ जीवाभिगम टीकामांहि विस्तारपणे। संक्षेपतः अकर्मभूमिका २ तासां त्रिंशद्विधा प त । त्रिंशदकर्मभूमिका तीसभेदवे तद्यथा—पंचहि हेमवत

द्रहप्रमाणायामविष्कम्भगाढपुण्डरीकद्रहोपशोभिते शिखरिण्यपि पर्वते सर्वतोदाधलवणसमुद्रादारभ्य पञ्चोत्तमप्रमाणान्तरासु चतसृषु विदिक्षु व्यवस्थिता एकोरुकादिनामानः पूर्वापान्तरालायामविष्कम्भा अष्टाविंशतिसंख्या द्वीपा वक्तव्याः सर्वसंख्यया षट्पञ्चाशदन्तरद्वीपाः एतद्गता मनुष्या अप्युपचारात्तद्व्यपदेशो यथा पञ्चालदेशनिवासिनः पुरुषाः पञ्चाला इति तेऽत्र मनुष्या वज्रऋषभनाराचसंहननिनः कङ्कपरिणामाः अनुलोमवायुवेगाः समचतुरस्रसंस्थानाः सुप्रतिष्ठितकूर्मचारुचरणाः सुकुमारसुसंवृतविरलरोमकुरुविन्दवृत्तजङ्घायुगलाः निगूढसुबद्धसन्धिजानुप्रदेशाः करिकरसमवृत्तोरवः कण्ठीरवकटीप्रदेशाः वज्रायुधवत्सममध्यभागाः प्रदक्षिणावर्तनाभिमण्डलाः श्रीवत्सलाञ्छितविशालमांसलवक्षस्थलाः पुरपरिघानुकारिदीर्घबाहवः सुश्लिष्टमणिबन्धाः रक्तोत्पलपत्रानुकारिकोमलपाणिपादतलाः चतुरङ्गुलप्रमाणसमवृत्तकम्बुग्रीवाः शारदशशाङ्कसौम्यवदनाः छत्राकारशिरसो ऽस्फुटितस्निग्धकान्तिश्लक्ष्णमूर्धजाः कमलकलशयूपस्तूपवापीध्वजपताकास्वस्तिकयवमत्स्यमकरकूर्मरथवरस्थालाङ्कुशाष्टापदाङ्कुशसुप्रतिष्ठमयूरश्रीदामाभिषेकतोरणमेदिनीजलधिवरभवनादर्शपर्वतगजवृषभसिंहचामररूपप्रशस्तमहाद्वात्रिंशल्लक्षण

उत्तरकुरूएहिं सेत्तं अकम्मभूमगा। से किं तं कम्मभूमगा ? २ पण्णरसविहा पण्णत्ता, तंजहा पंचहिं भरहेहिं पंचहिं एरवएहिं पंचहिं महाविदेहेहिं ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा आयरिया य मिलक्खू य। से

हिं पंचहिरण्णवएहिं पंचहिं हरिवासेहिं पंचहिं रम्यगवासेहिं पंचहिं देवकुराहिं पंचहिं उत्तरकुराहिं। पांच हेमवन्त क्षेत्रनी पांच हिरण्यवन्त क्षेत्र नी पांच हरिवास क्षेत्रनी पांच रम्यकक्षेत्रनी पांच देवकुरु क्षेत्रनी पांच उत्तरकुरु क्षेत्रनी। सेत्तं अकम्मभूमिगा सेकिंतं कम्मभूमिगा २ पण्णरस विहा प ०त ०। ते कर्मभूमि कहिये तिके कर्मभूमि पन्नरह प्रकार कह्या ते कहे छे — पंचहिं भरहेहिं पंचहिं एरवएहिं पंचहिं महाविदेहेहिं ते समासओ दुविहा पं०त०। पांच भरतक्षेत्रनी ५ एरवत क्षेत्रनी ५ महाविदेहक्षेत्रनी ए संक्षेपथको बेप्रकारे कह्या ते कहे छे — आयरियाय मिलिक्खूय। आर्यमनुष्य बीजा म्लेच्छमनुष्य। सेकिंतं मिलक्खू २ अणेगविहा प ०त०। तिहां म्लेच्छमनुष्य ते अनेकप्रकारे कह्या। सगा जवणा चिलाया सबरा बब्बर

एतेषा मपि हयकर्णादीनां परतः पुन रपि यथाक्रमं पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येकं पञ्च २ योजनशतानि व्यतिक्रम्य पञ्चयोजनशतायामविष्कम्भा एका शीत्यधिकपञ्चदशयोजनशतपरिक्षेपाः पूर्वोक्तप्रमाणपद्मवरवेदिकावनखण्डसमविकृतबाह्यप्रदेशाः जम्बूद्वीपवेदिकातः पञ्चयोजनशतप्रमाणान्तरा आदर्शमुख १ मेंढमुख २ अयोमुख ३ गोमुख ४ नामानश्चत्वारो द्वीपाः तद्यथा-हयकर्णस्य परत आदर्शमुखो गजकर्णस्य पुरतो मेंढमुखः गोकर्णस्य परतो ऽयोमुखः शष्कुलीकर्णस्य पुरतो गोमुख इति एवं मग्रापि भावना कार्या एतेषां मप्या दर्शमुखादीनां चतुर्णां द्वीपानां परतो भूयो पि यथाक्रमं पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येकं षट्षट्योजनशतान्य तिक्रम्य षट्योजनशतायामविष्कम्भाः सप्तनवत्यधिकाष्टादशयोजनशतपरिक्षेपा यथोक्तप्रमाणपद्मवरवेदिकावनखण्डसमविकृतपरिसरा जम्बूद्वीपवेदिकातः षट्योजनशतप्रमाणान्तरा अश्वमुखहस्तिमुखसिंहमुखव्याघ्रमुखनामानश्चत्वारो द्वीपाः, एतेषा मप्य ऽश्वमुखादीनां चतुर्णां द्वीपानां परतो यथाक्रमं पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येकं सप्तयोजनशतान्य तिक्रम्य सप्तसप्तयोजनशतायामविष्कम्भा

त्रयोदशाधिकद्वाविंशतियोजनशतपरिरयाः पूर्वोक्तप्रमाणपद्मवरवेदिकावनखण्डसमवगूढा जम्बूद्वीपवेदिकातः सप्तयोजनशतप्रमाणान्तरा अश्वकर्णहरिकर्णअकर्णकर्णप्रावरणनामानश्चत्वारो द्वीपाः स्तत एतेषा मप्यश्वकर्णादीनां चतुर्णां द्वीपानां परतो यथाक्रमं पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येकमष्टा वष्टौ योजनशतान्य तिक्रम्याष्टयोजनशतायामविष्कम्भा एकोनत्रिंशदधिकपञ्चविंशतियोजनशतपरिक्षेपा यथोक्तप्रमाणपद्मवरवेदिकावनखण्डसमविकृतपरिसरा जम्बूद्वीपवेदिकातोऽष्टयोजनशतप्रमाणान्तरा उल्कामुखमेघमुखविद्युन्मुखविद्युद्दन्तनामानश्चत्वारो द्वीपास्ततो ऽमीषा मप्युल्कामुखादीनां चतुर्णां द्वीपानां परतो यथाक्रमं पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येकं नवनवयोजनशतानि व्यतिक्रम्य नवनवयोजनशतायामविष्कम्भाः पञ्चचत्वारिंशदधिकाष्टाविंशतियोजनशतपरिक्षेपा यथोक्तप्रमाणपद्मवरवेदिकावनखण्डसमवगूढा जम्बूद्वीपवेदिकातो नवयोजनशतप्रमाणान्तरा घनदन्तलष्टदन्तगूढदन्तशुद्धदन्तनामानश्चत्वारो द्वीपाः एव मेते हिमवति पर्वते चतसृषु विदिक्षु व्यवस्थिताः सर्वसंख्यया अष्टाविंशतिः एवं हिमवत्तुल्यवर्णप्रमाणे पद्म

हितस्या दSइमिंद्राः तथा पद्मरत्नफलानि चतुःपष्टिघण्टाकानि पतुपातिक्रमेण वा हारयष्ट्य भाशारो पिन शाल्यादिधान्यनिष्पत्ति किंतु पृथि वीमृत्तिका कल्पद्रुमाणां पुष्पफलानि च तथा हि कायस्त खलु तत्रापि विषसा त एव शालिगोधूममाषमुद्गादीनि धान्यानि चर न तानि मनुष्या णा मुपभोग गच्छन्ति या तु पृथिवी सा शर्करातो Sप्यनन्तगुणमाधुर्या य च कल्पद्रुमपुष्पफलानां मास्वाद स चक्रवर्तिभोजना दप्य धिकगुणः, तथा चात्र-तविष भत पुष्पफलाव करिम चासाय पवत्त गा० १ स सदा नाम ए रयो चाउरतस्सचक्कयहिस्स कल्लाण भोयणभाए सयसस्सह स्समिप्पन्न वक्कावेगणोववमरसोववयफासोववय भासायणिज्जदप्पणिज्ज मयणिज्ज विहायज्ज सव्विंदियगायपल्हायणिज्जभासाएण पवत्त एत्त इच्छराय चय पवत्त ततः पृथिवीकल्पद्रुमपुष्पफलानि च तेषा माहारः तथाभूत माहार माहाय प्रासादादिसंस्थाना य गेहाकाराः कल्पद्रुमा स्तेषु यथासुखम वतिष्ठन्ते, न च तत्र दंश मशकयूकामत्कुणमक्षिकादयः शरीरोपद्रवकारिणो जन्तव उपजायन्ते ये Sपि जायन्ते भुजगव्याघ्रसि हादय त पि मनुष्याणां न बाधायै प्रभवन्ति नापि ते परस्परं हिंस्यहिंसकभाव वहन्त कालानुभावतो रौद्रानुभावरहितत्वात् मनुष्ययुगलानि च पश्चिमभावेष्व युगलं प्रसवन्ते त च युगलं कोनाशीतिदिनानि पालयन्ति तथा शरीरोच्छ्रयो Sपि धनुःशतानि पल्योपमा सङ्ख्यातभागप्रमाण मा युः उक्तञ्च युगलधर्मिणः मराः पञ्चुसयमणुस्सिया सया मुइया। पालति युगधम्म पलस्सअसंखभागाऊ ॥ १ ॥ चउसट्ठीपिट्ठकरंडयाणि मणुयाण तसि माहारो। भत्तस्स चउत्थस्स य गुणसीइदिणाणि पालणया ॥ २ ॥ स्तोककषायतयास्तोकप्रमानुबन्धतयाच Sते मृत्वा दिव मुपसर्पन्ति मरण च तथा

हारग यहलिय छुजाल रोम पास यउसा मलयाय घधुयाय सूयलि कुकुणगमेछ्र परहय मालय मग्गर
छ्यात्तासिय फण वीरण रहासीय खसखासिय नेटूर मढ क्रोयिलग लउस खउस क्कोक्का श्वरयागा ह्र ग

मढ डौंबिल गल थणम पवस धवेय परवा मप्प राम गल्लत रामग मव मवय चिलाय विसयवासीय पवमाद। सूयसना कौंवचना कवचना मेदना माहवना मनरना पमाविवना बघोरना बहाविना पउना पासिय नेरना मढना डौंविलना गवना चसतना वइसना कतना पवेना गोप

परा स्त्रियापि सुजातसर्वाङ्गसुन्दय समस्तमहिलागुणसमन्विताः संहतांगुलिपद्मदलप्रत सुकुमारकूर्मसंस्थानमनोहारिचरणाः रोमरहितप्रशस्तलक्षणोपेतजङ्घायुगला निगूढमांससजानुप्रदेशाः कदलीस्तम्भनिभसंहतसुकुमारपीवरोरवः वदनायामप्रमाणत्रिगुणमांसलविशालजघनधारिण्य स्निग्धकान्तिसुविभक्तसल्लरोमराजयः प्रदक्षिणावर्ततरंगभंगुरनाभिमण्डला प्रशस्तलक्षणापेतकुक्षय संनतपार्श्वाः कनककलशोपमसंहतात्युन्नतवृत्ताकृतिपीवरपयोधराः सुकुमारबाहुलतिकाः सौवस्तिकशङ्खचक्राद्याकृतिरेखासङ्कुलपाणिपादतला वदनत्रिभागोच्छ्रितमांसलकम्बुग्रीवा प्रशस्तलक्षणोपेतमांसलहनुविभागा दाडिमापुष्पानुकारिरक्तोष्ठाधराः रक्तोत्पलतानुजिह्वा विकसितकुवलयपत्रायतकान्तलोचना आरोपितचापपृष्ठाकृतिसुसङ्गतभ्रूलताका प्रमाणोपपन्नललाटफलकाः सुस्निग्धकान्तसत्त्वशिरोरुहाः पुरुषेभ्यः किञ्चित् न्यूनोच्छ्रायाः स्वभावतउदारशृङ्गारचारुवेषाः प्रकृत्यैव हसितभणितविलासविषयपरमनैपुण्यापेता सर्वा मनुष्या मानव्य च स्वभावत एव सुरभिवदनाः प्रतनुक्रोधमानमायालोभाः सन्तोषिणो निरुत्सुका मार्दवार्जवसम्पन्नाः सत्यपि मणिकनकादिके ममत्वकारणे ममत्वाभिनिवेशरहिताः वयपगतवैरानुबन्धा हस्त्यश्वकरभगोमहिष्यादिसद्भावेपि तत्परिभोगे पराङ्मुखाः पादविहारिणः ज्वरादिरोगयक्षभूतपिशाचादिग्रहमारिव्यसनोपनिपातविकलाः परस्परप्रेष्यप्रेषकभावर

क्रित मिलक्खू १ २ खणगविहा पणत्ता , तजहा सग जवण चिलाय सबर बब्बर काय मुरुंडोड्ड ब्भडग णि
ण्णग पक्कणिय कुलक्ख गोंड सीहल पारस गोधव्व दमिल चिल्लल पुलिंद हारोस दोबवोक्काण गंध

रा काय भाडा दमइय तिथ । पढवि । बबरदेसगा चिलायदेसगा मयरदेसगा बब्बरदेसगा कायदेसगा मरुंडदेसगा ओड्डदेसगा तोषदेसगा पक्कण
मका । कलुराङ गेड माहव पारस कोंच पल्हव दमिल चिल्लल पलिंद हाराम डोंच वाकाण मधकारग बहलिय पच्छल रामा पासा बलसा मख
याम बब्बाय । कुललदेसगा गोंडगा सिंहलगा पारसगा कोंचगा पल्हवगा दमिलगा चिल्ललगा पलिंदगा हारासगा डोंबगा बोक्काणगा गन्धाहारगा बह
लगा पच्छलगा रामगा पासगा पलगा मखयगा बधुगा । मूर्यलि कोंकण मडवरगा मालव समर पभासिया कक्केर बवाडीय चपा कालिय मेहर

भिलत्या दशमिश्राः तथा पुष्करफलानि चतुःषष्टिसङ्ख्याकानि चतुर्थातिक्रमेण वा हारमप्यं चाहारो पिष्ट शाल्यादिपाध्यनिष्पद्यः किन्तु पृथि वीगुणिका कल्पद्रुमाणां पुष्पफलानि च तथा हि कायमन्त खलु तथापि विग्रसा त एव शालिगोधूममाषमुद्गादीनि धान्यानि चर न तानि मनुष्या णा मुपभोग गच्छन्ति या तु पृथिवी सा शर्करातो ऽप्यनन्तगुणमाधुर्या य च कल्पद्रुमपुष्पफलानां मास्वादः स चक्रवर्तिभोजनादप्य धिकगुणः तथा चाह-तसिण भत्त पुष्पफलाण करिस चासाय पयात गा० ? स जहा नाम ए रन्नो चाउरन्तस्स चक्कवट्टिस्स कल्लाण भोयणजाए सयसहस्स निप्पन्ने वण्णवेणोववेए गंधेणोववेए रसेणोववेए फासेणोववेए आसायणिज्जे वीसायणिज्जे दीवणिज्जे मयणिज्जे विहणिज्जे सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे, आसाएण पन्नत्ते एत्तो इट्ठतराए चेव पन्नत्ते ततः पृथिवीकल्पद्रुमपुष्पफलानि च तेषां माहारः तथाभूत माहार माहार्य प्रासादादिसंस्थाना ये गेहाकाराः कल्पद्रुमा स्तेषु यथासुखम वतिष्ठन्त न च तत्र क्षुद्र दंशमशकयूकामत्कुणमक्षिकादयः शारीरोपद्रवकारिणो जन्तव उपजायन्त ये ऽपि जायन्ते भुजगव्याघ्रसिं हादय स्ते ऽपि मनुष्याणां न बाधायै प्रभवन्ति नापि ते परस्परं हिंस्यहिंसकभाव वर्तन्ते कालानुभावतो रौद्रानुभावरहितत्वात् मनुष्ययुगलानि च पर्यवसानसमये युगलं प्रसवन्ते तच्च युगलम् एकोनाशीतिदिनानि पालयन्ति तथा शरीरोच्छ्रयो ऽष्टौ धनुःशतानि पल्योपमा सङ्ख्येयभागप्रमाण मायु स्तस्मिन् भरतक्षेत्रेषु नरा धनुःशतमष्टकसहस्रया सदा मनुष्या। पालन्ति मिहुणधम्मं एगूणासीइसरायदिणाइ ॥ १ ॥ चउसट्ठीपिट्ठकरंडयाणि मणुयाण तेसिं आहारो। भत्तस्स चउत्थस्स य गुणसीइदिणाणि पालणया ॥ २ ॥ स्तोककषायतया स्तोकप्रेमानुबन्धतया च ऽते मृत्वा दिव मुपसर्पन्ति मरणं च तथा

हारग वहालिय ष्हुलाल रोम पास यउसा मलयाय यधुयाय सूयलि कुकुणगमेक्षु परहुय मालत्र मग्गर ष्हा्नासिय कण वीरण रहासीय स्वसस्वासिय नेठूर मठ ष्ठोथिलग लउस स्वउस ष्ठोष्ठा ष्हरत्राग ष्ठग

मठ डोंबिम मस वयम बयस चपिय परवा मड्डय राम गज्झर रामग मय सवय विसाय विसवचासीय पवमाइ। सूयसमा कौंडवमा बनवना मेढमा। मावयमा मगरमा पभासियमा कब्बोरमा रहासमा पवमा पासिय मेठरमा मठगा डोंबिसमा गवमा उससमा बउसगा कबेंतमा पर्वमा गीव

मूनकामाअसुताविमानभ्यापारपुरस्सर भयति न शरीरपीडारम्भपुरस्सर मिति, तदिव मुक्ता मन्तरद्वीपगाः सम्प्रति भकमभूमिकप्रतिपादनाय माह-से किंत मित्यादि ॥ अथ का ता अकमभूमिकाः ? सूरिराह-अकमभूमिकास्त्रिंशद्विधाः प्रज्ञप्ता-तद्विशद्विधत्वं क्षेत्रभेदात्-तथा चाह-तद्यथा पंचहिं हेमवतपहिं इत्यादि ॥ पञ्चभिर्हैमवतैः पञ्चभिर्हैरण्यवतैः पञ्चभिर्हरिवर्षैः पञ्चभि रम्यकवर्षैः पञ्चभि र्देवकुरुभिः पञ्चभि रुत्तरकुरुभि स्त्रिंश मानाः त्रिंशद्विधा भवन्ति एता पञ्चानां त्रिंशत्संख्यासमकत्वात् तत्र पञ्चसु हैमवतेषु मनुष्या गव्यूतमात्रशरीरोच्छ्रयाः पल्योपमायुषो वज्रर्षभ नाराचसंहनिनः समचतुरस्रसंस्थानाः चतु षष्टिपृष्ठकरण्डका चतुर्थातिक्रमभोजिनः एकोनाशीतिदिनान्यपत्यपालका उक्तं च-गाउयमुच्चा पलिओवमा य माउयो वज्जरिसहसंघयणा । हेमवएरन्नवए अहमिंदनरा मिहुणवासी ॥ १ ॥ चउसठीपिठकरंडया अणुपाय तसि माहारो । भतस्सचउत्थस्सय गुणसिइमिवसपालणया ॥ २ ॥ पञ्चसु हरिवर्षेषु पञ्चसुरम्यकवर्षेषु द्विपल्योपमायुषो द्विगव्यूतप्रमाणशरीरोच्छ्रया वज्रर्षभनाराचसंहनिनः समचतुर स्रसंस्थानाः षष्ठभक्तातिक्रमाहारग्राहिणो ऽष्टाविंशत्यधिकशतसंख्यापृष्ठकरण्डका चतुःषष्टिदिनान्य पत्यपालका, आह च-हरिवासरम्मएसु आउप माण सरीरमुस्सेहा । पलिओवमाणि दोन्निय दोन्निय कोसुस्सिया भणिया ॥ १ ॥ छट्ठस्सय आहारो चउसट्ठिदिणाणि पालणा तसिं । पिट्ठकरंडा

रोमग जमग त्रिलाय घासीय एयमादी ॥ सेत्तमिलक्खू ॥ से किंत आयरिया ? आयरिया दुविहा पण्णत्ता, तजहा इड्ढिपत्तारिया य अणिड्ढिपत्तारिया य । से किंत इड्ढिपत्तारिया ? २ छव्विहा पण्णत्ता, तजहा—

गा रोमका पौषका रोमका भरुका मरुका विमातका इत्यादि देशवासी इत्यादि म्लेच्छ जानिये । सेतं मिलक्खू । उक्तेषदश जानिये । सेकित आयरिया दु विहा पण्णत्ता त । जिसे आर्यदेश अनेकाप्रकारे दायप्रकारे कह्या तेकहेछे—ऋद्धिपत्तारिया अनिद्धिपत्तारिया । अरिहन्त आर्यमनुष्य अविविना आयविना म॰ म । सकित इड्ढिपत्तारिया २ छव्विहा पण्णत्ता त । जिय अरिहंत आयमनुष्य अनकारे कह्या ते कहेछे—अरिहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा । अरिहन्त चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव चारण विद्याधर श्रमण । सेत्त इड्ढिपत्तारिया । एतलमे अरिहन्त कह्या आय ।

कसर्व पञ्चावींस मुवेणु ॥ २ ॥ पंचसु देवकुरुषु पञ्चसूत्तरकुरुषु त्रिपल्योपमायुषो गव्यूतत्रयप्रमाणशरीरोच्छ्रया: समचतुरस्रसंस्थान वज्रर्षभनाराचसं हनिनः पट्पञ्चाशदधिकशतद्वयप्रमाणपृष्ठकरण्डका अष्टमभक्तातिक्रमाहारिण एकोनपञ्चाशद्दिनान्यपत्यपालका: तथोत्तम-दासुविकुसुमसुमा तिपल्यपरमाउथोतिषासुता । पिउकरउसमाणं दोछप्पणाइमणुयाण ॥ १ ॥ सुसमसुसमाणुभाव अणुभवमाणावअवगोवचया । अठ्ठमपक्षाहिणाइ अठमभत्तस्स आहारो ॥ २ ॥ एतेषु सर्वेष्वपि क्षेत्रषु सरद्वीपमिव मनुष्याणां सुपयागा: कल्पद्रुमसम्पादिता: भवर मन्तरद्वीपापलया पञ्चसु हैरण्यव तपुमनुष्याणां मुत्यामवलवीयादिकं कल्पपादपफलानामास्वादोऽनुमर्सोपुर्यमित्येवमादिकानावा: पर्याया मध्विकस्या मनतगुणा द्रष्टव्या: तेभ्योऽपि पञ्चसु हरिवर्षेषु पञ्चसु रम्यकवर्षेषु अनन्तगुणा तेभ्योऽपि पञ्चसु देवकुरुषु पञ्चसु उत्तरकुरुषु अनन्तगुणा तदेव मुक्ता अकर्मभूमिका: सम्प्रति कर्मभूमिकप्रतिपादनायमाह-सकिंतमित्यादि अथ के ते कर्मभूमिका: सूरिराह—कर्मभूमिका: पञ्चदशविधा: पञ्चदश स्था पञ्चदशविधत्वमेव तदा तया चाह-पञ्चहिं भरतेहिं इत्यादि । पञ्चभिर्भरतैः पञ्चभिरैरावतै पञ्चभिर्महाविदेहैर्भिन्नमाना: पञ्चदशविधा भवन्ति ते च पञ्चदशविधा

अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा ॥ सेत्तं इड्ढिपत्तारिया ॥ से किंतं अणिड्ढिपत्तारिया? नवविहा पण्णत्ता, तंजहा खेत्तारिया जातिआरिया कुलारिया कम्मारिया सिप्पारिया भासारिया

मर्थितं पत्रिबुपत्तायरिया २ नवविहा पं त । किंवे चव पनच्छि, पाय नवप्रकारे भत्रा तद्यथा—क्षेत्रायरिया जातिआयरिया कुलायरि या कम्मायरिया सिप्पायरिया भासायरिया नाणयरिया दंसणयरिया चरित्तायरिया । येषार्य तीर्थंकर उपजे ते तीर्थंकरपण जातिआय सेहमो जातिपविद पुवक्रम उपजा कलार्य कर्मविज्ञानविषे जाणा विशविषे आर्य भाषाआर्य वाउवेणाय ज्ञानेणाय एरानेकरोपाय चारित्रेकरोपाय । सेथि तं खित्तायरिया २ पञ्चवीस तिविहा प तं । किंवे येषाअरा २५। आठापयतीस भेदकह्या तद्यथा—रायगिहमगहचंपा अंगतहातामलित्तिवंगा य कंचणपुरं कलिंग माधारविवरवासीय। राजग्रही नगरी मगधदेश चम्पानगरी अंगदेश तिम तामलिप्तानगरी वंगदेश कंचनपुरी कलिंगदेश मा

भूतकालाद्युताविमानव्यापारपुरस्सरं भवति न शारीरपीडारम्भपुरस्सर मिति, तदेव मुक्ता अन्तरद्वीपगाः सम्प्रति अकर्मभूमिकप्रतिपादनाय माह-से किंत मित्यादि ॥ अथ के ते अकर्मभूमिकाः? सूरिराह-अकर्मभूमिकास्त्रिंशद्विधाः प्रज्ञप्ताः-त्रिंशद्विधत्वं क्षेत्रभेदात्-तथा चाह-तद्यथा पंचहिं हेमवतेहिं इत्यादि ॥ पञ्चभिर्हैमवतैः पञ्चभिर्हैरण्यवतैः पञ्चभिर्हरिवर्षैः पञ्चभि रम्यकवर्षैः पञ्चभि र्देवकुरुभिः पञ्चभि रुत्तरकुरुभि स्त्रिंश मानाः त्रिंशद्विधा भवन्ति यथा पञ्चानां त्रिंशत्संख्यासमत्वात् तत्र पञ्चसु हैमवतेषु मनुष्या गव्यूतप्रमाणशरीरोच्छ्रयाः पल्योपमायुषो वज्रर्षभ नाराचसंहनिनः समचतुरस्रसंस्थानाः चतुःषष्टिपृष्ठकरण्डकाः चतुर्थातिक्रमभोजिनः एकोनाशीतिदिनान्यपत्यपालकाः उक्तं च-गाउयमुच्चा पलिओव माउणो वज्जरिसहसंघयणा । हेमवएरन्नवए अहमिंदनरा मिहुणवासी ॥ १ ॥ चउसट्ठीपिट्ठकरंडया णमणुयाण तेसिं माहारो । भत्तस्स चउत्थस्स य गुणसीइदिणवच्चपालणया ॥ २ ॥ पञ्चसु हरिवर्षेषु पञ्चसु रम्यकवर्षेषु द्विपल्योपमायुषो द्विगव्यूतप्रमाणशरीरोच्छ्रया वज्रर्षभनाराचसंहनिनः समचतुर स्रसंस्थानाः षष्ठभक्तातिक्रमाहारग्राहिणो ऽष्टाविंशत्यधिकशतपृष्ठकरण्डकाः चतुःषष्टिदिनान्य पत्यपालकाः, आह च-हरिवासरम्मएसु आउप माणं सरीरमुस्सेहो । पलिओवमाणि दोन्नि य दोन्नि य कोसुस्सिया भणिया ॥ १ ॥ छट्ठस्स य आहारो चउसट्ठिदिणाणि पालणा तेसिं । पिट्ठकरंडा

रोमग जमग खिलाय थासीय एयमादी ॥ सेत्तं मिलक्खू ॥ से किंत आयरिया ? आयरिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा इड्ढिपत्तारिया य अणिड्ढिपत्तारिया य । से किंत इड्ढिपत्तारिया ? २ छव्विहा पन्नत्ता, तंजहा—

गा रोमना मोचना रोमना भवना भवरुना विधातना इत्यादि देशोमाजो इतर मालिक्ष । सेत्तं मिलक्खू । म्लेच्छना कहिये । हवे आयरिया दुविहा पन्नत्ता ते । जिहां आर्यधर्म आचारव्यवहार होय ते आर्य कहीये ते बे भेदे—ऋद्धिप्राप्तआर्य, अनृद्धिप्राप्तआर्य । ऋद्धिवंत आर्य मनुष्य ऋद्धिविना आर्यविना मनुष्य । ते किंत ऋद्धिप्राप्तआर्य ? ६ प्रकारे पन्नत्ता ते । जिन ऋद्धिवंत आर्य मनुष्यने छ प्रकारे कह्या ते कहेछे—अरिहंत चक्रवर्ती बलदेव वासुदेव चारण विद्याधर । अरिहंत चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव चारण विद्याधर श्रमण । सेत्तं इड्ढिपत्तारिया । एतले भेदे ऋद्धिवंत कह्या । आर्य ।

र्द १६ वरबपु चम्पापुरी १७ वङ्गेषु मृत्तिकावती १८ चेदिषु शौक्तिकावती १९ वीतभयं सिन्धुपु २० सौवीरेषु मथुरा २१ शूरसेनेषु पापा २२
भङ्गेषु मासपुरिवहा २३ कुणालेषु श्रावस्ती २४ लाटासु कोटीवर्ष २५ श्वेतम्बिका नगरी केकयजनपदस्यार्द्धं एतावद् सार्द्धपञ्चविंशतिजनपदास्तेषु
आर्यं प्रज्ञप्तं कुल इत्यादि-जन्मुत्पत्तिरित्यादि ॥ यस्मा दत्र एतेषु सार्द्धपञ्चविंशतिसंख्येषु जनपदेषु उत्पत्ति जिनानां तीर्थंकराणां चक्रवर्तिना रामाणां
सदयानां कृष्णानां वासुदेवानां तत आय एते न तत्रार्यमायव्यवस्थिता दर्शिता, यत्र तीर्थकरादीना मुत्पत्ति स्तदार्य शेषमनार्यामिति। उक्ताः
ग्रायाः सम्मतिआस्यायमतिपादनाय माह सक्तिमित्यादि सुगम ॥ नवर यद्यपि शास्त्रान्तरेषु नेकजातय उपवर्ण्यन्ते तथापि लोके एता एव अम्ब
वसिम्वैदेहवेदङ्गहरितचुम्चुणरूपा इभ्यजातयो व्यवहीया जातय प्रसिद्धा सन्त एताभि जातिभि उपपता जात्यार्या न शेषजातिभिः ॥ तस्माणा
त्यादि ॥ गुणकाःभूष्याजीविनः तन्तुवायाः कुविन्दाः पट्टकाराः पट्टकूलकुविन्दाः इयकाः इतिकाराः वसहाः विच्छिका आदिका चर्यादिकाराः ॥ कठपास

लागय पुरम्बकुरुसोरियकुसट्टा य । कपिल्लपचाला अहिछत्ताजंगलाचेत्र ॥ २ ॥ दारवतीयसुरट्ठा मिहिलविदेहायवच्छकोसम्बी । नंदिपुरसंडिल्ला भद्दिलपुरमेवमलया य ॥ ३ ॥ वइराडवच्छवरणा अच्छातहमत्तियावइदसणा । सोत्तियमट्टयाचेदी वीइभयसिंधुसोवीरा ॥ ४ ॥ महुरायसूरसेणा पावाभंगीयमासपुरिवट्टा । सावत्थीयकुणाला कोडीवरिसचलाढाय ॥ ५ ॥ सेयवियावियनगरी कयइअद्धचआरियंभणिय । एत्थुप्प

दराणवरी मूलमदेश पावानगरो मङ्गदेश मासपुर नाम्नीनगरी वर्त्तादेश कोटिवर्षनगरी लाटदेश । सर्वविया विषयो केकयदेशाद्धमायार्यं द
र्शितजिनाय चक्रवर्त्तराम कृष्णाय । श्वेताम्बिकानगरी त्रिमाता का धवदश धाव पहवे माथ इत्ता देशौत्तरात्पत्ति जिन चक्रो चलदेव कृष्ण । सेस
नार्यरिया । तम ट चवपावत्त । सवित जातिपार्यरिया २ छ ज्ञा प त । जिव जातिमाय वच्छे—ते जातिमाय कवारे वधा तवचेके । यं
जावर्मिरा । विदेहावरमाय हरिय चुणचुणा एमाजातजातमा । भरद्वाज न कर्विंशाम म विदेहनामे वरगार्यनाम हारमनाम चमुणनामे व

समासतोऽद्विधाः प्रथमा साध्या-भार्या म्लेच्छा च तत्रारात् हेयधर्मेभ्यो याताः प्राप्ता उपादेयधर्मैरित्यार्या पृषोदरादित्व इति रूपनिष्पत्तिः म्लेच्छा अव्यक्तभाषासमाचारा म्लेच्छव्यक्तायां वाचि इति वचनात् भाषापदस्य भाषलक्षण तत्र शिष्टा संमत सकलव्यवहारा म्लेच्छा इति प्रतिपत्तव्य तत्रा स्पवक्तव्यत्वात् प्रथमतो म्लेच्छवक्तव्यतामाह-सकिततमित्यादि ॥ अथ के ते म्लेच्छा मिलक्खू ? इतिनिर्देशः प्राकृतत्वा दापत्वा च मूरिराष-म्लेच्छा अनकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा शकयवनकिरातशबरबर्बरादयश्चजदात-तथाचाह तमहा सगत्यादि शकदेशनिवासिनः शकाः यवनदेशनिवासिनोयवना एव सर्वत्र नवर समी नानादेशालोकता विज्ञेयाः । आर्यप्रतिपादनार्थमाह-सकिततमित्यादि ॥ सुगम नवर रायगिहत्यादि ॥ राजगृह नगर मगधाजनपदः एव सर्वत्राप्यक्षरसंस्कारविषयः भावार्थस्त्वय मगधेषु जनपदेषु राजगृह नगर १ अगपुवचा २ वंगपुता मलिसी ३ कलिगपत्तकांचनपुरं ४ काशीषु वाणारसी ५ कोसलासु साकेत ६ कुरुषु गजपुर ७ कुसावर्तेषु सौरिक ८ पञ्चालेषु काम्पिल्य ९ जङ्गलेषु अहिच्छत्रा १० सुराष्ट्रेषु द्वारावती ११ विदेहेषु मिथिला १२ वत्सेषु कौशाम्बी १३ शाण्डिल्येषु नन्दिपुर १४ मलयेषु भद्दिलपुर १५ वत्सेषु वैराट

णाणारिया दंसणारिया चरित्तारिया । से किंत खेत्तारिया ? २ अद्धछव्वीसतिविहा पण्णत्ता, तंजहा राय गिहमगहचपा अगामहतामलित्तियगा य । कचणपुरकलिगा वाणारसि चेव कासीय ॥ १ ॥ साएयकोस

राचधोनगरी मिये वायो । सा०पवासमामाय पुरवचारसारियकुमहाय कापिशयवासे पविश्वताअमयाचेव । साकेतनगर कोशलदेश गजपुर वा छोटा नगर वम कांपिल्यनगर पत्राबस्य पविश्वानगरो भावसा अहलदय मिये । टारवयसुरद्वा मिथिलविदेहायवत्सकोसमी नदीपरसविता भद्दिलपुरचे मलयाय । दारिकानगरी सारठदेश मिथिलानगरी विदेहदेश कासमो नगरी वत्सदेश नन्दिपुर शाण्डिल्यदेश भद्दलपुर मिये मलयदेश । वइराडि च वरचा अच्छातदमित्तियाविदमचा सात्तिमराढादेवो सोतमवसियसोबोरा । वेराटदेश मरतनगर वरचदेश वरणापुरी मृत्तिकावतीनगरो दशार्णदेश शक्तिकावतीनगरो चेदिदेश सोतमवनगर सिन्धुदेश सौवीरदेश । महुरायसूरसेणा पावाभंगीमासपुरहा सावत्थीयकुणाला कोडिवरिसायलाढाय ।

प्राकचि रिति भावार्थः सुत्तयीपसुपगेमत्ति ॥ अत्रापि रुचिशब्दः प्रत्येकम भिसंबध्यते सूत्रमा चाराङ्गाद्यङ्गप्रविष्टं अङ्गबाह्यं चावश्यकदशवैका लिकादि तत्र रुचि यस्य स तथा सूत्रमा चारादिक मङ्गप्रविष्ट मङ्गबाह्यंवा आवश्यकादिक मधिधीयमानो यः सम्यक्त्व मवगाहत प्रथक २ तराप्य वगाय स भवति स सूत्ररुचि रिति भावार्थ बीज मिव बीज य दक मप्यनकार्थप्रबोधोत्पादक वच स्तन रुचि यस्य स बीजरुचि अमया स पद योः समाहारो द्वन्द्वः तत्र नपुंसकनिर्देशः इतिसंमुचय अधिगमविस्तारहरुचि ॥ अत्रापि रुचिशब्दस्य प्रत्यय मभिसम्बन्धो अधिगमरुचिविस्ताररुचि च तत्रा धिगमो विशिष्टं परिज्ञानं तत्ररुचि यस्या सा अधिगमरुचि विस्तारो व्यासः सकलद्वादशाङ्गस्य नयैः पर्यालोचन मित्यर्थः स तो, अधुष्टि ता रुचिर्यस्य स विस्ताररुचिः किरियासंखेवधम्मरुइति ॥ रुचिशब्दस्या ऽत्रापि प्रत्यकसम्बन्धात् क्रियारुचिः सङ्क्षेपरुचि द्रुमरुचि रिति द्रष्टव्य-तत्र

मुप्पायेया जीया जक्कवेयालिया कोलालिया नरवाहणिया जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्त कम्मारिया॥ से किंत सिप्पारिया? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—तुण्णागा तंतुवाया पट्टागारा देयडा वरुडा छव्वियारा कट्ठपाउयारा मुंजपाउयारा छत्तारा वज्झारा पुत्थारा पोत्थारा लेप्पारा चित्तारा संखारा दंतारा भंडारा जिज्झगारा सेल्लारा कोडिगारा जेयावन्ने तहप्पगारा ॥ सेत्त सिप्पारिया ॥ से किंत भासारिया २ जेणं अद्धमागहाए भा

कासालिक नरवाहनिका। जयान्येनप्प्यगारा। ये अपरे तथाप्रकारे। सत्त कम्मारिया। ते कर्मार्य कथा। सकिंत सिप्पायरिया २ अनेगविहा प त। द्विवे शिल्पाय विज्ञानमापाय तथमा पिच अनकभदे कथा ते कहेके—तुण्णागा ततुवाया पट्टागारा दयडा वरुडा कट्टपाउयारा मुंजपाउयारा छत्तारा वज्झारा पुत्थ र। सेयारा चित्तारा संखारा दंतारा भंडारा जज्झगारा।सेल्लारा कोडिगारा। तुण्णारा वनकर पट्टाकारा देवक वार दिशाविशे प सिप्पारा चित्रकारा शंखारा दन्तारा। जयावचतहप्पगारा सत्त सिप्पायरिया। ये अपरे एवंवा तथाप्रकारना ते शिल्पार्य कथा। सकित भासाय रिया २ अनेगविहा प त। द्विव भाषायमाभद कहके—तवमा अनेकभद साचिवा। जब अद्धमागधाए भासति। जे अद्धमागधीभाषा बोले। जत्थ

यारा ॥ कायगतुकाकारा मय ॥ मुअपाडयारा खतारा ॥ छत्राकारा मय ञापारयपिपदानि जावनीयानि ववीजयखाखियाइत्यादि ॥ ब्राह्मी यवनाना स्यादयो लिपिलरा सु सम्प्रदाया दवसया वक्ता प्रापायो सम्मतिज्ञानायोनाह-सवितमित्यादि सुगम ॥ वय च त दशमाया सूरिराह-दशमाया द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सरागदशमार्यो वीतरागदशमार्यो च तत्रसराग सकषाय सङ्गत तनायो सरागदशमार्यो वीतराग मुपशान्तकषायक्षीणक पाय या च दूक्ष्म तनाया वीतरागदशमार्यो तत्र सरागदशनायप्रतिपादनाय माह-सवितमित्यादि ॥ वय क ते सरागदशमार्या सूरिराह-सरागदशमाया दशविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-निसग्गुरुएसित्यादि ॥ यय रुचिशब्द प्रत्यकम भिसम्बध्यते ततो निसर्गरुचि रिति द्रष्टव्य तत्र निस ग स्वभाव तेन रुचि जिनप्रणीततत्त्वाभिलापरूपा यस्य स निसर्गरुचि उपदेशो गुर्वादिना वस्तुतत्त्वकथन तनरुचि उक्तस्वरूपा यस्य स उप देशरुचि आज्ञा सर्वज्ञवचनात्मिका तस्या रुचिर्यो ऽभिलापो यस्य स आज्ञारुचि विमार्गेव मतस्य न शप युक्तिजातमिति यो भिमन्यत स आ

सिजिणाण चक्कीणरामकराहाण ॥ ६ ॥ सेत्तखेत्तारिया ॥ से किंत जाइआयरिया ? २ छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा-अंबट्ठा य कलिंदा विदेहा वेदगाइय । हरिया चुंचुणा चेव छएया इब्भजाइउ ॥ ७ ॥ सेत्तं जाइआरि याय ॥ से किंत कुलारिया ? २ छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा-उग्गा भोगा राइण्णा इक्खागा नाता कोरव्वा । सेत्त कुलारिया ॥ से किंत कम्मारिया ? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा-दोसिया सुत्तिया कप्पासिया

अजाति याव वदिस । सत्तजाति आयरिया । ए जाति याव वत्ता । सवित अणपायरिया २ छव्विहा प त । निवे कयभाग वर्ते ते यमपास छ प्रकारे वक्ता ते वर्ते—अम्बाभामारयथा इत्यागातायाकारया । अग्रकम भोगकम राजकम इक्ष्वाकवम ज्ञातिकम कौरवकम ६ । सत्तवमायरिया न वक्त पायकम । सेवित वम्मारिया २ पयगविहा प तं । इनि निवे कर्मयाय वर्तते त पनेकप्रकारे वक्ता तमवक—दोसिया सत्तिया कया मादा मुत्तिवेयालिया भंडवेयालिया कालालिया नरवाहणिया । दोसिका वातिविशय सौत्तिका कपासिका मुखवैतालिका भुपकतृका जातिविशेष

पडिवाधगमध ममाभाम। प्रथम माचयेव तु छमा एवकारार्थः, फवलारोपते वयमि त्याह-एव मेतस प्रवचमोक्त गयमात ना म्यचेति एप भाषा रुचि माम सूत्ररुचिमाह-बोसुत्त मित्यादि ॥ य। सूत्र मङ्गप्रविष्ट मङ्गबाह्म वा मधीयान स्तेन सुतनाङ्गप्रविष्टना ङ्गबाह्येन वा सम्यक्त्म मगाहते स सूत्ररुचि रिति ज्ञातव्यः बीजरुचि माह-एगपयषमाह इत्यादि ॥ एकेन पदम प्रक्रमात् जीवादिना मनेकानि पदानि प्राकृतत्यन चिमाक्तिव्य त्ययाद मेकपु जीवादिषु पदपु यःसम्यक्त मिति चमर्धमेको रजदोपचारात् सम्यक्त्वाम् मात्मा प्रसरति तु छत्रो मपारकाय प्रसरत्येव वयमि

सेत्त भासारिया ॥ से किंत नाणारिया ? २ पचविहा पण्णत्ता, तंजहा—आभिणिबोहियनाणारिया सुयनाणारिया ओहिनाणारिया मणपज्जवनाणारिया केवलनाणारिया ॥ सेत्त नाणारिया ॥ से किंत दंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सरागदंसणारिया य वीयरागदंसणा० । से किंत सरागदंसणारिया य ? २ दसविहा पण्णत्ता, तंजहा निस्सग्गुवदेसरुई आणारुइसुत्तबीयरुइमेव । अभिगमवित्थाररुई किरियासंखेवध

सारिका भागवती पत्तारिमका पचरपहिका वेनवीका निन्हिका घवलिपि गणितलिपि मन्धर्वलिपि माडमलिपी महेश्वरीलिपी दामलीलिपि पुलिन्दो १८। सेत्त भासारिया । त एतस्मे मायार्यो । सेकितं नाणारिया २ पंचविहा प त । विचे ज्ञानस्य कश्चे ते ज्ञानाय पचप्रकारे कथा ते कथे । मामिनिबोधिकनाणारिया सुयनाणारिया भोहियनाणारिया मणपज्जवनाणारिया केवलनाणारिया । मतिज्ञानाया श्रुतज्ञानायों भवधिज्ञानायों ममपर्यवज्ञानायों केवलज्ञानायों । सेत्त नाणारिया । एतके ज्ञानाय कथा । सेकितं दंसणारिया २ दुविहा प त । विचे दर्शनाय ते एकानायनामि व्यायपकारे कहे । सरागदसणारिया वायरागदसणारिया । सरागदर्शनाय वीतरागदर्शनाय । सेकित सरागदसणारिया २ दशविधा प त० । एतमे सरागदर्शनायनामर तेहना १ मकार कहे—निसर्गरुचि उपदेश रुचि भाषारुचि मृतबीजरुचि अभिगमविस्ताररुचि क्रियासंक्षेपधर्म ६ । १ । निसर्गरुचि उपदेमरुचि भाज्ञारुचि सूत्ररुचि बीजरुचि भभिगमरुचि ज्ञानविस्ताररुचि क्रिया संक्षेपरुचि धर्मरुचि । भूतत्वेनाधिगता जीवाजो

क्रिया सम्यक् संयमानुष्ठानं तत्र रुचि यस्य स क्रियारुचि संक्षेप संग्रहः तत्र रुचि र्यस्य विस्तारार्थोपरिज्ञाना स्वल्पेपस्ति धर्मे अस्तिकाये धर्मे श्रुतधर्मादौ वा रुचि यस्य स धर्मरुचि रिति गाथा संक्षेपार्थ तु सूत्रकृदेव स्वत आह मूपत्थ इत्त । भावप्रधानो निर्देश सतो य यथः-भूतार्थे त्वेन समुद्भूता अमो पदार्था इत्यवं रूपत्व यस्या विमता परिज्ञाता जीवा जीवा पुण्यपाप मास्रवसम्वर स बन्धा दृत्यादय स बन्ध मधिगता इत्याह सहसम्मुइया इति स मार्पेला द्विज्ञक्तिसापाससहसम्मत्यासहास्मना या सङ्कता मतिः सा सहसम्मति स्तया कि मुक्त भवति परोपदेशानिरपेक्षया जातिस्मरणप्रतिभादिरूपया मत्या न केवल मधिगता किन्तु तान् जीवादीन् पदार्थान् बद्धयते सुरोचयति-च तत्वस्वरूपतया आत्मना त्वरिता । मयति चति श्राव एष निसर्गो निसगरुचि विज्ञेय इति श्रेष अमु मेया पसस्ततर मजिभिस्सु राह-जो जिनदिट्ठ भावे इत्यादि ॥ यो जिनदृष्टाम् भावन् द्रव्यपर्यायसम्भवतो नामादिभवतो वा चतुर्विधान् स्वय मवो परनिरपेक्ष श्रद्धधाति यमी श्रवण श्रद्दधाति सत आह-एव मव एत जीवादि यथा जिनै दृष्ट ना न्यथाति च समुच्चय एष निसगरुचि रिति ज्ञातव्य उपदेशरुचि माह-एए चेव इत्यादि ॥ एतानेव जीवादीन् भावान् यः परेण छद्मस्थेन जिनेन वा उपदिष्टान् श्रद्दधाति एष उपदेशरुचि ज्ञातव्यः, आज्ञारुचि माह-जो हेउ मयाणतो इत्यादि ॥ यो हेतु वि

साए नासति, जत्थविय ण बम्भीलिवी पवत्तइ बम्भीएण लिवीए अट्ठारसविहे लेक्खविहाणे पण्णत्ते, तंजहा बम्भीजवणालिया दासापुरिसा खरुट्ठी पुक्खरसारिया भोगवइया पहराइया अन्तक्खरिया अक्खरपुट्ठिया वेणइया निण्हइया अंकलिवी गणियलिवी गन्धव्वलिवी आयासलिवी माहेसरी दोमिली पोलिंदी ॥१८॥

जिसमे ब्राह्मीलिपी प्रवर्तत । जिसे य ब्राह्मीलिपि प्रवर्तते । ब्राह्मीरूप लिपीए अष्टारसविधे लिपिविधाने प त । ते ब्राह्मीलिपी तेहनेविषे पडबो १८ प्रकारे लिपिविधान कह्या ते कहे छे—ब्राह्मी यवना लिपी दासा पुरिया खराष्टी पुक्खरसारिय भोगवतियाख्य पहराइया अक्खरपुट्ठिया वेणइया निण्ह या अंकलिपी गणितलिपी गन्धर्वलिपी आयसलिपी माहेसरी दामली पालिंदी १८ । ब्राह्मीलिपि यवनीलिपि दिसालिपि दासा पुरिया खराष्टी पुष्कर

मपतो दृष्ट मकारमागानि प्रकीर्णक मित्यत्र याता येष्वध्ययनं-सती यमय प्रकीर्णानि उत्तराध्ययनावीनि दृष्टिवादश्च परिकर्मसूत्रपूर्वानुयोगपूर्वगतचूलिकारूपः पूर्वाणि च स मत्र
त्वधिगमरुचिः विस्ताररुचिं माह-दव्वाण इत्यादि ॥ द्रव्याणां धर्मास्तिकायादीनां सर्वपर्याया अपि सर्वे भावाः पर्याया यथायोगं सर्वप्रमाणैः प्रत्य
क्षादिभिः सर्वेश्च नयविधिभिः नैगमादिनयप्रकारैः उपलब्धा यस्य विस्ताररुचिः रिति ज्ञातव्यः ॥ सर्ववस्तुपर्यायप्रपंचावगमेन तस्याः रुच रतिवि
स्तररूपतया भावात् ॥ क्रियारुचिमाह-दंसण इत्यादि ॥ दर्शनं च ज्ञानं च चारित्रं च दर्शनज्ञानचारित्रं समाहारो द्वन्द्व तस्मिन तथा तपसि विन
ये च तथा सत्यासु समितिषु ईर्यासमित्यादिषु सर्वासु च गुप्तिषु मनोगुप्तिप्रभृतिषु या क्रियाभावा रुचिः किं मुक्तं भवति यस्य भावतादनाद्या
चारानुष्ठाने रुचि रस्ति सखलु क्रियारुचिनाम, संक्षेपरुचिमाह-अणभिग्गहियेत्याद्यना ॥ अभिग्रहीता कुत्सिता दृष्टि येन सो अनभिग्रहीतकुदृष्टि रवि

दव्वाणसव्वभावा सव्वपमाणेहिंजस्सउवलद्धा सव्वाहिंनयविहीहिं वित्थाररुइत्तिनायव्वो ॥ ९ ॥ दंसणनाणच
रित्ते तवविणएसच्चसमिइगुत्तीसु जोकिरियाभावरुइसो खलुकिरियारुइनामा ॥ १० ॥ अणभिग्गहियकुदिठी

सवाहि द्वेषवा नामतइ इतिनायवा ६ । स मूत्र मिशाश्त भवताब्बा सुतने भगवाशो सम्यक्त्वरोने भवे भेदप्रविष्ट आचारांगादि अनंगप्रविष्ट उत्तराध्ययना
दि तेहने सूत्र रुचि कहिये । एगपएणेमाइ पवाइ आपघराइवमण्णत्त उदयचइतिमविंदू साबोयरुवत्तमायम्मा ७ । एक पदेकरी घणा पदनाभाव प्रगुणमे
घमर बिस्तार एक जीवादिक पदार्थ समझादि घनेकपादेथिम पाणाऊपर मवविन्दुवा विस्तारपामे तहने बीजरुचि कहिये । सोहोइ अभिगमरुइ सय
मानव्यपर्युपादिद इकारसमयाइ पायगदिट्ठीवाय ८ । जिणे सुतज्ञानपणे रो होय अथ अर्थ भवकरी ११ अंगना मनाव उत्तराध्ययनादिक द्दष्टि
वाद पर्यायादि तहना पथ समजा जे ते अभिगमरुचि कहिये । दव्वाणसव्वभावा सव्वपमाणेहिंजस्सउवलद्धा सव्वाहिंनयविहीहिं वित्थाररुइत्तिनायव्वो । ९
जेहनी बिस्ताररुचि कहे-द्रव्यादि धर्मा सत्कायादि ६ जीवा वावता पर्याय सर्व भावपर्याय यथायोग्यप्रमाण प्रत्यक्ष सर्वप्रकार उपलब्ध पाम्याछे ७ नय
नैगमादिक नयभांगिवकरी समझ्या छेतहने बिस्ताररुचि कहिये । दंसणनाणचरित्ते तवविणएसच्चसमिइगुत्तीसु जोकिरियाभावरुइ सो खलुकिरियारुइनामा । १

त्याइ उदक इव तैलबिन्दुः किमुक्तं भवति यथा उदकैकदेशगतो ऽपि तैलबिन्दुः समस्त मुदक माक्रामति तथैकदेशोत्पन्नरुचि रप्यात्मा तथाविध क्षयोपशमभावा दशेषेषु तत्वेषु रुचिमान् भवति स एवंविधो बीजरुचि रिति ज्ञातव्यः । अभिगमरुचि माह-सो होइ इत्यादि ॥ यस्य श्रुतज्ञान

मरुइ ॥१॥ भूयत्थेणाहिगया जीवाजीवायपुण्णपावंच । सहसम्मुइयासवसं वरोयरोएइउ णिसग्गो २॥ जोजिणदिट्ठेभावे चउव्विहेसद्दहाइसयमेव । एमेवणन्नहत्तिय णिसग्गरुइत्तिणायव्वो ॥ ३ ॥ एएचेव उभावे, उवदिट्ठेजोपरेणसद्दहइ । छउमत्थेणजिणेणव उवएसरुइत्तिणायव्वो ॥ ४ ॥ जोहेउमयाणतो आणाएरोयएपव यणंतु । एमेवणन्नहत्तिय एसोआणारुइनामा ॥ ५ ॥ जोसुत्तमहिज्जंतो सुएणउगाहइउसम्मत्तं । अंगेणबा हिरेणव सोसुत्तरुइत्तिनायव्वो ॥ ६ ॥ एगपएणगाइ पदाइजोपसरईउसम्मत्तं उदएव्वतिल्लबिंदू सोबीयरुइ त्तिनायव्वो ॥७॥ सोहोइअभिगमरुई सुयनाणंजस्स अत्थओदिट्ठं एक्कारसअंगाइं पइण्णगादिट्ठिवाओय ॥८॥

अथपर्याप्त धर्मसमरेणादय धारणादाणावस्थिया । १ । भूतार्थपणेकरी भवकरिते घठोके बुद्धि के पदार्थोरा वाक्या जीवाजीव पुण्य पाप सहस्र मति पात्र सम्बर तेहने निरुण करिये । जाअत्रदिठ्ठमावे चक्किसरदाहसवमेव एमेवमन्नत्तव निसर्गरुचित्तिघातव्या । २ । के जिन घोठाके भा व द्रव्यमादिकरी ते सद्दे चारकरी माने पातेनो निसर्गपचे सद्दे ते निसर्गकदिय तब निसग सभावस्थितरुचि जिनभवोततत्वाभिलापरूपीसमयसमि । एतयरतभावे तवारणापरवसद्दर छउमत्थेवजिणेवव उवएसरुइत्तिघातव्या । ४ । जिये उपदेशरुचि करेके, ते जीव पमोवादिनाभाव के उपदिष्ट प रते करेवो भोषा सब उप्रसोत्रा ति तथाभावते करनो परमाण ते उपदेशरुचि करेके, जिये पत्तानरविपाभिए करेके —आवेशमयावेता पचाए राएपवणपर्व पमेवमन्तहत्तिएं पसापथावंभाभाव ५ । के हेतु सिद्धान्तना करो पचके ते पचकाचतोतका प्रवचनमो पाप्ता तेरचि मनस् य ै शुभ श्रुतीपरे वक्रमसाम एम सिद्धांतमांहि भणा ते भव्यदा गुणे नथो पदनेभावे प्रवर्त्ते ते भाषाउचि मविये । सोसुत्तमहिज्जंतो सुपरवयगारमइसम्यक्त्व भणे

मधतो दृष्ट मकारसाङ्गानि प्रकीर्णक मित्यत्र आता येकवचन-ततो यमथ प्रकीर्णानि उत्तराध्ययनादीनि दृष्टिवाद च सूत्रानुपाङ्गानि च स मव त्वधिगमरुचिः विस्ताररुचि माह-दव्वाण त्यादि ॥ द्रव्याणां धर्मास्तिकायादीनां सर्वपर्याया मपि सर्वे भावाः पर्याया यथायोगं सर्वप्रमाणैः प्रत्य क्षादिभिः सर्वेश्च नयविधिभि र्नैगमादिनयप्रकारैः उपलब्धा यस्य विस्ताररुचि रिति ज्ञातव्यः ॥ सर्ववस्तुपर्यायप्रपञ्चावगमेन तस्याः रुच रतिवि मलरूपतया भावात् ॥ क्रियारुचिमाह-दसणत्यादि ॥ दर्शनं च ज्ञानं च चारित्रं च दर्शनज्ञानचारित्रं समाहारो द्वन्द्व तस्मिन् तथा तपसि विन य च तथा सत्यासु समितिषु ईर्यासमित्यादिषु सर्वासु च गुप्तिषु मनोगुप्तिप्रभृतिषु या क्रियाभावा रुचिः किं मुक्त भवति यस्य भावतस्तज्ज्ञानाद्या चारानुष्ठाने रुचि रस्ति स खलु क्रियारुचिनाम, संक्षेपरुचिमाह-अणभिग्गहियेत्यादिना ॥ निगृहीता कुत्सिता दृष्टि येन सो ऽनभिगृहीतकुदृष्टि रवि

दव्वाणसव्वभावा सव्वपमाणेहिजस्सउवलद्धा सव्वाहिंनयविहीहि वित्थाररुइत्तिनायव्वो ॥ २४ ॥ दंसणनाणच रित्ते तवविणएसच्चसमिइगुत्तीसु जोकिरियाभावरुइसो खलुकिरियारुइनामा ॥ २५ ॥ अणभिग्गहियकुदिठी

[illegible] सामान्यरतिनामका ॥ १ । ते सूत्र सिद्धान्त भणतांथकां शुतने अवगाहतो सम्यक्त्व होने भणे अंगप्रविष्ट आचारांगादि अंगबाह्य उत्तराध्ययना दि तेहने सूत्र रुचि कहिये । [illegible] अणुत्तरोववाइ [illegible] एकपदेकरी अनेक पदनाभाव अनुक्रमे पसरे विस्तरे एक जीवादिक पदार्थ सम्यक्त्वादि [illegible] तेहने बीजरुचि कहिये । साक्षात्अभिगमरुइ सम [illegible] इत्यादिक [illegible] पाचमविद्वासाय ८ । जिणे श्रुतज्ञान अर्थेकरी जोया अर्थ जेणे अध्ययनो ११ अंगना प्रकार उत्तराध्ययनादिक दृष्टि वाद उपांगादि तेहनाप्रति समस्त श्रुत अभिगमरुचि कहिये । द्रव्याणसव्वभावा सव्वपमाणेहिजस्सउवलद्धा सव्वाहिं नयविहीहि वित्थाररुइत्तिनायव्वो १९ जिन विस्तार रुचि कहे-द्रव्यादि धर्मास्तिकायादि ६ जीवा सामता पर्याय सर्वे भावपदार्थ यथायोग्यप्रमाण प्रत्यक्ष सर्वप्रकार उपलब्ध पाम्याछे एम नैगमादिक नयमांहि धरे समस्त ते विस्तार रुचि कहिये । दसणनाणचरित्ते तवविणएसच्चसमिइगुत्तीसु जोकिरियाभावरुइसो खलुकिरियारुइनामा १

आरर्द्रं प्रथम जिनप्रणीते ष्वेपु च कपिलादिप्रणीतेषु प्रवचनेषु यनभिगृहीतो न विद्यते पाजिमुख्येन उपादेयतया गृहीतु गृहीत मस्यत्यनभि गृहीत एव मनभिगृहीतकुदृष्टि रित्यनेन परदर्शनान्तरपरिग्रह प्रतिषिद्धो नन परदर्शनपरिज्ञानमात्र मपि निषिद्ध मिति विज्ञेय स इत्यनून मथपदपि रिति ज्ञातव्य पदकविभाग ॥ जीवास्तिकायत्यादि ॥ यः खलु जीवो जिवकायानां धर्मास्तिकायादीना धर्म गत्युपग्रहकत्वादिस्वना व श्रुतधर्म चारित्रधर्म च जिनाभिहित श्रद्दधाति सपमदपि ज्ञातव्यः तदेव निसर्गाद्युपाधिभेदेन दृश्यथा रुचिरूप दर्शनमुक्त मन्य त्ते ये भिन्न रिद मृत्यवत मस्तीति निधीयते तानि सिद्धान्तु पदसयमाह–परमत्थसथवो इत्यादि ॥ परमा ये तात्त्विका य स ऽर्था य जीवादय स्ते परमार्था स्तेष संस्तव परिचय तात्पर्येण बहुमानपुरस्सर जीवादिपदार्थो वगमायाभ्यास इति यावत् सा शब्द समुच्चये सुष्टु सम्यग्रीत्या दृष्टा परमार्था जीवादयो यै स्ते सुदृष्टिपरमार्था स्तेषां सेवन पर्युपास्तिः सुदृष्टिपरमार्थसेवन चास्य प्राकृतत्वा द्वा शब्दा मुच्चसमुच्चय यथाशक्ति स इदेपावृत्य प्रवृत्ति ये अपि समुच्चय तथा ॥ वावण्णकुदंसणवज्जणा ॥ दर्शनशब्द प्रत्येक मभिसम्बध्यते व्यापन्न विनष्ट दर्शन यस्यान्त व्यापन्नदर्शना निह्नवादय तथा कुत्सित दर्शन यस्यात कुदर्शनाः शाक्यादय स्तेषा वर्जन व्यापन्नकुदर्शनवर्जनम् यथापि सास्य प्राकृतत्वात् ॥ सम्मत्तसद्दहणा इति ॥ सम्यक्त्वमङ्गा

सखेवरुइअधिहोइनायव्वो अभिसारउपवयणे अणभिग्गहिउयसेसम्मसु ॥ ११ ॥ जोअत्थिकायधम्मं सुयधम्मखलु चरित्तधम्मच सद्दहइजिणाभिहिय सोधम्मरुइत्तिनायव्वो ॥ १२ ॥ परमत्थसथवोवा सुदिठपरमत्थसेवणावा

दर्शन ज्ञान चरित्र तप विनय सत्य समिति गुप्ति ८ करनो क्रियानविषे भावथी जे भावरुचि कहिये तिके क्रियारुचि कहिये—मत मिथ्यादृष्टि आदि मतादिकाना परिज्ञान अणभिग्रहिताचार कहियेसम ११। धर्मास्तिकाय जीवादिक मन्यवो जेमे माठोदृष्टि जीविकादि प्रणीत प्रव चन ते सर्वविषे ते दर्शन सद्दहणा कहिये मनोपसम्यक् तत्त्वविषय मधिगम परिज्ञाना सद्दहणा अभिसार प्रवचनविषे पण प्रमाण अपरदर्शन पर प्राणविषे त सद्दहणा कहिये। धर्मास्तिकायधर्म सुयधर्मचारित्रधर्म धर्मदर्शनाभिहित सोधम्मरुचिनायव्वो १२। जे जीव धर्मास्तिकाय धर्मो

र्म एती परमार्थसंस्तवादिभिः सम्यक्त्वमस्तीति मङ्गीयते इत्यर्थः यस्य च दर्शनस्य धारा यष्टौ ते सम्यक् परिपालनीयाः तदतिक्रमे दर्शनस्या

ऽव्यतिक्रमभावात् यत सागुपदर्शयितु माह-निस्संकिय इत्यादि ॥ शङ्कनं शङ्कितं दशशङ्का सर्वशङ्का च इत्यर्थः निर्गत शङ्कितं यस्मा दसौ नि

शङ्कितो दशमवशङ्कारहित इति गाथार्थः तत्र देशशङ्का समाने जीवत्वे कथं भव्यो भव्यो ऽपरस्य भव्य इति सर्वशङ्का प्राकृतनिबद्धत्वा दसकल

मयद प्रवचन परिकल्पित भविष्यतीति न चैवं दशशङ्का सर्वशङ्का वा युक्ता यत इह द्विविधा भावा स्तद्यथा-हेतुग्राह्या अहेतुग्राह्या जीवा दसत

त्वादय सरसाधकप्रमाणसद्भावात् अहेतुग्राह्या भव्यत्वादय अस्मदाद्यपेक्षया तत्साधकहेतूना मसम्भवात् प्रकृष्टज्ञानगोचरत्वा तद्धेतूना मिति मा

ह्लतो ऽपि च नियतः प्रवचनस्य बालाद्यनुग्रहाय उक्तञ्च-बालस्त्री मूढमूर्खाणां नृणां चारित्रकाङ्क्षिणां ॥ अनुग्रहाय तत्त्वज्ञैः सिद्धान्तः प्राकृत

स्मृतः ॥ १ ॥ अपि च प्राकृतो पि नियतः प्रवचनस्य दृष्टेष्टाविरोधी ततः कथं मतान्तरपरिकल्पना शङ्का सर्वथा सर्वज्ञत्वान्यस्य दृष्टेष्टाविरोधवच

मासम्भवात् निःशङ्कित इति जीव एवा इत्थाभूतप्रतिपत्तौ दर्शनाचारः तत् प्राधान्यविवक्षायां दर्शनाचार उक्तः-एतेन दर्शनदर्शनिनोः कथंचि

द्ध्द माह-एकान्तभेद स्य दर्शनिन इव तस्फला योगता मोक्षाभावप्रसङ्ग एव मुत्तरेष्वपि त्रिषु पदेषु भावनाकार्या तथा नि काङ्क्षित इति काङ्क्षा काङ्क्षितं

थि। वावन्नकुदंसणवज्जणाय सम्मत्तसद्दहणा ॥१३॥ निसंकियनिक्कंखिय णिव्वितिगिच्छाअमूढदिट्ठीय उववू हथिरीकरणे वच्छल्लपभावणेअट्ठ ॥ १४ ॥ सेत्त सरागदंसणारिया । से किंत वीयरागदंसणारिया ? २ दु

[illegible] परमार्थ [illegible] संस्तवो बहुमानपुरस्सरो [illegible] अस्य ते परमार्थाः [illegible] परमार्थसंस्तवः [illegible] सुदृष्टपरमार्थसेवना वा अपि [illegible] वा [illegible]

[illegible] ॥ १३ ॥ परमार्थसंस्तव [illegible] परमार्थ [illegible] सम्यक्त्व [illegible] परमार्थ [illegible] [illegible] सेवना

सुदृष्टि परमार्थो [illegible] विपर्ये २ कुदर्शन [illegible] सम्यक्त्वं [illegible] [illegible] इति [illegible] ८ [illegible] —प्रवचनओ [illegible]

निगतं काङ्क्षितं यस्या दृष्टौ सि काङ्क्षितो दृष्टः सवकाङ्क्षारहित इत्यथः, तत्र देशकाङ्क्षा एकं दिगम्बरादिदर्शन मजिकाङ्क्षिते सयकाङ्क्षा सर्वाण्ये म दृशमानि शोभनानि इत्यव मनुचितम इय च द्विधा प्ययुक्ता मापदशमपु पद्जीवनिकायपीडाया असत्प्ररूपणाया म प्रावात तथा यिचिकित्सा मतिविभ्रम फलमति समय इति यावत् निगता रविचित्सा यस्या दृष्टौ निायचिकित्सः साध्य म जिनशासन कि तु प्रवृत्तस्य सतो ममा स्या त्फल भविष्यति म या क्रियाया कृषीवलादिषु उभयथा ऽप्य पलभ्य रिति विकल्परहित म इ विकल्प उपायउपायसमुपायको न भवतीति स जातमिथ्यो निर्विचिकित्स इतिभावः मतावताम निःशङ्किता द्विधः यहा निर्विजुगुप्सो इति ॥ निर्विद्वज्जुगुप्सः साधुजुगुप्सा रहित इत्यथः उदाहरण च विद्वज्जुगुप्सायां मात्रकदुहिता तथा ॥ अमूढदृष्टीयति ॥ यासतपास्तपोविद्यातिशयदर्शने न मूढा स्वभावा चलिता दृष्टिः सम्यग्द र्शनरूपा यस्या सा अमूढदृष्टिः अत्रोदाहरणं सुलसाश्राविका सा हि अंबडपरिव्राजकसमृद्धी दृष्ट्वाऽपि न समोह गता सद्य गुणिप्रधान आचार

थिहा पण्णत्ता, तजहा—उवसतकसायवीयरागदसणारिया खीणकसायवीतरागदसणारियाय। से किंत उवसतकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा पढमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारि या अपढमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारिया, अहवा चरिमसमयउवसतकसायवीयरागदसणारिया

यंवा लक्षणा बाधा रयवोया सवकांचारहित। निःशङ्कितनिष्कांक्षित निर्विचिकित्साअमूढदृष्टिश्च उपबृंहणस्थिरीकरणे वात्सल्यप्रभावनेअष्टौ १४। साधु नो अनुकम्परहित सर्वे कुलगणो मविभावो माटो इति करणा विम ससाराविमावे धर्मपरिव्राजकाने धर्मा सदा गमांसी कुशिआसावे परि व्रत गवरना पदमविवे विरतामाव सोक्षोभो प्रमसाधरवो मोक्षमोमे उपमारकरवा वसे धर्मनी प्रभावनाकरवो। सत्तसरागदसणारिया। प सराग दर्शनार्थ कहिये। सेकित वीतरागदसणारिया २ दुविहा प त। हिव वीतरागदर्शनपार्योना दायभद कहावे ते कहिवे—उवसतकसायवीतराग दसणारिया। उपशांतकषाय वीतराग दर्शनार्य प। क्षायकषायो सेकित उवसतकसायवीयरागदसणारिया २ दुविहा प त०। खीणकसाय

तस्त्र। सम्प्रति गुणप्रधान माह-उववूहेत्यादि ॥ उपवृंहणं च स्थिरीकरणं च उपवृंहणस्थिरीकरणे तत्रो पवृंहणं नाम समानधार्मिकाणां सद्गुणप्रशंसनेन तद्वृद्धिकरणं धर्माद्विषीदतां तत्रैव स्थापनं, वात्सल्यं च प्रभावना च वात्सल्यप्रभावने तत्र वात्सल्यं समानधार्मिकाणां प्रीत्या उपकारकरणं प्रभा वना धर्मकथादिभिः तीर्थख्यापना सर्वं च गुणप्रधानो निर्देशो गुणगुणिनोः कथञ्चित् अभेदख्यापनार्थं अन्यथा एकान्तभेदे गुणनिवृत्तौ गुणिनोऽपि निवृत्तेः शून्यतापत्तिः एते अष्टौ दर्शनाचारा उक्ता देव मुक्ताः सरागदर्शनभेदाः साद्दर्भिधानाद्वा निष्ठिता सरागदर्शनार्यभेदाः, सम्प्रति वीतरागद र्शनार्यभेदानाह-सेकिंतमित्यादि सुगमा यावत् अहवा चरित्तारिया पज्जविहा प० सं० सामाइयचरित्तारिया इत्यादि ॥ नवरं पढमसमय सुहुम

य छ्यचरिमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया य । से किं तं खीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दु विहा पण्णत्ता, तंजहा छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य । से किं तं छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सयंबुद्धछउमत्थखीणकसाय वीतरागदंसणारिया बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किं तं सयंबुद्धछउमत्थखीणक

वीतरागदर्शनार्याणां द्वयभेदं कथा ते वदन्ते-पढमसमयउवसंतकसाय वीयरागदंसणारिया । प्रथमसमय वर्तमाना उपशान्तकषाय वीतराग दर्शना र्यिका । अपढमसमय उवसंतकसाय वी० । द्वितीयादिसमय वर्तता उपशान्तकषाय वीतराग दर्शनार्याणा अभेद कथा । अथवा चरमसमयउवसंत कसाय वी० । अथवा ते उपशान्तकषायके अन्तसमय वीतराग दर्शनार्य कहिये । अचरमसमयउवसंतकसाय वी० । इति चरमसमय वर्तता सामायिक चरित्रादिके वर्तता ते उपशान्तकषाय दर्शनार्य कहे । सेकिंतं खीणकसाय वीयरागदंसणारिया २ दुविहा प० त० । क्षीणे क्षीणकषाय वीतराग दर्श नार्याना द्वयभेद कथा ते कहवे-छउमत्थखीणकसाय वी० । छउमत्थखीणकसाय वी० । छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । केवलिक्षीणकषायवी० । केवल क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य कहिये । से किं तं छउमत्थ खीणकसाय वीयराग दंसणारिया २ दुविहा प० त० । क्षीणे क्षीणकषाय वीतराग द

निगत काङ्क्षित यस्मा दसौ निःकाङ्क्षितो दृष्टः सर्वकाङ्क्षारहित इत्यर्थः, तत्र देशकाङ्क्षा एकं दिगम्बरादिदर्शनं मनिकाङ्क्षते सर्वकाङ्क्षा सर्वाण्येव दर्शनानि शोभनानि इत्येव मनुचितन इय च द्विधा प्ययुक्ता क्षायदर्शनेषु षड्जीवनिकायपीडाया असत्प्ररूपणाया च प्राप्तात तथा विचिकित्सा मतिविभ्रम फलमति संशय इति यावत निगता विचिकित्सा यस्मा दसौ निर्विचिकित्सः साध्व द जिनशासन किं तु मयुतस्य सतो ममा स्या रफल भविष्यति न वा क्रियाया कपीबलादिषु उभयथा ऽप्य पलभ्य रीति विकल्परहित न एव विकल्प उपायसमग्रसुमापको न प्रयतीति वं आर्तनिदयो निर्विचिकित्स इतिभावः, एतावताचाम निःशङ्कता द्विधा, यद्वा निर्विदुगुच्छो इति॥ निर्विदुगुच्छ साधुजुगुप्सा रहित इत्यर्थः तथादरव च विदुगुच्छाया भावकदुहिता तथा॥अमूढदिट्ठीयत्ति॥ थासमर्पस्त्रतपोविद्यातिशयदर्शने न मूढा स्वभावा चलिता दृष्टिः सम्यग् ज्ञानरूपा यस्या सा अमूढदृष्टिः, मनादादरवं क्षुलसाधिका सा एव बलपरिज्ञानबलसद्धी उपलभ्यापि न समोह गता तदेव गुणिप्रधान आचार

थिहा पराशा, तजहा—उससतकसायवीयरागदसणारिया खीणकसायवीतरागदसणारियाय। से किंत उवसतकसायवीतरागदसणारिया? २ दुविहा पणत्ता, तजहा पढमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारिया अपढमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारिया, अहवा चरिमसमयउवसतकसायवीयरागदसणारिया

मता सम्यक्त्वा याचा सम्यग्यावा सम्यक्त्वाचारहित। निर्वितर्कनिर्विचार विश्वतिमिथ्यात्वमूलस्याय सम्यग्विरोधरचे बलात्प्रमाणप्रभवेषु १४। साधु नो अनुपादेर्यत्र प्रवर्त्तते सम्यक्त्वो महिमावो माटो ह्यष्टकरशी जिन ससाय। विकार्ये धर्मकपरिमाणबल बहुवा सदृश भपाभो वास्ति। साथे परि च मवरवा पथमविधे विरताभाव साधर्मोमो प्रभसावरको मोहमोने उपमारकरवा बसे प्रभनी प्रभावनाकरवो। सरागरागदसणारिया। प सराग सम्यक्त्वो कहिये। सकिंत वीयरागदसणारिया २ दुविहा प त। जिन वीतरागदर्शनमपायीना प्रायभेद कहाके ते कहेछे—उवसंतकसायवीयराग दसणारिया। उपशांतकषाय वीतराग सम्यक्त्वभेद प। एवकथामवो सकिंत उवसतकसायवीयरागदसणारिया २ दुविहा प त। वीयकसाय

रणा: सम्प्रति गुणप्रधान माह-उववूहेत्यादि । उपबृंहणं च स्थिरीकरणं च उपबृंहणस्थिरीकरणे तत्र उपबृंहणं नाम समानधार्मिकाणां सद्गुणप्रशंसनेन तद्वृद्धिकरणं धर्माद्विषीदतां तत्रैव स्थापनं, वात्सल्यं च प्रभावना च वात्सल्यप्रभावने तत्र वात्सल्यं समानधार्मिकाणां प्रीत्या उपकारकरणं प्रभावना धर्मकथादिभिः तीर्थप्रख्यापना सर्वं च गुणप्रधानो निर्देशो गुणगुणिनाः कथंचित् द्रव्यस्थापनार्थं अन्यथा एकान्ताभेदे गुणनिवृत्तौ गुणिनोऽपि निवृत्तेः शून्यतापत्तिः एते अष्टौ दर्शनाचारा एव देव मुख्याः सरागदर्शनभेदा तदभिधानाच्च निष्ठिताः सरागदर्शनार्यभेदाः, सम्प्रति वीतरागदर्शनार्यभेदानाह-से किं तमित्यादि सुगमं यावत् अहवा चरित्तारिया पन्नत्ता प० स० सामाइयचरित्तारिया इत्यादि ॥ नवरं पढमसमय खपक

य अचरिमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारिया य । से कित खीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा छउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया केवलिखीणकसायवीतरागदसणारिया य । से कित छउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा सयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया । से कित सयबुद्धछउमत्थखीणक

वीतरागदर्शनार्या द्विभेदाः तद्यथा ते वक्ष्ये—पढमसमयउवसंतकसाय वीयरागदंसणारिया । प्रथमसमये वर्तमाना उपशान्तकषाय वीतराग दर्शनार्याः । अपढमसमय उवसंतकसाय वी० । द्वितीयादिसमये वर्तमाना उपशान्तकषाय वीतराग दर्शनार्या भवन्ति । एवं चरमसमयउवसंतकसाय वी० । एवं ते उपशान्तकषायस्य चरमसमये वीतराग दर्शनार्या वक्तव्याः । अचरमसमयउवसंतकसाय वी० । शेषेषु समयेषु वर्तमाना सामायिकचरित्रादिषु वर्तमाना ते उपशान्तकषाय दर्शनार्या वक्तव्याः । से किं तं खीणकसाय वीयरागदंसणारिया २ दुविहा प० त० । द्विधे क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्या द्विभेदाः तद्यथा ते वक्ष्ये—छउमत्थखीणकसाय वी० । छउमत्थखीणकसाय वी० । छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्याः । केवलिखीणकसायवी० । केवल क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्या वक्तव्याः । से किं तं छउमत्थ खीणकसाय वीयराग दंसणारिया २ दुविहा प० त० । द्विधे क्षीणकषाय वीतराग द

मसमय इति ये तथा भेदो पशान्तकषायत्वादीना विशेषाचा प्रथमसमये वर्त्तते ते प्रथमसमया सतो द्वितीयादिषु समयेषु वर्त्तमाना अप्रथमसमया तथा चरमसमय अचरमसमय इति ये तेषा मवोपशान्तकषायत्वादीनां विशेषाचा अन्त्यसमय वर्त्तन्ते तच्चरमसमया ये ततो ऽर्वाक् द्विचरमसमयादि चरमादिषु समयेषु वर्त्तन्ते त ऽचरमाः सामायिकादीनां च चारित्राचा स्वरूपमिदं-समो रागद्वेषरहितत्वा दयगमन समाय एपचा न्यासामपि साधुक्रियाणा मुपलक्षण सर्वासा मपि साधुक्रियाणां रागद्वेषरहितत्वात समायेन निर्वृत समाय मव वा सामायिक यद्वा समानां ज्ञानदर्शनचारित्राणा मायो लाभः समायः स एव सामायिक विनयादे राकृतिगणतया विनयादिभ्य इत्यनेन स्वार्थिक इकण तत्र सयसावद्य विरति

सायवीयरागदसणारिया सयधुद्धछउमत्थखीण० दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पढमसमयसयधुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारियाय अपढमसमयसयधुद्धछउमत्थखीगकसायवीतरागदसणारिया, अहवा चरिमसमयसयधुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया अचरिमसमयसयधुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया य । सत्त सयधुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया । से किंत युद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीत

स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य ते केतला भेदे कह्या ते कहे—स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषायनो । स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य ना भेद कह्या । बीजाथी पण क्षीणकषायनो । प्रतिबोध वगर बुद्ध छद्मस्थ वीतराग दर्शनार्य । सेकित छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य २ दुविधा प त । बिना स्वयंबुद्ध छद्मस्थ वीतराग दर्शनार्य ना बिन घीतम दायभेद कह्या ते कहे—पढमसमय सयबुद्ध छउमत्थखीणकसायनो । प्रथमसमय वर्त्तता स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य ए प्रथमभेद । अपढमसमयसयबुद्ध छउमत्थ खीणकसायनो । बीजे आदिसमय वर्त्तता स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य ए २ भेद । अथवा चरमसमयसयबुद्ध छउमत्थखीणकसाय नो । अथवा चरमसमय वर्त्तता छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अचरमसमय सयबुद्ध छउमत्थ खीणकसायनो । अचरमसमयवर्त्ती स्वयंबुद्ध क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । सेत्त सयंबुद्ध छउमत्थ खी

रागदसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयसुहुमसंपरायछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयसुहुमसंपरायछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमयसुहुमसंपरायछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयसुहुमसंपरायछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सत्त सुहुमसंपरायछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सत्त छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किं तं केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । से किं तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग

[illegible]

सप्तमय इति ये तेषां मध्ये पश्चात्कषायत्वादीनां विशेषाणां प्रथमसमये वर्तन्ते ते प्रथमसमयाः ततो द्वितीयादिषु समयेषु वर्तमाना अप्रथमसमयाः तथा चरमसमय अचरमसमय इति ये तेषां सर्वोपशान्तकषायत्वादीनां विशेषाणां अन्त्यसमये वर्तन्ते ते चरमसमयाः ये ततो ऽर्वाक् द्विचरमसमयादि चरमादिषु समयेषु वर्तन्ते ते ऽचरमाः सामायिकादीनां च चारित्राणां स्वरूपमिदं-समो रागद्वेषरहितस्तस्य अयगमनं समायः एतथा ज्यासामपि साधुक्रियाणां सुमनसः सर्वासां मपि साधुक्रियाणां रागद्वेषरहितत्वात् समायेन निर्वृत्तं समाये भवं वा सामायिकं यद्वा समानां ज्ञानदर्शनचारित्राणां आयो लाभः समायः स एव स्वार्थिक इकण् प्रत्यये सामायिकं विनयादेः आकृतिगणतया विनयादिभ्य इत्यनेन स्वार्थिक इकण् तच्च सर्वसावद्य विरति

सायत्रीयरागदसणारिया सयबुद्धछउमत्थखीण० दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पढमसमयसयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया य अपढमसमयसयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमयसयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयसयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया य। सेत्तं सयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया। से किं तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीत

समाप्त कितने भेद है? हे गौतम! दो भेद कहे हैं वे कहते हैं—स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषायवाले। स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शना दो भेद कहे। अभिलाषित क्षीणकषायवाले। प्रतिबोधकारी बुद्ध। छद्मस्थ वीतराग दर्शनार्य। सो किंत छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनारिया २ दुविहा पं त। किं स्वयंबुद्ध छद्मस्थ वीतराग दर्शनार्य के कितने गौतम दो भेद कहे हैं वे कहते हैं—पढमसमय स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषायवाले। प्रथमसमय में वर्तता स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य ए प्रथमभेद। अपढमसमयस्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषायवाले। दूसरे तीसरे समय में वर्तता स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य ए २ भेद। अथवा चरमसमयस्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषायवाले। अपना चरमसमय में वर्तता छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य। अचरमसमय स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषायवाले। अचरमसमय पूर्व के समय में क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य। सेत्तं स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षी

गिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य। सेत्त अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया। सेत्त केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया। सेत्त खीणकसायवीतरागदंसणारिया। सेत्त वीतरागदंसणारिया। सेत्त दंसणारिया। से किंत चरित्तारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सरागचरित्तारिया वीतरागचरित्ता रिया। से किंत सरागचरित्तारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सुज्ञमसंपरायसरागचरित्तारियाय बाय रसंपरायसरागचरित्तारियाय। से किंत सुज्ञमसंपरायसरागचरित्तारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा— पढमसमयसुज्ञमसंपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयसुज्ञमसंपरायसरागचरित्तारिया य, अहवा चरिम समयसुज्ञमसंपरायसरागचरित्तारिया अचरिमसमयसुज्ञमसंपरायसरागचरित्तारियाय अहवा सुज्ञमसंपरा

स चरित्तार्य्या २ दुविधा प० त०। द्विविधाश्चारित्रार्य्यास्तद्यथा सरागचरित्तार्य्या वीतरागचरित्तार्य्या। सरागि चरित्र प्रमत्त वीतराग चरित्र ये २। सकित सरागचरित्तार्य्या २ दुविधा प० त०। द्विवि सरागचरित्र सवा द्वयप्रकारे कथा ते कहवै—सूक्ष्मसंपराय सरागचरित्तार्य्या बादरसंपराय च। सूक्ष्मसंपराय सराग चरित्राय बादरसंपराय सरागचरित्राय। सकित सूक्ष्मसंपर य चरित्तार्य्या २ दुविधा प० त०। द्विव सूक्ष्मसंपराय सर गचरित्र यना द्वयभद कथा तद्यथा—पढमसमयसूक्ष्मसंपराय चरित्रार्य्या अपढमसमयसूक्ष्मसंपराय चरित्रा। प्रथ समसमय सूक्ष्मसंपराय सरागचरित्र य अपढमसमय सूक्ष्मसंपराय सरागचरित्र य। अथवा चरमसमय सूक्ष्मसंपराय सरागच। अथवा चरमसमय सूक्ष्म सराय चरित्राय। अचरमसमय सूक्ष्मसंपराय सराग च। अचरमसमय सूक्ष्मसंपराय सराग चरित्राय। अथवा सूक्ष्मसंपराय सराग चरित्तार्य्या द्विधा प० त०। अथवा सूक्ष्मसंपराय सराग चरित्राजना द्वयभद कथा ते कहवै—संक्लिश्यमानाय विशुद्ध्यमानाय। संक्लिश्यमाम संपराय चरित्रा य विशुध्यमान सूक्ष्मसंपराय सराग चरित्राय। सहा सूक्ष्मसंपराय सरागचरित्ता। एतस सूक्ष्मसंपराय चरित्राय कथा। सेकिंत बादर संपराय सराग

दमणारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदसणारिया अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदसणारियाय । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदसणारियाय अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदसणारियाय । सेत्त सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदसणारिया । से किंत अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पणत्ता तजहा पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदसणारिया अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदसणारियाय, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदसणारिया अचरिमसमयअजो

पाइडेसमय संयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शन व। प्रथमसमय सयोगी केवली क्षीणकसाय वा । अप्रथमसमय सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अथवा चरमसमय सयोगी केवली क्षीणकषाय वी । अचरम चरमसमय सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अचरमसमय सयोगी केवली क्षीणकषाय वी । अचरमसमय सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । सयोगी केवली क्षीणकषाय वी । एतले सयो गी केवली क्षीणकषाय वीतराग कहा तदनके—सेकित अयोगी केवली क्षीणकषाय २ दविहा प त । जिने अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग द र्शनार्य कहा तेकहे—पढमसमय अयोगी केवली क्षीणकषाय वी । प्रथमसमय अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अप्रथम समय अयोगीकेवली क्षीणकषाय वी । चरम समय अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अथवा चरमसमय अयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्य । अचरमसमय अयोगी केवली क्षीणकषाय वी । अचरमसमय अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । सेत्त अयो गी केवली क्षीणकषाय वी । एतले अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य कहा एतले क्षीणकषाय दर्शनार्य कहा । सेत्त केवलि क्षीणक षाय वी । सेत्त क्षीणकषाय वी सत्त वो सेत दर्शनार्य । एतले केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य कहा दर्शनार्यना अधिकार कहा । हवे

गिकेवलिखीणकसायवीतरागदसणारिया य । सेत्त अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदसणारिया । सेत्त केवलिखीणकसायवीतरागदसणारिया । सेत्त खीणकसायवीतरागदसणारिया । सेत्त वीतरागदसणारिया । सेत्त दसणारिया । से किंत चरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सरागचरित्तारिया वीतरागचरित्तारिया । से किंत सरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सुहुमसंपरायसरागचरित्तारियाय बायरसंपरायसरागचरित्तारियाय । से किंत सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य, अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया अचरिमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारियाय अहवा सुहुमसंपरा

त चरित्तार्य्या २ दुविधा प न । जिके बादराय [illegible] दोयभेद कह्या ते कहेछे । सरागचरित्तार्य्या वीतरागचरित्तार्य्या । सरागि चरन यमेद वीतराग चरित्र ये २ । ते किसा सरागचरित्तार्य्या २ दुविधा प न । जिके सरागचरित्रवन्ता दोयप्रकारे कह्या ते कहेछे—सूक्ष्मसंपराय सरागचारित्तार्य्या बादरसंपराय च । सूक्ष्मसंपराय सराग चरित्राय बादरसंपराय सरागचरित्राय । ते किसा सूक्ष्मसंपराय चरित्तार्य्या २ दुविधा प न । जिके सूक्ष्मसंपराय सराग चरित्र ना दोयभेद कह्या ते कहेछे—पढमसमयसूक्ष्मसंपराय चरित्तार्य्या अपढमसमयसूक्ष्मसंपराय चरित्ता । प्रथमसमय सूक्ष्मसंपराय सरागचरित्र य अपढमसमय सूक्ष्मसंपराय सरागचरित्र य । अथवा चरमसमय सूक्ष्मसंपराय सराग च । अथवा चरमसमय सूक्ष्म सराग चरित्राय । अचरमसमय सूक्ष्मसंपराय सराग च । अचरमसमय सूक्ष्मसंपराय सराग चरित्राय । अथवा सूक्ष्मसंपराय सराग चरित्तार्य्या २ विधा प न । अथवा सूक्ष्मसंपराय सराग चरित्रायना दोयभेद कह्या ते कहेछे—संक्लिश्यमानाय विशुध्यमानाय । संक्लिश्यमान संपराय चरित्राय विशुध्यमान सूक्ष्मसंपराय सराग चरित्राय । सेत्त सूक्ष्मसंपराय सरागचरित्रा । एतले सूक्ष्मसंपराय चरित्राय कह्या । ते किसा बादर संपराय सराग

दमणारिया १ २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । सेत्तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किंत अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता तंजहा पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयअजोगि

पश्चिमसमय संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ । अपढमसमय संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वो । प्रथमसमय संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ । अथवा चरमसमय संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वो । अचरम चरमसमय संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ । अचरमसमयसंप्राप्त केवली क्षीणकषाय वो । अचरमसमय संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ । सयोगसंप्राप्त केवली क्षीणकषाय वो । उनके सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग कहा उसके—संक्षिप्त संप्राप्त केवली क्षीणकषाय २ दुविहा प त । किये संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ कहा उसके—प्रथमसमय संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वो । पश्चिमसमय संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ । अपढमसमय संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वो । बीजा चरमसमय संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ । अथवा चरमसमय संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ । अचरमसमय संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वो । अचरमसमय संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ । सेत्त संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वो । उनके संप्राप्त केवली क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ कहा उसके क्षीणकषाय छद्मस्थ कहा । सेत्त केवलि क्षीणकषाय वो । सेत्त क्षीणकषाय वो सत्त वो चेत छद्मस्थावरिया । उनके केवली क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ कहा छद्मस्थना अधिकार कहा । सेकि

पढमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया य अहवा चरिम
समयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत्तं उवसंतक
सायवीतरागचरित्तारिया से किंतं खीणकसायवीतरागचरित्तारिया २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा छउमत्थ
खीणकसायवीतरागचरित्तारिया केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किंतं छउमत्थखीणकसायवी
तरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया बुद्धबो
हियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किंतं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २
दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पढमसमयसयंबुद्धखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखी

उपशान्तकषाय वीतराग चारित्राय । चरमसमय उपशान्तकषाय वीतराग चारित्रार्य । अचरमसमय उपशान्तकषाय वीतराग चारित्राय ।
मय उपशान्तकषाय वीतराग चारित्रार्य । ये हुए उपशान्तकषाय वीतराग चारित्राय कथा । सेकिंतं क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्य २ दुविहा
प त । छिन क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्य के दो भेद कहा है वह—छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग च । छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रा
य । केवली क्षीणकषाय वी च । छद्म क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्य । सेकिंत छद्मस्थ क्षीणकषाय वी प दु प त । छिन छद्मस्थ क्षीणकषा
य वीतराग चारित्रार्य के दो भेद कहा है वह—स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वी च० । स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्राय । बुद्धबोधित
छद्मस्थ क्षीणकषाय वी च । स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्र य । सेकिंतं स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वी० प दु प त । छिवे स्व
बुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्य के दो भेद कहा है वह—प्रथमसमय स्वयंबुद्ध क्षीणकषाय वीतराग च । प्रथमसमय स्वयंबुद्ध क्षीणकषा
य वीतराग चारित्राय । अप्रथमसमय स्वयंबुद्ध क्षीणकषाय वीतराग च० । अप्रथमसमय स्वयंबुद्ध क्षीणकषाय वी च । अप्रथमसमय स्वयंबुद्ध छद्मस्

यसरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—संकिलिस्समाणाय विसुज्झमाणाय सेत्त सुहुमसपरायसरागचरित्तारिया स कित बायरसपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पढमसमयबायरसपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयबायरसपरायसरागचरित्तारिया य अहवा चरिमसमयबायरसपरायसरागचरित्तारिया अचरिमसमयबायरसपरायसरागचरित्तारिया य अहवा बायरसपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पडिवाइ य अपडिवाइ य सेत्त बायरसपरायचरित्तारिया सेत्त सरागचरित्तारिया स कित वीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—उवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया खीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से कित उवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा प०, तंजहा

च । पढम किम बादरसपराय चरित्राय शायमेद कथाले । सेकित बादरसपराय सरागचरित्तारिया २ दुविहा प त । किम बादरसपराय चरित्र। शायमेद कथा तेवकहे—पढमसमयबादरसपराय सराग च । प्रथमसमय बादरसपराय सराग चरित्राय । अपढमसमय बादरसपराय सराग चरित्र। अप्रथमसमय बादरसपराय सराग चरित्राय । अथवा चरमसमय बादरसपराय सराग च । अथवा चरमसमय बादरसपराय सराग चरित्राय । अचरमसमय बादरसपराय सराग च । अचरमसमय सरागबादर चारित्राय । अथवा बादरसपराय सरागचरित्तारिया दुविहा प त । अथवा बादरसंपराय सराग चरित्रायना शायभेद कथा ते कहेछे—पडिवाइया अपडिवाइयाय । प्रतिपातिक अप्रतिपातिक । सेत बादरसपराय बादरसपराय सराग च । एतम बादरसपराय चरित्राय कथा । सत सराग चरित्र । किवे वीतराग चरित्र यना । सकित वीयराग चरित्तारिया दुवि हा प त । किवे वीतराग चरित्रायना शायभेद कथा तेवकहे—पढमसमयउवसंतकसायवीतराग च । प्रथमसमय उपशान्तकषाय वीतराग चरित्र। अपढमसमय उवसंतकषाय वी । अप्रथमसमय उपशान्तकषाय वीतराग चरित्राय । अथवा चरमसमय उवसंतकषाय वी । अथवा चरमसमय

रूपं यद्यपि च सयमपि चारित्र मविशेषतः सामायिक तथापि च्छेदादिविशेषै विशेष्यमाणं मथत शब्दान्तरस म मानात्य मजते प्रथम पुन रविशेषणात् सामान्यशब्द एवा वतिष्ठत सामायिका मिति तच्च द्विधा इत्वर यावत्कथिक च तत्र इत्वर भरतैरावतेषु प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीर्थे सारोपितमहाव्रतस्य शैक्षकस्य विज्ञेय यावत्कथित प्रव्रज्याप्रतिपत्तिकालादारभ्याप्राणोपरमात् तच्च भरतैरावतभाविमध्यद्वाविंशति तीर्थकरतीर्था स्तर्गताना च विदेहतीर्थकरतीर्थान्तर्गताना च साधूना मवसेय तथा सूपस्थापनाया अभावात उक्त च सव्व मिण सामाइय छयाइविसेसिय पुण विभिन्न । अविसेसस सामइय चिय मि ह सामन्नसन्नाय ॥ १ ॥ सावज्जजोगविरइत्ति तत्य सामाइय दुहा त च इत्तरमावकहतिय पढमपढमतिय मज्झिमाण तित्थेसु भरहेरावत्थ बहुसम महसयावकालीय ॥ १ ॥ सम्मामावकहीय तित्थेसु विदेहयाण च । ननु इत्वरमपि सामायिकं करोमि भ दत सामायिक यावज्जीव मित्येव यावदायु रागृहीत तत उत्थापनाकाले तत्परित्यज्यतः कथ न प्रतिज्ञाभङ्ग उच्यते ननु प्रागेवास्य सयमस्य चा

दुविहा पण्णत्ता, तजहा सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग चरित्तारिया य । से कित सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा— पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग

भवा । किं तत्सर्वो क्षीणकषाय वीतराग चरित्रायत्ता द्वयभेद वक्ष्या त तद्यथा—सयोगी केवली क्षीणकषायवीतराग चरित्रार्याः अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्याश्च । किं सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्र य अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्राय । सविस्तर स यथाक्रमं क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्याः २ दुविहा पण्णत्ता तजहा । किं सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रायत्ता द्वयभेद वक्ष्या त तद्यथा—प्रथमसमयसयोगी के सी क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्याः । प्रथमसमय सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्याः । अप्रथमसमयसयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्याः । प्रथमसमय सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्र य । अथवा चरमसमय सयोगी केवली क्षीण

णकसायवीतरागचरिया य, अहवा चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्तं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। से किं तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत्तं छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। से किं तं केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २

क्षीणकषाय चरित्राय। अथवा चरमसमय स्वयंबुद्ध क्षीणकसाय वी[illegible] च। अथवा चरमसमय स्वयंबुद्ध क्षीणकषाय वीतराग चरित्र य। अचरमसमयस्वयंबुद्ध क्षीणकसाय वी[illegible] च। अचरिमसमय स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय चरित्राय। सत्त छद्मस्थ क्षीणकषाय वा[illegible]। एतले स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय चरित्राय। अकिंत बुद्धबोधित क्षीणकषाय वी[illegible] च दुविहा पन्नता तंजहा। किंव बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रायना दोयभेद कह्या ते कहे छे—पढमसमय बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकसाय वी[illegible] चरित्तारिया। प्रथमसमय बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्राय। अपढमसमय बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकसाय वीतराग। अप्रथमसमय बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्राय। अथवा चरमसमयबुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग। अथवा चरमसमय बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय चरित्राय। अचरमसमय बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्र य। सेत्तं बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकसाय वीतराग चरित्तारिया। एतले बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्राय कह्या। सेत्त छद्मस्थक्षीणकसाय वीतराग चरित्तारिया। किंव छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्राय। सेकिंत केवली क्षीणकसाय वीतराग चरित्तारिया २ दुविहा पन्नत्ता क

पाग्रणायतीषा इइमामर्तीयेसकामत। पंचयामप्रतिपत्ती सातिचार पमानगुकघातिन' पुनर्प्रेतोत्तारम उक्त प-मेएस्स मिरइयारस्स तिस्यनरसफ मव त हाज्जा। मूसगकपाइकोमा इयारमजय प ठियकप्पो ॥१॥ उजय पातसातिचार मिरतिचार प स्थितकल्प इति प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीपपका स तया परिहार तपाविशप तम विशाद्धियस्मिन् पारच तत्परिहारविशुद्धिक तपद्धिपा मिविशमानक निविष्टकायिक च तम्र मिविशमानका विवक्षितचारित्रासवका: मिविष्टकायका पासवितपारिभ्रका तद अतिरकाद्यारित्र मप्यत सुप्पते इद नवको गप पत्वारोमिविशमानका पत्वार पानुपारिक मकः कल्पस्थिता पावमापार्यो यद्यपि प सर्वोप मुतातशयसम्पका: तपापि कल्पत्वात् तपा मक कवि स्कल्पस्थिता वस्याप्यत मिविशमानकामामाप परिहार परिहारयाकइ तपा जवन्मका तइय उक्कासो। सीअवइवाअकास जविठ्ठ पीरए पतेय ॥१॥ अत्य सइया गि इइ पउत्पवठ न पाइमाऊ्मसु। मठमामिवउक्कासा एत्तोसिर पवक्खामि ॥२॥ सिसिर छजइयाए कठाए दसमचारिमणो हाइ। पासासु पठ गाइ यारसपजमतणामठ्ठ ॥३॥ पारणपायाम पचसु पगइा दासु पभिग्गहो जिवक। कप्पठियापइदिव कारिन एमवपायाम ॥४॥ पयछम्मा मतय पारिउपरिहारणापणुचरंति। अणुचरग परिहारिय पइठिय जाव छम्मासा ॥५॥ कप्पठिएविपथ छम्मासतव करइ ससाठे। अणुपरिहा रिमभाव वपति कप्पठिगत प ॥६॥ पपथोपहार समासपमाणा उवसिमु कप्पो। सएवमु विससा चिससमुनाठे मायव्वो ॥७॥ कप्पसमत्तीए तय जिनकप्प वा उपयति गच्छ वा। पभिवज्जमाणमा पुण जिनस्समास पवज्जत ॥८॥ तित्पयरसमीवास वणस्सपास वनोउपगस्स। एएसि

चरिमसमयसुजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयसुजोगिकेवलिखीणकसायवीत रागचरित्तारिया य सह सुजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। सेत्त केवलिखीणकसायवीतराग

मय पयागोक मो खोणकसाय वीयराग चरित्तारिया। पचरिमसमय मयागाकेवली खीणकसाय वीतराग चरित्तारिया। सेत्त पयागीकेवली खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया। पतसे पयागी केवली खाणकसाय वीतराय चरित्तारिया। सेत्त केवलिखीणकसाय वीयराय चरिताय। सत्त खीणकसा य

रित्रविशयत सामायिक सवत्रापि सावद्ययोगविरतिसद्भावात् केवलमक्षरादिविशुद्धिविशेषे विवक्ष्यमाण प्रथम आद्याकारत एव नामान्तर प्रवर्तते
तता यथा यावत्कथक सामायिक छेदोपस्थाप वा परमविशुद्धिविशेषरूपसूक्ष्मसंपरायादिचारित्राणि न प्राप्नोति तत स्वरमपि सा
मायिक विशुद्धिविशेषरूपच्छेदोपस्थापनादीनि । यदि हि प्रव्रज्यापरित्यज्यते तर्हि तदूर्ध्वं प्रापद्यत न तस्येव विशुद्धिविशेषादासौ इत्वर-यावत्कथिक
समाजना आपुवतविषयक। सूक्ष्मसंपरायविशिष्ट शुद्धमपि तस्यकोऽत्र २१५ तथा च पूर्वपर्यायस्य उपस्थापना च महाव्रतस्य यास्मन् चारित्र
तत च्छेदोपस्थापन तच द्विधा सातिचार निरतिचार च तत्र निरतिचार च यत् इत्वरसामायिकवतः शैक्षकस्यारोप्यते तीर्थान्तरसंक्रान्तौ वा यथा

चरिमसारिया य, अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयसजो
गिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारियाय । सेत्तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया । से किंतं
अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया १ २ दुविहा पण्णत्ता , तंजहा पढमसमयअजोगिकेवलि
खीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य , अहवा

कषाय वीतरागचारित्रार्याः । प्रथमा चरमसमय सयोगिकेवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्य । अचरमसमयसयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चारि
त्रार्या । अचरमसमय सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्र है। तत सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्या । अयोगी के
वली क्षीणकषाय वीतराग चारित्र । अवित क्या अयोगी क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्या २ प्रकार के कहे हैं। जैसे प्रथम अयोगी केवली क्षी
णकषाय वीतराग चारित्रार्य दो प्रकार कहे हैं—प्रथमसमय अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्या । प्रथमसमय अयोगी केवली क्षीणकषाय
वीतराग चारित्र । अप्रथमसमय अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्या । अप्रथमसमय अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्र है ।
अथवा चरमसमय अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्या । प्रथमा चरमसमय अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्र है । अचरिमस

प्रसर्पिण्यवसर्पिणीरूपे तु चतुर्थारकप्रतिभागकाले न सम्भवन्ति महाविदेहक्षेत्रे तेषां सम्भवात्। चारित्रद्वारे-संयमस्थानद्वारेण मार्गणा तत्र सामायिकस्य छेदोपस्थापनस्य च चारित्रस्य यानि जघन्यानि संयमस्थानानि तानि परस्परतुल्यानि समानपरिणामत्वात् ततोऽसङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि संयमस्थानान्यतिक्रम्येह यानि संयमस्थानानि तानि परिहारविशुद्धिकयोग्यानि तान्यपि च केवलिप्रज्ञया परिभाव्यमानानि असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि तानि प्रथमद्वितीयचारित्राविरोधीनि तत्रापि सम्भवात् तत ऊर्ध्वं यानि संख्यातीतानि संयमस्थानानि तानि सूक्ष्मसम्पराययथाख्यातचारित्रयोग्यानि उक्तं च तुल्या जहन्नठाणे संयमठाणपढमबिइयाण। ततो असंखलोए गन्तु परिहारियठाणा ॥ १ ॥

—इत्तरियसामाइयचरित्तारिया आवकहियसामाइयचरित्तारिया य। सेत्तं सामाइयचरित्तारिया। से किं तं छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—साइयारा छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया निरइयारा छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया। सेत्तं छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया। से किं तं परिहारविसुद्धियचरित्तारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—निव्विस्समाणपरिहारविसुद्धियचरित्तारिया निव्विट्ठकाइयपरिहारविसुद्धियचरित्ता

यदुक्तं—इत्तरियसामाइय चरित्तारिया आवकहियसामाइय चरित्तारिया। तिर्थे च प्रथममध्यमे तच्चरमतीर्थे पश्चे इतर सामायिकचरित्र यथा च इत्तरचारित्रप्रतिपन्नस्य संयमस्य मज्झपदे यावज्जीवं ते आसमाप्ति जिनकल्प पाडिक्की उपसम्पद्य यस्मै उत्तरे सामायिक चारित्राय। केचित्तु भावक्यायिकया चरित्तारिया २ दुविहा प० त०। छेदोपस्थापनीय चरित्र यतः प्रायश्चित्त कथ्यते यदुक्तं—सातिचार छेदोपस्थापनीय च निरतिचार छेदोपस्थापनीय च। यत्रोचार आरोप्यते एव मार्गचार छेदोपस्थापनीय चारित्राय निरतिचार निगार पत्तोचारण्णगाम एव छेदोपस्थापनीय चारित्राय। सातिचारछेदोपस्थापनीय च। एतत् छेदोपस्थापनीय कथ्या। सवित पारिहारविशुद्धि च दुविह प० त०। जिन परिहारविशुद्धिका डायभेन कथ्या तद्यथा—निर्विश्यमान परिहारविशुद्धिक च निर्विष्टकायिक परिहारविशुद्धिक च। निर्विशमानक निर्विष्टकायिक एतयो परिहारविशुद्ध चतस्य प्रथम जघन्य मध्य

त चरम परिहारविसुद्धिय त सु ० दे ० चये से परिहारविसुद्धिका कस्मिन् क्षेत्रे काले वा भवति ? उच्यते-इह क्षेत्रादिनिरूपणाय विंशतिद्वारा
णि तद्यथा-क्षेत्रद्वारं १ कालद्वार २ चारित्रद्वार ३ तापद्वार ४ पर्यायद्वार ५ आगमद्वार ६ वेदद्वार ७ कल्पद्वार ८ लिंगद्वार ९ लेश्याद्वार १० ध्या
नद्वार ११ गणद्वार १२ अभिग्रहद्वार १३ प्रव्रज्याद्वार १४ मुण्डापनाद्वार १५ प्रायश्चित्तविधिद्वार १६ कारणद्वार १७ नि प्रतिकर्मताद्वार १८ भिक्षाद्वा
र १९ पन्थद्वार २० । तत्र क्षेत्र द्विधा मार्गणा जन्मत सद्भावतश्च यत्र क्षेत्र जात तत्र जन्मतो मार्गणा यत्र च कल्प स्थितो भवस तत्र सद्भावत ।
उक्तं च-एतदुक्ताइमग्गणा जम्मणउपसमति भावय । जम्मणउ जहिं जाती सतीभावोऽजहिं कप्पो ॥ १ ॥ तत्र जन्मत सद्भावतश्च पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वै
रावतेषु न तु महाविदेहेषु न च तया संहरण मस्ति येन ततोऽन्यक्षेत्रे सहरणत सर्वासु कर्मभूमि अकर्मभूमिषु वा प्राप्यरन् उक्त च-सि
तजरवरएम सुवीतिसहरणवज्जियानियमा । कालद्वार-अवसर्पिण्यां तृतीय चतुर्थे वारके जन्मसद्भाव पञ्चममपि उत्सर्पिण्यां द्वितीय तृतीय चतु
र्थे वा जन्मसद्भावः पुन स्तृतीय चतुर्थेवा उक्तं च-उस्सप्पिणीउसप्पिणीए जम्मत होतासुमति भावम । उस्सप्पिणिविवरीयं जम्मणउसतिभावेय ॥ १ ॥

रित्तारिया । सत्त खीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत्त वीतरागचरित्तारिया । अहवा चरित्तारिया पचवि
हा पणत्ता , तजहा—सामाइयचरित्तारिया छेओवठावणीयचरित्तारिया परिहारविसुद्धिचरित्तारिया सुहुम
सपरायचरित्तारिया अहक्खायचरित्तारिया य । सकित सामाइयचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता , तजहा

। सत्त वीतराग चरित्तारिया । एतस्य क्षीणकषाय वीतराग चारित्राय कथा एतस्य वीतराग चारित्राय कथा । अथवा चारित्रार्या पञ्चविधा प्र
ज्ञप्ता तद्यथा । पञ्चधा चारित्राय परिभेद कथा ते यथा—सामायिकचारित्रार्या छेदोपस्थापनीय च परिहारविशुद्धि च सूक्ष्मसंपराय च यथाख्यात
चरित्तार्या । सामायिक चारित्राय छेदोपस्थापनीय चारित्र परिहारविशुद्धि चारित्र सूक्ष्मसंपराय चारित्राय सूक्ष्म सामायिक यथाख्यात चारित्रा
य निष्ठ च । स किं सामायिक चरित्तार्या २ द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा । प्र चारित्र य कथित् किं सामायिक चारित्राय तथा द्विविध कथा ने

दर्शनावरणक्षयोपशमोत्पन्ने तु चक्षुर्दर्शनावरणादिक्षयोपशमरूपे तु चक्षुरादिप्रतिघातकाले न सम्भवति सर्वाविदर्शने तेषां समत्वात्, चारित्रद्वारे-संयमस्थानद्वारेण मार्गणा तत्र सामायिकस्य छेदोपस्थापनस्य च चारित्रस्य यानि जघन्यानि संयमस्थानानि तानि परस्परतुल्यानि समानपरिणामत्वात् ततो ऽसंख्येयलोकाका शप्रदेशप्रमाणानि संयमस्थानान्यतिक्रम्योर्द्ध यानि संयमस्थानानि तानि परिहारविशुद्धिकयोग्यानि तान्यपि च क्रमशः परिणाम्यमाना नि असंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि तानि प्रथमद्वितीयचारित्राविरोधीनि तत्रापि सत्त्वात् तत ऊर्द्ध यानि संख्यातीतानि संयमस्थानानि ता नि सूक्ष्मसम्परायय्थाख्यातचारित्रयोग्यानि उत्तम-तुल्या अत्यन्ताय संयमठाणपकमविषयात्र । ततो असंखेज्ज गुणं परिहारियठाणा ॥ १ ॥

-इत्तरियसामाइयचरित्तगुणप्पमाणे आवकहियसामाइयचरित्तगुणप्पमाणे य । सेत्तं सामाइयचरित्तगुणप्पमाणे । से किं तं छेदोवट्ठावणीयचरित्तगुणप्पमाणे ? २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-साइयारछेदोवट्ठावणीयचरित्तगुणप्पमाणे निरइयारछेदोवट्ठावणीयचरित्तगुणप्पमाणे । सेत्तं छेदोवट्ठावणीयचरित्तगुणप्पमाणे । से किं तं परिहारविसुद्धियचरित्तगुणप्पमाणे ? २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-निव्विसमाणपरिहारविसुद्धियचरित्तगुणप्पमाणे निव्विट्ठकाइयपरिहारविसुद्धियचरित्त

कथ्यते-इत्वरिकसामायिक चारित्रगुणप्रमाणं यावत्कथिकसामायिक चारित्रगुणप्रमाणं । तिर्द्ध न अल्पकालभावि तेषां तीर्थेषु प्रथमे इत्वर सामायिकचारित्र भवति उपस्थाप्यते महाव्रतानि यावत्कथिकं पुनः मध्यम तीर्थकृतां महाविदेहे च यावज्जीवं सम उपसर्गादि भावे धर्मे सामायिक चारित्र । छेदोपस्थापनीयचारित्र द्विविधं प्र त । किम छेदोपस्थापनीय चारित्र यतो प्रकारे कथ्यते - सातिचार छेदोपस्थापनीय च निरतिचार छेदोपस्थापनीय च । सातिचार मूलगुणघातिन यः पुनः आरोप्यते छेदोपस्थापनीय चारित्र निरतिचार शिष्यस्य नवदीक्षितस्य छेदोपस्थापनीय चारित्र । ...स्थाप्यते च । एतत् छेदोपस्थापनीय कथ्यते । अथ किं परिहारविशुद्धिक च द्विविध प्र त । किम परिहारविशुद्धिक कथ्यते तद्यथा-नि र्विश्यमान परिहारविशुद्धिक च निर्विष्टकायिक परिहारविशुद्धिक च । निर्विश्यमानक निर्विष्टकायिक उभयो परिहारविशुद्ध चारित्र प्रथम अथवा मध्य

ते वि प्रमत्तासोगा प्रविस्तुा चव पद्ममविस्यार्ध उवरिविसतोऽप्रमा मपमठाणादीवपि ॥ २ ॥ तत्र परिहारविशुद्धिकल्पप्रतिपत्तिः स्वकीये घय मपमस्थानेषु वर्त्तमानस्य भवति न शेषपु यदा स्वतातनय मपिकस्य पूर्वप्रतिपन्नो विवक्ष्यते तदा शेषघ्वपि सपमस्थानेषु लभ्यते परिहारवि शुद्धिकल्पसमाप्त्यनन्तर मन्यत्रपि चारित्रेषु सत्त्वात् तत्रापि च वर्त्तमानस्या तीतनय मपस्य पूर्वप्रतिपन्नत्वाविरोधात् उक्तञ्च-सठाय प्रक्रियत्ती

रियाय। सेत्त परिहारविसुद्धियचरित्तारिया। से किं तं सुहुमसंपरायचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—संकिलिस्समाण सुहुमसंपरायचरित्तारिया विसुज्झमाण सुहुमसंपरायचरित्तारियाय सेत्त सुहुमसंपरायचरित्तारिया से किं तं अहक्खायचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा छउमत्थ अहक्खायचरित्तारिया केवलिअहक्खायचरित्तारियाय सेत्त अहक्खायचरित्तारिया सेत्त चरित्तारिया सेत्त अणिड्ढिपत्तारिया सेत्त आरिया सेत्त कम्मभूमिगा सेत्त गब्भवक्कंतिया सेत्त मणुस्सा से किं तं देवा २ चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा भव

न करक तपकर निर्विशमानक पारिहारविशुद्ध चारित्र। सत्त परिहारविसुद्धिक च। एतच्च परिहारविशुद्धिक चारित्र य कथा। साकत सुक्ष्मसप राय चारित्रार्या द्विविधा प त। किम सूक्ष्मसपराय त च सूक्ष्म कार्माणवीन येन तेषां तेन सपरायश्च। संक्लिश्यमान सूक्ष्मसपराय च। स उपमान सूक्ष्मपराय चारित्राय ते उपशमश्रेणि प्रतिपतितो भवतो प्राप्त यव। विशुध्यमानसूक्ष्मसपराय च। विशुध्यमान सूक्ष्मसपराय चारित्रं तं उपशमश्रेणि चपकश्रेणिभ्यो पतित वद। सत्त सक्ष्मसपराय च। एतच्च सूक्ष्मसपराय चारित्राय कथा। सकिंत यथाख्यातचारित्रार्या द्विविधा प त। किम यथाख्यात चारित्रासना सायम्र् कथ तथोचे—अ तमस्य यथख्याय च केवलीयथख्याय च। छद्मस्थ यथाख्यात चारित्राय ते उपशान्तमा यगुणठाण चोवमासगुणठ च त यथाख्यात चारित्राय ते सयोग प्रयोगगुणठाण वदे। सत्त यथख्य य सत्त चरित्राय सत्त अणिड्ढप्राप्तार्या सेत पारिया। एतच यथाख्यात चारित्राय कथा एतच्च यतत्कर्मास भागभाय कथा एतेत सर्व पाय कथा। सत्त कर्मभूमगा सेत्त गर्भव्युत्क्रान्तिका से

तीर्थद्वारे–परिहारविशुद्धिको नियमात् तीर्थंकरसमीप एव सति वमेसुयवि होज्ज पुव्वपडिवन्नो । सेसु वि महंतो सो तीतम्मि पए पुव्वतीई ॥ १ ॥ होइसतिथ्यमिणउवतदभाव । विमएणुपकमवा साइ भवति न भवदो मानुपत्त्या वा तदभावे जातिस्मरणादिना उक्तञ्च–तित्थेतिनियमतोच्चिय तत्र गृहस्थपर्याया जघन्यतः सत्तावद्यांविनु ॥ १ ॥ पर्यायद्वारे–पर्यायो द्विधा गृहस्थपर्यायो यतिपर्यायश्च एकैकोपि द्विधा जघन्यत उत्कृष्टतश्च एकोनत्रिंशद्वर्षाणि यतिपर्यायो विंशति द्वावपि चोत्कृष्टतो देशोनपूर्वकोटीप्रमाणौ उक्तञ्च–एगुणतीसा । जइपरि याउजीवा वीसुक्कोसमसूणो ॥ १ ॥ आगमद्वार–अपूर्व मागमं स नाधीते यस्मात् तत्कल्पं प्रतिपद्य प्रगृहीतोचितयोगारोपणतएव स कृतकृत्यो नभत पूर्वाधीत तु विस्मृतशिकामयनिमित्त नित्यमवैकाग्रमनाः सम्यक् प्रायो नुसरति आगमे अपुव्वमहिज्जइ आगमेवोपजुत्तकप्प । समुचिय जोगारोपणा विगासंयमकेषिता ॥ १ ॥ पुव्वाहीयनुत्तयपा पयवुसइमियमवेस एगग्गमणोसम्मं विस्सोयसिगाएव्ययरुक ॥ २ ॥ वेदद्वार–नित्यम प्रतिपत्तौ पुरुषवेदो नपुंसकवेदो वा न स्त्रीवेदः स्त्रियाः परिहारविशुद्धिकल्पप्रतिपत्त्यसम्भवात् अतीत नय अधिकृत्य पुनः पूर्वप्रतिपन्न चिन्त्यमानः सवेदो वा अवेदो वा तत्र सवेद प्रतिपन्नप्रतिपत्तौ त्व सद इति उक्तञ्च–वेदोपवित्तिकाल इत्थीवज्जोसवेदोवाग चयरा । पुव्वपडिवन्नगोपुण हाज्जसवेदो अवेदो वा ॥ १ ॥ कल्पद्वार–स्थितकल्पे एवायं नास्थितकल्पे ठियकप्पम्मिय नियमा इति वचनात् तत्रा यदा प्रथमतीर्थकरचरमतीर्थकरसाधवः शय्यातरपिंडादिषु दशस्वपि स्थानेषु च स्थिताः साधवः सा कल्पः स्थितकल्पः उच्यते च पुनर्मध्यमतीर्थकरसाधूनां अवस्थितेषु कल्पेषु स्थिता स्थापेषु चा चलत्वादिषु षट्सु अस्थिता असौ कल्पा स्थितकल्पः उक्तञ्च–ठियकप्पिठियकप्पो आचेलुक्काइएसुठाणेसु । सव्वेसुठियापढमो चउठियलसुयठिया वीय ॥ १ ॥ आचेलक्यादीनि च दशस्थानान्यमूनि । आचेलक्कुद्देसिय सिज्जायररायपिंडकियकम्मे । वयजेट्ठपडिक्कमणे मासपज्जोसवणकप्पा ॥ १ ॥

णयासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया से किंत नवगयासी ? नवगयासी दसविहा पण्णत्ता, तंजहा असुर

त मणुया न जात द । २ च ब वरा प त । ए स समभूनया कया एतस भवे कया एतसि सर्व मनुष्य क्षेत्र, विव देवतानां ४ भवे कया ते बर्

मत्यारत्नावरियता। मत्यारम्भे भङ्गायरपिलम्भी बाउज्झामपपुरिमाठय । जिणकप्पस्सयकरणे पत्तारिभवहियाकप्पा ॥ २ ॥ लिङ्गद्वारे-नियमितो द्विविधपि लिङ्ग भवति तद्यथा-द्रव्यलिङ्ग भावलिङ्ग च एकोमपि विना विवक्षितकल्पोचितसामाचारयोगात सद्द्याद्वार-तत्र प्रतिपत्तिकाल तरा मु तिसृष विशुद्धासु सर्वासु परिहारविशुद्धिक कल्प प्रतिपद्यते पूर्वप्रतिपन्न पुन सर्वास्वपि कास्वपि भवति तत्रापी स्वराशिविशुद्धिसम्पदासु नात्य न्तमक्लिष्टासु वर्तते तथाभूतासुयतमानामप्रभूतकालमवतिष्ठत किमत्राह यत स्वकीयक्षायात्मकाटिस्यथ कान्योध्यावर्तत अथ प्रथमत एव कस्मा त्प्रथ मत उच्यत कर्मवशात ततश्च समासुविशुद्धास पडिवज्जइतीसुतउक्मसाम पुव्वपडिवन्नयपुण होज्जासव्वासुपिकाहिति ॥ १ ॥ पव्वतसम्मिश्रिताम यायकालपर्द्दमिप्यमदिारपरासु चितकम्मागमाव तत्राविद्योरियफलवद्द ॥ १ ॥ ध्यानद्वार-धर्मध्यान म प्रवर्द्धमानमपरिहारविशुद्धिकप्रतिपद्यते पू र्वप्रतिपन्न पुनरातरौद्रयोरपिभवति कवल प्रायश निरनुबन्ध यार च भावमिश्रियमय मर्व पडिवज्जइएसा पयम्झमाणस्स न्यरसुविभ्काणम पव्वप

मज्झे मपडिसिद्धा ॥ १ ॥ भवचङ्गावज्जाम रुद्दामसिद्धकम्मपरिणामा रात्तुहमुयिभावो इमस्सपायमिरपुयधा ॥ २ ॥ गणमाद्वार जघन्यत त्रयो गणाः प्रतिपद्यन्त उत्कर्षत शतसङ्ख्या पूर्वप्रतिपन्ना जघन्यतः उत्कृष्टतो वा शतश पुरुषगणनया जघन्यत प्रतिपद्यमाना सप्तविंशति उत्कर्षत सहस्र पूर्वप्रतिपन्नकाः पुनर्जघन्यन शतसः उत्कर्षत सहस्रस यात च गणतुतिम्पयणा गब्भपडिवत्तिसयस उक्कोसा सक्कोमजहन्नस्स मयसाविययपद्वप डिवन्ना ॥ १ ॥ सत्तावीसजहन्ना सहस्समुक्कोसउपपडिवत्ती सयसोसहस्ससोवा पडिवन्नजहन्नउक्कोसा ॥ २ ॥ यम्य च यदा पूर्वप्रतिपन्नकल्पमध्या दको निर्गच्छति अन्य प्रविशति तदो न्यून प्रतिपत्ती कदाचित् एकोपि भवति पृथक्त्वं वा पूर्वप्रतिपन्नो प्येव जघन्यत कदाचिदेकः प्राप्यत पृथ क्त्वं वा उत्तम्य पडिवज्जमाणमयवाप होज्जग्गाविऊणपक्खेव पुव्वपडिवन्नयावि भयणाएकोपुहुत्तंवा ॥ १ ॥ अभिग्रहद्वार-अभिग्रहा चतुर्विधा तद्यथा द्रव्याभिग्रहा क्षेत्राभिग्रहा कालाभिग्रहा भावाभिग्रहा च एते चा न्यत्र वर्णिता इति न भूय वर्ण्यते तत्र परिहारविशुद्धिकल्पे त नियम

हा न लभन्ति यस्मा देशस्य कल्पगय यथोदितरूपो निपक्षो वर्तते तस्य दृष्टान्तविषय विचित्रस्यामर्षोलिपुलकेषु मपरसग्रीवकल्पो कल्पोचित
निगमाजक ॥ १ ॥ यथानिगायराय निययामियमबमिरवयादाय तव्यालयविययर् व्ययरसविशुद्धिठायेतु ॥ २ ॥ प्रव्रज्याहार-मा सा यन्य मप्राज
पति कल्परिथति रयति कृत्वा भावय पद्याद्य ग एषा छन्नकल्पठिरमिकारुयति सपदृशा पुन यथाशास्त्र प्रपच्छति मुक्तापमहारपि ना सा यस्य
मुलपति यत्र प्रव्रज्यानन्तर नियमतो मुबहमिति प्रव्रज्याग्रहणमेव तद्गृहीतमिति विमर्षे पृथकद्वार तद युक्त प्रव्रज्याद्वार नियमतो मुण्डमस्ता
सम्भवात् यथाग्यस्य कथञ्चि हृतायामपि प्रव्रज्याया पुनरयाग्यतापरिज्ञाने मुण्डनायोगादत पृथगिदद्वारमिति प्रायश्चित्तविधिद्वारे । मनसापि
सूक्ष्ममप्यतिचारमापन्नस्य नियमत यतगेसूक्त प्रायश्चित्तमस्य यत यत कस्य एकाग्रताप्रधान सात छद्मस्थे गुणतरदोष इति कारणद्वारे तथा कारण
मात्र थालम्बनं य पुन सुपरिशुद्ध ज्ञानादिक तदा स न विद्यते येन तदाभित्यापवादपदसेविता स्यात् यप हि सबत निरपक्ष क्षिडकमवपनि
मित्तं मारभ्य मेव स कल्प यथोक्तविधिना समापयन् महात्मा वर्तते तस्य कारणमालम्बमात पुष्टमालम्बनमुपरिशुद्धं ययस्मतमधिकार सवि
यतपमाद्यापाय ॥ १ ॥ सद्वर्यमिरपमया भावतावपदहसमावतो बहुशमसमत्या किलिठकमावयानमित ॥ २ ॥ मि प्रतिक्रमताद्वार यय मथा
स्या नि प्रतिकर्मशरीरा ऽक्षिमलादिक मपि कदाचि था यमयति न च प्राणान्तेऽपि सामापतिते व्यसन द्वितीयपद सेवत तस्य निष्प्रतिकर्मश
रीरो यक्षिमलाद्यपिमावजमया पायतिष विषमङा वमर्षमिमबहुयबीय ॥ १ ॥ यच्चवयुत्तालोयवा विसयादीढ्ढउप्रोडयसति महयासुदत्तावाडं मयु
गपयवियइमरस ॥ २ ॥ भिक्षाद्वारे-यतदवचारित्रं तथा विहारक्रम श तृतीयस्या पौरुष्या भवति शेषासु च पौरुषीषु कायोत्सर्गो निद्रापि वा

रकुमारा नागकुमारा सुवण्णकुमारा विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा दीवकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाउ

क—भवनपतयो वानमन्तरा ज्योतिष्का वैमानिका । भवनपती वानमन्तर ज्योतिषी वैमानिक । तेषित भवनवासी दशविधा प्र त । ...विध भवनप
तो दशम कथा त कहते— असुरकुमार नागकुमार सुवर्णकुमार विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार उदधिकुमार दिशिकुमार वायुकुमार स्तनित

भावाद्व्यवस्थिताः कल्पाः स्म मध्यमपश्चिमयोः धावज्जीवमधपुरिमजिणाय । विदेहवासस्वयम्भूते चतारियमा इयाकप्पा ॥ २ ॥ लिंगद्वारे-नियमितो द्विविधेऽपि लिंगे भवति तद्यथा-द्रव्यलिंगे भावलिंगे च एकेनापि विना विवक्षितकल्पोचितसामाचार्ययोगात लेश्याद्वारे-तेजःप्रभृतिकासु तिसृषु लेश्यासु विशुद्धासु सहयासु परिहारविशुद्धिकं कल्पं प्रतिपद्यते पूर्वप्रतिपन्नः पुनः सर्वास्वपि कथं चि द्भवति तत्रापि नेतरासु अविशुद्धलेश्यासु नात्यन्तसंक्लिष्टासु भवति तथाभूतासु नातिप्रभूतकालमवतिष्ठते किन्तु स्तोकं यतः स्ववीर्यवशात् झटित्येव ताभ्यो व्यावर्तते अथ प्रथमत एव कस्मा न्नैव तत उच्यते प्रथमदारभ्य तत्वतः समासु विशुद्धासु प्रतिपद्यते तथा चोक्तम् पुव्वपडिवन्नगो पुण होज्जासु विकासु वि ॥ १ ॥ णच्चंतसंकिलिट्ठास णो बहुकालं च विनियतत्तिवरासु चित्तकम्माणुगयतं सवीरिया फला ॥ १ ॥ ध्यानद्वारे-धर्मध्यानेन प्रवर्द्धमानेन परिहारविशुद्धिकं प्रतिपद्यते पूर्वप्रतिपन्नः पुनरार्त्तरौद्रयोरपि भवति केवलं प्रायसो निरनुबंधं यदाह च भाष्यकृत् झाणम्मि य धम्मेणं पडिवज्जइ सो पवड्ढमाणेणं इयरेसु वि झाणेसु पुव्वप

डिवन्नो न पडिसिद्धो ॥ १ ॥ एवं च झाणजोगे उद्दामे तिव्वकम्मपरिणामा रोद्दट्टेसु वि भावो इमस्स पायं निरणुबंधो ॥ २ ॥ गणनाद्वारे जघन्यतस्त्रयो गणाः प्रतिपद्यन्ते उत्कर्षतः शतसंख्याः पूर्वप्रतिपन्ना जघन्यत उत्कर्षतो वा शतशः पुरुषगणनया जघन्यतः प्रतिपद्यमानाः सप्तविंशतिः उत्कर्षतः सहस्रं पूर्वप्रतिपन्नाः पुनर्जघन्यतः शतश उत्कर्षतः सहस्रशः यदाह च गणओ तिन्नेव गणा जहन्न पडिवत्तिसयसो उक्कोसा उक्कोसेणेव सयसो चिय पडिवन्नहियया ॥ १ ॥ सत्तावीसं जहन्ना सहस्समुक्कोसओ य पडिवत्ती सयसो सहस्ससो वा पडिवन्न जहन्नउक्कोसा ॥ २ ॥ अन्यच्च यदा पूर्वप्रतिपन्नकल्पमध्यादेको निर्गच्छति अन्यः प्रविशति तदा न्यूनेऽपि प्रतिपत्ती कदाचित् एकोऽपि भवति पृथक्त्वं वा पूर्वप्रतिपन्नो भवेत् प्रजनना कदाचिदेकः प्राप्यते पृथक्त्वं वा उक्तं च पडिवज्जमाणभयणाए होज्जए कोऽवि ऊणपक्खेवे पुव्वपडिवन्नयावि य भइयाएको पुहुत्ता वा ॥ १ ॥ अभिग्रहद्वार-अभिग्रहाश्चतुर्विधाः तद्यथा द्रव्याभिग्रहाः क्षेत्राभिग्रहाः कालाभिग्रहाः भावाभिग्रहाश्च एते चान्यत्र चर्चिता इति न भूय उच्यन्ते तत्र परिहारविशुद्धिकस्य न सन्ति

हा न तवन्ति यस्मा देवस्य कल्पमप यथोदितरूपो निग्रहो वतते तस्य ददाचमानिग्रह विचित्तरूपानपौतिपुनकेष प्रयसमीयकप्पो कप्पोचिय तिानजाजय ॥ १ ॥ ययमिगायराइ नियमानियमवमिरववादाय तप्पालवविमपरं पयसवयिसुद्धिहार्थतु ॥ २ ॥ प्रव्रज्याद्वार–मा सा यस्य प्रव्राज यति कल्पस्थिति स्पति कृत्वा चाक्च पद्मायुष न यसो श्रमणव्यहिररमिकाऊत्रति उपदशा पुन यथाशक्ति प्रयच्छति मुलापगद्वारपि मा सा यस्य मुलयति यत प्रव्रज्यामन्तर नियमतो मुणकमिति प्रव्रज्यापदकमैव तद्गृहीतमिति किमर्थ पृथक्द्वार तद पुस प्रव्रज्याद्वार नियमतो मुकलमस्या मुभयात् ययाप्यस्य कथञ्चि दुत्तायामपि प्रव्रज्यायां पुनरप्यन्यतापरिणाम मुकलनायागादतः पृथगिदद्वारमिति प्रायश्चित्तविधिद्वारे। ममसापि मूलमप्यतिचारमापन्नस्य नियमत चतुर्गुरुक प्रायश्चित्तमस्य यत यच कश्च एकायतामयाम शत सङ्कुचे गुरुतरत्राप पति कारणद्वार तथा कारण नाम कालस्थानं च पुनः सुपरिशुद्ध यामादिक तथा स न विज्ञात येन तदाश्रित्यापवादपदसयिता स्यात् यप हि सवत्र निरपत्त क्रियकर्मक्षपनि मित्त प्रारब्ध मेव स्व कल्प यथोक्तविधिना समापयन् महात्मा वर्तते तस्य कारणमालम्बमात् पुष्पाचायमसुपरिशुद्धं ययरमतनथिमात्र तथि यतपमाहत्पापाप ॥ १ ॥ सतुल्यनिरपयकर्मा चारतावयदलसमायतो वहुनयसमरूप्पा किञ्चिदकमाकखयानमिता ॥ २ ॥ मि प्रतिकमताद्वार यप मदा सा नि प्रतिकमशरीरा ऽक्षिमलादिक गपि चरति ना यमयति न च प्राणान्तकापि यामापस्तितौ व्यसन द्वितीयपद सेवत तस्य निष्प्रतिकमस शरीरो यप्पिमलाइविनावमरमया पावतिप वियमहा यमवामिनवहुयवीए ॥ १ ॥ कप्पयुत्ताशोयव विसयादीसुउपोयपसति यद्यासुदमायाही यमु मययविसइमरस ॥ २ ॥ भिक्षाद्वार-एतदवचारित्र तथा विहारक्रम च तृतीयस्यां पौरुष्यां भवति छायासु च पौरुषीषु कायोत्सर्गो निद्रापि चा

रकुमारा नागकुमारा सुवण्णकुमारा विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा दीवकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाउ

के—भवनवासी वाणमन्तरा ज्योतिष्का वैमानिका। भवनपती वानव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक। तेथित भवनवासी दशविधा प॰ त॰। तिथे भवनप ती दशभेद कहा। त जहेते— असुरकुमार नागकुमार सुवर्णकुमार विद्युतकुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार उदधिकुमार दिशिकुमार वायुकुमार स्तनित

कन्याराशिस्थिता कन्यारमे मज्झापरपिकम्मी पाउज्ञासमपुरिसकप्प । फिइकम्मसम्मपकरवे चतारिमयाविपाकप्पा ॥ २ ॥ लिगद्वारे-नियमितो द्रिधापि लिंग नयात तद्यथा-द्रव्यलिंग भावलिंग च एकोमापि यमा विवक्षितकल्पोचितसामाचारयोगात लद्ध्याहार-तत्र प्रथुतिकासू तरा म तिराप विअगुणमु लश्यामु परिहारविशुद्धिक कल्प प्रतिपद्यते पूर्वप्रतिपन्न पुन सर्वास्वपि कथं चि द्रवति तथापि स्वराविशाद्धिलश्यासु नात्य न्तमविशुद्धासु वर्तते तथाभूतासु वर्तमानानप्रभूतकालमवतिष्ठत किंतु स्तोक यत स्वयीयवशात्स्फटिस्वय मान्योप्याश्रयते अथ प्रथमत एव कस्मात्प्रव तत उच्यते कमवपान तस्य समामुविसुद्धास पडिवज्जइतीसुनउवमतास पुव्वपडिवन्नउपुण होज्जासव्वासुविकोविइय ॥ १ ॥ पत्तनसुकिलिठास पायकालबहांमिष्यमर्दिपराभु विणकम्मावणव तथाविधीरियफलद ॥ १ ॥ ध्यानद्वार-धर्मध्याने म प्रवर्द्धमानमपरिहारविशुद्धिकप्रतिपद्यन पू र्वप्रतिपन्न पनरातरौद्रयोरपिमवति फवत प्रायश निरनुबध थाह च भावम्मियिनप मच पडिपज्जइसा पयन्नमायाव न्यरसुविस्झावसु पत्रप

कषो मर्पवसिह्रा ॥ १ ॥ ययबन्नायभाग चद्दामतिष्ठकम्मपरिवामा रागद्दमुविमाओ धमस्सपायमिरद्धयधो ॥ २ ॥ गणनाद्वार जघन्यत त्रयो गणा प्रतिपद्यन्त उत्कर्षत शतमग्रा पूर्वप्रतिपन्ना जघन्यत उत्कृष्टतो वा शतश पुरुषगणनया जघन्यत प्रतिपद्यमाना सप्तविंशति उत्कर्षत सहस्र पूर्वप्रतिपन्ना पुनर्जघन्यत शतश उत्कर्षत सहस्रश आह च गणउतिमयणा जहन्नपडिवत्तिसयस उक्कोसा उक्कोसजहन्नेण सयसोचियपडिव त्रिकला ॥ १ ॥ सत्तावीसजहन्ना सहस्समुक्कोसउपपडिवत्ती सयसोसहस्ससोचा पडिवन्नजहन्नउक्कोसा ॥ २ ॥ यस्य च यदा पूर्वप्रतिपन्नकल्पमध्या देको निमच्छति अन्य प्रविशति तदो नमकप प्रतिपत्ती कदाचि एकापि भवति पृथक्त्व वा पूर्वप्रतिपन्नो व्यव भवन्ती कदाचिदूनः प्राप्यत पृथ क्त्व वा उक्तञ्च पडिवज्जमाणभयणाए होज्जएक्कावि ऊणपक्खेव पुव्वपडिवन्नयावि भइयाएक्कोपुहुत्तवा ॥ १ ॥ अभिग्रहद्वार-अभिग्रहा चतुर्विधा तद्यथा द्रव्याभिग्रहा क्षेत्राभिग्रहा कालाभिग्रहा भावाभिग्रहा च एते वा न्यत्र वर्णिता इति न भूय उच्यते तत्र परिहारविशुद्धिकस्य त ्मिय

वा कैवलिक सयोगि केवलिनयम योगिकेवलिनव च सैतमित्याद्यु पर्संहार कर्तव्य सूत्र सुगमं तदेवं उक्ताः मनुष्याः सम्प्रति देवप्रतिपादनमार्यमाह ॥
सचितमित्यादि ॥ व्याख्या त द्वया। सूरिराह देवा चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा–भवनवासिनो १ व्यन्तरा २ ज्योतिष्का ३ वैमानिकाः ४ तत्र भवनेषु
वसन्तीत्येव शीलाः भवनवासिनः एतद्बाहुल्यतो नागकुमाराद्यपेक्षया द्रष्टव्यं, ते हि प्रायो भवनेषु वसन्ति कदाचिदावासेषु असुरकुमाराः प्राचुर्येण
वासेषु कदाचि द्भवनेषु अथ भवनानामा वासानाञ्च कः प्रतिविशेष उच्यते भवनानि बहिर्वृत्तान्यन्तः समचतुरस्राणि अधः पुष्करकर्णिका संस्थाना
नि आवासाः कायमानस्थानीया महामण्डपा विविधमणिरत्नप्रदीपप्रभासितसकलदिक्चक्रवालाइति । अन्तर नाम अवकाशः त द्रूपम् अथरूप
तृतीय विविधं भवननगरावासरूपम् अन्तरं येषां ते व्यन्तराः तथा भवनानि रत्नप्रभायाः प्रथमे रत्नकाण्डे उपर्यध च प्रत्येकं योजनशतमपहाय शेषे
अष्टयोजनशतप्रमाणे मध्यभागे भवन्ति नगराण्यपि तिर्यग्लोके तत्र तिर्यग्लोके यथा जम्बूद्वीपद्वाराधिपते र्विजयदेवस्याऽन्यस्मिन् जम्बूद्वीपे द्वा

दशयोजनसहस्रप्रमाणा नगरी आवासाः त्रिष्वपि लोकेषु तत ऊर्ध्वलोके पण्डकवनादाविति अथवा विगतमन्तरं मनुष्येभ्यो येषां ते व्यन्तराः तथाहि
मनुष्यानपि चक्रवर्तिवासुदेवप्रभृतीन् भृत्यवदुपचरन्ति केचि द्व्यन्तरा इति मनुष्येभ्यो विगतान्तरा यदि वा विविधम् अन्तरं शैलान्तरं वनान्तरं वा
आश्रयरूप येषां ते व्यन्तराः प्राकृतत्वाच्च सूत्रे वाणमन्तरा इति पाठः यदि वा वानमन्तरा इति पदसंस्कारः तत्रैव व्युत्पत्तिर्वनानाम् अन्तराणि वना
न्तराणि तेषु भवा वानमन्तराः पृषोदरादित्वा दुभयपदयवान्तरालवर्तिमकारागमः तथा द्योतयन्ति प्रकाशयन्ति जगदिति द्योतींषि विमानानि
तेषु भवा ज्योतिष्काः ... तपेवर्गीयवर्णेऽवसितस्य ... द्योतिषः शिरोमुकुटोपगूहितैः प्रभामण्डलकल्पैः सूर्यादिमण्डलैः प्रकाशयन्तीति ज्योतिषो देवाः सूर्यादयः तथा हि सूर्यस्य
सूर्याकारं मुकुटाग्रभागे चिह्नं चन्द्रस्य चन्द्राकारं नक्षत्रस्य नक्षत्राकारं ग्रहस्य ग्रहाकारं तारकस्य तारकाकारं तैः प्रकाशयन्तीति आह च तत्त्वार्थभा

एा म्या गृहष्या यदि पुन कथमपि तद्गाथमस्य परिणीक भवति तथा प्पे पो विहरम पि महाजाणो न द्वितीयपदमा पद्यते किन्तु तथैव यथा कल्पमा स्तीय योम विदधातीति उक्तञ्च तस्यामपोरिसीए भिक्खाकाला विहारकालोउ ससासुउवस्सग्गो पायमप्पायनिद्दति ॥ १ ॥ अपावसमि ग्गाम अविहरमाणोविमवरमावज्ञ तत्थवचइ हाकप्पंकुणइ तओगमहाजाणो ॥ १ ॥ एत च परिहारविशुद्धिका द्विविधा तद्यथा-इत्वरा यावत्कथि काय तत्र य कल्पसमाप्त्यनन्तरं तमव कल्प गच्छवास मुपयास्यति तइत्वराय पुन कल्पसमाप्त्यनन्तरमव्यवधानेन जिनकल्प प्रति पत्स्यन्त ते या वत्कथिका उक्तञ्च-इत्तरियथरकप्प जिणकप्पेयावकहियत्ति अत्र स्थविरकल्प प्रवक तपसत्य स्वकल्प प्रतिद्रष्टव्य तत्र इत्वराणा कल्पप्रभावा दुव मनुष्यतैर्यग्योनिकृता उपसर्गाः सद्यःघातिनः आतङ्का प्रतीवा विपद्या स वदना न प्रादु र्भवन्ति यावत्कथिकाना सम्भवयुरपि ते हि जिनकल्प प्र तिपत्स्यमाना जिनकल्पभावम नुविदधति जिनकल्पिकाना चो पसर्गादयः सम्भवन्तीति उक्तञ्च इत्तरियाणुवसग्गा आतङ्कावेयणायनहवति आ वकहियाणभइया इति तथा सूक्ष्मा लोभांशावशेष सम्परायः कषायोदयो यत्र तत्सूक्ष्मसम्परायं स च द्विधा विशुध्यमानक संक्लिश्यमानकं च तत्र विशुध्यमानक क्षपकश्रेणिमुपशमश्रेणिवा समारोहतः संक्लिश्यमानं तू पशमश्रेणितः प्रच्यवमानस्य यथाख्यातमिति अथ शब्दो यथार्थे आङ् अभिविधौ यथातथ्यम आत्मविधिना वा यस्मात् कथित अकषायं चारित्र मिति तथा ख्यात उक्तञ्च अहसद्दोजहत्थे आडोऽभिविहीएकहियम कसाय चरणमुक्य तमहक्खायजहक्खायं ॥ १ ॥ यथाख्यातमितिच द्वितीयनाम तस्या य मन्वर्थः । यथा सर्वस्मिन् जीवलोके ख्यातं प्रसिद्ध मक षाय भवति चारित्र मिति तथैव यत् यथाख्यात तच्च द्विधा छाद्मस्थिक कैवलिक च तत्र छाद्मस्थिकमुपशान्तमोह गुणस्थानक क्षीणमोहगुणस्थानके

कुमारा पणियकुमारा तसमासउदुविहा पन्नत्ता, तंजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त भवणवासी से

कमार १ । असुरकुमार नागकुमार सुवर्णकुमार विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार उदधिकुमार दिग्कुमार वायुकुमार स्तनितकुमार १ । एते स मासतो द्विविधा प त । प र्याप्ता अपर्याप्ता तद्यथा त द्वेधे-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । सेत्तं भवणवासी । एतस भवनपतो क

या वैमानिक सयोगि केवलिभवस्थ योगिकेवलिभव च सेतमित्याद्युपसंहार. अवचर्णं सूत्र सुगमं तदेवं उक्ताः मनुष्याः सम्प्रति देवप्रतिपादनार्थमाह ॥
सकितमित्यादि च अथमे ते द्रष्टाः सूरिराह देवा चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा–भवनवासिनो १ व्यन्तरा २ ज्योतिष्का ३ वैमानिकाः ४ तत्र भवनेषु
वसन्तीत्येवं शीलाः भवनवासिनः एतद्बाहुल्यतो नागकुमाराद्यपेक्षया द्रष्टव्यं ते हि प्रायो भवनेषु वसन्ति कदाचिदावासेषु असुरकुमाराः प्राचुर्येण
वासेषु कदाचित् भवनेषु अथ भवनावासयोः कः प्रतिविशेष उच्यते भवनानि बहिर्वृत्तान्यन्तः समचतुरस्राणि अधः पुष्करकर्णिका संस्थाना
नि आवासाः कायमानस्थानीया महामण्डपा विविधमणिरत्नप्रदीपप्रभासितसकलदिक्चक्रवाला इति । अन्तरं नाम अवकाशः स चेह भवरूप
द्रष्टव्यं विविधं भवननगरावासरूपं अन्तरं येषां ते व्यन्तराः तत्र भवनानि रत्नप्रभायाः प्रथमे रत्नकाण्डे उपर्यधश्च प्रत्येकं योजनशतमपहाय शेषे
ऽष्टयोजनशतप्रमाणे मध्यभागे भवन्ति नगराण्यपि तिर्यग्लोके तत्र तिर्यग्लोके यथा जम्बूद्वीपद्वाराधिपते विजयदेवस्य अन्यस्मिन् जम्बूद्वीपे द्वा

दशयोजनसहस्रप्रमाणा नगरी आवासाः त्रिष्वपि लोकेषु तत ऊर्ध्वलोके पण्डकवनादाविति अथवा विगतमन्तरं मनुष्येभ्यो येषां ते व्यन्तराः तथाहि
मनुष्यानपि चक्रवर्तिवासुदेवप्रभृतीन् भृत्यवदुपचरन्ति केचिद् व्यन्तरा इति मनुष्येभ्यो विगतान्तरा यदि वा विविधमन्तरं शैलान्तरं वनान्तरं वा
आश्रयरूप येषां ते व्यन्तराः प्राकृतत्वाच्च सूत्रे वाणमन्तरा इति पाठः यदि वा वानमन्तरा इति पदसंस्कारः तत्रैव व्युत्पत्तिर्वनानाम् अन्तराणि वना
न्तराणि तेषु भवा वानमन्तराः पृषोदरादित्वात् उभयपदपदान्तरालवर्तिमकारागमः तथा द्योतयन्ति प्रकाशयन्ति जगदिति ज्योतींषि विमानानि
ज्योतिरादिकौणादिकव्युत्पत्तिः तेषु भवा ज्योतिष्का अध्यात्मादिभ्य इकण् तथैवर्णावर्णदोषिसुषसत इकण् आदि रिकारस्य लोप आलिङ्गाना च ए
व्यमाया यदि वा द्योतयन्ति शिरोमुकुटोपगूहितैः प्रभामण्डलकल्पैः सूर्यादिमण्डलैः प्रकाशयन्तीति ज्योतिष्का देवा सूर्योदय स्तथाहि सूर्यस्य
सूर्याकारं मुकुटाग्रभागे चिह्नं चन्द्रस्य चन्द्राकारं नक्षत्रस्य नक्षत्राकारं ग्रहस्य ग्रहाकारं तारकस्य तारकाकारं तेन प्रकाशयन्तीति आह च तत्त्वार्थभा

एा स्या सूक्ष्मा यदि पुन कथमपि जङ्घाबलमस्य परिक्षीण भवति तथा प्ये पो विहरन्न पि महाभागो न द्वितीयपदमा पद्यते किन्तु तत्रैव यथा कल्पमा त्मीय योगं विदधातीति उक्तञ्च तइयापपोरिसीए भिक्खाकालविहारकालोउ सेसासु उस्सग्गो पायमप्पाप्पनिद्दसि ॥ १ ॥ अपायसमि साव भविहरमाणोविनवरमावज्ज तत्थेवमहाकप्पजुत्तउज्जोगमहाभागो ॥ १ ॥ एत च परिहारविशुद्धिका द्विविधा तद्यथा-इत्वरा यावत्कथि काय तत्र ये कल्पसमाप्त्यनन्तरं तमेव कल्पं गच्छवास मुपयास्यति तइत्वराय पुन कल्पसमाप्त्यनन्तरमव्यवधानेन जिनकल्प प्रति पत्स्यन्त ते या वत्कथिका उक्तञ्च-इत्तरियथेरकप्प जिनकप्पेआवकाइयत्ति भन स्थविरकल्प गच्छ उपलक्षण स्वकल्प चतिद्रष्टव्य तत्र इत्वराणा कल्पप्रभावा द्दय मनुष्यतैयग्योनिकृता उपसर्गा सद्योपातिनः भातङ्क भतीवा विपद्या य वदना न प्रादु र्भवन्ति यावत्कथिकानां सम्भवयुरपि ते हि जिनकल्प प्र तिपत्स्यमाना जिनकल्पभावम नुविदधति जिनकल्पिकाना चो पसर्गोदयः सम्भवन्तीति उक्तञ्च इत्तरियाणुवसग्गा भातंकायवणायनहवति भा वकहियाणभइया इति तथा सूक्ष्मो लोभांशावशेष सम्परायः कषायोदया यत्र तत्सूक्ष्मसम्पराय त च द्विधा विशुध्यमानकं संक्लिश्यमानकं च तत्र विशुध्यमानक क्षपकश्रेणिमुपशमश्रेणिंवा समारोहतः संक्लिश्यमान तु उपशमश्रेणितः प्रच्यवमानस्य यथाख्यातमिति अथ शब्दो यथार्थे आङ् भिविधौ यथातथ्येन अभिविधिना वा यत्ख्यातं कथित अकषायं चारित्र मिति तदा स्यात उक्तञ्च अहसद्दोजहत्थे आङोभिविहीएकहियम ख्याय चरणमकसायमुइयं तमहक्खायंजहक्खाय ॥ १ ॥ यथाख्यातमितिकं द्वितीयनाम तस्या य मन्वर्थः । यथा सर्वस्मिन जीवलोके ख्यात प्रसिद्धं अक षाय भवति चारित्र मिति तथैव यत् यथाख्यात तच्च द्विधा छाद्मस्थिक कैवलिक च तत्र छाद्मस्थिकमुपशान्तमोह गुणस्थानक क्षीणमोहगुणस्थानक

कुमारा थणियकुमारा तसमासद्धु विहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त नागधारी से

कुमार १ । असुरकुमार नागकुमार सुपर्णकुमार विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार उदधिकुमार दिक्कुमार वायुकुमार स्तनितकुमार १ । एते स मासतो द्विविधा प्र त । प्र सप्तप्तो तद्यथा अथ त कथिते—पर्याप्तकाश्च अपर्याप्तकाश्च । पर्याप्ता अपर्याप्ता । सेयं भवनवासी । एतत भवनपती अ

१० गन्धर्वा दशविधा तद्यथा-हाहा १ हूहू २ तुम्बरवः ३ नारदाः ४ ऋषिवादिकाः ५ भूतवादिकाः ६ कादम्बा ७ महाकादम्बाः ८ रैवता ९ विश्वावसवः १० गीतरतयो ११ गीतयशस १२ यक्षा त्रयोदशधा तद्यथा-पूर्णभद्राः १ माणिभद्राः २ श्वेतभद्राः ३ हरितभद्राः ४ सुमनोभद्राः ५ व्यतिपातिकभद्राः ६ सुभद्राः ७ सर्वतोभद्राः ८ मनुष्ययक्षाः ९ वनाधिपतयो १० वनाहाराः ११ रूपयक्षाः १२ यक्षोत्तमाः १३ राक्षसाः सप्तविधास्तद्यथा-भीमाः १ महाभीमाः २ विघ्ना ३ विनायका ४ जलराक्षसाः ५ राक्षसराक्षसाः ६ ब्रह्मराक्षसाः ७ भूता नवविधा तद्यथा-सुरूपा १ प्रतिरूपा २ अतिरूपा ३ भूतोत्तमाः ४ स्कन्दिकाः ५ महास्कन्दिकाः ६ महावेगाः ७ प्रतिच्छन्नाः ८ आकाशगा ९ पिशाचाः षोडशविधा तद्यथा-कूष्माण्डा १ पटकाः २ जोषा ३ आह्निकाः ४ कालाः ५ महाकालाः ६ चोक्षा ७ अचोक्षा ८ तालपिशाचा ९ मुखरपिशाचा १० अधस्तारका ११ देहाः १२ विदे

पञ्चविहा पण्णत्ता, तंजहा चंदा सूरा गहा नक्खत्ता तारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य से त्तं जोइसिया से किं तं वेमाणिया २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा कप्पोवगा कप्पाईया य से किं तं कप्पोवगा २ बारसविहा पण्णत्ता, तंजहा सोहम्मा ईसाणा सणंकुमारा माहिंदा बंभलोया लंतया महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया आरणा अच्चुया ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य

च—पर्याप्तकाश्च अपर्याप्तकाश्च । पर्याप्ता अपर्याप्ताः । सेत्तं ज्योतिष्काः सम्प्रति वैमानिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः [illegible] ज्योतिषी [illegible], द्विविध वैमानिक देवप्रकार
[illegible] तद्यथा—कल्पोपगाः कल्पातीताः । कल्पोपगा [illegible] । अथ के ते कल्पोपगाः २ द्वादशविधाः प्रज्ञप्ताः । द्विविध कल्पोपपन्ना १२ भेद [illegible] ।
[illegible] सौधर्माः ईशानाः सनत्कुमाराः माहेन्द्राः ब्रह्मलोकाः लान्तकाः महाशुक्राः सहस्राराः आनताः प्राणताः आरणाः अच्युताः ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । सौधर्म ईशान
[illegible] सनत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्मलोक लान्तक महाशुक्र सहस्रार आनत प्राणत आरण अच्युत ते सर्व बारह प्रकार [illegible]—पर्याप्तकाश्च अपर्याप्तका
श्च । पर्याप्ता अपर्याप्ताः । [illegible] कल्पोपगा [illegible] २ द्विविधा प्रज्ञप्ताः । [illegible] कल्पातीत [illegible] दोय भेद [illegible]—ग्रैवेयक

प्यसत् द्योतयते इति द्योतींषि विमानानि तेषु भवा द्योतिकाः यद्वाज्योतिषी देवा ज्योति रिव ज्योतिषा मुकुटे शिरो मुकुटोपगूहिते मजा सकले उज्ज्वले सूर्यचन्द्रग्रहनक्षत्रतारकाणां मण्डले येषां स्वचिह्ने विराजमाना द्युतिमन्तो ज्योतिष्का भवन्तीति तथा विविध मन्यते उपपुज्यन्त पुण्यवद्भि जीवै रिति विमानानि तेषु भवा वैमानिकाः सम्प्रत्ये तथा भव फणेदपदाममिधिरसुराह-सविलप्रवचवासी इत्यादि ० असुरा य त कुमारा य असुरकुमारा एवं नागकुमारा इत्याद्यपि भावनाय प्रथमसा दश कुमारा इति व्यपदिश्यति उच्यते कुमारवद्धमात् तथाहि-कुमा राये सत्कुमारवद्भुमपुरसालितमतयः अगाराजिमायकतविशिष्टविमिष्टसरोलरूपाकिया कुमारव यो तुलरूपवेष भाषानरणप्रहरणावरय याम या वम कुमारवदास्वर्वरागाः क्रीडमपरा य तत कुमार इव कुमारा इति किंनरा इत्यादि किन्नरा दशविधा तद्यथा किन्नरा किंपुरुषा २ किंपु रुषोत्तमाः ३ किन्नरोत्तमा ४ हृदयंगमा ५ रूपशालिनः ६ अनिंदिता ७ मनोरमा ८ रतिप्रिया ९ रतिश्रेष्ठा १० किंपुरुषा दशविधा तद्यथा पुरु षाः १ सत्पुरुषाः २ महापुरुषा ३ पुरुषवृषभाः ४ पुरुषोत्तमा ५ अतिपुरुषा ६ महादेवा ७ मरुत ८ मरुमतिना ९ यशस्वन्तः १० महोरगा दश विधा तद्यथा भुजगा १ भोगशालिनः २ महाकाया ३ अतिकायः ४ स्कन्धशालिन ५ मनोरमा ६ महावेगा ७ महायक्षा ८ मरुकाता ९ भास्वताः

कित याणमतरा२ अट्ठविहा प०, तजहा किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गधव्वा जक्खा रक्खसा भूया पिसा या ते समासज्जदुविहा पण्णत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त याणमतरा से किंत जोइसिया २

त्ता। सकिंतं वाणमतरा २ अट्ठविहा पं त । किंवे वानमन्तर देवतामा ८ भेद कह्या ते कहेछे—किंनरा किंपुरिसा महोरगा गधव्वा जक्खा रक्खसा भूया पिसाया एते समासथी दुविहा प त । किंनर किंपुरुष महोरग गन्धर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाच ए संक्षेपथका दोयभेदे कह्या ते कहेछे—पज्जत्त गाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । सत्त वाणमतरा सेकिंतं जोइसिया २ पचविहा प त । ते एतला वानव्यन्तर कह्या, किंवे ज्योतिषीना ५ भेद कह्या ते कहेछे—चंदा सूरा गहा नक्खत्ता तारा एते समासथी दुविहा पं त चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा ५। ए संक्षेपथकी दोयप्रकारे कह्या ते कहे

पञ्चमाः पयमयत्राविमायनीयं ॥ तत्र तारख्या तद्यपदृशी यथापञ्चालदेशगियामिन: पञ्चाला इति ॥ इतिश्रीमलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापना टीकायां प्रथम प्रज्ञापनाख्य पद समाप्तमिति ॥ १ ॥ ग्रंथाग्र १८२५ ॥ त दुय व्याख्यात प्रथम पद सम्प्रात द्वितीय मारभ्यते । तस्य चा य मभिसम्बन्धः प्रथमपद पृथिवीकायिकादय प्र रूपिता। इह तु तया मव स्थानानि प्ररूप्यन्त तत्र चद मादि सूत्र-कहि ण भंत इत्यादि ॥ कहिति ॥ कस्मि न षमृगन्याधाप्यासप्कार ॥ नइतंति ॥ परमगुर्वामयत्र बादरपृथ्वीकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि स्वस्थानादीनि प्रज्ञप्तानि प्ररूपितानि एव गो

णाय सेत्त गेविज्जगा स कित अणुत्तरोववाइया २ पञ्चविहा पण्णत्ता, तजहा विजया वेजयता जयता अपराजिया सव्वठसिद्धा तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त अणुत्तरोववा इया सेत्त कप्पाइया सेत्त वेमाणिया सेत्त देवा सेत्त पचिंदिया सेत्त ससारसमावण्णजीवपन्नवणा सेत्त जी वपन्नवणा सेत्त पन्नवणा पन्नवणाए पढमपयसम्मत्त ॥ १ ॥ कहिण भंत ! बादरपुढविकाइ याण पज्जत्तगाण ठाणानिगणा प० ? गोयमा ! सठाणेण अठसुपुढवीसु तजहा—रयणप्पभाए सक्करप्प

तेन कल्पा वैमानिक कल्पा। सेत्त देवा सर्वे पंचेन्द्रिय समारसमापन्नजीव प्रज्ञापना सेत्त जीव प्रज्ञापना सेत्त प्रज्ञापना प्रज्ञापनाए भगवत्याः पढ पर्व समाप्त। एतसि देवता कल्पा एतस पंचेन्द्रिय कल्पा एतसे संसारसमापन्नजीव प्रज्ञापनाना अधिकार कल्पा पहिले पद पृथ्वीकायादिक कल्पा इन सूत्रपद जीवमे उपजवाना ठाम कहेछे—एतले प्रज्ञापना भगवतीना प्रथमपद समाप्त थया ॥ १ ॥ कहतमते बादरपृथ्वीका याय पज्जत्तानां वर्ष । किहां भगवन् बादर पृथ्वीकायना पर्याप्तानां थानक कह्या छे । गोयमा सहाणे पट्टमपठवीस त रत्नप्रभाए सक्करप्प पुढ पंकप्प धूम तम तमतमप्प ईसिप ८। रत्नप्रभा शर्करप्रभा वालुकप्रभा पंकप्रभा धूमप्रभा तमप्रभा तमतमप्रभा अधोगम्यासिद्धो ८। पायाल पायाले सुभवनेसु भवनपत्थडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु कप्पेसु विमाणेसु विमाणेसु । पृथ्वीमध्ये पधीलाके पातालकलशे भुव

रा १३ महाविदेहा १४ सूक्ष्मा ५ वसपिशाचा १६ इति ॥ कप्पाणगा कप्पातीयत्ति ॥ कल्पाधार स च श इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशादिव्यवहाररूप समुपगताः सौधर्मेशानादिदेवलोकनिवासिन यथोक्तरूप कल्पमतीता कल्पातीता अपरस्परापरस्परमेवयकादिनिवासिन स्तेऽप्य सर्वेऽप्य हमिन्द्रा सन्तो प्रवसि कल्पातीता कल्पोपमान इत्ययति साहमीमावाहत्यादि ॥ सौधर्मदेवलोकनिवासिनः सौधर्मा ईशानदेवलोकनिवासिन

सत्त कप्पात्रगा स कित कप्पाईया २ दुविहा पणन्ना , तजहा गेविज्जगाय अणुत्तरोववाइयाय स किन गेविज्जगा २ नवविहा पणन्ना, तजहा हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जगा हिट्ठिममज्झिमगेविज्जगा हिट्ठिमउवरिम गेविज्जगा मज्झिमहिट्ठिमगेविज्जगा मज्झिम २ गेविज्जगा मज्झिमउवरिमगेविज्जगा उवरिमहिट्ठिमगेविज्ज गा उवरिममज्झिमगेविज्जगा उवरिम२ गेविज्जगा तेसमासद्ध दुविहा पणन्ना, तजहा पज्जत्तगाय अपज्ज

गाय अणुत्तरोववाइयाय । ८ नव ग्रैवेयक ५ अनुत्तरविमान । मकित गविज्जगा २ नवविहा प त । किव ग्रैवेयक नामोना नवभद कह्या ते कहवे । हेट्ठिम २ म कथ ना हेट्ठिममज्झिममविज्जगा हेट्ठिमउवरिमगेविज्जगा मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जगा ४ । प्रथम गैवेयकना हेठमाग्रैवेयक प्रथम त्रिकना उपरि लोगेवेयक प्रथम त्रिकना मध्यमग्रैवेयक त्रीजि त्रिकना प्रथम गैवेयक त्रीजि त्रिकनो मध्यमग्रैवेयक । मज्झिम २ गे मज्झिमउवरिम गे उवरिमहेट्ठि म गे उवरिममज्झिम ग उवरिम २ मे कह्या ५ । त्रीजि त्रिकना च त्रा ग्रैवेयक तीजा त्रिकना प्रथमग्रैवेयक बीजा त्रिकना मध्यमग्रैवेयक तीजा त्रिकना उपरिमाग्रैवेयक । एत ममासपा दुविहा प त । प मचपे दायभवारे कह्या तेवहेवे । पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । मत सवेजगा । एतस ग्रैवेयकदेवता कह्या । सार्वत अणुत्तरोववाइया २ पंचविहा प त । किवे अनुत्तरवासी कहवे तनुत्तरवासीना पाचभदे कहवे । विजया वजयता जयंता अपराजिया सव्वट्ठसिद्धा एत ममासधा दुविहा पणता तजहा । विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित सर्वार्थसिद्ध संचपे ताप भदके । पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । सेत्त अणुत्तरोववाइया सेत्त कप्पाईया सत्तवेमाणिया । एतले अनुत्तरवासी कह्या एते कप्पा

पन्नाना ववनयरापिमाणमीयं ॥ सत्र तारस्या सद्यपवृत्ती यथापन्यासदेशगियाक्षिनः पन्नाला इति ॥ इतिश्रीमलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापना टीकायां प्रथम प्रज्ञापनाख्य पद समाप्तमिति ॥ १ ॥ ग्रंथाग्र १८२५ ॥ त इय व्याख्यात प्रथम पद सम्प्रात द्वितीय मारभ्यते । तस्य चा य मभिसम्बन्धः प्रथमपद पृथिवीकायिकादय प्ररूपिताः इह त तथा मव स्थानानि प्ररूप्यत तत्र चद मादिसूत्र-कहिण भंत इत्यादि॥ कहिति॥ कस्मि न चम् गच्छायापयासकार॥पदतति॥ परमगुवोमयव बादरपृथिवीकायिकाना पर्याप्ताना स्थानानि स्वस्थानादीनि प्रज्ञप्तानि प्ररूपितानि एव गौ

सत्ताय सेत्त गेविज्जगा स किंत अणुत्तरोववाइया २ पञ्चविहा पण्णत्ता, तजहा विजया वेजयता जयता अपराजिया सव्वठसिद्धा तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त अणुत्तरोववा इया सेत्त कप्पाइया सेत्त वेमाणिया सेत्त देवा सत्त पचिंदिया सत्त ससारसमावण्णजीवपन्नवणा सेत्त जी वपन्नवणा सेत्त पन्नवणा पन्नवणाए पढमपयसम्मत्त ॥ १ ॥ कहिण भंते ! बादरपुढविकाइ याण पज्जत्तगाण ठाणानिगणा प० ? गोयमा ! सठाणेण अट्ठसुपुढवीसु तजहा—रयणप्पभाए सक्करप्प

तीत कथा वैमानिक कथा। सेत्त देवा सत्त पचेन्द्रिय ससारसमापन्नजीव पन्नवणा सेत्त जीव पन्नवणा सेत्त पन्नवणा पन्नवणाए भगवत्य पद म पर्य समाप्त। एतमे देवता कथा एतत पंचेंद्रिय कथा एतचे ससारसमापन्नजाव प्रज्ञापनाना पधिकार कथा पहिले पद पृथ्वीकायादिक कथा, हिवे दूसपद मौवमी जपजवाना ठाम कहेछे—एतले पन्नवणी भगवतीना प्रथमपद समाप्त थया ॥ १ ॥ कहमते बादरपदवीका ट्याण पज्जत्तगाण पं । किहा थेभगवत् बादर पृथ्वीकायना पर्याप्ताना थानक कह्या छ । गोयमा सट्टाणेण अट्टुपठवोस त रयणप्पभाए सक्करप्प र सु॰ वंशप धूम तम तमतमप ईसिप ८। रत्नप्रभा शर्करप्रभा बालुकप्रभा पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमप्रभा तमतमप्रभा ईषत्प्राग्भाराशिलाको ८। पत्तालाए पायाल भुवणवेस भवणपत्यडस निरयसु निरयावलियासु निरयपत्थडसु कप्पेसु कप्पविमाणावलियेसु विमाणेसु। पृथ्वीसमे पत्तालाके पातालकलशे मुध

तमस्वामिना प्रश्नेकृते भगवानाह वर्द्धमानस्वामी गो० सत्तावेवमित्यादि। ननु गौतमोपि भगवान् सुपरिचितकुशलमूलो गणधर तीर्थकरत्वापिससाधुका पद्यवक्षमाणायाप्रबदमुतज्ञानावरणक्षयोपशम पतदशपूर्वविन सर्वाक्षरसन्निपाती विकसिताप्रतिभानसमान्वित एव तत्र विमय पृच्छसि न दि चतुर्दशपूर्वविदः सर्वोत्कृष्टश्रुतलब्धिसमन्वितस्य किञ्चिदप्यापनीयम विदितमस्ति यतस्तत्र सरागमयिनय साधवस्तथापुरोऽपृच्छेत्सा। नयचयया इसधी विपाकद्रप्यसंकमत्वा ॥ १ ॥ सत्य मतत् केवल मामकत्र गौतमस्वामी भगवान स्वत्र रत्नयस्य प्रतिपाद्य तत्सम्प्रत्ययनिमित्त विवक्षिता य पृच्छति यदि वा माप सकत्र गणधरप्रमतीर्थकरानवचनरूप सूत्रमतो भगवाना यस्थामो पौत्यमत सूत्र रचयति अथवा समयति तस्यापि नबभूता गौतमस्वामिना Sनाभाग छद्मस्थत्वात् उक्त च-न हि नामा नाभोगः छद्मस्थस्य हि कस्य जिवा त्स। ज्ञानावरणीय हि ज्ञानावरणप्रकृति कर्म ॥१॥ ततो भातसमय मत् पृच्छतीति न कश्चि द्दोषः मायमा इति साकप्रयितमत्यायिसिद्धगौणाज्जिपायकापमामप्रख्यानि एगोतम। गौतमगोत्र ति भावाय ॥ सत्तावन इति ॥ स्वस्थान यत्र सते यादरपृथिवीकायिका: पयासा भास्मा स वथाद्धियिनागेना दद्रु गस्थम तत्स्वस्थानमिति भायः स्वस्थानग्रहण मुपपातसमुद्घातस्थानमिवृत्त्यर्थं तन स्वस्थानम स्वस्थानमम क्षीकृत्यासि भाष अष्टासु पृथिवीषु सवत्र यादरपृथिवीकायिकानां पयाप्ता

त्ताए वालुयप्पभाए पकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए अहेसत्तमाए ईसीप्पभाराए अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु वि

मक मर्मे भवनपतिनिवासे भावनकोवकपे नरकावास पाथडोऽपि नरकमे पाथडे कस्माद कल्पदेवलाक सौधर्मादिके विमान। विमानावलिए वि मानपत्थडेसु तिरियवा० टकमु कूडम सलम सिहरीम पभारम विजएस वक्खारेस वासहरपव्वएस वेलासु वेइयासु दारेस तोरणेसु दीवेसु समुद्देस इत्यत तायरपृष्ठीनावाच पयतयाव ठायाप क्लवाएपंठावा। विमानयावलिका विमानेमाम विमान ते पमरे तिरवकमाव कस्ट पर्वतचे फूटे सिद्धायत। कूटयपपव शिखरसहित पवत तेनाम प्राग्भार विजय कच्छादि वक्षस्कार विद्युत्प्रभादि प्रयत्तें वर्षधरपवत हिमवदादि वलामक्षादि पदिव जम्बूद्वीप

सीं स्थामामीति योगः, तासां स्थौ पृथिवीनामग्राह माह-तत्रेत्यादि॥ तत्र यथा रत्नप्रभायां यावदष्टम्यां सीमत् प्राग्भारायां तथा अधोलोके पातालेषु पातालकलशेषु वलयामुखप्रभृतिषु भवनेषु भवनपतिनिकायावासरूपेषु भवनप्रस्तटरूपेषु [illegible] भवनप्रस्तटेषु भवनानामवकाशानामन्तरं भवनप्रस्तटेषु तु भवनानामपान्तरालस्यापि तथा नरकेषु प्रकीर्णकरूपेषु नरकावासेषु नरकावलिकासु आवलिकाव्यवस्थितेषु नरकावासेषु नरकप्रस्त

माणायलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए टंकेसु कूडेसु सेलेसु सिहरीसु पब्भारेसु विजयेसु वक्खारेसु वासेसु वासहरपव्वएसु वा वेलासु वेइयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु एत्थ णं बादरपुढवीकाइयाणं

दि जगतीद्वारविवरादि तोरणद्वारादिसंबन्धी वर्णो [illegible] समुद्रगते ठामे पूर्वोक्तस्थानेषु च पर्याप्ता [illegible] भागे तेषां केवलाघ्य [illegible] पृथ्वीकायिका अपर्याप्तिका तथा पर्याप्तानां ठामकाः [illegible] लोकस्य असंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्य असंख्येयभागे सद्वायेन। [illegible] न त असंख्यातमेभागे समुद्घातेनापि लोकस्य असंख्येयभागे स्वस्थानेन रत्नप्रभा पल्लवान्तरे। लोकस्य असंख्येयभागे वर्त्तमाने बादरपुढवीका स्थाने अपर्याप्तकानां ठाणा [illegible] लोकस्य असंख्यातमेभाग ठामके, किंवे कियां भगवन् बादर पृथिवीकायिकानां अपर्याप्तानां ठामकाः। गायमा जस्थे व बायरपुढवीकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा। हे गौतम किया बादरपृथ्वीकायिका पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकाः। तत्रैव बायरपुढवीकाइयाणं अपज्ज त्तगाणं ठाणा पं। किं बादर पृथ्वीका० अपर्याप्तानां ठामकाः। उपपातेन समुद्घातेन स्वस्थाने सद्वायेन लोकस्य असंख्येयभागे। उपपातेन स म त [illegible] [illegible] असंख्यातमेभागे। कियत् सूक्ष्मपृथ्वीकायिकानां पर्याप्ता अपज्जत्तगाणं ठाणा प । किं भ गवन् सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकाः। गायमा सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्ता य अपज्जत्ता य ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता। हे गौतम सूक्ष्मपर्याप्ता अपर्याप्ता पृथिवीकायिके सर्वे एकविधत्वे विशेषरहित किम पर्याप्ता तिम [illegible]। सर्वलोक परियावन्नगा प । [illegible] [illegible] आपारम के रहवा [illegible]। समचारसा। पहा समव [illegible]। [illegible] मते [illegible] [illegible] पज्जत्तगाणं ठाणा प०। किं

तमस्वामिना प्रश्नेकृते भगवानाह वर्द्धमानस्वामी गो० सद्दावेवमित्यादि। ननु गोतमोपि भगवा सुपाचितकुशलमूलो गणधरः तीर्थकरनापितमातृका पदत्रयसाधागमकलश्रुतज्ञानावरणक्षयोपशम सद्गुश्चपूर्वधित् सर्वाक्षरसन्निपाती विवक्षितार्थप्रतिज्ञानसमाख्यात एव सत किमथ पृच्छति न हि चतुर्दश पूर्वविदः सर्वोत्कृष्टश्रुतलब्धिसमन्वितस्य किञ्चित्प्रज्ञापनीयम विदितमस्ति यतउक्त सखाइयविसेव साइगजवापुरोउपच्चणा। अथयथा इसकी विपाकरणकृतमत्या ॥ १ ॥ सत्य मतत कवल वामकत्व गौतमस्वामी भगवान स्वत्र विनयन्यः प्रतिपाद्य तत्सम्प्रत्ययनिमित्त विवक्षितार्थं पृच्छति यदि च प्राय सर्वत्र गणधरप्रश्नतीर्थकरनिर्वचनरूप सूत्रमतो भगवाना यद्यपि पात्यमव सूत्र रचयति यथा सम्मयति तस्यापि गणधृता गौतमस्वामिना आचार्य छद्मस्थत्वात् सत्तव-म हि मामा माभोगः छद्मस्थस्यत्र कस्य चिन्ना स्त। ज्ञानावरणीय हि ज्ञानावरणप्रकृति कर्म ॥१॥ तता जानसमय मत पृच्छतीति न कश्चि दोषः गायमा इति साक्षप्रचितमहाविशिष्टगोत्रा भिधायकामामग्रणध्वनिः प्रगौतम! गौतमगोत्रे ति भावाथ ॥ सद्दावत्र इति ॥ स्वस्थान यत्रा सत बादरपृथिवीकायिकाः पर्याप्ता आसना य वयादिविज्ञानेना दृष्टुं भवस्त तत्स्वस्थानमिति भावः स्वस्थानग्रहण मुपपातसमुद्घातस्वानिवृत्त्यर्थं तत्र स्वस्थानत स्वस्थानम ष्टौस्वपति जाव अष्टासु पृथिवीषु सवत्र बादरपृथिवीकायिकाना पर्याप्ता

णाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए अहेसत्तमाए ईसीप्पब्भाराए अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु वि

रत्न मक्के भवनपतिनिवासे भ वनकोचकपे नरकावास पावलोयेषि नरकाने पावर्के कर्णाव वज्ञसंवनाम सौधर्मादके विमान। विमानवलिप वि मानपत्तडेसु तिरियलोए टङ्कम कूडम सेलम सिहराम पब्भारेसु विजयेसु वक्खारेसु वासहरपव्वएसु वेलासु वेइयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु इत्यप्र गारपृथ्वीकायिकाव पत्तगाथ ठाणाय ववबाणपंठाणा। विमानपावलिका विमानेनाम विमान ते प्रतरे तिरश्चीनाव टङ्क पर्वतके कूटे शिखरेत। कूटपर्वत शिखरसहित पवत तेनाम माल्माण विजय कच्छादि वक्षस्कार चित्रकूटादि पवतं वर्षधरपर्वत हिमवदादि वालुकादि वरिक कुट्टीप

र्ग स्यामामीति योगः, तामवा ग्री पृथिवीनामपाह माह-सक्षरेत्यादि ॥ तद्यथा रत्नप्रभाया यावदस्या मीषत् प्राग्भारायां तथा ऽधोलोके पातालेषु पातालकलशेषु भवनेषु भवनपतिनिकायावासरूपेषु भवनप्रस्तटेषु भवनभूमिकारूपेषु भवनप्रस्तटेषु भवनाभावास भवनावलिकासु प्रस्तटेषु नरकप्रस्तटेषु तु भवनानामपान्तरालस्यापि तथा नरकेषु प्रकीर्णकरूपेषु नरकावासेषु नरकावलिकासु आवलिकाव्यवस्थितेषु नरकावासेषु नरकप्रस्त

माणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए टंकेसु कूडेसु सेलेसु सिहरीसु पब्भारेसु विजयेसु वक्खारेसु वासेसु वासहरपव्वएसु वा वेलासु वेइयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु एत्थ णं बादरपुढवीकाइयाणं

दि कतोद्वार विजयादि तोरणधारादिषयवो सर्वेषु सप्तद्वीप समुद्रगते ठासे पूर्वोक्तस्वानेषु च पर्याप्ता बादरपृथ्वीकायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । तथा उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । एते च सर्वेऽपि ... पर्याप्तानां स्थानानि कथितानि । ... रत्नप्रभा ... लोकस्यासंख्येयभागे बादरपृथ्वीका

... यावत् पर्याप्तकानां ठाणा प । ... ठाणं, कहिं णं भंते बादर पृथ्वीकायिकानां अपर्याप्तानां ठाणा पण्णत्ता । गोयमा जत्थे व बादरपुढवीकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा । ... बादरपृथ्वीकायिका पर्याप्ता अपर्याप्तानां स्थानानि । तदेव बादरपुढवीकाइयाणं अपज्ज त्तगाणं ठाणा पं । कहिं णं बादर पृथ्वीनां अपर्याप्तानां स्थानानि । उववाएणं समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । ... लोकस्यासंख्येयभागे । कहिं णं भंते सुहुमपुढवीकाइयाणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं ठाणा प । कहिं णं भंते सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्तानां स्थानानि । गोयमा सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्ता य अपज्जत्ता य ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता । ... सूक्ष्मपर्याप्ता अपर्याप्ता पृथ्वीकायिकाः सर्वे एकविधाः विशेषरहित भिन्न पर्याप्ता ... सव्वलोय परियावण्णगा पं । स ... । कहिं णं भंते बायर आउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पं । किहां

ठेषु नरकभूमिरूपेषु यद्यपि नरकनरकावलिकागृहणेन केवला एव नरकावासाः परिगृह्यते नरकप्रस्तटग्रहणेन तु नरकापान्तराल मपि ऊर्ध्वलोके कल्पेषु सौधर्मिकादिकल्पेषु यत्न द्वादशदेवलोकपरिग्रहविमानेषु ग्रैवेयकसम्बन्धिषु प्रकीर्णकरूपेषु विमानावलिकासु आवलिकाप्रविष्टेषु ग्रैवेय कादिविमानेषु विमानप्रस्तटेषु विमानभूमिकारूपेषु यद्यपि प्रस्तटग्रहणेन विमानान्तरालग्राहिना अपि यथासम्भवग्राहिना बादरपर्याप्तपृथ्वीका यिकाना स्थानपरिग्रहार्थं तथापि तिर्यग्लोके टङ्केषु छिन्नटङ्केषु सिद्धायतनकूटप्रभृतिषु शैलेषु शिखरहीनपर्वतेषु शिखरिषु शिखरयुक्तेषु पर्वतेषु

पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्ज० सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा !

भगवन् बादरपृथ्वीकाय पर्याप्तानां ठाम कह्या । गौतम अधोलोक सातमु पृथ्वीए वलिएस । ईमीतम अनाहमयाञ्चो सप्त पृथ्वीमां घनोदधि ठामे सात घनाइविना वलयने ठामे । पहाड॰ पाताले भवन भवनपतलस । पाताले पातालमा भवनविषे भवनना पाथडाविषे । उर्ध्वलोक कल्पेसु विमाने सु विमानश्रेणिविमाने । प्रकाणे नव ग्रैवेयकने विमानमो श्रेणीविषे । विमानपत्थडसु तिर्यग्लोक घमडस वसमरुस दहसु वावीसु पुष्करिणीस । विमान प्रतरविषे तिर्छालोके तलावपालविषे नदी गङ्गादिकविषे द्रहविषे पद्मद्रहादि वावडीविषे पुष्करणीविषे । दीर्घियासु गुञ्जालियासु सरेसु । दीर्घिको गुञ्जालिकाविषे सरोवरविषे । सरपंतिएसु सरसरपंतिसु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्लरसु पल्ललसु वप्पिणसु दीवेसु समुद्देसु । सरोवरनीपांती पा णीमध्य विषे बिलपंक्तिविषे उज्झरविषे निझरविषे पानीना खाडविषे खेतने बीजा समुद्रादि जलठामे । सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु । सर्व जलाशये जलस्थानक यथा बाकतो भावना पायकोपरे । एएसु बायरपाउकाइयाणं पज्जत्ताणं ठाणा प० । एता बादर अपकायना पर्याप्ताना ठाम कह्या । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । उपपात आश्रीने असंख्यातमें भागे । समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । समुद्घात आश्रीने असंख्यातमें भाग छे । सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । स्वस्थानके लोकने असंख्यातमें भाग छे । कहिणं भंते बायर आउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पं० । किहां

प्राग्भारेषु स्वरकूटेषु विजयेषु वक्षस्कारेषु विद्युत्प्रभादिषु पर्वतेषु वर्षेषु भरतादिषु वर्षधरेषु हिमवदादिपर्वतेषु वेलासु समुद्रादिषु नागरमण्डपेषु वेदिकासु जम्बूद्वीपजगत्यादिसम्बन्धिनीषु द्वारेषु विजयादिषु तोरणेषु द्वारादिसम्बन्धिषु किम्बहुना सामस्त्येन सर्वेषु समुद्रेषु ॥ एत्थ णमित्यादि ॥ अत्र एतेषु स्थानेषु बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि मया अन्यैरपि तीर्थकृद्भिः ॥ उववाएणमित्यादि ॥ उपपातो बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानां यदनन्तरं सूत्रं तं स्वस्थानाभिमुख्य मिति भाव तेनां पपातमपेक्ष्येति भावः लोकस्य असंख्येयतमभागवर्तित्वात् असंख्येयभागे वर्तन्ते अथ के व्याचक्षते-ऋजुसूत्रनयो विविक्त सतो यदा परिस्थूरनयसूत्रमतमनम बादरपृथिवीकायिकाः पर्याप्ता इत्युक्ता तदा च स्वस्थान प्राप्ता आहारादिपर्याप्तिपरिसमाप्त्या विशिष्टविपाकतो बादरपर्याप्तपृथिवीकायिकायुर्वेदयन्ते न यत्र पृथिव्याः भावान्तरासगता यदि तदानीं वि पाकायुर्वेदना संभवात् स्वस्थान समुद्घातमारणान्तिक समुद्घातमपि लोकस्यासंख्येयभागवर्तते तत उपपातनापि लोकस्यासंख्येयभागगता वदितव्या अन्यत्वन्तिरपति पर्याप्ता हि नाम बादरपृथिवीकायिका अवस्थाका सत सा उपान्तरालगतावपि परिगृह्यमाना लोकस्या संख्येयभाग एवति म कापि दोषः तथा च समुद्घातेनापि लोकस्या संख्येयभाग एव वर्तन्ते अन्यथा समुद्घातावस्थायामपि स्वस्थानातिरेकेण अन्तरालवर्तत्वसम्भवात् संख्ये

जत्थेव बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, तत्थेव बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे कहिणं भंते ! सुहुम पुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणयठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुमपुढविकाइया जे पज्जत्तगा जे

स्थानम् बादरपृथ्वीकाय पर्याप्तानां स्थान कहे हैं । भावना करे । बादरपृथ्वीकायिक पर्याप्त ॥ के ठाणा तत्थेव बादरपृथ्वीकायिक अपर्याप्त के ठा ना प । जैसे जहां बादर पृथ्वीकाया पर्याप्तों के स्थान कहे तहां बादर पृथ्वीकाय अपर्याप्तों के स्थान कहे । उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं स व्वलोए सट्ठाणेणं । अपज्जत्त सर्वलोक में समुद्घात सर्वलोक । सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । स्वस्थानक लोक के असंख्यातवें भाग । कहिणं भंते सुहुम

पर्याप्तकनिश्रा या पर्याप्तास्ति तत्र पुन क्षेत्रस्य विहरति विशिष्टमुखविदो या तथासमुद्घातमधिकृत्यापि सर्वलोकस्यासंख्येयभागे इति ॥ समुद्घातमधिकृत्य
लोकस्य असंख्येयभाग इत्य मत्र भावना यथा बादरपर्याप्तपृथिवीकायिका सोपक्रमायुषो निरुपक्रमायुषो वा त्रिभागावशेषायुष परभविकमा
युषसु मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहन्यन्ते तदा ते रत्नप्रभादिप्रदेशेभ्यो अपि लोकस्यासंख्येयतम एव भाग वर्तते लोकस्यास् बादरपृथिवी
कायिकपर्याप्ता एवा एव सौधर्मादि पर्याप्तबादरपृथिवीकायिका अपि सम्यक् रत्नप्रभापृथिव्यादिषु स्वस्थानमात्रमुत्पत्तिस्थानीं स्वस्थानगापि कि
यतिलोकस्यभागवर्ततइतिनिरूपयति सर्वावसोकस्य असंख्येयभाग इति ॥ स्वस्थानं रत्नप्रभादि त च समुदितमपि लोकस्यासंख्येयभागवर्ति तथा
हि रत्नप्रभा अशीतियोजनसहस्राधिकलक्षप्रमाणबाहल्या शर्करापि अपि पृथिव्य एव २ घनतनुवातवलया पातालकलशा अपि योजनलक्षावगा
हा नरकावासा विमानकल्पाद्यपि विमानान्यपि द्वात्रिंशद्योजनशतबाहुल्यानि ततः सर्वेषामपि परिमितमावात समुदितानाम एव लोकस्य
असंख्येयवर्तिनो बादरपर्याप्तपृथिवीकायिकसूत्र उपपातेन समुद्घातेन स्वस्थानेन इति ॥ तथा अपर्याप्ता बादरपृथिवीकायिका अपान्तरालगता
अपि स्वस्थानेपि वा पर्याप्तबादरपृथिवीकायिकषु विशिष्टविपाकतीव्रयत्न तथा देवनैरयिकवर्ज्यानि तापमयकायव्य वा उपपातेन सद्भूता अपि
च देवनैरयिकवर्जेप्ययु सर्वेष्वपि स्थानेषु यत्कारणं तदा अपान्तरालगतावपि वर्तमाना अमी गृह्यन्ते इति प्रभूताय नजावतो यीस्तु उपपातेन
समुद्घातेन च सर्वलोकवर्तत कस्मात् इति चेद् उच्यते एवं भवेत्य इति उपपातेन समुद्घातेन च सर्वलोकव्यापिनः तथो उपपात एवा इत्य सूक्ष
त्या तत्र भावयति सुप्रतीतावक्तव्यापना यत्र यत्र यदा प्रथम तस्मिन् च सकल तद्वा परं तद्भागप्रमा पूरयन्ति एव द्वितीयसमय सकलेपि तथो

अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोएपरियावन्नगा पण्णत्ता , समणाउसो काहिण

बादराउ पज्जत्त पज्जत्तगाण ठाणा प । कितो केमणवन् मगुपत्तायना पर्यीता पयर्यीता ठाम कथा । गायमा मृत्तमपाककाया के पज्जत्त
मा के पज्जत्तगा त सव्वे एगविहा अविसेसा यत्र वत्ता । देवोत्तम सूक्ष्मपत्वाय अपर्याप्ता पर्याप्ता तसवलभेरवे तीका पविभेय कविका । पत्तका

त्ताव्यपि प्रचारता निरन्तर मापूरण भावनाय सठाकस्लोगस्स असंखेज्जइभाग इति॥ यथा पर्याप्तानां भावितं तथा अपर्याप्तानामपि भावनीय तत्रि
यपि सपासु त्वावमावात् सूक्ष्मपृथिवीकायिकपर्याप्तपर्याप्तमूत्र अपज्जत्तगा पज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता परिमावकाइति॥ सूक्ष्मपृथिवी
कायिका ये ऽपर्याप्ता ये च पर्याप्ता ते सर्वेऽप्येकविधा एकप्रकाराः प्राकृत स्वस्थानादिविचार मधिकृत्य भेदाभावात अविशेषा विशेषरहिता यथा पर्याप्ता
स्तथ तेऽपि इति भावः अणाणत्ता नानात्ववर्जिता देशभेदेन लक्षितनानात्वा इत्यर्थ किमुक्तं भवति यथा चारभूतया कालमप्यधिके न प्र
व तर पी ति मसतावपर्याप्ता सर्वलोकव्यापिन उपपातसमुद्घातस्वस्थानैः प्रथमसमया अन्ये च अप्रथमादिभिः सीमकद्भिः अमेता गमस्य कपवि
विवमूच सत्तसु पत्वावयसमरसुत्ति सत्पकोदधिवलयानि ये २ पृथिवीवलयविकानि वलयाकाराणि अधोलोकपायालेसुत्ति पातालकलसेषु सस
मासुपसवतिषु तथापि द्वितीय विभाग उदक तृतीय त्रिभाग वायासमा वलभावात भवनेषु कप्पेषु विमानेषु वज्र वाप्यादिषु विमानादीनि
ताश कस्यतानि वहितव्यानि प्रवपकादपु। वापीना मसमवतो असाधभवात् अवटा कूपा सतागानि प्रतीतानि नदा गङ्गादिषुमभूतया

ते! बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदधीसु सत्तसु घ
णोदधिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु
विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलाएसु सरेसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालि

ए परिवा। अथवा प । अथवाच्चे आपारस्य च इमथा। अमवाजमा। एयमव प। अपायत्ता। वर्तितभत वायर तत्काइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प।
विवाहेमवम् च हर तत्वामना पर्याप्ता ठामथा। भावना महावच भवनमुच्च वेतपकुलकेम द्वीपसमद्रस। वेलीतम भवाने मनुष्याव
मोरि पकारीप समुद्रिये। विमाधारयं भवरसु कमभूमीसु। आधारश्रितवर्के १५ कर्मभूमिविये। सस्य सपरुव पंचसुमहाविदेहसु। व्यापात वि

मूचा: पत्लहृदादय: वाप्य चतुरस्राकारा: ता एव वृत्ताकारा: पुष्करिण्य: यदि वा पुष्करापपल्लालावद्मन्त यासु ता: पुष्करिण्या दीर्घिका: ऋजु सपुनद्य ता एव वक्रा: गुञ्जालिका। बहूनि कवसकवसानि पुष्पावकीर्णानि सरांसी त्युच्यते तथा बहूनि सरांसि पङ्कपत्तया व्यवस्थितानि स र:पक्ति सा बह्व्य: सर:पक्तय: तथा यपु सरस्सु पत्तप्राव्यवस्थितपु कूपादक प्रवालिकया सञ्चरति सा सर:सर:पक्तिसा पङ्क्य सर २ पक्तय:

यासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दी
वेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु जलमीसासु एत्थ णं बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं

तवी अपसामवविना पव मवावितवमाधि सर्वाष छपत्ते। पजव बादर तवकारयाव पज्जत्तगाव ठाबा प । इवी बादर तेवकाय पयाप्तानो ठम
क्षा। तबाएच बासद्ध पर्याविद्धरभावे समग्वाएर्व बासद्ध भस सहावेव वावस भसं । चपवमा कावपेपसक्ष्यातमभागे सरुपातकावने पसप्पात
मभाम ससाल बावने पसप्मातमभागे। कहिवभते बादरतेवकाइमाच पपज्जत्तगाच ठाबा पं । किवी वेमणवम् बादर तेवकावमें कक्षा पपर्शामामा
ठाम कक्षा। भावमा भरवम बायरतेवकाइयाच पज्जत्तगाच ठाचा प । वेगोतम जिवी बादर तेवकाय पर्याप्तामा ठामकक्षा। तत्वेव बायर तेवका
इयार्व पपज्जत्तयाच ठाबा पं बवबाएव। तिवी बादरतेवकाव पपर्याप्तामा ठामकक्षा वि पवीत पठारसेवाजम बाहुम्म समम्ता तिवक्षाव कहिये
म तेवकाव पपर्याप्तामा उपवचामा ठामकक्षा विपार णम्मान्तरवको वांबिता उपपत्ता। बागच्च दासव बवाहम तिरियमाए तहव समग्वाएप
ममचाए एइ चेव बावच भसंखमरभागे। बावम पठारसेपपरिमाच बाहिर पूर्वापर दक्षिणान्तर ममभूरम पपर्यंत स पाठ वेवच समवाल चपाटन
गर प्रवपबाबाबाम्त भव त बवबपाठ तवा तिरिवबाएवि तठमावव्य तिवक्षाव तठ मायभूरमचवद समवात सबमताव पूर पववा पर्याप्तामे
तवांवे पसक्ष्याता पपर्याप्ता चपवे ससमवपर्यंत मरच तवमसात वरे इम सबबताव पूरीषा सप्मानके बावने पमसप्पातमभाग माचासे हुवे। व
किवमते सुहुम तेवकाइयाच पज्जत्त पपज्जत्तयावव ठाबा प । किवी इमपवम् सूक्ष तवक्षाय पर्याप्ता पपर्याप्तामा ठामकक्षा। गायमा सवम त

पितालोय विलामि सतावलिप्पथा अगत्यादिपु कूपिका सोपा पंतपो विलपंक्तप उज्झरा गिरिस्पनसा प्रश्रपता सा एव सदा पस्वायिमो नि
भरा। विझराचि मराता सोचमसायमपूता। नूमवधा गिरिमदेशा वा पस्वामि भतालामि सरासि वमा। केदारा। किम्बहुना सर्वेषु पथलाशयपु

ठाणा पण्णत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे कहिणं भंते ! बायरआउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठा
णा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरआउकाइयाणं अप

ज्वाराया के पज्जत्तगा अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा पं० अविसेसा अणाणत्ता । ब्रौतम सूक्ष्मतेजस्काय वी पर्याप्ता अपर्याप्ता ते सबना एकपोअभर
पविमय वच वहिया । सव्वाव परियावन्ना पं । सवचाव आपो पज्जवे । समयावसा । पथा अमवी आयुपावन्ता । कहिणमंते बायर वाउकाइया
व पज्जत्तगाणं ठाणा प । किहो भभगवन् बादरवाउकाय पर्याप्ताना ठाम कथा । गोयमा सट्ठाणेण सत्तसयणवाएण सत्तसयणवासवलएस सत्तसुतणुवा
एव सत्तम तणवाय वलएसु । सत्याानवे सात धनवातना वलयमेधानना वलो सात तनुवातनावलय ठिकाणे । पवासाए पायालेस भवणेस भवणपत्थडे
सु भवण छद्दस भवणविषडम निरएस निरयावलियाएस । पधोवाव पातालनामुवन कानवे पावधारिये भवनाम ठामे भवनविये टूकपानके नरके भ
रवना वलवनविये । निरयपत्थडेम निरयच्छिद्देस निरयनिक्खडस । नरकनेछिद्र नरकसूदे । कप्पेसु कप्पविमाणेस विमाणवलियाएसु विमाणपत्थ
डस् विमाणछिद्देस । वववाव कल्पविमान ववमानविमाने विमानमतरे विमानछिद्रे । विमाणनिक्खडस तिरियलोए पाईण पडीण दाहिणउदीण सव्व
मवर । विमानपूवे तिरलोके पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तरे सब । वामावासा छिद्देस लोगनिक्खडेस । लोकाकाश कवके सूके एकवे ठामे । एत्थणं बायर
वाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पं । बादरवाउकाय पर्याप्ताना ठामकथा । उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागेसु समुग्घाएण लोयस्स । असंख
वा भावन पसख्यातमेभागे समहातवाकने पसख्यातमेभागे । सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे । स्वस्थान आवने पसख्यातमेभागे । कहिणंभंते अपज्जत्त
बायरवाउकाइयाणं ठाणा प । किहां हेभगवन् अपर्याप्ता वाउकायना ठामकथा । गोयमा जत्थेवबायरवाउकाइयाणं ठाणा पज्जत्तगाणं ठाणा प ।

द्रहा। पद्मद्रहादय। वाप्य चतुरस्त्राकाराः ता एव वृत्ताकाराः पुष्करिण्यः यदि वा पुष्कराणि विद्यन्ते यासु ता पुष्करिण्यो दीर्घिका ऋजु सयुगाः ता एव वक्राः गुञ्जालिकाः बहूनि केवलकवलानि पुष्पावकीर्णानि सरांसि त्वेव्यन्ते तथा बहूनि सरांसि एकपङ्क्त्या व्यवस्थितानि स रःपङ्क्ति सा बहुवः सर पङ्क्तयः तथा येषु सरस्सु पङ्क्त्याव्यवस्थितेषु कूपोदक प्रणालिकया सञ्चरति सा सरःसरःपङ्क्तिः ता बहवः सर २ पङ्क्तय

यासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दी वेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थ णं बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं

सर्वो बादराग्निकायिकाः पञ्च महाविदेहमाहि सर्वत्र उत्पत्ते। एतेषां बादर तेजस्कायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । एभ्यो बादर तेजस्काय पर्याप्तानां ठाम कहा । एतावता लोकस्य असङ्ख्येयभागे समग्रापर्य स्तोकाः एव । स्तोका एव लोकस्य पञ्च । उपपातेन लोकस्य असङ्ख्येयभागे समुद्घातेन असङ्ख्यातभागे स्वस्थानेन असङ्ख्येयभागे। अपिच भते बादरतेजस्कायिकानां अपर्याप्तकानां ठाणा प । किहां हे भगवन् बादर तेजस्कायमें कह्या अपर्याप्तानां ठाम कह्या । गोतमा जत्थेव बादरतेजस्कायिकानां पर्याप्तकानां ठाणा प । हे गोतम जिहां बादर तेजस्काय पर्याप्ताना ठाम कह्या । तत्थेव बादर तेजस्कायिकानां अपर्याप्तकानां ठाणा प एतावता। तिहां बादरतेजस्काय अपर्याप्ताना ठाम कह्या कि पर्यंत पठारेंखेयाजन बाहुल्ये समस्त तिर्यग्लोके कहिये त म तेजस्काय अपर्याप्ताना उपपातना ठाम कह्या विस्तार ग्रन्थान्तरथी जाणिवा उपपाता । लोकस्य असङ्ख्य भागेषु तिर्यग्लोके तदपि समग्रापेक्ष लोकस्य असङ्ख्येयभागे। बाहिर पठाद्वीपपरिमाण बाहिर पूर्वापर दक्षिणोत्तर स्वयम्भूरमणपर्यंत ए पाठ केवल समुद्घात अपाटना नर अपर्याप्ताना सद् ते अढीद्वीप तथा तिर्यग्लोकना तदन्तरालरूप तिर्यग्लोक तद स्वयम्भूरमणद् समुद्घात सर्वलोकमां पूर एतला पर्याप्तानो तणी असङ्ख्याता अपर्याप्ता उपजे स्वस्थानपर्यंत मरण तदनन्तर करे एम सर्वलोक पूरोपा असङ्ख्यातमे लोकने असङ्ख्यातभाग मानवा हुवे । अ (भ)गवन्ते सूक्ष्म तेजस्कायिकानां पर्याप्त अपर्याप्तकानां ठाणा प । किहां भगवन् सूक्ष्म तेजस्काय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा सुहुम ते

स्या इंगतीर्थं समुद्रयो नदिद्रहे इतीदं विशेषं द्वीपानां मध्ये, द्वीपा च समुद्रा च द्वीपसमुद्रा तेषु निर्व्याघातेन व्याघातस्याभावो निर्व्याघात स्तेन निर्व्याघातेन तृतीयाया इति पाठिका मावमामायः व्याघाताभावेन स्यर्थः पञ्चदशसु कर्मभूमिषु पञ्चभरतपञ्चैरावतपञ्चमहाविदेहरूपासु व्याघातं प्रतीत्य व्याघातं सताति भावः, पञ्चसु महाविदेहेषु इप अत्र भावना-व्याघातो नाम अतिस्निग्धो अतिरूक्षो वा कालः तस्मिन सत्य ग्नि व्यवच्छेदः ततो यदा पञ्चसु भरतेषु पञ्चसैरावतेषु सुषमसुषमा सुषमासुषमदु समा वा वर्तते तदा अतिस्निग्धकालो दुःषमदुःषमायां वा तिरूक्ष इत्य ग्निव्यवच्छेदः तस्मिन्सति पञ्चसु महाविदेहेषु अपकाले पञ्चदशस्वपि कर्मभूमिषु ॥ अत्थणमित्यादि ॥ अत्र एतेषु स्थानेषु बादरतेजस्कायिका नां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ॥ उववाएणमित्यादि ॥ उपपातेन यथोक्तस्थानप्राप्त्याभिमुखा अपान्तरालगता अपीति भावः चिन्त्यमाना लोकस्य असंख्येय भागे लोकत्वात् समुद्घातेनापि चिन्त्यमाना लोकस्य असंख्येयभागे मारणान्तिकसमुद्घातवशतो विप्रसृतप्रदेशदण्डानामपि स्तोकतया लोकासंख्येय भागमात्रव्यापित्वात् स्वस्थानेन लोकस्या संख्येयभागे मनुष्यक्षेत्रस्य पञ्चचत्वारिंशद्योजनशतसहस्रप्रमाणायामविष्कम्भतया लोकासंख्येयभागमात्रत्वात्

पज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहि णं भंते! बादरतेउकाइयाण अपज्जत्तगाणं ठाणा पणत्ता? गोयमा! जत्थेव बादरतेउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव बादरतेउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प०,

---

इमसु बावीसु पंक्तिवास ओछिलाम गुंजालियं म सरेस मरपंतियासु बिलपंतियासु पव्वरेसु निज्झरेसु। तिरत्तेलावकूप तलाव नदी द्रहविषे वावी पुष्करणी दीर्घिका गुंजालिकाये सरोवर सरपंतिविषे बिलपंतिविषे पोताठामे निज्झरणे। विवरेसु पाखीस वप्पिणसु दीवसु समदसु सव्वेसु चेव। थोकथोठाम पतासमर ठाम द्वीप समुद्र सर्वठामे। अथ आगल जिहां एहज बादरवनस्पतिकायना पज्जत्ताना ठाणा प०। अपज्जत्ताना ठामविषे हवे बादरवनस्पतीकायना पर्याप्ता ठामकह्या। उववाएणसव्वलोए समुग्घाएणसव्वलोए। अपज्जत्ता सव्वलोके समुद्घात सव्वलोके। सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभा

एतदेव व्याचष्टे तत्स्थानप्रदेशमाश्रित्य अधुना बादरपर्याप्ततेजस्कायिकस्थानानि पृच्छति कहिण भंते बायरतेउकाइयाणमित्यादि प्रश्नसूत्र सुगम भगवानाह-गोयमेत्यादि । गौतम स्वस्थानेन स्वस्थानमङ्गीकृत्य तमनुष्यक्षेत्र मध्य इत्यर्थः अर्द्धतृतीय मध्यगत अर्द्धतृतीयास्वन्तर्मनुष्यक्षेत्र

जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखिज्जत्भागे । कहिणं सुहुमआउकाइयाणं पज्जत्ता अपज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुहुमआउकाइया जेय पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोए परियावन्नगा प०, समणा ! कहिणं भंते ! बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु निव्वाघाएणं पन्नरससु कम्मभूमीसु वाघायं पडुच्च पंचसु महाविदेहेसु एत्थणं बादरतेउकाइयाणं

हे गौतम किलो बादरवायुकायिका पर्याप्ताना स्थानकथा । तत्रैव बादरवायुकायिकाना अपर्याप्तकाना स्थाना प । किलो बादरवायुकाय बादरनिगोद भागे । उपपात समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थान असंख्यातभागे । अपर्याप्ताना स्थान सर्वलोक स्वस्थानके लोकासंख्यातभागे हुवे । कहिणभंते सूक्ष्मवायुकायिकाना पर्याप्तापर्याप्तकाना स्थाना प । किलो हे भगवन् सूक्ष्मवायुकाय पर्याप्ता अपर्याप्तानी स्थानकथा । गोयमा सूक्ष्मवा युकायिका जे पर्याप्तका जे अपर्याप्तका ते सर्वे एकविधा अविसेसा अनानत्ता । हे गौतम सूक्ष्मवायुकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता तेसर्वं एकभेद अविसेष अ व पाहवोपर । सर्वलोक परियावन्ना प । सर्वलोक व्यापीरह्याछे । समणाउसो । पसा समनायायुष्मन्ता । कहिणभंते बादरवनस्पतिकायिकाना प र्याप्तानां ठाणा प । किलो हे भगवन् बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ताना स्थानकथा । गोयमा सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदहिसु सत्तसु घणोदहिवलएसु । हेगौ तम स्वस्थानके सात घनोदधि सात घनोदधिवलयविषे । अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु । अधोलोके पाताल भवनविषे भुवनप्रस्तरविषे । उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु । उर्ध्वलोके कल्पविमान विमानआवलिविषे विमानप्रस्तरविषे । तिरियलोए अगडेसु तडागेसु नईएसु

पाद केवलिसमुद्घातकपाटवत ऊर्ध्वमपि लोकान्तस्पृष्टे ते ऊर्ध्वकपाटे तयो रुद्धकपाटयो स्तथा ॥ तिरियलोयतट्टेसु इति ॥ तत्र स्थाल तिर्यग्लोकेतट्टमिव
तिर्यग्लोकतट्टं तस्मि सत्यपंचेन्द्रियमनुष्यतिर्यक्‌पंचेन्द्रियास्य समस्ततिर्यग्लोक च त्वय उपपातेन बादरतेजस्कायिकानाम पर्या
प्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्वचित्–तिरियलोयतट्ट इति पठन्ति २ तत्र व्याख्यात तयो कपाटयो स्थितः तस्य तिर्यग्लोक या सौ तस्य च ति
र्यग्लोकतस्य तयोरुद्धकपाटयो रन्तर्गतो तिर्यग्लोक इत्यथ तस्मिन्नपिमुक्त भवति द्वयो रुद्धकपाटया यथोक्तस्वरूपयो स्तिर्यग्लोकपि च तथा

भवनपत्थडेसु भवणछिद्देसु भवननिक्खुडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु निरयछिद्देसु निरयनिक्खुडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु विमाणछिद्देसु विमाणनिक्खुडेसु तिरियलोएसु पाईणदाहिणउदीणसव्वेसु चेव लोगागासछिद्देसु लोगनिक्खुडेसु य एत्थ णं बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु । कहि णं भंते ! अपज्जत्तबादरवाउकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोय

पर्याप्तानां स्थानानि । भवनेषु यावत् तदेकदेशभागे यथोक्तेतदेकदेशभागे तिर्यग्लोके यथेष्ट तथापि यावत् द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वत्र तथा स
र्वत्र च । ऐतेन अधोलोके ऽपि च मन्दरादि यथाक्रमेण देशभागे यावत् तथादि तिर्यग्लोके तथा यावत् द्वीपे समुद्रे सर्व
त्रस्थाने । एतेन वेद सिद्ध एतत् अपर्याप्तानां स्थाना प । एवं बेन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्तानां स्थानानि । उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे समुद्घाते
न सर्वलोक सद्भावेन लोकस्य असं । उपपाते लोकस्य असंख्यातेभागे समुद्घाते ऽपि च स्वस्थानेऽपि असंख्यातेभागे । कल्पभेदे तदादि ।
एतेन अपर्याप्तानां स्थाना प । त्रिचतुः पंचेन्द्रिय पर्याप्तानां स्थानानि । भवनेषु तदेकदेशभागे यथोक्ते तदेकदेशभागे तिर्य
क्‌लोके । ऐतेन ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यग्लोके । यावत्सु तथापि यावत् द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेष्वपि जलाशयेषु जलस्थानेषु य

अपर्याप्तबादरतेजस्कायिकस्थानानि पृच्छति–कहि णं भंते इत्यादि सूत्रमाधे भगवानाह–गोयमेत्यादि–गोयमा! यत्रैव बादरतेजस्कायिकानां पर्याप्ता नां स्थानानि तत्रैव बादरतेजस्कायिकानामपर्याप्तानामपि स्थानानि प्रज्ञप्तानि पर्याप्तनिश्रयैवापर्याप्तानामवस्थानात् ॥ तथा चाह लोगस्स दोसु उड्ढकवाडेसु तिरियलोयतट्टे य इति ॥ तत्र अर्धतृतीयद्वीपसमुद्रनिःसृतं अर्धतृतीयद्वीपसमुद्रप्रमाणबाहल्यं पूर्वापरदक्षिणोत्तरस्वयम्भूरमणपर्यन्त य क

उववाएणं लोयस्स दोसु उड्ढकवाडेसु तिरियलोयतट्टे य समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे। कहि णं भंते! सुहुमवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाण य ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! सुहुमवाउकाइया जे पज्जत्तगा अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा प०, समणाउसो! कहि णं भंते! बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! सट्ठाणेणं सत्तसु घणवाएसु सत्तसु घणवायवलएसु सत्तसु तणुवाएसु सत्तसु तणुवायवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु

ग। असंख्येयभागे। कहि णं भंते इत्यादि बादरतेजस्कायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि पृच्छति यथा भगवन् बादरवनस्पतीकाय अपर्याप्तानां स्थानानि कथ्यन्ते। गोयमा इत्यादि बादरवायुकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि प। हे गौतम बादरवनस्पतीकाय पर्याप्तानां स्थानकथना। तत्र बादरवायुकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि। तिर्यग् बादरवनस्पतीकाय अपर्याप्तानां स्थानकथना। उपपातेन सर्वस्मिन् समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्य असंख्येयभागे। उपपातसमुद्घातस्वस्थानैः सर्वलोके स्वस्थानमिति। कहि णं भंते सूक्ष्मवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प। किं च भगवन् सूक्ष्मवनस्पतीकाय पर्याप्ता अपर्याप्तानां स्थानकथना। गोयमा सूक्ष्मवायुकायिका ये पर्याप्तका ये अपर्याप्तकाः ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः। हे गौतम सूक्ष्मवनस्पतीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता ते सर्वे एकभेद कथ्या अविशेष अभेदोपरि। सर्वलोकपरियापन्ना प। सर्वलोक व्यापी रहे छे। समणाउसो। श्रमणायुष्मन्तः। कहि णं भंते इत्यादि बादरवायुकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प। किं च भगवन् बादरवायु पर्याप्ता प

तिर्यग्लोकवाह्यव्यवस्थिता अपि बादरा पर्याप्ततेजस्कायिकव्यपदेशं लभन्ते तेषां च व्यवहारनयदर्शनाभ्युपगमात् ये २ स्वस्थानसमश्रेणिका तिर्यग्लोकवाह्यव्यवस्थिता अपि बादरा पर्याप्ततेजस्कायिकव्यपदेशं लभन्ते कपाटापान्तरालव्यवस्थिता पाटव्य व्यवस्थिता न तु स्वस्थानानुगत तिर्यग्लोकं प्रविष्टा एव बादरपर्याप्ततेजस्कायिका व्यपदिश्यन्ते न चापि कपाटापान्तरालव्यवस्थिता विषमस्थानवर्तित्वात् तत्र च यद्यपि कपाटद्वयमप्रविष्टा नापि तिर्यग्लोके स किल पूर्वतथावस्था यवति न गम्यन्ते, उक्तञ्च-पत्रमाससमपिपुला तुम्बिकपालाभवद्दिमिपुडा । लोगंततसिंतो जतकतत्रपिप्पति ॥१॥ तत उक्तं ॥ उद्धाएणं दोसुउड्डकवाडेसु तिरियलोयतट्टेय इति स्थापना, तदय मिदं सूत्रं व्यवहारनयदर्शनेन व्याख्यातं तथासम्प्रदायात् पुनः चैतत्-विचित्रा सूत्रस्य गति रिति वचनादिति ॥ समुग्घाएणं सव्वलोए इति ॥ एवं द्वयो।

ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो! कहिणं भंते बादरवण स्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा प० ? गो० ! सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदहीसु सत्तसु घणोदहिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए

अपकाया लोकस्य असंख्यातमेभागे समुद्घातेनापि लोकस्य असं० स्वस्थानेनापि लोकस्य असं०। क्व भदन्त पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तकानां स्थानानि प०। चिह्नं देवगतिम् पंचेन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्तानां स्थानानि । लोकस्य एकदेशे तदसंख्येयभागे सहाकाशदेशदेशभागे तिर्यग्लोके। हे गौतम ऊर्ध्वलोके तस्य एकभागे अधोलोके तस्य एकभागे तिर्यग्लोके च। अधोलोके तडागेषु आवटेषु समुद्रेषु सर्वेष्वपि अवटेषु अवटस्थितेषु। कूप तडाग यावत् द्वीपसमुद्र सर्व स्थानेषु प्रतिष्ठानेषु। एतच पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तकानां स्थानानि प० । इमे पंचेन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्तानां स्थानानि । उपपातेन लोकस्य प० असंख्या एव लोकस्य च सर्वलोके लोकस्य असंख्येयभागे। अपकाया लोकस्य सर्वे समुद्घातेनापि सर्वे स्वस्थानेनापि असं०संख्यातमेभागे। क्व भदन्त नैरयिक पर्याप्त अपर्याप्तकानां स्थानानि प० । चिह्नं कथयताम् नारका पर्याप्ता अपर्याप्तानां स्थानानि। क्व च नैरयिका परिवसन्ति। चिह्नं नारको वसते। लोकस्य अधः सप्तसु पृथ्वीषु च । हे गौतम सप्त च सप्त पृथिवीषु तद्यथा—रत्नप्रभायां शर्करा० वालुका पंक धूम तमः० तमतमः० ०। रत्नप्र

रव कपाटयो रन्तराले मान्यत्र श्रेणितिर्यग्लोकव्यवच्छेदमपरमेतद्वाक्यं न विघातपरं विघातस्य कपाटयवयमेव सिद्धत्वात्, तत्र पुनः केवलिसमा विशिष्टमतसिद्धं वा गम्यं इयमत्र भावना-इह विघाताद्बादरपर्याप्ततेजस्कायिका सद्यथा एकभविका बद्धायुषो तिर्यग्नामगोत्रा य तबयएकसा द्विवताविद्यवात् अनन्तरं बादरपर्याप्ततेजस्कायिकत्वेन उत्पत्स्यन्ते त एकभविका यत्तु पूर्वजन्मविनागादिसमये बद्धबादराः पर्याप्ततेजस्कायिकायुष स बद्धायुषो य पुन बादराः पर्याप्ततेजस्कायिकायुर्नामगोत्राणि पूर्वजन्मोपमानन्तरसाक्षादुदयमन्त अभिमुखनामगोत्राः तत्र एकभविका बद्धायुष य सूक्ष्मता बादराः पर्याप्ततेजस्कायिकाभावत स्वतं पुनर्नामगोत्रमादायात् ततो मतं द्विधा विकार, अभिमुखनामायुर्गोत्रे सपामवापपातस्य स्वस्थानप्राप्त्या विमुख्यसमवस्य लभ्यमानत्वात्। तत्र यद्यपि अनुसूत्रमपदसमन बादरा पर्याप्ततेजस्कायिका पुनर्नामगोत्रवदमात् यथोक्तकपाठद्वय

भंते! जत्थेव बादरवाउकाइयाण पज्जत्तगाण तत्थेव बादरवाउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता। उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए। सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु। कहिणं भंते! सुहुम वाउकाइयाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! सुहुमवाउकाइयाण जे पज्जत्ता अपज्जत्ताण

रूप तथाच यावत् द्वीपे समुद्र सब बताव्द वक्तठामे। एतत्व तेः द्विय पञ्चत्तगार्व ठाणा प । इर्हा तेइन्द्रिय पर्याप्तकाना तिर्यग्ना ठामकाः। उव पादर्व बायस्य पस समग्घातर्व बायस्य पस स्वस्थानावस्य पस । उपपातेन बावन पसख्यातभाग समुद्घातेनापि पसख्यातभागे स्वस्थानतोऽपि पसख्यातभागे। कहिणं भंते चउरिंदिय च पज्जत पपज्जत्तगाण ठाणा प । किञ्चा चेभयवम् चौरिन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकाः। गायमा। उर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यग्लोके। ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यग्भागे। अगडेस तला एस बाव द्वीपसु समुद्र स सब्बेसु जलासएसु जलठाणेसु। रूप तथाच बावत् द्वीपसमुद्र सब जलासये जलठामे। एतत्व चउरिन्द्रिय पञ्चत्त अपज्जत्त गाव ठाणा प । इर्हा चौरिन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकाः। उपपादेनापि पस समुद्घातेनापि पस स्वस्थानेनापि पसख्येयभागे।

तिर्यग्लोकवास्यव्यवस्थिता अपि बादरा: पर्याप्ततेजस्कायिकव्यपदेशं लभन्ते तेषां च व्यवहारनयदर्शनादनुपगमात ये द्वे स्वस्थानसमभिविदं पाटद्वय व्यवस्थिता ये तु स्वस्थानानुगत तिर्यग्लोक प्रविष्टा एव बादरपर्याप्ततेजस्कायिका व्यपदिश्यन्ते न अपरा: कपाटापान्तरालव्यवस्थिता विषमस्थामवर्तित्वात् तत्र च यद्यपि कपाटद्वयमप्रविष्ट नापि तिर्यग्लोक तं किल पूर्वावस्थावस्था एवति मे गम्यन्ते। तथाच-पर्याप्तलक्षणपिण्डा तुम्बकाकारपर्वदिशिपुटा। लोगतेतसितो वतेऊतरचिप्पत्ति॥१॥ तत उर्ध्वं॥ उववाएणं दोसुउड्ढकवाडेसु तिरियलोयतट्टेय इति स्थापना। तदथ मिद सूत्र व्यवहारनयदर्शनम व्याख्यातं तथासम्प्रदायात् युक्त चैतत्-विचित्रासूत्रस्यगति रिति वचनादिति॥ समुग्घाएणं सव्वलोए इति॥ इह इयो॥

ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो! कहिणं भंते बादरवण स्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प० ? गो०। सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदहीसु सत्तसु घणोदहिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए

अपर्याप्ता स्थानमें असंख्यातमेभागे समुद्घातस्थानमें असं स्वस्थानस्थानमें असं०। कहिंभंते पंचिंदिय पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा पं । गिहो हेभगवन् पंचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्तोका ठामकहा। गोतमा उर्ध्वलोक तदेकदेशभागे अधोलोकतदेकदेशभागे तिरियलोए। हेगौतम अधोलोकतदेकदेशभागी अधोलोकतद्रूपभागे तिर्यग्लोका एक। अगडेसु तलायेसु आवडोदेसु समुद्रेसु सर्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु। कूप तलाव यावत् द्वीपसमुद्र सर्व जलाशयमें जलठाणे। एत्थण पंचेंदिय पज्जत्त अपज्जत्तगाणं ठाणा प । इहां पंचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्तोका ठामकह्या। उववाएणं लोयस्स अ० असंख्या एक लोयस्स अ असंख्य लोयस्स असंखेज्जइभागी। अपर्याप्ता स्थानमें असं समुद्घातस्थानमें असं स्वस्थानस्थानमें असं असंख्यातमेंभागी। कहिणंभंते नेरइया च पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा पं । गिहो हेभगवन् नारकी पर्याप्ता अपर्याप्तोका ठामकह्या। कहिणं नेरइया परिवसंति। किहां नारकी वसछे। गोयमा इह बत्तं सत्तसुपुढवीसु य । हेगौतम एक न सात पृथिवीयेंहवे तद्यथा—रत्नप्रभाए सक्कर० वालुय पंक० धूम तम तमतम० ७। रत्नप्र

रव कपाटयो रन्तगते मान्यम सेपतियमृमोकव्यवमदनपरमेतद्वाक्यं तं मिपामपर विपामस्य कपाटपवकमैव सितुत्वात्, तस्व पुन कोवसिमां विभिमृतावर। वा मस्य इयमम प्रावना-इह मिपावादरपयाप्ततबरकायिका सत्पा एकमविका यहायुपो निमुसमामगात्रा य तत्रपएकसा प्लिवतास्तिरूवात् ममन्तर बादरपर्याप्ततमसकायिकत्वन उत्परस्यन्त त एकजविका य तु पूवनवत्रिनागादिसमये यद्वबादराः पर्याप्ततत्रसकायिकायुप स्त यद्वायुपो य पुन योदराः पर्याप्ततस्कायिकायुर्नामगोत्रावि पूवनवमोचनानन्तरसाचापूदयमन्त मजिमुसमामगोत्रा तत्र मकजविका यद्वायुप य मूक्तता बाम्दराः पर्याप्ततबस्कायिकामभावत कद मुर्नामगोत्रवदमानायात् ततो मते रिहा मिकार मित्वमिमुखनामायुर्गोत्रे सपामवोपपातस्य सगयामप्राप्त्या मिमुक्सयवस्य सन्यमामसत्वात। तत्र यद्यपि ममुपूवमयवमनन यादरा पर्याप्ततबरकायिका मुर्नामगोत्रववमात् ययोक्तकपाठद्वय

मा। जत्थेव यादरवाउकाइयाण पज्जत्तगाण तत्थेव यादरआउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता। उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए। सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु। कहिण भंते! सुहुम याउकाइयाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! सुहुमवाउकाइयाण जे पज्जत्ता अपज्जत्ताण

मूप तथाव यावत् वोपे समद्र सव कमान्त्रव कथमेठामे। पत्थव तेः विय पज्जत्तगाव ठावा पं। ररो तेप्रिय पर्याप्तानका तिपांना ठामवका। वय वाइवं कावश पव समग्घाएवं कायव पव सट्टाणवाव पव। क रचना वाकने ममव्यातममाग समुद्रातवाकने पमव्यातममागे सकालवोक म पर्यप्रातमनामे। वरिषमते पर्रेरिद्रिय व पमत पपव्यत्तगाव ठ वा प। विरां वेममवम् पोरद्रिय पर्याप्ता पपर्याप्ताना ठामवका। गोयमा ररवाप तदेकदममाम पशावाए तदेकदममागे तिरिवबाव। केभोतम वद वावतिव दयभाग पभाशावतिव वेगमागे तिरयमावे। पगतेस तथा वसु वाव दावेम ममर व सम्बमपर कवासएसु मवठावस। मूप तथाव यावत् दोपसमद्र सव कमासवे कवठामे। मत्थव वडरिंदिय पमत्त पपमत्त याव ठावा प। ररो चोरिद्रिय पर्याप्ता पपर्याप्ताना ठामवका। ववराएवकावव मव समुग्घाएवकावव मव सट्टावेवकायव मवडोवमाभागे।

पामरासगती वतमामा इति समुद्घातगताश्च सकललोकमा पुरयन्ति उत्ताश्च समद्‌घातेन सर्वलोकव्यापि । यस्त्व निदधति-यतिपश्यः खलु या दरा। पर्याप्तैजस्कायिका पञ्चैक पर्याप्तनिश्रया यसश्ययानामपर्याप्तामा मुत्पादात् ते च सूक्ष्ममपि स मुत्पद्यन्ति सूक्ष्मा स सयत्र विद्यन्ते इति यादरा पर्याप्तैजस्कायिका। स्व २ भवमपर्यंत कृतमारणान्तिकसमुद्घाता सन्तः सकलमपि लोक मापूरयन्तीति म कश्चि द्दोषः यदि तु निरुपच रितत जस्कायिकसमुद्घातप्रच्छपक्षागुमस्थापनस्थानलोकस्यासख्येयभागे इति पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तामामु त्पादात, पर्याप्ताना च स्थान गतुच्यतेऽत्र त च शाकासस्यपतमत्रागमाप्रमिति सूक्ष्मपर्याप्ततैजस्कायिकसूत्र सूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्तपृथिवीकायिकसूत्रवज्ज्ञातव्यं, एव वायुकायिकयन

ठाणा पणत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव बादरवणस्सइकाइ याण अपज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता। उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सठाणेणं लोयस्स असंखेज्ज इभागे। कहिणं भंते! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणय ठाणा प० ? गो० ! सुहुमवण स्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा

पपत्तनगाण ठाणा प । इमीठामे नारकोपपातिका पर्याप्तानामा ठामका। ववपाठव चारस पम ममग्याव्ध कारस पम० सड पच कारस पर्म । अपवना माकन पम ममदानकाकन पम प्यस्स नवाकन पमय्य तमेभाग। तव्वर्ष मध्ये नरकावासमति । तिषां नारकी बसेवे। कालाभा म गभीर नाम हरिसाभोसा वमवना परमकिशाय पत्ता। कालावाभा कातिअवना भवनवस वत्वरामक जेवना परम उत्कृष्टवच कापा। तेच तस्य निर्वभोपा निम त्या निर्वनिवा निसगा निवरमसवमवभ्रमरगमद पशुभसमावाविहरति । तिषां निस्य च स पाम्य चे परमाधार्मिक चको नि त्य च स मांहामाहि निस्य भविमवं निस्य परमपाम दसने सवभ नरकमाभव भाभवता विचरे। वहिपभने रववप्पभपुढवी परायाव पज्जत पपज्ज ताव ठाणा प । किषा भमगवम् रतनपभानारकी पर्याप्ता पपर्याप्तामा ठामका। वहिपभत रववप्पभपुढवी निरया परिवसति । किषा हेभगवन्

पर्याप्तयो पर्योश्च स्वरूपयो साम्य पातरासाति तथु च सूक्ष्मपृथिवीकायिकादयो बादरपर्याप्ततेजस्कायिकेषु त्वग्रमानमारणान्तिकसमुद्घातेन सम वहता स किल विष्कम्भबाहल्याभ्यां शरीरप्रमाणमात्रत्वात् आयामत उत्कर्षतो लोकान्तमवत् आत्मप्रदेशान् विक्षिपन्ति तथा था समाइमासंस्थाप नपद वत्यति पुरुविकायरसव मत मारणान्तिकसमुद्घातव समोहयस तयामरीरस्स कमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता गो० सरीरपमाणम त विक्खम्भबाहल्लेणं आयामेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं लोगान्तो लोगतो इति, तत सो सूक्ष्मपृथिवीकायिकादय उत्पित्सवः याव त् विक्षिप्तात्मप्रदेशदण्डा अपान्तरालगतो वर्तमाना बादरापर्याप्ततेजस्कायिकापूर्वेदनाव्यपदेशात् बादरापर्याप्ततेजस्कायिकव्यपदेशा समुद्घातगतापेक्षा

अगडेसु तलागेसु दहीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थ णं बादरआउक्काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे। कहि णं भंते! बादरआउक्काइयाणं अपज्जत्तगाणं

मा शर्कराप्रभा च वालुकाप्रभा पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमःप्रभा तमस्तमःप्रभा। तत्र घेरदवार्थ घराशिमिति विरवाकाश सवसहस्रा भवतीति मत्वाय तन विर वा। दर्श मारबोना द्व बाब मरबावासा० दम तोबेवरे बधा तेवबके—पेताबहावाक्षि चतरसा। मोक्षि बाटसाबारिके बाहिर वोर्घ्ना। घवे बुर प्प मठाबबर्धाठया। मोव पुरप्पबाज संस्थितके। निर्बधिवारतमसावगय गद घर मूर नक्खत्त आसि पदाय। निम्न घम्बार तमसा न्व बम्द स द नवन ज्योतिषीणो प्रमारहितक। वसा पूयपडिल वहिर मंस चिक्खिल्लिलाणुलेवणतला। स्वभावे मेद वसा पधून मांस तिर्थे कोप्या वावपत। पस र बीभा परमदुभिगन्धा घनविवमाभा। एतावता घपविवके महादुर्गन्धशरीर पन्निवसती वरोमो घमावते सेहनो। ककड फासा दुरहिया सा घमभावरता सुभामरएसु वेयणाया। अवयवाग पसिपतपरे एष्वा पाषा नगरनाठामे धतोच घगुमवेदना भागवेते। पत्तव वरदसाव पब्बरा

पाश्चात्यगतौ वर्त्तमाना इति समुद्घातगताश्च सकललोकमापूरयन्ति उक्तञ्च समुद्घातेन सर्वलोकवर्त्तिनः । अन्यत्र निर्व्याघात-व्याघातौ खलु बा दरा पर्याप्ततेजस्कायिका मनुष्य पर्याप्तमिश्रया अपर्याप्तानामपर्याप्ताना मुत्पादात् ते च सूक्ष्मत्वादपि न मुत्पद्यन्ति सूक्ष्मा च सर्वत्र विद्यन्त इति बादरा पर्याप्ततेजस्कायिकाः स्व २ स्थानपतन स्वमारणान्तिकसमुद्घाताः सन्तः सकलमपि लोक मापूरयन्तीति न काचिद् दोषः यदि तु निरुपच रितत जस्कायिकसमुद्घातमनुपश्यामस्तस्यापनस्थानमनलोकस्यासम्पत्ताने इति पर्याप्तमिश्रया अपर्याप्तानाम् त्पादात् पर्याप्ताना च स्थान मनुष्यक्षेत्र त च लोकासंख्येयभागमात्रमिति सूक्ष्मपर्याप्ततेजस्कायिकसूत्र सूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्तपृथिवीकायिकसूत्रवद्भावनीय एव वायुकायिकवक्त

ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहि णं भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणय ठाणा प० ? गो० ! सुहुमवण स्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावण्णगा

पर्याप्तकानां स्थानं च । इत्यादिषु भारतीयवर्णिता पर्याप्तानां ठामकथा । तमसाकाय कोशस्य पञ्च समन्यायर्ण कोशम पञ्च सप्त चैव कोशम पञ्च । अपरता भाकते पञ्च सम्यग्तकाकल पञ्च सख्य महाकल धर्मस्य तमेभाग । तत्र सर्वे नरकापरिवसति । तिर्यग् मारको वसेके । वामाभा स नमोर वाम वरिताभीमा जनपदा परमकिल्याप पता । कालाभाभा कातिअङ्गता भवनस्त उत्तरामके जिइता परम उत्तरहवत वास्ता । तेन तत्र निर्यमोपा नित्य त्रा नित्यतमिया नित्यरगा निश्चरमसदमवभ्रमरगमर्द पत्तप्रमाणा विहरति । तिर्यं जस्य च स पोम्य ते परमाधार्मिक थक्को नि त्य च म मांसामांस नित्य नतिमकः नित्य परमपाम एकान्त सख्य नरकनामय भावता विवरे । वाद्विमभने रयणप्पभपढवी वरामाव पज्जत पयत्ता ताव ठाणा प । किया वमनवन् रत्नप्रभानारको पवासा पर्याप्तामा ठामकथा । वादिमभेत रयणप्पभपु ॥ निरया परिवसात । किसो वैमानवन्

कपाटयो पयोक्त रज्जूपयो योग्य पान्तरासामि तेषु च सूक्ष्मपृथिवीकायिकादयो बादरपर्याप्ततेजस्कायिकेषु स्वप्नमानमारणान्तिकसमुद्घातेन सम वहता स किल विष्कम्भबाहल्याभ्यां शरीरप्रमाणमात्रत्वात् आयामत उत्कृषतो लोकान्तपर्यन्त् आत्मप्रदेशान् विक्षिपन्ति तथा चा प्रज्ञापनासंग्राप तपर वस्यति पृथिवीकायिकस्य भंते मारणांतिकसमुग्घाएणं समोहयस्स तयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता गो० सरीरपमाणमेत्त विक्खंभबाहल्लेणं आयामेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं लोगाओ लोगंते इति, तत एते सूक्ष्मपृथिवीकायिकादय उत्पत्तिदेशं याव त् विक्षिप्तात्मप्रदेशदण्डा अपान्तरालगतौ वर्तमाना बादरापर्याप्ततेजस्कायिकापूर्वकमाद्यबादरापर्याप्ततेजस्कायिकस्यपदेशाः समुद्घातगतावपा

अगडेसु तलागेसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरपंतियासु पंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलास एसु जलठाणेसु एत्थणं बादरआउक्काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं सव्वलोए, समुग्घा एणं सव्वलोए सठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे । कहि णं भंते ! बादरआउक्काइयाणं अपज्जत्तगाणं

भा शर्करप्रभा च तृतीया वालुकप्रभा पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमःप्रभा तमस्तमःप्रभा । एतासु नैरयिकाणां चतुरशीतिः नरकावास शतसहस्राणि भवन्ति इत्याख्यातं तत्र निर का । एवं नारकीणां ८४ लक्ष नरकावासा हैं ऐसा तीर्थंकरों ने कहा है — अंतःवृत्ताकार चउरंसा । नीचे बाहरी आकार में बाहिर चौखूणा । पुनः क्षुर प्र संस्थानसंस्थिताः । नोच क्षुरप्रसंस्थान संस्थितहै । नित्यान्धकारतमसा व्यपगत ग्रह चंद्र सूर नक्षत्र ज्योतिष पथा । नित्य अन्धकार तमसा ग्रह चन्द्र स य नक्षत्र ज्योतिषीनो प्रकाशरहित है । मेद वसा पूयपटल रुधिर मांस चिक्खिल्ललिप्तानुलेपनतलाः । चरबी मेद वसा पक्ष्म मांस लिप्त भोग्या भाजन । अस उ चीमा परमदुरभिगंधा कापोताग्निवर्णाभा । एतावता अपवित्र हैं महादुर्गन्धशरीर अग्निवत्तो सरीखी प्रभा है जेहनी । कर्कश स्पर्शा दुरधिस हा अशुभानरका अशुभानरकेषु वेदनाः । कर्कश परस्पर पर स्पर्श पाद नरकस्थान में पतीत अशुभवेदना भोगवै हैं । एतासु नैरयिकाणां पर्याप्ता

निकाया ततो व्यवहारनयमतेनो पपातमधिकृत्य सकललोकव्यापिता पठन्ते इति न काचित् विरोधः समुद्घातेन सकललोकव्यापिता सूक्ष्मा एव
निकाया सर्वेषु सूक्ष्मेषु सर्वत्र च लोके तथा समुत्पादसम्भवात् बादरापर्याप्तवनस्पतिकायिकसूत्रं तद्वाच्यमेव बादरपर्याप्तवनस्पतिकायिकामा स्व
स्थाने पत्ताइत्यादि । तत्र बादरनिगोदानां सर्वासांहीनां सम्भवात् सूक्ष्मनिगोदानां सर्वात्यतिरश्चीभूतं तत्र ते बादरनिगोदेषु पर्याप्तेषु समुत्पद्य
माना बादरनिगोदपर्याप्तायुरनुभवन्तः सुविशुद्धस्त्रमूलपदतामभ्युपगमत एव बादरपर्याप्तवनस्पतिकायिकव्यपदेशा उपपातेन सकललोके सर्वे
साधु आप्नुवन्ति तत एव उपपातेन सर्वलोके इति समुद्घातेन सर्वलोके इति । यदा बादरनिगोदा सूक्ष्मनिगोदेषु मध्ये यत्रा पर्यन्ते मारणा
न्तिकसमुद्घातेन समवहता आत्मप्रदेशानुत्पत्ति देशमावत् विक्षिपन्ति तदा बादरनिगोदपर्याप्तायुरप्राप्य बादरपर्याप्तनिगोदा एव

भंते ! तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभाए अहोलोए तदेक देसभागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्खरणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थ णं तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखिज्जइभागे सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहि णं भंते ! चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभाए, अहोलोए तदेकदेसभागे, तिरियलोए

रुधिर मल विशिष्टभूमितलालिताघसरणतया । निम्न पश्चकार रक्षितके गज पद्र मूत्र मचव व्यातिपातो प्रभा रक्षितके मेव यथा भवन पचन च
चिर मांस तवको चाक्षाके ऋाव पन शरीर अशमा पतावता । असर्वासा परमदुर्भिगधा आचम मगविवच भा । पपविश परमदुःखजाव पाम्य
प्य वसतोवातिके । वक्कचमा सानुरशिवासा पशुभागरगा पशुभागरएसु वयवापा पयवभवमावाविहरति । वक्कमसम दुःखेवविसा एकवा मांठामगर

रत्नप्रभादिपृथ्वीष्वपि प्रत्येकं यानि २ भवनानि तथा बादरपर्याप्तवायुकायिकसूत्रे भवनच्छिद्राणि भवनानामवकाशान्तराणि भवननिष्कुटा गवाक्षादिकल्पाः तथा भवनप्रस्तटाः नरकच्छिद्राणि नरकनिष्कुटा गवाक्षादिकल्पा नरकावासप्रस्तटाः एवं विमानच्छिद्राणि विमाननिष्कुटा य प्रतिपत्तव्याः लोकस्यासंख्येयभागेष्वित्यादि॥ यदप्यत्र पर्याप्ता वायुकायिका यत्र यत्र सुषिरं तत्र वायुः सुषिरबहुलश्च लोक इति सिद्ध मुपपातादिषु लोकस्य सर्वत्र गतिः ततः पर्याप्तबादरवायुकायिकसूत्रे उपपातेन समुद्घातेन सर्वलोकेऽप्यसि॥ एवं बादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ताः पर्याप्ता बादरापर्याप्तवायुकायेषु समुत्पद्यन्ते बादरापर्याप्ताश्च यान्तरालगताश्चपि सम्भवन्ति यदपि च स्वस्थानेन बादरपर्याप्तापर्याप्तवायुका

पज्जत्ता, समणाउसो! कहि णं भंते! बेइंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! उड्ढलोए तदेक्कदेसभागे, अहोलोए तदेक्कदेसभागे, तिरयलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु, एत्थ णं बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहि णं

रत्नप्रभा नारकी वर्णन—[illegible] [illegible] पृथ्वीपिंड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उसमें से एक हजार योजन ऊपर और एक हजार योजन नीचे छोड़कर बाकी एक लाख अठहत्तर हजार योजन। रत्नप्रभा पृथिवी में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तेरह प्रस्तट [illegible]

विग्रहो ततो व्यवहारनयमतेनाप्युपपातमधिकृत्य सकललोकव्यापिता घटते इति न काचित् क्षतिः समुद्घातेन सकललोकव्यापिता सुघटैव सर्वेषु सूक्ष्मेषु सर्वत्र च लोके तथा समुत्पादसम्भवात् बादरापर्याप्तवनस्पतिकायिकसूत्रं एवमागन्तव्यमापर्याप्तबादरपर्याप्तवनस्पतिकायिकाना स्व स्थान यथाऽभ्यधि । तत्र बादरनिगोदाना नवासादीना सम्भवात् सूक्ष्मनिगोदानां जघन्यस्थितिरन्तर्मुहूर्तं तत स बादरनिगोदेषु पर्याप्तेषु समुत्पद्य मामा बादरनिगोदपर्याप्तायुरनुभवतः सुविशुद्धस्वतमूलनपदशानभ्युपगमम लभ्यबादरपर्याप्तवनस्पतिकायिकव्यपदेशा उपपातेन सकलकाल सर्वे लोक व्याप्नुवन्ति तत उक्त-उपपातेन सर्वलोक इति समुद्घातेन सर्वलोक इति ॥ यदा बादरनिगोदाः सूक्ष्मनिगोदेष्व प्राय मध्ये पर्यन्ते मारणा न्तिकसमुद्घातेन समवहता आत्मप्रदेशानुत्पत्ति देशयावत् विक्षिपन्ति तदा बादरनिगोदपर्याप्तायुरप्राप्य वीचामति बादरपर्याप्तनिगोदा एव

न्ते ! तइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभाए अहोलोए तदेकदेसभागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्खरणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलट्ठाणेसु एत्थ णं तइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखिज्जइभागे सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभाए, अहोलोए तदेकदेसभागे, तिरियलोए

पहिर मम विश्वमभूमितबाभिलाषसश्वतता । निम्न पश्चबार रक्षितके गज चढ़ सूय मचन व्यातधोगो प्रभा रक्षितके मेव प्रभा मधून पवल व भिर मास तवकरी बावबाके शाव पम शरीर करना पतावता । पसारोसा परमदुर्भिगधा बावस पगविवस भा । पपविम परमदुःधकाय भाम्म स्व ममतोवातिके । कसडपासादुरविवासा पसुभामरना पसमानरएसु वयवापा पवसभरमावाविवरति । ककमसम दुस्सेदिवा एवपा माठागगर

समुद्घातगतायमकललोकव्यापिमर्येति समुद्घातेन सकलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयतमे भागे घनोदध्यादीनां सर्वेषामपि समुदितानां लोकस्या मसंख्येयतमभागमात्रत्वात् प्रमाप्र २००० अपर्याप्तम एव द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियसामान्यतः पञ्चेन्द्रियसूत्रस्यापि भावनीयानि नवरं द्वीन्द्रियादयो यदवो असम्मूर्च्छाः समुत्पद्यन्त इति सर्वत्रापि सूत्रेषु स्थानान्य वटादीनि उक्तानि, तथा ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे मन्दरादि वाप्यादिषु अधोलोके तदेकदेशे अधोलौकिकग्रामकूटतटागादिषु वापृ ध्रुवा स्वयं परिभावनीय अधुना पर्याप्तापर्याप्तनैरयिकस्थानप्ररूपणाय माह–कहिणं भंते नेरइया पमित्यादि ॥ कस्मिन् भदन्त नरकनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि एतद्व्यक्तं पृच्छति यथा न्य न्य यत्रोपपन्नत, कहिणमिति ॥

अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु णिज्झ रेसु उज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं चउरि दियाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असं खेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते! पंचिंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा प०

मेठामै तिहां माठीवठना मामवताचना विचरैहे । एत्थं रयण रयणप्पभ पुढवी बेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पं । एवं प्रकारे रत्नप्रभा नार कीना पर्याप्ता अपर्याप्ता रहै । उववाएणं लोयस्स असं समुग्घाएणं लोयस्स असं सट्ठाणेणं लोयस्स असं । उपजवा आवने असं समुद्घातआवने असं स्वस्थानआवन असं । तत्थणं बहव रयणप्पभ पुढवीनेरइया परिवसंति । तिहां घणा रत्नप्रभा नारकी वसवै ते कहवाहे । कालाकालओभासा गम्भीरला मर्हरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हवण्ण वन्ना पन्नत्ता । कालाकाली आभा छे उत्कटरोमछे तेहना भामनायणा परमकालेवनवर्ण्या । समवायसमा । पच्चात्मया मायुपायका । तत्थ निच्चंभीया निच्चतत्था निच्चतसिया निच्चुव्विग्गा निच्चपरमसुहसंबद्धनरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरंति । निच्च बीहता नि त्य त्रास पाम्या नित्य उद्विग्न छे नित्य परमअसुखसंबद्ध नरकना भयप्रते भोगवता विचरे । कहिणंभंते सक्करप्पभपुढवीनेरइयाणं पज्जत्ताण अपज्जत्ताण

एकस्मिन् प्रदेशे कस्मिन् लोकस्य भागे नैरयिका परिवसन्ति? भगवानाह गौतम स्वस्थानेन सप्तपृथिवीषु ता एव नामग्राह माह-तद्यथा॥ रत्न प्रभायामित्यादि ॥ एतासु पृथिवीषु सप्तसु पृथिवीषु नैरयिकाणां सर्वसंख्यया चतुरशीतिनरकावासशतसहस्राणि भ वन्ति तथाहि रत्नप्रभायां त्रिंशन्नरकावासशतसहस्राणि भवन्ति शर्करप्रभायां पञ्चविंशतिशतसहस्राणि वालुकप्रभायां पञ्चदशलक्षा पङ्कप्रभायां दशलक्षाः धूमप्रभायां त्रीणिलक्षाः तमःप्रभायामेकं शतसहस्रं पञ्चोनं तमस्तमःप्रभायां पञ्चैव भवन्ति सर्वसंख्यया चतुरशीतिलक्षाः नरकावासानां मित्याख्यातं मया अपि च तीर्थकृद्भिः सवनरकावासा इत्यादि ॥ सन्नरकावासा चतुरशीतिलक्षप्रमाणा सर्वेपि प्रत्येकं मध्यभागे वृत्ताकारा बहिर्भागे चतुरस्रा चतुरस्राकाराः इत्थं पीठापरिवृत्तं मध्यभागं विकल्प प्रोच्यते सकलपीठोपरि एवा वलिका प्रविष्टा वृत्तत्र्यस्रचतुरस्र

? गोयमा ! उड्ढलोए तदेक्कदेसभागे अहोलोए तदेक्कदेसभागे तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थ णं पंचिंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहि णं भंते ! नेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ?

त्पर्य । किशो हे भगवन् नरकप्रभादिकोमा नारकोंना पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठाम कहां छे। कहिणं भंते रयणप्पभपुढवी नेरइया परिवसंति । कि हां हे भगवन् रत्नप्रभा नारको रहे छे। गोयमा रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिएगजोयणसहस्सं ओगाहित्ता हिट्ठाचेग जोयणसहस्सं वज्जित्ता । गौतम रत्नप्रभाना पृथिवीनो एकलाख अस्सीहजार जाडपणे तेहने उपर एक हजार योजन मूकीने हेठल एक हजार योजन मूकीने। मध्ये तीसुत्तरे जोयणसहस्स वज्जित्ता। मध्य एकलाख अठ्योतेरहजार जाडपणे। एत्थ णं रयणप्पभपुढवी नेरइयाणं पच्चीसं तिरियाणासत

समुद्घातगतादधमसलोकव्यापितयेति समुद्घातेन सकलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयतमे भाग घनोदध्यादीना सर्वेषामपि समुदितानां लोकस्या संख्येयभागमात्रवर्तित्वात् यथाग्र २००० ग्रमसुमम एव द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियसामान्यत पञ्चेन्द्रियसूत्राण्यपि भावनीयानि नवरं द्वीन्द्रियादयो बहवो जलसम्भूताः शङ्खमनक इति सर्वत्रापि सूत्रेषु स्थानान्य यदादानि पत्तानि तथा ऊर्ध्वलोक तदेकदेशभाग मन्दरादि वाप्यादिषु यथोसावे तदेकस्या यथालोकिकग्रामकूटतटाकादिषु ग्रपपू पयुज्य स्वय परिभावनीय यघुना पर्याप्तापर्याप्तनैरयिकस्थानप्ररूपणाय माह-कहि णं भंते नेरया परिसप्पादि ॥ अस्मिन् प्रदत्ते नदन्नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि एतदव व्यक्त पृच्छति यथा स्य प्यवधुप्पन्त, कहियामिति ॥

अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु णिज्झरेसु उज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थ णं चउरिंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते! पंचिंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा प०

सेढामि तिर्य माठीवदना भावनतावका विपरेकै । एवम् एवम् रयणप्पभ पुढवी नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा प । एवं प्रकारे रत्नप्रभा नारकीणां पर्याप्ता अपर्याप्ता एतदे । उववाएणं लोयस्स पस समुग्घाएण लोयस्स पस सट्ठाणेणं लोयस्स पस । उपपाता लोकने पस समुद्घातवाक्ने पर्म स्वस्थानवाक्ने पस । तत्थ णं बहव रयणप्पभ पुढवीनेरइया परिवसति । तिर्य भर्ता रत्नप्रभा नारको वसके त बवाके । कालाकालावभासा गम्भीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हवण्णा पण्णत्ता । कालाकालो भासाकेप्रकटरामके लेकमा भासनाभका परमकालेबकदा । समवाउसा । पत्तासमना पायुपावका । तत्थ निच्चभीया निच्चतत्था निच्चतसिया निच्चुव्विग्गा निच्चपरमसज्जसकसकरलभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । नित्य भीतता नित्य बाध्याय नित्य उद्विग्नके नित्य परमसमुखसबली नरकना भयमते मामकता विपरे । वहित्तभते सक्करप्पभपुढवीनेरइयाणं पज्जत्ताण अपज्जत्ताण

एतस्मिन् प्रदेशे वसन्ति पंचेन्द्रियाः नैरयिकाः परिवसन्ति ? भगवानाह-गौतम अस्यामेव रत्नप्रभापृथिव्यां ता एव नामग्राहं माह-तद्यथा ॥ रत्न
प्रभायामित्यादि ॥ गताथं प्रत्येकमित्यादि ॥ सर्वे तासु पृथिवीषु सप्तसु पृथिवीषु नैरयिकाणां सर्वसंख्या चतुरशीतिनरकावासशतसहस्राणि भ
वन्ति तथाहि रत्नप्रभायां त्रिंशन्नरकावासशतसहस्राणि भवन्ति शर्करप्रभायां पञ्चविंशतिशतसहस्राणि वालुकप्रभायां पञ्चदशलक्षाः पङ्कप्रभायां
दशलक्षाः धूमप्रभायां त्रीणिलक्षाः तमःप्रभायामेकं शतसहस्रं पञ्चोनं तमस्तमःप्रभायां पञ्चैव भवन्ति सर्वसंख्या चतुरशीतिलक्षाः नरकावासानां
मित्याख्यातं मया सर्वैश्च तीर्थकृद्भिः तेषु नरकावासाइत्यादि ॥ ते नरकावासाः चतुरशीतिलक्षप्रमाणाः सर्वेऽपि प्रत्येकं मध्यभागे वृत्ताकाराः
बहिर्भागे चतुरस्राः चतुरस्राकाराः इदञ्च पीठोपरिवर्तिनं मध्यभागं विकृत्य प्रोच्यते सकलपीठाद्यपेक्षया त्वा आवलिकाप्रविष्टाः वृत्तत्र्यस्रचतुरस्र

? गोयमा ! उड्ढलोए तदेक्कदेसभागे अहोलोए तदेक्कदेसभागे तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु
वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णि
ज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं पंचिंदियाणं
पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्ज
भागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! नेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ?

रहता है । किन्तु हे भगवन् शर्करप्रभापृथिवी के नारकों के पर्याप्त अपर्याप्तकों के स्थान कहां है ? कहां पर हे भगवन् शर्करप्रभापृथिवी के नैरयिक परिवसते हैं । कि
हे भगवन् रत्नप्रभा नारकी रहते हैं । गौतम शर्करप्रभा पृथिवी बत्तीस हजार योजन मोटाई वाली है उसमें ऊपर एक हजार योजन छोडकर नीचे भी एक हजार योजन
छोड़कर बीच में एक लाख तीस हजार योजन में नारकों के पच्चीस लाख नरकावास हैं । हे गौतम शर्करप्रभा पृथिवी के एक लाख बत्तीस हजार योजन के मध्य में
एक लाख तीस हजार योजन में । मध्य पचास हजार बत्तीस हजार योजन में । एवं शर्करप्रभा के नैरयिक परिवसे तिरियावास

सस्थाना प्रतिपत्तव्याः सर्वेखुरप्पसंठाणसंठियाइति । अधोभूमितल क्षुरप्रस्येव प्रहरणविशेषस्य च यत्संस्थानमाकारविशेष तीक्ष्णतालक्षण तेन सं स्थिताः तथाहि-तेषु नरकावासेषु भूमितलं मसृणत्वाभावतः शर्करिल पादेषु न्यस्यमानेषु शर्करामात्रस्पर्शोपि क्षुरप्रवत् पादौ कृन्तति निच्च धारतमसाइति । नित्यान्धकारा उद्योताभावतो य तमः सहितं तम उच्यते तेन तमसा नित्यं सर्वकालमन्धकारा यथा ववरकादिषु नामान्ध कारा सि ववस यदि सूर्यप्रकाश मन्दतमो भवति नरकेषु तीर्थंकरजन्मदीक्षादिकालव्यतिरेकेण सर्वदा सर्वकालमपि उद्योताभावात् एव जायते तस्मात्ततस्य यस्मात् बहिरपि काशाद्यभावात्तीव बहुलतरो वर्तते तत उक्तं तमसा नित्यान्धकाराः तम च तत्र सदावस्थित सुद्योतकारिणाम अभावात्

कहिण भंते ! नेरइया परिवसंति ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु पुढवीसु तंजहा—रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए एत्थ णं नेरइयाणं चउरासि निरयावास सयसहस्साइं भवंतीति मक्खायं, ते णं णरगा अंतोवट्टा बाहिंचउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयार तमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परम

भवन्ति इत्याख्यातं । रत्नप्रभा पृथिवी नारकों के नरकावासे अस्सी हजार योजन के घनत्व वाले हैं इस तरह कहा है सर्वज्ञ ने भगवान् ने । ते नरगा वे तावत अंदर से गोल बाहर से चौरस नीचे छुरे के आकार के संस्थान वाले । निरन्तर अंधकार तमसा से युक्त ग्रह चन्द्र सूर्य नक्षत्र ज्योतिषियों के प्रकाश से रहित हैं । मेद वसा पूय रुधिर मांस चिक्खल से लिप्त अनुलेपन वाले तल वाले हैं अशुचि बीभत्स परम दुर्गन्धि वाले कापोत अग्निवर्ण की आभा वाले कर्कश स्पर्श वाले दुःसह हैं अशुभ नरक हैं और वहां अशुभ वेदनाएं हैं । इस प्रकार रत्नप्रभा पृथिवी के नारकों के पर्याप्त अपर्याप्त स्थान कहे हैं ।

तथाऽऽह व्यपगतग्रहचन्द्रसूरनक्षत्रज्योतिष्पथाः । व्यपगताः परिभ्रष्टा ग्रहचन्द्रसूरनक्षत्ररूपाणां प्रसङ्गे तत्ताराग्रहरूपाणां च ज्योतिषां पन्थानो येषु ते व्यपगतग्रहचन्द्रसूरनक्षत्रज्योतिष्पथाः तथा मेदोवसापूयरुधिरमांसचिक्खिल्ललिप्तानुलेपनतला इति । मेदोवसापूयरुधिरमांसानि प्रतीतानि कर्दमः तेन लिप्तं पश्चाद् अनुलेपनेन संश्लिष्टस्य पुनः पुनः उपलेपनेन तलभूमिका येषां ते मेदोवसापूयरुधिरमांसचिक्खिल्ललिप्तानुलेपनतलाः अत एव अशुचयः अपवित्राः बीभत्सा द्रष्टुमपि जुगुप्सोत्पादकत्वात् क्वचित् वीसा इति पाठः तत्र विस्रा आमगन्धिका परमदुरभिगन्धा

दुब्भिगंधा काऊयगणियन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरएसु वेयणाओ एत्थ णं नरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, एत्थ णं बहवे नरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकण्हा वण्णेणं पण्णत्ता, ते णं तत्थ णिच्चं भीया णिच्चं तत्था णिच्चं तासिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहसंबद्धनरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहि णं भंते! रयणप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा प० ? कहि णं भंते! रयणप्पभापुढविनेरइया परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्समोगाहित्ता

नां स्थानानि । उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्य असंख्येयभागे स्वस्थानेन च । उपपातेनापि च समुद्घातेनापि च स्वस्थानेनापि च सर्वत्रापि असंख्येयभागे । तत्र बहवो नारकाः परिवसन्ति । किंभूताः इत्यत आह कालाः वर्णेन । कालाः कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षाः भीमाः उत्त्रासनकाः परमकृष्णा वर्णेन च । ते च तत्र नरकावासेषु नित्यं भीता ... वर्णेन परमकृष्णा दुर्लक्ष्याः । तथा नित्यं त्रस्ताः । तत्र ते नित्यं भीताः नित्यं त्रस्ताः नित्यं त्रासिताः नित्यमुद्विग्नाः नित्यं परममशुभसम्बद्धं नरकभयं प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति । कि

सत्वाना प्रतिपत्तव्याः अहेगुरप्पसठाणसठियाइति ॥ यथोर्नूमितल क्षुरप्रस्येव प्रहरणविशेषस्य य स्थानमाकारविशेष सोऽस्तातलवत् तेन स रत्नता, सर्वाण्यपि-तपु नरकावासेषु भूमितल मसृणत्वाभावात् शर्करिल पादेपु न्यस्यमानेषु शर्करामात्रस्पर्शेऽपि क्षुरप्रेणेव पादाः कृत्यन्त मिवध यारतमसाइति ॥ नित्यान्धकारा उद्योताभावता य तम तादिव तम उच्यते तेन तमसा नित्य सर्वकालमन्धकारा तथा पदरकारिद्विप नामान्ध कारा सि भवस यदि सूपमकाश मन्दतमो भवति नरकेषु तीर्थंकरजन्मदीक्षादिकालव्यतिरेकेण न्यदा सर्वकालमपि उद्योतमस्या एव ज्ञावतो आत्यन्धस्येव सपक्षकालानुरागस्या तीव बहलतरो वतत तत तेन तमसा नित्यान्धकाराः तम च तत्र सदावस्थित मुद्योतकारिणाम सम्भवात

कहिण भंते ! नेरइया परिवसंति ? गोयमा ! सठाणेण सत्तसु पुढवीसु तंजहा—रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए एत्थ णं नेरइयाण चउरासि निरयावास सयहस्साइं भवंतीति मक्खायं, ते णं णरगा अंतोवट्टा बाहिंचउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयार तमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परम

वसरचा भवतीति मक्खाय। रत्नप्रभा पृथिवीनामाकौ पञ्चविंशत्या नरकावासे वसते रम तावकरे बाह्ये चतुरस्रे प्रकृप्ता। तेण नरया णं तावइयाई चउरंसा अहखुरप्पसंठिया। त नरकावासामाहि माठका बाहिर चारम्हे मोचे क्षुरप्र सठाणके। निच्चंधयार तमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्त क्षत वाऽविवमसामेदवसापूयपडलरुहिरमासचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला। नित्य धन्धकारक तमकरके मवाके सूप चन्द्र गृह नक्षत्र ज्योतिषाको मम ग्रस च मद वसा पूतपडल रुधिर मांस तेषवरी चोक्खाके ताय पगमा तथा। अमुह बीसा परमदुब्भिगंधा काऊ अगणिवण्णाभा। पर्याय दुर्गन्धकाय चा ठा भमना अहमदच तेववा पाभा काओ वहा मातमोवर्णी कक्कडफासा दुरहियासा असुभानरगावासा असुभानरगवेयणा। अमनस्वके दुचे ससि यावरावाप्पा पइगमाठा नगरमा। एसव सकरप्पभपुढवी नरकवास पञ्चत्तपत्तमावठा प तिष्ठ मकरममापविसोना मारको पर्याप्त पयर्याप्ता

पमुना दमनती नरका साया गन्धरसस्पक्षशब्दै रशुमा पतीवा सातरूपा नरकपु वेदना ॥ मत्यकमित्यादि ॥ यावत् एत्यवयपवेनेरयापरियसन्ति कालाहस्यादि ॥ कामाः कृष्णाः तत्र कापि मि प्रतिपन्नतया मन्द् कृष्णापि भवति तत सादा मवपथ्यपब्धेदाय विशेपकान्तरमाव-कालावमासाः का सः कृष्णा अपासः प्रतिष्ठाविमिगमो पस्य स कालावभासा कृष्णप्रभापटलापचिता इतिभावः पत एव गम्भीरलोमहर्षो गम्भीरो ऽलीवा स्फटो

इज्जागे, समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे रयणप्प भापुढविनेरइया परिवसंति। काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता, समणाउसो! ते णं णिच्चं भीया निच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुहसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहिणं भंते! सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? कहिणं भंते, सक्करप्पभापुढविणेरइया परिवसंति? गोयमा! सक्करप्पभापुढवीए बत्तीसुत्तर जोयणसयसहस्सबाहल्लाए। उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे

पा। ते नरकावासामोदि इत्याकार काहिरचीरस यावत् पशुभ नरकावासा पप्रभनरकमो वेदना भीमवती। पत्थर्व वावदप्पमपढवीचेरयाव पक्त पपक्तताव ठाना पं । इन्द्रिये वावचपमा नारकीमा पर्याप्ता पपर्याप्तानां ठामकमा। एवनाभावासम्भ पस समग्घाएवसायस्स पस सट्ठाव सायस्स पसखम्भामाग। कपजनाकावने पसख्यातमेभाग समहानकावन पव ससानषावने पस । तत्रपनवचेगाकुवप्पमपुढवोचेरइया परिवसति। तिर्श पनां वासवममाभा नारको वमेंहे। कालाकालोमासा काव निय परममसुखसबहनरयभय पचचप्रबमाना विहरति। कासायपीरें कालोपाम के यावत् निय परमपससमर्षो नरकभामव प्रतिभामपता विपरेहे। कहिणमंते पकरप्पमपढवी चेरयाव पक्त पपक्तताव ठाना पं०। किर्शं वे मनवम् पहरभामारको पर्याप्ता पपर्याप्तामा ठामकमा। पकरप्पमपुढवीए बीसुत्तरजायपयपसहस्सबाहल्लाए उवरि पयनायपसहस्स उग्गाहिया। वे

मुनमाहिकळवरमो प्य तीवा निष्ठुरजिगया ॥ काऊमगणिवण्णाभा इति ॥ साहे धम्यमान यादृक कपालो वपुरूपसूपी भे वम किमुक्त भवति यादृशी वहुतानवणरूपा धर्मिस्वाला विनिर्गच्छतीति तादृशी आभा आकारा यश त कपालाग्निवर्णोना धम्यमानलोहाग्निज्वालावर्णा इति भा यः नारकाणां तः स्यामस्यनिरकणा स्य सवर्णा प्य स्वरूपत्वात मम स पदममपविशीवमम वमय तथा च वस्याति भवर ॥ कक्खडफासा गणिवमापाममवति ॥ तथा कवम्मे तिनु मरा सिपश्यम स्पर्शोमपु त कक्खडस्पर्शा अत एव दुरहियासा इति दु सना व्यास्यत सवग्गत दुरध्यासा

हेठाचेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण रयणप्पभापुढविनेरइयाण तीस निरयावाससयसहस्सा भवतीति मक्खाय, तेण नरगा अतो वट्टा बाहि चउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्चधयारतमसा ववगयगहचदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयपडलरुहिरमसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुइवीसा परमदुब्भिगधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदणाओ एत्थण रयणप्पभापुढविनेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, उववाएण लोयस्स असखेज्ज

र्या त निज को है परमाधार्मिको निज चाभ्या निज वहिन निज परमपमवधो नरकमाभव भामवताकरा विवरेके। काइ यभत बालुयप्पभप दावरत्वाच पवत पयवतावं ठाया प । किर्श हेममवम् बालुयप्पभापृथिवी नारका पर्याप्ता पर्याप्ता मा ठामवधा। गायमा बालुयप्पभाए प ए पट्ठावीसुत्तर जोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरि एगंजोयण सहस्सं ओगाहित्ता। हेट्ठाम बालुयप्पभा पृथिवीये पवमाए पट्ठावीसहस्सार बाह पर्वे यादृश तेयमादि पवमवसावाले यापरम बाके। हिट्ठा वेगजोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे छवीसुत्तरे जोयणसयसहस्से। वेठे पवमामम मदस मुको ने मध्य वि वे जवसाय छवीसमहस्सारमा यवलाय। एत्थ न सुवथमपुत्वी नेरइयाण पन्नरनिरयावाससयसहस्सा भवतीति मक्खाय। किर्श बालुयप्पभा पृथिवीमा नारकोमा पनरेवाप नरवासावासों यवयवानीर्व वामाने। तववरगा अतोवट्टा बाहि चउरसा जाव असुभा नरगा असुभा निरएसु वेयणा

र्थतीर्थंकरैः हेमवत। हैमवतमुसन्॥ तेणं निच्चं भीता इत्यादि॥ ततो नैरयिकास्वमिति वाक्यालङ्कारे नित्य सर्वकाल वेशस्थानायभिनतमहानिर्वाणात्प्रकार
द्दलनतो भीता नित्य सर्वकाल त्रस्ताः परमाधार्मिकपरस्परोदीरितदु:खसम्पातभया तथापि त्रासमु पपन्थाः नित्य सर्वकाल परमाधार्मिकैः पर
स्परं वा त्रासिताः त्रास प्रापिताः तथा नित्य सर्वकाल यथायोग परमदुःखरूपशीतोष्णवेदनानुभवतः परमाधार्मिकपरस्परोदीरितदुःखानुभवस यो

कालोभासा गम्भीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेण पण्णत्ता। समणाउसो। तेण निच्चं भीता निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्च परममसुहसंबद्ध नरगभय पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहि णं भंते! वालुयप्पभापुढवीणेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! वालुयप्पभापुढवीए अट्ठावीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे छव्वीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थ णं वालुयप्पभापुढविणेरइयाण पण्णरसनिरयावाससयहस्सा भवंतीति मक्खा य। ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसू

को वस्ते। कालाकालाभासा भाव नित्य परममसुखसंबद्ध नरकभय प्रत्यनुभवमाना विहरंति। कालाकालो भाभा यावत् नित्य परममसुखसंबंधो नर
कभयप्रतिभवन्तो विचरन्ते। कहिणं भंते धूमप्पभ पढवी नेरइयाणं पज्जत्त अपज्जत्ताण ठाणा पं०। किहां हे भगवन् धूमप्रभानामा नरकी पर्याप्ता अ
पर्याप्तानां ठाम कह्यां ते कहो। गोयमा धूमप्पभाए पुढवीए अट्ठारसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए। हे गौतम धूमप्रभानामा नरकी एकलाख अढारहजा
र योजनप्रमाण जाडपणे। उवरिं एगंजोयण सहस्सं ओगाहित्ता। ऊपरि एकहजार योजन मूकी तले ही। हेट्ठा वेगजोयणसहस्स वज्जित्ता। एकहजा
र योजन वर्जीने। मज्झ सोलसुत्तर जोयणसयसहस्से। विचाले एकलाख सोलहजारमांहि विषे। एत्थणं धूमप्पभपुढवीनेरइयाणं तिन्निनिरयावाससयस
हस्सा भवंतिति मक्खायं। इहां धूमप्रभाविषे नारकीना तीनलाख नरकावासा कह्या तीर्थंकरे कह्यां छे। तेणंनरगा अंतोवट्टा बाहिं चउरंसा जाव

लोमहर्षा भीमात्रुत्पत्तिजनयत्वात् येन्स ते गम्भीरलोमहर्षा किंभुत्त भवति एवं नाम रुष्णा कालावभासा ये दर्शनमात्रेपि भयमारकजनना भयसंपा दनम मात्रातिग स्पामरूपम् त्यादय मोति यत एव भयानका भीमस्त्वा इव उत्रासनका उत्रास्यन्त भयनारका अनंत मुनि रिस्त्रासम उत्रासना एव उत्रासनका किन्त्वत्र वर्णन वक्तमपि तस्य परमकृष्णा यत कस्य न किमपि क्षयम स्ति भयानकका बहुरूपप्राप्तरूपत्वर्णा प्रसाता भया शर्पे

तीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण सक्कारप्पभापुढवी नेरइयाण पणवीस निरयावाससहस्सा हवतीति मक्खाय तेण नरगा अतो वट्टा बाहिं चउरसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया णिच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरणक्ख त्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुइवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणि वण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थण सक्कारप्पभापुढविणेरइ याण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता। उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असंखे ज्जइभागे सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थण बहवे सक्कारप्पभापुढविणेरइया परिवसंति । काला

गोतम पङ्कप्रभापृथिव्यां एकत्रिंशत्सहस्राधिकं वाहल्य परिक्षेपास एकसहस्रयोजन अवगाहे। किं वन वाच्यसहस्र वर्जिता मध्ये भाग सुतर योजनसहस्रे। अथ पिच एकसहस्रयोजन वर्जिते किंपे एकत्रिंश अठारेसहस्र अवकाश। एतस्य पङ्कप्रभ पृथ्वी नेरइयाण दस निरयावाससह स्रा भवंतीति मक्खायं। इतो पङ्कप्रभापृथिवीना इत्याद्य नरकावासा भगवंते कथा इम। तत्र नरगा अंतःवट्टा बाहि चउरस आव यसका निरवस भवाया। त नरकावासमाश्रि वाट्याकारे बाहिर चउरस यावत् अयमनरकनो वदना भामवेत इम। अथ पङ्कप्रभपृथ्वी नेरइयाण पज्जत्तपज्ज त्तार्थठाणा पं। इतो पङ्कप्रभानारको पर्याप्तापर्याप्तानां ठ मकया। उववाएणवासख भस समग्घ एकवीसखा भस सठाणेण भस। कापवनाओवनि पमध्यातमभाग समवायवाचन मयनातमेमामे समानवचाबने भस। तत्रवं बहवे पङ्कप्रभपृथ्वी नेरइया परिवसंति। तिहां सर्व पङ्कप्रभा मार

पं तार्थंकरो ऐमनप। ईमापुसन्॥ तेष निच्चसीया इत्यादि॥ सतो नैरयिकाणामिति वाक्यालंकारे निस्य सवकास तेश्रस्वनावत मितमहानिवडान्धकार दशमती भीता निस्य सवकास प्रसाः परमाधामिकपरस्परोदीरितदु मकसम्यातनया दग्रापि मासमु पपमाः निस्य सवकास परमाधामिकै पर स्पर पा प्रासिता॥ त्रास याहिता॥ तथा निस्य सवकास पयायोगं परमदुःखमशीतोष्मवदनामनुभवतः परमाधामिकपरस्परोदीरितदु सानुभवत यो

काठान्नासा गन्नीरलोमहरिसा न्नीमा उत्तासणगा परमकिराहा वस्रोण पसत्ता। समणाउसो। तेण निञ्च न्नीता निञ्च तत्था निञ्च तसिया निञ्च उविग्गा निञ्च परममसुन्नसंबद्ध नरगन्नय पञ्चणुब्भवमाणा विहरति। कहिण नन! वालुयप्पन्नापुढवीणेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पसत्ता? गोयमा! वालुयप्पन्नापुढवीए बत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठा वेगं जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे छवीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण वालुयप्पन्नापुढविणेरइयाण पन्नरसनिरयावाससयहस्सा न्नवतीति मरकाय। तेण नरगा अतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसू

को वत्वे। वाताकाताभासा याम निय परममसुखसंबद्ध नरमभयं पचमामाणा विहरति। वालाकालो याभा यावत् निस्य परमसुखसंबंधो नर कमोभय प्रतिभ यजता विचरन्ते। कतिकमत धूमप्पभ पठवी नेरइयाणं पज्जत्त अपज्जत्ताण ठाणा पं०। किर्ग वेभगवन् धूमप्रभानोनारको पर्याप्ता प र्याप्तानाठाम बम्नाके ते कहेवे। मायमा धूमप्पभाए पुढवीए अट्ठारसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए। वे गैतम धूमप्रभानामारको एकलाख अठारेहजा र जोजनप्रमाण जाडपणे। उवरि एगजोयण सहस्सं उग्गाहित्ता। ऊपरि एक हजार योजन मूको तेवारे। हेट्ठावेगंजोयणसहस्सं वज्जित्ता। एकहजा र योजन वर्जीने। मज्झे सोलसुत्तर जोयणसयसहस्से। विचाले एकलाख सोलहजारमाहि विचाले। एत्थणधूमप्पभपुढवीणेरइयाण तिन्निनिरयावाससयसह स्सा भवंतितिमक्खाय। इहां धूमप्रभापृथिवी नारकीना तीनलाख नरकावासा कह्या तीर्थंकरे सर्वाणे। तेणनरगा अंतोवट्टा बाहिं चउरसा जाव

द्विगता सद्गतवासपरामृसपिता एवं नित्य सर्वकाल परम मङ्गुलमे कालेना शुभसम्बद्ध नसु जातु चिदपि ममाग प्य पातरासे व्यवच्छिन्नसता र्ने नरकजयं नरकदु ख प्रत्यनुभवन्त: प्रत्यक वदयमाना विहरन्त्य वतिष्ठन्त तदेव सामान्यतो नैरयिक सूत्र व्याख्यात मेव रत्नप्रभादिविषयान्यपि सूत्राणि यथायोगं परिभावनीयानि प्राय उक्तव्याख्यानानुसारेण सुगमत्वा त्केवल षष्ठपृथिव्या ॥ सप्तमपृथिव्या च नरकावासा: कपोतवर्णा

रयणप्पभपुढवीनेरइयाणं भंते केवइया पण्णत्ता गोयमा असंखेज्जा पण्णत्ता कहिं णं भंते पज्जत्तापज्जत्ताणं
रगरुग्नजोघसपन्ना मेयवसापूयपफलरुहिरमसचिरिक्कल्लछिन्नाणुलेवणतला असुइवीसा परमदुब्भिगंधा काऊ
अगणिवन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा णरएसु वेयणा एत्थणं वालुयप्पभापुढवीणे
रइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । समुग्घाएणं लोयस्स अ
संखेज्जइभागे । सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । तत्थणं बहवे वालुयप्पभापुढवीणेरइया परिवसंति
काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं प० समणाउसो । तेणं निच्च

प्रभुतनरका पञ्चनरकेमुर्वबाधा । तिर्यग नरकावासासामीप्ये मादवावारे बाहिर वीरेण यावत् पञ्चमनरकावासा पञ्चम नरकनीवेदना भामवेदे । प तथ धूमप्पभाए पढवीए नेरइयाणं पज्जत्तपज्जत्ताणं ठाणा प । इत्थं धूमप्रभापृथिवी नारको पर्याप्ता पर्याप्तानां ठामवक्तव्या । उववाएणं लोयस्स एवं समग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे प । सपजणीवाणना पस समहातवावने पस सम्मानसावन पस० । तत्थण बहवे धूमप्पभपुढवी नेरइया परिवसंति । तिर्यग् धूमप्रभानारको वर्णे । कालाकालोभासा जाव निच्चपरममसुभमवद्द नरगमय पवणुभवमाणा विहरंति । कालाकालो भामा इति यावत् नित्य परममशुभ नरकभव प्रतिवरतान्तो विचरते । वहिवमतं तमापुढवी नेरइयाणं पज्जत्तपज्जत्ताणं ठाणा प । तिर्यग् नैम यथा तमापृथ्वीना नारको पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामवक्तव्या । गावसा तमापपढवीए औवसुत्तर जोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगंजोयणसहस्स उ गाहित्ता । इमोतम तमापृथिवीये एकनाम साधिकसार प्रमाण आवपत्रे उपरि एकसहस्रयोजन मुक्तोने । तिविधमयोजनसहस्रदक्षिणता मध्य चेव

न वक्तव्या: नारकोत्पत्तिस्थानव्यतिरेकेण अन्यत्र सर्वत्रापि तेषां शीतपरिणामत्वात् तथा चाह-भवनं उष्णसमीसु वालुयपंकविवज्जणनवमंति एमति यथीतपृथिवीबाहल्य परिमाणप्रतिपादिका संग्रहणिगाथामाह-असीयबत्तीसमित्यादि ॥ अशीतिसहस्राधिकशतसहस्रप्रमाणाया बाहल्य म

णीया निच्चं तसिया निच्चं तासिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुहसंबद्धं णरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति कहिणं भंते ! पंकप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंकप्पभापुढवीए वीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठारसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं पंकप्पभापुढविनेरइयाणं दस निरयावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं । ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थ णं पंकप्पभापुढवि

दसवर्ते आवनमतस । नीचे एकहजारयोजन मे छोड विचे एकलाख अठारहजार योजनमाहि । एथवे तमत्पमपुढवी नेरइयाय । दसो तमप्रभापृथिवीना नरकावास छे । एमवपूर्व निरयाव सयसहस्साइवर्तिनिमक्खाय । एवमाख्याय जम नरकावासा तीर्थंकर कह्या । तेहनरमा अंतावट्टावाहिं चउरंसा चउरसुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा । ते नरकावासामांहि वाटलाकार बाहिर चोरस नीचे खुरप्रसंस्थानसंस्थित नित्यअंधकारमे गया । ववगय गह च सूर नक्खत्त आदि पहा मेयवसापूय पडल रुहिरमंस चिक्खल्ललित्ता णुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा । गया चंद्र सूर्य नक्षत्र ज्योतिषी प्रभारहित अभावे मेद वसा पूयपडल रुधिरमांस तलेंकरी चीकणा भू मना पतावताओ नरकछे । कक्खडफासा दुरहियासा असुभनरगा असुभानिरएसु वेयणाओ । कर्कशस्पर्श दुःखसहिवाभणी आपातमात्र करे एहवो असुभवरणा नरकनो । एत्थ णं तमापढ।। नेरइया पज्जत्तअपज्जत्ताण

द्विना कल्पनवासपराङ्मुखपित्ता यर्व नित्य सकाल परम मग्नमे कान्तेमा मूलसम्बद्ध मसु यातु चिदपि मनाग प्य पाकराले स्यपश्चिकसता
नं नरकस्य नरकदु रा प्रत्युमवन्तः मत्यक वदयमाना विहरन्य वतिष्ठन्त, तदव सामान्यतो नैरयिक सूत्र व्याख्यात मव रत्नप्रभादि विषयाण्यपि
सूत्राणि यथायोग परिभावनीयानि, प्राय उक्तव्याख्यानानुसारेण सुगमत्वा स्कवस पष्ठपृथिव्या ॥ सप्तमपृथिव्या च नरकावासाः कपोतवर्णोत्ता

रगरूफ़जोकसपक्षा मेयवसापूयपकलरुहिरमसचिस्किल्लछिसाणुलेवणतला ग्रसुइवीसा परमदुब्भिगधा काऊ
ग्रगणिवन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा ग्रसुभा नरगा ग्रसुभा णरएसु वेयणा एत्थण धालुयप्पभापुढवीण
रइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पयात्ता । उववाएण लोयस्स ग्रसखेज्जइभागे । समुग्घाएण लोयस्स ग्र
सखेज्जइभागे । सठाणेण लोयस्स ग्रसखेज्जइभागे । तत्यण बहवे वालुयप्पभापुढवीणेरइया परिवसति
काला कालोभासा गम्भीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेण प० समणाउसो । तेण निच्च

प्रमुखनरका यथयनरयेमुखवाधा । तिर्यग् नरकावासामपि काटकाकारे बाहिर बीरस यावत् यथुमनरकावासा यधुम नरकनिवेशा आमवेश । प
तव धूमप्पभाए पढवीए नेरइयाण पज्जत्तमपज्जत्ताण ठाणा प । इत्थ धूमप्पभापृथिवी नारका अपर्याप्ता पर्याप्ताना ठामका । एवमाएसासस्य
पर्व समयापक सावसयस पहावेक्यामय यस । अपक्रोशाबसा यस समहातत्त्वाकने यस यस्मानयावन यस० । तत्यक बहवे धूमप्पभपढवी
नरएसा परिवसति । तिर्यग् कवोधूमप्रभानारका वसवे । काकाकाकाभासा आव निर्यपरममनुष्यमय मरगभय ययत्वभयमायाविहरति । काकाकाको
भामासहित यावत् नित्य परमपरम नरकभय मतिभरताका विहरेत । बहियमते तमापुढवीनेरइयाण पज्जत्तमपज्जत्ताण ठाणा प० । तिर्यग् हेम
मयम् तमापृथ्वीना नारका पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामका । यायमा तमापपढवीए बावसत्तर आयवमबसहस्सबाहाए उवरि एगजोयणसहस्स उ
रमाहित्ता । रमोतम तमापृथिवीवे एकवाद सावेशकार प्रमाण वादपबे उपरि एकहजारयोजन मंकोने । त्रिशदेकमायसहस्सबहिना मध्य चेव

जागे, सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइजागे तत्थण बहवे धूमप्पनापुढविणेरइया परिवसंति काला कालोजासा गजीरलोमहरिसा जीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेण पन्नत्ता समणाउसो। तेण णिच्चं जीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुजसंबद्धनरगजयं पच्चणुब्जवमाणा विहरंति। कहिणं जंते ! तमापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! तमापुढवीए सोलसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्के चोद्दसुत्तरे जोयणसहस्से एत्थणं तमप्पजापुढविणेरइयाणं एगे पचूणे नरगावाससयसहस्से हवंतीति मरकायं, तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनरकत्तजोइसपहा मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्जिगंधा कक्खडफासा दुरहियासा असुजा नरगा असुजा नरगेसु वेयणाउ एत्थणं तमापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइजागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइजागे सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइजागे, तत्थणं बहवे तमप्पजापुढवीणेरइया परिवसंति काला कालोजासा गजीरलोमहरिसा जीमा उत्तासणगा परमकिण्हा

नरगभय पचनभरमाना विहरंति। ते नित्य पीडिता नित्य त्रस्ता नित्य[illegible] नित्य [illegible] नामना परमदुःखम सम्बद्धं नरकभयं प्रतिभागवता विचरे। कहिंणभंत तमतम पुढवीनेरइयाण पज्जत्तपज्जत्ताणं ठाणा प । किहां हे भगवन् तमतमापृथिवी नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। गोयमा तमतम प् पढ वेए पढत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए। हे गौतम तमतमा पृथिवी एकलाख अने एकसो आठ योजन जाडपणे। उवरि पढ तरपंजोयणसयसहस्स उग्गाहित्ता। उपर साडाबावनसहस्सयोजन अवगाहीने। हेट्ठावि अद्धतेवणजोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झेतिसुजोयणसहस्सेसु।

णेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे तत्थ ण बहवे पंकप्पभापुढविणेरइया परिवसंति, काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेण पन्नत्ता समणाउसो । तेणं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुहसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । कहि णं भंते ! धूमप्पभापुढविनेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! धूमप्पभाएपुढवीए अट्ठारसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे सोलसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थणं धूमप्पभापुढवीणेरइयाण तिण्णि निरयावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थणं धूमप्पभापुढविणेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइ

ठाणा मे । [illegible] पज्जत्ता अपज्जत्ताणं ठाणं [illegible] । [illegible] समुग्घाएण [illegible] सट्ठाणेणं [illegible] । [illegible]
[illegible] पंकप्पभपुढवीणेरइया परिवसंति । [illegible]
[illegible] गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा [illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible] । तेणं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा परममसुहं [illegible]

सह बाहल्यपरिमाणं तस्योपरितन मेकं योजनसहस्रमेव चाधोयोजनसहस्रं वर्जयित्वा शेषं नरकावासाधारभूतमतो रत्नप्रभाया नरकावासयोग्यं बाहल्यपरिमाणा षट्सप्ततिसहस्राधिकं भवति सर्वं एव एवका प्युपयुक्त भावनीयं' साम्प्रतं नरकावाससङ्ख्याप्रतिपादनाय सङ्ग्रहणिगाथामाह-तीसाय

ब्भिगंधा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदणाओ एत्थ णं तमतमापुढविनेरइयाण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभाए समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभाए सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभाए तत्थ णं बहवे तमतमापुढविनेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा वन्नेण पन्नत्ता समणाउसो ! ते णं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुहसंबद्धं नरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरंति, असीतिबत्तीस अट्ठावीसंच होइ वीसंच । अट्ठारससो

समार्चित सभावे मेद वसा पूय रुहिर कर्दमास तेषां तरो चोक्ता। अतएवाह परमदुर्भिगंधा काउअगणिवण्णाभा। भूमिगतवा अशुचि परम दुरभि गन्धयुक्ताभा। कक्खडफासा दुरहियासा असुभानरगा असुभानिरयस वेअणायो। अतएवम तत्रे परिवासनाय्य एवामाठा नरकावासा तेषणो वेदनीय अशुभवेदनानरक असमनरवसना। अत्र तमतमा पद त्वरायाः ठाणा पं । इतो यानमोपृथिवी नारकीणा नामकस्थाने। अवता अथ भावस पद समुद्घातर्नाभस्थ च बहावच वाचस्य पं०। उपपातावाने च समुद्घातावाने च स्वस्थानस्थाने च । तत्थं बहवे तमतमा पुढ विनेरइया परिवसंति। तिर्यां तत्रो तमतमापृथिवीना नारकी वसन्ते—कालाकालामासा गभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासनका परमकिण्हा वर्णेन च । कालस्य कालोभासा भवत तसे उत्कटरामके वहनि उत्पादनकर्वका परम कृष्णस्व । समणाउसा। पहायसस चाउवाउक्ता। तत निच्चभीया निच्चतत्था निच्चउसिया निच्चुव्विग्गा निच्चपरममसुहसंबद्धं पच्चणुभवमाणा विहरति। ते नित्य भीषता नित्य त्रस्ता नित्य चाप्ता नित्य उद्विग्न नित्य परममसुख नरकसंबधो भव भावयाचया विहरे—असीतंबत्तीस अट्ठावीसचवीसच अट्ठारससाहस्स अङ्कुशमेवविह्रमिदा। १। रत्नप्रभा एकतास्य अत्रोऽवा

करप्रभाया द्वात्रिंशत्सहस्राधिकं वालुकाप्रभाया अष्टाविंशतिसहस्राधिकं पङ्कप्रभाया विंशतिसहस्राधिकं धूमप्रभाया अष्टादशसहस्राधिकं, धूमप्रभायाः पी ठषोडशसहस्राधिकं तमःप्रभायाः अष्टोत्तरं सहस्राधिकं सप्त ॥ इतिमिया इति ॥ सर्वोपसम्या सामस्तप्रभाया इति सम्प्रत्यु पयय ए एकैक याव नरक मुक्ता यावत्प्रमाणं नरकावासयोग्य पृथिवीबाहल्य तावत्सर्वोत्कृष्ट आह-अष्टुत्तर बत्यादिगाथाद्वय ॥ रत्नप्रभायां हि अशीतिसहस्राधिक

यणेण पण्णत्ता समणाउसो। तए निच्च नीया निच्च तत्था निच्च तसिया निच्च उव्विग्गा निच्च परममसुत्तसयद्धं नरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरंति। कहिण भंते ! तमतमापुढविणेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०, १ गोयमा! तमतमापुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि अद्धतेवण्णजोयणसहस्साइ उग्गाहित्ता हेट्ठावि अद्धतेवण्णजोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे तिसुजोयणसहस्सेसु एत्थण तमतमापुढवीणेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण पचदिसि पच अणुत्तरा महइमहालगा महानिरया पण्णत्ता, तजहा—काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपइट्ठाणे, तेण नरगा अतो वट्टा वाहि चउरंसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्चधयारतमसा ववगयगहचदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयपूयवसारुहिरमसपलचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुइवीसा परमदु

अठ विध च ठीकायनसहस्र म ोम मध्य विभाये तावत्सर्वास्वावस । एत्थण तमतमापुढवीनेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प । इतो तमतमा पृथ्वीना नारको पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामस्था । पंचदिसि पचअणुत्तरा महइ महालया महानिरयावासा प त । पंचदिशा मोटा महामोटा म हानरकावासा कह्या तजहा—काले महाकाल रोरुए महारोरुए अपइट्ठे ते नरकावासाअहापहिरवसरा । काल महाकाल रोर महारोर अप्र तिष्ठान ते नरकावासामांहि मांटमाव रहे वाहिर चउरसंछे । अहे खुरप्पसठाणसठिया । नीचे खुरप्रमस्याससस्थित छे । निच्चधयार तमसा ववगयग ह चन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषपथविवर्जितास्तमसतथा । निच्चअधकार माहवर्षे ममाडे पद पम्र सूर नक्षत्र ज्योतिषीना तेज

सहं याहस्रपरिमाणं तस्योपरितनं मेक योजनसहस्रमेकं चाधोपोजनसहस्रं वर्जयित्वा शेषंनरकावासाधारभूतमतो रत्नप्रभाया नरकावासयोग्यं याहस्रपरिमाणा एससतिसहस्राधिक भवति सच एव सवभा प्युपयुम्य भावनीयं साम्प्रतं नरकावाससङ्ख्याप्रतिपादनाय सङ्ग्रहणिगाथामाह—तीसाय

ष्मिगधा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदणाओ एत्थ णं तमतमापुढविनेरइयाण ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभाए समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभाए सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभाए तत्थ णं बहवे तमतमापुढविनेरइया परिवसंति काला कालोभासा गम्भीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा वण्णेण पन्नत्ता समणाउसो ! तेणं निच्चं भीया णिच्चं तत्था निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, असीतबत्तीस अठावीसचहोइयीसच । अठारससो

प्रमार्जित समावे मेद वसा पूय पटल रुधिरमांस तेषेवरो चोक्खा । चमरवासा परमदुर्भिगंधावाचाम वर्णाविवत्ताभा । भूमितलका चमुचि_परम दुमन्य चम्मिववामा । कक्कखफासा दुरहियासा चसमानरमा चसुभानिरयस वेदनाधो । चनयसम सर्वे चहिवासवायाम्य पक्वामाठा नरकावासा तेषनो वेदनोव चममवेदमानरक चमुममरकवदना । एतेष तमतमा पठ ।विरायावं ठाणा प ।रसो सातमोपृविवो मारकोना मामकयाके । सवदा उप वावन्न पच समुग्घापदसावच प चड्डावच तावन्न प । उपपातावोकमे प समुदातचावकमे प सवानमवावमे प । तत्थच बहवे तमतमा पुठ विवेराया परिवसति । तिदो पषा तमतमापृथिवोमा मारको वसदे—कावाकावामासा गभोरवामहरिसा भोमा पाताससचगा परमविषावचेव पं । कालस्य कालोपाभा भपत वमे चमडरामदे वहने वरावदवर्वजा परम कण्हश्च । समचारवा । पत्तायमय पारवारचा । तप नित्यभोया नित्यतत्था नित्यनमिता नित्यविम्मा नित्यपरममचवबनरमय पवचप्रमाणा विहरति । ते नित्य चोवला नित्य भस्ता नित्य चाम्पा नित्य उहिवम नित्य परमचसुच नरकसंबधो भय मामवतावका विषरं—पाचीयंवत्तीस पड़ावोसचतोरवोसच पट्ठारससावसम पड्डतरमेवहिट्ठिमिया । १ । रत्नप्रभा एकवास पबोकवा

त्यादिगतार्था ॥ तिर्यग्पञ्चेन्द्रियसूत्रं प्राग्वत् नवरं ऊर्ध्वलोके तदेकदेशे तिर्यक् पञ्चेन्द्रिया मत्स्यादयो मन्दिरादि वाप्यादिषु अधोलोके तत्र

लसग अट्ठुत्तरमेयहेट्ठिमया ॥ १ ॥ अट्ठुत्तरचयत्तीस छव्वीसचेवसयसहस्सतु अट्ठारससोलसग चोद्दसमहियं तुछट्ठीए। अद्धतयन्नसहस्सा उवरिमहोयब्झिऊतोत्ताणिय मज्झेउतिसुसहस्सेसु होंतिनरगातमतमाए। तीसा यपन्नवीसा पन्नरसदसेवसयसहस्साइं। तिन्निय पञ्चूणेगं पंचेवअणुत्तरानरगा ॥ ४ ॥ कहिणं भंते। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० ? गो० ! उड्ढलोए तदेकदेसभाए अहोलोए तदेकदेसभाए तिरियलोएसु अगडेसु तडाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु स

रविप्पभा पृथ्वी आदि एकलाख अस्सीहजार एकलाख बत्तीसहजार एकलाख अट्ठावीसहजार एकलाख बीसहजार एकलाख अठारहहजार एकलाख सोलहहजार एकलाख आठ हजार पृथ्वी पिण्डप्रमाण जानना ऐसे नरकादि पृथ्वी में — पहिले तीस लाख पच्चीसलाख पंद्रहलाख दशलाख तीनलाख पांचकमएकलाख और पांच इस तरह नरकावासे पहिलीसे २। एकलाख अठत्तरहजार रत्नप्रभा एकलाख तीसहजार म एकलाख छब्बीसहजार बा एकलाख अठारहहजार धू एकलाख सोलहहजार प० एकला अठोत्तरहजार त म पृथ्वीपिण्ड जानना। ऊपर नीचे एकएक हजार छोडकर बीचमें तिसमें नरकावासे तमतमाप्रभा में ३। साढाबावनहजार तीनहजार नीचे छोडकर बीचमें तीनहजारमें पांच नरकावासे हैं तमतमाप्रभामें ४। तीसा पण बाला पन्नरस दस तिन्नि पञ्चूणेगं पंचअणुत्तरानरगा। ४। ऐसे नरकावास सब जानने २ तीसलाख नरकावासा पच्चीस लाख नर पन्नरलाख नर दसलाख वा तीनलाख नरकावासा पांच कम एकलाख नरकावासा तमप्र। ५। अहिं भंते पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्ता अपर्याप्ता ठाणा प। किहां हे भगवन् पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्ता अपर्याप्ता ठाम कह्या। गोयमा ऊर्ध्वलोक तदेकदेशभाए अधोलोक तदेकदेशभाए तिरियलोए। हे गौतम ऊर्ध्वलोके एकदेशभागे अधोलोके एकदेशभागे तिर्यग्लोके। अगडेसु तलावेसु नदीसु द्रहेसु वावीसु पुष्कर

रपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थ णं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० । उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे । समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! मणुस्साणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० । अंतो मणुस्सखित्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवेसु एत्थ णं मणुस्साणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं सव्वलोए सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! भवणवासीणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० ? कहिणं

बोल कोतिवाल गुफा बिलासु भरेम सरपंतिकाल बिलपंतियास । कूपे तलाव नदी द्रह वापि पुष्करणी दीर्घिका गुंजालिका सर सरपंतिनीविषे बिलपंतिविषे, उज्झरेस निज्झरेसु चिल्ललस पल्लसम वप्पिणस दीवम समास् सर्वेसवर जलासयस जलठाणेस । सर्वविषे पर्वत पांचेंद्रियतिर्यंचयोनियानां ठाणपर्याप्त अपर्याप्त कहा । एतले पंचेंद्रियतिरिक्खजोणियाण पज्जत्तपज्जत्ताण ठाणा पं । एहवां पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनियाना ठाम पर्याप्ता अपर्याप्ता कह्या । उववाएण लोयस्स असं समुग्घाएणं लोयस्स सठाणेणं लोयस्स प० । उपपातआश्री प० समस्त लोकने असंख्यातमे असंख्यातमे भागे । कहिणंभंते मणुस्साण पज्जत्तअपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहां भगवन् मनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कह्या । मायमा पैतालीस लाख जोयणसहस्रमान । अढीतज मनुष्यक्षेत्र ४५ लाख जोजनविषे । अड्ढाइज्जसु दीवसमुद्दस पन्नरसकम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्न अंतरद्वीपम । अढीद्वीप पांचवें समुद्र द्वाय १५ कर्मभूमिविषे तीस अकर्मभूमिविषे ५६ अंतरद्वीपे । एत्थ णं मणुस्साण पज्जत्त अपज्जत्ताण ठाणा प । एहवां मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता कह्या । उववाएणं लोयस्स असं समुग्घाएणं सव्वलोए सठाणेणं लोयस्स प० । उपपातथी लोकने असंख्यातमे भागे छम

कन्ड्ा पगामाकिकग्रामाणिच ममच्चमूभमपि मुमम नवर ॥ ममुग्घापयमम्बुलाएवति ॥ केवलिसमुद्घातमधिकृत्य सम्प्रतिजन्ममपतिस्याम प्रतिपादनाय
माह कविय जत मगवासीवदवावमित्यादि ॥ पसीतत्तरजायवसयसहस्सबाहल्लायवति ॥ पसीत्युत्तर पसीतसहस्राचिकयोजनबाहल्यस्य पाप
स्य यस्याः सा तया तस्याः ॥ सततनवकोडीओ वायत्तरिमवणवासमयसहस्सानवन्ताति मक्खायमिति ॥ पसुकुमाराणा हि चत पद्मिणतसहस्राणि
भवनामा तत मयमक्षुपा पयात्त भवनसहस्राणि भवति ॥ तच भववास्यादि ॥ तानि च मिति वाक्यामकार पुस्त्व प्राकृतत्वात् भवनानि बहिर्
तानि वृत्ताकाराणि चत ममचतुरस्राणि चपसनमाग पुष्करकर्णिकासस्थानसस्थितानि कर्णिकानाम उपरतसमविषयविन्दुपिनी ॥ उक्किन्नतरविउलगम्भी

जवणवासीदेवा परिवसति ? गो० । इमीसे रयणप्पभाएपुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उ
वरिं एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेट्ठाचेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से ए
त्थण जवणवासीदेवाण सत्तभवणकोडीओ बावत्तरिं च भवणावाससयसहस्सा हवतीति
मक्खाय, तेण भवणा बाहिं वट्टा अतो समचउरंसा अहे पुक्खरकन्नियासठाणसठिया उक्किन्नतरविउलग

व ।लाबन च चत्वालमालाबन च । बहिर्वृत्त भवनवासिनाम भवन तथा पञ्चवा ठावा ठा । [illegible] भवनपतिदेव भवा रहे यपवादना स्थान
कथा । बहिर्वृत्त भवनवासीदेवा परिवसति । जिहां भवनम् भवनपतीदेवता वसहे । गौतमा इमीरत्नप्रभापृथ्वीव असीउत्तरलाखसमकस्य
व १८०। इसीतस व रत्नप्रभापृथिवीनि पञ्चसाव असीयोजन प्रमाणमाहि । उपरि एगलाखवसहस्रम मूकाहिता हेठलपलाखवसहस्रम वञ्जिता । न
च र बडनारजोजन प्रमाण मूल्यो नीचे ठ पबडनारयोजन मूकीन । मध्य पठतर लाखवसहस्रम । जिवासे चबदास ७८ हजार योजन । तत्व भवन
।माहा पम मत्तमत्रवाहोपा । तिहां भवनपतो देवताना सातकोड वपर । बायतरो भवनवासमयसहस्सा हवतीति मक्खाय । ७२ लाख भवनपती
न आह तोथंकरे कह्या । तर्व भवनावाहिरहा यताइमचउरसा अहेसु पुष्करकर्णिका सठाणसठिवाओ । ते भवनपतीना भवन बाहिर वाटलाकार मां

रत्नाच्छादिता इति ॥ उत्कीर्ण मिथो रचितमतीव व्यक्तमिन्तर्गः उत्कीर्णमन्तरयासौ खातपरिखाया सा उत्कीर्णान्तराः किमुक्तं भवति खातानां च परिखायां च स्पष्टमन्तराभासनाय मध्यान्तराल महती पाली समस्तीति खातानि च परिखा च खातपरिखा उत्कीर्णान्तरा विपुला विस्तीर्णा गम्भीरा अलब्धमध्यभागा खातपरिखा यस्या सा नगरी परित स्थाने तत्काखान्तरविपुलगम्भीरखातपरिखा खातपरिखायां चाय प्रतिविधाय परिखा उपरिविशाला अधःसङ्कुचिता खात तु समखातं समभित्ति ॥ पागारट्टाल कवाड तोरण पडिदुवारदेसभागा इति ॥ प्राकारप्रकारेषु सा मानुषट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वाराणि अट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वाररूपदेशभागा देशविभागेषु तानि प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभागानि तत्र अट्टालकाः प्राकारस्योपरि भृत्याश्रयविशेषा कपाटानि प्रतोलीद्वारसत्कानि एतेन प्रतोल्यः यद्यपि सूचिता अन्यथा कपाटानाम सम्भवा त् तोरणानि प्रतोलीद्वारेषु प्रतिद्वाराणि स्थूलद्वाराणामन्तरालवर्तीनि लघुद्वाराणि तथा ॥ जंतसयग्घिमुसलमुसुंढिपरिवारिया इति ॥ यन्त्राणि नानाप्रकाराणि शतघ्न्यो महायष्टयो महाशिला वा या पतिता सत्यः पुरुषाणां शतानि घ्नन्ति मुसलानि प्रतीतानि मुसण्ढयः प्रहरणविशेषा स्तै परिवारितानि समन्ततो वेष्टितानि यत एवं योध्यानि परैर्योद्धुमशक्यानि अयोध्यस्था इव च सदाजयानि सर्वकाल यथा यदु तानि सदाजयानि स प्रकाल प्रतयत्नी स्यपं तथा सदा सर्वकाल गुप्तानि प्रहरकैः पुरुषै र्योद्धृभिः सर्वतः समन्ततो निरन्तरपरिवारिततया परेषाममध्यमानाना म

जीरखातफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसढिपरिवारिया अउज्झा सयाज
या सया अजेया सदा गुत्ता अडयालकोठरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरा मरदंडोवरक्खि

इ वलय मध्य पठ सममनो वलिका संस्थाने एतलं मूल्यलय । उकिस्या एविउलगंभीर खाईपरिखा पागारट्टालय कवाड तोरण पडिदुवारदेसभागा । भेवा विसेष चित्रमय प्रकार रूप उठविल तारण माट द्वार तमो छ्ट पारचेद्र । जंतसयग्घिमुसलमुसढि परिवारिया घाल्यासया मललास यागुत्ता । यममायमन्धे लिखी मुमल प्रहरण विशयपदे मध्ये परिवरित आसछे वपासेकरी सदा चीपतासे सदा गुप्तछे । मरयासकुहडगरहया मलया

मागवि प्रवज्ञासम्भवास ॥ षष्ठ्यासकोष्ठरचया इति ॥ अष्टचत्वारिंशद्भेदजिनविच्छित्तिकलिता कोष्ठका अपवरका रचिताः स्वयमेवरचना प्राप्ता यषु तानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितानि सुरगणविशेषना त्वाचिको निष्ठान्तस्य परनिपातः तथा अष्टचत्वारिंशद्भेदनिकायिव्यस्तयः कृतवनमाला यषु तानि अष्टचत्वारिंशत् कृतवनमालानि अन्यस्य जिवृचति अध्यासक्षम्या दृष्टीवचनत्वात् प्रथमस्थावाची ततो यमयः-प्रशासकोष्ठकरचितानि प्रशस्तकृतवनमालानीति तथा क्षेमाणि परकृतोपद्रवरहितानि शिवानि सदामङ्गलोपेतानि तथा किङ्करभूता य उम्बरा सो देवते कृतापराधि तानि सवतः समन्ततो रक्षितानि किङ्करामरदण्डोपरक्षितानि ॥ लाउल्लोइयमहियाइति ॥ इयंनासय कूले गोमयादिना उपलपनं उल्लोइय कुड्यानां मालस्य च सटिकादिभिः सम्मृष्टीकरणं लाइ उल्लोइयाभ्यां महितानि पूजितानि लाइउल्लोइयमहितानि तथा गोशीर्षेण गोशीर्षनामकच न्दनेन रक्तचन्दनेन दर्दरेण मलयेन चपेटाप्रकारेण वा दत्ताः पञ्चाङ्गुलयः तला हस्तका यषु तानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलित लानि तथोपचिता निवेशिता चन्दनकलशा माङ्गल्यकलशा येषु तानि उपचितचन्दनकलशानि ॥ चन्दनघटसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागाइति ॥ च न्दनघटैः चन्दनकलशैः सुकृतानि सुष्ठुकृतानि शोभनानीति तात्पर्यार्थः यानि तोरणानि तानि चन्दनघटसुकृतानि तोरणानि प्रतिद्वारदेशभाग द्वारदेशानां यषु तानि चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि तथा ॥ आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावाइति ॥ आसक्त अधोभूमी

या ए१उल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदनदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतो रणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरहिमुक्कपुप्फपुंजोवयया

नवरचनावा। षडतालीसभए काटरचनाकोथीके षडतालीसभदे काटरचनाकोथीके षडतालीस पूलमालासहित। खमासिवा किंकरा मरदकावर किया सावतारव महिवामोदरमरनरतचन्दा। क्षेमपरिक्षतमा तथा उपद्रव तिवे रहित किंकरभूत के एवता तेव रास्माडे खेपर सावकगवा प छिव भरम के गोशीर्षनाम चन्दन रक्तचन्दन। ददरदिय पचाङ्गुलितलापाय चिवचदन कलसावंदन वडमय तारव पडिदुवारदमाला। दर्द्दर दो

सत्ता चामत्ता प्रलोलम्र इत्यर्थः उर्द्धं सत्तउरसस्स उत्प्रोक्तस्ले उपरिसम्भृत इत्यर्थ विपुलोवि सीर्वो वृत्तो वर्तुलः यप्पारियइसि प्रसवितो माल्यदाम कलापः पुष्पमालासमूहो यथु ताम्य सत्तोरसस्सविपुलवृत्तप्रलम्बितमाल्यदामकलापानि तथा पचवर्णेन सुरभिणा मुक्तेन क्षिप्तेन पुष्पपुञ्जलक्षणेनो पचारेण पूजया कलितानि पच्चवन्नसुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि ॥ कालागुरुपवरकुन्दुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघतगंधुद्धुयाभिरामेइति ॥ कालागुरुः प्रसिद्धः प्रवरः प्रधानः कुन्दुरुक्क चीड तुरुक्कसिल्हक कालागुरु च प्रवरकुन्दुरुक्कतुरुक्कश्च कालागुरुप्रवरकुन्दुरुक्कतुरुक्काणि तेषां धूपस्य यो मघमघायमानो गन्धउद्धुत इतस्ततो विप्रसृत स्तेना भिरामाणि रमणीयानि कालागुरुकुन्दुरुक्कतुरुक्कधूपमघमघायमानगन्धोद्धूताभिरामाणि । तथा शोभनो गन्धो येषां सुगन्धाः त च त वरगन्धा प्रवासाः सुगन्धवरगन्धा तेषां गन्धः स एष अस्तीति सुगन्धवरगन्धगन्धिकानि अतोनेकस्वरादितीकप्रत्ययः अत एव गन्धवर्तिभूतानि सौरभ्यातिशयात् गन्धगुटिकाकल्पानीति भावः तथा अप्सरोगणानां संघः समुदाय स्तेन सम्यक् रमणीयतया विकीर्णानि व्याप्तानि अप्सरागणसंघविकीर्णानि तथा दिव्यानां त्रुटितानां मातोद्यानां वेणुवीणामृदंगादीनां ये शब्दाः तैः सम्प्रनादितानि सम्यक् श्रोत्रमनोहारितया प्रकर्षेण सर्वकाल नदितानि शब्दयन्ति सर्वरत्नमयानि सर्वात्मना सामस्त्येन रत्नमयानि वा अच्छानि आकाशस्फटिकवदतिस्वच्छानि श्लक्ष्णानि श्लक्ष्णपुद्गलस्कन्धनिष्पन्नानि श्लक्ष्णदलनिष्पन्नपटवत् ॥ लण्हानि ॥ मसृणानि घुटितपटवत् ॥ घट्टा इति ॥ घृष्टानीव घृष्टानि खरशानया पाषाण

एकठिया (ग्र१४००) कालागुरुपवरकुन्दुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघतगंधुद्धुताभिरामा सुगंधवरगंधगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छरगणसंघसंकिन्ना दिव्वतुडियसद्दसंपणादिता सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा

वाके पद्मगुणीमा चपेठा विर्षा वर्णसितकाष्य वे मऊनोजमत्र पन्दनना कलशा मूल थामित कोधावे वारच प्रतिहार देसभाम विर्षा । चावतालतरि या कहरचारियमतदामकसिमा । मूमि ऊपर पोवा विस्तीर्ण पचवमाला पचवम सम सरस पुष्प मूक्याडे पूजनोपरे । पंचवपसरससरहिमय पच्च पुंजाचया रवसिया कालागुर पवरकुंदरुक्कतुरुक्क धूप्रम घमघत गंधवुद्धा भिरामे । विवेष के विर्षा फूलवत्ती तथा कालागर प्रधानकुन्दरु चोढ सेलहा

नागपि प्रवेशासम्भवात् ॥ अल्पासक्तोदरत्वा इति ॥ अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविचित्रविरचिता कोष्ठका अपवरका रचिता स्वयमेवरचना प्राप्ता येषु तानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितानि सुखादिदर्शना त्वान्तिको निष्ठान्तस्य परनिपातः, तथा अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविचित्रतया वनमाला येषु तानि अष्टचत्वारिंशत् कृतवनमालानि अन्यत्व जिदपति अल्पाक्षरवर्त्ती दशीवचनत्वात् प्रशस्तावाची ततो यमध-प्रशस्तकोष्ठकरचितानि प्रशस्तकृतवनमालानीति तथा क्षेमाणि परकृतोपद्रवरहितानि शिवानि सदामङ्गलोपेतानि तथा किङ्करभूता य ऽमरा ते दण्डैः कृतोपरक्षि तानि सर्वतः समन्ततो रक्षितानि किङ्करामरदण्डोपरक्षितानि ॥ लाउल्लोइयमहियाइति ॥ इयनामय भूमे गोमयादिना उपलेपन उल्लोइयं, कुड्यानां मालस्य च सटिकादिभिः सम्मृष्टीकरण लाउल्लोइयाभ्यां महितानि पूजितानि लाउल्लोइयमहितानि तथा गोशीर्षेण गोशीर्षनामकच न्दनेन रक्तचन्दनेन चदरेण बहलेन चपेटाप्रकारेण वा दत्ताः पञ्चाङ्गुलयः तला हस्तका येषु तानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलि त लानि तथोपचिता निवेशिता चन्दनकलशा माङ्गल्यकलशा येषु तानि उपचितचन्दनकलशानि ॥ चन्दनघटसुकृततोरणपडिदुवारदेसभागाइति ॥ च न्दनघटैः चन्दनकलशैः सुकृतानि सुष्ठुकृतानि शोभमानानि तान्यवाय यानि तोरणानि तानि चन्दनघटसुकृतानि तोरणानि प्रतिद्वारदेशभाग द्वारदेशभाग येषु तानि चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि तथा ॥ आसक्तोसक्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावाइति ॥ आचयाद् अधोभूमौ

या एउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतो रणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयया

ववन्दनमाला। अड़तालीसभेद वाटरचनाओंवाले अड़तालीसभेद वाटरचनाओंवाले अड़तालीस पुष्पमालाओंसहित। क्षमासिवा किंकरा मरदकारर क्षिता वाचकार महिलामामोगरमरमरतचन्दना। क्षेमपरिरक्षतना तथा उपद्रव तिवे रहित किंकरभूत के दवता तेचे रक्षाके वेपर सामकमवा प लिव मारु के नामोपनाम चन्दन रक्तचन्दन। दररदिन पचाङ्गुलितलाभाव चिपचरच चन्दघात्चदन चनमय तारच पडिदुवारदसभागा। दर्दर दा

तथा चामरो नूमौलाग्र इत्यर्थः उर्द्धं सचत्वरस्य उर्ध्वतले उपरिसंयुक्त इत्यर्थः। विपुलोपि कीर्णो वृत्तो वर्तुल वग्घारियइत्ति प्रलंबितो माल्यदाम कलापः पुष्पमालासमूहो यत्र तानि सवोरसवविपुलवृत्तप्रलम्बितमाल्यदामकलापानि तथा पचवर्णेन सुरभिणा मुक्तेन क्षिप्तेन पुष्पपुञ्जलक्षणेनो पचारेण पूजया कलितानि पञ्चवर्णसुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि ॥ कालागुरुपवरकुन्दुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगन्धुद्धुयाभिरामेइति ॥ कालागुरुः प्रसिद्धः प्रवरः प्रधानः कुन्दुरुक्क चीड तुरुक्क सिल्हक कालागुरु च प्रवरकुन्दुरुक्कतुरुक्कश्च कालागुरुप्रवरकुंदुरुक्कतुरुक्काणि तेषां धूपस्य यो मघमघायमानो गन्धउद्धुत इतस्ततो विप्रसृत तेना भिरामाणि रमणीयानि कालागुरुकुंदुरुक्कतुरुक्कधूपमघमघायमानगन्धाद्धूताभिरामाणि । तथा शोभनो गन्धो येषां ते सुगन्धाः ते च ते वरगन्धा श्रेष्ठाः सुगन्धवरगन्धा तेषां गन्धः स एष अस्तीति सुगन्धवरगन्धगन्धिकानि पक्षोऽनेकस्वरादित्वात् इत्यर्थः, अत एव गन्धवर्तिभूतानि सौरभ्यातिशयात् द्रव्यगुटिकाकल्पानीति भावः तथा अप्सरोगणानां संघः समुदाय स्तेन सम्यक् रमणीयतया विकीर्णानि व्याप्ता नि अप्सरागणसंघविकीर्णानि तथा दिव्यानां त्रुटितानां आतोद्यानां वेणुवीणामृदंगादीनां ये शब्दा सैः सम्प्रनादितानि सम्यक् श्रोत्रमनोहारितया प्रकर्षेण सर्वकाल नदितानि शब्दवंति सर्वरत्नमयानि सर्वात्मना सामस्त्येन सर्व रत्नमयानि वा अच्छानि आकाशस्फटिकवदतिस्वच्छानि श्लक्ष्णानि श्लक्ष्णपुद्गलस्कन्धनिष्पन्नानि श्लक्ष्णदलनिष्पन्नपटवत् ॥ लष्टानि ॥ मसृणानि घुटितपटवत् ॥ घट्टाइति ॥ घृष्टानीव घृष्टानि खरशाणया पाषाण

रफलिया (ग्र१४००) कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधगंधिया गंधव ट्टिभूया अच्छरगणसंघसंविकिन्ना दिव्वतुडियसद्दसंपणादिया सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा

आछे चंदागुलीना चपेटा दिधा ऊपस्थितद्वार छे मणीरत्नमय चन्दनना कलशा मूल स्थापित कीधा छे द्वारन प्रतिद्वार देशभाग दिधा । भावताअवरि या मदनग्धारियमल्लदामकलिया । भूमि ऊपर रोप्या विस्तोर्ण ,वसमाला पंचवर्ण सरस सुगंध पुष्प मूक्या छे पुष्पनोपरे । पंचवर्णसरससुरभिमुक्त पुष्प ऊं जाढ्या रफलिया कालागुर पवरकुंदरकतुरुक्क धूवम घमघत मघमया भिरामे। विशेष छे दिधा धूपवनी तथा अगर प्रधानकन्दक चीड सेल्हा

प्रतिमायत् ॥ मङ्गारति ॥ गृहानि मकुमारग्रामया पायावप्रतिमेव यत मव नीरजांसि स्थानाविकरभारहितत्यात् निमलानि यागतकमलानायात् निष्पङ्कानि कमकुविकमानि कर्दमरहितानि वा निकङ्कच्छायति । मि ककुटानि निःकयथा निरायरणागरूपयातेसि भावाय छायादीप्तियपो तानि निष्कुटच्छायानि समन्तानि स्वरूपतःप्रभावन्ति समरीचीनि बहिर्विनिर्गतकिरणजालानि साद्यातानि यदिच्यवस्थितवस्तुसोमप्रकाशनकरा वि प्रमादापानि मन प्रसादाय मनःप्रसत्तय हितानि प्रसादीयानि मन प्रसत्तिकारागि दर्शनाय तथा प्रमाणाभायान दर्शमयाग्याम यानि पश्यत च चुपा न श्रम गच्छत इति तात्पर्यार्थः अभिरूपा इति अभिसर्वथा द्रष्टृणां मन प्रसादानुकूलतया अभिमुख रूप यथान्तानि अभिरूपानि अत्यन्तकम नीयानि इत्यर्थः अतएव पडिरूवाइति । प्रतिविशिष्ट रूप यथा तान प्रतिरूपानि अथवा प्रतिक्षण नव नवमिव रूप यथान्ताम प्रतिरूपाणि

णीरया निम्मला निप्पका निक्ककङ्कच्छाया सप्पभा ससिरिया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरू
वा पडिरूवा एत्यण नवणयासीण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । उववाएण लोगस्म असखिज्जइ

एव भेदना पूवने चरोगथ चेवरो यन्नत भवनवासमानदे मध्य विना । समचतरमाधषा मधर्वाहमूया पश्चारमव सघसविामवा नन्तुावधमवसप पावारिया । सगन्ध प्रधानके गन्धखेहनो गन्धमोवाल वासोभूत सीगन्धना पतिभव कथा यप्सरना गवसमूह तिपे सकोवके घुटितवेनु मरूवादि सा मनवाचाम्य समाहरणामे साम्बेयव सप्तरूपवे। सन्ठरमवमया पच्चा मणा यद्गा यदामद्गा नीरया निम्मला निप्पका निककवक वा । सर्व रत्नमयवे पाथामनोपरे निमलवे सकमाल सूक्ष्मपदम निपटवे पुठनमोपरे निमलवे मवमाल सूक्ष्म घठारा मठारा वे पायावमोपरे निमल चपघानादिकेकरो नपी । सथमा सविरीया सचिरोधा पविकया मवच्चाना पासाईया दरसनिज्ञा अभिरूवा पडिरूवा । सप्रभा मातोनोपरे बीवेकरो मानावमानवे प्र तिरूप रूपरूप लोमेवे उपातवहित मननी प्रसादकारी दर्शनयोग्य अभिरूप रूपवानु साहिमा याचे । एतान भवनवासोप दराक्र पयाल अपया र्याचे ठ ० पं० । एहवे मामे भवनपतीना देवारा पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकह्या । उपपात अपेक्षीयथ्य य समुद्घात अपेक्षायथ्य य सठाणे अपेक्षायथ्य य०।

पते॥ भवणवासी स्यादि॥ गत अनन्तरोक्ता असुरकुमारादयो भवनवासिनो यथाक्रमं चूडामणिनाम मुकुटे रत्नं चिह्नभूतं यथासे तथा नागकुमारा भू पणनियुक्तनागस्फटारूपचिह्नधरा मुकुटरत्नभूषणनियुक्ताः नागस्फटादिचिह्नचिह्नधरा स तथा हि असुरकुमारभवनवासिनश्चूडामणिमुकुटरत्नाः ॥ १ ॥ चूडामणिनाम मुकुटे रत्नं चिह्नभूत यथासे तथा नागकुमारा भूषणनियुक्तनागस्फटारूपचिह्नधराः ॥ २ ॥ सुपर्णकुमारा भूषणनियुक्तगरुडरूपचिह्न धराः ॥ ३ ॥ विद्युत्कुमारा भूषणनियुक्तवज्ररूपचिह्नधराः वज्रनामपणकस्यायुधं ॥ ४ ॥ अग्निकुमारा मुकुटनियुक्तपूर्णकलशरूपचिह्नधरा ॥ ५ ॥ द्वीपकुमारा भूषणनियुक्तसिंहरूपधराः ॥ ६ ॥ उदधिकुमारा भूषणनियुक्तहयवररूपचिह्नधराः ॥ ७ ॥ दिक्कुमारा भूषणनियुक्तगजरूपचिह्नधराः ॥ ८ ॥ वायुकुमारा भूषणनियुक्तमकररूपचिह्नधारिणः ॥ ९ ॥ स्तनितकुमारा भूषणनियुक्तवरवर्द्धमानरूपचिह्नधराः ॥ १० ॥ वर्द्धमानकशरावसम्पुट मकर गमनिकात्वेव भूषणेषु नागस्फटागरुडवज्राणि यथाते भूषणनागस्फुटागरुडवज्राः पूर्णकलशनाङ्कितकर्णसो मुकुटो यथाते पूर्णकलशाङ्किताभ्यसाः

भागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे भवणवासीदे वा परिवसंति त—असुरानागसुवन्ना विज्जूअग्गीयदीवउदहीय । दिसिपवणथणियणामा दसहाएएभवण वासी । चूडामणिमउडरयणभूसणा फणिगरुलवइरपुण्णकलसकिउप्फेसा सीहमगरमयकअस्सवरवद्धमाणनि

उपपाताभावेन च समुद्घाताभावेन च स्वस्थानाभावेन च असंख्यातमेभाग। तत्थणं बहवे भवणवासी देवा परिवसंति त । तिवां यथा भवनपती देवता रहे तदनानाम कथा। असुरानागसुवन्ना विज्जूअग्गीदीवउदहिय। दिसपवणथणियनामा दसहाएएभवणवासी॥ १ ॥ असुरकुमार नागकुमार स वर्ण विद्युत अग्नि द्वीप उदधि दिशि पवन स्तनित ए नामके दशप्रकारे भवनपती॥ १ ॥ चूडामणिमउडरयण भूषणा नागफण गरुड वज्र पूर्ण कलस किउप्फेसा सीह हयवरया गयअंकमगर वद्धमाण निज्जुत्तचित्तचिंधगया सरूवा महड्ढिया महज्जुइया महायसा महाबला महाणुभागा महासुक्खा । चू डामणि रत्नचिह्न मुकुटे शोभे असुरकुमारना चिह्न नागकुमारना सर्प गरुड सुवर्णकुमारना वज्र कलश सिंह अश्व गज मगर शरावसंपुट १ ए चिह्नस

तथा सीदरपवरगता: प्रभूता पर्याङ्कूपधेषु यपाते सीदप्रवरआक्रा: तथा मकरवक्षमानिक नियुक्ते नूपवेषु नियोजिते चित्रे प्रावपन्नेने चिह्ने गत स्थिते यपाते मकरवक्षमाननियुक्तचित्रचिह्नधरा सतः पूर्वपदेद्वद्व: समास: पुन: सर्वं कथयन्ता इत्याह-सुरूपा शोभन रूप येषाते तथा अत्यन्त कमनीयरूपास्त्वथ। तथामहर्द्धिकाइति ॥ महती ऋद्धि भवनपरिवारादिका यपास महर्द्धिका , तथा महती द्युति: शरीरङ्गता आभरणगता च यपामिति महाद्युतय: तथा महत् यस शारीरमावापपाते महायसा:' तथामहायश ख्याति: येपाते महायशस , महान् अनुभागा: सामर्थ्यं शापा नुग्रहविषयं यपान्ते महानुभावा: तथा ॥ महासौख्याइति ॥ महाशुद्धा ईश्वर: इत्यास्यात प्रसिद्धिर्येपाते महेशाख्या अथवा ईशान मीशी भावे अतसस्य च ययमित्यय इत्यपर्यैस्यिवनात, तत इयमे ईपमा स्वमात्मानि अन्तर्भूतस्यर्थतया ख्यापयन्तीति ईशाख्या, महान्त य स ईशाख्या च मह शाख्या: क्वचिन्महासौख्याइतिपाठ: तत्र महत्सौख्य प्रभूतसद्वेद्योदयवशायेपान्त महासौख्या अन्यपठन्ति महासक्ता इति ॥ तथापमन्सरखारो महा याता: इय चात्रपूर्वसूरिसम्भिता व्युत्पत्ति। आशुगमनाद् श्वो मन: अथवि इन्द्रियाणि स्वविषयव्यापकस्वात् एव च अथाथि चेत्यश्चाथाणि महान्ति अश्वाथाणि यपान्ते महाश्वाथा: ॥ हारविराइयवत्था इति ॥ हारै विराजितं वक्षो यपाते हारविराजितवक्षस: ॥ कडगतुडियथंभियभुया इति ॥ कटकानि कलाचिकाभरणानि त्रुटितानि बाहुरक्षकास्तै: स्तम्भिता इव स्तम्भितौ भुजौ यपान्ते कटकत्रुटितस्तम्भितभुजा:, तथा अङ्गदानि बाहुशीर्षाभरणविशे पकरूपाणि कुण्डल कर्णाभरणविशेपरूप तथा मृष्टौ मृष्टी कृतौ मसृणी कपोलौ ये तानि मृष्टगण्डानि कर्णपीठानि कर्णाभरणविशेपरूपाणि धारयन्ती

ज्जुत्तचित्तखचियगता सुरुवा महिड्ढिया महज्जुतिया महायसा महाबला महाणुभावा महासोक्खा हारविराइ यवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगदकुंडलमट्टगंडतलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउ

जित रूपवन्त महर्द्धिवन्त महद्युतिवन्त महायशवन्त महाबलो महाभाग्यवन्त महासुखी। हारविराजवक्षा कडगतुडियथंभियभुया। हारौकरी विराज मानहोवा वक्षा थका वक्षारवा विषे बध समक्षे भुजा। अंगदकुंडलमट्टतलक पीठधारी विचित्त हस्ताभरणा। चमक कुण्डल कर्णाभरण धारा

स्येव लीला ॥ अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डकर्णपीठधारिणः तथा विचित्राणि नानारूपाणि हस्ताभरणानि येषांते विचित्रहस्ताभरणाः तथा ॥ विचित्रमालाम
लिमुकुटा विचित्रा माला कुसुमस्रक् मौलौ मस्तके मुकुटं च येषांते विचित्रमालामौलिमुकुटाः तथा कल्याणकं प्रवरं वस्त्रं परिहितं यैस्ते
कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः मुक्तादिदवर्णाभिशिष्टाः कल्याणं पावकपरम्परया तथा कल्याणकानि कल्याणकारि प्रवराणि माल्यपुष्पदामानि अनुलेपनं तद्धर
न्तीति कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनधराः तथा भास्वरा दीप्यमाना बोन्दिः शरीरं येषांते भास्वरबोन्दयः तथा प्रलम्बा इति प्रलम्बा या वनमाला ता
धरन्तीति प्रलम्बवनमालाधराः ॥ दिव्वेणं वण्णेणंति ॥ प्रतिविषयम पत्र्य संहननेन संहनने न तु अस्थिसंहननेन देवानां संहननाऽसम्भवात् संहनन
हि अस्थिरचनात्मकं न च देवानामस्थीनि इति तथा चोक्तं जीवाभिगमे-देवा असंघयणी जम्हा तेसिं नवट्ठी नेव सिरा इत्यादि ॥ दिव्वाए इड्ढीए इति
दिव्यया प्रधानया ऋद्ध्या परिवारादिकया दिव्यया युत्या इष्टार्थसंयोगलक्षणया, जुइ अभिगमने इति वचनात् दिव्यया प्रभया प्रभावाद्गतया
दिव्यया छायया समुदायशोभया दिव्यया अर्चिषा शरीरस्थरत्नादितेजोज्वालया दिव्येन तेजसा शरीरप्रभवेन दिव्यया वा लेश्यया देहवर्णसुन्दरतया

लिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण
वण्णेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेणं दिव्वेण संघयणेण दिव्वेण संठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए
दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेस्साए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा
पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ भवणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तायत्तीसाणं

मना विचित्र हाथना घरेणा । विचित्र माला मस्तके मुकुट छे । कल्याणकारी प्रवर वस्त्र पहिर्या । विचित्र माला मस्तके कल्याणकारी मालानुलेपन धर
र्या छे । कल्याणकारी प्रवर माला विलेपनधरा भासुरबोंदी प्रलंबवनमालाधरा । मनोज्ञ आकार विलेपन कोमल छे देदीप्यमान शरीरे शोभायमान धरी छे । दि
व्य वर्णे दिव्य गंधे दिव्य फासे दिव्य संघयणे दिव्य संठाणे दिव्याए इड्ढीए । दिव्य विमान दिव्य दिव्य विमान विमल दिव्यरूपा

दशविधा षष्ठीतपसः ॥ प्रकाशवंतपनासितमाधाइति ॥ षोभमाना सी भवनवासिमो देवाकमिति वाक्यालङ्कारे तत्र स्वस्यामे साव २ मिति स्वेषा २ भासीयामामित्यर्थ ॥ भाहवपोरवद्यमित्यादि ॥ पधिपतः कम पाधिपत्य रक्षाइत्यर्थः सा च रक्षा सामान्यना रक्षकेणेव क्रियते ततभाए-पुरस्यपतिः पुरपतिः तस्यकम पौरपत्य सर्वेषामा स्त्रीयामामग्रेसरत्वमितिभावः तत्राग्रसरत्व नायकत्वमतरेणापित्वनायकनियुक्त तथाविधगृहपितकसामान्यपु रुषस्येव भवति ततोमायकत्वप्रतिपत्त्यथमाह-स्वामित्व स्वमस्यास्तीतिस्वामी तद्भाव स्वामित्वनायकत्वमित्यथः, तदपि च नायकस्य कस्यचि स्वोप कस्य भक्तरखापि भवति यथा हरिवाधिपति हरिवस्य तत आह-भवत्व भतएव भहत्तरकस्य कस्यचिदा घायिकलस्यापि सद्यपि भवति यथाकस्य चिद्वणिजः स्वदासीजनमात तत आह-भाज्ञाईसरसेणावच्चं ॥ भाज्ञया ईश्वरः भाज्ञेश्वरः सेमायाः पति समापरसि भाज्ञेश्वर षा सी सेनापति घ भा ज्ञेश्वरसेनापति तस्य कम भाज्ञेश्वरसेनापत्यस्वसैन्य प्रत्यद्भुत भाज्ञाप्रधान्यमिति भाव, कारयतोम्यैर्नियुक्तकै पुरुषै पालयन्तः स्वयमथ महत्तारवेणे

साण २ लोगपालाण साण २ अग्गमहिसीण साण २ परियाण साण २ अणीयाण साण २ अणियाहिवईण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिंच बहूण भवणवासीण देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सा मित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयततीतलतालतुडि

४ न दिव्य छवि। दिव्याए वरद दिव्याए पमाए दिव्याए छायाए दिव्याए भयोए दिव्येव तेयव दिव्याए लम्याए। दिव्यद्युति दिव्यप्रभा दिव्यछाया दिव्य पचित दिव्यतेज दिव्यसमा। दसदिसाभो उज्जोयमाणा पभासेमाणा। दशदिशिनेविषे उद्योत करता। तेष तत्थ साणं २ भवणवासमयसहस्साण। त तिहाँ पातामा भवन लाखेकरी। साण सामाणियसाहस्सीण साण २ तायत्तीसगाण। भापणा सामानिक देवेकरी भापणा भायत्रिंशकरी। साण २ लोगपालाण साण २ भग्गमहिसीण परिसाण साण भणियाण। भापणे लोकपालेकरी भाप भापणा भग्रमहिषीयेकरी भापणा कटकेकरी। साण २ भणियाहिवईणं साणं २ भायरक्खदेवसाहस्सीणं भन्नेसिंच बहूण भवणवासीणं देवाणय देवीणय। भाप भापणी कटकनायकोये करी भापणा भात्मर

ति योगः ॥ ॥ घणमुइंग ॥ आख्यानकप्रतिबद्धानि यदिवा अहतानि अव्याहतानि नित्यानुबन्धीनीति भावः, ये नाट्यगीते नाट्य गीतं गीतं गानं यानि च वादितानि तंत्रीतलतालत्रुटितानि तत्र तन्त्री वीणा तलौ हस्ततलौ ताल कंसिका त्रुटितानि वादित्राणि तथा यश्च घनमृदङ्गः पटुना पुरुषेण प्रवादि तः तत्र घनमृदङ्गो नाम घनसमानध्वनिर्योऽसौ मृदङ्गस्तत एतेषां द्वन्द्वस्तेषां रवेण दिव्यान् दिवि भवान् प्रधानानिति भावः, भोगार्हा भोगाः शब्दादयो

घणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति । कहिं णं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिं णं भंते ! असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं असुरकुमाराणं देवाणं चोवट्ठिं भवणावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं, ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा अहे पुक्खरकण्णियासंठा

यह देवेश्वरो असुरा भवनवासी देव देवताओं का अधिपति । आहेवच्च पारवच्च स्वामित्तं महत्तं भवत्तरमत्त । रखवालपनो पुरोगामिपनो आज्ञा पनो ऐश्वर्यपना सेनाईपना । आज्ञाईश्वरसेनापत्य करमाणा पालेमाणा महयाहय नट्टगीय वाईयरवेण ततो तलताल तुडिय घणमुइंग पडुप्पवाइयरवे ण दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति । आख्यानयुक्ता निरंतरावृत्ता मोटावाला बजावता नृत्य गीत वादित्र तन्त्री तलताल त्रुटित या मृदंग मोटा शब्दे ते देवता दिव्य देवताओं भोग भोगवता विचरे है । कहां भगवन् असुरकुमार देवों के पर्याप्ता पर्याप्ता ठाणा है । किहां भगवन् असुरकुमार देवताओं पर्याप्ता अपर्याप्ता ठाम कह्या । कहां भगवन् असुरकुमार देवता परिवसति । किहां हे भगवन् असुरकुमार देवता वसे है । गोयमा रत्नप्रभा पृथ्वी असीउत्तर जोयणसयसहस्सबाहल्लाए ऊपर जोयणसहस्स अवगाहित्ता । इसीतरह एक लाख अस्सी हजार योजन जाड पणे तेहमांहि ऊपर एक हजार योजन मूके । हेठा एक हजार योजन वर्जिता मज्झे अठ्ठत्तरे जोयणसयसहस्से । हेठलो एक हजार योजन वर्जी के

भोगभोगा सास् मुञ्जमाना विहरन्त्या सते असुरकुमारसूत्रे वासा कायवयौ ॥ लोहितमसुविम्बोष्ठा ॥ लोहिताधरवस् विम्बीफलवत्ओष्ठौ येषान्ते लोहिताधविम्बोष्ठा भारत्वोष्ठा इति भावः अवसा पुष्पवरसामभ्योत् कुम्भकलिका इव दन्ता यधाते भवलपुष्पदन्ताः असिता कृष्णा कशा यधाल

णसंठिया किन्नतरविउलगम्भीरखायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जतसयग्घिमुस लमुसंढिपरिवारिया अउज्झा सदा सया वलया सदा गुत्ता अडयाला कोठगरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरामरडंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचगुलितला उव चियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कडज्झंतधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरा

पावे यवसाम यड्डतरवारयामम । एमच असुरकुमाराणं देवाण चउसट्ठिभववावाससयसहस्सा हवंतिमक्खाय । इहां असुरकुमारना ६४ लक्षिण २ उत्तर ६४ भवनसह्या हुवे भमवते कह्या । तेवं भवणावाहिवड़ा अतो समचउरसा । ते भवन बाहिर बाटलाछे मांहिला चोखूणाछे । अंतेपुक्खरकण्णि या संठाणसंठिया उक्किंनतर विउलगंभीर खायफलिहा पागारट्टालय कवाडतोरण पडिदुवारदेसभागा । हेठे कमलनो कर्णिकाने सस्थाने संस्थित उकोर किवे पिहलो गंभीर पिटकमयो प्राकारउपरि किवाड तोरण बारमांठा तेहना मांभादार कला देशभाग । जंतसयग्घि मसलमसंढि परियाम रिया पाषाणसदा सदासदा गुत्ता । मूसलप्रहरणादिके वेढितछे शत्रुनी देखवा समर्थनथी सदाकोपताछे सदा गुप्तछे । अडयालकुट्टगरईया । ४८ दे शोमाधारे ययंसा बखन । अडयालवयसवमाला खेमा सिवा किंकरा मरदंडोवरक्खिया । ४८ भेदकरो फूलमाला कल्याणकारी उपद्रवविना किंकरभूत जे देवता तेणेराख्याछे जे भुवन । लाउल्लोइय महियागोसीस सरस रत्तचंदन दद्दरदिन्न पंचांगुलि तला उवचियचंदनकलसा । लींप्याछे भवनादिकमांयरे मांहि बाहिर चंदन रक्तचंदनादिकेँ दद्दरलोपाछे पंचांगुलिना थापा कर्याचित थाप्याछे चन्दनकलस । चंदणघडसुकय तोरणपडिदुवार देसभागा । च

कल्पितकेशाः कृष्णकेशा या सीमां वैक्रिया पृथ्व्याः न स्वाभाविका वैक्रियशरीरत्वात् वामैककुण्डलधरा एककर्णावसक्तकुण्डलधारिणः तथा आर्द्र चन्दनेन सरसचन्दनेनानुलिप्तं गात्रं येषां ते आर्द्रचन्दनानुलिप्तगात्राः तथा ईषत् मनाक् शिलीन्ध्रपुष्पप्रकाशानि शिलीन्ध्रपुष्पसदृशवर्णानि ईषद्रक्तानि त्वर्थः असंक्लिष्टानि अत्यन्तसुखजनकतया मनागपि संक्लेशानुत्पादकानि सूक्ष्माणि मृदुलपुद्गलसम्भूतानि वस्त्राणि, वस्त्राणि प्रवराणि यत्र सूत्र विभक्तिलोपः

मा सुगधवरगधिया गंधवट्टिभूया अच्छरगणसंघसंविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपन्नदिया सव्वरयणामया अच्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा ससिरिया सउज्जोया पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थ णं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखिज्जइभागे समुग्घाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे असुरकुमारा देवा परिवसंति काला लोहियक्खा बिंबोट्ठा धवलपुप्फदंता असियकेसा वामेयकुंडलधरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवरपरिहिया वयं च पढमं समइक्कंता बिइयं च असंपत्ता भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा तलभंगयतुडियवरभूसणनिम्मलमणिरयणमंडियभुया दसमुद्दामंडियग्गहत्था चूडामणिविचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढीया महज्जुइया महायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडयतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंड

[illegible] रूपा गामनकोधाछे तारचमा प्रतिहार स्वभावछे। पासत्तासत्तविउलवट्टवग्घारिय मल्लदामकलावा पंचवण्णसरसमरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयार कलिय । जिहां पासत्तासत्तभूमि पचत्र ऊपर बांध्या विपुल विस्तीर्ण प्रलम्बित माल्य दामना कलापसमूह जिहां पंचवर्ण सरस सुरभिगंध छे जेहनो पभिमधनो कारसहित । कालागुरुपवरकुंदुरुक्क तुरुक्क धूवमघमघंत गंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया । कृष्णागर प्रधानकुन्द वेरवारसे [illegible]

माऊतया त्यरिहितापरिहितवत्त तथा वय प्रथम कुमारस्यसवम तिकाला सात्ययतथातेन इति जाय हितीयस्य मध्यमलक्षण वयोऽसम्प्रासा
एतद्वयवती करोति जन्न यासिप्रसस्य प्रन्न यौवन वत्तमाना। ॥ तसमकुयतुक्रियवरजूमवनिमसमविरयसमक्रियगुयाइति ॥ तलनकुका याहानरणविशेषा
सुहितानि वाउुरत्तिका यम्यानि च यानि वराणि भूपवाणि वाहानरवाणि यपु य निमसा मयय यन्नकासाथा यानि रयानि इन्द्रनालादानि
ते भविती भुजी हसाग्री यपात तथा तथा दसजिमुणाजिमक्तिती मुजी थयहसी यपात दसमुद्दामपितताथहसा ॥ चूठामयिचित्तचिवगपाइति ॥

यलक्खपीतधारी यिचित्तहत्याजरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवर
मल्लाणुलेवणधरा जासरयोंदी पलम्बवनमालधरा दिव्वेण वण्णेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण संघय
णेण दिव्वेण संठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए अच्चीए दिव्वेण तेएण
दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ भवणावाससयसहस्साणं साणं २
सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तायत्तीसाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ परिसाणं
साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं भवणवा
सीणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पा

गो नवमवायमाण समन्त प्रधानमन्न थत्नी यतिगत्थनी वाटसहित पप्पुराणा। गचसचसनिगचा दिव्यतुडियमवसपवादा सध्वरवचमया। गवममन
लिचकरी भवित मरइादि प्रभमन्द यामसना सव रत्नमयके। पद्मास्मा वड्ढा वड्ढा मह्रा मोरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडछाया सप्पभा सम्मिरिया।
पाद्याक पत्राके मठाराके निरथ निमस निप्पंकम्प निक्कंटक प्रभासहित। मउन्नाया पासाइया दरसणिज्ञा अभिरूवा पडिरूवा। उद्यानसहित दश
नीक अभिरूप प्रतिरूप। एमथ चमरकुमाराथ देवाथ पत्तत्ता २ थं ठाणा य। इहांठामि चमुरकुमार इरवा वसेछे पयीसा चपयीसाणा ठासवा।

पूळामबिनामर्क चित्रमङ्गा विन्नगत त स्थित येषांते चूळामविविचित्रगताः चमरयसिसामान्यमूपे कालाः कामवर्षाः एतदेयो पमानसः प्रतिपाद पति महानीलमरिसा महानील यरिकमपिवस्तु काल लोके प्रसिद्ध तन सदृशा एतदेव व्याचष्ट मीलगुटिका नील्यागुटिका गवल साहिप श्रृग मत सीकुसुम प्रतीतं तपामिव प्रकाशः प्रतिभा यपांत मीलगुटिकागवलातसीकुमप्रकाशा तथा विकसितशतपत्रमिवनिमले इषद्श्वविभागन मनाक् सिते रक्त ताम्र च नयन येषां त विकसितशतपत्रनिमसपत्सितरक्तताम्रनयनाः गरुळस्यवा यता दीर्घो ऋज्वी अकुटिला तुङ्गा उन्नता नासा नासिका यपात गरुळायतदीपतुङ्गनासाः तथा उपचित त लचित यत् शिला प्रवाल विद्रुमरत्न यच विंबफल विम्बाः सरक्तं फल तत्संनिभोधरोष्ठी येषाते तथा पा

लेमाणा महयाहयनहगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमा णा विहरंति, चमरवलिणो इत्थ दुवे असुरकुमारिंदा असुरकुमाररायाणो परिवसंति काला महानीलस रिसा नीलगुलियगवलअयसिकुसुमप्पगासा वियसियसयवत्तनिम्मलसीसियरत्ततंबनयणा गरुलाययउज्जुतुंग नासा उयचियसिलप्पवालबिंबफलसन्निहा हरोठा पंडुरससिसगलविमलनिम्मलदहिघणसंखगोखीरकुंददं गरयमुणालिया धवलदंतसेढी हुयवहणिद्धंतधोयतत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा अंजणघणकसिणरुयगरमणि

ववत्रायर्च ला च ममगधावच ला च सठावचला च। ऊपचशालावने च ममहातसा च स्थ्यानमो च०। तत्पच इत्थे चसुरकमारेंद्रा परिवसंति। तिर्हा पथो चसुरकमारदवता वसन्ते। कामाधाप्रियलाविच इा। कालेवच रातामच विम्बफम समशाठ। धवलपुष्पदंता चसिनकेसा वा मवधाण्न धरा पववरवायमिलगता। धवमधूच समदात वाकावन वावेशान वन्यम धाराशे चाद्रमरमचन्दमे सोम्याहे गाच। ईसिसिसिच पच्छप यामार चमविनिवार नवमार वयार पवरपरिहेया। विगारेवराता मिनिंद्रनाफूलसरोपा वसविष्ट चतिसमवारो मूमममेवरो प्रधाम पहिरा के तथा। ययच पढमसमरवता निरवयमसपता मदुसभावे वडमाधा। यम प्रथम मुमारत्नच चारवमच ममामवका भद्रयावने वत्तमानदमा।

माऊतया स्परिहितापरिहितवत्ता तथा वय प्रथम कुमारत्वलत्तम तिक्काला सत्ययतवात्तन इति न्याय द्वितीयम्ब मध्यमलत्तम वयोऽसम्प्राप्ता एतद्वव्यस्तो करोति जन्न यसिप्रसस्य मन्न यौवम यसमामा ॥ तलनद्भ्रूयतुक्रियमरनूसयानिम्मलमविरयसमक्रियतुयाइति ॥ तसजन्नुका वाह्लानरणायिशपा सुटिताानि पाउरत्विका छम्यानि च यानि वरावि नूपयानि वाह्वानरवानि यपु ये निमसा मधय दम्भ्रकालाद्या यानि रवानि इन्द्रमालादीनि ते मवितौ नुजौ इसापौ मपात तथा तथा दशप्रिमुद्राविमेंछितौ मुसौ मपइसौ मपास दशमुद्रामविहतापइसा ॥ चूडामविविवितपिमगयाइति ॥

यलकृणपीढधारी विचित्तहत्याभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवर मल्लाणुलेवणधरा भासरबोंदी पलंबवनमालधरा दिव्वेण वन्नेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण संघय णेण दिव्वेण संठाणेण दिव्वाए इड्डीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए अच्चीए दिव्वेण एएण दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ भवणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तायत्तीसाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं भवणवा सीणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पा

रौ मपमपाममाम मगम्ब प्रयामसम्ब सहमो यतिगमधमी वाटसहित मप्पुरामा । मचसघसविगचा दिव्यसुरियमहसपम्परया सम्परयसमसा । गवसमूड़ तिचवरो मवित मरझादि प्रभमन्द सोमसता सव रत्नमयवे । मचामपा बझा घझा मझा मोरया निप्पसा मिप्पका निक्कसङ्कायास प्पमा समिरिया । पाचाल सवाइवे मठाराववे निरम निमल निप्पकम्प निकपकड़ प्रमासवित । सवत्नाया पामाइया उरसविज्जा पभिरूवा पडिरूवा । ब्बातसहित दश मौल पमिरूप प्रतिरूप । एवम चमरचमारावं देशाव पत्तम्ता २ वं ठाया प । इत्थोठामि पमुरकुमार सुरता मसेवे पर्यासा अपर्यासाना ठामवद्या ।

पाता: प्राकृतत्वात् तथा हुतवहेन वैश्वानरेण निध्मातं सत् यद् जायते धौतं निर्मलं तप्तमुत्तमं तपनीयमिव रक्तं सुवर्णं तद्वत् रक्तानि हस्तपादतलानि तालुजिह्वे च यथा ते हुतवहनिध्मातधौततप्ततपनीयरक्ततलतालुजिह्वाः तथा अञ्जनं सौवीराञ्जनं घनः प्रावृट्कालभावी मेघ स्तद्वत् रुचकवत् रुचकरत्नवत् रमणीयाः स्निग्धा च कृष्णा येषां ते अञ्जनघनकृष्णरुचकरमणीयस्निग्धकेशाः ॥ तिसुविसोगस्स असरणअइगाने इति ॥ स्वस्थानो

सहाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए भासाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए पहाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण एएण दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा ते णं तत्थ साणं २ भवणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तायत्तीसाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं भवणवासीणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइं भोगभोगाइं भु

दिव्यया प्रभया दिव्ययाच्छायया दिव्यया अर्चिषा दिव्येन तेजसा दिव्यया लेश्यया । देवतानोच्छादि देवतानां द्युति एकत्वेनोपमासे स्वप्नकाशे दिव्यविरचे दिव्यतेजे दिव्यलश्याये । दशदिशाओ उद्योतयमाना प्रभासयमाना । दशदिशा उद्योतकरता तिशी भासतायका । ते णं तत्र साणं २ भवणाणं वासाणं सयसहस्साणं साणं २ सामानिकसाहस्सीणं साणं २ तायत्तीसाणं २ साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं । ते विशी आप आपणे भवने आपणा सामानिक सहस्त्रेकरी आप आपणा तायत्रिंशकेकरी आप आपणा लोकपालेकरी आप आपणा अगुमहिषीयेकरी । साणं २ परिसाणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणीयाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं भवणवासीणं देवाणय देवीणय । आप आपणे अणीकाधिपेकरी आपणा २ परषदाकरी आपणे अणीकाधिपेकरी आपणा आपणा आत्मरक्षकेकरी अनेरा भवनवासी देवता देवांगनाना । आहेवच्चं पोरे

मदुर मनु सन्ध्याकालसमाध्यारक्त प्रतिसवस्त्र चतुरवस्त्र तदपि च कथमूतमित्याह–विमलं रजसा रहित कलङ्कविकल वा तथा निर्मलो यो दधिघनस
ङ्को गोक्षीर यानि कुन्दानि कुन्दकुसुमानि दकरजः पानीयकणा। मृणालिका च तद्वत् धवला दन्तश्रेणि यैपाते तथा विमलशङ्खस्य विशेष्या स्पर्शि

ज्ञानिठकेसा यामेयकुण्डलधरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं व
त्थाइं पवरपरिहिया वय च पढम समइक्कंता बिइयं असंपत्ता भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा तलभंगयतुडियप
वरभूसणनिम्मलमणिरयणमंडियभुया दसमुद्दामंडियग्गहत्था चूडामणिचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढीया
महज्जुया महायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडयतुडियथंभियभुया अंगदकुंड
लमट्ठगंडतलकन्नपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्ला
णगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण वन्नेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण

तानभङ्गतुडितवरभूषण निर्मलमणि रत्नमण्डित भुजादशमुद्रामण्डितमहस्ता। तानभम सावत् आभरणविशेष भूषण निर्मल मणिरत्नेः करो मण्डित
भुज येषामो दश मुद्रको येषामेषाम। चूडामणि विचित्तचिह्नगता सुरूपा महद्धिका महद्युतिया महायशा महाबला महानुभावा महासौख्या। चूडाम
णिनामे चिह्नसहित ... महर्द्धिक महाद्युतिक महायशस्क महाबलवन्त महानुभाव महासुखो। हारविराजमवक्षा कटकत्रुटितस्तम्भितभुजा। हा
रेणरो विराजमानवक्षा ... तिर्वे ... भुज। अङ्गदकुण्डल गण्डतल कर्णपीठधारी। अंगद कुण्डलकाल कर्णाभरण पीतधराश्च।
विचित्तहस्ताभरणा विचित्रमालामौलि ... कल्याणकप्रवर वस्त्रपरिहिता। विचित्रमाभरण विचित्रमालाश्चे मस्तक ... पहिरया के।
कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनधरा भासुरबोन्दी प्रलम्बवनमालाधरा। ... देदीप्यशरीरे मालाधरता। दिव्यवर्णेन दिव्येन
गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संहननेन दिव्यसंस्थानेन। दिव्यवर्णे दिव्यगन्धकरी दिव्यस्पर्शकरी दिव्यसंहनने दिव्यसंस्थाने। दिव्यऋद्धीय दिव्यद्युतिए

याता प्राकृतत्वात् तथा हुतवहन वैश्वानरेण निर्ध्मात सत् यद् जायते धौत निर्मल समुत्तप्त तपनीयमा रक्त सुवर्ण तद्वत् रक्तानि हस्तपादत लानि तालुजिह्वे च यथा ते हुतवहनिर्ध्मातधौततप्ततपनीयरक्ततलतालुजिह्वाः तथा अञ्जन सौवीराञ्जनं घनः प्रावृट्कालसमाली भप सादृत् कज्जल वकवत् रुचकरमवत् रमणीयाः स्निग्धा य कचा येषा ते अञ्जनघनकज्जलरुचकरमणीयस्निग्धकेशाः ॥ तिसुविसोगस्स अमत्तेज्ज्वलागे इति ॥ स्वस्थानो

सठाणेण दिव्वाए इड्डीए दिव्वाए जुइए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेण तत्थ साण २ भवणावाससयसहस्साण साण २ सामाणियसाहस्सीण साण २ तायत्तीसाण साण २ लोगपालाण साण २ अग्गमहिसीण साण २ परिसाण साण २ अणियाण साण २ अणियाहिवईण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण भवणवासीण देवाणय देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त आणाईसरसेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे महयाहयनट्टगीयवाइयततीतलतुडियघणमुइगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ भु

दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेसाए। देवतामोत्सव देवताओ द्युति दवतानोप्रभासे दिव्यछायाये दिव्यवि रचे दिव्यतेजे दिव्यलेश्याये। दसदिसाओ उद्योतमाना प्रभासमाना। दशदिशा उद्योतकरता तिशी प्रभासतावका। तेण तत्र साण २ भवनावासा सहस्राणां साण २ सामानिकसाहस्रीण साण २ तायत्रीसगाण २ साण २ लोकपालाण साणं २ अग्रमहिषीण। ते तिहां आप आपणे भवने आप णे आप आपणे सामानिक सहस्रनी आप आपणा त्रायत्रिंशकोंनी आप आपणा लोकपालनी आप आपणा अग्रमहिषीनी। साणं २ परिषा साणं २ परिसाणं साणं २ अनीकाधिपति साणं २ आत्मरक्षदेवसहस्राण अन्योसिचबहुण भवनवासीण देवाणय देवीणय। आप आपणे पर्षदा अधिपतिनी आपणो २ परषदानी आपणो अनीकाधिपतिनी आपणा आपणा आत्मरक्षकनी अनेरा भवनवासी देवता देवांगना। आहेवच्च पारे

पयातसमहुातकपपु त्रिद्यपि स्थानेषु लोकस्य सङ्ख्येयतमे भागे वक्ष्यामि ॥ चोवठीमसुराणमि त्यादि ॥ गाथाद्वय ॥ सामान्यतो ऽसुरकुमारादीना भव नसङ्ख्याप्रतिपादक सुगम ॥ चोत्तीसाचीयालाइत्यादि ॥ गाथा दाक्षिणात्यानाम सुरकुमारादीना भवनसङ्ख्याविधायिका तस्या व्याख्या-दक्षिणतो ऽसुरकु माराणा भवनानि चतुस्त्रिंशत्सहस्राणि नागकुमाराणा चतुश्चत्वारिंशत् सुवर्णकुमाराणाम ष्टात्रिंशत् वायुकुमाराणा पञ्चाशत द्वीपदिगुदधिवि द्युत्स्तनिताग्निकुमाराणा प्रत्येक चत्वारिंशत्शतसहस्राणि भवनानामिति ॥ तीसा चत्तालीसा इत्यादि ॥ उत्तरत उत्तरस्यां दिशि असुरकुमाराणा त्र

जेमाणा विहरति, कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण असुरकुमारदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता ? कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण असुरकुमारा देवा परिवसति ? गो० ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमी सेरयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अठहत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिल्लाण असुरकुमाराण देवाण देवी णय चोत्तीस भवणावाससयसहस्सा हवतीति मक्खाय तेण भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरसा सोचेव वण्णओ जाव पडिरूवा एत्थण दाहिणिल्लाण असुरकुमारदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता। तिसुवि लोगस्स असखेज्जइभागे, तत्थण बहवे दाहिणिल्ला असुरकुमारदेवा देवीओ परिवसति काला लोहियक्खा तहेव जाव

वर्ष मानित भक्ति मलयरमत भाचारवर सेवाव चारेमावे पालेमावे । पधिपतिपनो पौराधिपपना सामीपनो पायकपनों माटापनों पाला पालता पलावता करता । मववा वमनइमोपकारेय सतोतक ताडतुडिय घवमर ग पञ्चवारय रवेव दिव्याइ भागभोगाइ भुञ्जमाणाविहरति । माटा यम्ना मृग वाजिव तथो ताल तालाटा वटित घनमर्दव पडवमय्य तिवेकरी देवताना भोग भागवता विचरे चमर बलिवो इत्यर्थे चमरकुमारमवा वापरिवसति । चमरेन्द्र वसेन्द्रनामेवे चमुरकुमारना बीव वसेवे । चाचामचामोवपरिसा मोवगुसिसमवन पयसिगुमसपगासा । चाचेव महामोव

भुंजेमाणे विहरति, एथ सहत्थ भाणियव्वं भवणआसीण, चमरे इत्थ असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसइ काले महानीलसरिस जाव पभासमाणे सेण तत्थ चउत्तीसाए भवणावाससयसहस्साण चउसठीए सामाणियसाहस्सीण तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्ह लोगपालाण पचण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्हं अणियाहिवइण चउण्ह च चउसठीण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण दाहिणिल्लाण देवाण देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च जाव विहरति। कहिण भंते ! उत्तरिल्लाण असुरकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । कहिण भंते ! उत्तरिल्ला असुरकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर

वर्ण बहुल सरीखा भोगवतोभीपरे नाम विरक्तपणभोपरे निमल। विवसियमधल निष्पलसिसियततमनमषा। महानिमल रातावे नेष लहना। गुबधारहसव्यसनामा वर्णवियनिमव्यकाशविवफल संविशावडा। गुवनापरे बोवानाव कहमा विशसित विवपस समभाठ। पचरससिसगसविसल निष्पमसंपनावीरवंदनरसमषालिव ववषदतसठीहवनहनिषतधायततवविव्य वरतेमततापवोहा। गस गाषोर नम्ह पावोनाजव षसहमा भोग पा ववमाहातमो यथा धोत निमल रहवा राते सुवनोपर हाव पन तसा वोभ निवरो तथा। पंजवषव वसिपववगरमविव्य निकोसा। षघन मासारोजनादिवे बीधाछे नासा वोलवायग। वामेवक हकधरा परपन्दापसिपाहसिसिसिध पुप्पपयासार। वामेवानि वन्हस पाकुवन्हने सोप्याछे ग प तथा सिगारेव पुप्पवप लहवा। मसविसिहार महमार वसार परपरहिवार। पसहिट मसवतमूषम वर्णवरो पहिरा छे। पयवपठमनसव ना धोरवतु पमपता भदूरे लमने वहमाषा। पहिसोभव कोठोने बोवो ववमवो पास्या सोवमवकमारपणे पास्याछे। तषभनसतुविव पवरभूमव निष्पव मवि रयवमढियगवा दसमुद्दिया माठवम्महत्ता। एतस तसभग वाहगा पामरव वोहरपामसुस मवरभूपव निमस मवितरनेवरा माथ छ भवदय

जोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थ णं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं तीसं भवणावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरंति, बली इत्थ वइरोयणिंदे वइरोयणराया परिवसइ, काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे से णं तत्थ तीसाए भवणा

मुक्तावलं गम्य केशाः । चूडामणि चित्तचिह्नगता महर्द्धिका महाद्युतिका महायशसा महाबला महानुभागा महासौख्या हारविराजितवक्षस्य तुटितस्तम्भितभुजा । अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणा विचित्रमालामौलि । मकुट कल्याणप्रवरवस्त्रपरिहिता कल्याणप्रवरमाल्यानुलेपनधरा भासुरबोन्दिप्रलम्बवनमालाधरा । दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संहननेन दिव्येन संस्थानेन । दिव्यया ऋद्ध्या दिव्यया द्युत्या दिव्यया प्रभया दिव्यया छायया दिव्यया अर्चिषा दिव्येन तेजसा दिव्यया लेश्यया । दिशो दश उद्योतयन्तः प्रभासयन्तः । ते तत्र स्वेषां २ भवनावाससहस्राणां स्वेषां २ सामानिकसहस्राणां स्वासां २ अग्रमहिषीणां स्वासां २ परिषदां स्वेषां २ अनीकानां स्वेषां २ अनीकाधिपतीनां स्वेषां २ आत्मरक्षकदेवसहस्राणां अन्येषां च बहूनां भवनवासिनां देवानां देवीनां च आधिपत्यं पौरपत्यं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वं आज्ञेश्वरसेनापत्यं कारयन्तः पालयन्तः

थाससयमहस्साण सठीए सामाणियसाहस्सीण तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्हं लोगपालाण पचण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवइण चउण्ह सठीण आयरक्खदेवसाहस्सीण अण्णेसि च बहूण उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराण देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरति । कहिण भंते ! नागकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, कहिण

नावउारिपर्वे । पचारमर सेवावस वारिमावे पाविमावे । पाम्रापमावतावणा वरावनावना । मस्यावय गह मोयमारय ततोतमताम्न घवमुचग पवुव्व वारयरवर्ब । माटागम्ब मटभीत वचित तवो ताप ममटा मलम माठा पवमम्द्दे । दिमार भागभोगार भममापा विहरति । दिव्य भाग भामवता विवाडे । वदिवमते दाविविमाव पमरवमारवेवावं पममता पममताप ठापा प । विशे वेमगवम् दविवदिगिमा पमरवमारवेवना पर्वामा प पयामाना ठामवणा । वदिवमते दाविविमा पमरवमारदवर परिवमति । विशे वेमगवम् दचिव पमरवमारदेवना वसेव । मासमा वप्रोवे २ भ दरच पवयमय दाविवर्ब । वयोतम वमदोप मवपववो तृचिवदिशे । दमोसेरयपप्पभावपठवीप पमोवतरआमवमहम्म माषमाप उबरि एगंआयव महरमं वरमाविता । प रतनप्रमा पविवोनेविपे पवमाव पमोवआरमाजन पावपथे ते वपर पवमवत्र पाजम वरमवोने । विष्ठापगमापवसवरस पविमता । मोव एवपाजम मवम् मवोने । मम्मे पइवतरे पायवसदरसे । विवे पठमतरवआर पवमापवावम । एत्थव दाविविमाप पसुरवमाराप देवावं वतीस भववाम पयसवम्माविवारतिमवाय । तिवी दचिवमा पमरवमारदेवनामा ३४ मायव निमुवम् भगवतेवत्रा । तेवं मवपापाविवहा पतो वचरमा मापेव वपवा वाव पविवपा । ते भवम मारिर वाटवाडे मांवि चोपं वावे । वर्बव सव पावमोपरे वांमगे पतिवप । एत्थव दाविवि मावं पमरवमारावं देवाव पममता पपमताव ठावा प । तिवी दविवमा पसरवमार देवताना पर्वामा पपमांमाना ठामवणा । तिमविसोवम्म प मम्मिमागे पं । तोम वामवावमे पसम्पातसँभामे वुवे । एत्यप वहवे दाविविवा पसुरकुमारदेन्देवोपा परिवसति । तिवी पवी पसुरकुमारमा दे

न्ते ! नागकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्से बाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जिऊण मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं नागकुमाराणं देवाणं पण्णत्तपज्जत्ताणं चुलसीइभवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउर

मता देवो वसई आया वाविरुता तहेव जाव भुजमाणा विहरति । वाकाबच रातीमार्गो तिमशोज यावत् भाग भागवता विचरेद । एएसि तहेव तावतिसा-नामपासाभवंति । एवमे तिमशोज बाहिसव देवता आवपाल । एवं समस्त भाविमव भवणवासीव । इयतरे सम पाणी परे वडिया भवणवासी ते । चमरे असुरकुमारिदे असुरकुमारराया परिवसर । चमरचंचा रायहाणीसें असुरकुमारगामे इन्द्र वसेव । वास महामीवसरिसे जाव पभासेमाणे । वासेवव महानोस मसुविजेव तेवगोममा करता विचरेव । सर्व वत्य चउतीसाए भवणवाससयसहस्सा चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सी णं । तिसी चउतीसहाव भवनवरी ६४ सामानिव देवतावेकरी । तायतीसाए तायत्तीसगाण चउण्ह लोगपालाण । मामणिस्य इन्दवरी ४ लाक पालकरी । पचण्हं अग्गमहिसीण सपरिवाराण । पांच अग्रमहिषीकरी परिवारसहित । तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवईण चउण्ह चउसट्ठीण आयरक्खदेवसाहस्सीण । तीन परिषदा करी ७ अनीकाकरी ७ अनिकाधिपति करी चोसठ चोगुणाकरता हाथसाथ छपनहजार आत्मरक्ष देवकरी । अन्नसिवअक्र दाहिणिल्लाण देवाण देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च जाव विहरति । अमरा सर्वा दक्षिणवासी देवता देवागना अधिपतिप णी पोराधिपणी यावत् विचरें । कहिणमंते उत्तरिल्लाण असुरकुमाराण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प । किहां हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारना पर्यासा पपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणं भंते उत्तरिला असुरकुमारादेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारदेवता वसेछे । गोयमा जंबुदीव र मदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण । हेगौतम जंबूद्वीपनाम द्वीप ते जंबूद्वीपने मध्यपर्वतको उत्तरे । इमीसेरयणप्पभाए पढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाह लाए । ए रत्नप्रभापृथिवीने एकलाख असीहजार योजन जाडपणे । उवरिं एगंजोयणसहस्सं ओगाहित्ता । ऊपर एकहजारयोजन अवगाहीने । हिट्ठाएग

सा जाय पडिरूया तत्थण नागकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइ भागे तत्थण बहवे नागकुमारादेवा परिवसंति , महिड्ढिया महज्जुइया सेस जहा ओहियाण जाव विहरंति धरणभूयाणंदा एत्थ दुवे नागकुमाररायाणो परिवसंति महिड्ढिया सेस जहा ओहियाण जाव विहरंति कहिण

यावत्प्रकार वर्णिता । बठे एकयोजनसहस्र मूकोने । मध्ये एकसत्तरीसहस्रसहस्रसे । तिषे एकलाख अठहत्तरसहस्र । एतले उत्तरिलाव असुर कुमाराव देवानं तीसभवनावाससयसहस्स भवंतितिमक्खाय । तिहां उत्तरना असरकुमारदेवतानां तीसलाख भुवन कह्याछे तीर्थंकरे कह्या । तेव भव न नारिंदा भवनवरसा सेसंवस्स धारिविवाव जाव विहरति । तेभवन बाहिर वाटलाछे मध्य चोखूंटाछे हेठ निम दक्षिणनोपरे यावत् विचरेछे । इत वलि वइरोयणिंद वइरोयणराया परिवसंति । इहां बलइन्द्रनाम राजयो राजा वसेछे । काले महानोलसरिसे जाव पभासेमाणा । वाङोग्य मण ोनीपरे यावत् आभतारवेछ । सेवं तत्थतीसाए भवणावाससयसहस्साण । ते तिहां तीसलाख भवनेकरी । सहीए सामानियसाहस्सीण तायत्तो साए तायत्तीसगाण । साठसहस्र सामानिकदेवेकरी वावलिसकदेवेकरी । चवरह लोगपालाणं पवण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण तिण्ह परिसाण । चार लोकपालेकरी पव अग्रमहिषीयेकरी परिवारेसहित तीन परषदायेंकरी । सत्तण्हं अणीयाण सत्तण्ह अणियाहिवईण । सात अनीकेकरी ७ अनी काधिपतिकरी । चउण्हं सट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिंचबहूण उत्तरिलाण असुरकुमाराण देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं आवमाणे विह रइ । साठचोगुणाकरतां दोलाख चालीसहजार देवता आत्मरक्षक चार हूआ बलो उत्तरदिशि असुरकुमारदेवता देवीनो अधिपतिपणो पोरपणो विचरे । कहिणं भंते नागकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प । किहां हेभगवन् नागकुमारदेवना पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठाम कह्या । कहिणंभ ते नागकुमारादेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् नागकुमारदेवता वसेछे । गोयमा इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए असीउत्तरे जोयणसयसहस्स बाहल्लाए । हेगौतम एरत्नप्रभापृथ्वीने एकलाख असीहजारयोजन जाडपणा । उपरि एगंजोयणसहस्सं ओगाहित्ता । उपर एकयोजन सहस्र अवगाही । हेठा

न्ते ! नागकुमारादेवा परियसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए छसीउत्तरजोयणसयसहस्से बाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं वज्जिऊण मज्झे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं चुलसीइभवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउर

भता देशो बमचे बासा बाशियक्षा तचेव जाव सुक्षमाथा विहरति। बाबावच रातोभाक्षी तिमकोब याबत् भाग भागवता विचरेह। पएसि तद्देव तावतिय-सामपासामवंति। पचने तिमकोल बाधिसव देवता बावपाल। पवं समक्ष माविसम भवणवासोवं। इवतरे सव पाक्षी परे कहिया भवनवासो ते। चमरे पसरकुमारेंदे पसुरकमारराया परिवसर। चमरचचा रायधानीयें पसुरकमारनामे इन्द्र वसेह। बाव मचाभोससरिसे बाव पभासेमाचे। बासवच मचानोव चतुवियेण तेजमोपमा करता विचरेह। मच तत्व चउतोसाए भववावासचहस्साब चउसट्ठाए सामानिवसाहस्सी वं। तिकां चउतोससाव मववकरो ६० सामानिक दववायेंकरो। तायत्तीसाए तायत्तोसमाव चउक्क लागपालाव। बायविमव दवेंकरो ४ बाक पालकरो। पचचव पम्ममहिसोव सपरिवाराव। पांच पग्गमहिषेंकरो परिवारसहित। तिच परिसाव सत्तम पवियाव सत्तम पवियाहिवइव चउव चउसट्ठोव पायरक्खदरसाहस्सोव। तीन परिषदा करी ० पनोकाकरो ० पनिवेंधिपति करी चोसठ चोगुवाकरता पायपाल पधमहजार पामर पर्व दवेंकरी। पवसिवबहूच पाहिविसाव देवायम देवोपव पाकवय पारेवव जाव विहरति। चमरा पवां पसिववासी दवता देवायमा पधिपतिप नी पीराधिपवी यावत् विचरे। कहिवभते उत्तरिकाव पसुरकमाराव पज्जता पज्जताप ठाषा प । किवा भेमगवन् उत्तरना पसुरकमारना पवीसा पवर्याप्ताना ठामकहा। कहिव भंते उत्तरिला पसुरकमारादेवा परिवसति। किवा भेमगवन् उत्तरना पसुरकमारदेवता वसेछे। गोयमा जबूदीव द मदरस्स पव्वयस्स उत्तरेव। कगोतम जबूदोपनाम होप ते जबूदोपने मेरुपवतकी उत्तरे। इमोसेरयणप्पभाए पुढवोए पमोउत्तरजोयणसयसहस्स बाह मार। ए रत्नप्रभापृथिवोने एकलाख पसोहजार योजन जाडपणे। उवरिं एगजोयणसहस्स उग्गाहित्ता। उपर एकजोयनसहस्र उगाहोने। हिठावजं

यमानि त्रिंशतशतसहस्राणि नागकुमाराणां चत्वारिंशत् चतुस्त्रिंशत् सुवर्णकुमाराणां पञ्चत्वारिंशत् द्वीपविद्युदधिविद्युत्स्तनिताग्निकुमाराणां प्रत्येक षट्त्रिंशद्भवनशतसहस्राणि ॥ सम्प्रति सामानिकात्मरक्षकदेवसङ्ख्याप्रदर्शनमाह-चउसट्ठीसट्ठीखलु इत्यादि ॥ दाक्षिणात्यस्या ऽसुरकुमारेन्द्रस्य

ससयसहस्सा हवतीति मक्खायं, तए णवणा यादि यहा जाव पडिरूवा एत्थण दाहिणिल्लाण नागकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे एत्थण बहवे दाहिणिल्लाण नागकुमारा देवा परिवसति महड्ढिया जाव विहरति । धरणे एत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसति महिड्ढिए जाव पभासमाण सण तत्थ चोयालीसाए भवणावाससयसहस्साण छण्ह सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्हं लोगपालाण छण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवइण चउवीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नसि च बहूण दाहिणिल्लाण नागकुमाराण

मारदेवताकं चामाक्षोत भवनावासशतसहस्राः इर्वतिर्लिभयाख्यात । चौआलीसशाच भवन इम तीर्थंकर कह्या । तेच भवनावासिका थता चउरसा जाव पडिरूवा । समस्त वाहिर वाट्टला मांहि चोरस यावत् प्रतिरूप । एत्थं दाक्षिणात्य नागकुमाराच पर्याप्ता पर्याप्ताच ठाणा प । इहां दक्षिणना कुमारना पर्याप्ता अपर्याप्तान ठाम कह्या । तिसुवि लोकस्स असंख्यातभाग । ताजे लोकस्याने असंख्यातमेभाग । एत्थ बहवे दाक्षिणात्य नागकु मारदेवा परिवसति । इहां घणा दक्षिणना नागकुमारदेवता वसेछे । महर्द्धिक यथा जाव विहरति । महर्द्धिक यावत् विचरे । धरणे इत्थ नागकुमा रिंद नागकुमारराया परिवसति । धरणनाम नागकुमारनाम इन्द्र नागकुमारराजा वसेछे । महद्धि यथा जाव पभासमाण । मोटाऋद्धि प्रभासति त । सेणं तत्थ चउमालीसाए भवणावाससयाणं छण्हं सामाणियसाहस्सीण । ते तिहां चौमालीसलाख भवननीसंख्या वली छसहस्र सामानिकं वली । तायत्तीसाए तायतीसगाण चउण्हं लोगपालाण छण्हं अग्गमहिसीण सपरिवाराण । तेत्रीसगुरु स्थानिय तेत्रीसपालक लोकपाल अग्रमहिषीपरिकरी

न्नते । दाहिणिल्लाणनागकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता । कहिण न्नते ! दाहिणिल्लाणं नागकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठावेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिल्लाण नागकुमाराण देवाण चोयालीस न्नवणावा

वर्ष बायवमहरमं यत्त्रिसा । नीचे एकसायनसहस्र मूकोने । मध्य प्रहलतरे बायवसयसहरसे । विचे १७८ परिमाण । एत्यव नागकुमाराव देवार्ष पज्जता चपज्जतार्व ठावा प । ईर्षा नागकुमार देवताना पर्याप्ता चपर्याप्ताना ठामकह्या । पुहशोति भवनावासयसहस्र हर्यतिसिमख्याय । ८४ लाप भवनसंख्या हवे भगवते कह्या । तेर्व भवनावाहिरहा वता चउरसा जाव पडिरूवा । ते भवन बाहिर माटकाकारे मांहि चोरस इमसव यावत् प्रतिरूप । तत्थर्ष नागकुमारा देवार्ष पज्जता २ र्ष ठावा प । तिहां नागकुमारदेवताना पर्याप्ता चपर्याप्ता ठामकह्या । तिसुविलोयस्स चसंखिज्जइभागे । तीनलोकने चसख्यातमेभाग हुवे । तत्थव बहव नागकुमारा सुरा परिवसति । तिहां घणा नागकुमार देवता वसेछे । महड्ढिया महज्जुया सर्वस्था चाडियाव जाव विहरंति । मोटोरूधि मोटो द्युतिवरो मयवाकतो जिम चोयमा चालापा यावत् विचरे । कहिनमते दाहिणिल्लाणं नागकुमाराव देवाव पज्जता २ र्ष ठावा पं । किहां हेभगवन् दक्षिणदिसिना नागकुमारदेवताना पर्याप्ता चपर्याप्तामा ठामकह्या । कहिय मते दाहिणिल्ला नागकुमारादेवा परिवसति । किहां हेभगवन् दक्षिणदिसिना नागकुमार वसेछे । गोयमा जम्बूद्वीपेद्वीपे मन्दरस्सपव्वयस्स दाहिणेव । हे गौतम जम्बूद्वीप २ मेरुपर्वतथको दक्षिणदिसि । इमीसेरयणप्पमाएपुढवीए चसीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए । ए रत्नप्रभापृथिवीके एकलाख चसीहजार जोजन जाडपणे । उवरि एगजोयणसहस्स उग्गाहित्ता हिट्ठा एगजोयणसहस्स वज्जित्ता । उपर एकहजार उगाहीने नीचे एकयोजनसहस्र मूकीन । मज्झ अठहुत्तरजोयण सहसहरसे । विचाले एकलाख अठोतरसहस्र । एत्थण दाहिणिल्लाण नागकुमाराव देवार्ष । इहां दक्षिणदिसिना नागकु

तथा इत्यमी दाक्षिणात्यानामौत्तराहाणां चासुरकुमारादीनां यथाक्रम मिद्धादीन निर्दिशति चमरेचरये इत्यादि दाक्षिणात्यानां असुरकुमारा णाम धिपति चमरोनागकुमाराणां धरणः सुवर्णकुमाराणां वेणुदेवः विद्युत्कुमाराणां हरिकान्तः अग्निकुमाराणाम अग्निशिखः द्वीपकुमाराणां पू

हिए जाव पन्नासेमाणे सण तत्थ चत्तालीसाए भवणावाससयसहस्साण आहेवच्चं जाव विहरइ । कहि ण भंते ! सुवण्णकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । कहि ण भंते ! सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव एत्थ ण सुवण्णकुमाराण देवाण बावत्तरिं भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, ते ण भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा तत्थ ण सुवण्णकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे, तत्थ ण बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति महिड्ढिया सेस जहा ओहियाण जाव विहरंति, वेणुदेव वेणुदाली य इत्थ दुवे सुवण्णकुमारिंदा सुवण्णकुमार

ठाणरत्कुमार। एवं उत्तरिल्लाण नागकुमारदेवाण चत्तालीस भवणावास सहस्सा हवंतित्ति मक्खायं। इहां उत्तरदिशिना नागकुमारना चालीसला ख भवनोंमध्ये कह्यो भीतर में कह्या । तेभवणा बाहिवट्टा सेस जहा दाहिणिल्लाण जाव विहरति । ते भवन बाहिर वाटला शेष सब दक्षिण दिशिमोपरे यावत् विचरे । भूयाणंदे इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया वा परिवसति । भूतानन्द नामा नागकुमारनामे राजा बसेछे । महर्द्धिक यावत् प भासेमाण । माठो कहि यावत् प्रभासहित । सेव तत्थ चत्तालीसाए भवणावाससयसहस्साणं आहेवच्चं जाव विहरति । ते तिहां चालीसलाख भवन नीमध्या हुवे अधिपतिपणौ विचरेछे । कहिणभंते सुवण्णकुमाराण देवाण पज्जत्ता पज्जत्ता ठाणा प । किहां हे भगवन् सुवर्णकुमारदेवता पर्याप्ता अप र्याप्ताना ठामकह्या । कहिणभंते सुवण्णकुमारदेवता परिवसति । किहां हे भगवन् सुवर्णकुमार वसेछे । गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव एत्थ णं सुवण्णकुमाराणं देवाण बावत्तरि भवणावास सयसहस्सा हवंतित्ति मक्खाय । हे गौतम ए रत्नप्रभा पृथिवीये यावत् इहां सुवर्णकुमारदेव वसेछे बह

सामानिकादयः चतःपष्टिसहस्राणि चौसरावस्स पष्टिसहस्राणि असुरवर्जानाम सुरकुमारेन्द्रवर्जानां सर्वेषा मपि दाक्षिणात्यानां औत्तराहाणां च
षट् २ सहस्राणि प्रत्येक सामानिकाः एतअन्तरोक्तसामानिकादयः सामानिका ज्ञातव्या आत्मरक्षका पुनः सर्वत्रापि सामानिकचतुर्गुणाः प्रतिप

देवाणय देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च जाव कुव्वमाणे विहरति कहिण भंते ! उत्तरिल्लाण नागकुमाराण दे
वाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, कहिण भंते ! उत्तरिल्ला नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा !
जंबूद्दीवे२ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उ
वरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण
उत्तरिल्लाण नागकुमाराण देवाण चत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं
वट्टा सेसं जहा दाहिणल्लाण जाव विहरंति, भूयाणंदे इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ मह

परि रक्षति। तिन परिषदो समस्त पृथिव्याः पञ्चोपासिभिः पञ्चोसाण आत्मरक्षदेवसाहस्रीणं। तीन परषदामधिपति सात अनीकाधिपति सात अ
नीकाधिपति करो चोंसठ सहस्र आत्मरक्षक देवनो करो। इत्यादिकबहुत दाक्षिणात्य नागकुमारा देवानय देवीनय आधिपत्य परिवार आयमाने विचर
ति। अनेरा घणो इत्यादिक नागकुमारदेवता इन्द्रनागमा अधिपतिपणा पालता विचरेछे। भगवन्तने उत्तरिल्लानं नागकुमाराय देवाय पज्जत्तापज्जत्त
गाणं ठाणा य। किहां हेभगवन् उत्तरना नागकुमारदेवता पर्याप्ता अपर्याप्तानाम ठामकह्या। भगवन्ते उत्तरिल्ला नागकुमारदेवा परिवसंति।
किहां हेभगवन् उत्तरना नागकुमारदेवता वसेछे। गोयमा। जम्बूदीप २ मंदरस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बा
हल्लाए। इमीतम जम्बूदीपे २ मेरुपर्वतथको उ रत्नप्रभा पृथिवीने एकलाख अस्सीहजारयोजन जाडपणे। उवरिं एगंजोयणसहस्सं उग्गाहित्ता। ऊपर
एकहजारयोजन उगाहीने। हिट्ठा एगंजोयणसहस्सं वज्जित्ता। हेठे एकहजारयोजन वर्जीने। मज्झे अठ्ठुत्तर जोयणसयसहस्से। मांहि एकलाख अ

तथा इदानीं दाक्षिणात्यानां मौत्तराहाणां चासुरकुमारादीनां यथाक्रम मिन्द्रादीन् निदिशति चमरेश्वरो इत्यादि दाक्षिणात्यानां असुरकुमारा णाम धिपति श्चमरोनागकुमाराणां धरणः सुवर्णकुमाराणां वेणुदेवः विद्युत्कुमाराणां हरिकान्त अग्निकुमाराणाम ग्निशिख द्वीपकुमाराणां पू

हिए जाव पज्जासेमाणे सेण तत्थ चउत्तालीसाए भवणावाससयसहस्साण आहेवच्चं जाव विहरइ । कहिण भंते ! सुवण्णकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! सुवण्णकुमारादेवा परिवस ति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव एत्थण सुवण्णकुमाराण देवाण बावत्तरिभवणावाससय सहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेण भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा तत्थण सुवण्णकुमाराण देवाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे, तत्थण बहवे सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति महिड्ढिया सेस जहा ओहियाण जाव विहरंति, वेणुदेव वेणुदाली य इत्थ दुवे सुवण्णकुमारिंदा सुवन्नकुमार

ठाणरुजाव । एवमेव उत्तरिल्लाणं नागकुमारदेवाण चत्तालीसं भवणावास सहस्सा हवंतीति मक्खाय । इहां उत्तरदिशिना नागकुमारना चालीसला ख भवनगौर्मध्या वडो शोतर में कह्या । तेणंभवणवासिवहा सेस जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरंति । ते भवन बाहिर वाटला शेष सव दक्षिण दिशिनोपरे यावत् विचरे । भूतानन्द इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया वा परिवसति । भूतानन्द नामकुमारनामे राजा वसेछे । महड्ढिए जाव प भासेमाण । माटी ऋद्धि यावत् प्रभासहित । सेसं तत्थ चत्तालीसाए भवणवाससयसाहस्सीणं अहेवच्च जाव विहरंति । ते तिहा चालीसलाख भवन गौर्मध्या छुवे अधिपतिपणो विचरेछे । कहिणभंते सुवण्णकुमाराण देवाण पज्जत्ता पज्जत्ता ठाणा र्थ । किहां हेभगवन् सुवर्णकुमारदेवता पर्याप्ता अप र्याप्ताना ठामकह्या । कहिणभंते सुवण्णकुमारदेवता परिवसति । किहां हेभगवन् सुवर्णकुमार वसेछे । गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव एत्थ ण सुवण्णकुमाराणं देवाण बावत्तरि भवणावास सयसहस्सा हवंतीति मक्खाय । हेगौतम ए रत्नप्रभा पृथिवीये यावत् इहां सुवर्णकुमारदेव वसेछे बह

यः उदधिकुमाराणां जलकान्तः दिक्कुमाराणाम् मितः वायुकुमाराणां वेलम्बः स्तनितकुमाराणां घोषः ॥ बलिभूयधदेस्यादि ॥ उत्तरदिग्वर्ति नामसुरकुमाराणामसिम्रोबलिः नागकुमाराणां भूतानन्दः सुपर्णकुमाराणां वेणुदालिः विद्युत्कुमाराणां हरिसह अग्निकुमाराणामग्निमाणवः द्वीप कुमाराणां विशिष्टः उदधिकुमाराणां जलप्रभः दिक्कुमाराणाम् मितवाहनः वायुकुमाराणां प्रभञ्जनः स्तनितकुमाराणां महाघोषः सम्प्रतिवच

रायाणो परिवसंति महड्ढिया जाव विहरंति । कहिणं भंते ! दाहिणिल्लाणं सुवन्नकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! दाहिणिल्ला सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे जाव मज्झे अट्ठहुत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं अट्ठतीसं भवणावाससहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा, तत्थणं दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे, एत्थणं बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति । वेणुदेवे इत्थ सुवन्निंदे सुवण्णकुमारराया परिवसंति सेसं जहा नागकुमाराणं । कहिणं भंते ! उत्तरिल्लाणं सुवन्नकु

तरवाण भवनवासी दक्षिणदिशि ३८ लाख उत्तरदिशि ३४ लाख तीर्थंकरे कह्या । तेम भवनावासादिक आलापकना । ते भवन बाहिर यावत् प्रति रूप । तत्थ भवनकुमाराणं देवाणं पन्नत्ता २ ण ठाणा प । तिहां भवनकुमारना ठाम कह्या । तिसुविलोगस्स असंखेज्जइभागे । तीने लोकाकाश असंख्यातमे भागे । तत्थणं बहवे भवनकुमारा देवा परिवसंति । तिहां घणा सुवर्णकुमारना देवता वसे छे । सेसं जहा पाहिल्लाण जाव विहरंति । जाव पालना पासादिकीपरे विचरे । वेणुदेव वेणुदालिय इत्थदुवे सुवर्णकुमारेंद्रा सुवर्णकुमारराया वो परिवसति । वेणुदेव नामा ओ ए बाय सुवर्णकुमार ना राजा जोवना राजापणे विचरेछे । कहिणभंते दाहिणिल्लाणं सुवन्नकुमाराणं पन्नत्ता २ णं ठाणा प । किहां हे भगवन् दक्षिणना सुवर्णकुमारना पर्याप्तापर्याप्ता ठाम कह्या । कहिणभंते दाहिणिल्ला सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति । किहां हे भगवन् दक्षिणना सुवर्णकुमार वसे छे । गोयमा इमीसे

वयशयमाह-कालाअसुरकुमारादत्यादि गाथाद्वय असुरकुमाराः सर्वेपि कालाः कृष्णवर्णाः नागकुमारा उदधिकुमाराश्चैते उभयेपि पाण्डुराः शुक्ल वर्णाः वर आत्य मस्तकम तस्य निघषः कष पट्टकरखातादृत् गौरा अवति सुवर्णकुमारा दिक्कुमाराः स्तनितकुमारा च तथा विद्युत्कुमारा अग्नि कुमाराद्वीपकुमारा च भवन्तु तप्तकनकवर्णा इषद्रक्तवर्णा इतिभावः वायुकुमाराः प्रयामाः श्यामत्वमेवस्पष्टयति प्रियङ्गुवर्णाः सम्मातियञ्जगतवर्णेम

माराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! उत्तरिल्ला सुवण्णकुमारा परिवसंति ? गोय मा ! इमीसे रयणप्पभाए जाव एत्थण उत्तरिल्लाण सुवण्णकुमाराण वत्तव्वया भणिया तहा सेसाणवि चोद सण्हं इदाण भाणियव्वा नवर भवणनाणत्त इंदाणनाणत्त वण्णेण नाणत्त परिहाणनाणत्त च इमाहि गाहाहि अणुगतव्व—चोयठिअसुराण चुलसीतीचेवहोइनागाण । बावत्तरिसुवण्णे वाऊकुमाराणछण्णउति ॥ १ ॥ दीवदिसाउदहीण विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीण । छण्हंपिजुयलयाण छावत्तरिमोसयसहस्सा ॥ २ ॥ चोत्ती साचोयाला अठ्ठतीसचहोइसयसहस्साइ । पण्णाचत्तालीसा दाहिणउहोंतिभवणाइ ॥ ३ ॥ तीसाचत्तालीसा

वाव मध्ये घड्डत्तरे आयवववतरसे । देमोतम ए यावत् मांदिस एवसए घठोत्तरवकार । एतव दाक्षिणिदाव सुवर्णकुमाराव चठतीस भववावास सयसहस्सा इवतितिमक्लाय । तत्रां दक्षिणना सुवर्णकुमारदेवताना ३८ लाख भवन हुवे तीर्थंकरेंकह्या । तेव भववावासिनहः जाव पडिरूवा । ते भवन बाहिर वाटला यावत् प्रतिरूप । एतव दाक्षिणिवाव सुवर्णकुमाराव पज्जत्ता २ वं ठाणा प । तत्रां दक्षिण सवर्णकुमारना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठा मकहा । तिसुविलामय घर्सखिज्जभागे । तीम वासलोकने असख्यातमेभागे हुवे । एतव बहवे सवर्णकुमारा देवा परिवसंति । तत्रां घणा सुवर्णकुमा र देवता वसे छे । वेणुदेव इत्थ सवर्णकुमारिंदे सवर्णकुमाररायाया परिवसति । वेण दवनामे सवर्णकुमारना राजा वसेछे । सेस जहा नागकुमारा च । यावतो मय नामवमारनीपरे । कहिण मते उत्तरिल्लाव सुवर्णकुमाराव देवाण पज्जत्ता २ व ठाणा प० । किहां हेभगवन् उत्तरना सुवर्णकुमारदेव

णः उदधिकुमाराणां जलकान्तः दिक्कुमाराणाम् मितः वायुकुमाराणां वेलम्बः स्तनितकुमाराणां घोषः ॥ बलिभूयादेरित्यादि ॥ उत्तरदिग्वर्ति नामसुरकुमाराणामिन्द्रो बलिः नागकुमाराणां भूतानन्दः सुवर्णकुमाराणां वेणुदालिः विद्युत्कुमाराणां हरिस्सहः अग्निकुमाराणामग्निमाणवः द्वीपकुमाराणां विशिष्टः उदधिकुमाराणां जलप्रभः दिक्कुमाराणाम् मितवाहनः वायुकुमाराणां प्रभञ्जनः स्तनितकुमाराणां महाघोषः सम्प्रतिवण

रायाणो परिवसंति महिड्ढिया जाव विहरंति । कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं सुवन्नकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । कहि णं भंते ! दाहिणिल्ला सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे जाव मज्झे अट्ठुत्तरेजोयणसयसहस्से एत्थ णं दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं अट्ठतीसं भवणावाससहस्सा हवंतीति मक्खायं, ते णं भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा, तत्थ णं दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे, एत्थ णं बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति । वेणुदेवे इत्थ सुवन्निंदे सुवण्णकुमारराया परिवसति सेसं जहा नागकुमाराणं । कहि णं भंते ! उत्तरिल्लाणं सुवन्नकु

कुमारोंके भवनवास दक्षिणदिशि ३८ लाख उत्तरदिशि ३४ लाख तीर्थंकरे कह्या । तेह भवनावासहीन्हां जावपडिरूवा । ते भवन बाहिर यावत् प्रतिरूप । तत्र भवनकुमाराना देवाना पज्जत्ता २ ना ठाणा प० । तिहां भवनकुमारना ठाम कह्या । तिसुविलोयस्स असंखेज्जभागे । तीने लोकना असंख्यातमेभागे । तत्थणं बहव सुवन्नकुमारा देवा परिवसति । तिहां घणा सुवर्णकुमारना देवता वसे । सेसं जहा ओहियाणं जाव विहरति । शेष सामान्य भावना पेरे विचरे । वेणुदेव वेणुदालि इत्थदुवे सुवन्नकुमारिंदा सुवन्नकुमारराया परिवसति । वेणुदेव वेणुदाली ए दोय सुवर्णकुमारना राजा जावत राजापणे विचरे । कहिणमंते दाहिणिल्लाणं सुवन्नकुमाराणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प० । किहां हे भगवन् दक्षिणना सुवर्णकुमारना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कह्या । कहिणमंते दाहिणिल्ला सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति । किहां हे भगवन् दक्षिणना सुवर्णकुमार वसे । गोयमा इमीसे

म मय विच चोद्दे इन्द्रो वन्नमना । मर्व भवणावसे इ दुवावसे वगावासे परिहरववावसे इमाइ माहार चवगंतयं । एतत्तोविसेय भवनगोसच्चा
म समपमानाम सू ववमयाम सू वसपवे मावेंरी समभवा ते वविह—चवसिव चसुराय पुवसीतववकारभागाय । यावत्तरोसुवव वायकुमारायव
नवए १ । ६४ लाख भवन चसरकमारना ८४ लाख भवन नागकमारना ७२ लाख सुवचकमारना १ ८ लाख वायुकुमारना १॥ दोमदिसाववोच
विज्जमारेववमेवं घवसपिवगमिवावं चावत्तरिमोसयसहस्सा ॥ २ ॥ १२ दसूना एतस्से ६ कुमलोवा भवन ॥ २ ॥ चतोलावत्तचत्ता चउतीसंवसयसच
साव पयावत्तालोसा हाविवमाणुतिभववाव ॥ १ ॥ चमरेन्द्र १४ धरवेंद्र ४४ वेणुदव हरिवन्त चग्गिसिह पूव १८ जलवय तव अमवन्त चमित ५
वेलम्ब वाय ४ ४६ ॥३॥ तोमावत्तालोसा चत्तीसंचेवसमसहस्साइ चायालाववतोसा उत्तरपोकोतिभववाव ॥ ४ ॥ मवेद ४ लाख भवनेन्द्र
हरिम ववसाओ ४ लाख चग्गि माणव वावस ३६ लाख जलप्पभ चमितवाहन ४६ लाख प्रभञ्जन मवाघोष ३६ लाख उत्तरस्राविरा इन्द्रिरा भवन

जाविया ६६६ ॥ ५ ॥ चवसट्ठीसट्ठीवलु कवमवस्सा चसुरवज्जाण सामाणियाउवए चउगुणा चायरक्खाउं ॥ ६ ॥ ६४ हजार चमरेन्द्र ६ हजा
र बलेन्द्र ६ हजार धरणेन्द्रादि एव चसरवर्जीन सामानिकवो चोगुणो करता चात्मरक्षकदेवता जाणिवा ६ ॥ चमरचरवतहवेषु दवहरिवत्तचग्गि
सीहय पुवजलवत चमिववलंवघयासेय । ७ ॥ चमरेन्द्र धरणेन्द्र जिम वेणुदेव हरिवन्त चग्गिसीहा पूव जलवन्त चमित वलम्ब घोषा १० इति द
चिवनो । वलिय मूतानिंदे वेवदालि हरस्सवे चग्गिमाणेववासिट्ठ । बलेन्द्र भूतानेन्द्र वेणुदालो हरिस्सह चग्गिमाणव वसिट्ठ । जलप्पभ तव चमितवा
हथे पभञ्जेय महाघासे चात्तरिलाणु जाव विहरति । जलप्पभ चमितवाहन प्रभञ्जन महाघोष २० उत्तरदिसिना यावत् विहरेहे । काला चसुरकुमा
रा नागा वदिय पांडराहवि । चसरकुमार काला नागकुमार ए दाम पांडुरा । चवरकवग निहसगाराक्षीति । प्रवर सववसे कखाठिय जहवा
मरव । मुववादिसाववियाा । सुववकुमार दिसिकमार स्तनितकमार ३ । चत्तत्तववववण्णा विज्जुचग्गीयहुंतिदोचाय । सामाणिसुरका वाउकमाराणमि

तिपादनाथमाह-असुरेसुहोंतिरत्ता इत्यादिगाथाद्वयं ॥ असुरेषु सुरकुमारेषु भवन्ति रक्ताविरक्तामि नागकुमारेषु उदधिकुमारेषु च शिलिंध्रपुष्प प्रभाविमीलवर्णा भीत्यर्थः सुवर्णकुमारा दिक्कुमारा स्तनितकुमारा च अश्वास्यवसनधरा अश्वसार्थसुसंभ्रान्तस्य तत्र गतो म फन सोभास्यगत सद्भूत् धवल मद्दल तद्गुरली त्यद्यास्यगवसनधराः वायुस्य यतवस्त्रपरिधानशीलाइत्यर्थ विद्युत्कुमारा द्वीपकुमारा अग्निकुमाराश्च नीलानुराग

चोसट्ठिसयेअसयसहस्साइं । छायालाछत्तीसा उअरउहोंतिन्नवणाइं ॥ ४ ॥ चउसट्ठीसट्ठीखलु छच्चसहस्साउ असुरवज्जाण । सामाणियाउएए चउगुणाआयरक्खाउ ॥ ५ ॥ चमरेधरणेतहये णुदेवहरिकंतअग्गिसीहेय । पुणजलकंतेय अमियवेलंबेयघोसेय ॥ ६ ॥ बलिभूयाणंदेये णुदालीहरिस्सहेअग्गिमाणवविसिट्ठे । जलप्प भेअमियवाहणे पभंजणेयमहाघोसे ॥ ७ ॥ उत्तरिल्लाण जाव विहरति , कालाअसुरकुमारा नागाउदहीय पंडुरादोवि । वरकणगणिहसगोरा होंतिसुयणादिसाथणिया ॥ १ ॥ उत्तत्तकणगवन्ना विज्जुअग्गीयहोंति दीवाय । सामापियंगुवन्ना वाउकुमारामुणेयव्वा ॥ २ ॥ असुरेसुहोंतिरत्ता सिलिंधपुप्फप्पभायणाउदही । आ

पवास्ता पवबाधाना ठामवन्ना । बहिर्मते उत्तरिल्ला सवणकुमारादेवा परिवसति । किंरा इमगवन् उत्तरमाः सुवर्णकुमारदेवता वसेवे । गोयमा रमीम रयणप्पभाए जाव एवं उत्तरिल्लाव सुवण्णकुमाराव चउतीस भवणावाससयसहस्सा भवंतित्तिमक्खायं । गोतम ए रयणप्पभाये यावत् इत्थ उ तरमा सवणकुमारमा २४ लाष भवननो सत्वानी तीर्थंकरे कह्यो । तेथ भवना जाव एवं बहुमे उत्तरिल्ला सवणकुमारादेवा परिवसति । ते भवन यावत् इत्थ सवा उत्तरमा सुवर्णकुमारमा देवता वसेवे । महर्द्धिया जाव विहरति । महद्धिक यावत् विचरेवे । वेणुदाली इत्थ सवणकुमार सुवण्णकुमारमामेराजा वसेवे । महर्द्धिका सेस यथा नागकुमाराव एवं कहा सुवर्णकुमा राव वतमया भविया । महर्द्धिक प्रेम जिम नागकुमार इम जिम सुवर्णकुमारमी कहियो कह्यो । तथा सेसावि पवदसप्प १ हार्थ मावियव्वा । ति

म ग्रेप विप चोहे इन्द्रनो वत्तव्यता । मर्व मवनावर्स इंद्रावर्स वपावर्त परिवरवावर्स इमार मासार पमुगतर्च । एतवोविमीप भवनमोसम्मा
नू इन्द्रपभागाम नू ववमधाम नू वस्तवे नामेवरी समभवा ते वरेवे—चवतिम पसुराव सुवसीतववत्तामागाव । वावत्तरीसुवव वामकमारावव
भगए १ । ६४ साग मवन पसरतमारना ८४ ताप मवन मागकमारना ७२ ताप सुवनमारना १ ८ ताप वायुकुमारना १। दोपदिसाववोर्व
विमवमारेदवमेर्व कपमविषमलियार्व वावत्तरिमोसववसवा । २ । १२ इन्द्रना एतसे ६ तुमवाका भवन । २ । चततोसावतपता चत्तोसंपसवसव
म्मप पनावतलोसा वाविवपाडुतिभववार । ३ । चमरेन्द्र ३४ घरवेंद्र ४४ वेणदेव वरिवन्त पम्मिमिस पूर्वे ३८ मतसवय वव ववबन्त पमित ५
३६मवक घाप ३ ४६ ।३। तोसावतालोसा चततीसचेत्तसवसवसाइ वावावावतोसा वत्तरपोवोतमवबार । ४ । मसेंद्र ३ साप मतानेंद्र
वरिस वेणदाओ ३ वाप पविन मानव मावरा ३४ ताप वसपम पमितवाहन ४६ ताप प्रमम्नन मवाघाप ३६ ताप वत्तरम्नविरा इन्द्रिरा भवन

जाविवा ३६६ । ४ । ववमट्ठीसहोपस्स कंवनवमाद पसुरवमार्व सामानियाववए वव्गुणा पायरक्खार्वा । ५ । ६४ वनार चमरेन्द्र ६ वना
र वमद्र ६ वनार घरवेंद्रादि पव पसरव्वीन सामानिकवो चोगुणा वरता पायरवक्वदेवता जाणिवा । ५ । चमरधरपतदवेषु एववरिवतपमि
माइय पुववववतप पमिवववसंववघावेम । ६ । चमरेन्द्र घरवेंद्र जिम वेणुदेव वरिवन्त पग्गिसोवा पूप ववबन्त पमित ववपव घापा १० इति द
विवग्यवो । वमिप मूत्राविदे वेणवावि वरपवे पग्गिमावेवयासिहे । मसेंद्रा मूतानेंद्र वेणदावो वरिसाप पग्गिमावव वसिट । ववपव तव पमितवा
वद पभववेव मवाघासे पात्तरिवाणु वाव विवरति । जलप्रभ पमितवाहन प्रभम्नन मवाघाप २० वत्तरदिगिमा यावत् विचरेहे । व्याला पसुरकुमा
रा माना ववजिय पांवराशानि । पमरकुमार वाला नागकुमार ए वाय पांडुरा । पवरवपग निवसगारावीति । मवर मवपंचवे वहाठिय सरवा
मरव । सुववादिसाववियो । सुवदकुमार दिसिकुमार थणितकमार ३ । पपातवववववपा विज्जुपम्मोवउतिदीवाम । सामाापमगुवक्षा वाउकमारामवि

तिपादनामयमाय-असुरेसुर्होतिरत्ता इत्यादिगाथाद्वयं ॥ असुरेषु सुरकुमारेषु भवन्ति वस्त्राणिरक्तानि नागकुमारेषु उदधिकुमारेषु च शिलिन्ध्रपुष्प प्रभाणिनीलवस्त्रा नीलवर्णः सुवर्णकुमारा दिक्कुमाराः स्तनितकुमारा च अश्वास्यगवसनधरा अश्वस्याश्वमुखस्याश्वास्यं तत्र गतो यः फेनः सोऽश्वास्यगत सदृश् धवल महर्घ तद्वर्णौ त्वश्वास्यगवसनधराः वायुस्यम धतवलपरिधानश्रीसाइस्यघः विद्युत्कुमारा द्वीपकुमारा अग्निकुमाराश्च नीलानुराग

चोत्तीसचेवसयसहस्साइ । ठायालाठत्तीसा उत्तरहोंतिजवणाइ ॥ ४ ॥ चउसठीसठीखलु छच्चसहस्साइ असुरयज्ञाण । सामाणियाठएए चउगुणाआयरक्खाठ ॥ ५ ॥ चमरेघरणेतहवे णुदेवहरिकतअग्गिसीहेय । पुणजलकतेय अमियवेलयेयघोसेय ॥ ६ ॥ बलिभूयाणंदये णुदालीहरिस्सहेअग्गिमाणवासिठे । जलप्पभेअमियवाहणे पभजणेयमहाघोसे ॥ ७ ॥ उत्तरिल्लाण जाव विहरति , कालाअसुरकुमारा नागाउदहीप डुरादोवि । वरकणगणिहसगोरा होंतिसुवणादिसाथणिया ॥ १ ॥ उत्तत्तकणगयन्ना विज्जुअग्गीयहोंति दीवाय । सामापियंगुवणा वाउकुमारामुणेयव्वा ॥ २ ॥ असुरेसुहोंतिरत्ता सिलिंध्रपुप्फप्पभायणाउदही । अा

पर्शास्ता पवर्शाख्याना ठामवणा । बर्हिर्मते उत्तरिला सवणकुमारादेवा परिवसति । कहि णं भगवन् उत्तरमा सुवर्णकुमारदेवता वसेंके । गोयमा इमीसे रयणप्पभाए जाव एत्थं उत्तरिलाण सुवणकुमाराण चउतीसं भवणावाससयसहस्सा भवतीतिमक्खाय । गौतम च रत्नप्रभाये यावत् इत्थं उ तरमा सवणकमारना २४ लाख भवनो सघलाकहो तीर्थंकरे कह्यो । तेव भवणा जाव एत्थं बहवे उत्तरिला सवणकुमारादेवा परिवसति । ते भवन यावत् इहां घणा उत्तरना सुवणकमारना देवता वसेछे । महड्ढिया जाव विहरति । महद्धिक यावत् विचरेछे । वेणुदालिय इत्थ सुवणकमारिंदे सु वणकुमारराया वा परिवसति । वेणुदालो इहां सवणकमार सुवणकुमारनाभेराला वसेछे । महड्ढिया सेस जहा नागकुमाराण एवं जहा सुवणकुमा राण वत्तव्वया भणिया । महद्धिक शेष जिम नागकुमार इम जिम सुवर्णकुमारनो कहियो कह्यो । तथा सेसाणवि चउदसण्ह इदाणं भाणियव्वं । ति

म गय पिव चोहें रम्नो वसम्मता । मर्द मवचावसें र दुपावते वमवावसें परिवरववावसें रमार गावार मघुगंतर्ध । एतबोविवीप सवनोसम्मा
त्र् रम्नप्रमानाम व्र् ववप्रधान व्र् वसपवे मावेवरी समभ्रवा ते वविवे—चचसंद्रिय चमुराण पुरसीतरचवरारमागाव । मावत्तरोसुवच वावकुमारावच
चउए १ । ६४ लाख भवन चसरकुमारना ८४ लाख भवन नागकमारना ७२ लाख सुवर्णकमारना १ ८ लाख वायुकुमारना ११ दोवदिसाउदधोध
विज्जकुमारेंदवर्वे चवसपिवगवित्रांचे चावत्तरिमासवलचमा । २ । १२ इम्ना एतले ६ जुगलाना भवन । २ । चउतोसावत्तचत्ता चउतोसंचचयसच
समच पचाचत्तालीमा द्वाचियमाचुतिभवनार । १ । चमरेन्द्र ३४ धरवेंद्र ४४ वेणुदेव हरिकंत चग्निमाणव पूर्ण १८ मतसहस्र हाथ चवकान्त चमित ५
वेलम्ब लाख ४ ४६ ।१। तोसाचत्तालीसा चउतोसंचेवसयसहस्साइं छावासाहत्तोसा उत्तरचाचौंतिमभवनार । ४ । वलेंद्र २ लाख भतानेंद्र
हरिस्सह्राजो ३ लाख चविम माचव वसिठा ३४ लाख जलप्रभ चमितवाहन ४६ लाख प्रभंजन महाघोष २६ लाख उत्तरसविरा इम्निरा भवन

वाचिवा २६६ । ४ । चउसट्ठीसट्ठीखलु छच्चसहस्साउ चसुरवज्जाणं सामाणियाउएए चउगुणा चायरक्खाओ । ५ । ६४ हजार चमरेंद्र ६ हजा
र बलेन्द्र ६ हजार धरणेंद्रादि पत्र चसुरवर्जीन सामानिकथी चोगुणा करतां चायरक्खदेवता जाणिवा । ५ । चमरचरचतहवेणु एरचहरिकंतचग्नि
सोहिय पुन्नजलकंत चमिचवेलंबचघोसेय । ६ । चमरेंद्र धरणेंद्र जिम वेणुदेव हरिकंत चग्निसीह पूर्ण जलकान्त चमित वलम्ब घोषा ६ इति द
क्षिणश्रेणी । बलिचभूयाणंदेवेणदालिहरस्सहे चग्गिमाणवचसिट्ठे । बलेंद्र भूतानेंद्र वेणुदालि हरिसहा चग्गिमाणव वसिठ । जलप्रभ तह चमितवा
हणे पभंजणेय महाघोसे चात्तरिहाघु जाव विहरंति । जलप्रभ चमितवाहन प्रभंजन महाघोष २० उत्तरदिशिना यावत् विचरैछे । काला चसुरकुमा
रा नागा उदहिय पांडुरादोवि । चसरकुमार काला नागकुमार ए दोय पांडुरा । पवरकणग निहसगोराहोंति । प्रवर सवर्णवसें कसौटिय कसवा
मर्घ । सुवन्नादिसाथणिया । सुवन्नकुमार दिसिकुमार स्तनितकमार २ । उत्तत्तकणयवन्ना विज्जुअग्गीयहुंतिदीवाय । सामापियंगुवन्ना वाउकुमाराम

तिपादमाथमाथ-असुरेसुहोंतिरत्ता इत्यादिगाथाद्वयं ॥ असुरेषु सुरकुमारेषु भवन्ति रक्तानि नागकुमारेषु उदधिकुमारेषु च शिलिंध्रपुष्प प्रभाविमलधवला नीलवर्णाः सुवर्णकुमारा दिक्कुमाराः स्तनितकुमारा च अश्वास्यगवसनधरा अश्वस्याश्वमुखमश्वास्यं तत्र गतो यः फेन सोश्वास्यगत स्तद्वत् धवल यद्वस्त्रं तद्रश्मी स्यश्वास्यगवसनधराः वायुस्त्वम यतवकपरिधानशीलाइत्यर्थः विद्युत्कुमारा द्वीपकुमारा अग्निकुमाराच नीलानुराग

चोसीसचेअसयसहस्साइं । छायालाछत्तीसा उअरछहोंतिज्जवणाइं ॥ ४ ॥ चउसठीसठीखलु छअसहस्साहं असुरयजाण । सामाणियाठएए चउगुणाआयरक्खाहं ॥ ५ ॥ चमरेधरणेतहवे णुदेवहरिकंतअग्गिसीहेय । पुणंजलकंतय अमियवेलबेयघोसेय ॥ ६ ॥ बलिजूयाणदेवे णुदालीहरिस्सहेअग्गिमाणवविसिठे । जलप्पभेअमियवाहणे पत्तजणेयमहाघोसे ॥ ७ ॥ उअरिल्लाण जाव विहरति , कालाअसुरकुमारा नागाउदहीप डुरादोवि । वरकणगणिहसगोरा होंतिसुयवादिसाथणिया ॥ १ ॥ उत्तत्तकणगवन्ना विज्जुअग्गीयहोंति दीवाय । सामापियगुवण्णा वाउकुमारामुणेयव्वा ॥ २ ॥ असुरेसुहोंतिरत्ता सिलिंध्रपुष्फनायणाउदही । आ

पर्याप्ता पर्याप्तानां ठामकथा । बहिर्ममते उत्तरिल्ला असुरकुमारादेवा परिवसंति । किन्हीं भगवन् उत्तरमा सवर्णकुमारदेवता वसेके । गोयमा इमोचे रयणप्पभार जाव मन्तर्व उत्तरिल्लाच सुवर्णकुमाराच चउतीस भवनावाससयसहस्रा भवतित्तिमक्खाय । भगोतम ए रत्नप्रभाणे यावत् इहां उ त्तरना सवर्णकुमारना इव साथ भवनभो सम्भवधी तीर्थंकरे कह्यो । तेच भवना जाव पतर्प वहवे उत्तरिल्ला सवर्णकुमारादेवा परिवसति । ते भवन यावत् इहां सर्व उत्तरना सुवर्णकुमारना देवता वसेछे । महर्द्धिका जाव विहरति । महर्द्धिक यावत् विचरेछे । वेणुदालिय इत्य सुवर्णकुमारिंदे सु वर्णकुमारराया वी परिवसति । वेणुदाली इहां सवर्णकुमार सुवर्णकुमारनामेराजा वसेछे । महर्द्धिया सेस जहा नागकुमाराच एवं जहा सुवर्णकुमा राच वत्तव्वया भणिया । महर्द्धिक सेप जिम नागकुमार इम जिम सुवर्णकुमारनी भणिवो कह्यो । तहा देसमपवि चउदसमद इदाय माविवाचं । ति

यसना यापुक्रमाराः सध्यानरागयसना सानमतरसूत्रे तिसुविसोगस्सभसखेज्जइजागे इति ॥ स्वस्थानोपपातसमुद्घातरूपपु त्रिष्वपि स्थानपु लोक स्या सङ्ख्येयजाग वर्त्तमानि सथा भुयगवयपोमहाकाया महोरगाः कि विशिष्टाः ते इत्याह-भुजगपतयः गन्धवगणा गन्धर्वसमुदायाः कि विशिष्टा स इत्यादि-निपुणगन्धर्वगीतरतयो निपुणाः परमकौशलोपेता यगन्धर्वजातीया देवा सेषा यद्गीत तत्र रति येषा से तथा एते व्यन्तराणाम ष्टौ

रणपञ्जिदुयारदेसन्नागा ज्ञासत्तोसत्तविउलवट्टयग्घारियमल्लदामकलाया पचवन्नसरससुरन्निमुक्कपुप्फपुंजोव यारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधधुआन्निरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टीभूया अच्छ रगणसघविकिण्णा दिव्वतुडियसहसंपन्नदिया पडागमालाउलान्निरामा सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लठा घठा मठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्ककडच्छाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरसणि

पंतावडरमा । ते नगर बाहिर वाटला माहि चोरंसा । मधे पुष्करकर्णिकाना सठाणसठिया । नीचे गमीरो खातिकाने पाकारे । वलिप्रतर विस्तार मोरखाव फलिहा पागारहालय कवाडतारणपडिदुवारदेसभागा । खाइ विपे विस्तो गम्भीर फिटकमयी प्राकार ऊपर कपाठ तोरण दार माटा तरमा नान्हाबार । वतन मवधि मुसल मुसंढिपरिवारिया । कवादेसभाग मयमयपवरचालिकें परिवेष्टितछे । चपाधारिया चयासया गुप्ता चवयासंकड नरावा चवणाम वनवनमाला चमासबा खिकरा मरचंडाचरक्खिया । सोहमा देवता समवसरी मरा चोपछे मरा गुप्न ४८ देशीभाषामें मससाना बवन ४८ भदेवरो फूलमाला बम्धावबारो उपद्रवविना बिहर मूवपदता तवें रात्याके घर । सातमारयमविया गासीसरतचन्दन ददरविन पबो गुनितमा चापविय पडचकसमा । ४८ भदेवरो फूलमाला बन्धावबारो उपद्रवविना बिहरभूत वेदेवता तवें रात्याके सोमा के मवादिवमीपरे मढा यामीव रमवपुते बदर दीधाके पत्र गुडीमाहाय उपचित रात्याके चन्दनकलशा । चंदनकय तोरण पडिदुवारदेसभागा । चन्दनकलशे करा शोभन बोधीके । पासत्तासत्तविउलवट्टवग्घारिय मल्लदामकलावा । पाससो सप्तभूमि पर्यंतपर वाध्या विपुलविस्तीर्ण दामना कलापा । पवबन्न सरससुरभिमुक्त

सासयवमणधरा होंतिसुवण्णादिसाथणिया ॥ ३ ॥ नीलाणुरागवसणा विज्जूछुग्गीयहोतिदीयाय। सज्जाणु रागवसणा वाउकुमारामुणेयव्वा ॥ ४ ॥ कहिण भंते ! वाणमंतराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, कहिण भंते ! वाणमंतरा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणमयस्स कण्डस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि एग जोयणसय उग्गाहित्ता हिठावि एग जोयणसय वज्जित्ता मज्झे अठसु जोयणसएसु एत्थण वाणमंतराण देवाण तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खाय तेण भोमेज्जा णगरा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा अहे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिया उक्किन्नंतरविउलगंभीरखायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसलमुसंढिपरिवारिया अउज्झा सया जया सया गुत्ता अडयालकोठरइयअडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरा मरदण्डोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतो

थमा। १। तथामाना ___ विद्युत्कुमार अग्निकुमार दीपकुमार ___ दिपक्कुमार वायुकुमारना ___ जाणिवा। कहिणभंते वाणमंतरा वाण तराणं पज्जत्ता २ ना ठाणा प। किहां वायुकुमार हेभगवन् वाणमंतर पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकह्या। कहिणभंते वाणमंतरा देवा परिवसंति किहां हेभगवन् वाणमंतरदेव वसेछे। गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पढवीए रयणमयस्स कण्डस्स जोयणसहस्स बाहल्लस्स। हेगौतम ए रत्नप्रभाना ___ या रत्नमयकाण्ड बाहल्लसहस्र ___। उवरि एगंजोयणसयं उग्गाहित्ता। ऊपर एकजोजन सत अवगाहीने। हिट्ठाएगंजोयण सयंवज्जित्ता। हठ ___ बज्जीडाज्ञ ___। मज्झे अट्ठजोयणसएसु। मांहि विचे ८ ___ जोजन। एत्थण वाणमंतराण देवाण तिरियमसंखिज्जा। इहां वाणमंतर तिरछा ___ संख्यातगुणा। भोमिज्जानगरावाससयसहस्साइवतितिमक्खायं। भूमि मध्यमोपरे नगरना आवासको परिवंते कह्या। तेवं भोमिज्जानगरा बाहिंवट्ट

यसमा वायुकुमाराः संध्यानरागयसमा यानमतरसूत्रे तिसुविलोगस्समसखेज्जाइभागे इति ॥ स्वस्थानोपपातसमुद्घातरूपेषु त्रिष्वपि स्थानेषु लोक स्या महुयलाग वक्ष्यामि तथा भुवनत्रयव्योमहाकाया महोरगाः कि विशिष्टाः ते इत्याह-भुजगपतयः गन्धर्वगणा गन्धर्वसमुदायाः कि विशिष्टा स इत्यादि-निपुणगन्धर्वगीतरतयो निपुणाः परमकौशलोपेता यगन्धर्वजातीया देवा लोपा यद्गीत तम्र रति येषा त तथा एते व्यन्तराणाम छौ

रणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोव यारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छ रगणसंघविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपणादिया पडागमालाउलाभिरामा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरसणि

पैताळहता । ते नगर बाहिर वाटला मांहि चोरसा । नीचे पुष्करकर्णिकाने संठाणसंठिया । नीचे समसतो खचिकाने पाकारे । परिष्कृतर विस्तार गंभीरखाय परिखा पागारट्टालय कवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा । खाय विषे विस्तो गंभीर पिढ समतो प्राकार उपर कपाट तोरण द्वार माटा नवमा माळापार । अतस मषधि मुसल मुसंढिपरिवारिया । इडादेशभाग समसफरपादिको परिवेष्टित छे । पपाइसवा अधासया गुत्ता सवयामकट मरावा पटवाम ववयवमाला पमापवा किंकरा अरखंडावरक्षिया । सोहमा देवता समसतो सदा ओपछे सदा गुप्त ४८ देगोभागावे प्रससामा ववन ४८ अंबरो भूमशाला कबाटवारो उपद्रवविना किहर भूतअएवता तवे राज्याके पर । वाउडारयमझिया गासोवरसपदृवा दहरडिय पवां गुलितला पापविय पदपतसमा । ४८ अदेबरो भूमशाला कबाटवारो उपद्रवविना विहरभूत सेवता तवे राज्याके योग्य छे मनादिवनोपरे मडा पामीव रजनस्ने ददर सोधाके पत गुपोनाशाव उपचित याज्याके वन्दनकलशा । पश्चकव तोरण पडिदुवारदेसभागा । वन्दनकलशे रूडा शोभन शोभीके । पासत्तोसत्तविउलवग्घारिय मल्लदामकलावा । पासत्तो सप्तभूमि भणापर वांध्या विपुलविस्तोर्ण दामना समा । पंचवण्ण सरससुरभिमुक्क

सासयनसणधरा होंतिसुवण्णादिसाथणिया ॥ ३ ॥ नीलाणुरागवसणा विज्जुच्छुगीयहोतिदीवाय। सज्झाणुरागयसणा वाउकुमारामुणेयह्वा ॥ ४ ॥ कहिण भंते ! वाणमंतराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णता, कहिण भंते ! वाणमतरा देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणमयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि एग जोयणसय उग्गाहित्ता हिठावि एग जोयणसय वज्जित्ता मज्झे अठसु जोयणसएसु एत्थण वाणमंतराण देवाण तिरियमसंखेज्जाहं भोमेज्जा नगरवाससयसहस्सा हवतीति मक्खाय तेण भोमेज्जा णगरा बाहिं वहा अतो चउरसा अहे पुक्खरकन्नियासंठाणसंठिया उक्किन्नंतरविउलगंभीरखायफलिहा पागारहालयकयाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसलमुसंढिपरियारिया अउज्झा सया जया सया गुत्ता अडयालकुठरइयअडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरा मरदंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतो

यथा ॥ १ ॥ नव्यामामा बहवा विद्युत्कुमार अग्निकुमार दीपकुमार घामडे पियङ्गोपरे वायुकुमारना वण जाणिवा। कहिंभते वाणमंतरा वाणमंतराणं पन्नता २ न ठाणा प । किहां वायुकुमार देवतानां वाणमंतर पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकह्या। कहिंभते वाणमंतरा देवा परिवसति। किहां हमयमृ वाणमंतरदेव वसेछे। गोयमा। इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणमयस्स कंडस्स जोयणसहस्स बाहल्लस्स। हेगौतम ए रत्नप्रभाना ऊपर ला रत्नमयकांड योजनसहस्रने जाडपणे। उवरि एगंजोयणसय उग्गाहित्ता। ऊपर एकसोजोजन मत वमाडीने। हिट्ठापिएगंजोयणसय वज्जित्ता। हेठे ए कसोजोजन वरजीने। मज्झ मज्झेअट्ठसएसु। मांहि बिचे ८ सो योजन। एत्थणं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा। इहां वाणमंतर तिरछा अ संख्यातगुणा। भोमिज्जानगरावाससहस्सा हवंतित्तिमक्खायं। भूमि मध्येभोपरे नगरना आवासना परिहंत कह्या। तेह भोमिज्जानगरा बाहिरथी

तथा स्वच्छ विकुर्वितानि यानि २ चामराणि तै र्यैत चाकचूपच मचलन समुरतीति वनमालापीडमुकुटकुण्डल स्वच्छस्वविकुर्वितानरणचारुभू षणधरा तथा सवर्त्तुकैः सवर्त्तुभाविभिः सुरभिकुसुमैः सुरचिताः सुष्टु निर्वाचिताः तथा प्रलम्बते इति प्रलम्बाः शोभत इति शोभमानाः कान्ताः कमनीया विकसन्ती चमुकुलिता ग्रामपुष्पमयीचित्रा नानाप्रकारावनमाला रचिता वक्षसि यैस्ते सवर्त्तुकसुरभिकुसुमरचितप्रलम्बशोभमानकान्तविक सवित्रवनमालारचितवक्षसः तथा काम स्वेच्छया गमो गमन येषां ते कामगमाः स्वेच्छाचारिणः क्वचित्कामककामा इतिपाठः तत्र कामम स्वेच्छया कामो मैथुनस्तवा येषान्ते कामकामा ॥ अनियतकामा इत्यर्थः ॥ तथा काम स्वेच्छया रूपं येषान्ते कामरूपा स्त च ते देहा च कामरूपदेहा स्ताम् धरन्ती त्यर्व शीलाः कामरूपदेहधारिणः स्वच्छाविकुर्वितनानारूपदेहधारिण इत्यर्थः तथा नानाविधै वर्णे रागो रक्तता यथा तानि नानाविधवर्णरागा णि वराणि प्रधानानि चित्राणि नानाविधानि चद्भुतानि वा चिह्नगानि देशीवचनात् देदीप्यमानानि निर्मलचारिणि परिधानानि येषां ते नाना विधवर्ण रागवरवस्त्रचित्रचमिवसनाः तथा विविधै देशीनेपथ्यै र्गृहीतो वेषो यै स्ते विविधदेशीनेपथ्यगृहीतवेषाः तथा प्रमुदितकन्दर्पकलहकेलि कोलाहलप्रियाः इति कदर्पः कामोद्दीपन वचा च कलहो राटी केलिः क्रीडा कोलाहलो बोलः कदर्पकलहकेलिकोलाहल प्रिया येषां ते कदर्पकल

इयन्नूपयाइय कंदिय महाकंदिय कोहंडपयगदेवा चंचलचवलचित्तकीलणदवप्पिया गहिरहसियपियगीयणि च्चरती वणमालामेलमउलकुंडलसच्छंदयिउव्वियाभरणचारुभूसणधरा सव्वोयसुरभिकुसुमसुरइयपलंबसोहंत

णिच्चमोतरदवा । मग्धवगच समदाव निपुण गधवगीतविचे गीत रतिमा । चवचसिय चवचत्तिय ईसवारय भूयवारय कंदिय महाकंदियाय कहंडे पय गदया चचसचवलचलवित्त कीलणदवप्पिया । पवपवो पवपमो गणपिसारो भूतवारो कन्दो महाकन्दो कोहंडो पतक १० एतषेनामे चवच चिलखण के कोडारामनेबिये । गहिरह सियपिय मोतमघररा । महिरगभीर पियगीत नृत्यविचे रविचे । वणमालामेलमउल कुंडल सच्छंद विउव्विया भरण चारुभूसणधरा सव्वायसुरभिकुसुम पचवसाउंतकत विकसतिचित्त वणमालारइयवत्था । वनमालेवरो मस्तक सामध्ये पादाजो छायाये विकुर्वाके चाभरण

मूलभेदा इमे चान्ये ऽवान्तरभेदा बहौ ॥ मवपाभिपत्स्यादि ॥ कथं भूता एते पोळशोपि:त्यतधाए-चलचलचपलचित्तक्रीलद्दवप्पिया चमाला च मवस्थितचित्ता सधा चसचपसम तिशयन चपल य कौळर्म पय चितद्रव्य। परिहास क्रौ मियौ यपा ते चसचपलचित्तक्रीवनद्रवप्रिया: सततम्मल द्यारम विशपवसमास तथा गहिरहसिपमीपचवरती ॥ गम्भीरपु इसितगीतमसेनेपु रति येषा त तथा ॥ वणमासामसमउलकुळससम्बदविछ ग्रिपानरचचाळनूमचपराहसि ॥ वनमासामयाभि यानि चामेसमुकुटकुचमसाभि चामसहति ॥ चापीळशब्दस्य प्राकससतचयत। चापीड। शखरक

ज्ञा ध्युन्निरूवा पक्तिरूया एत्थण वाणमंतराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स च्युसखेज्जइभागे तत्थण बहवे वाणमंतरा देवा परिवसंति तंजहा—पिसाया भूया जक्खा रक्खसा किन्नरा किं पुरिसा भुयगवइणोय महाकाया गंधव्वगणा य निउणगंधव्वगीतरइणो अणवन्नियपणवन्नियइसिवा

पुष्प पंचावयारचलिवार । प पांच वच सरस सगन्ध सूक्ष्मा पूजमोक चलो प परिचया । चाळागुरु पवरकुंदरुग्र तुरुक्कम्मात धूम मघमघत गंधचचा भिरामा समधवरमधिया गंधवर्तिभूता । कालागर पवरप्रधान कुन्दरुक्क तुरुक्क सेल्हारसेचरो मघमघायमान सुगन्ध तिचेबरो मस्सनो बाट कुरुछे। पच्चार गचसध चविचा दिव्यतुविच सहसपत्राया । पपसराभासमूलनीये चरीसचित । पक्षाणचालाणसाभिरामा सम्म रयचामसा पद्मासचा । सदक्षा दि माच्पता मनोहरयम्ब सच ररमसय पच्चाले। वक्ष्या मक्षा नीरसा निम्मला निप्पका निक्कळछाया । घणाले मठारपाले नीरज निमल निप्रवम्म नि ष्कछच प्रभासहित । सपभा सखिरीका सउच्चाया पासादीया दरसणिज्जा पमिरूवा परिरूवा । सचात दमनीयके दपचायाम्य पभिरूप प्रतिरूप । एत्थण वाणमंतराण देवाण पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा प । इसौ वाणव्यन्तर देवतामा पर्यासा पपर्यासामा ठामकह्या । तिसुविलोगस्स पसखिज्जर भागे। तीन लोकमाहे _पसख्यातमेंमागे हुवे। तत्थण बहवे वाणमंतरादेवा परिवसति तं । तिहां घणां वाणव्यन्तर देवता वसेछे तेकहेछे—पिसाया भूया जक्खा रक्खसा किंनरा किंपुरसा भुयगवइणो महाकाया। पिशाच भूत यक्ष राक्षस किंनर किंपुरुष भुजगपति महोरग महाकाय। गंधर्व गणाय

महायशा महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंडयलकण्णपीठधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलीकल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण वण्णेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वं संठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुइए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेस्साए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ भोमिज्जाणगरावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ सपरिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिव

दिव्यबल माटाबलि महायश महाबल महाभाग्य महासुखी हारेकरी शोभितछे छाती। कडगतुडियथंभियभुजा आयकडगमुगतलकर्णपीठधारी। कडा बहिरखा तिणें करीने भुजा थंभत बाहुयोपनि एवं विचित्र कंडल गाल पीठनविषे। विचित्रहस्ताभरणा विचित्रमालामउलीकल्लाणगपवरवत्थ रहिया कल्लाणपवरमल्लाणलेवणधरा भासुरबोंदिपलंबवणमालधरा विचित्रहायनाभरणछे। विचित्रमाला मस्तकें मउलीवस्त्र पहिराछे तथा मंगलीक सपरभाराणछेदम दिदिव्यमान माला धारीछे। दिव्येण दिव्येण गंधेण दिव्येण फासेण दिव्येण संघयणेण दिव्यइं संठाणेणं। एकसयधी दिव्य गंधकरी दिव्य वर्णेकरी दिव्य संघयणकरी दिव्यसंस्थानेकरी। दिव्याए इड्ढीए दिव्याए जुइए दिव्याए पभाए दिव्याए छायाए दिव्याए अच्चीए। दिव्य ऋद्धिकरी दिव्य प्रभाकरी दिव्य छायायेंकरी दिव्य किरणेंकरी। दिव्वेण तेएणं दिव्वाए लेस्साए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा। दिव्य तेजेंकरी दिव्य लेश्यायेंकरी दसदिशा उद्योतकरताथका रहे। तेणं तत्थ साणं २ भोमिज्जनगरा वाससयसहस्साणं। ते तिहां आप आपणा भूमि नगरना लाख गमेंकरी। साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं। आपआपणा सामानिक सहस्रेंकरी। आपआपणी अग्रमहिषीयेंकरी आपआपणी पर्षदायेंकरी आपआपणी अनीकेंकरी आप आपणें अनीकाधिपतियेंकरी। आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसि

एकलिकोलाहलप्रियाः सतः प्रमुदितभक्तेन सह विशेषणसमासः ॥ हासबोलबहुलाइति ॥ हासबोलौ प्रचुराय तिप्रभूती असिमुद्गरशक्तिकुन्ता हस्ते यपातेहासपालपचुना। तथा ॥ असिमुद्गरशक्तिकुन्ताहस्ताः ॥ अनेगमणिरयणविविहनिजुत्तचित्तचिम्धगयाइति ॥ अनेक चन्द्रकान्ताद्याः रत्नानि कर्केतनादीनि यानके मणिरत्ने विविध नानाप्रकार नियुक्तानि चित्राणि नानाप्रकाराणि चित्राणि गतानि स्थितानि यथा त तथा शेषं सुगम मन्दरं कालपमहाकाल इत्यादि ॥ दक्षिणोत्तराणां पिशाचानां यथाक्रमभिन्द्रौ कालमहाकालौ भूतानां सुरूपप्रतिरूपौ यक्षाणां पूर्णभद्रमाणिभद्रौ रा क्षसानां भीममहाभीमौ किन्नराणां किन्नरकिंपुरुषौ किंपुरुषाणां सत्पुरुषमहापुरुषौ महोरगाणाम अतिकायमहाकायौ गन्धर्वाणां गीतरतिगीतयशसौ इत्यादि सूत्र पट्टकविकसंठाणसंठिया इइ कपित्थस्य ईषत्पिण्ड तस्य संस्थान तेन संस्थितानि यथा तपपरिहारी चन्द्रप्रभासिदीलाया यानि हितानिति ततो ववार्यो सत्कारसियामयता इति सर्वात्मना स्फटिकमयानि तथा अभ्युद्गता आनिमुख्यमसर्वतोविनिगता सरसता प्रयत्नतया सर्वासु

कतयियसितचित्तवत्तमालरइयवच्छा कामकामा कामरूवदेहधरा नाणाविहवन्नरागवरवत्थचित्तचित्त गणियवसणा विविहदेसिनेवत्थगहियवेसा पमुइयकंदप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया हासा बोलबहुला असि मोग्गरसत्तिकुंतहत्था अणेगमणिरयणविविहनिजुत्तविचित्तचिंधगया सुरूवा महिड्ढिया महज्जुतिया महायसा

वाय मनोहरभूषण धराले सुरभिपुष्प प्रधान रचिवता शोभता कमनीय विकसित नानाप्रकारनो विभूषारचना कोधोले। कामकामा कामरूपदेह धारी नानाविधवर्णरागवरवस्त्रचित्र विचित्ररूपमा निवसना विविधदेशे नेवस्थकिंयाभासा। शोभाविये कामातुरणके देहधारी अनेकविध विचित्र पना विचरय अनेकदेशमा प्रमाणमा गम्याले वेश लेवे। कन्दर्पकेलिकोलाहलप्रिया हासबोलबहुला। प्रमुदित पप पांकीले कन्दर्पचेष्टा क्रीडा नो माहन प्रियले हासना बोल बहुले। असिमरमशक्तिकुंतहस्ता। असिगदाले बाणनेविषे। अनेगमणिरयणविविधनिर्युक्त विचित्तचिह्नमया सुरूपा। पमल मणिरत्न विविध विविधरचित चिन्हले सुरूपले। महर्द्धिका महद्युतिया महायशा महाबला महानुभागा महासुख्या हारविराजमाना। म

घा, एत्थण पिसायाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण बहवे पिसाया परियसति महड्ढिया जहा ओहिया जाव विहरति, काला महाकाला इत्थ दुवे पिसाया इंदा पिसायरायाणो परियसति, महड्ढिया महज्जुइया जाव विहरति। कहिण भंते! दाहिणिल्लाण पिसायाण देवाण ठाणा पण्णत्ता। कहिण भंते! दाहिणल्ला पिसाया देवा परियसति? गोयमा! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्ला उवरि एग जोयणसय उग्गाहित्ता हिट्ठावेग जोयणसय वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थण दाहिणिल्लाण पि

है तिरछा असंख्याता भवनावास नगर तेयना आवासमें तीर्थंकरे कह्या। तत्रभामनगरावासिकहा एवं अशमादिकभवनवर्णपात तथा भाविकवा याव पडिरूवा। तेभाव नगर बहवाके वाहिर भाठसाकारे इम जिम भावनामूल जिमकह्यो तिम कहवा यावत् प्रतिरूप। एत्थण पिसायाण देवा णं पज्जताण ठा प। इहां पिसाच सुरो देवना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। [illegible] तिसविमायम्म असंख्यातभागे। तीनि बालेकाकमे असंख्यातमे भागे छै। तत्थण बहव पिसायादेवा परिवसति। तिहां घणां पिसाचसुरता वसछे। महड्ढिया जहा भाविया जाव विहरति। माटीऋद्धि जिम भावनापतीना यावत् विचरे। काले महाकालेय इत्युवे पिसायरायाणो परिवसति। कालनामें महाकालनामे इहां दोय पिसाचनामे राजा वसछे। महर्द्धिया जाव विहरति। महर्द्धिक यावत् विचरे। कहिणभंते दाहिणिल्लाण पिसायाण देवाण पज्जता इ णं ठा प। किहां हेभगवन् दक्षिणना पिसाच पर्याप्त अपर्याप्तानां ठामकह्या। कहिणभंते दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसति। किहां हेभगवन् दक्षिणनापिसाच देवता वसेछे। गोय मा जंबुद्दीवे २ मंदरस्स दाहिणेणं। जंबूद्वीपनाम द्वीपमांहि मेरुपर्वत दक्षिणपासे। इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए रयणमयस्स कंडस्स जोयणसहस्स बाहल्लस्स। ए रत्नप्रभानामे पृथिवीविषे रत्नमय कांडना योजनसहस्र जाडपणो मांहि। उवरि एगंजोयणसयं उग्गाहित्ता। ऊपरिथी एकसोय ज

ह्रण साण २ घ्यायरक्कटेयसाहस्सीण घ्रघोसि च घरूग वाणमतराण देयाणय देयीणय घ्राहेवञ्च पोरेयच्च सामिञ्च नट्ठिव मह्हरगम घ्राणाइसरसणावच्च कारेमाणा पाळमाणा महयाहयनहगीयवाइयततीतलताल तुडियघणमुइगपडुप्पयाइयरवेण दिव्वाइ नोगनोगाइ नुजमाणा विहरति कहिण नत। पिसायाण देवाण पज्जत्ताण ठाणा पयत्ता। कहिण नते! पिसायादेया परिवसति? गोयमा! इमीस रयणप्पनाए पुढवी ए रयणामयस्सकन्तस्स जोयणसहस्सयाहल्लस्स उवरिएग जोयणसय उग्गाहित्ता हिठावेग जोयणसय वज्जि त्ता मज्के श्रठसु जोयणसएसु एत्यण पिसायाण देयाण तिरियमसखेज्जा नोमेज्जा नगरायाससयसहस्सा नयतीति मस्काय तण नोमेज्जा नगरायाहि वहा जहाठहिठनवणयसाठ तहा नाणियव्वो जाय पडिरू

यथत्र वाणमतराण देवाणय देवीणय पाहत्रय पारेवय सामित्त महित्त मह्त्तरमत्त। पापचो पामरचवदेवन सशयेवरो पमरा पमो वाणव्यन्तर मा देवता तथा पवियतिपचे पोरपपचो यामोपचो पारता वदारपचे। पाचारमर सेवावद वारमापा पाळेमापा। पाघ्रा ईश्वरपये धारता पदा पता पासता। मवराजव महमोपवारेय ततोतसताव तुडिय घवमवय पचपवारवरवर्ष। माह्राचापा मृव गोय वाराव तचो ताम पटित वाजित्रवि गेप पडरमे मर्मकरो। विमार भागभागार भंमयापा विवरति। वेतताना भागभागवता विचरते। वच्चिपमते पिसायार्ष देवाप पज्जत्ता २ प ठा पं। विवो वेभमवन् पिसायदेवता वसेवे पत्रोसा पपवोत्तामा ठामवद्या। वच्चिपमते पिसायादेवा परिवसति। विवो वेभगवन् पिसायदेवता व सवे। पावमा इमामरयवप्पमाएपढवोए रयवामवय वदय घावयसदस्रवाइलय। वमीतस ए रत्नप्रमा पृथिवीय रत्नमयवाड याववमयस्य वाचा दे। पगजायवमय धयाहित्ता। तेहमोहि पवयाजम यान पवगाडोम। विडा एगजायवसय वज्जिता मध्ये पठम जायवसयम। यठे एवसो यावम व र्षीम मोहि पाठसोयाबम देवो। पतप पिसायार्च देवाव तिरियमवयिवा भामिव्वामवराघावसदसदसषा वर्वतिविमव्वाय। पिगायदेवतारा घर

रक्कदेयसाहस्सीण अन्नासिंच बहूण दाहिल्लाण वाणमंतराण देवाणयदेवीणय आहेवच्च जाव विहरति। उत्तरिल्लाण पुच्छा गो० । जहेव दाहिणल्लाण वत्तव्वया तहेव उत्तरिल्लाणपि नवर मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण महाकाले जत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसति जाव विहरति एव जहा पिसायाण तहा भूयाणपि जाव गंधव्वाण नवर इंदेसु नाणत्त भाणियव्व इमेणपि विहिणा भूयाण सुरूवपडिरूवा जक्खाण पुन्नभद्द माणिभद्द रक्खसाण भीममहाभीमा किन्नराण किन्नरकिंपुरुसा किंपुरिसाण सप्पुरिसमहापुरिसा महोरगाण अइकायमहाकाया गंधव्वाण गीतरइगीतजसा जावगीयजसे विहरति—कालेयमहाकाले सुरूवपडि

याश्विराय। तीन परिषदा ० मनोवेगरी ० मनोवाधिपतेवरी। सावसवई पायरक्ष देवसाहसमीप पवेसिव बहूण दाहिणिपिसाच वाणमतराव देवा वव देवीवय पाहेवच पारवत्ता जाव विहरति। सावेस्वार पामरपवेवरी पोर पवी दक्षिणदिशिना वाणमतर देवता देवो पधिपति पोरपति वा वत् विचरे। उत्तरिसाव पच्छा। उत्तरदिशिना प्रश्न। गौतमा जहेव दाहिणिसाव वत्तव्यता तहेव उत्तरिल्लावि भाणि । हेगौतम जिम दक्षिणदिशिना कह्यो तिम उत्तरदिशिना विषय कहवा। नवर मंदरस्स उत्तरेण महाकालय। एतला मेरुने उत्तरपासे महाकालनामे इन्द्र। इत पिसाइंदे पिसायरायावा परिवसति सेसतंच जाव विहरति। पिसायनाराजा विहां वसके तिम शेष जाणवा। एव जहापिसायाण तहा भूयाणपि भाणि०। ह म जिम पिसायने तिम भूतनइने। जाव गंधव्वाणवि भा । यावत् आठमो गंधर्वनिकायलगे कहिये। नवर इंदेस णाणत्त भाणियव्व। एतलोविशेष इन्द्रनामामता विशेष कहिवा। इमेणं विहिणाभूयाण सुरूव[पडिरूवा। ए वि विधेवरी भूतने सरूप प्रतिरूप। जक्खाण पुन्नभद्द माणिभद्दाण भीम महा भीमा। यत्तनिकाये पूर्णभद्र माणभद्र,२ राक्षसने भीम महाभीम २। किन्नराणं किंपुरुषा। किन्नर किंपुरुष ४,। किंपुरुसाण सप्पुरिस महापुरिसा। किंपुरिसने सत्पुरुष महापुरुष, २। महोरगाणं अइकाय महाकाय। महोरगने अतिकाय महाकाय, २। गंधव्वाणं गीयरइ गीयजसा २। गन्धर्वने गी

सायाण देवाण तिरियमसंखिज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं , तेण भवणा जहा ओहिया भवणवासीणं तहेय भाणियव्वा जाव पडिरूवा एत्थ णं दाहिणिल्लाणं पिसायाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे दाहिणिल्लपिसाया देवा परिवसंति महिड्ढिया जहा ओहिया जाव विहरंति काले एत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसति महिड्ढिए जाव पभासे- माणे से णं तत्थ तिरियमसंखेज्जाणं भोमेज्जा णगरावाससयसहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरियाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आय

मध्यभागे। हिठउपरिसो सो योजन वर्जिता मध्य आठसो योजनमध्ये। वेठे एकसो योजन वर्जीने मध्ये आठसो योजन विषे। एतले दाहिणिल्लाण पिसायाण देवाण तिरियमसंखिज्जाण। इहां दक्षिणना पिशाचदेवताना तिरछादिशे असंख्याता। भोमेज्जानगरावाससयसहस्सा हवंतित्तिमक्खायं। भोमेज्जा नगरना लाखगमे कह्या छै तेहने। तेणे भवणा जहा ओहिया भवणवासी तहा भाणि जाव पडिरूवा। ते भवन जिम ओघनो आलावो तिम कहिवा यावत् प्रतिरूप। एत्थणं दाहिणिल्लाण पिसायाण देवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पं। इहां दक्षिणदिशिना पिशाचदेवता पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कह्या। तिसुविलोगस्स असंखेज्जइभागे। तीन आलावाने असंख्यातमभागे। तत्थण बहवे दाहिणिल्ला पिसायादेवा परिवसंति। इहां घणा दक्षिणना पिशाचदेवता वसेछे। महिड्ढिया जहा ओहिया जाव विहरंति। महर्द्धिक जिम ओघना आलावो तिम। काले एत्थ पिसाइंदे पिसायरायाणा प रिवसति। कालनाम पिशाचना इन्द्र राजापणे वसेछे। महिड्ढिए जाव पभासेमाणे। महर्द्धिक यावत् प्रभासित। सेणं तत्थ तिरियमसंखेज्जाण भो मेज्जानगरावाससयसहस्साण चउण्हं सामाणियसाहस्सीण चउण्हं अग्गमहिसीण सपरिवाराण। ते तिहां तिरछा असंख्याता भोमनगर वासलाख आपापणे हुए चारहजार सामानिक देवतासहित चारहजार अग्रमहिषीये सपरिवारे। तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाण सत्तण्हं अणि

य कुमाररायाणो परिवसंति महड्ढिया जहा कालमहाकाला एवं जहा कालमहाकालाणं दोण्हंपि दाहिणिल्लाण उत्तरिल्लाणय भणिया तहा सन्निहियसामाणाणंपि भाणियव्वा संगहणि गाहा—अणवन्निय पणवन्निय इसिवाइयभूयवाइएचेव। कंदियमहाकंदिय कुहंडपयगदेवाय। इमे इंदा—सन्निहियासामाणा धाइविधाए यइसीयइसिवाले इस्सरमहेस्सरेविय हवइसुवत्थविसालेय॥१॥ हासेहासरईविय सेएयत्तहाभवेमहासेए पयगेपयगपएयिज नेयव्वाआणुपुव्वीए ॥२॥ कहिणं भंते ! जोइसियाणं देवाणं पज्जत्ताण २ ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं

भरमा पयाता पयवोप्ताना ठामबद्वा । तिसुविकावरस असंखिज्जभाग । तोन वासत्ताबम पसख्यातमेभागवृत्र । तत्यप बहव भववविमा देवा परिवसंति महड्ढिया जहा पिसाया जाव विहरंति । तिवा पवो पमरा व्यन्तरोव एवता बसेव मवविव तिम पियाय तिम विचरेवे । सन्निहिय सामाविव इत्य पववबेहा पववविमबकाररायाणा परिवसति । सन्निहित सामानिब ए बास्ट्र पने राजा मसवे । महड्ढिया जहा काल महाकाला वव जहा काल महाकाला । महद्दि क विमबास महाकालगीपर वो वत्तरद्विवबद्वा । एवं जहा दुण्हपि दाहिणिल्लाण उत्तराणिव भाणियव्वा । इम त्रिम सवि इत सामानिक हास रमबवी उत्तरसवो बद्वा । तहा सन्निहिय सामाणियाणपि भाणियव्व । तिम सपिहित सामानिक भविता ते प्रमाणे सामानिब वावता । इमा संग्रह गाहा । ए संग्रह गायाबहिय । पण्णविमपणवन्निम इसिवाइयभूयवाइयाचेव । कंदियमहाकंदिय कुहंडपयगदेवाय ॥ १ ॥ पनपत्ती पनपत्ती ऋषिवादी भूतवादी निये वदी महाक्न्दी कायण्डो पतबद ए देवतामा इन्द्र कवेके—इमे इंदा । सन्निहियसामानिय धाइविधाइयतत्वइसिवाल इस्सरमहेस्सरविय हवइसुवत्थविसालेय ॥२॥ सन्निहित सामानिक धाता विधाता तिम ऋषि ऋषिपाल ईश्वर महेश्वर हवे सुवत्स विशाल १ । हासेहासरइ विय सेयभवतहामहासेए पयगेपयगपणविम नायव्वाआणुपुव्वीए ॥ १ ॥ हास हासरति सेत वर तिम महासेत पतंग पतंगपत २ १६ इन्द्रअनुक्रमे । कहिण भंते जोइसियाण देवाण पज्जत्ताण ठाणा प । किहां हे भगवन् ज्योतिषीदेवताना ठा

रूवपुण्णभद्देय । श्रमरवइमाणभद्दे भीमेयतहामहाभीमे ॥ १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्पुरिसेखलुतहामहा पुरिस । श्रइकाएमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥२॥ विहरति कहिणं भंते ! श्रणवन्नियाणं देवाणं ठाणा प० । कहिणं भंते ! श्रणवन्निया देवा परिवसंति गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि हिठायएगं जोयणसयं वज्जिता मज्के श्रठसु जोयणसएसु एत्थ णं श्रणवन्नियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा भवणा वाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेणं जाव पडिरूवा एत्थणं श्रणवन्नियाणं देवाणं ठाणा प० । उववाएणं समुग्घाएणं सठाणेणलो तत्थणं श्रणवन्निया देवा परिवसंति महिड्ढिया जहा पिसाया जाव विहरंति सन्निहियसामाणा इच्छ दुवे श्रणवन्निंदा श्रणवन्नि

तरंति गौतमम । यात गोयजमा विहरति याहा । यावत् गौतयम विचरे गाथा—काळियमहाकाळे सरूपप्रतिरूपमाणभद्रेय अमरवतिमाणभद्रे भीमेय तहामहाभीमे । १ । काल महाकाल सुरूप प्रतिरूप पूर्णभद्र अमरपति माणभद्र भीम तिम महाभीम ८ । १ । किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्पुरिसेखलुतहा महापुरिसे अइकायमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ।२। किन्नर किंपुरुष तिये सत्पुरुष तिम महापुरुष अतिकाय महाकाय गीतरति गीतयश १५ ।२। कहियभते अणपन्नियाणं देवाणं पन्नत्ता २ ण ठा पं । किहां हेभगवन् अनेरा व्यन्तरना सुवतामा ठामकह्यां । कहियं भते अणवन्नियादेवा परिवस ति । किहां हेभगवन् अनेरा व्यन्तर किहां वसे । गौयमा इमीसे रयणप्पभाए पढवीए रयणामयस्सकंडस्स जोयणसयस्स बाहल्लस । हेगौतम ए रत्न प्रभापृथिवीने रत्नमयकांड योजनसहस्र जाडपणे । उवरि जाव पढुम जोयणसएस । अपरता पहुगतयाजम छांडीने तेमांहि १० योजन पहलाम । एत्थण अणिवाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जाभवणावाससयसहस्सा हवतित्ति मक्खाय तेणं जाव पडिरूवा । एमांहि इहां अनेरा व्यन्तरदेवता तिरछा असंख्याता भूहरामोपरे नगर छापेमसा कह्या तीर्थंकरे यावत् प्रतिरूप विचरे । एत्थणं अणवन्नियाणं देवाणं पन्नत्ता २ ण ठाणा पं । इहां अनेरा व्य

भवनभित्तिषु लोके प्रतीतानि तदन्तरेषु विशिष्टशोभानिमित्तानि विविधरत्नानि यथा तानि तथा पञ्जरात् उन्मीलितमिव बहिष्कृतमिव पञ्जरोन्मीलितम् तथाहि किल किमपि वस्तु पञ्जरात् वंशादिमयप्रच्छादनविशेषात् बहिष्कृतमत्यन्ताविनष्टच्छायत्वात् शोभते तथा तान्यपि विमानानीति भावः तथा मणिकनकानां सम्बन्धिनी स्तूपिका शिखरं यथा तानि मणिकनकस्तूपिकाकानि ततः पूर्वपदाभ्यां सह विशेषणसमासः तथा विकसितानि यानि शतपत्राणि पौण्डरीकाणि च द्वारादौ प्रतिकृतित्वेन स्थितानि तिलकाश्च भित्त्यादिषु पुण्ड्राणि रत्नमया वा अर्धचन्द्रा द्वारादिषु तैश्चित्राणि विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्धचन्द्रचित्राणि तथा नानामणिमयीभिः दामभिः रलङ्कृतानि नानामणिमयदामालङ्कृतानि तथा अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णानि मसृणानि तथा तपनीयं सुवर्णविशेषः तन्मय्याः रुचिराया वालुकायाः प्रस्तटः प्रस्तरो येषु तानि तपनीयरुचिरवालुकाप्रस्त

विजयवेजयंतीपडागाच्छत्ताइच्छत्तकलिया तुंगा गगनतलमहिलंघमाणसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मीलियव्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयवत्तपोंडरीया तिलगरयणद्धचंदचित्ता नानामणिमयदामालंकिया अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्जरुइलवालुया पत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा

तथेवरो धवलोपमा विस्तरीके मध्ये पवन मणिकनकमा रतनमा पावर्षकारो भीतें विमान कहते वायें प्रेरो उमायो विजय पच्यन्दय तेहनो वर तार विजय वैजयंती पायबलिकानामे पताकाछे तिहां। छत्रातिछत्रकलिया तुंगा गगनतल अभिलंघमाणसिहरा जालांतर रयणपंजरुम्मिलियव्व मणिकणगथूभियागा। हेर ऊपर बसवसितावे जेथा गगनतल स्पर्शता एहवा जेहना शिखरछे वेहना तथा जालांतर पांजरा दीसतो जालो मणिमय मनोहर। वियसियसयवत्त पोंडरीया तिलगरयणद्धचंदचित्ता नानामणिमयदामालंकिया। विकस्या शतपत्रपौंडरीको भीतवे चित्र तिलकरत्न अर्धचंद्राकार द्वारे एहवा चित्रामवे चित्र अनेकमणिमय अलंकृतवे चित्रामछे चित्र अनेक मणमुक्तवे माटि। अंतोबाहिंच सण्हा। बाहिर सुकमाल वे। तवणिज्जरुइलवालुया पत्थडा सुहफासा सस्सिरीया सुरूवा पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। तपनीय सोनानीपरे मनोहर प्रवर

प्रसृता याः प्रभा दीप्तिः तया सिताति धवलानि अभ्युद्गतोच्छ्रितप्रभासितानि तथा विविधानां मणिकनकरत्नानां या भक्तयो विच्छित्तिविशे

षाः तैः चित्राणि आश्चर्यभूतानि विविधमणिकनकभक्तिचित्राणि। वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताकाच्छत्रातिच्छत्रकलिता वातोद्धूता वायुकम्पिता वि

जयसूचकाः सारर्धमूर्धिका वैजयन्त्यभिधाना याः पताका अथवा विजयन्तीति वैजयन्तीभ्यो पार्श्वकर्णिका उच्यते तत्प्रधाना वैजयन्त्यः पताका एता एव

वैजयन्त्यः पताकाः छत्रातिच्छत्राणि उपर्युपरि स्थितानि छत्राणि तैः कलितानि वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताकाच्छत्रातिच्छत्रकलितानि तुङ्गानि

नि तथा गगनतलम् अनुलिखत् अभिलङ्घयत् शिखरं येषां तानि गगनतलानुलिखच्छिखराणि तथा जालानि जालकानि तानि च प्र

तन। जोइसिया परिवसति? गो०। इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तणउ

ए जोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता दसुत्तर जोयणसय बाहल्ले तिरियमसंखिज्जे जोइसविसए एत्थ णं जोइसियाण

देवाणं तिरियमसंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं ते णं विमाणा अद्धकविट्ठग

संठाणसंठिया सव्वफालियामया अब्भुग्गयमूसियपहसियाइव विविहमणिकणगरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुत

ता। कहि णं भंते जोइसिया देवा परिवसंति। किम ज्योतिष्कावास ज्योतिषीदेवता स्वामी। गौतम! इमोसरत्नप्रभापृथ्वीथ सबसमरमणिरमणीयाद् भूम

भागादयस्मादूरमवर्षबहु उपरता। इमोतम च रत्नप्रभापृथिवीयको ग्रीम रमणीयक भूमिभागे तेषयको सातसे नेऊयावन अवाधे। दसय

जोयणयर बाहल्ले तिरियमसंखिज्जे बाहविषमप ये। ते विषये १०० योजनमांहि विषये ज्योतिष्की ज्योतिषीना वासावस्था। एतमां जोइसिया

तिरियमसंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं। तत्र ज्योतिषीदेवना तिरछा असंख्याताना ज्योतिषीमा विमान भाख्याते

वरे कह्या। ते विमाना अर्द्धकपिट्ठसंठाणसंठिया सव्व फलिहमया। तत्र विमान अर्धकोठ संस्थान संस्थित्या सर्व स्फटिक रत्नमय छे तथा। ए

सर्वसिवपर्वतिना सविविधमणि कनकरत्न भक्तिचित्ता वायाद्धुतविजयवैजयन्तीपताका। वायोद्धूत विजित मगर सपथी दिग्विजयीवे दोरित

वमन्तरितेषु लोके प्रतीतानि तदन्तरेषु विच्छित्तिशोभितानि विचित्ररूपाणि यथा तानि तथा पञ्जरात् उन्मीलितानिव बहिष्कृतानिवपञ्जरोन्मीलि-
तवत् तथाहि किल किमपि वस्तु पञ्जरात् वंशादिमयप्रच्छादनविशेषात् बहिष्कृतमत्यन्ताविनष्टच्छायत्वात् शोभते तथा तान्यपि विमाना-
नीति भावः तथा मणिकनकानां सम्बन्धिनी स्तूपिका शिखरं येषां तानि मणिकनकस्तूपिकाकानि ततः पूर्वपदाभ्यां सह विशेषणसमासः तथा वि-
कसितानि यानि शतपत्राणि पौण्डरीकाणि च द्वारादौ प्रतिकृतित्वेन स्थितानि तिलकाश्च भित्त्यादिषु पुण्ड्राणि रत्नमया या अर्धचन्द्रा द्वारादिषु
तैश्चित्राणि विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्धचन्द्रचित्राणि तथा नानामणिमयीभिः दामभिः रलङ्कृतानि नानामणिमयदामालङ्कृतानि तथा
अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णानि मसृणानि तथा तपनीयं सुवर्णविशेषः तन्मय्या रुचिराया वालुकायाः प्रस्तटः प्रस्तरो येषु तानि तपनीयरुचिरवालुकाप्रस्त-

---

विजयवेजयंतीपडागाछत्ताइछत्तकलिया तुंगा गगनतलमहिलंघमाणसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मीलियव्व
मणिकणगथूभियागा वियसियसयपत्तपोंडरीया तिलगरयणद्धचंदचित्ता नानामणिमयदामालंकिया अंतो
बहिं च सण्हा तवणिज्जरुइलवालुया पत्थडा सुहफासा ससिरीयरूवा पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा

तर्वंवरो धवलोपमा विस्तरीने मध्ये पताका मणिकनकमा रत्नना पायर्दकारो भीतें चित्राम करते वाये मरो चमाको विजय पताका तेहनो वर
तार विजय वैजयंती पाताकाकामें पताकाके तिहां । छत्रातिछत्रकलिया तुंगा गगनतल मभिलंघमानसिहरा जालंतर रयणपंजरुम्मि
लियव मणिकनकथूभियागा । छेह ऊपर कमलहितके अंचा गगनतल सुधता ऊंचा वणा चित्रके भेदना तथा जालांतर पांजरा वांमनोजालो म
णिमय गवाक्ष । वियसियसयवत्त पोंडरीया तिलगरयणद्धचंदचित्ता नानामणिमयदामालंकिया । विकस्या शतपत्रसरोवरो भीतके तिहां तिलकरत्न
अर्धचन्द्राकार द्वारे एहवा चित्रामके तिहां अनेकमणिमय वर्णमतके चित्रामके तिहां अनेक वस्तुरतके शोभि । अंतोबाहिर सण्हा । बाहिर सुकमाल
छे । तवणिज्ज रुइलवालुया पत्थडा सुहफासा ससिरीया सुरूवा पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । तपनीय सोनानीपरे मनोहर मतर

विद्यु प्रसृता याः प्रभा दीप्ति तया सिताानि धवलानि अभ्युद्गतोच्छ्रितप्रभासितानि तथा विविधानां मणिरत्नानां या भक्तयो विच्छित्तिविशे या तानि चित्राणि वायुधूतानि विविधमणिरत्नजालखचित्राणि॥ वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताकाच्छत्रातिच्छत्रकलिता वातोद्धूता वायुकम्पिता वि जयोन्मुखस्य सार्वभूमिका वैजयन्त्यभिधाना याः पताका अथवा विजयन्तीति वैजयन्तीनां पार्श्वकर्णिका उच्यते तत्प्रधाना वैजयन्त्यः पताका सा एव विजयवैजयन्त्यः पताकाः छत्रातिच्छत्राणि उपर्युपरि स्थितानि छत्राणि तैः कलितानि वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताकाछत्रातिच्छत्रकलितानि तुङ्गानि उच्चानि तथा गगनतलम् अम्बरतलम् अनुलिखत् अभिलङ्घयत् शिखरं येषां तानि गगनतलानुलिखच्छिखराणि तथा जालानि जालकानि तानि च प्र

मन ! जोइसिया परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तणउ ए जोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता दसुत्तर जोयणसय बाहल्ले तिरियमसंखिज्जे जोइसविसए एत्थ णं जोइसियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं ते णं विमाणा अद्धकविट्ठग संठाणसंठिया सव्वफालियामया अब्भुग्गयमूसियपहसियाइव विविहमणिकणगरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुत

मवता । भदंत कहां ज्योतिष्क देव परिवसति । किम हेमगवन् ज्योतिष्कदेवता बसते । गौतमा इसीरत्नप्रभापृथ्वीके बहुसमरमणीय भूमि भागसे सातसौ नब्बै योजन ऊपर जानेपर । इसीतरह य रत्नप्रभापृथ्वीके सर्वसमभाव भूमिभागसे लेकरको सातसे नेव्यायन जाने । इसन रत्नसनमर्व बाबते तिरियम असंखे ज्योतिष्क विषय में । ते तिर्यं १० याजनमाँ ही निका यथस्थाना ज्योतिष्कों का बासा ह्या । यहाँ पर ज्योतिष्क देवों के तिरियम असंख्या ज्योतिष्क विमानावास सयसहस्सा हवंतितिमक्खाय । ऐसी ज्योतिष्कदेवता तिरछा असंख्याताना ज्योतिष्कोंका विमान सारसगमे तार्थकर कहा । तब विमाना आधा कविट्ठ संठाण संठियाव सब स्फटिकमया । तेवर्णाविमान अर्धकोठ समान आकारवाले सबस्फटिक रत्नमयके तथा । व अब्भुग्गयमूसियपहसियाइव विविहमणि कणगरयण भत्तिचित्ता वायाधुय विजय वैजयन्ती पताका । वायोवश विविधमत मगर सबकी विविधवर्णों के दोषित

मुकुटे येषां ते प्रत्येकंस्वनामाङ्कप्रकटितचिह्नमुकुटाः चिमुक्ते भवति चद्रस्य स्वमुकुटे चद्रमवमल लोचनं समामाचितप्रकटितं चूर्णस्य मूषमवर्णं पद्मरूपप्रमरूमलं मद्यस्य मद्यमाकार तारकस्य तारकाकारमिति। वैमानिकसूत्रे चसुरचीतिविमानसहस्राणि सप्तनवतिविमानसहस्राणि चयोविम तिविमानामीति ॥ बत्तीसमट्ठावीसा बारसमट्ठ चउरोसयसहस्साइत्यादि ॥ सस्यामीलनेम परिमाणमीमाने॥ तेष मिगमहिसेत्यादि ॥ सौधर्मदेवा मृगरूपप्रकटितचिह्नमुकुटाः, ईशानदेवामहिषरूपप्रकटितचिह्नमुकुटाः सनत्कुमारदेवा वराहरूपप्रकटितचिह्नमुकुटा, माहेन्द्रदेवाः सिंहरूपप्रकटितम कुटचिह्नाः, ब्रह्मदेवलोकाः छगमरूपप्रकटितमुकुटचिह्नाः लांतकदेवा दुर्दुररूपप्रकटितमुकुटचिह्नाः, शुक्रकल्पदेवा हयमुकुटचिह्नाः सहस्रारकल्पदेवा गजपतिमुकुटचिह्नाः, आनतकल्पदेवा भुजगमुकुटचिह्नाः, प्राणतकल्पदेवाः खड्गमुकुटचिह्नाः, खड्गचतुष्पदविशेष आटव्यः आरणकल्पदेवा वृषभमु कुटचिह्नाः अच्युतकल्पदेवा विडिममुकुटचिह्नाः ॥ वरकुण्डलत्ताविणा इति ॥ वराभ्यां कुण्डलाभ्याम् घोटित माननशीकृत मानन येषां ते तथा श्रप सुमम-सौधर्मकल्पसूत्र। श्रविमासीमासिवचासे इति ॥ वज्रपाणी इति ॥ वज्र पाणावस्य इति वज्रपाणिः असुरादिपुराणां दारणात् पुरंदरः ॥ सप

यचिधमउक्ता महिड्डिया जायप्पनासेमाणा तेण तत्य साण २ विमाणावाससयसहस्साण साण २ सामाणि यसाहस्सीण साण २ अग्गमहिसीण सपरियाराण साण २ परिसाण साण २ अणियाण साण २ अणि

एतके मूपमकुल सवम सव ते कविरा कोमाव चद्रमो चद्रमवषमा मुकुटचिह्नके मवहिंव यावत् प्रभासयित त। तेच तत्र साणं विमाणावाससयस हस्साणं। तिहां पाप चापचेंविमाने बावागमेकरी। साण २ सामाणिकपाणस्सीण। पाप पापप सामाणिकसहस्रेकरी॥ साण २ अग्गमहिसीणं सप रियाराणं। पाप चापको अग्रमहिषीयेकरी सपरिवारे। साण २ परिसाणं साण २ अणियाणं साण २ अणियाहिवइ य साण २ आयरक्खदेवसाहस्सी णं। पाप चापचे परषदायहित पापपापको अनीकेकरी पाप पापको अनीकाधिपतें तिचेंहहित पाप पापचे आत्मरक्षकदेवे सहस्रेकरी। अनेकिप बहवें आवलियाव देवाव देवीवय आहेवच आव विचरति। अमरा सर्वा व्यापियोमा देवताना इन्द्रोना अधिपतिपणा यावत् विचरेछे। चंद्रमसूरो

टानि तथा सुस्वरपक्षाणि मुखरपक्षाभि या शेषं प्राग्वत् यावत् बहस्सईपंदा ॥ पृहस्पतिचंद्रसूर्यशुक्रशनैश्चरराहुधूमकेतुबुधांगारकाः कर्थभूता इत्याह-तप्ततपनीयकनकवर्णा इषत्रक्तवर्णाः तथा ये ग्रहा उक्तव्यतिरिक्ता ज्योतिष ज्योतिश्चक्रे चारं चरंति केतवा य च गतिरतिका य चाष्टा विंशतिविधा नक्षत्र देवगणा ते सर्वेपि नानाकारसंस्थानसंस्थिता च पंचवर्णा तप्ततपनीयकनकवर्णाः तारकाः पञ्चवर्णाः एते च सर्वेपि स्थितलेश्या चवस्थिततेजोलेश्याका तथा य चारित्र चाररता ते अविश्रामनक्षत्रगतिका तथा सर्वेपि प्रत्येक नामाकन स्व २ नामाकम प्रकटित चिह्न

पभिरूया एत्थण जोइसियाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प०, तिरियलोगस्स ध्रुसखेज्जइभागे तत्थण बहवे जोइसिया देवा परिवसंति तं०-बहस्सइचंदासूरासुक्कासणिच्छराराहुधूमकेतुबुधाअंगारगा तत्ततवणिज्जकणगवन्ना जेगहा जोइसंमि चारं चरंति केतूयगतिरइया अट्ठावीसइविहाय नक्खत्ता देवयगणा नाणासंठाणसंठियाउय पंचवन्नाउ तारयाउ ठियलेस्साचारिणो अविस्साममंडलगइ पत्तेय णामकपगडि

यचिन्हगत मकुटे यभी अचे सुरुपदन्ता देवसाम्य धभिरूप समुत्प्रतिरूप। महत्व काररिश्राव इत्यावं पन्यताव ठा र्ण । इन्हो ज्योतिषीणा प भीता पपर्याप्ताना ठामबचा। तिसचायस्य असंख्येयतमभागे। तौन बोचकाके चसस्थानतेमभागे तुष। तत्रयत्रचे कारसिया देवा परिवसंति त । तिरा ज्योतिषोदेवता बसड़े तवन्ते। बहस्सइ चदासूरा सका सचिच्छरराहू धूमकेतु बुधा अंगारका तत्ततवणिज्ज कनकसाभा। बृहस्पति चद्र सूर्य शुक्र शनैश्चर राहु धूमकेतु बध मगल बस कैचयाहे तरत तपनीय कनकवर्णे। जेग्रहा जेयसंधि चारचरंति केतवो घार मगयरइया। ज ग्रह ज्योतिषोचार चारच्चै गतिकरो सपमानेष्णे एहरा। अट्ठावीसइविहाय नक्खत्त देवगणाभा नाणासठाणसठियाभा । २८ नक्षत्र पाविसेचताना पाखिसमू ह भाकार पनेकसंस्थितचे। पंचवन्नाभा तारधाभा तिवलचारिभा। तारा पञ्चवर्णंको प्रवस्थितचे तथा ते चाररतचे। भविश्यासामडल गइपत्तेयना मविय पर्गाडवयविधमडा मत्तिउडिया जाव पभासेमाथा। ते विश्रामाविना मांसचामीबति फिरता प्रत्येके २ नामाराहित मकट मुकुट चिह्ने वेश्यके

णिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्सा इं बहुगाइं जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं सोहम्मीसाणसणंकु मारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेविज्जणुत्तरेसु तत्थ एत्थणं वेमाणि याणं देवाणं चउरासीविमाणसयसहस्सा सत्ताणउइंचसहस्साइं तेवीसं विमाणा हवंतीतिमक्खायं ते णं वि माणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पहा ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा इत्थणं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ता अपज्जत्ताणं ठाणा प० तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे वेमाणिया देवा परिवसंति स०—सोह

दूर चपलता। घणी सतमनो आडाबाडी सदा चपायो जाव। एतलं सोहम्मीसाण सणकुमार माहेंद बंभलोग लांतग महासुक्कम सहस्सार आणय पाणय आरण अच्चुय नविक्क अणुत्तरम। इहां सौधम ईशान सनत्कुमार माहेंद्र ब्रह्मलोक लांतक महाशुक्र सहस्रार आनत प्राणत आरण अच्युत ग्रै वेयक ८ अनुत्तर ५। एतलं वेमाणियाणं देवाणं चउरासीतिविमाणावासयसहस्सा सत्ताणउयसहस्सातिवीस विमाणा हवतीतिमक्खाय। तिहां वैमा निकदेवतानां ८४ लाखविमान ऊपर सत्ताणुहजार पण भले ते वीस एतली विमाननीसंख्या कह्या वीतरागे कह्या। तेविमाणा सव्वरयणामया। तेविमान सव रत्नमयछे। अच्छा सण्हा घट्ठामट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडछाया सप्पहा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरसणिज्जा अभि रूवा पडिरूवा। सूक्ष्म घठारा मठारा नीरजा निर्मल नि पंक अचरानो प्रांति नथी प्रभासहित शोभा उद्योतसहित मनप्रसन्नकारी आवतायाग्य अभिरूप प्रतिरूप। एतलं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठा० प०। इहां वैमानिकदेव पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठाम कह्या। तिसुविलोगस्स असंखे ज्जइभागे। तीन लोकनाक असंख्यातमभाग। तत्थ बहवे वेमाणिया देवाणं परिवसंति सं०। तिहां घणा वैमानिकदेवता वसेछे। सोहम्मीसाण स

पाह्नियड्ंग साण २ श्रायरक्खदेवसाहस्सीण श्रन्नेसिंचबहूण जोइसियाण देवाणय देवीणय श्राहेवच्च जाव विहरति चांदिमसूरियाय एत्थ दुवे जोइसिंदा जोइसियरायाणो परिवसति महिड्ढिया जाव पन्नासेमाणा ते ण तत्थ साण २ जोइसियविमाणावाससयसहस्साण चउण्हं सामाणियसाहस्सीण चउण्हं श्रग्गमहिसीण सपरिवाराण तिण्हं परिसाण सत्तण्हं श्रणियाण सत्तण्हं श्रणियाहिवईण सोलसण्हं श्रायरक्खदेवसाहस्सीण जोइसियाण देवाणय देवीणय श्राहेवच्च जाव विहरति। कहिण भंते ! वेमाणियाण देवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० ? कहिण भंते ! वेमाणियादेवा परिवसति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरम

याव स्वकूके आसिर दा आसिरायानो परिवसंति। चन्द्रमा सूर्य पद्माय द्वौ ज्योतिषीदेवताको राजपत्नी बसेछे। महर्द्धिया जाव पभासेमाणा। महर्द्धिक यावत् प्रभासहितवका। तव तवसार्थ आसिवविमानावास मयसहस्सार्थ। ते तिहां आपना ज्योतिषीनाविमान लाखागमेंवरो। चउ चई सामानिकाइरसोच चउण्ह अग्रमहिसीच सपरिवाराच तिवहपरिवाचे सतवई अनिकाच सतवह अनिकाधिपति सोलसच आयरक्ष दे वसाहस्सीच चषेसिंवबहूच जोइसियाच देवाचय देवीचय आहेवच जाव विहरति। चार अग्रमहिषीवेंकरो सपरिवारे सोतिपरिषदायेंकरो ० चनो केंकरो ० चनोधिपतियेंकरो सोलेहजार आत्मरक्षकेंकरो अनेरापण ज्योतिषोना देव देवोना अधिपतिपणे यावत् विचरे। कहिण भंते वेमाणियाण पज्जत्ता २ णं ठा प । किहां हेभगवन् वैमानिक पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। कहिण भंते वेमाणियादेवा परिवसति। किहां हेभगवन् विमान वासो बसेछे। गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदम सूरय गहगणणक्खत्तताराख्वाणं। गेयोतम ए रत्न प्रभाये पृथ्वी समारमणीक भूमिभागथी ऊंचो चन्द्र सूर्य ग्रहगणे नक्षत्र ताराख्प वर्षा ओलंगना सेवरा। बहुइं जोयणसहस्साइ बहुइं जोयणसय सहस्साइ बहुइं जोयणकोडीओ। घणाजोजनना सेवरा घणा लाखनी मतसहस्र घ.णे घणाजोजनना लाखो। बहुगीओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढ

हत्थाभरणा विचित्तमालामउलीकल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदीपलंबव
णमालधरा दिव्वेण वन्नेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण संघयणेण दिव्वेण संठाणेण दिव्वाए इड्ढीए
दिव्वाए जूइए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तएण दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उ
ज्जोयमाणा पभासेमाणा तेण तत्थ साण २ विमाणावाससयसहस्साण साण २ सामाणियसाहस्सीण सा
ण २ तायत्तीसगाण साण २ लोगपालाण साण २ अग्गमहिसीण सपरिवाराण साण २ परिसाणं साण
२ अणियाण साण २ अणियाहिवइण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण वेमाणियाणं

दिव्य संठाणे। दिव्यगंध दिव्यवर्णेंकरी दिव्य संघयणेंकरी दिव्यसंठाणकरी। दिव्याए ऋद्धीए दिव्याए ज्युतीए दिव्याए प्रभाए दिव्याए छायाए दिव्याए अ
र्चाए दिव्येतेजए दिव्याए लेश्याए। दिव्यऋद्धिकरी दिव्यद्युतिकरी दिव्यप्रभायेंकरी दिव्यछायायेंकरी दिव्यअर्चेंकरी दिव्यतेजकरी दिव्यलेश्यायेंकरी।
दशदिशाना उद्योतमाना प्रभासेमाना। दश दिशिनविषे उद्योतकरता प्रभासता विस्तारताथका। तेण तत्थसाण विमाणावाससयसहस्साण ते ति
हां आपआपणाविमानने लाखमेंकरी। साण २ सामानियसाहस्सीण साण २ तायत्तीसगाण साण २ लोगपालाण साण २ अग्गमहिसीण सपरिवारा
णं। आपआपणा सामानिकसहस्रेंकरी आपआपणा त्रायस्त्रिंशकेंकरी आपआपणा लोकपालेंकरी आपआपणा अग्रमहिषीयेंकरी सपरिवारे। साण २ परि
साणं साण २ अणियाण साण २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीण। आप आपणी परिषदायेंकरी आप आपणी अनीकेंकरी आप आप
णी अनीकाधिपतिंकरी आपआपणा आत्मरक्षकसहस्रेंकरी। अन्नेसिंचबहूण वेमाणियाण देवाण देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त।
अनेराघणा वैमानिकदेवता देवीना अधिपतिपणे पौराधिकपणे स्वामीपणा भर्तारपणाथका। आणाईसरसेणावच्च कारमाणा पालेमाणा। आज्ञा ई
श्वरपणे प्रवर्तता करता पालता। महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडिय घणमुइंग पडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति।

म्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेवज्जगाणुत्तरोववाइया देवा तेणं मियमहिसवराहसीहछगलदद्दुरहयगयवइभुयगखग्गउसभंकविडिमपागडियचिंधमउडा पसिढिलवरमउडतिरीडधारिणो वरकुंडलुज्जोइयाणणा मउडदित्तसिरया रत्ताभा पउमपम्हगोरा सेया सुहवण्णगंधफासा उत्तमवेउव्विणो पवरवत्थगंधमल्लाणुलेवणधरा महिड्ढिया महज्जुइया महायसा महाबला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंडतलकण्णपीढधारी विचित्त

बंभार माहेंद्र ब्रह्म लांतक महाशुक्र सहस्सार प्राणय प्राणत आरण प्रच्युत ग्रवेयकप्रनुत्तरोपपातिक देवा। सौधर्म ईशान सनत्कुमार माहेंद्र ब्रह्म लांतक महाशुक्र सहस्सार प्राणत प्राणत आरण प्रच्युत ग्रैवेयक अनुत्तरोपपातिक देवता वसे छे। तेह मिग महिष वराह सीह छगल दादुर ह वमय भवन पन्न वसभ कविडि प्रगटित चिंधमउडा। तेहना चिन्ह कहे छे– मृग महिष वराह सींह छाग दर्दुर अश्व गज भुजग खड्ग वृषभ चाकला प १२ इत्यादिकना प्रधान चिन्ह। सिढिल वरमउड तिरीडधारणहा वरकुंडल उज्जोयमाणमुखा। उपजना प्रधानमुकट तिरीटमाकर आभरण धरणा कुंडल रो उद्योत छेहना। मउडदित्तसिरवारत्ताभा कमलपत्रसमाना मेघासरखा गंध पाचा। मुकट करी दिप्तवरता पद्मगोपरे गौरदेह स्वेत उज्वल गंधस्य। उत्तमविकुर्वणायवरवत्थगंध महासुखा रत्न। वस्त्रमल्लो विलेपना लेहनो प्रवरवस्त्र गंधमालाविलेपनना धरणहार। महरिद्धिया महायसा महाबलामा महासुखा हारविराजमान वच्छस्थलविषयभिपमवा। महर्द्धिक महायशवंत महाभागो महासुखो हारे करी विराजमान होयो हढा कहारखा तिबेकरी थम्भा छे भुज। अंगयकुंडलमट्ठगंडपीठधारी विचित्तहत्थाभरण विचित्तमाला मउड कल्याणकपवर वस्त्र परिहिया। अंगदबाजूबंधकुंडल तिबे करी कर्णपीठधारता विविध आभरणे करी छे विचित्रमाला मुकट कल्याणकारक वस्त्र परिहिया छे। कल्याणक प्रवरमाल्यानुलेपना भासुरबोंदीसम व पमालधरा। कल्याणकारी विलेपन करी बांधी भासुर देह प्रलंब वनमाला धारी छे। दिव्येन वर्णेन दिव्येन गंधेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संघयणेन

जे य़ुसखेज्जाउं जोयणकोडीउं य़ुसखेज्जाउं जोयणकोडाकोडीउं य़ायामविक्खंभेण य़ुसखेज्जाउं जोयणकोडाकोडीउं परिक्खेवेण सव्वरयणामए य़च्छे जाव पडिरूवे तत्थणं सोहम्मगदेवाणं बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेणं विमाणा सव्वरयणमया य़च्छा जाव पडिरूवा तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंचवडेंसया प०त—य़सोगवडेंसए सत्तवण्णवडेंसए चंपगवडेंसए चूयवडेंसए मज्झे तत्थ सोहम्मवडेंसए तेणं वडेंसया सव्वरयणामया य़च्छा जाव पडिरूवा, एत्थणं सोहम्मगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प०, तिसुवि लोगस्स य़ुसखेज्जइभागे तत्थणं बहवे सोहम्मगदेवा परिवसंति महिड्ढिया जाव पभा-सेमाणा तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ य़ग्गमहिसीणं साणं २ सामाणियसाहस्सी

बाजो यावत् विपुलपर्थे। यसविख्यापा यायवाताबालोमा परिक्षेपेण प । यसख्यातायाजनो बाटाबाजो परिक्षे योजर। सवरत्नपामय यच्छे याव पडिरूवे। सव रत्नमयच्छे निमल चाक्षमे प्रतिरूप। तत्थ सोहम्मदेवाणं बत्तीस विमाणावाससयसहस्साइं भवंतीतिमक्खायं। तिणा सौधमना मदेवताना १२ बाधविमान तोर्यंवरे बया। तेवविमाव सव्वरत्नामया यच्छा याव पडिरूपा। ते विमान सवरत्नमयच्छे निमल यावत् प्रतिरूप। तेव विमानानं बहुमध्यदेशभाग पंचवडंसिया पं । ते विमानने वर्वी मध्यदेशभागे माटा पांच बतमवविमान कहेवे—यसोगवडेंसए सत्तवण्ण व चंप यव • चूय व मध्ये रत्न सौधम्म । यमावबतयम यस्तपर्ण व चम्पक व चूतवतंसक विचे इहां सौधमावतंसक ५। तथंवडिंसिया सव्वरयणामया यच्छा याव पडिरूपा। ते बतमवविमान सर्वं रत्नमय निर्मल यावत् तेहने तुम ओलोपूपमवो। पज्जत्त सोहम्म देवाण पज्जत्ता २ ठाणा प । इहां सौधमदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। तिसुविलोयस्स यसंखिज्जइभागे। तीन लोकलोकने असंख्यातमेभागे। तत्थणं बहवे सोहम्मगदेवाण परिवसंति। तिहां घणा सौधमदेवता वसेछे। महड्ढिया याव पभासेमाणे। महर्द्धिक यावत् प्रभासवित। तव तत्थ साण २ विमाणावाससयसहस्सा

देवाण देवीणय छाहेवच्च पोरेवच्च सामित्त नट्टित्तं महत्तरगत्तं छाणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयततीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ नोगनोगाइ नुजमाणे विह रंति । कहिण नंत ! सोहम्मगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० कहिण नंते ! सोहम्मगदेवा परिवसंति १ गो० । जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्पनाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ नूमिना गाओ उड्ढ चंदिमसूरियगहगणनक्खत्तताराण बहूणि जोयणसयाइ बहूणि जोयणसहस्साइं बहूणि जोयण सयसहस्साइं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढ दूरं उप्पइत्ता एत्थण सोहम्मे ना म कप्पे पन्नत्ते पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने अद्धचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालिभासरासिवन्ना

म टामूल्प मात्र मात्रिव तथो तत्र ताव व'टत ववमवक्र पपट वाभिवने मव्द्देवरो दिम्म मामवतावका विपरेंते। कहिवभते सोहम्मदवाण पज्जत्ता २ णं ठाणा प । किञ्च हे भगवन् सौधर्मदेवतानां पर्याप्ता पपर्याप्तानां ठामवन्ना। कहिवभते साहम्मगदेवा परिवसात। किञ्च हे भगवन् सौधर्मदेवता म सेवे। मायमा जम्बूद्वीप २ मदरस्यपव्वयस्य दाहिणेण। हे गौतम जम्बूद्वीपनामा द्वीपनेविपे मेरुपवत दक्षिणपासे। इमीसे रयणप्पभाए पढ वीए मद स मरमणिज्जाया भूमिभागाया। ए रत्नप्रभापृथिवीतणो घणी समारमणीक भूमिभागथी उंचा। चंदासूरियागहगणनक्खत्तताराकवाण। चन्द्र सूय गृहगण नक्षत्र तारा रूपथी। बहूणि जोयणसयाइ जाव बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढंदूर उप्पइत्ता। योजनगणसय घणेगे यावत् घणीयोजननी कोडाकोडीमा उपाडो छे। एत्थणसोहम्मनामेकप्पे प०। तिहां सौधर्मनामे कल्प कह्या। पाईण पडीणाए ० उदीणदाहिणविच्छिन्ने अद्धचंदसंठाण संठिया। पूर्व पश्चिमलांबा उत्तर दक्षिण विस्तरे अर्धचन्द्रसंस्थाने संस्थित छे। अच्चीमालो भासियरासिवन्नाभे। किरणमोरथो सहित छे भासुराभ्मे पथम तत्कसरी खा छे। असंखिज्जाओ जोयणकोडाओ असंखिज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेण। असंख्यातायोजननी कोडी असंख्यातायोजननी कोडा

मत्कुमारकल्पे-सप्तक सपरिविदिशति ॥ समामाः पताः पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपा॰ पांडा यस्मिन तूरमु स्पतने तरसपत्र समामस्य घमादिषु चेतिस मानस्य सनाव॰ ॥ सपरिविदिशति ॥ समानाः प्रतिदिशो विदिशो यत्र तत्सप्रतिदिक् सामानिकसपहाजगाथा-चउरासीत्यादि ॥ सौधर्मेंद्रस्य चतुर शीतिसामानिकसहस्राणि ईशानेंद्रस्या शीतिः सनत्कुमारस्य द्वासप्तति॰ माहेंद्रवरावस्य सप्तति॰ ब्रह्मलोकेंद्रस्य षष्ठि॰ लांतकेंद्रस्य पंचाशत महा शुक्रेंद्रस्य चत्वारिंशत् सहस्रारेंद्रस्य त्रिंशत् प्राणतमाधर्वेद्रस्य दशसामानिकसहस्राणि ॥ यवतसंकाद्यादितद्समासाइति दुरवगाधा सता विने

कुण्डयिलिह्जिमाणगण्डे महिड्डिए जाव पन्नासेमाणे सेण तत्थ वत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साण चउरासीए सामाणियसाहस्सीण तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्ह लोगपालाण अठण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवइण चउण्ह चउरासीण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण सोहम्मकप्पवासीण वेमाणियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च कुव्वमाणे

वामसरमहम्माहिवर । मघवा पाकशासन देवतानां बलवोना वलिनाई आधाधिपति ३२ लाखविमाननाधवो । ऐरावणवाहनमरेंद्र परसवरवल धर । ऐरावण वाहनके जडण सरेंद्र रजबिना मगनपर निमलवस्त्रधारी । माला यमालमऊड नवहमचारुचित्तचंचल कुडल विलिखमानगल । माध्य, के कड मुकुट मया हमनाचार त्रिविध चणहकरो विलपमान मज्ञस्वर्के ते देवता । महड्डिव जाव पमासमाव । महद्धिक यावत् सवलउरासा कर ता । तत्य वत्तीसाए विमाणावासमयसहस्साण चउरासीए सामाणिय साहस्सीण तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्ह लोगपालाण अट्ठण्ह अग्गमहिसाणं सपरिवाराण । तिहां ३२ लाखविमाननो स्वामी ८४ सहस्र सामानिकेकरी त्रायस्त्रिंशक पूज्यनीकदेवतासें करी ४ लोकपालें ८ अग्रमहिषीयेंकरी सपरिवारे । तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवइण । तीन परषदायें ७ अनीककरी ७ अनीकाधिपतीकरी । चउण्ह चउरासीण आयरक्ख देवसाहस्सीण अन्नेसिं बहूण सोहम्मकप्पवासीण वेमाणियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरइ । चार गुणा ८४ हजार ए आत्मरक्षकेंकरी अने

क्रतुरिति॥ शतं क्रतूनां प्रतिमानाम श्रिमहविशेषाणां श्रमणोपासकपञ्चमप्रतिमारूपाणां वा कार्तिकश्रेष्ठित्वापेक्षया यस्य स शतक्रतुः॥ सहस्सक्खे इति॥ सहस्रमक्ष्णां यस्य सो सहस्राक्षः इन्द्रस्य हि किलमंत्रिणां पञ्चशतानि सन्ति तदीयानां चाक्ष्णां मिन्द्रप्रयोजनव्यापृततया इंद्रसंबंधित्वम विव क्षणात् सहस्राक्षत्वमिन्द्रस्य॥ मघवइति॥ मघामहामेघा ते यस्य वशे संति समघवान् तथा पाको नाम बलवान् रिपुः स शिष्यते निराक्रियते येन सः पाकशासनः॥ अरयंबरवत्थधरे॥ अरजांसि रजोरहितानि स्वच्छतया अंबराणि वस्त्राणि धारयतीति अंबरवस्त्रधरः॥ आलइयमालमउडेइति॥ माला च मुकुटं च मालामुकुटं मालगित माविद्ध मालामुकुटं येन स आलगितमालामुकुटः॥ नवहेमचारुचित्तचवलकुंडलविलिखिज्जमाणगंडे॥ नवमिव प्रत्युत्कटतया प्रत्यग्रमिव हेम यत्र त नवहेमनी नवहेमभ्यां चारुचित्राभ्यां चंचलाभ्यां कुंडलाभ्यां विलिख्यमानौ गंडौ यस्य स तथा स

ण एव जहेव हंडियाण तहेव एतेसिपि भाणियव्व जाव आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण सोह म्मगकप्पवासीण वेमाणियाण देवाण देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च जाव विहरति । सक्के इत्थ देविंदे देव राया परिवसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउ सहस्सक्खे मघव पाकसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीसविमा णवाससयसहस्साहियई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचवल

च बार २ सामानिकसाहस्रीय एव बहेव भाणियाप तहेव एएसिपि भाणि । ते इहां भायभायवां विमानमा भावगमे बरी भायभायवां सामानि कसहस्रेकरी रम जिम भावनविषे बह्यो तिम सप इहां कहिवा । जाव भायरक्षदेवसाहस्रीय पचीसिपकूप सौधर्मकल्पवासीय वेमानियाय देवाय य देवीय आहेवच पोरेवच जाव विहरति । यावत् आत्मरक्षका सहस्र भगराघवां सौधर्मकल्पवासी वैमानिक घणेक देवता देवीना अधिपतिपणे यावत् विचरे । सक्के इत्थ इविंदे देवरायावा परिवसति । यत्र तिहां देवतारा राजादेवेन्द्र बसेछ वज्रपाणी पुरन्दरे सयक्कउसहस्सक्खे । वज्रीबरी पुरदर च मरेम्मवरविदारे ते मतमतु कार्तिकसेठभवे सोवार प्रतिमा मूर्ं सहस्रनेत्रवो सहस्राक्ष । मघव पाकसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवइ बत्तीसविमाण

नत्कुमारकल्पे-मुपकन सपत्रिदिसति ॥ समामाः यथा॰ पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपा॰ पाश्वा यस्मिन् सूत्रमु त्पसमे तत्सप्तम समामस्य पमादिषु चेतिस मामस्य मत्राया॰ ॥ सपक्षिदिसति॰ समामा॰ प्रतिदिशो यदिशो यत्र तत्समप्रतिदिक् सामानिकसपत्रावगाथा-चउरासीइत्यादि ॥ सौधर्मेंद्रस्य चतुर शीतिसामानिकसहस्राणि ईशानेंद्रस्या शीतिः सनत्कुमारस्य द्वासप्ततिः माहेंद्रस्वराजस्य सप्तति ब्रह्मलोकेंद्रस्य षष्टिः लांतकेंद्रस्य पचाशत् महा शुक्रेंद्रस्य चत्वारिंशत् सहस्रारेंद्रस्य त्रिंशत् आनतप्राणतेंद्रस्य दशसामानिकसहस्राणि ॥ भवतस्तकायादिज्ञानात्कारति दुरवमापा सता विने

कुण्डलियलिहिज्जमाणगण्डे महिड्ढिए जाव पभासमाणे सेणं तत्थ बत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साणं चउरा सीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरि याराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाह स्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे

नामसमप्रभाधिपत्यं । अन्तः पाकशासन इत्यादि ... सामाधिपति ३२ लाखविमाननाथको । ऐरावणवाहनमरेंद्र चरमवरवस्त्र धर । ऐरावण वाहन छे जेहने सरेंद्र देवनि... निर्मलवस्त्रधारो । आलयमालमउड नवहेमचारुचित्तचंचल कुण्डल विलिख्यमानगण्ड । आभ्र णे करी मुकुट नवा हेमनाभाव विविध कुण्डले करी विलसमान गण्डस्थले जे एहना । महर्द्धिक जाव पभासमाणे । महर्द्धिक यावत् दशदिशा प्रकाशक ता । तत्र बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं चउरासीए सामाणिय साहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं । तिहां ३२ लाखविमाननो स्वामी ८४ सहस्र सामानिकेंकरी आपणिसरख पूजनीक देवतायें करी ४ लोकपालें ८ अग्रमहिषीयें करी सपरि वारें । तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं । तीन परषदायें ७ अनीकें करी ७ अनीकाधिपतें करी । चउण्हं चउरासीणं आयरक्ख देवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरइ । चारगुणि ८४ हजार ते आत्मरक्षकें करी अनेक

क्रतु इति ॥ शतं क्रतूनां प्रतिमानाम् अभिग्रहविशेषाणां श्रमणोपासकपञ्चमप्रतिमारूपाणां वा कार्त्तिकश्रेष्ठित्वापेक्षया यस्य स शतक्रतुः ॥ सहस्राक्षे
इति ॥ सहस्रमक्ष्णां यस्य स सहस्राक्षः इन्द्रस्य हि मन्त्रिणां पञ्च शतानि सन्ति तदीयानाम् अक्ष्णाम् इन्द्रप्रयोजनव्यापृततया इन्द्रसम्बन्धित्वेन विव
क्षणात् सहस्राक्षत्वमिन्द्रस्य ॥ मघवइति ॥ मघा महामेघा ते यस्य वशे सन्ति स मघवान् तथा पाको नाम बलवान् रिपुः स शिष्यते निराक्रियते येन सः
पाकशासनः ॥ अरयंबरवत्थधरे ॥ अरजांसि रजोरहितानि स्वच्छतया अम्बराणि वस्त्राणि धारयतीति अरजोम्बरवस्त्रधरः ॥ आलइयमालमउडे इति ॥ माला
च मुकुटञ्च मालामुकुटं आलगितं आविद्धं मालामुकुटं येन स आलगितमालामुकुटः ॥ नवहेमचारुचित्रचञ्चलकुण्डलविलिख्यमानगण्डः ॥ नवमिव
प्रत्युप्तत्वादभिनवतया प्रत्यग्रमिव हेम यत्र ते नवहेमनी नवहेमाभ्यां चारुचित्राभ्यां चञ्चलाभ्यां कुण्डलाभ्यां विलिख्यमानौ गण्डौ यस्य स तथा स

ण एय जहेव ठिइयाण तहेव एतेसिंपि जाणियव्व जाव आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च बहूण सोह
म्मगकप्पवासीण वेमाणियाण देवाण देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च जाव विहरति । सक्के इत्थ देविंदे देव
राया परिवसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउ सहस्सक्खे मघव पाकसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीसविमा
णावाससयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचल

णं भाई२ आमाविमाणावासनो एवं जहेव ठाणियाणं तहेव एएसिंपि जाणि । ते इहां आयआयणा विमाननां आश्रमे वरी आयआयणा सामानि
कमहर्द्धिकरी एम जिम आयनविषे कह्यो तिम एव इहां कहिवा । जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिंबहूणं सोहम्मगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण
य देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरति । यावत् आत्मरक्षकना सहस्र अनेराअनेरा सोधर्मकल्पनावासी वैमानिक अनेक देवता देवीना अधिपतिपणे
यावत् विचरे । सक्के इत्थ देविंदे देवरायाणो परिवसति । सक्र तिहां देवतानो राजा देवेन्द्र वसे वज्जपाणी पुरंदरे वज्रपाणि वज्रहस्त । वज्रकरी पुरदर ए
सुरनगरविदारे ते सतक्कउ कार्तिकशेठभवे सोवार प्रतिमा वहूं सहस्सक्खे सहसनयणो मघवा । मघव पाकसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीसविमाणाव

नत्कुमारकल्पे-सपवज सपविदिशंति ॥ समामाः पद्माः पूर्वापरदक्षिणोत्तरलक्षणा यांचा यस्मिन् सूत्रमु स्पतमे तस्यपद समानस्य पमादिपु वेतिस मानस्य सनायः ॥ सपडिदिसति ॥ समाना प्रतिदिशो विदिशो यत्र तत्सप्रतिदिक् सामानिकसंग्रहगाथा-चउरासीइत्यादि ॥ सौधर्मेंद्रस्य चतुर शीतिसामानिकसहस्राणि ईशानेंद्रस्याशीतिः सनत्कुमारस्य द्वासप्ततिः माहेंद्रराजस्य सप्ततिः ब्रह्मलोकेंद्रस्य षष्ठिः लांतकेंद्रस्य पंचाशत् महा शुक्रेंद्रस्य चत्वारिंशत् सहस्रारेंद्रस्य त्रिंशत् आनतप्राणतेंद्रस्य दशसामानिकसहस्राणि ॥ भवतस्थायातिदशमालाइति दुरवयाचा सता विने

फुल्लउघिलिहिज्जमाणगण्डे महिड्डिए जाव पभासमाणे सेणं तत्थ बत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साणं चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणं देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे

वासवसमसमाहितः । अथवा पाकशासन देवताना अम्भोजा दक्षिणार्द्ध लोकाधिपति ३२ लाखविमाननाथको । ऐरावणवाहनेसरेंद्र पर्वयंतरवस्त्र धर । ऐरावणवाहनेअरजमरेंद्र रजविना गगनधर निमलवस्त्रधारी । मालासमालमरज नवसमपावरितचपल कुंडल विलक्षितमालगंड । वाप्प च कनकमुकुट नवा समनायाद विविध भूषणकरो विलपमान गगनमंडले से इन्द्रना । महिड्डिक जाव पभासमान । सवहिक सादन् सवरायातो कर ता । तत्र बत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साण चउरासीए सामाणिय साहस्सीण तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्ह लोगपालाण अट्ठण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण । तिहां ३२ लाखविमानका स्वामी ८४ सहस्र सामानिकेकरी त्रायस्त्रिंश पूजनीकदेवतायें करी ४ लोकपाले ८ अग्रमहिषीयेंकरी सपरिवारें । तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवईण । तीन परषदायें ७ अनीकेकरी ७ अनीकाधिपतेंकरी । चउण्ह चउरासीण आयरक्ख साहस्सीण च अन्नेसिं बहूण सोहम्मकप्पवासीण वेमाणियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरइ । चार गुणे ८४ हजार म आत्मरक्षकेंकरी अने

कनुइति ॥ सात कतूनां प्रतिमानाम भिग्रहविशेषाणां श्रमणोपासकपञ्चमप्रतिमारूपाणां वा शातिकर्मेत्युत्पापेक्षया यस्या शौर्यतक्रतुः ॥ सहस्सक्खे इति ॥ सहस्रमक्षां यस्या सौ सहस्राक्षः इन्द्रस्य हि किलमन्त्रिणां पञ्चशतानि सति तदीयानां चाक्षा मिन्द्रप्रयोजनव्यापृततया इन्द्रसर्वचित्तम विव वणात् सहस्राक्षत्वमिन्द्रस्य ॥ मघवइति ॥ मघामहामेघा ते यस्य वशे संति समघवान् तथा पाको नाम बलवान् रिपुः स क्षिप्यत निराक्रियत येन सः पाकशासनः ॥ अरयवरवत्थधरे ॥ अरजांसि रजोरहितानि स्वच्छतया अंबराणि वस्त्राणि धारयतीति अंबरवस्त्रधरः ॥ आलइयमालमउडेइति ॥ माला च मुकुटश्च मालामुकुट मालमिव माविद्ध मालामुकुट येन स आलगितमालामुकुटं ॥ नवहेमचारुचित्तचचलकुंडलविलिहिज्जमाणगंड ॥ नवमिव प्रत्युत्कटचारुतया प्रत्यग्रमिव हेम यत्र ते नवहेमनी नवहेमस्या चारुचित्राभ्यां चचलाभ्यां कुण्डलाभ्यां विलिख्यमानौ गण्डौ यस्य स तथा स

ण एग जहेव हरियाण तहेव एतेसिंपि नाणियव्व जाव अ्पायरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण सोह म्मगकप्पवासीण वेमाणियाण देवाण देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च जाव विहरति । सक्के इत्थ देविंदे देव राया परिवसइ वज्जपाणी पुरदरे सयक्कउ सहस्सक्खे मघव पाकसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवईबत्तीसविमा णवाससयसहस्साहिवइ एरावणवाहणे सुरिंदे अरयवरवत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचचल

च मा २ सामा।विसमाकक्षीच एव कवेव चाहियाच तहेव एवतिंपि माणि । ते दर्श चापमापचां विमानमा वाचगमे वरी चापमापवां सामानि कमहसेवरी एम विम भावनविपे बहो तिम सव दर्श वहिया । याव भावरक्षदेवसाहस्रीच भयोसेवरून साधमगकप्पवासीच वेमानिकाय देवाच प देवीचच चाहेवच पोरेवच जाव विहरति । यावत् पालरचमना सचम्र मनरादर्श सौधमकल्पनावासी वेमानिक घनेक देवता देवीना घधिपतिपणे यावत् विचरे । यवे एम इविदे देवराजाना परिवसति । मम तिरहां देवतारा राजा देवेन्द्र वजेवे वज्रपाणी पुरंदरे सयक्कक्सयवाक्के । वर्षेवरो पुरदर च मरेत्यवरविहारे ते मतमत वातिवंधेठमवे सोवार प्रतिमा भूदं सहसनेत्रनो सहनाय । मघव पाकशासने दाहिनलोकाधिपति बत्तीसविमान

नत्कुमारकल्पे-सपक्ष सप्रतिदिशमिति ॥ समामा: पक्षा: पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपा: पार्श्वा यस्मिन् कूरमु त्पतने तत्सपक्ष समानस्य धर्मादिषु वेतिस मानस्य सप्राय: ॥ सप्रतिदिशमिति ॥ समाना: प्रतिदिशो विदिशो यत्र तत्सप्रतिदिक् सामानिकसहस्राणामा-चतुरशीत्यादि ॥ सौधर्मेंद्रस्य चतुर शीतिसामानिकसहस्राणि ईशानेंद्रस्य शीति: सनत्कुमारस्य द्वासप्तति: माहेंद्रवराजस्य सप्तति: ब्रह्मलोकेंद्रस्य षष्टि: लांतकेंद्रस्य पंचाशत् महा शुक्रस्य चत्वारिंशत् सहस्रारेंद्रस्य त्रिंशत् आनतप्राणतेंद्रस्य दशसामानिकसहस्राणि ॥ चतुरशीतिसामानिकादिति तुर्यगाथा सर्वा विने

कुरुलयिलिहिज्जमाणगझे महिहिए जाव पज्जासमाणे सेण तत्थ बत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साण चउरा सीए सामाणियसाहस्सीण तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्ह लोगपालाण अट्ठण्ह अग्गमहिसीण सपरि वाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवईण चउण्ह चउरासीण आयरक्खदेवसाह स्सीण अन्नेसि च बहूण सोहम्मकप्पवासीण वेमाणियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च कुव्वमाणे

मानयमवगमाहिवह। अथवा पालयामन दवताना बसोना वचिनाई लोकाधिपति ३२ लाख विमाननायको। ऐरावणवाहनसहित परयवरवत्थ धर। ऐरावण वाहने जेहनं सरेद्र रजविना गगनपर f मंडलधारो। मालासमालमठ नवहमवालवतपथ कुडल बिलसिज्यमानगम। वाप्य के ८३ मकुट मांं समनावाद विविध कुंडलधरी विलपमान गमस्वकें ते इन्द्रना। महर्द्धिक जाव पभासमान। महर्द्धिक यावत् सवलथाला कर ता। तत्थ बत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साण चउरासीए सामाणिय साहस्सीण तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्ह लोगपालाण अट्ठण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण। तिहां ३२ लाखविमाननो स्वामी ८४ सहस्र सामानिकेंकरी वायत्रिंशक पूज्यनीकदेवतायें करी ४ लोकपालें ८ अग्रमहिषीयें करी सपरि वारें। तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवईण। तीन परषदायें ७ अनीककरी ७ अनीकाधिपतेंकरी। चउण्ह चउरासीण आयरक्ख ... साहस्सीण च अन्नेसिं बहूण सोहम्मकप्पवासीण वेमाणियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरइ। चार, त्रिणें ८४ हजार ने आत्मरक्षेंकरी अने

क्रतुरिति ॥ शतं क्रतूनां प्रतिमानाम भिग्रहविशेषाणां श्रमणोपासकपञ्चमप्रतिमारूपाणां वा कार्तिकश्रेष्ठित्वापेक्षया यस्य शतक्रतुः ॥ सहस्राक्ष इति ॥ सहस्रमक्ष्णां यस्य स सहस्राक्षः इन्द्रस्य हि किलमन्त्रिणां पञ्चशतानि सन्ति तदीयानां चाक्ष्णां मिन्द्रप्रयोजनव्यापृततया इन्द्रसम्बन्धित्वम् विव क्षणात् सहस्राक्षत्वमिन्द्रस्य ॥ मघवा इति ॥ मघामहामेघा स्ते यस्य वशे सन्ति स मघवान् तथा पाको नाम बलवान् रिपुः स शिष्यते निराक्रियते येन स पाकशासनः ॥ अरयपवत्थधरे ॥ अरजांसि रजोरहितानि स्वच्छतया अम्बराणि वस्त्राणि धारयतीति अम्बरवस्त्रधरः ॥ आलइयमालमउडेइति ॥ माला च मुकुटश्च मालामुकुटं मालगित माविद्ध मालामुकुटं येन स आसगितमालामुकुटः ॥ नवहेमचारुचित्रचञ्चलकुण्डलविलिख्यमानगण्ड ॥ नवमिव प्रत्युत्कटचारुतया प्रत्यग्रमिव हेम यत्र ते नवहेमनी नवहेमम्या चारुचित्राभ्यां चञ्चलाभ्यां कुण्डलाभ्यां विलिख्यमानौ गण्डौ यस्य स तथा स

ण एव जहेव चडियाण तहेव एतेसिपि जाणियव्वं जाव छायरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण सोह म्मगकप्पवासीण वेमाणियाण देवाण देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरति । सक्के इत्थ देविंदे देव राया परिवसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउ सहस्सक्खे मघव पाकसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीसविमा णवाससयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचल

च मार २ सामानिकसाहस्रीय एव यथैव चाडिकाय तथैव एतेषामपि भाणि । ते इन्द्रा भावभावना विमानमां सावमने करी भावभावना सामानि कमहत्त्वेकरी इम जिम भावनविषे कह्यो तिम सव इन्द्रा कहिवा । जाव भावरक्षदेवसाहस्रीय अन्योऽपि बहूव सौधर्मकल्पवासीय वेमानिकाय देवाय च देवीनय चाहेवच पोरेवच जाव विहरति । यावत् भावरक्षका सहस्र अनेराअनो सौधर्मकल्पवासी वैमानिक अनेक देवता देवीना अधिपतिपणे यावत् विचरे । सक्के इत्थ देविंदे देवराया परिवसति । सक्र तिहां देवतारा राजादेवेन्द्र वसेछ वज्रपाणी पुरंदरे सयक्कउ सहस्सक्खे । वज्रकरी पुरंदर च मरेषन वरविसारे ते मतक्रतु कार्तिकसेठभवे सोवार प्रतिमा भूर सहस्रनेत्रवन्तो सहस्राक्ष । मघव पाकसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवइ बत्तीसविमाण

नत्कुमारकल्पे-मपक्ष सपक्षिदिसति ॥ समानाः पक्षाः पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपाः यासां यस्मिन् दूरमु त्वतमे तत्सपक्ष समानस्य पमादिषु चेतिस मानस्य सद्भावः ॥ सपाडिदिसति ॥ समानाः प्रतिदिशो यदिशो यत्र तत्सप्रतिदिक् सामानिकसंग्रहगाथा-चउरासीइत्यादि ॥ सौधर्मेन्द्रस्य चतुर शीतिसामानिकसहस्राणि ईशानेन्द्रस्य शीतिः सनत्कुमारस्य द्वासप्ततिः माहेन्द्रस्य सप्ततिः ब्रह्मलोकेन्द्रस्य षष्ठिः लान्तकेन्द्रस्य पञ्चाशत् महा शुक्रेन्द्रस्य चत्वारिंशत् सहस्रारेन्द्रस्य त्रिंशत् आनतप्राणतेन्द्रस्य दशसामानिकसहस्राणि ॥ भवतसकाशादितदशमाकाङ्क्षति दुरवयाषा सता विमे

कुण्डलिविलिहिज्जमाणगण्डे महिड्ढिए जाव पज्जोसमाणे सेणं तत्थ अट्ठावीसाए विमाणवाससयसहस्साणं चउरा सीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरि वाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाह स्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे

[illegible] । [illegible] सार्वाधिपति ३२ लक्षविमाननायको । ऐरावणवाहनसुरेन्द्र [illegible] पर । ऐरावण [illegible] सुरेन्द्र [illegible] निम्नलचारो । [illegible] । [illegible] विलपमाण [illegible] । [illegible] यावत् [illegible] ता । तत्र बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साण चउरासीए सामाणिय साहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं । तिहां ३२ लाखविमानना स्वामी ८४ सहस्र सामानिकेकरी [illegible] देवतायें करी ४ लोकपाले ८ अग्रमहिषीयेंकरी सपरि वारें । तिण्ह परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं । तीन परषदायें ७ [illegible] करी ७ [illegible] अधिपतेंकरी । चउण्हं चउरासीणं आयरक्ख [illegible] सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं [illegible] । [illegible] ८४ हजार ना [illegible] करी [illegible]

जाव विहरति। कहिण भंते ! ईसाणगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० ? कहिण भंते ! ईसाणगदेवा परिव सति ? गो० ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भू मिभागाओ उड्ढ चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाण बहूइ जोयणसयाइ बहूइ जोयणसहस्साइ जाव उप्पइत्ता एत्थण ईसाण नाम कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने एव जहा सोहम्मे जाव पडिरूवे तत्थण ईसाणगदेवाण अट्ठावीस विमाणावाससयसहस्सा हवतीति मक्खाय तेण विमाणा सव्व रयणामया जाव पडिरूवा, तसिण बहुमज्झदेसभाए पच वडसगा पन्नत्ता, अकवडसए फलिहवडसए

२। एवं सौधम कल्पाधवासी वैमानिकदेवता इसी प्रधिपतिपणो यावत् विचरे। वळिपभते ईशानकल्पवासी पर्याप्ता २ व ठा प । किहा हेभगवन् ईशान देवताना पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकहा। वळिबंभते ईशानगणदेवा परिवसति। किहा हेभगवन् ईशानदेवता वसेछ। गोयमा जबद्वीप २ मेरुरम पर्वतरम उत्तरे। हेमोतम जबूद्वीपनामाद्वीप विषे मेरुपर्वत उत्तरपासे। इमोसरयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाधा भूमिभागाधा। ए र ताभापृथ्वीनो एवो समारमणीय भू ममागथको। ऊछट चंद्रिमसूरिअग्रहगणनक्षत्रतारारूपा च। घणा चद्र सूर्य ग्रहगण नक्षत्र ताराकृपथो। बहूवि आयणसयाइ जाव उप्पइत्ता। घणां योजनना सैकडांस यावत् आकाशको ऊचा जाय के। एत्थण ईसाणनामकप्प प । इहा ईशाननामा कल्पकह्या। पाईणपडीणायए [illegible] पर्व जहा सोहम्मे जाव पडिरूवे। पव पश्चिम लांबाहे उत्तरदक्षिण विस्ताहे इम जिम सौधर्मेनोपरे यावत् प्रतिरूप। तत्थण ईसाणगदेवाण अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्सा हवतीतिमक्खायं। तिहां ईशान देवताना २८ लाखविमाननो समूहछहो तीर्थकरे कह्या। तेणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा। ते विमान सव रत्नमय यावत् प्रतिरूप। तेसिण बहुमज्झदेसभाए पचवडेंसगा प त । तिहां सर्वा मध्य विभाग ५ पचप्रधानविमानछे ते कहछे—अकवडिसए फलिहव रयणव जायरूव । अकरत्नमय पूर्वं दक्षिणे स्फटिकरत्नमय रत्नरत्नमय जाय

पञ्चमानुयायी वैविस्तेन मूलत चारम्यो पदवर्ण-सौधर्मे पूर्वस्यां अशोकावतंसको दक्षिणतःसप्तपर्णावतंसकः पश्चिमायां चंपकावतंसकः उत्तरत चूतावतंसकः मध्ये सौधर्मावतंसकः एव पूर्वादिक्रमेण ईशान अङ्कावतंसकः स्फाटिकावतंसको रत्नावतंसको जातरूपावतंसकः मध्ये ईशानावतंसकः सनत्कुमारे अशोकः सप्तपर्णः चंपकः चूतः सनत्कुमारावतंसकः माहेंद्रे अङ्कस्फटिकरत्नजातरूपमाहेंद्रावतंसका ब्रह्मलोके अशोकसप्तपर्णचंपकचूत

रयणवडेंसए जाव सव्ववडिंसए मज्झे इत्थ ईसाणवडेंसए, तेणं वडेंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा एत्थणं ईसाणाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे सेसं जहा सो हम्मगदेवाणं जाव विहरति, ईसाणे इत्थ देविंदे देवराया परिवसति सूलपाणी वसभवाहणे उत्तरड्ढलो गाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयअंबरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स जाव पभासेमाणे तत्थ अट्ठावीसाए विमाणावाससयसहस्साणं असीतीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं

तू रत्नावतंसकः। मध्ये ईशानावतंसकः तेऽवतंसकाः सर्वरत्नमया यावत् प्रतिरूपाः। विधेयार्थे ईशानावतंसक ते वतंसकाः सर्वे रत्नमया यावत् प्रतिरूपा। एत्थ णं ईसाणदेवाणं पज्जत्ता २० चायं । इहां ईशानदेवता पज्जत्ता अपज्जत्तानां ठाणकाणि । तिसुवि लोगस्स असंखिज्जइभागे सेसं जहा सोहम्मदेवाणं जाव विहरति। तान् सौधर्म्माधिकप्रसंख्यातमेभागे इह यावता त्रिभ सौधर्मदेवता यावत् विचरैछे। ईसाणे इत्थदेविंदे देवराया परिवसति। ईशानमाने इन्द्र राजा वसेछ। शूलपाणिः वृषभवाहने। त्रिशूल हाथमें छेहने। उत्तरार्द्ध लोकाधिपः उत्तरार्द्ध स्वामी। अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिव २८ लाख विमानना धणी अधिपति। अरयअंबरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स जाव पभासमाणे। रजरहित वस्त्रधारक यावता चित्त प्रभासे यावत् प्रभासवित। सेसं तत्थ अट्ठावीसाए विमाणावाससयसहस्साणं असीतीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं। ते विहां २८ लाख विमान धणी सहित ८०० सामानिकदेव सहित ३३ त्रायस्त्रिंशकदेव। चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं। ४ लोकपालदेव ८ अग्रमहि

चउण्ह लोगपालाण प्रठण्ह प्रग्गमहिसीण सपरिवाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्ह प्रणियाण सतण्ह प्रणि याहिवइण चउण्ह प्रसीतीण प्रायरक्खदेवसाहस्सीण प्रन्नेसि च बहूण इसाणकप्पवासीण वेमाणियाण देवाण य देवीण य प्राहेवच्च पोरेवच्च कुव्वमाणे जाव विहरइ, कहिण भते ! सणकुमारदेवाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भते ! सणकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा ! सोहम्मस्स कप्पस्स उ प्पि सपक्खि सपडिदिसि बहूइ जोयणाइ बहूइ जोयणसयाइ बहूइ जोयणसयसहस्साइ बहुगाप्रो जोय णकोडीप्रो बहुगाप्रो जोयणकोडाकोडीप्रो उड्ढ दूर उप्पइत्ता तत्थण सणकुमारे नाम कप्पे पण्णत्ते । पाईण

पालेंकरो सपरिवारेंकरो । तिसृ परिसाय सतसृ प्रनिकाय सतसृ प्रनियाधिपति चतसृ प्रसाप । तीन परिषदाकरो ७ प्रनीकेंकरो ७ प्रनीका धिपतेंकरो ८ हिमि । चउरासी प्रात्मरक्षदेवसहस्राप । ८४ प्रात्मरक्षके सहस्रेंकरो । प्रन्यसिबहुन इसानकल्पवासीय वैमानिकाय देवानाय देवीय प प्राधिपत्यप्रकुर्वन् विहरति । प्रनेरा बहुत ग्राम कल्पवासी वैमानिक देवदेवीनो प्रधिपतिपणो करता यावत् विचरे । कहिणभंते सणकुमाराण दे वाण पज्जत्ता २ णं ठाणा प । किहां हेभगवन् सनत्कुमारदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणभंते सणकुमारदेवा परिवसति । किहां हेभगवन् सनत्कुमारदेवता वसेछे । गोयमा सोहम्मस्स कप्पस्स उप्पिसपक्खि सपडिदिसिं बहूइं जायणसयाइं । हेगौतम सौधर्मकल्पने ऊपरे सपक्षपक्षे सप्रतिदिशि बहुयोजनमासेवका । बहूनि योजनसहस्राणि बहुगोप्रा जोयणकोडीप्रा बहुगोप्रा जोयणकोडाकोडीप्रा । घणां योजनना सहस्र घ णां योजनना सहस्रलाख घणीयोजननी कोडा घणी योजननी कोडाकोडी । उड्ढदूर उप्पइत्ता । ऊंचा उपाडने जाय । तत्थणं सणकुमारेनाम कप्प ण । १८१ सनत्कुमारनामे कल्पकह्या । पाइणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा सोहम्मे जाव पडिरूवे । पूर्व पश्चिम लांबा उत्तरदक्षिण विस

पडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा सोहम्मे कप्पे जाव पडिरूवे, तत्थ णं सणंकुमाराणं देवाणं बारस विमाणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, ते णं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा तेसि णं विमाणाणं बहुमज्झदेसभागे पंच वडेंसगा पण्णत्ता, तंजहा—असोगवडेंसए सत्तवण्णवडेंसए चंपगवडेंसए चूयवडेंसए मज्झे एत्थ सणंकुमारवडेंसए तेणं वडेंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा तत्थ णं सणंकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे सणंकुमारा देवा परिवसंति महिड्ढिया जाव पभासेमाणा विहरंति नवरं अग्गमहिसीओ णत्थि, सणंकुमारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंबरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स सेणं तत्थ बारसण्हं विमाणावाससयसहस्साणं बाव

मा विम सोधम यावत् प्रतिरूप। एत्थणं सणंकुमाराणं देवाणं बारसविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं। इहां सनत्कुमारना १२ लाख विमान कह्या तीर्थंकरे। तेणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा। ते विमान सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप छे। तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंचवडेंसया प० त०। विमाननें घणों मध्यदेशभाग विषे पंच अवतंसक विमान कह्या। असोगवडेंसए सत्तवण्णव० चंपगवडेंसए चूयव० मज्झ इत्थ सणंकुमारव०। तेणं वडेंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। अशोकावतंसक पूर्वे सप्तपर्णावतंसक दक्षिणे चंपकावतंसक पश्चिमे चूतावतंसक उत्तरे विचे सनत्कुमारावतंसक ते अवतंसक सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप। एत्थणं सणंकुमाराणं देवाणं पज्जत्ताणं ठाणा प०। इहां सनत्कुमारना पर्याप्ता अपर्याप्ता ना ठाम कह्या। तिसुविलोगस्स असंखेज्जइभागे। तीन लोकना असंख्यातमें भाग छे। तत्थणं बहवे सणंकुमारा देवा परिवसंति। तिहां घणां सनत्कुमार देवता वसे छे। महड्ढिया जाव पभासेमाणा विहरंति। महर्द्धिक यावत् प्रभासहित विचरे छे। नवरं अग्गमहिसीओ णत्थि सणंकुमारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसति। एतला विशेष अग्रमहिषी नथी सनत्कुमार नाम देवेंद्र देवराजा वसे छे। अरयंबरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स। रजरहित गगन

आतरूपमहस्सारायतसका: प्रकृते षष्ठीसमासपक्षेऽपवशूतप्रायावतसका अच्युत अङ्कस्फटिकरत्नजातरूपायुता भवतसका इति ॥ ग्रैवेयकसूत्रे-सम ऋिपाइति ॥ समा यद्वि यंपात समाद्विका: एव ॥ समुज्जुयया इत्यादापि ज्ञावनीयं ॥ अविद्दाइति ॥ मविद्यते इन्द्रो अधिपति यैषाते अनिन्द्रा: ॥ अपेस्सा इति ॥ मविद्यते प्रेष्य: प्रष्यत्वं मयाते अप्रेष्या: ॥ अपुरोहियाइति ॥ मविद्यते पुराहित: शांतिकमकारी यथामशांतरभावात् ते अपुरोहिता

सरीए सामाणियसाहस्सीण सेस जहा सक्कस्स अग्गमहिसीवज्जा नवरं चउण्हं चउरासीण आयरक्खदेवसाहस्सीण जाव विहरइ। कहिं णं भंते! माहिंदाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। कहिं णं भंते! माहिंदगा देवा परिवसंति? गोयमा! ईसाणस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं जाव बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थ णं माहिंदे नामं कप्पे पण्णत्ते, पाईणपडीणायए जाव एवं जहेव सणंकुमारे, नवरं अट्ठ विमाणावाससयसहस्सा वडेंसया जहा ईसाणे नवरं मज्झे तत्थ माहिं

वत्रसधारी येपविम मननोपरे। सेपतअवारवष्टविमानावाससयसहस्राव। तिकांश२ सावविमानेकरी। वाबत्तरोए सामानिकदेवसाहस्सीन जहा स कस्स अग्रमहिसोवं बज्जा। ७२ सामानिकदेवेकरो विम मननोपरे अग्रमहिषी विना। नवर चतस्र बावत्तरोण आयरक्षदेवसाहस्सीण जाव वि हरति। चतस्राविंशत २२ चौगुणाकरता २८० आयरक्षक देवेकरो यावत् विचरे। कहिय भंते माहेन्द्रदेवाव पज्जत्ता २ ना ठाणा प०। किहां हेभगवन् माहेन्द्रदेव पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठाम कह्या। कहिय भंते माहिंददेवा परिवसति। किहां हेभगवन् माहेन्द्रदेवता वरसे। गोयमा ईसाणस्स कप्पस्स उपि सपक्खि सपडिदिसि बहुइं जोयणाइ जाव बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढ दूर उप्पइत्ता। हेगोतम ईशानकल्पने उपर पक्षसहित सप्र तिदिशिविषे घणा योजनना यावत् घणा कोडाकोडी जोयणा। एत्थ माहिंदनामं कप्पे प। तिवारे तिहां माहेन्द्रनामें देवलोक कह्या। पा ईण पडिणायए जहेव सणंकुमारे। पूर्व पश्चिमलांबो उत्तर दक्षिण विस्तार्यो। एव जहेव सणंकुमारे नवर अट्ठविमाणावाससयसहस्सा। इम सर्व

दयरुसए एवं सेस जहा सणकुमारदेवाणं जाव विहरति माहिंदे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयअंबरवत्थधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरइ नवरं अठण्ह विमाणावाससयसहस्साण सत्तरीए सामाणिय साहस्सीण चउण्ह सत्तरीण आयरक्खदेवसाहस्सीण जाव विहरइ । कहिणं भंते ! बंभलोगदेवाण पज्जत्ता २ णं ठाणा पन्नत्ता । कहिण भंते ! बंभलोगा देवा परिवसंति ? गो० ! सणकुमारमाहिंदाण कप्पाण उप्पि सपक्खि सपडिदिसि बहूइ जोयणाई जाव उप्पइत्ता एत्थण बंभलोए नाम कप्पे पाईणपडीणायत उदीणदाहिणविच्छिन्ने पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालीभासरासिप्पभे अवसेस जहा सणकुमा

जिम सनत्कुमार पत्नाविमय । षट्विमानावासशतसहस्त्रा वर्णसया जथा ईसाणे नवर मध्य । ८ लाखविमान कहा बतमध जिम ईशाने कह्या प नमाविषय विचे । इस माहेन्द्रविषय एवं सेम जथा सनत्कुमारदेवाण जाव विहरति । इहा माहेन्द्रबतमध इस मिर्वाविम सनत्कुमारदेवता यावत् विचरेछे । माहिंदे इत्य देविंदे देवराजा परिवसति । माहेन्द्रनामे देवेन्द्र देवराजा वसछे । अरयअंबरवत्थधरे एव जथा सनत्कुमारराजा विचरति । रजरहित गगनवत् वस्त्रधारी इम सब जिम सनत्कुमार यावत् विचरे । नवर अठ्ठण्ह विमाणावाससयसहस्साणं सत्तरिए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं सत्तरीण आयरक्खदेवसाहस्सीण जाव विहरति । एतलाविशेष ८ लाख विमानेवरो ७० सहस्र सामानिक ७० चौगुणा करता २८० आत्मरक्षक सहस्रेकरी विचरे । कहिणभंते बंभलोयदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । किहा हेभगवन् ब्रह्मलोकनादेवता पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकह्या । कहिणभंते बंभलोया परिवसति । किहां हेभगवन् ब्रह्मदेवलोकवसे । गोयमा सणकुमारमाहेन्द्राण कप्पाणं उप्पि सपक्खिसपडिदिसि बहुइजोयण जाव उप्पइत्ता । हे गौतम सनत्कुमार माहेन्द्रकल्पथी । ऊपर सपक्ष सप्रतिदिश घणीयोजन कोडाकोडी ऊचा जाइये । एत्थण बंभलोए नामं कप्पे पं । तिहां ब्रह्मलोकनामा कल्प पूर्वपश्चिम दिशय लांबा । उदीणदाहिणविच्छिन्न पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिया । उत्तरदक्षिणे पिहुला पूर्णचन्द्र संस्थान संस्थितछे । अच्चिमाली भासिरा

राण नयर चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता जहा सोहम्मस्स पन्नत्ता नवर मज्झे इत्थ बम्भलोयवडेंसए एत्थण बम्भलोगाण देवाण ठाणा प० सेस तहेव जाव विहरति। बम्भे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंवरवत्थधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरति नवर चउण्ह विमाणावाससयसहस्साण सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण चउण्हयसट्ठीण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण जाव विहरइ। कहिण भंते! लंतगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, कहिण भंते! लंतगदेवा परिवसति? गोयमा! बम्भलोगस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिसि बहूइ जोयणसयाइ जाव बहूइओ जोयणकोडाकोडीओ

तिणमें पणिमय ममबमाराय मणिय तहा भा । विरचमे समाइकरी भाषा भावता जिम सनत्कुमारि कह्या तिम कहवीं। नवर चत्तारिविमाणा वामबधमध्या बचेमबा जहा बाद्म्यांवैमवा। एतलाविशेष ४ लाखविमान कह्या चतपच जिम सोधमलोपरे। नवर मध्य इत्य बमलायवडेंसए। ए विमर लिखे इहां प्रमथावावतंसक। एतलं बमलावाव लेबाय ठाणा प सेसतहेव जाव विहरति। इहां ब्रह्मलोकदेवताना ठामकह्या सेष तिम यावत् विचरे। ब्रह्मेंद्र देविंद्र देवराया परिवसति। ब्रह्मनाम इंद्र देवेन्द्र देवराजा बसेछ। परयबरवत्थधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरति। रजविम बसधारो इम सव सनत्कुमारलोपरे यावत् विचरे। नवरं चउणह विमाणावाससयसहस्साण सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण। एतलाविशेष ४ लाख विमानकारी ६ हजार सामानिककारी। चउणह सट्ठीण आयरक्खदेवसाहस्सीणं पच्चसिव बहुण जाव विहरति। साठ चोगुणा करता २४ हजा र आत्मरक्षककरी घणा पर्षादाना यावत् विचरे। कहिणभंते लंतगदेवाण पज्जत्ता १ अ ठाणा पं। किहां हे भगवन् लान्तकदेवता पर्याप्ता अपर्या प्ताना ठामकह्या। कहिणंभंते लंतगादेवापरिवसंति। किहां हे भगवन् लांतकदेवता बसेछे। गोयमा बम्भलोयस्स कप्पस्स उप्पिसपक्खि सपडिदिसिं ब हूइ जोयण जाव बहुगोओ जोयणकोडाकोडीओ ऊर्ध्व दूर उपरता। हेगौतम ब्रह्मलोक कल्पथी उपर सपक्ष सप्रदिशि घणोयोजनकोडाकोडी जाव

उड्ढ दूर उप्पइत्ता एत्थण लतए नाम कप्पे पणत्ते पाईणपडीणायते जहा बम्भलोए नवर पन्नासविमाणा वाससहस्सा हवतीतिमक्खाय, वडसगा जहा इसाणवडसगा नवर मज्झे छ्त्थ लतगवडसए देवा तहेव जाव विहरति, लतए छ्त्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणकुमारे नवर पन्नासाए विमाणावाससह स्साण पन्नासाए सामाणियसाहस्सीण चउण्ह पन्नासाण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिच बहूण जाव विहरइ। कहिण भते! महासुक्काण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता। कहिण भते! महासुक्का देवा परिवसति? गोयमा! लातस्स कप्पस्सउप्पि सपक्खि सपडिदिसि जाव उप्पइत्ता एत्थण महासुक्के

जाव। एतत्थं लंतगनामं कप्पे पं । इत्थं मान्तवनामा बमबम्भो। पारेबपडोवायए वक जहा बसखाए। पूर्वपश्चिम चांवा दस विम मममाव। नवरं पन्नासं विमाणावाससहस्साणिवर मवेमना जहा ४ सापवडेसमा। एतत्थाविमेष १ मकम विमानवद्मा पतमव जिम ईमानमोपरे। नवरं म ध्ये लन्तगावडेसए एवा तहेव जाव विहरति। एतत्थाविशेष इत्थं सातत्थापतमवदेव तिमजोव यावत् विचरे। लतए इत्थ देविदे देवराया परि वसति। मातव एवेंद्र देवराजा वसइ। एव जहा सनत्कुमारे नवरं पन्नासाए विमाणावास सहस्साण पन्नासाए सामानियसाहस्सीणं। इम जिम सनत्कुमार एतत्थाविशेष ५ लाप विमान ५ हजार मामानिकपटस्त्रेवरी। चउपह पन्नासाणं चायरक्ख देवसाहस्सीणं चन्नेसिच बहुच जाव वि हरति। ५ हजारने चोगुनो चामरचव देवताधिवरो चमरा सचासिव यावत् विचरे। कहिण भते महासुक्काण देवाणं पज्जत्ता २ ण ठाणा प । कि हाँ हेभगवन महासुक्कदेवता पर्याप्ता चपर्याप्तामा ठामकहा। कहिणभंते महासुक्का देवा परिवसति। किहां हेभगवन् महाशुक्रदेवता बसेछे। गोय मा लंतग्स कप्पस्सउप्पि सपक्खि सपडिदिसि जाव उप्पइत्ता। हेगौतम लांतककल्पनी उपर पक्षभजित यावत् चाकाशाय। एत्थण महासुक्केनाम कप्पे पं । इत्थं महाशुक्रनाम कल्पकह्या। पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने एवं जहा बमखाए। पूर्व पश्चिमे लांबो उत्तरदक्षिणे विस्तुषा दस ते वि

नाम कप्पे पण्णत्ते । पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा बंभलोए नवर चत्तालीस विमाणावा ससहस्सा हवंतीति मक्खाय, वडेंसगा जहा सोहम्मवडेंसगा नवर मज्झे तत्थ महासुक्कवडेंसए जाव विह रइ महासुक्के इत्थ देविंदे देवराया जहा सणकुमारे नवर चत्तालीसाए विमाणावाससाहस्सीण चत्ताली साए सामाणियसाहस्सीण चउण्ह चत्तालीसाण आयरक्खदेवसाहस्सीण जाव विहरति । कहिण भंत ! सहस्सारदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । कहिण भंत ! सहस्सारादेवा परिवसति ? गो० ! महासुक्कस्स कप्पस्स उप्पिसपक्खिसपडिदिसि जाव उप्पइत्ता एत्थण सहस्सारे नाम कप्पे प० । पाईणपडीणायते ज

म प्रज्ञप्तः । नवर चत्वारिंश विमानावाससहस्राः भवन्तीति माख्यातं । एतानि विमान ४ हजार विमान कह्या तीर्थंकरे । अवतंसका यथा सौधर्मावतंसका नवरं मध्ये तत्र महाशुक्रावतंसकः यावत् विहरति । भावार्थ जिम सौधर्मकल्पे एतलाविमान विचे इहां महाशुक्रनामावतंसक यावत् विचरे । महा मध्ये अवतंसक यावत् विहरति । महाशुक्रनामे । महाशुक्रे अत्र देवेन्द्र देवराजा परिवसति । महाशुक्रनामे देवेन्द्र देवराजा वसैछै । यथा यथा सनत्कुमा रे नवर चत्वारिंशत् विमानावाससहस्राणां चत्वारिंशत् सामानिकसाहस्रीणां । इम जिम सनत्कुमार एतलाविमान ४ हजार विमानसंख्याछे ४ हजार सामानिकसहस्रछै । चतुर्णां चत्वारिंशत् आत्मरक्षकदेवसाहस्रीणां यावत् विहरति । एकसाथ साठहजार देवता आत्मरक्षक छै यावत् विचरे । क्वहिणं भंते सहस्रारदेवानां पर्याप्ता २ ण ठाणा प । किहां हे भगवन् सहस्रारदेवतानां पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकह्या । कहिणं भंते सहस्रारगदेवा परिवसति । किहां हे भगवन् सहस्रारदेवता वसेछे । गौतम महाशुक्रस्य कल्पस्य उपरि सपक्षं सप्रतिदिशि यावत् उत्पत्य । हे गौतम महाशुक्र कल्पनि ऊपर पक्षसहित यावत् ऊंचा जाइये । एतावत् सहस्रारनाम कल्पे पं । इहां सहस्रारनामे कल्पकह्या । प्राचीन प्रतीचीनायत यथा ब्रह्मलोक । पूर्व पश्चिम लांबा जिम ब्रह्मलोक । षट्विमानावाससहस्राः भवन्ति माख्यातं एतावन्तः अवतंसका यथा ईशान नवरं मध्ये अत्र सहस्रारावतंसक यावत् विहरति ।

हा धन्नलोए नवर ठविमाणावासहस्सा हवतीति मक्काय देवा तहेव धक्सगा जहा ईसाणस्स वक्सगा नवर मज्झे जत्य सहस्सारयक्सए जाय विहरति, सहस्सारे इत्य देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणकुमारे नवर ठएह विमाणावाससहस्साण तीसाए सामाणियसाहस्सीण चउएहय तीसाण श्रायरक्खदेवसाहस्सीण जाय श्राहेवञ्च कारेमाणे विहरति । कहिण नते ! श्राणयपाणयदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० ? कहिण नते ! श्राणयपाणयदेवा परिवसति ? गो० ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिसि जाय उप्पइत्ता एत्यण श्राणयपाणयनामेण दुवे कप्पा पन्नत्ता पाइणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ना श्रद्धचदसठाणसठिया श्रच्चिमालीनासरासिप्पन्ना सेस जहा सणकुमारे जाव पडिरूवा तत्यण श्राण

एतत्वाविमेव च चत्वारविमान वोचलोकन्नो यतंमच जिम १ मानमोपरे एतत्वाविशप विचे १र्र्भ सभ्यावतगम यावत् विचरे। सहस्सारे इत्यदेविंदे दे वराजाओ परिवसंति । सहस्यारनामे देवेंद्रदेवराजा वसेछे। यथा सणकुमारे नवर छयत विमानावाससहस्साणं तीसाए सामाणियसाहस्सीण। जिम सनत्कुमार एतलोमिमेव चच्चार विमान। तीसाएसामाणियसाहस्सीणं चउच्चं तीसाए श्रायरक्खदेवसाहस्सीणं जाव श्राहेवच्च कारेमाणे जाव विचरति। १ चत्वार सामानिकदेवरो एकलोचीसहचार श्रात्मरक्षदेवरी यावत् श्रधिपतिपणे विचरे। कहिणभंते श्राणतपाणयकल्पार्थ देवानं पज्जत्ता २ णं ठाणाणं । किहां भगवन् आनत प्राणतदेवतानां पर्याप्ता श्रपर्याप्तानां ठामकह्या। कहिणंभंते श्राणयपाणयाण देवाण परिवसति। किहा हे भगवन् आनत प्राणतदेवता वसेछे। गोयमा सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पिंसपक्खि सपडिदिसि जाव उप्पइत्ता। हेगोतम सहस्यारकल्पथी उपरि प्रतिदिसे जोजने घणा जाइये। एत्थणं श्राणयपाणयनाम दुवेकप्पा पं । तिहां आनत प्राणतनामे दोयकल्प कह्या। पाईणपडीणायया उदीणदाहिणवित्थिन्ना श्रद्धचदसठाणसंठिया। पूर्वपश्चिम लांबो उत्तरदक्षिण पिहुला श्रर्धचंद्रमाने संस्थाने संस्थितछे। श्रच्चीमाली भासरासिसमप्पभा सेसंजहासणकु

नाम कप्पे पण्णत्ते । पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा बंभलोए नवर चत्तालीस विमाणावा ससहस्सा हवंतीति मक्खाय, वडेंसगा जहा सोहम्मवडेंसगा नवर मज्झे तत्थ महासुक्कवडेंसए जाव विह रइ महासुक्के इत्थ देविंदे देवराया जहा सणंकुमारे नवर चत्तालीसाए विमाणावाससाहस्सीण चत्ताली साए सामाणियसाहस्सीण चउण्ह चत्तालीसाण आयरक्खदेवसाहस्सीण जाव विहरति । कहिण भंत ! सहस्सारदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । कहिण भंत ! सहस्सारादेवा परिवसति ? गो० ! महासुक्कस्स कप्पस्स उप्पिंसपक्खिसपडिदिसि जाव उप्पइत्ता एत्थण सहस्सारे नाम कप्पे प० । पाईणपडीणायते ज

म प्रज्ञप्तः । नवर चत्वारिंशत् विमानावाससहस्राणि भवन्तीति मक्खाय । एतावान् विशेषः ४० हजार विमान कह्या तीर्थंकरे । अवतंसका यथा सौधर्मावतंस का नवरं मध्ये अत्र महाशुक्रावतंसकं यावत् विहरति । वतंसक जिम सौधर्म ऊपरे एतलो विशेष विचे इहां महाशुक्र नामा अवतंसक यावत् विचरे । मध्ये अवतंसक जाव विहरति । महाशुक्र नामे । महाशुक्रे अत्र देवेन्द्रे देवराजा परिवसंति । महाशुक्र नामे देवेन्द्र देवराजा वसे छे । एम जथा सणत्कुमा रे नवरं चत्वारिंशत् विमानावाससहस्राणां चत्वारिंशत् सामानिकसाहस्रीणां । इम जिम सनत्कुमार एतलो विशेष ४ हजार विमानसंख्या छे ४ हजार सामानिक देवोनी । चतुर्गुणा चत्वारिंशत् आत्मरक्षकदेवसाहस्रीणां जाव विहरति । एतलाक आठहजार देवता आत्मरक्षक छे यावत् विचरे । कहिण भंते सहस्रारदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प । किहां भगवन् सहस्रारदेवतानां पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठाम कह्या । कहिण भंते सहस्रारगदेवा परिवसंति । किहां भगवन् सहस्रारदेवता वसे छे । गोयमा महाशुक्रस्य कल्पस्य उप्पिसपक्खि सपडिदिसि जाव उप्पइत्ता । हे गौतम महाशुक्र कल्पने ऊपर पक्षसहित यावत् ऊंचा जाइने । एत्थण सहस्रार नाम कप्पे पं । इहां सहस्रार नामे कल्प कह्या । पाईण पडीणायए जहा बंभलोए । पूर्व पश्चिम लांबा जिम ब्रह्मलोक । षट् विमानावाससहस्राणि भवंतीति मक्खायं । इत्यादि अवतंसका जथा ईशान नवर मध्ये अत्र सहस्रावतंसक जाव विहरति ।

२ ण ठाणा पणत्ता । कहिण भंते । आरणच्चुया देवा परिवसंति ? गोयमा । आणयपाणयाण कप्पाण उप्पि सपक्खि सपडिदिसि एत्थण आरणच्चुयानाम दुवे कप्पा पणत्ता । पाइणपडीणायया उदीणदाहिणवि च्छिन्ना अद्धचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीभासरासिवन्नाभा असंखिज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामवि क्खंभेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नी रया निम्मला णिप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थण आरणच्चुयाण देवाण तिन्नि विमाणावाससया हवंतीति मक्खाय, तेण विमाणा सव्वरय

किहणं भगवन् आरण अच्युतदेवानां पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामस्थानं । कुत्रणं भंते आरणअच्युतदेवाः परिवसंति । कुत्र हे भगवन् आरणाच्युत देवा वसंति । गोयमा आनतप्राणतयो कल्पयो उपरिसपक्षि सप्रतिदिशि उपरिस्ता । एवंतर आनतप्राणत ऊपर सपक्ष चोतरफ प्रतिदिश । एतत्र आरणअ च्युतनामे दुवे कल्पा । द्वौ आरण अच्युत नामनो कल्प । पाइणपडीणायया उदीणदाहिण विच्छिन्ना अद्धचंदसंठाणसंठिया अर्चिमाली भासिरासि व र्णाभा । पूर्व पश्चिमे लांबा उत्तरदक्षिण विस्तीर्णा अर्द्धचंद्र संस्थानसंस्थान किरणमालामाये शोभित देदीप्यमानवत । असंख्याता योजन कोडा को डा आयामविष्कंभ । असंख्यातायोजनकी कोडाकोडी लांबा पिहुलाबे । असंख्याता योजनकोडाकोडी परिक्खेवेणं सव्वरयणामया । असं ख्यातायोजनकी कोडाकोडी प्रमाण परिधि छे सर्वरत्नमय । अच्छासण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडछाया । आच्छा स्वच्छ नि र्मल नरम रजरहित निर्मल निष्कंप कचराविवर्जित । सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । प्रभासहित मनोज्ञ उद्योतसहित प्रसन्नकारी दर्शनीय अभिरूप प्रतिरूप । एत्थण आरणअच्युताण देवाण तिन्निविमाणावाससया हवंतिमिमक्खाय । इहां आ रण अच्युतनामदेवतानां तीनसैविमान आवास कह्या । तेणविमाणासव्वरयणामया । तविमान सर्वरत्नमय । अच्छासण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला

यपाणयदेयाण चत्तारि विमाणावाससया इयती मक्खाय जाव पडिरूवा, वक्सगा जहा सोहम्मे नवर म ज्के पाणयकप्पे तेण वक्सगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एत्थण आणयपाणयदेवाण पज्जा पज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता तिसुवि लोगस्स असखेज्जइभागे तत्थण बहवे आणयपाणयदेवा परिवसति महिड्ढिया जाव पभासेमाणा तेण तत्थ साण २ विमाणवाससयाण जाव विहरति पाणएत्थ देविदे देवरा या परिवसति जहा सणकुमारे णवर चउण्ह विमाणावाससयाण वीसाए सामाणियसाहस्सीण असीतीए आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च बहूण जाव विहरति । कहिण भते ! आरणच्चुयाण देवाण पज्जत्ता

मारे जाव पडिरूवा। विरचने वमूरे प्रसादिक प्रेम बिम सनत्कुमारलोपरे बालिदरूप। तमध पाणयपाणयदेवाण चत्तारिविमाणावाससया चव तितिमदाय जाव पडिरूवा। तिहां भाणत प्राणत देवताना चारविमानसेवक तीर्थंकरे कह्या यावत् पतिरूप। वडेसगा कह्या सौधर्मे नवरं मध्य त्य पाणयवडेंसग तत्रविमाना सव्वरत्नामया अच्छा जाव पडिरूवा। पर्याप्तक विमयोपम ए विमय बिचे भाषावतयक ते विमान सब रत्नमयके सार मृ पतिरूप। पणयं भाणयपाणयदेवानं पज्जत्ता २ च ठाणा पं । इहां भाणतप्राणतदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। तिसविलोकमा पस ख्यातमो भागे। लोक भागसोवले असंख्यातमेभागे हुवे। तत्थ बहवे पाणयपाणयदेवा परिवसति महड्ढिया जाव पभासेमाणा। तिहां घणा भाणत पाणतदेवता वसेछे मडधिक यावत् प्रभासित। तेण तत्थ साण २ विमाणावाससयाण जाव विहरति। ते तिहां आप आपणें विमानना सैकडाने वि चरे। पाणएत्थं वत्त देविंदे देवराया परिवसति जहा सणंकुमारे। प्राणतनामेंइन्द्र इन्द्रराजा वसेछे जिम सनत्कुमार। णवरं चउण्ह विमाणा वाससयाणं वीसाए सामाणिय साहस्सीण असीए आयरक्ख देवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं जाव विहरति। एतलाविशेष च्यारसे विमानोंवरी वीशहजार सामानिक देवतानेंवरी ८० हजार आत्मरक्षकोंवरी अनेरा घणादेवता यावत् विचरे। कहिण भंते आरणच्चुयाणं देवाण पज्जत्ता २ णं ठाणा पं ।

णामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरसणिज्जा अभिरूवा तसिण विमाण बहुमज्झदेसभाए पंच वडेंसया पण्णत्ता, तं०—असोयवडेंसए फलिहवडेंसए रयणवडेंसए जाव रूयवडेंसए मज्झे जत्थ अच्चुयवडेंसए, तेण वडेंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा, एत्थण आरणच्चुयाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण बहवे आरणच्चुया देवा जाव विहरंति, अच्चुए तत्थ देविंदे देवराया परिवसइ। जहा पाणए जाव विहरति नवरं तिण्हं विमाणावाससयाण दसण्हं सामाणियसाहस्सीण चत्तालीसाए

जाव पडिरूवा। निम्मलनिम्मल यावत् प्रतिरूप। एत्थणं आरणअच्चुयाणं इत्यादि तिन्नविमाणावाससया भवंतितिमक्खायं। इतो आरण अच्युतस्य नामा तोमविमान बताये बहुत। तसिण कप्पाण बहुदेसभाए पंचवडिंसया प त। तिवो सूक्ष्मपदके गोपमा विमानमे घणे मध्यविभागे पंचवतंस कविमान बताये। पंचवडिंसए पडिरूव रयणव जाव रूयव मज्झे इत्थ चच्चुय। पंचवतंसक स्फुटिक रत्न जातिरूपक विषे इतो अच्युतव तंसक। ते वडिंसया सब्बरयणामया जाव पडिरूवा। ते वतंसक सर्व रत्नमय यावत् प्रतिरूप। एत्थण आरणअच्चुयाण देवाणं पज्जत्ता २ ण ठा ण। इतो आरण अच्युतदेवतारा पर्याप्ता अपर्याप्तारा ठाम बताया। तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभाग। तीम भासवाकने असंख्यातमें भागे हवे। तत्थणं बहवे आरणअच्चुयादेवा परिवसंति जाव विहरंति। तिहां घणां आरण अच्युतदेवता बसेछे यावत् विचरे। अच्चुए इत्थ देविंद्देवरायाया परिवसंति। अच्युतनामे इतो इन्द्र देवराजापणे बसेछे। जहा पाणए जाव विहरंति। जिम प्राणतमांहे यावत् विचरे। नवरं तिण्हविमाणावाससयाण दसण्ह सामाणियसाहस्सीण चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं आहेवच्चं कुव्वमाण जाव विहरति। एतलाविशेष तीनसेविमान बताया दशहजार सामानिक देवता ४ हजार आत्मरक्षक देवोंरो अधिपतिपणे यावत् विचरे—चतालिशहजारा वारसमदवकरयमसवक्याय पद्यापत्ताकोसा दयमवयसकरवा

आयरक्खदेवसाहस्सीण आहेवच्चं जाव कुव्वेमाणे विहरति, बत्तीसअट्ठावीसा बारसअट्ठचउरोसयसहस्सा पन्नासचत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिण्णि । सत्तविमाणसयाइं चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ सामाणियसंगहणीगाहा—चउरासीइअसीति बावत्तरिसत्तरीयसट्ठीए । पन्नाचत्तालीसा तीसावीसादससहस्सा ॥ ३ ॥ एएचेव आयरक्खा चउगुणा कहिण भंते ! हेट्ठिमगेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ ण ठाणा पण्णत्ता ? कहिण भंते ! हेट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! आरणच्चुयाणं कप्पाणं उप्पिं जाव उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं तओ गेवेज्जविमाणा

र । १ । सोधम १२ ईशाने २८ सनत्कुमारे १२ माहेन्द्र ८ ब्रह्मेन्द्रे ४ लांतक्ये सहस्य लांतके ५ सहस्य शुक्रे ४ सहस्र सहस्रारे ६ । १ । आनतप्राणतकल्पे चत्वारिशतारणाच्युते त्रीणि च सप्तविमानशतानि चतुर्ष्वपि एतेषु कल्पेषु । आनत प्राणत कल्प ४ ० आरण अच्युते एतिकायिक १११ हि विमें १ ० ८० वि म १ पंचानुत्तरे ५ एवं सर्व १२२ स्थे । २ । सामानिकसंग्रह । त्रिविध सामानिकदेवता संग्रहणी गाथायेन्ते—चतुरशीतिरशीतिर्द्वासप्ततिः सप्ततिश्च षष्टिश्च पंचाशत्चत्वारिंशत्त्रिंशद्विंशतिदशसहस्राः एतद्विमानदेवस्य चतुर्गुणिता । ३ चौरासीसहस्र सौधम ईशाने ८० सहस्र सनत्कुमारे ७२ सहस्र माहेन्द्रे ७० सहस्र ब्रह्मेन्द्रे ६ सहस्र लांतके ५ सहस्र शुक्रे ४ सहस्र सहस्रारे ३ सहस्र आनतप्राणते २० सहस्र आरणअच्युते १० सहस्र एतौ च आत्मरक्षकदेवता चतुर्गुणा । कहिणंभंते हिट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प । किंवा हे भगवन् हेठला ग्रैवेयकना पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामपन्ना । कहिण भंते हेट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति । किंवा हे भगवन् हेठला ग्रैवेयकदेवता वसैछै । आयुष्मा आरणअच्युतानां कल्पानां उपरि यावत् उर्ध्वं उत्पत्ता । हे गौतम आरण अच्युत कल्पको उपरि यावत् । एतच हिट्ठिमगेविज्जमाणं देवाण तओ गेविज्जविमाण पत्थडा प । इहां हेठला ग्रैवेयक ना देवता वसेछै तिन ग्रैवेयकना प्रतर कह्या । पाईणपडीणायताउदीणदाहिणविच्छिन्ना पडिपुण्णचंद संठाणसंठिया । पूर्वपश्चिमें लांबा उत्तरदक्षिण

पत्यक्ता पन्नत्ता पाईणपडिणायगा उदीणदाहिणविच्छिन्ना पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीभासरासि वन्नाभा सेसं जहा बंभलोगे जाव पडिरूवा, तत्थणं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं एक्कारसुत्तरे विमाणावास सए हवंतीति मक्खायं तेणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा, एत्थणं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं २ ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे हेट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति सव्वे सममहिड्ढीया सव्वे समज्जुतीया सव्वे समजसा सव्वे समबला सव्वे समाणुभावा महासोक्खा अ

विमना पूर्णचन्द्रमस्थानसंस्थित है। पविमानो भासिरासिवर्णाभा सेस जहा बंभलोए जाव पडिरूवा । शिरवमोग्रैभोक्ररो भामासहित जिम वृम्भलोक तिम यावत् प्रतिरूप। तत्थण हेट्ठिमगविज्जयाण देवाण इक्कारसुत्तरविमाणावाससय हवतित्तिमक्खाय। तिहां हेठलो ग्रैवेयकना देवता एकसोइग्यारह विमाननोमस्थानको तीर्थंकरे। तेण विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा। ते विमान रत्नमय यावत् प्रतिरूप। तत्थण हेट्ठिमगविज्जगाण देवाणं प ज्जत्ता २ णं ठाणा प । तिहां हेठला ग्रैवेयकदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। तिसुविलोगस्स असंखिज्जइभागे। तीन वासस्थाने असंख्या तमेंभागे छे। तत्थणं बहवे हेट्ठिमगविज्जगा देवा परिवसंति। तिहां घणा हेठलाग्रैवेयकनादेवता बसेछे। सव्वसमड्ढिया सव्वे समज्जुइया सव्वसम जसा सव्वसमबला सव्वेसमाणुभावा। सर्व सरखिऋद्धि समकांति समख्यातवंति सबसरीखे यश बलसरीखा सबसरीखेभावे। महासुक्खा अणिंदा अपेस्सा अपुरोहिया। महासुखी इन्द्र नहीनहीं नहीं दासनही पुरोहितनहीं। अहमिंदानाम तेदेवगणा प । सघला इन्द्रसरीखे एहवें ते देवगण कह्या। सम णाउसो। अहो श्रमण आयुष्मन्त। कहिणंभंते मज्झिमगविज्जगदेवाणंगा परिवसंति। किहां हेभगवन् मध्यमग्रैवेयकनादेवता बसेछे। गोयमा हिट्ठि मगविज्जगाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता। हेगौतम हेठला ग्रैवेयकथी ऊपर घणा दूर यावत् जाइये। एत्थणं मज्झिमगविज्जगदेवाणं प ज्जत्ता पज्जत्ता २ ण ठाणा प । तिहां मध्यम ग्रैवेयकदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। कहिणंभंते मज्झिमगविज्जगादेवा परिवसंति। किहां

णिदा ऋपेस्साश्चपुरोहिया श्चहमिदा नाम ते देयगणा पण्णत्ता । समणाउसो ! कहिण भंते ! मज्झिमगाण गेयिज्जगदेयाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! मज्झिमगेयिज्जगदेया परियसति ? गोयमा ! हेठिमगेविज्जगाण उप्पि सपक्खि सपडिदिसि जाय उप्पइत्ता एत्थण मज्झिमगेयिज्जगदेयाण तत्तोगेयिज्जगयिमाणपत्थडा पण्णत्ता पाईणपडीणायता जहा हेठिमगेयिज्जगाण नयर सत्तुत्तरे यिमाणावाससए हवंतीसि मक्खाए, तेण यिमाणा जाय पडिरूवा एत्थण मज्झिमगेयज्जाण देयाणं जाय तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण यहवे मज्झिमगेयेज्जगा देया परियसंति जाय श्चहमिंदा नाम देयगणा पण्णत्ता । समणाउसो ! कहिण भंते ! उयरिमगेवेज्जगा देयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! उयरिम

हेभगवन् मध्यम ग्रैवेयकना देवता वसे । गोयमा हेठिमगेविज्जगाण उप्पिसपक्खि सपडिदिस जाव उप्पइत्ता । हे गौतम प्रथम ग्रैवेयकथी ऊपर वंचा थोभर यावत् जाइजे । एत्थणं मज्झिमगेविज्जदेवाण तमागविज्जविमाणपत्थडा प । तिहां मध्यमग्रैवेयकना देवता तोमग्रैवेयकना प्रतरछे । पाइण पडिणायया एव जहा हिट्ठिमगेविज्जगाणं नवर सत्तुतरे विमाणावाससए हवतित्तिमक्खाय तेण विमाणा जाव पडिरूवा । पूर्वपश्चिमे लांबा उत्तम हेठमागे ग्रैवेयकनोपर एतलाविशेष एकसोसात विमान तीर्थंकरे दखेब्या तेविमान यावत् प्रतिरूप । एत्थण मज्झिमगविज्जगाण जाव तिसविलोगस्स असंखिज्जइभाग । इहां मध्यमग्रैवेयकना देवताछे यावत् तीन लोकनाकने असंख्यातमेंभागे छुए । तत्थण बहवे मज्झिमगेवेज्जगदेवा परिवसति । तिहां घणा मध्यम ग्रैवेयकना देवता वसेछे । जाव अहमिदाणामापण्णत्ता प । यावत् अहमिन्द्रानामापरथम कह्या । समणाउसो । अहोसमण आयुष्मा नहो । कहिणभंते उवरिम गविज्जगदेवाण पज्जत्ता २ णं ठाणा प । किहां हेभगवन् उपरिला ग्रैवेयकना देवता पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणभंते उवरिमगविज्जगादेवा परिवसति । किहां हेभगवन् उपरलाग्रैवेयकना देवता वसेछे । गोयमा मज्झिमगविज्जगाण जाव उपइत्ता । हेगौत

विंरूपाः पुनस्ते इत्याद यह मिद्रानाम ते देवगणाः प्रज्ञप्ता ? हेश्रमण ऐवायुष्मन् ! सिद्धसूत्रे एगाओपयकोडीइत्यादि ॥ परिरयपरिमाण विष्क भवागदहगुणत्यादि ॥ करणवक्षा रसय मामतव्य सुगमत्वात कश्वसमासटीका वा परिज्ञावनीयाः तत्र पंचवस्त्वाद्रिश्वासमप्रमाणविष्कम्ममनुष्यक्षत्रपरि रयस्य एतावत्प्रमाणस्य सविस्तरं भावितत्वात् तस्याद ईषत्प्राग्भाराया पृथिव्या बहुमध्यदेशभागे अष्टयोजनिकमायामविष्कम्भाभ्याम अष्टयोजन

गेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! मज्झिमगेवेज्जगदेवाणं उप्पिं जाव उप्पइत्ता तत्थणं उवरिमगेवेज्जगाणं देवाणं तओ गविज्जगविमाणपत्थडा पण्णत्ता । पाईणपडीणाद्द सेसं जहा हेट्ठिमगेविज्जगाणं नवर एगे विमाणावाससए भवतीति मक्खाए, सेसं तहेव भाणियव्वं जाव अहमिंदा नाम ते देवगणा पण्णत्ता समणाउसो ! एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमएसु सत्तुत्तरं च मज्झिमए । सयमेगं उवरिमए पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥ कहिणं भंते ! अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! अणुत्तरोववाइया

म मध्यमग्रैवेयकको यथा यावत् तथा । पश्चात् उपरिमगैवेयकमाद देवाव तथोमिविध्यविमानपस्तटा प्र इतो उपरिमग्रैवेयका देवता हे तीन विमा नना प्रतरहे । पाइण पडोणादया सेसं जहा हिट्ठिमगविज्जमाई । पूर्वपश्चिम ज्ञाब। शेष सब जिम नीचलाग्रैवेयकनोपरि । नवर एगेविमाणावाससय हवतिति मक्खायं सर्वतंथ माणि जाव अहमिंदानामे तेदेवगणा पं । पततासिम्य एकसोविमानछे तिहंवरे कह्या शेष तिमजीव कहवो यावत् अ हमिंद्र नामदेवा समूहथा । समणाउसाभाशा आयुषमंत आयुपावन्तो माता । इग्यारसुत्तरं हेट्ठिमएसुत्तत्तरयमज्झिमए । सयमेगंउवरिमए पचेवअणुत्त रविमाणा १ ॥ हेठलामेवेयकनेविषे एकसोइग्यारहविमान मध्यमग्रैवेयक पांचविमान अनुत्तरविमानछे । कहिंयभंते अणुत्तरोववाइयादेवा परिवसं ति । किहां हेभगवन् अनुत्तरवासो देवता वसेछे । गोयमा इमीसे रयणप्पभाएपुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ । हेगोतम ए रत्नप्रभा पृथि वीनो घणो समारमणीक भूमिभागथको । उड्ढंचंदिम सूरिय गहगणनक्खत्ततारारूवाणं । ऊंचा सूर चंद्र गुहमह नक्षत्र ताराहूपथी । बहूइंजोयण

देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगसुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयकप्पा तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए वितीवइत्ता तेण परं दूरं गता णीरया निम्मला वितिमिरा विसुद्धा पंचदिसिं पंच अणुत्तरा महतिमहालया महाविमाणा पण्णत्ता, तंजहा—विजये वेजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । ते णं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासा

तारे बहुत सयसहस्र योजन बहुकोडी योजन बहुकोडी योजनकोडाकोडी । घणां योजनना सैंकडा घणां योजनना सहस्र घणां योजनना लाख घणां योजनना कोडाकोडी । ऊंचा दूर जाय उपरांत । जहां आगे सौधर्म ईशान सनत्कुमार माहेंद्र ब्रह्मलोक लांतक शुक्र सहस्रार आणय पाणय आरण अच्युत कल्प । सौधर्म ईशान सनत्कुमार माहेंद्र ब्रह्म लांतक शुक्र सहस्रार आणत प्राणत आरण अच्युत । तिण्णिय अट्ठारसुत्तर गेविज्जवि माणावाससए वीतिवत्ता । ऊपर तीनसे अठारह ग्रैवेयकविमान मूकीने छोडीने । तेण परं दूरं गया नीरयावि तिमिरा विसुद्धा । तिमिररहित दूरगया रजरहित अंधाररहित गया । पंचदिसि पंच अणुत्तरा महतिमहालया महाविमाणा पण्णत्ते । पांचदिशि पंच अनुत्तर उत्कृष्टा मोटामोटा विमान कह्या ते कहे—विजए वेजयंत जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । विजय वैजयंत जयंत अपराजित सर्वार्थसिद्ध ५ । तेणं विमाणा सव्वरयणामया । ते पांचविमान सर्व रत्नमयछे । अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडछाया । आछा सूक्ष्म चीकणा घस्या मठ्या रजरहित निर्मल कर्दमरहित । सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । प्रभासहित शोभा सहित उद्योतसहित प्रस

प्रमाणे कुछ चाही या मानि याउस्पन योसलगी वैरलमेलि नाथ। प्रथमा तदनतर सर्वासु दिसु विदिसु च मारया लोकया २ प्रदेशमहाज्या

टीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्यण अणुत्तरोववाईयाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्यण बहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति सव्वे समसड्ढिया सव्वे समबला सव्वे समाणुभावा महासोक्खा अणिंदा अप्पेस्सा अपुरोहिया अहमिंदा त देवगणा पण्णत्ता । समणाउसो । कहिण भंते । सिद्धाण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते । सिद्धा परिवसंति ? गोयमा । सव्वट्ठस्स महाविमाणस्स उवरिल्लाउ थूभियग्गाउ दुवालजोयणे उड्ढं अबाहाए एत्यण इसीपब्भारा नाम पुढवी प०, पणयालीस जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं एगजोयणकोडीबायालीस च सयसहस्साइं तीस सह

प्रकारा दर्शनीय अभिरूप प्रतिरूप। यहांपर अनुत्तरविमानवासी देवोंके पर्याप्ता २ ठा० प० । इन अनुत्तरवासी देवता पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठाम कहा। तिनविमानका घर्गासंख्यातभागमें। तीनों लोककें असंख्यातवें भागमें। तहां बहुत अनुत्तरविमानवासी देवता परिवसति। तिहां घणां अनुत्तरवासी देवता वसे। सारे समऋद्धि सारे समबला सारे समानुभावा महासुखा। सब सर्वद्धिक सब समबला सब महानुभाव महासौख्य। सर्वेदा सेवा अपराधीया अहमेंद्रानाम देवगणा प० । इन्द्ररहित प्रेष्यरहित पुरोहितरहित सब अहमिन्द्रनामे देवता। समणाउसो। आयुष्मन श्रमण। कहिंयां स्थानक प० । किहां भगवन् सिद्धोंका स्थानक कहा। कहियां सिद्ध परिवसति। किहां भगवन् सिद्ध वसे छे। गोयमा सर्वार्थसिद्धविमान के ऊपरिलाथी थूभियाथी बारहयोजन ऊंचा अबाधाए। हे गौतम सर्वार्थसिद्ध महाविमान ऊपरलो थूभिकाथकी १२ योजनप्रमाण ऊंचो जावा जाये। इहां ईषत्प्राग्भारानाम पृथ्वी प० । तिहां मनुष्यलोक प्रमाणे पैंतालीसलाख योजन लांबी चौड़ी। पैंतालीसलाख योजन आयामविष्कंभे। ४५ लाख योजन लांबपणे चौड़पणे, तिसे परिधि कहे - एक कोड़ बयालीसलाख तीस हजार। एककोड़ी योजन ४२ लाख

परिहीयमाण सर्वेषु परमांतषु मक्षिकापत्रतो ऽप्य तितन्वी अंगुलासंख्येयभागं बाहल्येन प्रज्ञप्ता स्थापनाः ईषत्प्राग्भारेति पर्यंकरत्नो पदसमुदायोपपचा रात् इषत्प्राग्भारा इति वा तनुरिति वा तन्वीवा शेषपृथिव्यपेक्षया अतितनुत्वात् तनुतनुरितिवा इति ॥ तनुन्योपि जगत्प्रसिद्धस्य तन्वी मक्षिका पक्षतापि पर्यंतप्रदेशाति तनुत्वात् तनुतन्वी सिद्धिरिति वा सिद्धक्षेत्रस्य प्रत्यासन्नत्वात् सिद्धालय इति वा इति सिद्धक्षेत्रस्य प्रत्यासन्नतयोपचारत सिद्धानामा लयः सिद्धालयः एवं मुक्ति रिति वा मुक्तालय इति चेत्यपि परिज्ञाथमीय तथालोकाग्रवर्तमानत्वात् लोकाग्रमिति लोकाग्रस्य स्तूपि

रुवाइ दोन्नि य अउणापन्ने जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पन्नत्ता । इसीपब्भाराएण पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठजोयणाइं बाहल्लेण पन्नत्ते , ततो अणंतरं चणं मायाए २ पए सपरिहाणी २ परिहायमाणी २ सव्वेसु चरिमंतेसु मच्छियपत्तातो तणुयरी अंगुलस्स असंखेज्जइभागं बाहल्ले ण पन्नत्ता , इसीपब्भाराएणं पुढवीए दुवालसनामधेज्जा पन्नत्ता इसीतिवा इसीपब्भाराइवा तणुतिवा तणु

योजन। ४५लक्षयोजन पञ्चचत्वारिंशत् शतसहस्राणि योजनानि आयाम विष्कम्भेन एका योजनकोटी द्विचत्वारिंशत् शतसहस्राणि त्रिंशत् सहस्राणि द्वे शते एकोनपञ्चाशदधिके किञ्चिद्विशेषाधिके परिक्षेपण पं । दोहजारबावननिविशे चगुणपंचास योजन कांइक विशेषाधिक परिधि क हिये। ईषत्प्राग्भाराएण पृथ्वीए बहुमध्यदेशभाग अष्टयोजनिकक्षेत्र अष्टयोजनानि बाहल्येन पं । एम सर्वसमावसी टीकाथी सब विस्तर जाणवा। ईषत्प्रा ग्भारा पृथिवीनो वचीं मध्यदेशभागी ८ योजनप्रमाणक्षेत्र ८ योजन बाहल्य जाडपणे एतला कहियो। तदानंतरंच मात्राए सपरिहाणीए परिहाय मानी २। तिवारपछी मात्रा थोडि थोडि हिण्डिमाणे २ प्रदेशे परिहरिवैमाण घटत २ थको। सर्वेषु चरिमंते समच्छियपत्तातनुयरो अंगुलस्स असंखि ज्ञभागे बाहल्यं पं० । सघलाने छेहडे माखीनो पांखडो तिथ पातली थकी घणुं पातली अंगुलनो असंख्यातमेभागमो माखायें बाहल्यपणें कही। ईषत्प्राग्भाराए पुढवी ए दुवालसनामधिज्जा पं० । ईषत्प्राग्भारा पृथिवीना १२ नाम कह्या तद्यथा। ईषिप्राग्भाराइवा तावदणा सिद्ध इवा सिद्धालय इतिवा मुक्तीइवा मुक्तालय तिवा लोकाग्रेतिवा लोकाग्रस्तूपिकाइवा लोकप्रतिबुज्झणाइवा। इषत्प्राग्भारा पातली तेमाटे ईषत्प्राग्भारा माटीपणे तेमाट बेसी पातलीथी पातलीस पा

प्रमाणं श्रय गाहो योजनानि सायुस्यन षोतस्वेनो वैसस्वेमति गाय प्रथमा तदनतर सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च मात्रया सोकया २ प्रदेशप्रहान्या

दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थण अणुत्तरोववाईयाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । तिसुवि लोगस्स असखेज्जइभागे तत्थण बहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसति सव्वे समसहाड्डिया सव्वे समबला सव्वे समाणुभावा महासोक्खा अणिदा अप्पेस्सा अपुरोहिया अहमिदा त देवगणा पणत्ता । स मणाउसो ! कहिण भते ! सिद्धाण ठाणा पणत्ता । कहिण भते ! सिद्धा परिवसति ? गोयमा ! सव्वट्ठस्स महाविमाणस्स उवरिल्लाउ थूभियग्गाउ दुवालजोयणे उड्ढ अवाहाए एत्थण इसीपब्भारा नाम पुढवी प०, पणयालीस जोयणसयसहस्साइ आयामविक्खंभेण एगजोयणकोडीबायालीस च सयसहस्साइ तीस सह

प्रकारो दर्शनीयाभ्य अभिरूप प्रतिरूप । पत्रप अनुत्तरोपपातिकाना देवाना पर्याप्ता २ ठा प । इहो अनुत्तरवासोदेशता पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कथा । तिर्यग्विमायस्य पर्यायिण्यभागे । तीमे वालवाकने असख्यातमेभागे । तत्रप बहवे अनुत्तरोपपातिका देवा परिवसति । तिदा सर्वे अनुत्तरपा सादृशता समझे । सारे समद्धस्थिया मर्वेसमवसा सर्वसमभावभावा महासुखा । सब महर्द्धिक सब समवसा सब महानुभाव महासखो । अनेस्रा अदेसा अपराष्ट्या अहमिन्द्रानाम देवगणा पं । इन्द्रमयो प्रेष्यामयो पुरोहितमयो सब अहमिन्द्रनामे देवगणा । समणाउसो । भाग्यमय आयुपावन्ता । वहिनमते ठाणा प । किहो कममवम् सिडमा स्थानक कथा । वहिनमते सिद्धा परिवसति । किहो केममवम् सिद्ध वसेडे । गायमा सवट्टम्सविमान का उपरिमाणा ठूमिममाणा तुरासस आदन कवड अवगाहाए । केसोतम सर्वार्थसिद्ध महाविमान उपरणो भूमिकायको १२ योजनप्रमाण अपो जाया थावे । इत्थम इसीप्पभारानाम पुढवी पं । तिहो मनुष्यनो प्रत्यदावे सविस्तरभाव माटे ईषत्प्राग्भारपृथिवो कही । पचयालीस जोयणसयसहस्साइं आ यामविक्खंभेणं । ४५ लाखयोजन लांबपणे पिहुलपणे तिमे परिधि कहके- एग जोयणकोडो बायालीसंचसयसहस्साइ । एककोडी यायन ४२ लाख

रामा। पृथिव्या ऊर्द्धं सीताए इति नि श्रेणित्वा योजने लोकान्तो भवति तस्य च योजनस्य य दुपरितन मष्यूत चतुर्थे तस्य गव्यूतस्य या सर्वो परितनो य भागो ऽत्रमितियाख्यालंकारे सिद्धाजवतः सादिका। कर्मक्षयानन्तरं सिद्धत्वभावात् एतेन ममादिमुद्धपुरुषप्रवादप्रति पन्ने आयेदिशो दृष्टव्या। अपर्यवसिता रागाद्यभावन प्रतिपातासम्भवात् रागादयो हि सिद्धत्वा च्यावयितुं प्रभविष्णवो न च त भगवता सति तेषां निर्मूलकार्षक पितत्वात् न च निर्मूलकापकपिता अपि भूयः प्रादु भवति बीजाभावादिति तथा सर्वे जातिजरामरणबन्धनराशत्रुनि यत्र तासु योनिषु संसार। ञवरत्वं तत्र च यः कर्मकलीनाकः कदम्यमामता य य दिव्यसुरमनुमाषाना मपि पुनर्भव संसार गर्भवसति प्रपञ्च। तो समतिक्रांता यत एव प्रा

निरुवा पक्तिरुवा इसीपब्भाराएण सीताएजोयणमिळोगतोतस्सण जोयणस्स जेसे उवरिल्ले गाऊए तस्सण गाउयस्स जेसे उवरिल्ले ठब्भागे एत्थण सिद्धा भगवतो सादिया अपज्जवसिया अणेगजातिजरामरणजो निससारकलंकलीभावपुणब्भवगब्भवासवसही एवंच समइक्कंता सासयमणागयद्ध कालं चिठंति, तत्थयियंते

नि पञ्च भिन्नकटबाया। अप्पमा सपिरिता सक्याया पाया। या दरयविया पमिकया परिकया इ सिप्पमाराप भापाए। प्रभासचित सन्जीत यो भायमान बयातवजित ममसमकारी दृष्याग्य पभिकप प्रतिकप इ यथाग्भारमो भाग। आवन्नियोवता तप्पच आयवस्स जसे उवरिलेगाउए तप्पर्व भाववण जसे उवरिले छम गे। वायने सार्वाति ते वीत्रमे येते अपरिसामाज प्रत्यो ते गाउआ जे अपरिवागाछाना षड्भाग। एत्थ सि द्यामवंता साइंका अपच्चवसिया। तिष्टे सिद्ध भगवन्त सोत्रानमये पमादिपपये एठा वया अपयवसित रागादिपन पभाव पाका ञपथवा। पपगबातजरामरण भावितसार कलंकलीभाव ययभन गभवासवहो। पमेकजाति जरामरणयापि ससार तेस्ना वलीवको कदलभाव सी दिव्यसुख पाप्या पुनभवसंसारे गमनो भवति प्रपर्वरोने यसे। एवच समयक्के तासासबमणामर्दबाल विद्वृति। इम समय सिद्धा ते तेच पुण्याकमनवो एतमे मात्रत पनागतबालपवत उपाके तिष्ठांती तठामया प्रपत्या। तत्वयिपते पवेसा पर्वेयामानिपमया। तिष्टे सिद्दत्वेन पष्टुगाके भगवन्त ते वेदरहित

केन लोकाग्रस्तूपिका तथा लोकाग्रेण प्रत्यूह्यते इति लोकाग्रप्रतिवाहिनी सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वसुखावहा इति ॥ प्राणा द्वित्रिचतुरिन्द्रिया इति भूता
स्तरवः जीवाः पञ्चेन्द्रियाः शेषाः प्राणिनः सत्त्वा उक्तञ्च प्राणा द्वित्रिचतुः प्रोक्ता भूता स्तरव स्मृताः । जीवाः पञ्चेन्द्रिया ज्ञेयाः शेषाः सत्त्वा उ
दारिता ॥ १ ॥ सर्वेषां प्राणभूतजीवसत्त्वानां सुखावहा उपद्रवकारित्वाभावात् सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वसुखावहा सा च ईषत्प्राग्भारा पृथिवी श्वेता
श्वेतत्वमेवोपमया प्रकटयति शङ्खदलविमलेत्यादि शङ्खदलस्य शङ्खदलचूर्णस्य विमलामिमलः स्वस्तिकः शङ्खदलविमलस्वस्तिकः स च मृणालं च द
करजं च तुषारं च हिमं च गोक्षीरं च हारश्च तथा मिव वर्णो यस्याः सा तथा उत्तानकच्छत्रं तानीकृत यत् छत्र तस्य च स्वस्थानं यत्र संस्थिता
उत्तानकच्छत्रसंस्थानसंस्थितत्वं च प्रागुपदर्शितस्यापनातोऽज्ञावमीयं ॥ सर्वार्जुनसुवर्णमयी सर्वात्मना अर्जुनसुवर्णमयी इसीपब्भाराएणमित्यादि इषत्प्राग्भारा

तणुयरीतिया सिद्धितिया सिद्धालएतिया मुत्तीइया मुत्तालएइवा छोयग्गेतिया लोयग्गथूभियातिवा लोय
पडिवुज्झणाइया सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहा वइवा । इसीपब्भाराण पुढवी सेता संखदलविमलसोत्थिय
मुणालदगरयतुसारगोक्खीरहारवन्ना उत्ताणयछत्तसंठाणसंठिया सव्वज्जुणसुवण्णमई अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा
मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरसणिज्जा अ

तनो सिद्धक्षेत्र सिद्धालयात् मुक्तिमता मुक्तालय ममाभूयनोभाव ना ए ४ नाम गुणनयचे लोकने अग्र लोकने यभिलामोपरे लोकाग्र ८ प्रतिबुद्धस्यात् ।
सर्वप्राण भूत जीव सत्त्व मुखावहा । सर्व प्राण भूत जीव सत्त्वने तिहां आव तेहने सुखकारी । ए सिद्धशिला पृथ्वी सेत संखदल विमलसोत्थिय मुणाल
दगरज तुसार गोक्षीर हारवत्रा । ॥ १२ नामना ए पृथ्वीनी वर्णलेखे श्वतनी घोपमा शङ्खना दल जिसा निर्मल साथिया मृणाल कमलकन्द जलकणे
प्रम मोरज स्वतगाम मातीमागार उज्वला श्वेत दूधसम । उत्ताणयछत्तसंठाणसंठिया यावत्तुल मयसमा था । उत्तान छत्रम सम्झाने संस्थित सर्व प
सुवर्णमय । अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया । आच्छा सूक्ष्मपुद्गल निष्पन्न घठारा मठारा नीरज निर्मल

एते सिद्धाः प्रतिष्ठिता व्यवस्थिताः । तथा च कस्मिन् क्षेत्रे बोंदिं तनुं शरीरमित्यर्थस्तत् तां त्यक्त्वा गत्वा सिध्यन्ति निष्ठितार्था भवन्ति, चि
कारस्त्वत्रानुस्वारलोपो द्रष्टव्यः अयमेवार्थ उपमाद्वारेणापि सूत्रेऽस्मिन् न विरोधभावः तथाचान्यत्राप्येवं प्रयोगः–यत्थयचमसमकार इत्यादिरुपचारविष
यश्चद्रोजमनुजाति नरचारस्तिघुवर्षे इति । एव क्षिप्यश्च प्रश्न तत्र भूरिराह–अलोयपडिहयासिद्धाइत्यादि ॥ अत्रापि सप्तमी तृतीयार्थे, लोकन
ककालाकाशास्तिकायरूपेण प्रतिहताः स्खलिताः सिद्धाः इह तत्र धर्मास्तिकायाभावात् तदागमनपर्यवृत्तिरथ प्रतिस्खलनं ननु सव्यपेक्षि विघातो
ऽप्रतिघत्वात् अप्रतिघातानां सर्वपरति विघातो नाम्यथामिति । तथा लोकस्य पञ्चास्तिकायात्मकस्य अग्रे मूर्धनि प्रतिष्ठिताः अपुनरागत्या
व्यवस्थिता इह मनुष्यलोके बोंदिं तनुं त्यक्त्वा तत्र लोकाग्रे समयान्तरमवक्रान्तरास्पर्शयोगेन गत्वा सिध्यन्ति निष्ठितार्था भवन्ति सम्प्रति सत्रगताना
परमस्थानमानं तदभिधित्सुराह–दीहंवाहस्संवाइत्यादि ॥ दीर्घं वा पञ्चधनुःशतप्रमाणं ह्रस्वं वा हस्तद्वयप्रमाणं वा शब्दात् मध्यमं वा विचित्र च
परमन्य पश्चिमन्य भवत् संस्थानं तत तस्मात् संस्थानात् त्रिभागहीना वदनोदरादिरन्ध्रपूरणेन तृतीयेन भागेन हीना सिद्धानामवगाहना भवना
इमो परसामित्यवगाहना स्थावस्थैव भणिता तीर्थकरगणधरैरिति अत्र गत संस्थानप्रमाणापेक्षया त्रिभागहीनं तत्र संस्थानमितिभावः एतदेव
स्पष्टतरमुपदर्शयति–जंसंठाणंतुइहइत्यादि ॥ यत्संस्थानं यावत्प्रमाणं संस्थानं इह मनुष्यभवे चासीत् तदेव, भवति प्राणिनः चरमसमयवर्तिनो ऽ
सिध्यतः नवं शरीरं त्यजतः परित्यजतः कायस्य परिशिष्टमस्पति भाव चरमसमये सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिध्यानबलेन वदनोदरादिरन्ध्रपूर
णात्त्रिभागेन हीनं प्रदेशघनमासीत् ॥ तसंठाणंतहिंतस्सति ॥ तदेव च प्रदेशघनं भूतप्रमाणापेक्षया त्रिभागहीनप्रमाणं संस्थानं तत्र लोकाग्रे तस्य सि

तस्स ॥ ४ ॥ तिन्निसयातेत्तीसा धणुत्तिभागोयहोइनायव्वो । एसाखलुसिद्धाण उक्कोसोगाहणाभणिया ॥ ५ ॥
चत्तारियरयणीओ रयणितिभागूणियायबोधव्वा । एसाखलुसिद्धाण मज्झिमोगाहणाभणिया ॥ ६ ॥ एगाय

नवमव मस्य नरः तत्रैव चरमभवे शरीरक बोंदिं चरमसमये सूक्ष्मक्रियाध्यान वदनादिरन्ध्र पूरणवशेन घनप्रदेशीत युत त प्रदेश घनमूल प्रमाणापेक्षाये

गतम मागतं काम तिष्ठति ॥ तत्रापि तेष्वेवेत्यादि ॥ तत्रापि च सिद्धमगताः सत से भगवतो ऽवेदाः पुरुषवेदादिवेदरहिता अवेदमाः सा तामातावदमानावात् निममाममत्वरहिताः भगमाः बाह्याभ्यन्तरसङ्गरहिताः, कस्मादवमतआह—संसारविप्रमुक्ता इतो प्रथमा यतः संसाराद्वि प्रमुक्ता ससादयेन पर्वदमा निममा मर्वनाय पुम कथभूता इत्याह—पयसनियतसठाणा ॥ प्रदेशैः रात्मप्रदेशैः मेतु यात्मपुद्गलैः शरीरपञ्चकस्या पि भवात्मना त्यक्तत्वात् निवृत्तं निष्पन्नं संस्थानं येषां ते प्रदेशनिवृत्तसंस्थाना अत्र शिष्यः पृच्छत्याह—कहिपडिहयासिद्धाइत्यादि ॥ कहि इत्यत्र सप्तमी तृतीयार्थेवा इत्तत्वात् ॥ यथा तिसुतिसुगत्तेत्यापुहवीइत्यादि ॥ तत्रायमर्थः—कस्मिन् प्रतिहताः क्व सूनसिता सिद्धा मुक्ता तथा क्व कस्मिन्

अवेदा अवेयणा निम्ममा असगाय ससारविप्पमुक्का पदेसनिव्वत्तिसठाणा । कहिपडिहयासिद्धा कहिसि द्धापइठिया । कहियोदीवइत्ताण कत्थगतूणसिज्झइ ॥ १ ॥ अलोएपडिहयासिद्धा लोयग्गेयपइठिया । इहयोदीवइत्ताण तत्थगतूणासिज्झइ ॥ २ ॥ दीहवाहस्सया जचरिमन्नवेहविज्जासठाण । तत्तोतिन्नागहीणा सिद्धाणोगाहणात्नणिया ॥ ३ ॥ सठाणतुइह जयचयतस्सचरमसमयम्मि । आसीयपदेसघण तसठाणताहि

वदमारहित ममतारहित । सर्वथाय ससारविप्पमक्ता पपसनिव्वत्तिसठाणा २ । बाह्याभ्यतर सगरहित संसारथीमूकाथा आत्मप्रदेशे यात्मपुद्गल ५ शरी र सस्थान रहितछे । कहिपडिहयासिद्धा कहिसिद्धापइठिया कहियाहिचइत्ताण कत्थगतूणसिज्झइ ॥१॥ शिष्यपूछे किवे प्रतिहत केवे सकलितछे सिद्ध किहां सिद्धथाछे किहां आयमरीर मूकीने किहां जाईने सीझे—अलोएपडिहयासिद्धा लोयग्गेयपइठिया इहंबोदिचइत्ताणं तत्थगतूणसिज्झइ ॥ २ ॥ अलोकने पत्नाछे धर्मास्तिकायादिकना अभाव लोकाग्रे रह्याछे इहां मनुष्यक्षेत्रे शरीरछांडीने तिहां जाईने सीझे—दीहवाहस्सवाय जचरिमभवे हविज्जसठाण तत्तोतिभागहीणा सिद्धाणोगाहणाभणिया । २ दीघ ५ धनुष प्रमाण प्रमाणे जे छेहलेभवे मनुष्यने हुवे ते संस्थानवली त्रिभाग हीनपणे सिद्धनी अवगाहना कही, हिवे सूत्र देखाडेछे—सठाणतुइह भवंचयतस्सचरमसमयम्मि असीयपदेसघण तंसठाणतहिंतस्स ॥ ४ ॥ जे इहां म

स्यमे सिद्धाः प्रतिष्ठिता व्यवस्थिता, तथा च कस्मिन् क्षेत्रे बोंदिं तनुं शरीरमित्यनर्थान्तरं तां त्यक्त्वा च गत्वा सिध्यन्ति निष्ठितार्था भवन्ति, थि
कारस्य चानुस्वारलोपो द्रष्टव्यः अपेक्षवचनोपन्यासापि सूत्रशैल्या न विरोधभाक् तथाऽन्यत्राप्येव प्रयोगः—अत्थणचमत्कारं इत्यादिवदेवाविय।
चक्षुरागमनुज्झति नवेभाववित्युपदेशे इति। एवं शिष्येण प्रश्ने कृते सूरिराह—अलोए पडिहया सिद्धा इत्यादि॥ अत्रापि सप्तमी तृतीयार्थे लोकेन
केवलाकाशास्तिकायरूपेण प्रतिहताः स्खलिताः सिद्धाः इह तत्र धर्मास्तिकायाद्यभावात् तदागमनपोषकस्याभावात् प्रतिस्खलनं नतु सम्बध्यते विघातो
ऽप्रतिपत्त्यात् समन्तिधानाद्धि सम्बध्यते विघातो नान्यथामिति। तथा लोकस्य पञ्चास्तिकायात्मकस्य अग्रे मूर्धनि प्रतिष्ठिताः अपुनरागत्या
व्यवस्थिता इह मनुष्यलोके बोंदिं तनुं त्यक्त्वा तत्र लोकाग्रे समयान्तरमस्पृशद्गत्याऽस्पृशद्गमनेन गत्वा सिध्यन्ति निष्ठितार्था भवन्ति सम्प्रति तत्रगतानां
यदवगाहनामानं तदभिधित्सुराह—दीहं वा हस्सं वा इत्यादि॥ दीर्घं वा पञ्चधनुःशतप्रमाणं ह्रस्वं वा हस्तद्वयप्रमाणं वा शब्दात् मध्यमं वा विचित्र य
चरमभवे पश्चिमभवे भवेत् संस्थानं ततः तस्मात् संस्थानात् त्रिभागहीना वदनोदरादिरन्ध्रपूरणेन घनीभूतप्रमाणहीना सिद्धानामवगाहना भवति
इह अस्यामित्यवगाहना स्यादित्येव भाषिता तीर्थकरगणधरैरिति। अत्र गतः संस्थानप्रमाणापेक्षया त्रिभागहीने तत्र संस्थानमितिभावः। एतदेव
स्पष्टतरमुपदर्शयति—जं संठाणं तु इहं इत्यादि॥ यत्संस्थानं यावत्प्रमाणं संस्थानं इह मनुष्यभवे आसीत् तदेव भवति प्राणिनां चरमभववर्तिनो ऽ
स्मिन्निति नवं शरीरं त्यजतः परित्यजतः काययोगं परिनिरुन्धानस्येति भावः चरमसमये सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिध्यानबलेन वदनोदरादिरन्ध्रपूर
णात् त्रिभागेन हीनं प्रदेशघनमासीत्॥ तं संठाणं तहिं तस्सेति॥ तदेव च प्रदेशघनं सूक्ष्मप्रमाणापेक्षया त्रिभागहीनप्रमाणं संस्थानं तत्र लोकाग्रे तस्य सि

तस्स ॥ ८ ॥ तिन्निसयातेत्तीसा धणुत्तिभागोयहोइनायव्वो । एसाखलुसिद्धाण उक्कोसोगाहणाभणिया ॥ ५ ॥
चत्तारियरयणीउ रयणितिभागूणियायबोधव्वा । एसाखलुसिद्धाण मज्झिमोगाहणाभणिया ॥ ६ ॥ एगाय

चरमभव मनुष्यभव तर्वभवे चरमभवे शरीरस्य त्यजने चरमसमये सूक्ष्मक्रियाध्यान वदनादिरन्ध्र पूरणकृतिये घनमासीत् पुनः स प्रदेश घनमूल प्रमाणापेक्षाये

दम्य मा ग्यदिति । मांप्रतमुत्कृष्टावगाहनाविषदमिन्नाम त्रिधिरसु राह तिभिसयातिसीमाइत्यादि ॥ श्रीसिद्धानि प्रयत्रिंशानि धर्नुस्वदधिका नि धनुस्त्रिभाग च भवति योद्रुम्यः एषाउत्तु सिद्धामा मुत्कृष्टावगाहना प्रज्ञिसा तीर्थकरगणधरै सा च पञ्चधनुःशतमनुक्षामात वसया नन मरुदया मातिकुमारपयी मात्र च पञ्चविंशत्यधिकानि पंचधनु शतानि शरीरप्रमाणं यद्यच तस्य शरीरमान तदय मरुदेवाया अपि सघयणं सठाणं च त्तं चव कुलगरेहिसममिति वचनात् मरुदेवाच भगवती सिद्धा तत तस्या दशमासय त्रिभागे पातित सिद्धायस्थाया सातूनि श्रीषि धनुःशता न्यावगाहमा प्राप्नोति कथ मुत्कृष्टमाना उत्कृष्टावगाहना घटत ? इति नैषदोषः मरुदेवायाः नाग्नः किंचिदूनप्रमाणत्वात् स्त्रियोमुत्तमसंस्थाना उत्तमसंस्थानस्य पुरुषत्र्यः स्व २ कालापेक्षया किंचिदूनप्रमाणा भवन्ति ततो मरुदयापि पंचधनु शतप्रमाणाति न कश्चिद्दोषः, अपिच हस्तिस्कन्धा थिरूढा सकुचितामी सिद्धा ततः शरीरसंकोचनभावा न्याधिकावगाहनासंभव इत्यविरोधः । आह च भाष्यकृत्-कह मरुदेवामाण नाभीतोजम्मकिंचि

होइरयणी यत्थेयअगुलाइसाहियाइया । एसाखलुसिद्धाण जहन्नोगाहणाभणिया ॥ ७ ॥ इगाहणाएसिद्धा

विभाग होनत्यानबवें, त्रिवे १ अनुषमयारेँ १ ११ धनुष उपरे धनुषनो त्रीजाभाग सिद्धनो अवगाहना हवे—तिन्निसयातेत्तीसा धणुत्तिभागोहा इगावमा एवखलुसिद्धाण उक्कोसोगाहणाभणिया । ६ । १ अनुषनो आधारे सिद्धवे तेहनो च लिये सिद्धनो उत्कृष्टअवगाहना कही । चत्तारियरय णीओ रयणतिभागूणियाबोधव्वा एसाखलुसिद्धाणं मज्झिमओगाहणाभणिया । ७ । त्रिवे ७ हाथनो अवगाहना हवे तेहने सिद्ध थवि एतलो अवगा हना ४ हाथमा त्रीजाभाग ऊणाधुच रहयी ० हाथ देहकुच च लिये सिद्धनो मध्यमवर्णी अवगाहना —एगायहोइरयणी अट्ठेवयअंगुलाइ साहिया एसाखलु सिद्धाजहन्नोगाहणाभणिया । ८ । त्रिवे साठेनोत्रहाथनो इन्तेइवे तेहनो अवगाहना कहवे एक ऊपर हाथ पाठअंगुलो धाहिये साडा तीन ए अंगहाथ देहोइवे च लिये सिद्धनो अवगाहना भगवतीको—उम्माहणायमिहा भवत्तिभागेणहुंतिपरहीणा सठाणमणित्थं जरामरणविप्पमुक्का । ९ । जहनी अवगाहनावि सिद्धा तहनो अवगाहनाथको त्रिभागहीनादरादि पूर्वहिये पूर्वहरी तीन पुवे संस्थान भगवतेरी पुचे

रूपाना तोक्रियवसयविय यदवासंकोचतोसिद्धा ॥ १ ॥ चतारियरयवोर्ध इत्यादि ॥ चतस्रोरत्नयो रत्निय त्रिभागोना च ॥ सा योषन्नायसासलुविद्गाना मवगाहना नविता मध्यमा चाय–जघन्यपद सप्तहस्तोच्छ्रितामा मागमे सिद्धि सत्ता तत एषा जघन्या प्राप्नोति कथं मध्यमा तदयुक्त यसुतस्थाप रिज्ञानात् जघन्यपदेऽपि सप्तहस्तानां सिद्धि रुक्ता तीर्थंकरापेक्षया सामान्यकवलिना तु हीनप्रमाणानामपि भवति यदुमपि यावगाहनामाम विस्य ते सामान्यसिद्धापेक्षया तता न कश्चिद्दोषः एगायहोयइत्यादि ॥ एकारत्निः परिपूर्णा यष्टौ चाङ्गुलान्यधिकानि एषा भवति सिद्धा नामवगाहना जघन्या साच कूर्मापुत्रादीनां द्विहस्तानामवसया यद्विवा सप्तहस्तोच्छ्रितानामपि यन्त्रपीलनादिना संवर्तितशरीराणां भावच प्राप्यकत्–ओगाहणाय पवुसय मक्कायसत्तहत्थरस । यत्तिजागहीला जहन्निधायाविहत्थस्स ॥ १ ॥ सत्तूसिएसुसिद्धी जहन्नओकहमियविहत्थसु साकिरतित्थयरसुं सेसाचसि ञमागार्थ ॥ २ ॥ तपुकहोज्जाविहत्था कुम्मापुत्तादयोजहन्नस्स । अवसयविवसत इत्याविद्दरसविचति ॥ ३ ॥ साम्प्रतमुक्तानुवादेनैव लक्षणं सिद्धानाम त्रिविरमुराह संगाइयाएइत्यादि ॥ सुगमं, नवर–भ्रमत्यत्वमिति ॥ इद प्रकारमापन्नमित्य इत्य तिष्ठतीति इत्थस्य न इत्थंस्य अनित्थंस्य यदमा त्रिसुविरप्रतिपूरणेन पूर्वाकारान्यथात्वभावतो ऽमियताकारमितिभावः योपिच सिद्धादिगुणेषु सिद्धेनदीर्घेनह्रस्वइत्यादिना दीर्घत्वादीना प्रति षधः सोपि पूर्वाकारापेक्षया संस्थानस्यानित्थंस्थत्वा त्प्रतिपत्तव्यो नपुनः सर्वथा संस्थानस्याभावत चाहच प्राप्यकत्–सुसिरपडिपूरणाओ पुव्वागार अन्नहायत्यातो । संठाणमणित्यत्थं जंभणियमणियत्थागार ॥ १ ॥ यत्तोचियपडिसेहो सिद्धाइगुणेसुदीहयाईण जमणित्थत्थपुव्वा गाराविक्खाएना भावो ॥ नन्वतिसिद्धाः परस्पर देशभेदेन व्यवस्थिताः उतनेति तद्ब्रूमः कस्मादिति चेत् ॥ जत्थयइत्यादि ॥ यत्रैव देश च शब्दस्य एवकारार्थ

मयतिन्नागेणहोइपरिहीणा । संठाणमणित्थत्थं जजरामरणविप्पमुक्काण ॥ ८ ॥ जत्थयएगोसिद्धो तत्थअण

रादि परवेक्षो जरामरण विप्रमुक्तपवेक्षो सिद्धाव–जत्थयएगासिद्धा तत्थयताभवक्षयविमुक्ता पन्नावसमासाद्य पृथासर्वविक्षोगते ॥ १ ॥ सिद्धा एव सिद्धे तिष्ठ यनन्ताविह भवपवचो मुक्ताः सिद्धभावे कारोरद्धार्धे पिच विम पन्योन्य समवगाढपदे परित्तवरिवाम भयो यर्मास्तिकायनोप

स्यात् एकः सिद्धो नियत स्यामस्यानवधर्यविमुक्ता यत्र नयवपयद्रयेन सेप्याया प्रवावतरबभस्विमरिसद्वयमस्थेदमाह–भन्योन्यसमवगाढा सर्वा विपाकिस्यपरिणामत्वा दुर्मोलिकायादिवत् तथा स्पृष्टा सम्ना सर्वेपि लोकात फुसइत्यादिस्पृष्टत्यनंतान् सिद्धान् सवमदेशो शलसर्वचिजि नि यमात् सिद्धः तथा तपि सिद्धाः सवप्रदेशस्पृष्टभ्यो ऽसंख्यगुणा वसत ये देशप्रदेशैः स्पृष्टाः कथमितिचे दुच्यत , इहैकस्य सिद्धस्य मदवगाहमत्र तत्रैकास्यापि परिपूर्णे अवगाढा अनन्यमनन्ता सिद्धाः प्राप्यते अपरतु च तस्य तस्य एकैकं प्रदेशमाक्रम्यावगाढा सापि प्रत्येकमनता एव द्वि त्रिचतु पञ्चादिप्रदेशवृद्धया च ऽवगाढा सोपि प्रत्येकमनता तथा तस्य मूलदेशस्य एकैकं प्रदेशं परित्यज्य य ऽवगाढा सोपि प्रत्येकमनता एवम मति प्रदेशवृद्धिहानिभ्यां ये समवगाढा स परिपूर्णैकक्षेत्रावगाढेभ्यो ऽसंख्यगुणा भवन्ति अवगाढप्रदेशाना मसंख्यातत्वात् आह च–एगदेसतथा पयसपरिबुद्धीहाविद्धे तहा।फुसियसरज्जगुणा अवयपएसोगमवगाढो॥ सम्प्रति सिद्धानेव लक्षणतः प्रतिपादयति–असरीरा इत्यादि॥ अविद्यमानश

तानवस्कपयिमुक्का । स्लोन्तसमोगाढा पुठासहेयिलोयते ॥ ९ ॥ फुसइ अणतेसिद्धे सव्वपएसेहिनियमसो सिद्धा । तविअसखेज्जगुणा देसपदेसेहिजेपुठा ॥ १० ॥ असरीराजीवघणा उवउत्तादसणेयनाणेय । सागा

रे परस्माद्वे सामान्यलक्षणं करोते परसे अनन्तासिद्ध सवप्रदेश ते भाव्यासबधो ते सिद्ध सवप्रदेश सम्मीलको असंख्यातगुणा व प्रदेश परसा जिस कवि व पक्ष सिद्धो के पयमाहनामर्वे एक प्रतिपूर्ण अवगाढे अनन्तासिद्ध सवे मोकायन एकैक प्रदेश अवगाढने प्रत्येके अनन्ता तथा —एकसमयतासवे सव पदमशितिप्रमिता तविअसखेज्जगुणा देसपदेसेहिजेपुठा ॥ ११ ॥ जिम जिम वार प्रदगवृद्धि जे अवगाहना ते प्रत्येक अनन्ता तथा मूलथेक एकैक प्रदेश पदेश परित्याग यवगाढ ते अनन्ता इमले ह । ॥ प्रदेशदीपके अनन्तप्रदेश तविहान कहे गाथा—बहमवदेशमानतो मामोताभिथिहूबमायाका जिवप यामयविय पदयामवावतासिया ॥ १ ॥ मकन्थो १२१ अशरीरसिद्धो १२२ व वैसम व सेवावहात् प्रमाण औदारिकशरीर पांच रहितजीव घनो वद मादिरयम दूरथादिक ववदानवहित दमनकरो पाने सामान्यविषय दर्शनविशेष नाम व्याकारवबोग अनाकारपयोगसहित वर्तविद्यामें जिने केवल

रीरा अशरीरा औदारिकादिपञ्चविधशरीररहिता इत्यर्थः जीवाश्च ते घनाश्च वदनोदरादिशुषिरपूरणात् जीवघनाः दर्शनोपयुक्ताः केवलदर्शने
ज्ञाने च केवलज्ञाने यद्यपि सिद्धत्वप्रादुर्भावसमये केवलज्ञानमिति ज्ञानं प्रधानं तथापि सामान्यविशेषलक्षणमेतदिति ज्ञापनार्थं आदौ सामान्यालम्बनं
दर्शनमुक्तं तथाच सामान्यविषयं दर्शनं विशेषविषयं ज्ञानमिति, तत साकारानाकारं सामान्यविशेषोपयोगरूपमित्यर्थः, सूत्रे मकारो लाक्षणि
को सर्वं तदव्यभिचरितस्वरूप मेतत् अनन्तरोक्तं तु शब्दो वक्ष्यमाणनिरुपमसुखविशेषणार्थः, सिद्धानां निष्ठितार्थानामिति सम्प्रति केवलज्ञा
नदर्शनयो रुपयोगविषयता मुपदर्शयति- केवलणाणुवउत्ता इत्यादि केवलज्ञानेनोपयुक्ता नत्वन्तःकरणेन तदभावादिति केवलज्ञानोपयुक्ता जान
न्त्यवगच्छन्ति, सर्वभावगुणभावान् सर्वपदार्थगुणपर्यायान् प्रथमो भावशब्दः, पदार्थवचनो द्वितीयः पर्यायवचनः, गुणपर्याययो रयं विशेषः-सह
वर्तिनो गुणाः क्रमवर्तिनः पर्याया इति, तथा पश्यन्ति सर्वतः खलु सर्वपक्षस्या प्यादरवात् सर्वतएव केवलदृष्टिभि रनन्ताभि रनन्तैः केवलद
र्शनै रित्यर्थः, केवलदर्शनानां चानंतता सिद्धानामनन्तत्वात् इहादौ ज्ञानपदं प्रथमसमया तदुपयोगस्याः सिद्ध्यत्यसाविति ज्ञापनार्थं, सम्प्रति निरु
पमसुखभाजस्ते इति दर्शयति-नविअत्थित्यादि । नैवास्ति मनुष्याणां चक्रवर्त्यादीनामपि तत्सौख्यं नैव सर्वदेवानां मनुत्तरपर्यन्तानामपि य

रमणागारं लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥ ११ ॥ केवलणाणुवउत्ता जाणंतीसव्वभावगुणभावे । पासंतिसव्वओखलु
केवलदिठीहिणंताहिं ॥ १२ ॥ नयिथ्थित्थिमाणुसाणं तंसोक्खंनत्थिसव्वदेवाणं । जंसिद्धाणंसुक्खं अव्वाबाहं

ज्ञान दर्शननाविशेष देखावे—अशरीरी जीवघन उपयोगवंत सामान्य सामार अनागार लक्षणमेव तु सिद्धाणं ॥ ११ ॥ केवलज्ञानेसहित जाणवा सर्वगु
णपर्याय सहवर्ती गुण क्रमवर्ती पर्याय तेहने देखे सर्वपदार्थ पश्यन्ति केवलदृष्टि अनंत केवलदर्शन अनंतादर्शन सिद्धनी इहां प्रथम
ज्ञाननुं उपयोग सिद्धने हुं प्रथमे जाणवा पछे निरुपम सुखभाजनके ते देखावे छे केवल देवता मनुष्य चक्रवर्त्यादिक छे—सर्व
अनुत्तरवासी पर्यन्त सुखवर्णन अव्याबाधता आदि ॥ १२ ॥ नविअत्थिमनुष्याणं तंसुक्खंनविसव्वदेवाणं जंसिद्धाणसुक्खं अव्या

रिमज्ञाना सौख्यमव्याबाधामुपगतानां न विद्यते यथा यथा मप्यामाचा ता मुपसामीप्येन गताना प्राप्ताना यथा नास्ति तथा प्रगमोपदर्शयति-सु रगणसुहमित्यादि । सुरगणसुख समस्त सपूर्णं मतीतानागतवर्तमानकालोद्भवमित्यर्थः, पुनः सर्वाद्धापिण्डित सर्वकालसमयगुणित तथा मतगुणमिति तदेव प्रमाण किलासत्कल्पनया एकैकाकाशप्रदेश स्थाप्यते, एवमेवं सकलाकाशप्रदेशपूरणेन यद्यप्यनन्त भवति सदनन्तरमप्य नन्ते वर्गे वर्गितम् तथाप्येव मन्पगतमपि मुक्तिसुखं सिद्धिसुखं न प्राप्नोति, एतदेव स्पष्टतर ग्रंथान्तरेण प्रतिपादयति-सिद्धस्यसुखोराशीत्यादि ॥ सुखाना राशिः सुखराशिः सुखसमूहः सिद्धस्य सुखराशिः सिद्धसुखराशिः सर्वाद्धापिण्डित सर्वदा साद्यपर्यवसितया सदा यत्सुख सिद्धः प्रति समयमनुभवति तदेकत्र पिण्डीकृत मित्यर्थः सोऽनंतवर्गभक्तो ऽनंते वर्गमूले स्थापित अनंते वर्गमूले स्थाप्यमानैः यावत्सर्वाद्धासमयेन गु

यगयाण ॥१३॥ सुरगणसुहसमत्तं सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं । नवि पावइ मुत्तिसुहं णंताहिंवि वग्गवग्गूहिं ॥१४॥
सिद्धस्ससुहोरासी सव्वद्धापिंडिओजइहविज्जा । सोणंतवग्गभइओ सव्वागासेणमाइज्जा ॥ १५ ॥ जहनामकोइ

बाधनमयार्थ । १४ । नही सब तेरचा दवताना इन्द्रादिकना सर्वे सघळाविषके नही आई बाधा क्षय सिद्धना उपसमो मतिके—सुरगणसुहसमत्तं स व्वद्धापिंडियअणंतगुणं नवि पावइ मुत्तिसुह णंताहिंवि वग्गवग्गूहिं । १५ । देवतानासंबधनुं समस्त अतीत आगत वर्त्तमानकाळना सुखे केतलासुख सर्वा द्धापिण्डित सर्वकाळसमय गुणित अनन्तगुणके प्रमाणके असत्कल्पनाये एके एकाकाशप्रदेशे थापिय इम सकललोकाकाशप्रदेश भरीये अनुयाय ते अन न्ता तिहिय ते मिननताबलाने अनन्ताय ते परिपूर्ण केवा अनन्ते वर्गे असख्यातसुख ते अनन्तप्रदेशे असख्यातवर्त्ती बत्तव—पगणतनता अपवसपरि वर्ग्गिताविधी वर्गादीषो तत्तत्तावलति सर्वविख्यातसुखा असख्यपदा समवगाह्या सिद्धे सिद्धनोसम कहेछे—सिद्धस्ससुहोरासी सव्वद्धापिंडियाजइह विज्जा सोणंतवग्गभइओ सव्वागासेणमाइज्जा । १६ । सिद्धना सुखनोराशि सर्वे कापिण्डित सर्वसादि अपर्यवसितपणे मानसुख समय तथा सिद्धे ज इपवेमाव देशावज्जे, तेसिवे पूर्ण्यसमये अनुभव ते एकठाकोजे ते गुणाकार अनन्तवर्ग भजिये ता सर्व लोकाकाशप्रमाणे, सिद्धे एकसुख अनन्ता छे—ज

यकारय गुबने यद्भिक वास तस्य सवस्यापवर्त्तनीः सिद्धत्वा यः समयज्ञादिसुखमावर्ता प्रास इतिभावः, सर्वाकाशे न माति एतावन्मात्रेपि सर्वा काश न माति सधस्तु दूरापास्तमसर भवति भावमार्थ पिण्डयित्वा पुनरपवर्त्तनं सुखराशेः, इयमत्रभावना-इह किल विशिष्टाहावरूपं सुखं प रिगण्यते ततश्च यत आरभ्य सिद्धानां सुखमुत्पद्यते समाह्लादमधिकृत्य एकैकगुणवृद्धितारतम्यम तावदसावाल्हादो विशिष्यत यावदनन्तगुण वृद्धा निरतिशयनिष्ठा मुपगतः सोय मत्यन्तोपमातीतैकान्तीएसुखमिवनिवृत्तिरूप स्तिमिततमकल्प परमाह्लादः सदा सिद्धानां यस्मा द्यास्तः प्रथमा दीप्तमपांतरालवर्त्तिनो ये गुणा स्तारतम्यना ह्लादापहपरूपा स्ते सर्वाकाशप्रदेशेभ्यो प्यतिभूयास सन्तः किलोक्त-ह्लादागासेनमाएज्जा इति ॥ अन्यथा तत्सर्वाकाशे न माति तत्कथमकस्मिन् सिद्ध मायादिति पूर्वसूरिसंप्रदायः साम्प्रत मस्य निरुपमतां प्रतिपादयंति-बहुमामत्या दि ॥ यथा नाम कश्चिन्म्लेच्छो नगरगुणान् गृहनिवासादीन् बहुविधान् अनकप्रकारान विजानन् अरण्यागतःसन अन्यम्लेच्छेभ्यो न शक्नोति परिक थयितुं कस्मा दुपमातीतस्मत आह-उपमायां तत्रासत्यां निमित्तकारणहेतुषु सर्वासां विभक्तीनां प्रायो दर्शनमिति न्यायात् हेतौ सप्तमी' तत्र उ पमाया अनावादितिहृदयं एषगाथाक्षरार्थः, भावार्थः कथानकादवसयसधर्व-एमोमहारण्यवासी म्लेच्छो रण्ये तिष्ठति इतोय एगीराया आसेव

इमिच्छो नगरगुणबहुविहेवियाणतो । नचएइपरिकहेउ उवमाएतहिंअसतीए ॥ १६ ॥ इयसिद्धाणसोक्ख अ णोवमनत्थितस्सउवम्म । किंचिविसेसणितो सारिक्खमिणसुणहवोच्छ ॥ १७ ॥ जहसव्वकामगुणिय पुरिसो भोत्तूणभोयणकोइ । तण्हाछुहाविमुक्को अच्छिज्जजहाअमियतित्तो ॥ १८ ॥ इयसव्वकालतित्ता अउलनि

इम मबाटमिच्छा नगरगुणबहुविधेवियाणता नबपापरिकहणा उबमाएतहिंअसतीए ॥ १७ ॥ जिम नगरनाबासी म्लेच्छनगरना गुणघणा ते जनवासी म्लेच्छ पानर्भ ठबकावता भाबमबरे ता ते कशो मसके नगरना गुण न कहिमके पणमा बनमाहिसी कशो देखाल, पछताबतो सतोषतु बनमें बा २ नहीम ए दृष्टांत कहो-इयसिद्धाबमर्स पबाबमनत्थितस्सभावम्म किंचिविसेसणित्ता सारिक्खमिणमुणावत्ल ॥ १८ ॥ एवा सिद्धनासुख उपमारहित

सिद्धाना सौख्यमव्याबाधामुपगताना न विद्यते मनुष्याणामव्याबाधा ता मुपगताभीष्येन गताना प्राप्ताना यथा नास्ति तथा अन्योपदर्शयति—सु रगणसुहमित्यादि ॥ सुरगणसुख देवसंघातसुखं समस्त सपूर्णं अतीतानागतवर्तमानकालोद्भवमित्यर्थः, पुनः सर्वाद्धापिण्डित सर्वकालसमयगुणित तथा अनंतगुणमिति, तदेव प्रभाव विमासत्कल्पनया एकैकाकाशप्रदेश स्थाप्यते इत्येवं सकलाकाशप्रदेशपूरणेन यद्यप्यनंत भवति तदनन्तरमप्य नंतैर्वर्गैर्वर्गितम् तथाप्येवं प्रकर्षगतमपि मुक्तिसुखं सिद्धिसुखं न प्राप्नोति, एतदेव स्पष्टतर अन्यतरेण प्रतिपादयति—सिद्धस्सहसुहोरासीत्यादि ॥ सुखानां राशि सुखराशिः सुखसंघातः सिद्धस्य सुखराशिः सिद्धसुखराशिः सर्वाद्धापिण्डितः सर्वया साद्यपर्यवसितया अद्धया यत्सुखं सिद्धः प्रति समयमनुभवति तदेव पिण्डीकृत मितिभावः सोऽनंतवर्गभक्तोऽनंतैर्वर्गमूलै रपवर्तितः अनंतैर्वर्गमूलैस्तावदपवर्तितो यावत्सर्वाद्धासमयेन गु

णगयाण ॥१३॥ सुरगणसुहसम्मत्त सव्वद्धापिण्डियमणंतगुणं । नविपावइमुत्तिसुहं णंताहिंवग्गवग्गूहिं ॥१४॥ सिद्धस्ससुहोरासी सव्वद्धापिण्डिएजइहवेज्जा । सोणंतवग्गभइओ सव्वागासेणमाइज्जा ॥ १५ ॥ जहनामकोइ

वाईसवगयाण ॥ १३ ॥ नथी सख तेहवा देवताना मनुष्यनिश्चय सर्वनो सर्वप्रसिद्धके नथी बाईंबाधा ए सिद्ध उपसमो मतिके—सुरगणसुहसम्मत स व्वद्धापिंडियमणंतगुण नविपाविमुत्तिसुह णंतेहिंवग्गविग्गूहिं ॥ १४ ॥ देवतानासमस्त सर्वसमस्त अतीता नागत वर्तमानकालो हुवे जेतलासुख सर्वा द्धापिण्डित सर्वकालसमय गुणित अनंतगुणने प्रमाणके असत्कल्पनायें एके एकाकाशप्रदेश थापिये एम सकललोकाकाशप्रदेश शरीर अनुवाय ते अन न्ता सिद्धिए ते गिणतावकाने अवगाढ ते परिपूर्ण लोकाकाशमात्र असत्यातगुणी हुवे एकगाढप्रदेश असत्यातवर्ती तत्र—एगपएसपर ऊंडाणियो तत्ताकाशोमा तथावर्तति सर्वविच्छसुखा असत्यपरसा अनवगाढा सिद्ध सिद्धनोसुख कहेके—सिद्धस्ससुहोरासी सव्वद्धापिण्डिआजइह विज्जा सोणंतवग्गभइओ सव्वागासेनमाइज्जा ॥ १५ ॥ सिद्धना सुखनीराशि सर्वकालपिण्डित सर्वसादि अपर्यवसितपणे मानवामासुख समयक्षम तथा सिद्धे च एपर्वेमाव देखावे, तेसिद्धसूक्ष्मसमयें अनुभव ते एकठाकीजे तेंगुणाकार अनन्तवर्गें भक्तिये ता सर्वे लोकाकाशप्रमाणे, सिद्धे एकत्रासुख अनन्ताके—त

प्रकारेण गुणने यदधिकं जातं तस्य सर्वस्यापवर्तनैः सिद्धस्याद्यः समयजातसुखमापतितं प्राप्तं इत्यभिप्रायः, सर्वाकाशे न माति एतावन्मात्रेऽपि सर्वा काशे न माति सवस्तु दूरापास्तप्रसर एवेति तात्पर्यं विवक्षयित्वा पुनरपवर्तनं सुकरमिति, इयमत्र भावना-इह किल विशिष्टाह्लादरूपं सुखं प रिगृह्यते ततश्च यत आरभ्य शिष्टानां सुखमभ्युपगम्यते तमाह्लादमवधीकृत्य एकैकगुणवृद्धितारतम्येन तावदसावाह्लादो विशिष्यते यावदनन्तगुण वृद्ध्या निरतिशयनिष्ठामुपगतः ताप मस्यतोपमातीतैकान्तौत्सुक्यविनिवृत्तिरूपं स्तिमिततमकस्य परमाह्लादः सदा सिद्धानां यतो यावतः प्रथमा दीर्घमवान्तरालवर्तिनो ये गुणा तारतम्येन आह्लादरूपास्ते सर्वाकाशप्रदेशेभ्योऽतिभूयांसः ततः स्तोक-सद्भावाभावसमाएज्ञा इति ॥ अन्यथा तत्सर्वाकाशे न माति तत्कथमस्मिन् ..द्ध मायादिति पूर्वसूरिसंप्रदायः साम्प्रतमस्य निरुपमतां प्रतिपादयन्ति-जह णामेत्या दि ॥ यथा नाम कश्चिन्म्लेच्छो नगरगुणान् गृहनिवासादीन् बहुविधान् अनेकप्रकारान् विजानन् अरण्यागतः सन् अन्यम्लेच्छेभ्यो न शक्नोति परिक थयितुं कथम्? इत्याह-उपमायां तत्रासत्यां निमित्तकारणहेतुषु सर्वासां विभक्तीनां प्रायो दर्शनमिति न्यायात् हेतौ सप्तमी तत्र उ पमाया अभावादिति हृदयं, उपमाभावादित्यर्थः, भावार्थः कथानकादवसेयः तच्चेदं-एगो महारण्णवासी मिच्छो रण्णे चिट्ठति इतोय एगोराया आसेण

इमिच्छो नगरगुणेबहुविहेवियाणंतो । णचएइपरिकहेउं उवमाएतहिंअसंतीए ॥ १६ ॥ इयसिद्धाणसोक्खं अ णोवमनत्थितस्सउवम्मं । किंचिविसेसेणेत्तो सारिक्खमिणंसुणहवोच्छं ॥ १७ ॥ जहसव्वकामगुणियं पुरिसो भोत्तूणभोयणंकोइ । तण्हाछुहाविमुक्को अच्छिज्जजहाअमियतित्तो ॥ १८ ॥ इयसव्वकालतित्ता अउलंनि

जम महारण्यमिच्छो नगरगुणेबहुविधेवियाणतो नचएइपरिकहेउं उवमाएतहिंअसतीए ॥ १७ ॥ जिम नगरनावासी म्लेच्छनगरना गुणघणा ते वनवासी म्लेच्छ पासे प्रकाशवा समर्थ नहि ते कहो नगरने नगरना गुण न करिसके उपमा वनमांहिसो कहो देखाड, पछतावतो छतोवस्तु वनमें वा र नहीम ए दृष्टांत कहो–इयसिद्धाणसुखं अणोवमंनत्थितस्सउवम्म किंचविसेसेणित्तो सारिक्खमिणसुणाहत्थ ॥ १८ ॥ एहवा सिद्धनासुख उपमारहित

रिसद्धामा सौख्यमव्याबाधामुपगतानां न विविधा बाधा अव्याबाधा ता मुपसामीप्येन गताना प्राप्ताना यथा नास्ति तथा जग्योपसम्पत्ति-सु रमणसुखमित्यादि ॥ सुरगणसुखं दवसघातसुखं समस्त सपूर्वं अतीतानागतवर्त्तमानकालोद्भवमित्यर्थः, पुनः सर्वाद्धापिण्डितं सवकालसमयगुणित तथा नतगुणमिति। तदेव प्रमाणं किलासत्कल्पनया एकैकाकाशप्रदेश स्थाप्यते इत्यवं सवलोकाकाशप्रदेशपूरणेन पञ्चम्यमत प्रयाति तदनन्तरमप्य नतं वर्गे वर्गितम् तथाप्येवं प्रवर्धमानमपि मुक्तिसुखं सिद्धिसुखं न प्राप्नोति एतदेव स्पष्टतरं ग्रंथान्तरेण प्रतिपादयति-सिद्धस्ससुहोरासीइत्यादि॥ सुखानां राशि सुखराशिः सुखसङ्घातः सिद्धस्य सुखराशिः सिद्धसुखराशिः सर्वाद्धापिण्डितः सवथा साद्यपर्यवसितया अद्धया यत्सुखं सिद्ध प्रति समयमनुभवति तदेकत्र पिण्डीकृत मितिभावः सोमतयगजक्को अनंते वर्गमूलै रपवतितः अनंते वर्गमूलै तावदपवर्तितो यावत्सर्वाद्धालक्षण गु

वगयाण ॥१३॥ सुरगणसुहसमत्तं सवद्धापिंडियं अणंतगुणं। नवि पावइ मुत्तिसुहं णंताहि वि वग्गवग्गूहि ॥१४॥
सिद्धस्ससुहोरासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हविज्जा। सोणंतवग्गभइओ सव्वागासेण माइज्जा ॥ १५ ॥ जह नाम कोइ

बाद्धमयात ॥ १४ ॥ गयो सुख तेषया एवताना इस्सादिकम तवयो सत्प्रसिद्धे गयो बाद्धमाया म सिवम उपसमो गतिहे—सरगणसुहसमत्तं स व्वद्धापिंडियमणंतगुणं नविपावियमत्तिसुहं मणतेहिवग्गविग्गूहि ॥ १५ ॥ दवतानामसघात सम्पमस्त अतीता नागत वर्तमानकाला दुवे कतसासुख सर्वा द्धापिण्डित सवकालसमय गुणित अनन्तगुणमे प्रमाणके असत्कल्पनायै एके एकाकाशप्रदेश यापित इम सवलोकाकाशप्रदेश शरीरेऽनयुपाय ते अन रता विविध ते गिवताइवाने अवगाढ ते परिपूर्ण येनावगाढवो असख्यातगुणो दुवे अवगाढप्रदेश असख्यातवर्ती समय—अनन्तपता अपवसपरि वर्द्धिताविधौ तथाक्षयोगा तस्ताद्भवति अर्थाविद्गुणा अपवनपया समवमाता हिवे सिद्धमोक्षण कहेछे—सिद्धसयोरासो सव्वद्धापिंडियाक इद्धा सायतवव्यमद्यो समवाचेनमाइज्जा ॥ १६ ॥ सिद्धना सुखनोराशि सर्वा द्धापण्डित सर्वसादि अपर्यवसितपणे सायमानसुख समवङ तथा हिवे ख रुपवेभाव देखाडे, तेसिद सूक्ष्मसमयै अनुभव ते एकठाओ तेगुणाकार अनन्तवर्गै भजिवे ता सर्व लोकाकाशप्रमाण, हिवे एकरासुख अनन्ताढे—क

पकारए गुणने पदथिर्क आसं तस्स सवस्यापवर्तने। विज्ञुत्वा यः समयज्ञादिसुखमाप्तो प्राप्त इतिभावः, सर्वोपाधिर्न मासि एताश्वमात्रेऽपि सर्वो काशा न माति तवस्तु दूरापासप्रभर मर्वेति श्रापमार्ये पिवलयित्वा पुनरपवर्तनं सुखराशेः, इयमत्रभावना–इह सिद्ध विशिष्टाह्लादरूप सुखं प रिपाप्यते तत्र यत आरभ्य सिद्धानां सुखाद्प्रवृत्ति समाह्लादमाविलस्य प्रतीकगुणवृद्धितारतम्यम तावद्साधाद्वाद्वो विशिष्यते यावदनन्तगुण वृद्धः निरतिशयमिद्धा मुपगतः सोय मत्यतापमातीतिकातीत्सुख्यविनिवृत्तिरूप स्तिमिततमकल्प परमाह्लादः सदा सिद्धानां यस्मा द्वारतः प्रथमा वीतमपांतरालवर्तिनो ये गुणा तारतम्यना त्वादवस्थापरूपा स्ते सर्वाकाशप्रदेशभ्यो प्यतिभूयांस स्तसः विलोक्य–सद्भागासेममाएज्जा इति ॥ अन्यथा तत्सर्वाकाशो न माति तत्वपमर्कासिन् सिद्ध मायादिति पूर्वसूरिसंप्रदायः साम्प्रत मस्य निरुपमता प्रतिपादयंति–अहमामत्या दि ॥ यथा नाम कश्चिन्म्लेच्छो नगरगुणान् बहुविधाशादीन् बहुविधान् अनकप्रकारान विजानन् अरण्यागतःसन् अन्यम्लेच्छेभ्यो न शक्नोति परिक थयितुं कस्मा यज्ञतोतीस्यत आह–उपमायां तत्रासत्यां निमित्तकारणहेतुषु सर्वासां विभक्तीनां प्रायो दर्शनमिति न्यायात् हेतौ सप्तमी' तत्र उ पमाया अनावादितिद्रष्टव्य, एषगाथाक्षरार्थः भावार्थः कथानकादवसेयस्तचेद–एगोमहारण्णवासी मिच्छो रण्णे चिट्ठति इत्तोय एगोराया आसेण

इमिच्छो नगरगुणयजाणिजाणतो । णयएइपरिकहेउ उयमाएतहिंअसतीए ॥ १६ ॥ इयसिद्धाणसोक्क अ णोयमनत्थितस्सउवमम । किंचिविसेसणिता सारिक्कमिणसुणह्वोत्थ ॥ १७ ॥ जहसव्वकामगुणिय पुरिसो भोत्तूणभोयणकोइ । तण्हाछुहाविमुक्को अच्छिज्जजहाअमियतितो ॥ १८ ॥ इयसव्वकालतिता अउलनि

जन मवाःमिच्छा नगरगुणविसूविवेयिायना नयपःपाक्कथा उवमाएतहिंपसतोय ॥ १७ ॥ जिम नगरनावासो म्लेच्छनगरना गुणपणा ते वनवासो इलेच्छ पामन पणावितां पाममके ता ते कहो नमवे नगरना भूप न कारिसके उपमा वनमांहिसो कहो ऐहाव, पछतावतो इतोयम वनमें का ईनहीम ए दृष्टांत कहो–इयसिद्धाणमणं पणवमनत्थितस्सभावय किंचिविसेसणिता सारिक्खमिणसुणाहन्न ॥ १८ ॥ पछवा सिद्धनासुख उपमारहित

पवइरितो स पर्णवि पयमतो तय दिठो सक्कारेकुण सयवयं नीतो रजावि सो मगर पच्चा सवगारिति णाउमुपचरितो जदा राया चिठइ पयस परार्द्धनोंगेय वि वासा वासव रर्स सरिममारदो रमा विसज्जिठ ततो राम्रणा पुच्छन्ति फरिस मयरति सो वियाचतो वि तत्थोयमाभावा न स क्क गपरगण परिकहउ एव दिहतो पयमर्पोपमय ॥ इयसिद्धाणमिस्यादि ॥ इति एय सिद्धाना सौख्यमनपम पतत्त किमिति सत चाह-यतो नास्ति तस्योपम्यं तथापि यालजनप्रतिपत्तय किंचिद्विशपत॥इतो॥ इति चायस्वा दस्सत्यर्थः सादृश्य मिद पत्यनाव प्रपुन ॥ अहसव्वेत्यादि ॥ पयस्पुदाहरणोपदसमाय पुच्यते इति प्रावप सवकामगुणित सकलसौख्यसंस्कृत कापि पुरुषा भुक्ता क्षुत्तृड्विमुक्त इन् यथा अमृततृप्त तथा तिष्ठति ॥ इयइत्यादि ॥ इति एव निर्वाण मोक्षमुपगता सिद्धाः सर्वकाल साद्यपर्यवसित कालं यावत् सर्वोत्सुक्यविनिवृत्तिभावतः परमसतो पमविगता अतुलमनन्यसदृश मुपमातीतत्वात् प्राप्त प्रतिपातानावात अव्याबाध तज्ञातोपि व्यायाधाया असम्भवात् सुख प्राप्ता पत एव सुखिन तिष्ठति एतदेव सविशषतर भावयति-सिद्धत्तियइत्यादि ॥ सित बद्धमष्टप्रकार कर्म ध्मात भस्मीकृतं यै त सिद्धा पृषोदरादय इति रूपनिष्पत्तिः निर्दग्धानेकभवकर्मेधना इत्यर्थः तत्र सामान्यतः कर्मादिसिद्धा अपि भवन्ति यत उक्त-कम्मसिप्पयविज्जाए मंतजोगयआगम।

सिद्धाणमुवमयासिद्धा । सासयमव्वाबाह चिठतिसुहीसुहंपत्ता ॥ १९ ॥ सिद्धत्तियबुद्धत्तिय पारगतत्तियपरंपरगतत्तिय । उम्मुक्ककम्मकवया अजराअमराअसंगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्नसव्वदुक्खा जातिजरामरणबंधणवि

तद्वा मत्पमो चायमा इवं मनुष्यमानषो तातो पिच यावजमे सकभावाने पर्वं पा इत्यामाम यत्तमाप भवता पश्वा भातवाचया न सोभत—अ इयमकामगुणित परिमाममूलमायवनार तवराषुत्रा विमदा परिमलक्वापमितता ॥ १८ ॥ जिम सवकामगुणित मननमोत्थय सच्छ एवकाभाव न कारपरूप ओमोम भायमवरीम वपा पुत्रायें भूवावावा इच्छिन पगुतथवा जिमरते—इयमम्माधतित्ता पाठवमिभरावमरगयामिषा सामयम व्याबाह चिठुतिसुखमईपत्ता ॥ २० ॥ इम सव्वाव सिद्धसादि अपयवासत कालवणे वसयवा परमसताप पाम्या पतन्न पव्यावेवरोषा सुचपा अवा

चत्वगुणाभिव्याप्य शरीरमप्यासाद्यया ॥ १ ॥ ततः कर्मादिविद्या व्यपोवायाह-बुद्धाणं ॥ बुद्धानमित्रागमुख्येनमत्यपरोपन्नेन जीवादिरूप तत्व बुद्धवंतो बुद्धः स्वयंसमर्दन्त्रस्वालावबोधरूपा इतिभाव एतानिच संसारनिर्वाणायपरित्यागेन स्थितवतः, केचिदिष्यंते-संसारे न च निर्वाणे स्थितो बुद्धमहत्व प्रविश्त्य स्वसौकानां स्वमकारणपिकोभवाणि तित्वमात् तत्र कल्पिरावायमाह-पारगताणं ॥ पारं पर्यंत संसारस्य प्रयो जनव्रातस्य वा गता। पारगताः तथा भव्यस्वाविसकलप्रयाजनसमाप्ता निरवशेषकर्तव्यग्रस्तविप्रमुक्ता इतिभावः इत्यंभूता अपि कैचित् य दृच्छावादिभिरक्रमसिद्धत्वनापि गीयत तदोक्त-मैकाविसक्राकमतो वित्तप्राप्तिनिवागतः। दरिद्रराज्याप्तिसमा सद्गुम्मुक्ति कविकर्कि ॥ १ ॥ तत स्तन्मतव्यपोवायाह-परम्परागता इति ॥ परम्परया ज्ञानदर्शनचारित्ररूपया मिथ्यादृष्टिसास्वादनसम्यग्मिथ्यादृष्ट्यविरतसम्यग्दृष्टिदेशविरतिप्र मत्ताप्रमत्तनिवृत्तिबादरसम्परायसूक्ष्मसम्परायोपशान्तमोहक्षीणमोहसयोगिकायोगिकलक्षणगुणस्थानप्रदर्शितया गता एतच केचित् सत्त्वसौ नुम्मु क्तकर्मकवचा अभ्युपगम्यते तीर्थनिकारदर्शनादिहागच्छतीति वचनतः पुनः संसारावतरणाभ्युपगमा दत स्तन्मतापाकरणायमाह-उन्मुक्तकर्मकवचा इत्यादयस्मात् पुनर्भवत्वतया मुक्त परित्यक्त कर्मकवचमिव कर्मकवचं यैः स उन्मुक्तकर्मकवचा, अत एव अजराः शरीराभावतो जरसोऽभावात्, अमरा अशरीरत्वादेव प्राणत्यागासम्भवात् उक्तञ्च-नयतीवावीश्वरा पापबाह्यमरवमादिह। यदृच्छमितदुभय तदभावेनकस्सव ॥ १ ॥ च

निर्वाण पाडना सिद्ध मासनो प्रतिपादन प्रभाव पवाणो विमारपवाणा सर्वो भिन्नो तदन्ते सम्पाम्यो पतले सर्वे रचके, इवे विशेषपणे कहावेछे—सि द्विपयइति पारमशियपरपरगतिय उसक्कम्मकवया अजरामरामसंगाय ॥ २१ मोक्षाक्रम भमकरोन सम लब्धिया सूक्ष्मो सास्याके संसारमोपार पामवाले परपरावे मिथ्यात्व १ सासादन २ वा चौदया पयागोगस्थानके परंपराभेदतोने मोक्षाके सूक्ष्माके कर्मनाकवच बसे टरनपवेशरी वसे सूक्ष्माके अमरपद शरीरमाये जराभोपभाव अमर अशरीरीमाटे बाह्याभ्यंतरसंगरहित—भिन्नभिन्नसकलम्ब आत्मरामरयपदविमला मायायामुक्त प पुरवर्तावासमसिद्धा ॥ २२ । जे निरविष्ण सहदुपक्को सपितते जाति जरामरण कमनावस्थामो सूक्ष्मा पदाधारिमा सुखमति पाम्या एवा सास

सगा यास्माज्जरयाद्दरहितत्वात् ॥ निच्छिन्नेत्यादि ॥ निस्तीर्णं सकुल सर्वं दुर्ग मैं सो निस्तीर्णसर्वंदु खा।' कुत इत्याह–जातिजरामरणबन्धनवि मुक्ता ॥ जाति जन्म जरा वयोहानिलक्षणा मरण प्राणत्यागरूपं बन्धमानि तन्निबन्धनरूपाणि कर्माणि तै विशेषतो निश्शेषापगमनेन मुक्ता जातिजरामरणबन्धनविमुक्ता। एतावियं प्रथमा यतो जरामरणबन्धनविमुक्ता स्ततो निस्तीर्णसर्वदुःखा कारणाभावात् ततो व्याबाध सौख्य प्राप्त सिद्धा अनुभवन्ति ॥ इतिश्रीमलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां द्वितीय पद समाप्त ॥ २ ॥ व्याख्यात द्वितीयपद मधुना तृतीय मारभ्यते–तस्यचाय मभिसम्बन्धः। इह प्रथमे पद पृथिवीकायिकादयः प्रज्ञप्ता द्वितीये ते एव स्वस्थानादिभिः चिन्तिता अस्मिस्तु तथा दिग्भागादिभिः अल्पबहुत्वादि निरूप्यते तत्रेमादौ द्वारसंग्रहगाथामाहुय–दिसिगइइंदियकाएइत्यादि ॥ प्रथमं दिग्द्वारं १ तदनन्तरं गतिद्वार २ तत इन्द्रियद्वार ३ ततः कायद्वार ४ ततो योगद्वार ५ तदनन्तर वेदद्वार ६ ततः कषायद्वार ७ ततो लेश्याद्वारं ८ सम्यक्त्वद्वार ९ तदनन्तरं ज्ञानद्वार १० तता दर्शनद्वार ११ ततः संयमद्वार १२ तत उपयोगद्वारं १३ तत आहारद्वारं १४ ततो भाषकद्वार १५ ततः परित्त इति परीता प्रत्येकशरीरिणः शुक्लपाक्षिका च तद्वार १६ तदनन्तर पर्याप्तिद्वार १७ ततः सूक्ष्मद्वार १८ तदनन्तर संज्ञिद्वार १९ ततो ॥ भवति ॥ भवसिद्धिद्वार २० ततो स्तीति

मुक्का । अव्वाबाहसुक्ख अणुहोतीसासयसिद्धा ॥ २१ ॥ बितिय पद सम्मत्त ॥ २ ॥
दिसिगइइंदियकाए जोएवेएकसायलेसाय । सम्मत्तणाणदंसण संजयउवओगआहारे ॥ १ ॥ भासगपरित्तप

ता सचमति पाम्या तेहवासय अनुभवे । पन्नवणापठाणपर्यायितियसमत्त २ । इति श्रीप्रज्ञापनासूत्रना पन्नवणाउपांगे द्वितीयपद समाप्तथयो हेवला मनुष्य नारकी तिर्यंच उत्पातस्थानक विचारे ॥ ३ ॥ दिसिगइइंदियकाए जोएवेएकसायलेस्साए सम्मत्तणाणदंसण संजयउवओगआहारे १ ॥ दिग्द्वार गतिद्वार इंद्रियद्वार कायद्वार योग वेद कषाय लेश्या सम्यक्त्व ज्ञान दर्शन संयत उपयोग आहार १४—भाषापरित्तपज्जत्त सुहुमसन्नीभवअत्थिय चरिमजीवचखित्तबंधे पुद्गलमहादंडएय २७ द्वार दिसाणुवाएण भाषाद्वार प्रत्येकशरीर मुक्तपक्ष प्राय पर्याप्ता सूक्ष्म सन्नी भव

पल्लिकापद्वारं २१ तत चरमद्वार २२ ततमन्वरं जीवद्वारं २३ ततः क्षेत्रद्वार २४ ततो बन्धद्वारं २५ ततः पुद्गलद्वार २६ ततो महादण्डकः २७ इति सर्वसङ्ख्या सप्तविंशतिद्वाराणि ॥ तत्र प्रथमद्वार मभिधित्सु राह-दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा पच्चत्थिमेण मित्यादि ॥ इह दिशः प्रथम माचा राङ्गे धर्मे अनेकप्रकारा व्याख्याता तत्र क्षेत्रदिशः प्रतिपत्तव्या तासां नियतत्वा दितरासाञ्च प्रायो ऽनवस्थितत्वा दनुपयोगित्वाच्च क्षेत्रदि शोच प्रभव स्तिर्यग्लोकमध्यगताष्टप्रदेशका रुचकात यत उक्त-अट्ठपएसोरुयगो तिरियलोयस्समज्झयारम्मि । एसपभवोदिसाण एसववएसेअणु दिसाणमिति ॥ १ ॥ दिशा मनुपातो दिगनुसरणं तेन दिशो ऽधिकृत्येति तात्पर्यार्थः । सर्वस्तोका जीवाः पश्चिमेन पश्चिमायां दिशि कथमितिचेत् -उच्यते-इह सर्वबहवो बादरानधिकृत्य सूक्ष्मा नसूक्ष्माणां सर्वलोकापन्नानां प्रायः सर्वत्रापि समत्वात्, बादरेष्वपि मध्ये सर्वबहवो वनस्पति

जाव सुहुमसरीयत्तवल्तिसेचरिमे । जीवयखेत्तयधे पुग्गलमहद्दंडएचेव ॥ २ ॥ दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा जीवा पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्व त्थोवा पुढविकाइया दाहिणेण उत्तरेण विसेसाहिया पुरच्छिमेण विसेसाहिया पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्त

दिसि पछि चरमद्वार जीवद्वार क्षेत्रद्वार बन्ध पुद्गल महादण्ड २७ सत्तावीसद्वार कह्या छिरिभाग्नो । सर्वथोडा जीव पश्चिमे पूर्वदिशिमें वि शेषाधिका दक्षिणे विशेषाधिका उत्तरे विशेषाधिका । सर्वथोड जीव पश्चिम दिसमे अधिक देवतानाबास गोतमद्वीप पश्चिमने सबब तेमाटे थोडो जाडा बादराबो वनस्पतीनापणाव तेमाट पूर्व विसेषाधिक जमाटे गौतमद्वीप नथी दक्षिण सर्वजीव विशेषाधिक जमनो तेमाटे पाणीघणो तिहां बा दरनो वन सूक्ष्म दीपनथी तेमाटे पश्चिम उत्तरे विशेषाधिक जोयण ८ जावन जोडावालेसमाण मानस २ पसब्भातमेंडीप तेमाटे। दिसाणुवाएण सर्वथोडा पाणकाया पश्चिममे वि० दक्षिणे वि० उत्तरे वि० । पश्चादिसिभाग्नो सर्वथता सर्वमथो पूर्वाभाय थाका दक्षिण भिषां घन तिहां

सगा मास्राव्यमरणमुरहितत्वात् ॥ निच्छिमेत्यादि ॥ निस्तीर्णे सञ्जिस सर्वे दुःखं यैं ते निस्तीर्णसर्वदुःखाः' मुत इत्याह–जातिजरामरणबन्धनवि मुक्ता ॥ जाति जन्म जरा वयोहानिलक्षणा मरणं प्राणत्यागरूपं बन्धनानि तन्निबन्धरूपाणि कर्माणि तैं विशेषतो निःशेषापगमनेन मुक्ता जाति जरामरणबन्धनविमुक्ताः एतावियं प्रथमा यतो जरामरणबन्धनविमुक्ता ततो निस्तीर्णसर्वदुःखा कारणाभावात् ततो अव्याबाध सौख्य शाश्वत सिद्धा अनुभवन्ति ॥ इतिश्रीमलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां द्वितीयं पदं समाप्त ॥ २ ॥ व्याख्यातं द्वितीयपदं अधुना तृतीय मारभ्यते–तस्यचाय मभिसम्बन्धः, इह प्रथमे पदे पृथिवीकायिकादयः प्रज्ञप्ताः, द्वितीये ते एव स्वस्थानादिना चिन्तिता अस्मिस्तु तथा दिग्विभागादिना अल्पबहुत्वादि निरूप्यते तत्रेदमादौ द्वारसंग्रहगाथाद्वय–दिसिगइइंदियकाए इत्यादि ॥ प्रथमं दिग्द्वारं १ तदनन्तरं गतिद्वारं २ तत इन्द्रियद्वारं ३ ततः कायद्वारं ४ ततो योगद्वारं ५ तदनन्तरं वेदद्वारं ६ ततः कषायद्वारं ७ ततो लेश्याद्वारं ८ सम्यक्त्वद्वारं ९ तदनन्तरं ज्ञानद्वारं १० ततो दर्शनद्वारं ११ ततः संयमद्वारं १२ तत उपयोगद्वारं १३ तत आहारद्वारं १४ ततो भाषकद्वारं १५ ततः परित्त इति परीता प्रत्येकशरीरिणः शुक्लपाक्षिका च तद्द्वारं १६ तदनन्तरं पर्याप्तिद्वारं १७ तत सूक्ष्मद्वारं १८ तदनन्तरं संज्ञिद्वारं १९ ततो ॥ भवसि ॥ भवसिद्धिद्वारं २० ततो अस्ति

मुक्का । अव्वाबाहसुक्खं अणुहोंतीसासयंसिद्धा ॥ २१ ॥ बितियं पदं सम्मत्तं ॥ २ ॥
दिसिगइइंदियकाए जोएवेएकसायलेसाय । सम्मत्तणाणदंसण संजयउवओगआहारे ॥ १ ॥ भासगपरित्त

ता अणुभवंति पाम्बा तेणवासय अनुभवंते । पन्नवणापदठाणपदविवितिसमत्त २ ॥ इति श्रीप्रज्ञापनासूत्रना पन्नवणोपांगे बितीयपद समाप्त हवी देवता मनुष्य नारकी तियंच अल्पाबहुत्व विचार ॥ २ ॥ दिसिगइइंदियकाए जोएवेएकसायलेसाय सम्मत्तणाणदंसण संजयउवओग आहारे ॥ १ ॥ दिशिद्वार गतिद्वार इंद्रियद्वार कायद्वार योग वेद कषाय लेश्या सम्यक्त्व ज्ञान दर्शन संजत उपयोग आहार १४—भाषापरित्तपज्जत सुहुमसन्नीभवअत्थि चरिमजाववद्वित्तमवे पन्नवणवंदगपर २७ द्वारं दिसाणुवाएण भाषाद्वार प्रत्येकशरीर शुक्लपक्ष भाव पर्याप्ता सूक्ष्म सन्नी भव

पक्षियापद्वारं २१ तत चरमद्वारं २२ तदमन्तर जीवद्वार २३ ततः क्षेत्रद्वारं २४ ततो बन्धद्वारं २५ ततः पुद्गलद्वारं २६ ततो महादण्डकः २७ इति सर्वसङ्ख्या सप्तविंशतिद्वाराणि ॥ तत्र प्रथमंद्वार मभिधित्सु राह-दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा पच्चत्थिमेणं मित्यादि ॥ इह दिशः प्रथम भाषा रास्ये बंगे अनेकप्रकारा व्यावर्णिता स्तत्र क्षेत्रदिशः प्रतिपत्तव्या स्तासां नियतत्वा दितरासाञ्च प्रायो ऽनवस्थितत्वा दनुपयोगित्वाच्च क्षेत्रदि सोच प्रभव तिर्यग्लोकमध्यगतादष्टप्रदेशका दुचकात्, यत उक्त-अट्ठपएसोरुयगो तिरियलोयस्समज्झयारम्मि । एसपभवोदिसाण एसवन्नवेभणु दिसाणमिति ॥ १ ॥ दिशा मनुपातो दिगनुसरणं तेन दिशो दिशोऽपेक्ष्येति तात्पर्यार्थः । सर्वस्तोका जीवाः पश्चिम पश्चिमायां दिशि कथमितिचत् -उच्यते-इह यस्यबहुत्वं बादरानधिकृत्य द्रष्टव्यं नसूक्ष्माणां सर्वलोकापन्नानां प्रायः सर्वत्रापि समत्वात्, बादरेष्वपि मध्ये सर्वबहवो वनस्पति

जाव सुक्कमसणीयत्तवत्थिसेचरिमे । जीवयखेत्तबंधे पुग्गलमहदंडएचेव ॥ २ ॥ दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा जीवा पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्व त्थोवा पुढविकाइया दाहिणेण उत्तरेण विसेसाहिया पुरच्छिमेण विसेसाहिया पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्त

सिद्ध चर्म चरमद्वार जीवद्वार क्षेत्रद्वार बन्ध पहल महादण्ड २७ सत्तावीसद्वार कह्या दिशिभाषी । सर्वस्तोका जीवा पश्चिममेव पूर्वमेव वि सेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणविसेसाहिया । सर्वथोड़ा बादर पश्चिम दिशनो स्वस्ति देवतानावास गौतमद्वीप पश्चिमने लवण तेमाटे पाणी ना बादर जीवो वनस्पतीनाप्रभाव तेमाट पूर्व विशेषाधिक जमाटे गौतमद्वीप नथी दक्षिण सर्वथी विशेषाधिक जमणो तेमाटे पाणीपणो तिहाँ सा बपणा चन्द्र सूर्य द्वीपनथी तेमाटे पश्चिम उत्तरे विशेषाधिक जीवमाट मानस सरोवरमांहे मानस १ पसम्भातसेदीप तेमाटे । दिसाणवाएण सव्वत्थोवा पाउकाइया पच्चच्छिमेण दि० दाहिणेण वि उत्तरेण वि० । पश्चाद्दिगभागे सर्वता सर्वथी पुष्कराय बादर दक्षिण दिशा पण तिहाँ

कायिका अनन्तगुणासतया तेषां प्राप्यमाणत्वात्, ततो यत्र ते सन्ति तत्र प्रभूतत्वं जीवानां यत्र स्वरूपे तत्राल्पत्वस्य समस्पतय स तत्र यद्भावो यत्र प्र
भूता भाव "अत्यन्तसतत्वववमितिवचनात्," तथावश्यं पनकसेवालादीनां भावात्, तेन पनकसेवालादयो बादरनामकर्मोदये वसमाना अपि च
अनन्तसूक्ष्मावगाहनत्वा दतिप्रभूतपिण्डीभावाय सर्वत्र सन्तोऽपि न चक्षुषा ग्राह्या, तथाचोक्तमनुयोगद्वारेषु-तेषां बालग्गादिसुपनकजीवस्य सरी
रोगाहनापेक्षितो असंख्येयभुवा इति, ततो यद्यपि नैते दृश्यन्त तथापि ते सन्तीति प्रतिपत्तव्या आह च मूलटीकाकारः-इह सर्वत्र वनस्प

रेण विसेसाहिया, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया दाहिणुत्तरेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया पच्चच्छि
मेण विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्वत्थोवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेण विसेसाहि
या दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पच्चच्छिमेण
पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदि

पर्याप्तमीकाय मनोरथे तिर्छा वाली नरकावास घणा, तेमाटे पाछला पर्याप्तके पृथ्वीकाय बाकरके उत्तरे विशेषाधिक समभाव घणावतो पूर्वे विशेषाधि
क पृथ्वीकायके चन्द्र सूर्य द्वीपमाटे। पुरच्छिमेण वि पच्चच्छिमेण वि । चन्द्र सूर्यद्वीप पूर्वपश्चिममे पश्चिम विशेषाधिक पृथ्वीकायछे । गौतम द्वीपमा
टे पृथ्वीकायविशेष तथा पश्चिमे पृथ्वीकायविशेष थिक तथा विम पश्चिम पर्योकोक घामादिसघ्यसायनादि अवगाहवे पात पूरित स्थापेन तथातुल्य
न विशेषाधिक। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया पच्चच्छिमेणंदाहिणेण वि० उत्तरेण वि । दिसमीमेंसे ओछता सर्वथाडा अप्कायाकोक पश्चिम
तेमाटे गौतमद्वीप पश्चिमे तेमाटे थोडो तिर्यालाथा पूर्व २ विशेषाधिकछे दोपने यमाणे दक्षिणे विशेषाधिक जमशे चन्द्रसूर्यद्वीप नथी उत्तरविशेषाधि
क तमाटे मानसरोवरछे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया दाहिण उत्तरेण पुरच्छिमेणं सखिज्जगुणा पच्चच्छिमेण वि । दिसणाओ थोवता बा
दाथ तेउकाय दक्षिण भरत उत्तर भरतऐरवत थाथा विद्यारथवी मनुष्यपाते तथा पिघवाही तेउकायी पूर्वे पश्चिमसंख्यातगुणा महाविदेहमाटे प

तपः इति कृत्वा यत्र ते संति तत्र यद्युक्त जीवाभा तर्या च यद्युक्त "अत्यभाउकाउतत्यनियमावपसरकाइयाइति पयगसेवालस्वाइयायराविडौंति सुहुमाधाबनिक्कानवक्ताइति „ एवं च प्रभूत समुद्रपु द्वीपाद्दिगुणविपर्यात तथापिच समुद्रपु प्रत्यक्ष प्राचीप्रतीचीदिशा यथाक्रमं चन्द्रसूर्ये द्वीपा यायतिच प्रदृष्टे चन्द्रसूर्यद्वीपा यवगाश्चा स्तावस्यदकाभाव उदकाभावात् यमस्पतिकायिकाभाव कमस प्रतीच्या दिग्रि लवणसमुद्रापि पशुस्थितनामद्यावासभूता गौतमद्वीपा लवणसमुद्र स्यधिका वर्तते तत्र च उदकाभावा ह्वनस्पतिकायिकाभा भवावात् सवस्तोका जीवा पश्चिमा या दिग्रि तस्या विशेषाधिका पूर्वस्यां दिशि तदहि-गौतमद्वीपा म विद्यते तत स्तायता विशेषाधिका भवन्त्य तिरिच्यत तस्योपि दक्षिणस्या

या पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया , दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा तेइंदिया पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया ,

विम विमपाधिक मधायामादि घवामाट। दिसाणवाएण सवस्तोवा माउकाइया पुरच्छिमेण पश्चिमेण वि । दिसमाज्यो कोरतां सवथोवाला वायु पूर्वं अनभो पनभनि घवाके तमाटवाउकाया पश्चिम विसपाधिक भणभो घधासायमणं तमाट पाणघणा उत्तरे विशे नरकावासानेठामे पाताल घणो माट दक्षिणे विसपाधिक नरकावासा घणी तिहां वाउ घणौ। दिसाणवाएण सवस्तोवा वणस्सइकाइया पश्चिमेण पुरच्छिमेण वि । दिसमास्यो सर्व थोड़ा वनस्पतोकाय पश्चिम भणभो गौतमद्वीप ससवाउ तिथे माटे वनस्पती पिवसाडो पूर्वे विसेसाधिक गौतमद्वीप नवी तमाट पाताघवान वन पि नपवी। दाहिणेणं वि उत्तरेण विसेसाहिया । दक्षिणनविय चन्द्रसूर्यद्वीपनथा तेमाटे उत्तरेपि मानसरोवरभो पवेसाये वनपवी। दिसाणवाएण स वत्थोवा बेइंदिया पश्चिमेणं पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेणविसेसाहिया उत्तरेण विसे । दिसमोसले सवथोडा बेइंद्रिय पश्चिम जिहां पाणोथा था तेमाटे शखादि थोड़ा पूर्वे विसपाधिक पाणी घणो तमाट दक्षिणे विसपाधिक चन्द्र सूर्य द्वीपनथी तमाट पाणीघणा वाइन्द्रिय पिवघणा उत्तर वि सपाधिक म नसरोवरमाटे। दिसाणवाएणं सवस्तोवा तेइंदिया पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण वि दाहिणेण वि उत्तरेण वि । दिसमासले सवथोडा तेइंद्रि

कायिका अनन्तसूक्ष्मतया तेषां प्राचुर्यभावात् ततो यत्र ते प्रभूतास्तत्र बहुत्वं जीवानां यत्र स्वल्पे तत्राल्पत्वं वनस्पतयः तत्र बहवो यत्र प्र
भूता आपः " जत्थ जलं तत्थ वणमिति वचनात् , तथाऽवश्य पनकसेवालादीनां भावात् तत्र पनकसेवालादयो बादरनामकर्मोदये वर्तमाना अपि अ
त्यन्तसूक्ष्मावगाहनत्वात् दृष्टिमनुपयान्तीनाचाय सर्वत्र सन्तोऽपि न चक्षुषा ग्राह्याः , तथा चोक्तमनुयोगद्वारेषु-तत्र बादरनिगोदस्य सरी
रोगाहनाग्निको पल्योपमाऽनुया इति , ततो यद्यपि मेते दृश्यन्ते तथापि ते सन्तीति प्रतिपत्तव्या आह च मूलटीकाकारः-इह सर्वबहवो वनस्प

रेण विसेसाहिया, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया दाहिणुत्तरेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया पञ्चच्छि
मेण विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्वत्थोवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया पुरच्छिमेण पञ्चच्छिमेण विसेसाहि
या दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पञ्चच्छिमेण
पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदि

पर्याप्याभाव सर्वेरहे थिरो याडो मरवाबास घणा, तेमाट पाताव पचोडवे पचोवाय वाउक्वे उत्तरे विशेषाधिक घनभाव घणा छतो पूर्वे विशेषाधि
क पचोवायवे बत्र भूत होयमाटे। पुरच्छिमेण वि पञ्चच्छिमेण वि । चन्द्र सूर्यद्वीप पूर्वपश्चिमेंछे पश्चिम विशेषाधिक पचोवायवे । गौतम द्वीपमा
ट पचोवायविशेष तथा पश्चिमे पचोवायविशेष थिर तथा बिस पश्चिम पचोवाय सामादिसवखवाणमादि घणगाव्वे घात पूरित स्थापेन तवतुल्य
न विशेषाधिक। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पाउकाइया पञ्चच्छिमेणदाहिणेणं वि० उत्तरेण वि । दिसमीमिते कोमता सर्वथाता पप्पारमाछीय पश्चिम
दमाटे गौतमद्वीप पश्चिमे तेमाटे थोडो तिहांथाका पूर्वे २ विशेषाधिकवे द्वीपने अभावे दक्षिणे विशेषाधिक अभवो चन्द्रसूर्यद्वीप नथी उत्तरविशेषाधि
क अमाटे मानसरोवरछे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया दाहिण उत्तरेण पुरच्छिमेण सव्वत्थोवा पञ्चच्छिमेण वि । दिसपार्थी बातता वा
दाखव तेजस्काय दक्षिण भरत उत्तर भरतऐरवत पावा विध्यापकतो मनुष्याळे नथि. तिवखाटी तेजकी पूर्वे अपिर्शमातथा महाविदेहमाटे प

भानि बहूनि नरकावासा स्तोकाः सुषिरप्राचुर्यसम्भवात् सर्वस्तोका दक्षिणस्यां दिशि पृथिवीकायिका तेभ्य उत्तरस्यां दिशि विशेषाधिका यत उ त्तरस्यां दिशि दक्षिणदिगपेक्षया स्तोकानि भवनानि स्तोका नरकावासा ततो घनप्राचुर्यसम्भवा बहवः पृथिवीकायिका इति विशेषाधिकाः ते भ्योऽपि पूर्वस्यां दिशि विशेषाधिका रविशशिद्वीपानां तत्र भावात् तेभ्योऽपि पश्चिमायां दिशि विशेषाधिका किमारभ्यमितिचेत्-उच्यते-यावन्तो रविशशिद्वीपाः पूर्वस्यां दिशि तावन्तः पश्चिमायामपि ततश्च तावता साम्यं परं लवणसमुद्रे गौतमनामा द्वीपः पश्चिमायामधिकोऽस्ति तेन विशे

खिज्जगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पंकप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेण दाहिणेण असंखे ज्जगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा धूमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेण दाहिणेण असंखेज्ज गुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा तमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा

दाहिणेण असंखिज्जगुणा । दिशनी अपेक्षाइ सर्वथी थोड़ा नारकी पूर्वथा पश्चिमथा उत्तरथा ते भणी पंकप्रभाना नरकावासाथी दक्षिणे असंख्यातगुणा पश्चिम अनेरो दक्षिणदिशि पंकप्रभाना नरकावासामाहे तेमाटे असंख्यातगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा रयणप्पभा पढवी नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिम उत्तरेण दाहिणेण असंखिज्जगुणा । दिशनी अपेक्षाइ सर्वथी थोड़ा रत्नप्रभापृथिवीना नारकी पूर्वदिशि पश्चिमदिशि उत्तरदिशे असंख्यात विस्तारे नरकावास छे तिहां असंख्याता घणा छे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सक्करप्पभापढवी नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेण दाहिणेण असं खिज्जगुणा । दिशनी अपेक्षाइ सर्वथी थोड़ा शर्कराप्रभापृथिवीना नारकी पूर्वदिशि पश्चिमदिशे उत्तरे माटा नरकावासा उत्तरथको दक्षिणे असंख्यात गुणा असंख्यातयोजने विस्तार असंख्याता घणा छे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा वालुयप्पभपढवीनेरइया पुरच्छिम पच्चत्थिम उत्तरेण दाहिणेण असं खिज्जगुणा । दिशनी अपेक्षाइ सर्वथी थोड़ा वालुकाप्रभाना नारकी पूर्वदिशि पश्चिमउत्तरथी माटा असंख्यात विस्तारे दक्षिणे असंख्यातगुणा अ संख्याता घणा छे तेमाटे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पंकप्पभपुढवीनेरइयापुरच्छिम पच्चत्थिमउत्तरेण दाहिणेण असंखिज्जगुणा । दिशनी अपेक्षाइ सर्व

दिशि विशेषाधिकाः । यतः-तत्र चन्द्रसूर्यद्वीपा न विद्यन्ते तदभावात् तत्रोदक प्रभूत तत्प्राभूत्याच्च वनस्पतिकायिकाअपि प्रभूता इति विशेषा धिका सम्यग्पुदीच्या दिशि विशेषाधिकाः किकारणमितिचत् उच्यते-उदीच्या हि दिशि सङ्ख्येयषाजनेषु द्वीपषु मध्ये कस्मिंश्चित् द्वीप आयाम विष्कम्भाभ्या सङ्ख्ययोजनकोटाकोटीप्रमाण मानस नाम सरः समस्ति ततो दक्षिणदिग्पेक्षया अस्या प्रभूतसमत्स्य मुग्कपाकुल्या च प्रभता यनस्प तय प्रभूता द्वीन्द्रियाः शङ्खादयः प्रभूता शटमत्स्यमस्यादिकलेवराश्रिता त्रीन्द्रियाः पिपीलिकादयः प्रभूताः पद्मादिषु चतुरिन्द्रिया भ्रमरादय प्रभूताः पञ्चेन्द्रिया मत्स्यादय इति विशेषाधिका एतदेव समाप्यता दिगनपातेन जीवानामल्पबहुत्व सूत्र मिदानीं विशेषत तदाह दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया दाहिणमित्यादि । दिगनुपातेन दिगनुसारेण विशेषाधिकत्यति भावः पृथिवीकायिका चिन्त्यमाना सर्वस्तोका दक्षिण स्यां दिशि कथमिति चेत् उच्यते-इह यत्र घन तत्र बहवः पृथिवीकायिका यत्र सुषिर तत्र स्तोका दक्षिणस्या दिशि बहूनि भवनपतीना भव

एत्थ चउरिंदियासि, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण असंखेज्ज गुणा, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा रयणप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण असंखे ज्जगुणा, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सक्करप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असं खेज्जगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा णेरइया वालुयप्पभापुढविपुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असं

अ पश्चिमे गौतमद्वीपमाहा पाथोद्यानां अल्पानो सेत्तमाधिकमो भिन्न यें अल्पवाया पूर्वे विशेषाधिक गौतमद्वीपमनः तेमाट पश्चिमे विशेषाधिक चन्द्र द्वीपवधो उत्तरे दिशे मानसरोवरमाटे। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा चौरिन्द्रिया पच पश्चम पुरच्छिमम वि नाहिणेण उत्तरेण वि । दिशनोमके मध्यं जीवाः चतुरिन्द्रिय पश्चिम गौतमद्वीपके तेवतो पाथोद्यानां तिर्यां अल्पवाया तिर्यां भमरा चौरिन्द्रियादिक जीवा पूर्वे विशेषाधिक गौतमद्वीपमयो तमाटे दक्षिण वि चन्द्र सूर्यद्वीपमयो तेमाट उत्तर वि मानसरोवरें भमरादि घणा। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा नेरइया पुरच्छिम पच्च च्छम उत्तरएं

नाभि मध्यो नरकाधमा सत: सुपिरमाप्नूत्यर्सनयात् सघसोमा दक्षिणस्यां दिशि पृथिवीकायिका सोम्य उत्तरस्यां दिशि विशेषाधिका यत्र उ
त्तरस्यां दिशा दक्षिणदिग्पेक्षया सोकानि भवनानि सोकानरकावासा सता घनप्राभूत्यसजवा हृदय: पृथिवीकायिका इति विशेषाधिका: ते
भ्योऽपि पूर्वस्यां दिशि विशेषाधिका रविशशिद्वीपाना तत्र भावात तस्यापि पश्चिमायां दिशि विशेषाधिका किमारणमितिचत्-उच्यत-यावता
रविशशिद्वीपा: पूर्वस्यां दिशि तावन्त: पश्चिमायामपि ततएव तावता साम्य पर लवणसमुद्र गौतमनामाद्वीप पश्चिमायामधिकोऽस्ति तत्र विशे

खिज्जगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पकप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखे
ज्जगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा धूमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखेज्ज
गुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा तमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा

दाक्षिणेन असंखेज्जगुणा । दिसमोमन सवघाहा नारको पूर्वपाद पश्चिमपाहा उत्तरेपाहा सामाटे पष्पावकोव नरकावासावो दक्षिणे असंख्यातगणा
पश्चिमा सेमनो दक्षिणेदिश पष्पवकोष नरकावासाके तेमाट अप्पपत्तीकोष । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा रयणप्पभा पुढवी नेरइया परच्छिमप पच्छि
मउत्तरेण दाहिणेन असंखिज्जगुणा । दिसाभो सवे सवघाहा रत्नप्रभापृथिवीना नारको पूर्वदिशे पष्पावकोप मयो पश्चिमदिशे उत्तरादगमे असंख्यात
विस्तारे नरकावास के तिहां अप्पपचो घणाके अपचे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सक्करप्पभापुढवी नेरइया पुरच्छिमप पच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असं
खिज्जगुणा । दिसमामेसे सवथोवाहा शर्करप्रभापृथिवीना नारको पूर्वदिशि पष्पावकोप मयो पश्चिमे माटा नरकावासा उत्तरमको दक्षिणे असंख्यात
गुणा असंख्यातमाजने विस्तार अप्पपचो घणां अपचे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा वालुयप्पभापुढवीनेरइया परच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असं
खिज्जगुणा । दिसमोमसे सवघाहा वालुकप्रभाना नारको सवादश पुष्पावकोप मयो पश्चिमउत्तरको माटा असंख्यात विस्तारे दक्षिणे असंख्यातगणा अ
नापाचित्र घणां अपचे तेमाटे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पंकप्पभापुढवीनेरइयापुरच्छिम पच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखिज्जगुणा । दिसमोमसे सवे

पाधिकाः स्वप्रस्माह ननु यथा पश्चिमायां दिशि गौतमद्वीपो ऽभ्यधिकः समस्ति तथा तस्याः पश्चिमायां दिशि अधोलौकिकग्रामा अपि योजन सहस्रावगाहाः सन्ति ततः तासपूरितत्वायम तत्तुस्यादेव पृथिवीकायिकाः प्राप्नुवन्ति न स्तिद्वीपाधिका। नैतदेव—यतो धोलौकिकग्रामावगाहो योजनसहस्रं गौतमद्वीपस्य पुनः षट्सहस्राधिक योजनसहस्रं मुखेरस्य विष्कम्भ तस्य द्वादशयोजनसहस्राणि यत्र मेरो रारभ्य धोलौकिकग्रामभ्यो ऽर्वाक् क्षीनत्व हीनतरस्य तत्पूर्वस्यामपि दिशि प्रभूतगर्त्तादिसम्भवात समान ततो यद्यधोलौकिकग्रामाभ्यिद्रदु युक्त्या गौतमद्वीपः प्रक्षिप्यते तथा पि समधिकएव प्राप्यते नतुस्य इति तेन समधिकन विशेषाधिका पश्चिमायां दिशि पृथिवीकायिकाः उक्त दिगनुपातन पृथिवीकायिकानां म स्पबहुत्व मिदानीं नैरयिकाणां मस्पबहुत्वमाह—दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पाढगाइया इत्यादि ॥ सव्व थोवा नैरयिकाः पश्चिमायां दिशि गौ

दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा तमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा अहे सत्तमापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणाहितो अहे सत्तमापुढविनेरइएहितो छठीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण असं

थोड़ा पहुप्रभापृथ्वी नारकी पूर्वदिश पश्चिमदिश नथी तेमाट पश्चिमउत्तर नथी दक्षिण असंख्यातगुणा कृष्णपाक्षिक घणा उपजे। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा तमप्पभपुढविनेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असंखिज्जगुणा। दिगनासर्वे सथवाडा धूमप्रभानारकी पूर्व पश्चिमदीप नथी तेमाट पश्चिम उत्तर नथी दक्षिणे असंख्यातगुणा कृष्णपक्षी घणा मा ट। दिस नरापर्व सव्वत्थोवा तमप्पभपुढवीनेरइया पुरच्छिमउत्तरेण दाहिणेणं असं खिज्जगुणा। दिश नेमिते सथथोडा तमप्रभानारकी पूर्वे पश्चिमदीप नथी तेमाट पश्चिमउत्तर नथी दक्षिणे असंख्यातगुणा। दिसाणुवाएण सव्व त्थोवा अहेसत्तमपुढवीनेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असंखिज्जगुणा। दिशनो मर्म सथथोडा हेठ सातमीनारकी पूर्व पश्चिमदीप नरकावासा नथी तेम ट पश्चिम उत्तर नथी दक्षिणे असंख्यातगुणा विस्तारे कृष्णपक्षी घणा मा ट दिशे सात पृथ्वीनी दिशिनो अल्पबहुत्व कहे छे—दाहि

जम्बूद्वीपस्यापि तेषां मध्यात्, तेभ्योऽपि विशेषाधिका: पूर्वस्यां दिशि तेभ्योऽपि विशेषाधिका दक्षिणस्यां दिशि चन्द्रसूर्यद्वीपाभावात्, तेभ्योऽप्युत्तरस्यां दिशि विशेषाधिका मानसरः सद्भावात्, तथा दक्षिणस्या मुत्तरस्यां च दिशि भवनलोकाः तत्रस्थायिका यथा समुत्पन्ने एव बादरा लोक स्थायिका नाम्ना तत्रापि यत्र बहवो मनुष्याः तत्र त बहवो वायुस्तम्भ प्रकारम्भसम्भवात्, यत्र स्वरूपे मनुष्यलोका तत्र दक्षिणस्यां दिशि यतस्तु परतस्तु उत्तरस्यां दिशि पञ्चसैरावतस्तु क्षेत्रस्याल्पत्वात्, लोका मनुष्या सर्पा लोकस्तम्भ तत्रस्थायिका अपि लोका अल्पप्राकारम्भसम्भवा ततः भवनलोका दक्षिणान्तरयो । दक्षो तत्रस्थायिका: स्वस्थानेषु माया समाना: तस्य पूर्वस्यां दिशि सङ्ख्येयगुणा: अत्रस्य सङ्ख्येयगुणत्वात्, ततोऽपि पश्चिमायां दिशि विशेषाधिका: अधोलौकिकग्रामेषु मनुष्यबाहुल्यात् ॥ दिगनुसारेण सप्तपृथ्वीनां नारकाणामल्पबहुत्वं पुराश्चिममेवमित्यादि ॥ एवं यत्र शुषिर

खेज्जगुणा, दाहिणल्लेहिंतो तमापुढविनेरइएहिंतो पचमाधूमप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिम उत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दाहिणल्लेहिंतो धूमप्पभापुढविणेरइएहिंतो चउत्थीए पङ्कप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा। दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दाहिणल्लेहिंतो पङ्कप्पभापुढविनेरइएहिंतो तइयाए वालुयप्पभाए पुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असं

बनिता पञ्चमतमाए पुढवी नारायावनिता कालोतमाए पुढवी नेरइ पश्चिम पश्चिम उत्तरेव असंख्यातगुणा। केठे मातमीएको दक्षिणदिश यो मातमोको छठौम नामारको पूर्व पश्चिम उत्तर असंख्यातगुणा सामाट योन ? बर पापकमना बरपरार होम नरकगति जापमे तेमाट सात मोपमाको छठोनरक असंख्यातगुणा जाणवे। दक्षिणम असंख्यातगुणा दक्षिणदिशा तमापढवीनेरइयविता पचमाए धूमप्पभापढवो नेरइया पर श्चिम पश्चिम उत्तर असंख्यातगुणा। दक्षिणे असंख्यातगुणा छह पापकोपदे बाबरी दक्षिणदिशिको तमाएमीनको पाचमो धूमप्रभा एमो मा नारको होनतर पापकमना बरपरार तेमाट पूर्व पश्चिम उत्तरमा नारको असंख्यातगुणे अधिका हुवे। दक्षिणेव असंख्यातगुणा। तेहमको दक्षि

तत्र यत्र यत्र च घन तत्र साम्यजाव। तत्र पूर्वस्यां दिशि प्रभूत घनमित्यल्पाकायेष। पश्चिमायां दिशि विशेषाधिकाः अधोलौकिकग्रामेषु सम्भवात उत्तरस्यां दिशि विशेषाधिकाः भवनमरकावासयाबुल्यन सुषिरबाहुल्यात ततोपि दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिक उत्तरदिगपेक्षया दक्षिणस्यां दिशि प्रथमानां नरकावासानां चातिप्रभूतत्वात् तथा यत्र प्रभूता आपस्तत्र प्रभूता पनकादयो ऽनन्तकायिका वनस्पतय प्रभूता शङ्खादयो द्वीन्द्रियाः प्रभूताः पिपीलिकादयस्त्रीन्द्रियाः प्रभूताः पद्माश्रिताः भ्रमरादय चतुरिन्द्रिया इति। वनस्पत्यादिसूत्राणि चतुरिन्द्रियसूत्र

सखेज्जगुणा, दाहिणेण असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो वालुयप्पभापुढविणेरइएहिंतो बीयाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा दाहिणेण असंखेज्जगुणा दाहिणिल्लेहिंतो सक्करप्पभापुढविणेरइएहिंतो इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेण असंखेज्जगुणा, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया पच्चच्छिमेण पुरच्छि

च असंखेज्जगुणा अल्पपणो घणा तेमाटे। दाक्षिणना करता धूमप्रभापढवीए नेरइयाउता पढवीए पंकप्रभाए पढवीए नेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरए असंखेज्जगुणा। दक्षिणदिशिना धूमप्रभापृथ्वीना नारकी दक्षणदिशिनो थोडो पंकप्रभानानारकी पूर्व पश्चिम उत्तरना असंख्यातगुणे अधिकपुढे। दाक्षिण असंखेज्जगुणा दाक्षिणदिशिना पंकप्रभापढवी नेरइयाथिता। तेहथी दक्षिणे असंख्यातगुणा अल्पपणो घणा तेमाटे दक्षिणदिशिना पंकप्रभाना नारकीथी। ताबाए वालुयप्पभाएपढवीए नेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरए असंखेज्जगुणा। थोडो व वालुप्रभापृथ्वीना नारकी पूर्व पश्चिम उत्तरना असंख्यातगुणा हीनभमना करतभार तमाटे। दाक्षिणे असंखेज्जगुणा। तेहथी असंख्यातगुणा पुन पापश्रोपरे। दाक्षिण हतो वालुयप्प भपढवी नेरइयथिता। दक्षिणदिशिना नारकी वालुप्रभाना नारकीथकी। बीयाए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेणं असं खिज्जगुणा। एहथी शर्कराप्रभाना नारकी पूर्व पश्चिम उत्तरना असंख्यातगुणा पुण पापापापो तेमाटे दक्षिणे असंख्यातगुणा पुण पापापापी तेमाटे।

पर्यंतानि सप्ताधिकमूत्र प्राकमीयानि, मेरयिकसूत्रे सवस्तोका पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविनो नैरयिकाः पुष्पावकीर्णनरकावासानां बाहुल्यात्
पयूनां प्रायः सख्ययोजनविस्तृतत्वाच्च तम्यो दक्षिणदिग्भागविभाविनो असंख्येयगुणाः पुष्पावकीर्णनरकावासानां तत्र बाहुल्यात्। तथाच प्रायो बहु
योजनविस्तृतत्वात् कृष्णपाक्षिकाणां तस्यां दिशि प्राचुर्येणोत्पादाच्च तथाहि-द्विविधा जन्तवः शुक्लपाक्षिकाः कृष्णपाक्षिकाश्च तथा किञ्चिदू-
नार्धपुद्गलपरावर्तमात्रसंसारास्ते शुक्लपाक्षिकाः अधिकतरसंसारभाजिनस्तु कृष्णपाक्षिकाः उक्तञ्च-जेसिमवड्ढोपुग्गल परियट्टोसेसओयसंसा

मेण विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा मणुस्सा दाहि
णउत्तरेण पुरच्छिमेण संखेज्जगुणा। पच्चच्छिमेण विसेसाहिया। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासी
देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगुणा। दाहिणेण असंखेज्जगुणा, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा

दक्षिणेन असंख्येयगुणा। दक्षिणे असंख्यातयोजनविस्तृता पाताले। दाक्षिणात्या असंख्येयगुणा नैरयिकाः। दक्षिणदिग्भागे नरकप्रभापृथ्वी
या नारकाः। शर्कराप्रभायां पूर्व इव नारकाः पश्चिम पश्चिम उत्तरेषु असंख्येयगुणाः। या पूर्वोक्ता रत्नप्रभापृथ्वी नारकाः पूर्वे पश्चिम च
तरंगा असंख्यातगुणा। दाक्षिणात्या असंख्येयगुणाः। तत्र दक्षिण असंख्यातगुणा असंख्यात भागे नारकाः। दिशानुपातेन सर्वस्तोका पञ्चेन्द्रिय
तिर्यञ्चश्चाधिका एव पूर्वपश्चिमे विशेषाधिका उत्तरे च। विमानोत्पन्ने सर्वस्तोका पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका पश्चिमे ते गौतमद्वीपे कनक
मद् तिर्यंचाधिका तत्र तिर्यग्योनिकाः असंख्याधिका अतः पूर्वे विशेषाधिक गौतमद्वीप नदी उत्तरे विशेषाधिक मानसरोवर इस मत्स्यादि
पञ्च। दिशानुपातेन सर्वस्तोका मनुष्या दक्षिण उत्तरे च पूर्वपश्चिमेन संख्येयगुणा पश्चिमे च। दिग्भाग सागर मनुष्य दक्षिण उत्तर
त जम्बू उत्तरे ऐरवत दक्षिणे भरतक्षेत्र पूर्वे मनुष्यसंख्यातगुणा पश्चिम अपर महाविदेह सागर पश्चिमदिशि विशेषाधिक जनपद पश्चिम
बाधिक मनुष्य पर्व। दिशानुपातेन सर्वस्तोका भवनवासीदेवा पूर्वपश्चिम पश्चिमेन उत्तरे असंख्येयगुणा दाक्षिणेन असंख्येयगुणा। दिशानो

गाः बहवः यत्र च पर्न तत्र चाप्यभावः तत्र पूर्वस्यां दिशि प्रभूत घनशिलारूपावयवः पश्चिमायां दिशि विशेषाधिकाः अधोलौकिकग्रामेषु सत्त्वात् उत्तरस्यां दिशि विशेषाधिकाः भवननरकावासबाहुल्येन सुषिरबाहुल्यात् ततोऽपि दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिक उत्तरदिगपेक्षया दक्षिणस्यां दिशि भवनानां नरकावासानां चातिप्रभूतत्वात् यथा यत्र प्रभूता आपस्तत्र प्रभूता पनकादयो अनन्तकायिका वनस्पतयः प्रभूताः शङ्खादयो द्वीन्द्रिया प्रभूताः पिपीलिकादयास्तदाश्रिताः कुन्थ्वादय त्रीन्द्रियाः प्रभूताः पद्माश्रिताः भ्रमरादयः चतुरिन्द्रिया इति। पनकपत्यादिसूत्राणि चतुरिन्द्रियसूत्र

सखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो वालुयप्पभापुढविणेरइएहिंतो बीयाए सक्करप्प-
भाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दाहिणिल्लेहिंतो
सक्करप्पभापुढविणेरइएहिंतो इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगु-
णा । दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया पच्चत्थिमेणं पुरच्छि-

---

व पश्चिमदिशागत अल्पबहुत्व कहा गया है। दाक्षिणात्य धूमप्रभापृथ्वी के नैरयिकों से चौथी पंकप्रभापृथ्वी के नैरयिक पूर्व पश्चिम उत्त-
र की अपेक्षा असंख्यातगुणा। दक्षिणदिशा के धूमप्रभापृथ्वी के नारकों से दक्षिणदिशा के चौथी पंकप्रभा के नारक पूर्व पश्चिम उत्तर के असंख्यातगुणे अधिक हैं।
दक्षिण की अपेक्षा असंख्यातगुणा दाक्षिणात्य पंकप्रभापृथ्वी के नैरयिकों से। तीसरी दक्षिण के असंख्यातगुणा अल्पबहुत्व कहा गया है दक्षिणदिशा के पंकप्रभा-
वाले नारकों। तीसरी वालुकाप्रभापृथ्वी के नैरयिक पूर्व पश्चिम उत्तर के असंख्यातगुणा। तीसरी व वालुकाप्रभापृथ्वी के नारकों पूर्व पश्चिम उत्त-
र के असंख्यातगुणा दीनक्रमा अल्पबहुत्व कहा गया है। दक्षिण के असंख्यातगुणा। तीसरी असंख्यातगुणा कुछ पाठ्योपरे। दाक्षिणात्य कहा वालुकाप्र-
भापृथ्वी नैरयिकों। दक्षिणदिशा के नारकों वालुकाप्रभा नारकोंको। दूसरी शर्कराप्रभापृथ्वी के नैरयिक पूर्व पश्चिम उत्तर के असं-
ख्यातगुणा। दूसरी शर्कराप्रभा नारकों पूर्व पश्चिम उत्तर का असंख्यातगुणा दूसरे कहा गया है दक्षिण के असंख्यातगुणा दूसरे कहा गया है।

वक्तव्यं पुनः मयथापि समासस्या तदेव प्रतिपृथिव्यपि दिग्विभागेना स्यबहुत्व मु कमिदानीं सप्तापि पृथिवीरधिकृत्य दिग्विभागेना स्यबहुत्व माह-दाहिणदिसो पढ सत्तमपुढविनरयपडितो छट्ठीए तमाए पुढवीए नरयवा इत्यादि ॥ सप्तमपृथिव्या पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्विभागविभ्यो नैरयिके भ्योप सप्तमपृथिव्यामेव दाक्षिणात्या स्त असंख्येयगुणा तस्य षष्ठपृथिव्या तमप्रभाभिधानाया पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्विभागविभ्या असंख्येयगुणा कथमिति चत् उच्यते-इह सर्वोत्कृष्टपापकारिणः संज्ञिपंचेन्द्रियतिर्यग्मनुष्याः सप्तमनरकपृथिव्या मुत्पद्यन्ते किंचिद्धीनहीनतरपापकर्मकारिणश्च पञ्चम्यादिषु पृथिवीषु सर्वोत्कृष्टपापकर्मकारिणश्च स्तोकाः एवञ्च यथोत्तरं किंचिद्धीनतरादिपापकर्मकारिणः सतो पुष्कमसंख्यगुणत्वं सप्तमपृथिवीदाक्षि णात्यनारकापेक्षया षष्ठपृथिव्यां पूर्वोत्तरपश्चिमनारकाणा मय मुत्तरोत्तरपृथिवीरप्यधिकृत्य भावयितव्य तस्योपि तस्यामेव षष्ठपृथिव्या दक्षिणस्या

साहिया, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा ईसाणेकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगुणा दाहिणे ण विसेसाहिया, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सणंकुमारेकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण विसेसाहिया दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा माहिंदे कप्पे पुरच्छिमेणपच्चच्छिमेण, उत्तरेण

पर यतो। दिशानुपातेन सर्वस्तोकादेवा ईशानकल्पे पौरस्त्य पाश्चात्यश्च उत्तरेण असंख्येयगुणा दाक्षिणात्या विशेषाधिका। दिग्भागेष्वेव सर्वस्तोका सौधर्म कल्प पूर्वस्मिं क्षेमश्री पद्मावलीप नवो पश्चिमेऽपिच एवमभाव उत्तरे असंख्यातगुणा पवित्र दक्षिणदिशि विशेषाधिका समा ट कृष्णपक्षो। दि सानत्कुमारे सर्वस्तोका देवा ईशानकल्पे पौरस्त्य पाश्चात्यश्च उत्तरेण असंख्येयगुणा। दिग्भागेष्वेव जावता सवतो रत्ताभजपे पूर्वे पद्मावलीप नवो समाट पश्चिम उत्तरे असंख्यात विमानाधिकम। दाक्षिणात्या विशेषाधिका। दक्षिणे असंख्यातगुणा कृष्णपक्षी यतो भवन्ते। दिशानुपातेन सर्वस्तोका देवा माहेन्द्रे कल्पे पौरस्त्य पाश्चात्यश्च उत्तरेण असंख्येयगुणा। दिगापात्री जावता सवतो देवता माहेन्द्र कल्पे देवता सवर्थिम पुष्पावलीप नवो उत्तरे असंख्यातगुणा। दाक्षिणात्य विशेषाधिका। दक्षिणविमानाधिक कृष्णपक्षी भवन्ते। दिशानुपातेन सर्वस्तोका ब्रह्मलोक कल्प देवा पौरस्त्य प

रा। तेसु कण्हपक्खियाएसु बहवोपपुण्णक्खपक्खीहिं ॥१॥ एतमेव लोका शुक्लपाक्षिका अल्पसंसारिका लोकस्वात् बहवः कृष्णपाक्षिका प्रभूतसंसारिकामतिप्रचुरत्वात् कृष्णपाक्षिकाश्च प्राचुर्येण दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते न शेषासु दिक्षु तथास्वाभाव्यात् तच्च तथास्वाभाव्यं पूर्वाचार्यै एवं यु क्तिभि उपबृंह्यते तद्यथा—कृष्णपाक्षिका दीर्घतरसंसारभाजिन उच्यते दीर्घतरसंसारभाजिनश्च बहुपापोदया भवन्ति बहुपापोदयाश्च क्रूरकर्माणः क्रूरकर्माणश्च प्राय तथास्वाभाव्यात् तद्भवसिद्धिका अपि दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते न शेषासु दिक्षु यत आह—पायमिह कूरकम्मा भवसिद्धीयावि दाहिणिल्लेसु। नरयतिरियमणुया सुराइठाणेसु गच्छंति ॥१॥ ततो दक्षिणस्यां दिशि बहूनां कृष्णपाक्षिकाणां उत्पादसम्भवात् पूर्वोक्तकारणद्वयाच्च संभवन्ति पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविभ्यो दाक्षिणात्या असंख्येयगुणाः यथा च सामान्यतो नैरयिकाणां दिग्विभागेनाल्पबहुत्वमुक्तमेवं प्रतिपृथिव्यपि

वाणमंतरा देवा पुरच्छिमेणपच्चच्छिमेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा जोइसिया देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेण दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा सोहम्मे कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण विसे

सर्वे थकी थोडा भवनवासी देवता पूर्वपश्चिमे भवन थोडा उत्तरे असंख्यातगुणा २ ताथ भवनथी अधिकाये दक्षिणे भवनपति असंख्यातगुणा २४ लाख भुवनथी अधिकाये कृष्णपक्षी घणा उपजे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वाणमंतरा देवा पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं विसेसाहिया उत्तरेणं वि० दाहिणेणं विसे साहिया। दिशनी अपेक्षाये थोडा वाणव्यंतर देवता पूर्वे ते माटे समभूमि घणी पश्चिमे विशेषाधिक अधोग्राम सलोरके निवास घणा उत्तर विशेषाधिक अमरोनीवास घणाने अपेक्षाये दक्षिण विशेषाधिक अमरावास घणा ते माटे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिया देवा पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं दा० विसेसाहिया। दिशनी अपेक्षाये सर्वथी थोडा ज्योतिषी देवता पूर्वपश्चिम चंद्रसूर्यना विमानने तेमाटे विमानथकी दक्षिणे विशेषाधिक चंद्रसूर्यद्वीप नथी। उत्तर विशेषाधिक अमथी मानसरोवर ज्योतिषीरचित पासे तेहभणी मध्यवर्ती ज्योतिष्कदेव पामो अवसर केरे ज्योतिषीमध्य उपजे तमाटे घ

तथाहि-निकाये २ चत्वारि २ भवनशतसहस्राण्यतिरिच्यंते, कृष्णपाक्षिकाश्च बहवो समुत्पद्यन्ते, ततो भवनपतयस्संख्येयगुणाः, भ्रमरसूत्रे भावना यत्र सुषिरं तत्र अप्कायाः प्रचरन्ति यत्र घन तत्र न ततः पूर्वस्यां दिशि घनत्वात् स्तोका अप्करा तेभ्यो उत्तरस्यां दिशि विशेषाधिकाः यथो सौविकग्रामेषु सुषिरसम्भवात् तेभ्योप्युत्तरस्यां दिशि विशेषाधिकाः स्वस्थानतया नगरावासबाहुल्यात्, तेभ्योपि दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधि काः चलिप्रभूतनगरावासबाहुल्यात् तथा सर्वस्तोका ज्योतिष्काः पूर्वस्यां पश्चिमायां च दिशि चन्द्रादित्यद्वीपेषूद्यानकल्पेषु कतिपयानामेव तेषां प्रावात्' तेभ्योपि दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिका विमानबाहुल्यात् कृष्णपाक्षिकाणां दक्षिणदिग्भावित्वाच्च तेभ्यो प्युत्तरस्यां दिशि विशेषा धिकाः यतो मानसे सरसि बहवो ज्योतिष्काः क्रीडास्थान मिति चीडमभ्यागताः नित्यमासते, मानससरसि च ये मत्स्यादयो जलचरा स्ते आस न्नविमानदर्शनतः समुत्पन्नजातिस्मरणात् किंचिद्व्रत प्रतिपद्य अनशनादि कृत्वा कृतनिदाना समुत्पद्यन्ते ततो भवन्त्यौत्तराहा दाक्षिणात्येभ्यो

विशेषाधिकाः तथा सौधर्मे कल्पे सर्वस्तोका पूर्वस्यां पश्चिमायां च दिशि वैमानिकाश्च यतो यान्यावलिकाप्रविष्टानि विमानानि तानि चत सृष्वपि दिक्षु तुल्यानि यानि पुनः पुष्पावकीर्णानि तानि प्रभूतानि असंख्येययोजनविस्तृतानि तानि च दक्षिणस्यामुत्तरस्यां दिशि नान्यत्र ततः स र्वस्तोकाः पूर्वस्यां पश्चिमायां च दिशि तेभ्य उत्तरस्यां दिशि असंख्येयगुणाः पुष्पावकीर्णविमानानां बाहुल्या दसंख्येययोजनविस्तृतत्वाच्च तेभ्योपि दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिकाः, कृष्णपाक्षिकाणां प्राचुर्येण तत्र गमनात् एवमीशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलोकसूत्राण्यपि भावनीयानि, ब्रह्मलोककल्पे सर्वस्तोकाः पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविनो देवा यतो बहवः कृष्णपाक्षिका तिर्यग्योनयो दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते शुक्लपाक्षिकाः पुनः पूर्वोत्तरपश्चि मासु शुक्लपाक्षिकाश्च स्तोका इति पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविनः सर्वस्तोकाः तेभ्यो दक्षिणस्यां दिशि असंख्येयगुणाः कृष्णपाक्षिकाणां बहूनां तत्रोत्पादात् एवं लान्तकमहाशुक्रसहस्रारसूत्राण्यपि भावनीयानि, आनतादिषु पुनः मनुष्या एवोत्पद्यन्ते तेन प्रतिकल्प प्रतिग्रैवेयकं प्रत्यनुत्तरविमानं चतसृषु दिक्षु

दिशि नारका असंख्येयगुणा पुष्करस्य प्रागेवोक्ता तेभ्योऽपि पञ्चमपृथिव्यां धूमप्रभाभिधानायां पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविनो असंख्येयगुणा तेभ्योऽपि तस्यामेव पञ्चमपृथिव्या दाक्षिणात्या असंख्येयगुणाः एवं सर्वास्वपि क्रमेण वाच्यं तिर्यक्पञ्चेन्द्रियसूत्रं त्वप्कायसूत्रवत्-दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सा दाहिणउत्तरेणमित्यादि । सर्वस्तोका मनुष्या दक्षिणस्यामुत्तरस्यां च पञ्चानां भरतक्षेत्राणां पञ्चानामैरावतक्षेत्राणां मल्पत्वात् तेभ्यः पूर्वस्यां दिशि संख्येयगुणाः क्षेत्रस्य संख्येयगुणत्वात् तेभ्योऽपि पश्चिमायां दिशि विशेषाधिकाः स्वभावत एवाधोलौकिकग्रामेषु मनुष्यबाहुल्यभावा त् । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासीत्यादि । सर्वस्तोका भवनवासिनो देवाः पूर्वस्यां पश्चिमायां च दिशि तत्र भवनानामल्पत्वात् तेभ्यो उ त्तरदिग्भाविनोऽसंख्येयगुणाः स्वस्थानतया तत्र भवनानां बाहुल्यात् तेभ्योऽपि दक्षिणदिग्भाविनोऽसंख्येयगुणाः तत्र भवनानामतीव बाहुल्यात्,

असंखेज्जगुणा, दाहिणेण विसेसाहिया। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा बंभलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमउ त्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा बंभलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा। दिसाणुवाएण लंतए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असंखेज्ज

पश्चिम उत्तरेण दाहिणेण असंख्यातगुणा। दिशनेमध्ये सर्वथी थोडा बंभलोक कल्पना देवता पूर्व पश्चिम पश्चिम उत्तर दक्षिणे असंख्यातगुणा। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा लंतए कप्पे देवा पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असंख्यातगुणा। दिशनेमध्ये सर्वथी थोडा लांतककल्पना देवता पूर्व पश्चि म उत्तरे दक्षिणे असंख्यातगुणा जाणिवा। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा महासुक्ककप्पे पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असंख्यातगुणा। दिशनेमध्ये सर्वथी देवता महाशुक्र कल्पना पूर्व पश्चिमे उत्तरे दक्षिणे असंख्यातगुणा शुक्रपाक्षिको परे। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सहस्सारे कप्पे दे वा पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असंख्यातगुणा। दिशनेमध्ये थोडा सर्वथी देवता सहस्रारकल्पना पूर्व पश्चिमे उत्तरे दक्षिणे असंख्यात कृष्णपक्षी माटे। तव पर बहुसमानपणा समभावथी। तिहारपछी सर्वथी आमाट तिहां मनुष्य नपजे ते समावती परीक्षा हवे भवनपतिनो माह

तथाहि-निकाये २ चत्वारि २ भवनशतसहस्राण्यतिरिच्यन्ते, कृष्णपाक्षिकाश्च बहवो दक्षिणस्यामुत्पद्यन्ते, ततो भवनवासिभ्योऽसंख्येयगुणाः व्यन्तरसूत्रे नामना यत्र सुषिरं तत्र व्यन्तराः प्रचरन्ति यत्र घनं तत्र न, ततः पूर्वस्यां दिशि घनत्वात् स्तोका व्यन्तरा तेभ्यो ऽपरस्यां दिशि विशेषाधिकाः, अधो लौकिकग्रामेषु सुषिरसम्भवात्, तेभ्योऽप्युत्तरस्यां दिशि विशेषाधिकाः स्वस्थानतया नगरावासबाहुल्यात्, तेभ्योऽपि दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिकाः अतिप्रभूतनगरावासबाहुल्यात्, तथा सर्वस्तोकाः ज्योतिष्काः पूर्वस्यां पश्चिमायां च दिशि चन्द्रादित्यद्वीपेषूद्यानकल्पेषु कतिपयानामेव तेषां भावात्, तेभ्योऽपि दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिका विमानबाहुल्यात्, कृष्णपाक्षिकाणां दक्षिणदिग्गामित्वाच्च तेभ्यो ऽप्युत्तरस्यां दिशि विशेषाधिकाः यतो मानस सरसि बहवो ज्योतिष्काः क्रीडास्थानमिति क्रीडनव्यापृताः नित्यमासते, मानससरसि च ये मत्स्यादयो जलचरा ते आस न्नविमानदर्शनतः समुत्पन्नजातिस्मरणाः किंचिद्व्रतं प्रतिपद्य अनशनादि च कृत्वा कृतनिदाना अत्रोत्पद्यन्ते ततो भवन्त्यौत्तराहाः दाक्षिणात्येभ्यो

विशेषाधिकाः, तथा सौधर्मे कल्पे सर्वस्तोकाः पूर्वस्यां पश्चिमायां च दिशि वैमानिकदेवा यतो यान्यावलिकाप्रविष्टानि विमानानि तानि चत सृष्वपि दिक्षु तुल्यानि यानि पुनः पुष्पावकीर्णानि तानि प्रभूतानि असंख्येययोजनविस्तृतानि तानि च दक्षिणस्यामुत्तरस्यां दिशि नान्यत्र ततः स र्वस्तोकाः पूर्वस्यां पश्चिमायां च दिशि तेभ्य उत्तरस्यां दिशि असंख्येयगुणाः पुष्पावकीर्णविमानानां बाहुल्याद् असंख्येययोजनविस्तृतत्वाच्च, तेभ्योऽपि दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिकाः, कृष्णपाक्षिकाणां प्राचुर्येण तत्र गमनात्, एवमीशानसनत्कुमारमाहेन्द्रकल्पसूत्राण्यपि भावनीयानि, ब्रह्मलोककल्पे सर्वस्तोकाः पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविनो देवा यतो बहवः कृष्णपाक्षिकास्तिर्यग्योनयो दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते शुक्लपाक्षिकाः पुनः पूर्वोत्तरपश्चि मासु शुक्लपाक्षिकाश्च स्तोका इति पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविनः सर्वस्तोकाः तेभ्यो दक्षिणस्यां दिशि असंख्येयगुणाः कृष्णपाक्षिकाणां बहूनां तत्रोत्पादात्, एवं लान्तकशुक्रसहस्रारसूत्राण्यपि भावनीयानि, आनतादिषु पुनर्मनुष्या एवोत्पद्यन्ते तेन प्रतिकल्पं प्रतिग्रैवेयकं प्रत्यनुत्तरविमानं चतसृषु दिक्षु

प्रायो बहुसमा वदितव्या क्षपाभावः ॥ तेवपरं बहुसमीवयकमा समवाउसो । इति दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका सिद्धा दक्षिणस्या मुत्तरस्यां च दिशि कथमिति चेत् ? उच्यते-इह मनुष्या एव सिध्यन्ति नान्ये मनुष्या अपि सिध्यन्तो यत्रा काशप्रदेशे ष्विह चरमसमये अवगाढा स्तेष्वेवाकाशप्रदेशेषूर्ध्वमपि गच्छन्ति, तत्रैव चाप्यवतिष्ठन्ते न मनागपि वक्रं गच्छन्ति, सिध्यन्ति च यत्र दक्षिणस्यां दिशि पंचसु भरतेषूत्तरस्यां दिशि पञ्चस्वैरावतेषु मनुष्या अल्पाः क्षेत्रस्याल्पत्वात्, सुषमसुषमादौ च सिद्धेरभावादिति तत्क्षेत्रसिद्धाः सर्वस्तोकाः तेभ्यः पूर्वस्यां दिशि संख्येयगुणाः पूर्वविदेहानां भरतैरावतक्षेत्रेभ्यः संख्येयगुणतया तद्गतमनुष्याणामपि संख्येयगुणत्वात् तेषां च सर्वकाल सिद्धिभावात् तेभ्यः पश्चिमायां दिशि विशेषाधिकाः अधोलौकिकग्रामेषु मनुष्यबाहुल्यात् अत दिग्द्वारं सिद्धानां गतिद्वार-तन्नदमादिसूत्र-एव सिद्ध नत । नरकावासमित्यादि ॥ सर्वस्तोका मनुष्याः पञ्चचत्वारिंशल्लक्षप्रमाणत्वात् अथ पञ्चचत्वारिंशल्लक्षप्रमाणत्वात् रथे दक्षायिष्यस त

गुणा । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा महासुक्के कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा
दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सहस्सारे कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा , तण

मन् । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेण पुरच्छिमेण संखिज्जगुणा पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया वार १ । दिगनीमिषे थाती सवथाडा सिद्ध दक्षिण उत्तरे भरतऐरवतना थोडा तेमथी थाडासिद्ध पूर्वे महाविदेह मथी संख्यातगुणा पश्चिमे अधोग्रामे मनुष्यघणां तेमथी सिद्ध विशेषाधिक इति दिग्द्वार ॥ १ ॥ हिवे गतिद्वारना अल्पबहुत्व कहे छे—एपसिद्ध मते नेरइयावं तिरिक्खजोणियाव मनुष्यावं देवाव सिद्धाय अप्पाबहुसमाये । एतले नेमनाम् नारकीमां तिर्यचयोनियाने मनुष्यने देवताने सिद्धने पांचगति ते समासेकरी । सेव बहारे २ जिहा अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया । ते किहां २ थाकाडव धणाडुवे सराखाडुवे किहां विशेषाधिक डुवे । गोयमा सव्वत्थोवा मनुष्य नेरइया असंखिज्जगणा देवा असंखिज्जगुणा सिद्धा अ णंतगुणा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा । हेगोतम सर्वथोडा मनुष्यघणुरहवे इन्दमि असावने भाणे विचार कहे छे—तेहमथो नारकी असंख्यातगुणा

स्मी नैरयिका असंख्येयगुणा अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशौ सम्बन्धिनि प्रथमवर्गमूले द्वितीयवर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेशराशिर्भवति तावत्प्रमा
णासु घनीकृतस्य लोकस्यैकप्रादेशिकीषु श्रेणिषु यावन्तो नभःप्रदेशास्तावत्प्रमाणत्वात्, तेभ्यो देवा असंख्येयगुणाः व्यन्तरज्योतिष्काणां च
प्रत्येकं प्रतरासंख्येयभागवर्त्तिश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात्, तेभ्यः सिद्धा अनन्तगुणा अभव्येभ्योऽप्यनन्तगुणत्वात्, तेभ्यस्तिर्यग्योनिका अ
नन्तगुणाः वनस्पतिकायिकानां सिद्धेभ्योऽप्यनन्तगुणत्वात्, तदेवं नैरयिकतिर्यग्योनिकमनुष्यदेवसिद्धरूपाणां पञ्चानामल्पबहुत्वमुक्तम्, इदानीं नैर
यिकतिर्यग्योनिकतिर्यग्योनिकीमनुष्यमानुषीदेवदेवीसिद्धरूपाणामष्टानामल्पबहुत्वमभिधित्सुरिदमाह—एएसि णं भंते! नेरइयाणमित्यादि॥ स

पए घऊसमोअववन्नगा समणाउसो! दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेणं पुरच्छिमेणं संखेज्जगुणा, पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया दारं १। एएसि णं भंते! नेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं देवाणं सिद्धाणं य पंचगइसमासेणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा!

अंगुलमात्र क्षेत्रप्रदेश राशिना प्रथम वर्गमूलने बीजा वर्गमूले गुणते प्रदेशराशि थाय तेटला प्रमाण घन कीधा लोकनी एक प्रदेशनी श्रेणीना आकाशप्रदेशनी जेटला
ते नभप्रदेश तेटला प्रमाण छे, ते थकी देवता असंख्यातगुणा, व्यन्तरज्योतिषीनो प्रत्येक प्रतर असंख्येयभागवर्त्ति श्रेणिगत आकाश प्रदेशराशि छे ते प्रमाण छे, सिद्ध अनंतगु
णा अभव्यथी अनन्तगुणा ते माटे, तिर्यंचयोनिया अनन्तगुणा। वनस्पतीकाय अनन्तकाय ते माटे। एएसि णं भंते! नेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं
मणुस्सीणं देवाणं देवीणं सिद्धाणं य अट्ठगइसमासेणं कयरे २ हिंतो अप्पा वा ४। ए हे भगवन् ए नारकीने तिर्यंचने तिर्यंचणीने मनुष्यने मनुष्यणीने
देवने देवीने सिद्धने ए आठपद समासे करी मांहोमांहि कुण थकी २ थोडा अधिका। गोयमा! सव्वत्थोवाओ मणुस्सीओ मणुस्सा असंखिज्जगुणा नेरइ
या असंखिज्जगुणा। हे गौतम सर्वथी थोडी मनुष्यणी मनुष्यनी स्त्री संख्याती छे, ते थकी मनुष्य असंख्यातगुणा संमूर्छिम मनुष्य भेळा ते माटे, ते थकी
नारकी असंख्यातगुणा। तिरिक्खजोणिणीओ असंखिज्जगुणाओ देवा असंखिज्जगुणा देवीओ संखिज्जगुणाओ सि

वक्षोका मानुष्यो मनुष्यस्त्रिय सङ्ख्येयकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, ताभ्यो मनुष्या असङ्ख्येयगुणा इह मनुष्या सम्मूर्च्छनजा अपि गृह्यन्ते वेदस्या विव क्षयात तत्र सम्मूर्च्छनजा वान्तादिषु नगरनिर्द्धमनान्तेषु जायमाना असङ्ख्येयाः प्राप्यन्ते तेभ्यो नैरयिका असङ्ख्येयगुणा मनुष्या उत्कृष्टपदे ऽपि श्रे ण्यसङ्ख्येयभागगतप्रदेशराशिप्रमाणा लभ्यन्ते नैरयिकास्त्वङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशिसत्कद्वितीयवर्गमूलगुणितप्रथमवर्गमूलप्रमाणश्रेणिगताकाशप्रदेशरा शिप्रमाणा अतो भवन्त्यसङ्ख्येयगुणा तेभ्य स्तिर्यग्योनिका स्त्रियो ऽसङ्ख्येयगुणाः प्रतरासङ्ख्येयभागवर्त्यसङ्ख्येयश्रेणिगत प्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ताभ्या

सव्वत्थोवा मणुस्सा णेरइया असंखेज्जगुणा देवा असंखेज्जगुणा सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अन तगुणा । एएसि णं भंते ! णेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीणं मणुस्साणं मणुस्सीणं देवाणं सिद्धाणय अट्ठगतिसमासेणं कयरे कयरेहितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सीउ मणुस्सा असंखेज्जगुणा । णेरइया असंखेज्जगुणा तिरिक्खजोणीउ असंखेज्जगुणा

हा पण्णतमबा तिरिक्खाणिया अणंतगुणा द्वार २ । ते नारकीथी तिर्यच स्त्री असंख्यातगुणी प्रतर असंख्यातमाग वर्त्तसंख्याम श्रेणि नभप्रदेश राशिप्र माण ते तिर्यचणीथी देवता असंख्यातभाग वर्त्ति नभप्रदेश राशिप्रमाण ते देवताथी देवांगना संख्यातगुणी ३२ गुण ३२ रूप इति वचनात देवीथी सि द्धनोर अनंतगुणा ते सिद्धथी तिर्यचाणिया अनंतगुणा सूक्ष्मबादर निगोद भेदात् इति गतिद्वार संपूर्ण थयो हिवे इन्द्रियद्वार कहेछे—मूलपदे तो आहार । १ । एएसि णं भंते सइंदियाण । एज हेमभगवन् सेन्द्रिय । एगिंदियाण वा बिंदियाण तइं दियाण चउरिंदियाण पंचेन्द्रियाणं अणिंदियाण कयर २ हिंतो अप्पावा ४ । एकेन्द्रियने बेइन्द्रियने तेइन्द्रियने चौरिन्द्रियने पंचेन्द्रियने अनेन्द्रियने सिद्ध केहवा २ थी थोडा घणा छे । गोयमा सव्वत्थोवा पंचेंदिया । हेगौतम सर्व पंचेन्द्रिय संख्यातयोजन कोडाकोडी तेहथी । चउरिंदिया विसेसाहिया तेइंदिया विसेसाहिया बेइंदिया विसेसाहिया । जो ए क प्रदेशाधिक विष्कम्भ सूचीप्रमूत संख्यातयोजन कोडाकोडी प्रमाण तेइन्द्रियविशेषाधिक विष्कम्भ सूचीप्रमूत तर संख्यातयोजन कोडाकोडी प्रमाण तर

वि देवा असंख्येयगुणाः प्रतरासंख्येयभागवर्त्त्यसंख्येयश्रेणिगतप्रदेशराशिमानत्वात तेभ्यापि देव्यः संख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात् ताभ्योपि सि
द्धा अनन्तगुणा तेभ्योपि तिर्यग्योनिका अनन्तगुणा अत्र युक्ति प्रागेवोक्ता गत गतिद्वार मिदानी मिन्द्रियद्वार मभिधित्सुराह-एएसिणं भंते !
सइंदियाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका पञ्चेन्द्रियाः सरूपा दशयोजनकोटाकोटीप्रमाणविष्कम्भसूचीप्रतिप्रतरासंख्येयभागवर्त्त्यसंख्येयश्रेणिगताकाशप्रदे

ता । देवा असंखेज्जगुणा । देवीओ संखेज्जगुणाओ सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा दार २।
एएसिणं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं अणिंदियाणय
कयरे कयरेहितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया चउरि
दियाविसेसाहियातेइंदिया विसेसाहिया बेइंदिया विसेसाहिया अणिंदिया अणंतगुणा । एगिंदिया अ०
सइंदिया वि० । एएसिणं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदिया पंचिंदियाणं
अपज्जत्तगाणं कयरे कयरेहितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचि

शो द्वीन्द्रिय विशेषाधिक सूचीप्रमत असंख्यातमाचन आकाशनो प्रमाण । अनिंदिया अनंतगणा एगिंदिया अनंतगणा सइंदिया विसेसाहिया । तेह
थी अनेंद्रियसिद्ध अनन्तगुणा एकेंद्रिय अनन्तगणा वनस्पतिमांहि आसतेथकी तेहथी सेंद्रिय विशेषाधिक बेंद्रियमांहिथा । एएसिणंमते सइंदियाणं बेंइ
याणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणंअ अपज्जत्तगाणं कयरे २ हिंता अप्पावा ४ । भगवन् एह सेंद्रियने एकेंद्रियने बेइंद्रियने तेइंद्रियने चौरि
'द्रियन पंचेंद्रियने अपर्याप्तामांहि किहां २ थकी थोडा घणा । गोयमा सव्वत्थोवा पंचिंदिया अपज्जत्तगा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया तेइं
दिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया एगिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया । हेगौतम
सर्वथोडा पंचेंद्रिय अपर्याप्ता एकप्रतरे अंगुल असंख्यातमाभमाण खंड तेतलेप्रमाण तेहथी चउरिंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक प्रभूतपणुं

यस्तोका मानुष्यो मनुष्यस्त्रियः सप्तविंशतिकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, ताभ्यो मनुष्या असंख्येयगुणा इह मनुष्याः सम्मूर्छनजा अपि गृह्यन्ते ते हि वान्ता-
दिपु नगरनिर्द्धमनान्तेषु जायमाना असंख्येयाः प्राप्यन्ते ताभ्यो नैरयिका असंख्येयगुणा मनुष्या हि उत्कृष्टपदेऽपि श्रे
ण्यसंख्येयभागगतप्रदेशराशिप्रमाणा लभ्यन्ते नैरयिकास्त्वङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशिसत्कद्वितीयवर्गमूलगुणितप्रथमवर्गमूलप्रमाणश्रेणिगताकाशप्रदेशरा
शिप्रमाणाः ततो नैरयिकेभ्यो देवा असंख्येयगुणाः ताभ्यो तिर्यग्योनिका स्त्रियो ऽसंख्येयगुणाः प्रतरासंख्येयभागवर्त्यसंख्येयश्रेणिगत प्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ताभ्यो

सव्वत्थोवा मणुस्सा णेरइया असंखेज्जगुणा देवा असंखेज्जगुणा सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अणं
तगुणा । एएसि णं भंते ! णेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीणं मणुस्साणं मणुस्सीणं देवाणं
सिद्धाणय अट्ठगतिसमासेणं कयरे कयरेहितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा !
सव्वत्थोवा मणुस्सीउ मणुस्सा असंखेज्जगुणा । णेरइया असंखेज्जगुणा तिरिक्खजोणिणीउ असंखेज्जगुणा

[illegible] तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा द्वार २ । ते नारकीथी तिर्यंच स्त्री असंख्यातगणी प्रतर असंख्यातमा[illegible] असंख्यात श्रेणि नभप्रदेश राशिप्र
माण ते तिर्यंचणीथी देवता असंख्यातमाग वर्त्ति नभप्रदेश राशिप्रमाण ते देवताथी देवांगना संख्यातगणी ३२ गण ३२ रूप इति वचनात देवीथी सि
द्धोन अनंतगणा ते सिद्धथी तिर्यंचयोनिया अनंतगुणा सूक्ष्मबादर निगोद भेदात् इति गतिद्वार संपूर्ण हुवे, हिवे इन्द्रियद्वार कहेछे—सूत्रपदे तो
आहार । ३ । एएसि णं भंते ! सइंदियाणं । एग इंदियाणं सेन्द्रिय । एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचेन्दियाणं अणिंदियाणय कयर
२ हिंतो अप्पावा ३ । एकेंद्रियने बेइन्द्रियने तेइन्द्रियने चौरिन्द्रियने पंचेन्द्रियने अनेन्द्रियने सिद्धने विषे कया २ थी थोडा घणा बना । गोयमा सव्वत्थोवा
पंचेंदिया । ते थोडा सर्व पंचेंद्रिय असंख्याताकाश थोडाथोडा तेहथी । चउरिंदिया विसेसाहिया तेइंदियाविसेसाहिया बेइंदियाविसेसाहिया । चो र द्र
यविशेषाधिक [illegible] सूचीमूल असंख्यातयोजन थोडाथोडो प्रमाण तेइंद्रियविशेषाधिक [illegible] सूचीमूल तर असंख्यातयोजन थोडाथोडो प्रमाण तव

सवयवभागउत्कृष्टमात्रत्वात् तेभ्य एकेन्द्रिया अपर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानामपर्याप्तानामनन्ततया सदा प्राप्यमाणत्वात्' तेभ्योपि सन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका द्वीन्द्रियाद्यपर्याप्तानामपि तत्र प्रक्षेपात्। अत द्वितीयमल्पबहुत्वं मधुनैतेषामेव पर्याप्तानां अल्पबहुत्वमाह-ए एसिण भंते। सइंदियाणमित्यादि॥ सर्वस्तोका चतुरिन्द्रिया पर्याप्ता यतोस्याघुष चतुरिन्द्रिया स्तोका प्रभूतकालमवस्थानाभावात्, पृच्छासमये

पंचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! सइंदियाणं पज्जत्ताप ज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा सइंदिया अपज्जत्ता पज्जत्तगा सइंदिया सखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! एगिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरे हिंतो अप्पावा४ ?गोयमा! सव्वत्थोवा एगिंदिया पज्जत्तगा एगिंदिया अपज्जत्ता असं०। एएसिणं भंते!

था पचेंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया। हेगौतम सर्वथाकी चौरिंद्रिया पर्याप्ता तेहथी थाडा थाउथामांहि तेहथी पचेंद्रिय पर्याप्ता तेहथो विशेषाधिक प्रभूत प्रतर असंख्यात भागमात्र प्रदेशमात्र। बेइंद्रिय पज्जत्तगा विसेसाहिया तेइंद्रिय पज्जत्तगा विसेसाहिया एगिंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया अणंतगुणा सइंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया। बेइंद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक प्रभूततर प्रतर असंख्यात भागमात्र तेतला प्रमाण तेंद्रियपर्याप्ता विशेषाधिक एकेंद्रियपर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिपर्याप्ता अनन्तामाटे तेहथी सेंद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक बेइंद्रियपर्याप्तामांहि पामता। एएसिणं भंते सइंदियाणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह सेंद्रियने पर्याप्ता अपर्याप्ताने विषे २ कवो थाडा इत्यादि ४॥ गोयमा सव्वत्थोवा सइंदिया अपज्जत्तगा सइंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। हेगौतम सर्वथाकी सेंद्रिय अपर्याप्ता एहो सेंद्रियमांहि एकेंद्रिय घाले सूक्ष्म पर्याप्ता सेंद्रिय संख्यातगुणा हुइ। एएसिणंभंते एगिंदियाणं पज्जत्त अपज्जत्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह एकेंद्रियने पर्याप्ता अपर्याप्ता

ङ्गुलासंख्येयभागप्रमाणत्वात्, तेभ्य चतुरिन्द्रिया विशेषाधिका विष्कम्भसूच्याः सेषा प्रभूतसंख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेभ्योपि त्रीन्द्रिया विशेषाधिका सेषा विष्कम्भसूच्याः प्रभूततरसंख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेभ्योपि द्वीन्द्रिया विशेषाधिका तयो विष्कम्भसूच्याः प्रभूततरसंख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेभ्यो ऽनीन्द्रिया अनन्तगुणाः सिद्धानां अनन्तत्वात्, तेभ्योपि एकेन्द्रिया अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानां सिद्धेभ्यो प्यनन्तगुणत्वात् तेभ्योपि सेन्द्रिया विशेषाधिका द्वीन्द्रिया दीनामपि तत्र प्रक्षेपात्, तदेवमुक्त मपर्याप्तकानां मल्पबहुत्व मिदानीं मेतेषा मेव पर्याप्तानां द्वितीयमल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते। सइंदियाणं मित्यादि॥ सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्ता एकस्मिन्प्रतरे यावन्त्यङ्गुलासंख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वात्, तथा तेभ्य चतुरिन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिकाः प्रभूताङ्गुलासंख्येयभागखण्डप्रमाणत्वात्, तेभ्यो त्रीन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिकाः प्रभूततरप्रतराङ्गुलासंख्येयभागखण्डमानत्वात्, तेभ्योपि द्वीन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिकाः प्रभूततमाङ्गुला

दिया अपज्जत्तगा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया। एए सिणं भंते! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा पज्जत्तगा चउरिंदिया

असंख्यातमा भाग तेटला प्रमाण तेथकी तेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक प्रभूतप्रतर असंख्यात भागमात्र खंडप्रमाण तेथकी बेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषा धिकप्रभूतप्रतर असंख्यातभाग खंडप्रमाण एकेंद्रिय अपर्याप्ता अनंतगुणा सदा अनंता पामिये तेथकी अपर्याप्ता विशेषाधिक सेंद्रिय अपर्याप्तामां हि वासता। एएसिणंभंते सइंदियाणं। हेभगवन् एह सेंद्रियने। एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचेंदियाण पज्जत्तगाणं कयरे २ हिं तो अप्पावा ४। एकेंद्रियने बेइंद्रियने तेइंद्रियने चौरिंद्रियने पंचेंद्रियने पर्याप्ताने किशो २ थकी अल्पबहुत्व ४। गोयमा सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्त

सकयपनामत्वत्पप्रमाणत्वात्, तेभ्य एकेन्द्रिया अपर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानामपर्याप्तानां अनन्ततया सदा प्राप्यमाणत्वात्। तेभ्योऽपि सइन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका द्वीन्द्रियाद्यपर्याप्तानामपि तत्र प्रक्षेपात्, गत द्वितीयमल्पबहुत्वं अधुनैतेषामेव पर्याप्तानां मल्पबहुत्वमाह–ए पत्रिय भन्ते। सइन्दियाणमित्यादि ० सर्वस्तोका चतुरिन्द्रिया पर्याप्ता यतोऽल्पायुष चतुरिन्द्रिया स्तक प्रभूतकालमवस्थानाभावात्, पृच्छासमये

पचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया। एएसिणं भंते! सइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा सइंदिया अपज्जत्ता पज्जत्तगा सइंदिया संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! एगिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा एगिंदिया पज्जत्तगा एगिंदिया अपज्जत्ता असं०। एएसिणं भंते!

मा पचेंद्रिय पज्जत्तगा विसेसाहिया। हेगोतम सर्वथी थोडा चोरिंद्रिया पर्याप्ता जेमणी थोडा आउखामांहि तेहथी पचेंद्रिय पर्याप्ता जेमणी विशेषाधिक प्रभूत अंगुल असंख्यात भागमात्र प्रतरमात्र। तेइंदियपज्जत्तगा विसेसाहिया बेइंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया एगिंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया अण तगुणा सइंदियपज्जत्तगा विसेसाहिया। तेइंद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक प्रभूततर अंगुल असंख्यात भागमात्र तेतला प्रमाण तेइंद्रियपर्याप्ता विशेषा धिक एकेंद्रियपर्याप्ता अनंतगुणा वनस्पतिपर्याप्ता अनंतामाटे तेहथी सेंद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक बेइंद्रियपर्याप्तामांहि घालता। एएसिणं भंते सइं दियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह सेंद्रियने पर्याप्ता अपर्याप्ताने विषे २ कोण थोडा इत्यादि ४। गोयमा सव्वत्थोवा सइंदिया अपज्जत्तगा सइंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। हेगोतम सर्वथी थोडा सेंद्रिय अपर्याप्ता तेथी सेंद्रियमांहि एकेंद्रिय घाले सूक्ष्म पर्याप्ता सेंद्रिय संख्यातगुणा हुव। एएसिणंभंते एगिंदियाणं पज्जत्त अपज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह एकेंद्रियने पर्याप्ता अपर्याप्ता

शराशिप्रमाणत्वात्, तेभ्य चतुरिन्द्रिया विशेषाधिका विष्कम्भसूच्या सेषा प्रभूततरयोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेभ्योऽपि त्रीन्द्रिया विशेषाधिका यतो विष्कम्भसूच्याः प्रभूततरसङ्ख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेभ्योऽपि द्वीन्द्रिया विशेषाधिका यतो विष्कम्भसूच्याः प्रभूततरसङ्ख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेभ्यो ऽनीन्द्रिया अनन्तगुणाः सिद्धानामनन्तत्वात्, तेभ्योऽपि एकेन्द्रिया अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानां सिद्धेभ्यो ऽनन्तगुणत्वात् तेभ्योऽपि सेन्द्रिया विशेषाधिका द्वीन्द्रियादीनामपि तत्र प्रक्षेपात्, तदेवमुक्तं सेकमौघिकानामल्पबहुत्वमिदानीमेतेषामेवापर्याप्तानां द्वितीयमल्पबहुत्वमाह-एएसि णं भंते ! सइंदियाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्ता एकस्मिन्प्रतरे यावन्त्यङ्गुलासङ्ख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वात्, तथा तेभ्य चतुरिन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिकाः प्रभूताङ्गुलासङ्ख्येयभागखण्डप्रमाणत्वात्, तेभ्य त्रीन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिकाः प्रभूततरप्रतराङ्गुलासङ्ख्येयभागखण्डमानत्वात्, तेभ्योऽपि द्वीन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिकाः प्रभूततमाङ्गुला

दिया अपज्जत्तगा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया। एएसि णं भंते! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं कयरे कयरेहितो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा पज्जत्तगा चउरिंदिया

असङ्ख्यातमाग खण्ड जितने प्रमाण तेथकी तेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक प्रभूतप्रतर असङ्ख्यात भागमात्र खण्डप्रमाण तेथकी बेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषा धिकप्रभूततर असङ्ख्यातभाग खण्डप्रमाण एकेंद्रिय अपर्याप्ता अनन्तगुणा सदा अनन्ता पामिये तेथकी अपर्याप्ता विशेषाधिक बाकू अपर्याप्तामां हि चाकता। एएसि णं भंते सइंदियाण। हेभगवन् एह सेंद्रियने। एगिंदियाण बेइंदियाण तेइंदियाण चउरिंदियाणं पचेंदियाण पज्जत्ताण कयरे २ हि तो अप्पावा ४। एकेंद्रियने बेइंद्रियने तेइंद्रियने चौरिंद्रियने पचेंद्रियने पर्याप्ताने किसो २ थकी अल्पबहुत्व ४। गोयमा। सव्वत्थोवा चउरिंदिय। पज्जत्त

सवयेयभागउक्तप्रमाणत्वात्, तेभ्य एकेन्द्रिया अपर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानामपर्याप्तानां अनन्ततया सदा प्राप्यमाणत्वात्' तेभ्योपि सेन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका द्वीन्द्रियाद्यपर्याप्तानामपि तत्र प्रक्षेपात्, अत द्वितीयमल्पबहुत्व मधुनैतेषामेव पर्याप्तानां मल्पबहुत्वमाह-एविंम भंते । सइंदियाणमित्यादि ० सवस्तोका चतुरिन्द्रिया पर्याप्ता यतोल्पायुष चतुरिन्द्रिया ततः प्रभूतकालमवस्थानाभावात्, पृच्छासमये

पंचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिंण भंते ! सइंदियाणं पज्जत्ताप ज्जत्तगाण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सइंदिया अपज्जत्ता पज्जत्तगा सइंदिया सखेज्जगुणा । एएसिंण भंते ! एगिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरे हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया पज्जत्तगा एगिंदिया अपज्जत्ता असं० । एएसिंण भंते !

बा पंचेंद्रिय पज्जत्तगा विसेसाहिया । हेगौतम सवथाडा चोरिंद्रिया पर्याप्ता तेमथी बाडा पाउस्थामांहि तेहथी पचेंद्रिय पर्याप्ता तेमथी विशेषाधिक प्रभूत पगुल पसंख्यात भागमात्र प्रक्तरमात्र । बेइंद्रियपज्जत्तगा विससाहिया तेइंद्रिय पज्जत्तगा विसेसाहिया एगिंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया पच तगणा मइंद्रियपज्जत्तगा विसेसाहिया । बेइंद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक प्रभूततर पगल प्रसंख्यात भागमात्रखड तेतला प्रमाण तेंद्रियपर्याप्ता विशेषाधिक एकेंद्रियपर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिपर्याप्ता अनन्तामाटे तेहथी सेंद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक बेइंद्रियपर्याप्तामांहि घालता । एएसिंणं भंते सइंदियाण पज्जत्ताण पपज्जत्ताणय कयरे २ हिंता अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सेंद्रियने पर्याप्ता अपर्याप्ताने विषे २ कुण थोडा बहुआदि ४ । गोयमा सव्वत्थोवा सइंदिया अपज्जत्तगा सइंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथाडा सेंद्रिय अपर्याप्ता तेथी सेंद्रियमांहि एकेंद्रिय घाले सूक्ष्म पर्याप्ता सेंद्रिय असंख्यातगुणा हुए । एएसिंणभंते एगिंदियाण पज्जत्त अपज्जत्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह एकेंद्रियने पर्याप्ता अपर्याप्ता

स्तोका अपि प्रतरे यावन्त्यङ्गुलसङ्ख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणा वेदितव्या तेभ्यः पञ्चेन्द्रियपर्याप्ता विशेषाधिकाः प्रभूताङ्गुलसङ्ख्येयभागखण्डमानत्वात् तेभ्योऽपि द्वीन्द्रियाः पर्याप्ता विशेषाधिका प्रभूततरप्रतराङ्गुलसङ्ख्येयभागखण्डमानत्वात तेभ्योऽपि त्रीन्द्रियाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः स्वभावत एव तेषां प्रभूततमप्रतराङ्गुलसङ्ख्येयभागखण्डप्रमाणत्वात् तेभ्य एकेन्द्रियाः पर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानां पर्याप्ता ना ममनन्तत्वात् तेभ्य सेन्द्रियाः पर्याप्ता विशेषाधिका द्वीन्द्रियादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् गतं तृतीयमल्पबहुत्व–सम्प्रत्येतेषामेव से न्द्रियाणां प्रत्येकपर्याप्ताऽपर्याप्तगताल्पबहुत्वान्याह–एएसिणं भंते । इत्यादि सर्वस्तोकाः सेन्द्रिया अपर्याप्तका इह सेन्द्रिया एव यद्यपि

बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा बेइंदिया अपज्जत्ता बेइंदिया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते । तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा तेइंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदियापज्जत्त गा चउरिंदिया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! पचेंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो

[illegible] विशेषको थोड़ा घणां सरीखा विशेषाधिक हुवे ४ । गोयमा सर्वस्तोका एगिंदिय अपज्जत्तगा पज्जत्तगा संख्यातगुणा । हे गौतम सर्वथोड़ा पचें द्रिय पर्याप्ता बादर सूक्ष्मपर्याप्ता घणांहुवे पचेंद्रिय पर्याप्ता संख्यातगुणा छै। एएसिणं भंते पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह बेइन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताने विषे २ कवण थोड़ा घ णा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बेइ दिया पज्जत्तगा बेंदिया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हे गौतम सर्वथोड़ा बेइन्द्रिय पर्याप्ता जेतला प्रतरना अंगुल संख्यातप्रमाण तेतला बेइन्द्रिय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा असंख्यात प्रतरभाग । एएसिणं भं ते तेइंदियाणं पज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह तेन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताने विषे २ कौ थोड़ा घणां सरीखा विशेषाधिक हुवे ।

मूला सर्वा मयलोकापमत्यात सूक्ष्मापर्याप्ताः मवलोकाः पर्याप्ताः संख्येयगुणा इति सेन्द्रिया अपर्याप्ताः सवलोकाः पर्याप्ताः सवयेयगुणाः एव मेवेन्द्रिया अप्पपयासा सवलोका पर्याप्ताः सख्ययगुणा भावनीया, तथा सवलोकाद्वीन्द्रियाः पर्याप्ता यावन्ति प्रतर ऽगुलस्य असख्ययतमा

ञ्प्पाया८ ? गोयमा । सव्वत्योवा पचिदिया पज्जत्तगा पचिदिया ञ्पज्जत्तगा ञ्प्रसखेज्जगुणा । एएसिण न्तत। सइदियाण एगिंदियाण वेइदियाण तइदियाण चउरिंदियाण पचिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे २ हितो ञ्प्पाया८ ? गोयमा । सव्वत्योवा चउरिंदिया पज्जत्तगा पचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वेइ दिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, पचिंदिया ञ्पज्जत्तगा ञ्प्रसखेज्जगुणा

गायमा सव्वत्थोवा तेंदिया पज्जत्ता २ असखेज्जगुणा । हेगौतम सबथोडा तेंद्रियपर्याप्ता जेतला प्रतरना अगुल सख्यात भागप्रमाण तेंद्रियपर्याप्ता अ सख्यातगुणा एव प्रतरगत असख्यातगुणा एव । एएसिण भंते चउरिंदिया प पज्जत्ता २ कय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह चौरिंद्रिय से प र्याप्ता अपर्याप्ता मिर्हि २ कवो थोडा घणा बिय ४ । गोयमा सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा असखिज्जगुणा । हेगौतम सबथोडा चउरिंद्रिय पर्याप्ता जेतला प्रतरना अगुल असख्यात भागप्रमाण प्रतरगत अगुल २ असख्यातभाग प्रमाण । एएसिण भंते पचिंदियाण पज्जत्ता २ कय कयरे २ हिं तो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताने मिर्हि २ कवो थोडा घणा विशेषाधिक हवे । गोयमा सव्वत्थोवा पचेंदिया पज्जत्तगा पचि दिया अपज्जत्तगा असखिज्जगुणा । हेगौतम सबथोडा पचेंद्रिय पर्याप्ता प्रतरांगुल सख्यातभाग प्रमाण पचेंद्रिय अपर्याप्त असख्यातगुणा प्रतरग त असख्यातप्रमाण । एएसिण भंते सइंदियाण एगिंदियाण बेइंदियाण तेइंदियाण चउरिंदियाण पचेंदियाण पज्जत्ता२ कय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ । भगवन् एह सेंद्रिय एके न्द्रिय बेंद्रिय तेइन्द्रिय चउरिंद्रियने पचेंद्रियने पर्याप्ता अपर्याप्ताने मिर्हि२ को थोडा घणा हवे । गायमा सव्वत्थोवा चउ रिंदिया पज्जत्तगा पचेंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया तेइंदियपज्जत्तगा विसेसाहिया बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया । हेगौतम सबथोडा चौरिंद्रिय

गमाशाथि ग्रहनामि तावाप्रमाबस्था सपा तम्यो ऽपयाप्ता पयस्येगुथा प्रतरगताङ्गुलासङ्ख्येयभागखण्डमात्रस्या देव ग्रिचतुरिन्द्रियाप्ययाप्त्यापि वक्तव्यानि, यतं पञ्चस्थयाङ्गुस्यत्वास्तव चतुपमस्यमुस्थ सम्प्रत्यतपा सम्इन्द्रियादीना समुदितामा पयाप्तापयाप्तामामल्पबहुत्वमाह-मएसिस सत । इत्यादि ॥ इह प्रागुक्तद्वितीयतृतीयाल्पबहुत्वभावमानुसारिषः स्वयं भावनीय सत्वतो प्राविलत्वात् गत मिन्द्रियद्वार मिदानीं कायद्वार मपि त्याह पयमिक सत । सबाइयाव मित्यादि ॥ सवस्तोका त्रसकायिका द्वीन्द्रियादीनामव त्रसकायिकत्वात् तयाव प्रापकायापेक्षया प्रत्यस्प

चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसे साहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सइंदिया विसेसाहिया दार ३ । एएसिणं भंते ! सकाइ याण पुढविकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण अकाइ

पत्ताता भावना पाबसापरे तेहथो पंचेंद्रिय पर्याप्ताविशेषाधिक जाणिया तेहथा तेन्द्रियपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी बेइंद्रिया पर्याप्ता विशेषाधिक । पचेंद्रिया अपजत्तगा असंख्यगुणा चउरिंद्रिया अपजत्तगा वि तेइंद्रिया अपजत्तगा वि बेइंद्रिया अपजत्तगा वि एगिंद्रिया अपजत्तगा अ । सइंद्रिया अपजत्तगा वि । तेहथी पचेंद्रिय अपर्याप्ता असंख्यातगणा तेहथी चौरिंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी तेन्द्रिय अपर्याप्ता विशेषा धिक तेहथा बेइंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथो एकेंद्रिय अनन्तगणा तेहथी सइंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक । एगिंदिया पज्जत्तगा संखिज्जगु णा सइंदिया पज्जत्तगा वि दार ॥ ३ ॥ तेहथी एकेंद्रियपर्याप्ता संख्यातगणा तेहथी सेन्द्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक जाणवा इति त्रतोयदार ताजे पदे तामराहार सपूर्णथा । एएसिणंभंते सकाइयाणं पुढवीकाइयाणं आउका तेउका वाउका वणस्सइ का तसका अकाइयाण कयरे २ किंता अप्पावा ३ । हेभगवन् कायद्वारकहो छ सकायने पृथ्वीकायने अपकायने तेउकायने वाउकायने वनस्पतीकायने त्रसकायने अकायने एकमांथि कि

स्यात् तेभ्यः तेजस्कायिका असंख्येयगुणा असंख्येयलोकाकाशप्रमाणत्वात् तेभ्यः पृथिवीकायिका विशेषाधिकाः प्रभूतासंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् तेभ्योऽप्कायिका विशेषाधिकाः प्रभूततरासंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् तेभ्यो वायुकायिका विशेषाधिकाः प्रभूततमासंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् तेभ्योऽकायिका अनन्तगुणाः सिद्धानामनन्तत्वात् तेभ्यो वनस्पतिकायिका अनन्तगुणा अनन्तलोकाकाशप्रदेशराशिमानत्वात् तेभ्यः सकायिका विशेषाधिकाः पृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् उक्तमौघिकानामल्पबहुत्व मिदानीमेतेषामेवापर्याप्तानां द्वितीयमल्पबहुत्वमाह-एएसि णं भंते! सकाइयाणमित्यादि ॥ सुगमं सम्प्रत्येतेषामेव पर्याप्तानां तृतीयमल्पबहुत्वमाह-एएसि णं भंते! सकाइयाणमित्यादि ॥

याणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा तसकाइया तेउकाइया असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया, अकाइया अणंतगुणा, वणस्सइकाइया अणंतगुणा, सकाइया विसेसाहिया ॥ एएसि णं भंते! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाण य अपज्जत्तगाणं कयरे कय

वा २ थको थोडा इत्यादि ४। गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया तेउकाइया असंखिज्जगुणा। हे गौतम सर्वथी थोडा त्रसकाया भावना पाछलीपरे तेहथी असंख्यातगुणा। पुढवीकाइया वि आउकाइया वि वाउकाइयावि अकाइया अण वणस्सइकाइया अण सकाइया वि। तेहथी पृथिवीकायिक विशेषाधिक प्रभूत असंख्यात लोकाकाश प्रमाण तेहथी आउकाय वि प्रभूततमस [illegible] लोकाकाश तेहथी अकाइया अणंतगुणा सिद्धा अणो तथा वणस्स तीकाय अनन्तगुणा अनन्तलोकाकाश प्रमाण तेहथी सकाइय विशेषाधिक पृथ्वीकायादिमांहि [illegible] । एएसि णं भंते सकाइयाणं पुढवीकाइयाणं आउ तेउ वाउ वणस्सइ तसकाय अपज्जत्तगाण य कयरे २ हिंतो अप्पा वा ४। हे भगवन् एह सकायाने पृथ्वीकायने अपकाय तेउ वा [illegible] वनस्पति [illegible] अपर्याप्ताने विषे [illegible] २ थको थोडा घणा विशेषाधिक ४। गोयमा सव्वथोवा तसकाइया अपज्जत्तगा तेउकाइया अपज्जत्तगा अ

रेहितो ख्रुप्पाद्याए ? गोयमा ! सव्वत्योवा तसकाइया ख्रुपज्जत्तगा, तेउकाइया ख्रुपज्जत्तगा ख्रुसखेज्जगुणा, पुढविकाइया ख्रुपज्जत्तगा विसेसाहिया, ख्राउकाइया ख्रुपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया ख्रुपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया ख्रुपज्जत्तगा ख्रुणतगुणा। सकाइया ख्रुपज्जत्तगा विसेसाहिया एएसिण न्नते ! सकाइयाण पुढविकाइयाण ख्राउकाइयाण तउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय पज्जत्तगाण कयरे कयरेहितो ख्रुप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा तसकाइया पज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा ख्रुसखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया। ख्राउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पज्जत्ता ख्रुणतगुणा, सकाइया पज्जत्ता

ाधिकमथा। हेयौतम सबयोवाका बसंकारया मपमापुता तेहथी तेवकाय मपर्यापुता असख्यातगुणा। पुढवीकाइया अपज्जत्तगा वि माउकाइया रपज्जत्तगा वि वाउकाइया अपज्जत्तगा वि वनस्पतिकाइया अपज्जत्तगा अनतगुणा। तेहथी पृथ्विकायना अपर्यापुता विशेषाधिक तेहथी अपुका या अपर्यापुता विशेषाधिक तेहथी वाउकायना अपर्यापुता विशेषाधिक तेहथी वनस्पतिकायना अपर्यापुता अनन्तगुणा। सकाइया अपज्जत्तगा विसे ाहिया वाउकाइया अपज्जत्तगा वि। तेहथी सकाइया अपर्यापुता विशेषाधिक तेहथी वाउकाय अपर्यापुता विशेषाधिक। एएसिण भंते सकाइया पढवीकाइयाणं आउ तेउ वाउ वणस्स तसकाइया पज्जत्तगाणय कयरे २ हिता अप्पावा ४। हेभगवन् ए सकायने पृथ्वीकाइयाने अपुका तेउ वा वनस्पती त्रस पर्याप्ताने विषे २ का थोडा बहुवा ब ४। गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा वि तेउकाइया पज्जत्तगा वि असं। हेयौतम सर्वथी त्रसकाय पर्यापुता तेहथी तेउकाय पर्यापता वि असंख्यातगुणा। पुढवीकाइया पज्जत्तगा वि आउकाइया पज्जत्तगा वि वाउ काइया अपज्जत्तगा वि वनस्पतिकाइया पज्जत्तगा अण। पृथ्वीकाइया पर्याप्ता वि अपुकाइया पर्याप्ता वि वायुकाय पर्याप्ताविशेष तेहथी व

सुगमं साम्प्रतमेतेषामेव सकायिकादीनां प्रत्येकं पर्याप्ताऽपर्याप्तगतमल्पबहुत्वमाह-एएसि णं भंते ! सकाइयाणं पज्जत्ताऽपज्जत्ताणमित्यादि ॥ सुगमम्, सम्प्रत्येतेषामेव सकायिकादीनां समुदितानां पर्याप्ताऽपर्याप्तानामल्पबहुत्वं पञ्चममाह-एएसिं णं भंते ! सकाइयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तो

विसेसाहिया । एएसि णं भंते ! सकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सकाइया अपज्जत्तगा, सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तगा, पुढविकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसि णं भंते ! आउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा आउकाइया अप

मप्काय पर्याप्ता असंख्यगुणे । सकायिक पर्याप्ता वि । तेसें सकायिक पर्याप्ता विशेषाधिक । एएसि णं भंते सकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । भगवन् एक सकायिक पर्याप्ता अपर्याप्तामें किसर २ से थोडा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा सकाइया अपज्जत्तगा सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । हे गौतम सबसे थोडा सकायिक अपर्याप्ता तेसें सकायिक पर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसि णं भंते पुढवीकाइयाणं पज्जत्ता २ कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हे भगवन् एक पृथ्वीकायिकके पर्याप्ता अपर्याप्तामें कौन २ से थोडा कौन विशेषाधिक हुवे । गोयमा सव्वत्थोवा पुढवीकाइया अपज्जत्तगा पुढवीकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । हे गौतम सबसे थोडा पृथ्वीकाय अपर्याप्ता पृथ्वीकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसि णं भंते आउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हे भगवन् एक अपकायके पर्याप्ता कितनो थोडा कौन उनोंसे विशेषाधिक । गोयमा सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तगा आउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । हे गौतम सबसें थोडा अपकाय अपर्याप्ता अपकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसि णं भंते तेउकाइयाणं पज्जत्ता २ कयरे २ हिंतो अप्पावा । हे भगवन् एक तेउकायके पर्याप्ता अपर्याप्तामें कितनो थोडा कौन ४

रोहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा। सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणय पज्जत्तगाणं कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया। आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पज्जत्ता अणंतगुणा, सकाइया पज्जत्ता

धिकागका। सर्वेतम सबवोबाढा चसबारया चपबापुता तेबयो तेवबाय चपर्यापुता असंख्यातगुणा। पुढवोकारया चपज्जतगा वि चाउकारया चपज्जतगा वि वाउकारया चपज्जतगा वि वनस्परकारया चपज्जतमा चनतगुणा। तेबयो पृथिवाकारया चपर्यापुता विशेषाधिक तेबयो चपुकारया चपर्यापुता विशेषाधिक तेबयो वाउकारया चपर्यापुता विशेषाधिक तेबयो वनस्पतीकारया चपर्यापुता चनन्तगुणा। सकारया चपज्जतगा विसेसाहिया वाउकारया चपज्जतगा वि। तबयो सबारया चपर्यापुता विशेषाधिक तेबयो वाउकाय चपर्यापुता विशेषाधिक। एएसिणं भंते सुकारया च पढवोकारयाणं चाउ तेउ वाउ वणस्स तसका पज्जतगाणय कयरे २ हिता चपपावा ४ हे भगवन् ए सकायने पृथ्वीकारयाने चपुका तेउ वा उ वनस्पती चस पर्यापुताने किवा २ वो बाढा चबवा चपा हिबे ४। गोयमा सव्वत्थोवा तसकारया पज्जत्तगा वि तेउकारया पज्जत्तगा वि चसं। हे गौतम सबवाढा चसबाय पर्यापुता तेबयो तेवकाय पर्यापुता वि चसंख्यातगुणा। पढवोकारया पज्जतगा वि चाउकारया पज्जतगा वि वाउकारया चपज्जतगा वि वनस्परकारया पज्जतमा चच। पृथ्वीकारया पर्यापुता वि चपुकारया पर्यापुता वि वाउकाय पर्यापुताविशेष तेबयी व

विज्ञाधिका १० । ततो वनस्पतयो ऽपर्याप्ता अनन्तगुणाः ११ । पर्याप्ताः सङ्ख्येयगुणाः १२ । तदेव कायद्वारे सामान्येन पञ्चसूत्राणि प्रतिपादिता नि सम्प्रत्यस्मिन्नेव द्वारे सूक्ष्मबादरादिभेदेन पञ्चदशसूत्राण्याह-एएसि णं भंते ! सुहुमाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्त

त्तगा सखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! तसकाइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्ज० । एएसि णं भंते ! सकाइयाण पुढविकाइयाण आउकाइयाण तउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गो० ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, तउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा, पुढवि

असंख्यातगुणा । एएसि णं भंते सकायिक पृथ्वीकायिक आउ तेउ वाउ वणस्सइ त्रसकायिक पर्याप्ता २ अप कयरे २ हिंतो अप्पा वा ४ । हे भगवन् एह सकायिक पृथ्वीकायिक अप्कायिक तेउकायिक वायुकायिक वनस्पतिकाय त्रसकायिक पर्या अप किसी २ थी थोड़ा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा तसकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हे गौतम सर्वथी थोड़ा त्रसकायिया पर्याप्ता त्रसकायिया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । तेहथी तेउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । पुढवीकाइया अपज्जत्तगा वि आउका अप वि वाउका अप वि तेउका अप संखेज्जगुणा । तेहथी पृथ्वीकायिक अपर्याप्त विशेषाधिक तेहथी अप्कायिक अपर्याप्ता विशेषाधिक वायुकायिक अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी तेउकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा । पुढवीकाइयाणं पज्जत्तगा वि आउकाइया पज्जत्तगा वि वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अनंतगुणा । पृथ्वीकाय पर्याप्ता विशेषाधिक अप्काय पर्याप्ता विशेषाधिक वायुकाय पर्याप्ता विशेषाधिक वनस्पतीकाय पर्याप्ता

या गमभ्रापिका: ९ । पयाप्तका स्तोच्य खसकायिका एभ्रा ऽपर्याप्तका असङ्ख्येयगुणाः द्वीन्द्रियादीनामपर्याप्तानां पर्याप्तद्वीन्द्रियादिभ्यो ऽसङ्ख्येयगु णत्वात २। तत खसस्कायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणाः असङ्ख्यलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् ३ । ततः पृथिव्यप्वायवो ऽपर्याप्ताः क्रमश विशे षाधिकाः ६। तत सासस्कायिका पर्याप्तका सङ्ख्येयगुणाः सूक्ष्मापर्याप्तेभ्यः पर्याप्तानां सङ्ख्येयगुणत्वात् ७। ततः पृथिव्यप्वायवः पर्याप्ता क्रमश

ज्ञत्तगा, श्राउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिण नंते ! तेउक्काइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो श्रप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा तेउकाइया श्रपज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा एएसिण नंते ! वाउकाइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण कयर कयरेहिंतो श्रप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वाउ काइया श्रपज्जत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिण नंते ! वणस्सइकाइयाण पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहिंतो श्रप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया श्रपज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पज्ज

त्यादि। गायमा सवत्याश तउकाया अप तेउका॰ पज्ज संखिज्जगुणा । हमीतम सबसे थाडा तेउकायका अपर्याप्ता तेउकायया पर्याप्ता संख्यात गुणा । एएसिण भंत वाउकाइयाण पज्जत्ता २ पय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह वाउकायने पर्याप्ता अपर्याप्ताने विषे २ को थाडा एहो इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा तेउकाइया अप वाउका पज्ज संखिज्जगुणा । हेगोतम सबसे थाडा तेउकायका अप वाउकायका पर्याप्ता संखि ज्जगुणा । एएसिण भंत वणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ कय कयरे२ हिंतो अप्पा ४ । हेभगवन् एह वनस्पतीकायने पर्या अप ने विषे २ को थाडा एह इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अप वणस्सइकाइया पज्ज संखिज्जगुणा । हेगोतम सबसे थाडा वनस्पतीकायिक पर्या॰ वनस्पतीकायिक अपर्या संख्यातगुणा । एएसिण भंते तसकाइयाण पज्जत्ता २ कय कयरे२ हिंता अप्पावा ४ । हेभगवन् एह त्रसकाय पर्या अप विषे २ को थाडा एहो इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा तसकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हेगोतम सबसे थाडा त्रसकायका पर्या त्रसकाय अप

सर्वलोकापन्ना: तत्र प्रतिगालकमसङ्ख्यया इति सूक्ष्मवायुकायिकेभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणा: , तेभ्य: सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा: प्रतिनिगोदमनन्तानां भावात् , तेभ्य: सामान्यत: सूक्ष्मजीवा विशेषाधिका: सूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् गतमौघिकानां मिद मल्पबहुत्व मिदानी मतया मेवा ऽपर्याप्तानामाह-एयसि णं भंते । सुहुमअपज्जत्तगाणमित्यादि सर्वंप्रागुक्त ज्ञातव्यं सम्प्रत्येतेषामेव पर्याप्तानां तृतीयमल्पबहुत्वमाह-एएसि णं भंते । सुहुमपज्जत्तगाणमित्यादि ॥ इदमपि प्रागुक्तक्रमेणैव भावनीय अधुना समीपामेव सूक्ष्मादीनां प्रत्येकं पर्याप्तगतानि अल्पबहुत्वान्या

विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अणंतगुणा, सुहुमा विसेसाहिया । एएसि णं भंते ! सुहुमअपज्जत्तगाणं सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगाणं सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगाणं सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगाणं सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगाणं सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं सुहुमनिगोदा अपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउका

तगुणा सुहुमा वि । तेऊ बो सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा सूक्ष्म सव पृथिव्यादि वि । एएसि भंते सुहुम अपज्जत्तगाण सुहुमपुढवीकाइया अपज्जत्तगाणं सुहुम आउकाइया अपज्जत्तगाण सुहुम तेउकाइय अप सुहुमवाउकाइय अप सुहुम वणस्सइकाइय अप सुहुमनिगोय अपज्जत्तगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सूक्ष्म अपर्याप्ताने सू पृथ्वीकाय अप० सू अपकाय अप० सू० तेउकाय अप सू० वाउकाय अप० सू वनस्पतीकाय अप सू निगोद अप० किसी २ थी थोड़ा घणेरा विशेषाधिक हुवे। गोयमा सव्वथोवा सुहुम तेउकाइया अप स पुढवीकाइया अप वि स आउका अप वि० सु० वाउका वि सु० निगोदा अप अस स० वणस्स अप० अणंत सु अपज्जत्तगा वि० । हे गौतम सबथोड़ा सूक्ष्म तेउकाय अप सू पृथ्वीकाय अप वि० सू अपकाय अप० वि० सू वायुकाय अप० वि० सू निगोद अप० असंख्यातगुणा सू० वनस्पतीकाय अप

सोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् तेभ्यः सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः प्रभूततासंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् तेभ्यः सूक्ष्माप्कायिकाः, प्रभूततरासंख्येयलोकाकाशमानत्वात् २। तेभ्यः सूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकाः प्रभूततमासंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिमानत्वात्, तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदा असंख्येयगुणाः (प्रमाण १०००) सूक्ष्मपदं बादरव्यवच्छेदाय द्विविधाहि-निगोदाः सूक्ष्मा बादराश्च तत्र बादरा सूरणकन्दादिषु सूक्ष्माः

काइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, अपज्जत्तगा वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा सकाइया विसेसाहिया, एएसिणं भंते! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमणिगोयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया, सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया सुहुमआउकाइया

पर्याप्तकाः। सकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिकाः अपर्याप्तकायिका पर्याप्तका संख्येयगुणाः। सकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिक वनस्पतिकायिका पर्याप्ता संख्यातगुणाः। सकायिका पर्याप्तका विशेषाधिकाः। सकायिका पर्याप्ता विशेषाधिक। पञ्चसूत्रविसामान्येन प्रतिपादितानि पञ्चसूक्ष्मबादरादिभेदेन पञ्चदशसूत्राणि। ए पांचसूत्र सामान्यपणे कायना आगारे कह्या, हिवे सूक्ष्मबादर भेदकरी १५ सूत्र कहे छे—एएसिणंभंते सूक्ष्मार्ण सुहुमपुढवीकाइया सूक्ष्मआउकायाप सूक्ष्म तेउ सुहुमवाउ सूक्ष्म वनस्प- सुहुमनिगोयाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एहवे सूक्ष्मपृथ्वीकायने सूक्ष्मपाणी-पण सूक्ष्मतेउकायने सूक्ष्मवायुकायने सूक्ष्मवनस्पतीकाय सूक्ष्मनिगोदमें किसो २ थोडा घणा सरीखा विशेषाधिक छे। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया सुहुमपुढवीकाइया विसेसाहिया। हेगोतम सघला सूक्ष्म तेउकाय तेहथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय विशेषाधिक। सुहुम आउकाइया वि सुहुमवाउकाइया वि सुहुमनिगोया वि । सूक्ष्म अप्काय विशेषाधिक सूक्ष्मवायुकायिक वि तेहथी सूक्ष्मनिगोद असंख्यातगुणो। सुहुमवणस्सइकाइया पर्व

ए-एएसिण नते। सुहुमाण पज्जत्तापज्जत्ताणमित्यादि॥ इह बादरेषु पर्याप्तेभ्यो ऽपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा एकैकपर्याप्तनिश्रया असङ्ख्यानामपर्याप्तानां मुत्पादात् तथाचोक्त-प्राक् प्रथमे प्रज्ञापनाख्ये पद-पज्जत्तगनिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमन्ति जत्थ एगो तत्थ नियमा असङ्ख्येया इति, सूक्ष्मेषु पुन र्नायं क्रमः पर्याप्ताया पर्याप्तापेक्षया चिरकालावस्थायिन इति सदैव ते बहवो लभ्यन्ते तत उक्त-सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा अपर्याप्ता स्तेभ्यः सूक्ष्मा पर्याप्तकाः सङ्ख्येयगुणाः, एव पृथिवीकायिकादिष्वपि प्रत्येक भावनीयं पत चतुथमल्पबहुत्व मिदानीं सर्वेषा समुदितानां पर्याप्तापर्याप्तगत पञ्च

मनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइयापज्जत्तया अणंतगुणा, सुहुमापज्जत्ता विसेसाहिया दार ३। एएसिण भंते! सुहुमाण पज्जत्ता२ण कयरे कयरेहितो अप्पावा४? सव्वत्थोवा सुहुमा अपज्जत्तगा सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिण भंते! सुहुमपुढविकाइयाण पज्जत्ता२ण कयरे२ हितो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिण भंते! सुहुमआउकाइयाण पज्जत्ता२ण कयरे२ हितो अप्पावा४ गोयमा! सव्व

वा सूक्ष्मपृथ्वीकायिका अप सूक्ष्मपृथ्वीकायिका पर्याप्तका संख्यगुणा। हेगौतम सर्वथा सूक्ष्मपृथ्वीकाय अपर्याप्ता सूक्ष्मपृथ्वीकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा पर्याप्ता अपर्याप्तासे। एएसिण भंते सूक्ष्म आउकायाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिता अप्पावा ४। हेभगवन् एह सूक्ष्मअप्कायके पर्याप्ता अपर्याप्ता बिहो २ मे काहा घना इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा सुहुम आउकाइयाए पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। हेगौतम सबथाडा सूक्ष्म अप्कायके पर्याप्ता अपर्याप्ता तेहथी सूक्ष्म अप्काया पर्याप्ता संख्यातगुणा। एएसिणं सुहुम तेउकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिता अप्पावा ४। हेभगवन् एह सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताने बिहो २ मे काहा घना। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। हेगौतम सबथाडा सूक्ष्म तेउकाय अपर्याप्ताने सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ताने संख्यातगुणा। एएसिण भंते सु

अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तगा अ
संखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया एएसिणं
भंते ! सुहुमपज्जत्तगाण सुहुमपुढविकाइयपज्जत्तगाण सुहुमआउकाइयपज्जत्तगाण सुहुमतेउकाइयपज्ज
त्तगाण सुहुमवाउकाइयापज्जत्तगाण सुहुमवणस्सइकाइयापज्जत्ताण सुहुमनिगोदपज्जत्तगाणय कयरे कय
रेहिंतो अप्पाया४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा, सुहुमपुढविकाइयापज्जत्तगा वि
सेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहु

अनन्तगुणा सू० अप० विशेषाधिक। एएसिणं भंते सुहुम पज्जत्तगाण सहुमपुढवीकाइया पज्जत्तगाण सु० आउ० पज्जत्तगा सु० तेउ० पज्ज० सु० वाउका पज्ज सु० वणस्स० पज्ज सु० निगोद पज्जत्तगाणय कयरे २ हिंता अप्पाबा ४। हे भगवन् एन सूक्ष्म पर्याप्तामें सू० पृथ्वीकायपर्याप्तामें सू० अप्काय पर्या० सू० तेउका० पर्या० सू० वायुकाय पर्या० सू० वनस्पतीकाय पर्या० सू० निगोद पर्याप्तामें किसी २ की बाबत इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगा सु० पुढवीकाइया अप० वि० सु० आउकाइया पज्ज० वि० सु० वाउका० पज्ज सु० निगोदा पज्जत्तगा संखिज्जगुणा सु० वणस्सइया पज्जत्तगा अणतगुणा सुहुम पज्जत्तगा विसेसाहिया। हे गौतम सबसे थोडे सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता तेससे सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्या० वि० सू० अप्काय पर्याप्ता वि० सूक्ष्म वायुकाय प० विशेषाधिक सूक्ष्म निगोद प० संख्यातगुणा सूक्ष्म वनस्पतीकाय प० अनन्तगुणा सूक्ष्म सर्वपर्याप्ता विशेषाधिक। एएसिणं भंते सहुमाण पज्जत्ता २ अप कयरे २ हिंता अप्पाबा ४। हे भगवन् सूक्ष्म पर्या० अप० मे किसी २ की बाबत इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा सहुम अपज्जत्तया सहुमपज्जत्तगा संखिज्जगुणा। हे गौतम सबसे थोडे सूक्ष्म अपर्याप्ता सूक्ष्मपर्याप्ता संख्यातगुणा। एएसिणं भंते सहुमपुढवीकाइयाण पज्जत्ता २ अप कयरे २ हिंता अप्पाबा ४। हे भगवन् सूक्ष्म पृथ्वीकायमें पर्या० अप० मे किसी २ की बाबत प्रश्न। गोयमा सव्वत्थो

ए-एवमिवं भंते। सुहुमाणं पज्जत्तापज्जत्ताणमित्यादि ॥ इह बादरेषु पर्याप्तेभ्यो ऽपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा एकैकपर्याप्तनिश्रया असङ्ख्येयानामपर्याप्तानां मुत्पादा तथाचोक्त-प्राक् प्रथमे प्रज्ञापनाख्ये पद-पज्जत्तगनिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्ज इति, सूक्ष्मेषु पुन नायं क्रमः पर्याप्ताद्या पर्याप्तापेक्षया चिरकालावस्थायिन इति सदैव ते बहवो लभ्यन्ते तत उक्त-सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा अपर्याप्ता तेभ्यः सूक्ष्मा पर्याप्तकाः सङ्ख्येयगुणाः एवं पृथिवीकायिकादिष्वपि प्रत्येक भावनीय, गत चतुर्थमल्पबहुत्व मिदानीं सर्वेषां समुदितानां पर्याप्तापर्याप्तगत पञ्च

मनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइयापज्जत्तया अणंतगुणा, सुहुमापज्जत्ता विसेसाहिया दारं ३। एएसि णं भंते! सुहुमाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? सव्वत्थोवा सुहुमा अपज्जत्तगा सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसि णं भंते! सुहुमपुढविकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे२ हिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसि णं भंते! सुहुमआउकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे२ हिंतो अप्पावा४ गोयमा! सव्व

वा सूक्ष्मपृथ्वीकायिका अप सूक्ष्मपृथ्वीकायिका पर्याप्तका संख्यगुणा। हे गौतम सर्वतः सूक्ष्मपृथ्वीकाय अपर्याप्ता सूक्ष्मपृथ्वीकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा पर्याप्ता अपर्याप्तामे। एवमिवं भंत सूक्ष्म अपकायिकाना पर्याप्ता २ णं कयर २ हिंता अल्पाणा ४। हे भगवन् एह सूक्ष्म अपकायन पर्याप्ता अ पर्याप्ता बिहुं २ यो थोड़ा घणा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा सुहुम आउकाइयाए पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। हे गौतम सर्वतः सूक्ष्म अपकायने पर्याप्ता अपर्याप्ता तेहथी सूक्ष्म अपकाइया पर्याप्ता संख्यातगुणा। एएसि णं सुहुम तेउकाइयाण पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंता अप्पावा ४। हे भगवन् एह सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताने बिहुं २ यो थोड़ा घणा। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। हे गौतम सर्वतः सूक्ष्म तेउकाय अपर्याप्ताने सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ताने संख्यातगुणा। एएसि णं भंते सु

ममन्वयदुस्यमाए-एएसिणं भंते ! सुहुमपुढविकाइयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा तेजस्कायिका अपर्याप्ता कारणं प्रागेवोक्त, तेभ्यः सूक्ष्मा पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः तेभ्यः सूक्ष्मा ऽप्कायिका अपर्याप्ता विशेषाधिका तेभ्यः सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः, अत्रापि कारणं प्रागेवोक्त, तेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्याप्ताः सङ्ख्येयगुणाः अपर्याप्तेभ्योऽपि पर्याप्ता संख्येयगुणाः इत्यनन्तरं भावित तत्र सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता उक्ताः, इतरेच सूक्ष्मपर्याप्तपृथिवीकायिकादया विशेषाधिका विशेषाधिकत्वं च मनागधिकत्व न द्विगुणत्व न त्रिगुणत्वा, ततः सूक्ष्मतेजस्कायिकेभ्यो पर्याप्तेभ्यः पर्याप्ताः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः सङ्ख्येयगुणाः सन्तः सूक्ष्मवायुकायिकाऽपर्याप्तेभ्योऽपि सङ्ख्येयगुणा भवन्ति

त्थोवा सुहुमश्राउकाइया श्रपज्जत्तया, सुहुमश्राउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमतेउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो श्रप्पाया४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया श्रपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा एएसिण भंते सुहुमवाउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हिंतो श्रप्पाया४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवाउकाइया श्रपज्जत्तगा, सुहुमश्राउकाइया पज्जत्तगा स

हमवाउकाइयाण पज्जत्ताणय कयरे २ हिंतो अपपाया ४ । भगवन् एतमे सूक्ष्मवायुकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता मे किसे २ थी थाडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा सहुम आउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमवाउकाइयाणं पज्जत्तगा संखि । हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्म वायुकाय अपर्याप्ता सूक्ष्म वायुकाय पर्याप्ता सख्यातगुणा । एएसिणं भंते सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता अपज्जत्ताणय कयरे २ हिंतो अपपाया ४ । हेभगवन् एतमे सूक्ष्म वनस्पतीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किसे २ थी थोडा । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्मवनस्पतीकाइया अपर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतीकाइया पर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसिणं भंते सहुमनिगोयाण पज्जत्ता २ कय रे २ हिंतो अपपाया ४ । हेभगवन् एह सूक्ष्मनिगोदन पर्याप्ता अपर्याप्ताने किसा २ थी थोडा घणा । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुमनिगोया अपज्जत

खेज्ञ० । एएसिण ज्ञते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, सुज्ञमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! सुहुमनिगोदाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुज्ञमनिगोदा अपज्जत्ता, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुम आउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाण सुज्ञमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्ञमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्ञमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्ञमतेउकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा, सुज्ञमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्ञ

गा सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा स । इसीतम सर्वस्तोका सूक्ष्मनिगोदका अपर्याप्ता तस्यो सूक्ष्मनिगोद पर्याप्ता सख्यातगुणा । एएसिण भंते सहुमाण सहुमपुढवीकाइयाण सहुमआउकाइयाण सहुम तेउ सुहुम वाउ सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुम निगोदाण पज्जत्ता २ कय कयरे २ हिता अप्पावा ४ । हमगणन् स्व सूक्ष्मने सूक्ष्मपृथिवीकायने स्. अपकायने स. तेउकायने स. वायुने स्. वनस्पतीकायने स्. निगोदने पर्याप्ता २ ने किहां २ थो थोडा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुम पुढवीकाइया अपज्जत्तगा वि सु आउकाइया अपज्जत्तगा वि । हेनीतम सर्वथोडा सू. तेउकाय अपर्याप्ता सू. पृथ्वीकाय अप वि । सू. अपकाय अपर्याप्ता विशेषाधिक । सहुम वाउकाइया पज्जत्ता वि सू. तेउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा स. पुढवीकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सहुम आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमनिगोदा अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्म अपकाय पर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मनिगोद अप

तेभ्यः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः तेभ्यः सूक्ष्मअप्कायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः, तेभ्योऽपि सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः, तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः तेषां अतिप्रभूतत्वात् तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदाः पर्याप्ताः संख्येयगुणाः सूक्ष्मेष्वपर्याप्तेभ्यः पर्याप्ताना ओघतः संख्येयगुणत्वात् तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता अनन्तगुणाः प्रतिनिगोदं अनन्तानां तेषां भावात् तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्मा अपर्याप्तका विशेषाधिकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः सूक्ष्मेषु हि अपर्याप्तेभ्यः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः, यथायोगमत्रापि विशेषाधिकत्वं तदस्त्यमिति न संख्येयगुणत्वव्याघातः, तेभ्यः सूक्ष्मपर्याप्तका विशेषाधिका

मआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमा वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा विसेसाहिया, एएसि णं भंते ! बादरगाणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसका

वायुका पर्याप्तगा० । सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्ता असंख्यातगुणा सूक्ष्मवनस्पतिकाय अपर्याप्तगा अनंतगुणा । तेहथी सूक्ष्मनिगोद पर्याप्ता संख्यातगुणा तेहथी सूक्ष्मवनस्पतीकाय अपर्याप्ता अनंतगुणा । सूक्ष्म अपर्याप्तगा विशेषाधिका सूक्ष्म वनस्पतिकाया पर्याप्तगा असंख्यातगुणा । तेहथी सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी सूक्ष्म वनस्पतीकाया पर्याप्ता असंख्यातगुणा । सूक्ष्म पर्याप्तगा विशेषाधिका सूक्ष्मा विशेषाधिका । सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाधिक सर्व सूक्ष्म विशेषाधिक । एवमिवं भंत बादरना बादरपृथ्वीकायना बादरअपकायना बादर तेउ बादर वाउ बादर वनस्पति । भगवन् एह बादर पृथ्वीकायने बादर अपकायने बादर तेउकायने बादर वाउकायने बादर वनस्पतीकायने । प्रत्येकशरीरबादर वनस्पतिकाय बाद

सूक्ष्मपृथिव्यादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १४। तेभ्यः सूक्ष्मा विशेषाधिका अपर्याप्तानामपि तत्र प्रक्षेपात् १५। तदेवमुक्तानि सूक्ष्माश्रितानि पञ्चसूत्राणि साम्प्रतिबादराश्रितानि पंचात्मकमवाणिपिरसुराह-एएसिण भंते। बायराण बायरपुढविकाइयाणमित्यादि। सर्वस्तोका बादरा त्रसकायिका द्वीन्द्रियादीनामेव बादरत्रसत्वात्, तेषां च शेषकायेभ्यो ऽल्पत्वात् १। तेभ्यो बादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणा २। असंख्येयलोका

इयाणय कयरे२ हिंतो अप्पाया बहुयाया तुल्लाया विसेसाहियावा ? गो०। सव्वत्थोवा बादरतसकाइया बादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा बायरनिगोया असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया असंखिज्जगुणा, बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवाउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवणस्सइकाइया अणंतगुणा बादरा विसेसाहिया, एएसिण भंते! बादरापज्जत्तगाण बादरपुढयिकाइया अपज्जत्तगाण बादरआउकाइया अपज्जत्तगाण बादरतेउकाइयाअपज्जत्तगाण बादरवाउ

रनिगायार्थ बायर तसकाइयाणय बयर२ हिंतो अप्पावा। पत्तेयसरीर बादर वनस्पतीकायने बादरनिगादने बादर पसकायने विशेषो थाका घ वां। गोयमा सव्वत्थोवा बायरतसकाइया बायर तेउकाइया असंखिज्जगुणा। हे गौतम सवथाया सभाया बादर त्रसकाइया तेहथी बादर तेउकाइया असंख्यातगुणा। पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया असंखिज्जगुणा। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाइया असंख्यातगुणा। बायरनिगाया असंखिज्जगुणा बायर पुढवीकाइया असं बायर आउ असं। बादरनिगाद असंख्यातगुणा बादरपृथ्वीकाय असं तेहथी बादरअपकाय असंख्यातगुणा। बायर वाउकाइया असं बायर वणस्सइकाइया अणंता बायरा विसेसाहिया। बादर वाउकाय असंख्यातगुणा बादर वनस्पतीकाय अनन्तगुणा तेहथी बादर विशेषाधिक। एएसिणं भंते बायर अपज्जत्तगाणं बायरपुढवीकाइया अपज्जत्तगाण बायरआउकाइय अप० बायर तेउकाइय अप० बायर वाउकाय अप० बायर वणस्सइकाइय अप०। हेभगवन् एह बादर अपर्याप्ताने बादर पृथ्वीकाय अपर्या० बादर अपका० अपर्या० बादर तेउकाय अपर्या

काशप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेभ्योपि प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः ३। स्थानस्यासंख्येयगुणत्वात्, बादरतेजस्कायिकाहि मनुष्य क्षेत्र एव भवन्ति तथाचोक्तं द्वितीय स्थानाख्ये पद-कहिणं भंते! बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! सठाणेणं अंतो मणु स्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु निव्वाघाएणं पन्नरससु कम्मभूमीसु वाघाएणं पंचसु महाविदेहेसु एत्थणं बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा प न्नत्ता, तत्थण बायरतेउक्काइयाणमपज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता इति ॥ बादरवनस्पतिकायिकास्तु त्रिष्वपि लोकेषु भवनादिषु तथाचोक्त-तस्मिन्नेव द्वितीये स्थानाख्य पदे-कहिणं भंते! बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! सठाणेणं सत्तसु घणोदहीसु सत्तसु घणोदहि वलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलाएसु न

काइया अपज्जत्तगाण बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाण पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाण बादरनि गोदा अपज्जत्तगाण बादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा वि सेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया अपज्जत्तगा, बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्ज गुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्ज

बादर वायुकाय अप बादर वनस्पतिकाय अप। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकाय अप बादरनिगोद अप बादर त्रसकाय अपर्याप्तामां कय र २ थिंता अल्पा वा ?। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकायना अपर्याप्ताने बादरनिगोद अपर्या बादर त्रसकायना अप किसी २ थी थोडा घणां स रीखा विशेष छे। गोयमा सर्वथी थोडा बादर त्रसकायना अप बादर तेउकायना अपर्याप्ता असं। तेथी तेहथी सर्वथी बादरत्रसकायना अपर्याप्ता तेहथी बादर तेउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकायना अपर्याप्ता असंख्यातगुणा बादरनिगोदना अपर्याप्ता अस। तेहथी प्रत्येकशरीरी बादर वनस्पतिकायना अप असंख्यातगुणा बादरनिगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। बादरपृथ्वीकायना अपर्याप्ता अस।

दीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सर २ पंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्लरेसु पल्ललेसु विप्पिणेसु दीवसु समुद्दसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थ णं बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता तथा तत्थेव बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बायरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता इति , तत क्षेत्रस्याऽसंख्येयगुणत्वात् उपपद्यन्ते बादरत्रसकायिकेभ्यो ऽसंख्येयगुणा प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका तेभ्यो बादरनिगोदा असंख्येयगुणा तेषां अत्यन्तसूक्ष्मावगाहनत्वात् जलेषु सर्वत्रापि च भावात्, पनकसेवालादयोऽपि जले अवश्य भाविन तेच बादरानन्तकायिका इति तेभ्योऽपि बादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणा य

गुणा, बादरपुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, बादरअपज्जत्तगा विसेसाहिया २। एएसिण भंते ! बादरपज्जत्तयाणं बादरपुढविकाइया पज्जत्तयाणं, बादरआउकाइया पज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयापज्जत्तयाणं बादरवाउकाइया पज्जत्तयाणं बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तयाणं बादरनिगोदपज्जत्तयाणं बादरतसकाइयपज्जत्तयाणय

बादर पृथ्वीकाय अप असंख्यातगुणा। बादर अप्काया अपज्जत्ता असं बादर वाउकाया अप असं । बादर वनस्पतिकाय अपर्या० अनं बादर वायुकाया अपर्या असं०। बादर अप्का० अप अप बादर अपज्जत्तगा विसेसाहिया। बादर वनस्पतीका अपया अनन्तगुणा बादर अपर्या० विशेषाधिक। एएसिण भंते बादरपज्जत्तगाणं बादरपुढवीकाइया य बादर आउका य बादर तेउका य बादर वाउका य बादर वणस्सइका य पज्जत्ता। हेभगवन् इन बादर प बादर पृथ्वीकाय प बादर अप्का प बादर तेउकाय प बादर वाउका० प बादर वनस्पतीकाय प । प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकाया प बादर निगोद प बादर त्रसका० पज्जत्तगाणय कवरेर किवा भप्पावा ४। सबसे बादरवनस्पतीकाय प० बाद

काशप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेभ्योपि प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा ३। स्थानस्यासंख्येयगुणत्वात्, बादरतेजस्कायिकाहि मनुष्य क्षेत्र एव भवन्ति तथाचोक्तं द्वितीय स्थानाख्य पद–कहिणं भंते। बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! सठाणेणं अंतो मणु स्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु निव्वाघाएणं पन्नरसकम्मभूमीसु वाघायं पडुच्च पंचसु महाविदेहेसु एत्थणं बायरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा प न्नत्ता, तत्थेव बायरतेउकाइयाणमपज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता इति। बादरवनस्पतिकायिकास्तु त्रिष्वपि लोकेषु भवनादिषु तथाचोक्तं–तस्मिन्नेव द्वितीये स्थानाख्य पद–कहिणं भंते। बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! सठाणेणं सत्तसु घणोदहीसु सत्तसु घणोदहि वलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलाएसु म

काइया अपज्जत्तगाणं बादरवणस्सइया अपज्जत्तगाणं पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं बादरनि गोदा अपज्जत्तगाणं बादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा वि सेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया अपज्जत्तगा, बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्ज गुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्ज

बादर वायुकाय अप बादर वनस्पतीकाय अप। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकाय अप बादरनिगोद अप० बादर त्रसकाय अपर्याप्तगा एव कय र २ किता अल्पा वा ३। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाया अपर्याप्ताने बादरनिगोद अपर्या बादर त्रसकाया अप किता २ की थोडा घणा स रीखा विशेष छुवे। गोयमा सर्वथोडा बादर त्रसकाया अप बादर तेउकाया अपर्याप्तगा अस। तेथीतेस सर्वथा बादरत्रसकाया अपर्याप्ता तेथकी बादर तेउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकाया अपर्याप्ता अपज्जत्तगा बादरनिगोदा अपर्याप्तगा अस। तेथकी प्रत्येकशरीरी बादर वनस्पतीकाया अप असंख्यातगुणा बादरनिगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। बादरपृथ्वीकाया अपर्याप्तगा अस।

दीसु सवेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सर २ पंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्लरेसु पल्ललेसु विप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता तथा यत्रैव बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बायरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता इति, तत क्षेत्रस्याऽसंख्येयगुणत्वात् उपपद्यन्ते था दरतसकायिकेभ्यो ऽसंख्येयगुणाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकास्तेभ्यो बादरनिगोदा असंख्येयगुणाः तेषां मत्यन्तसूक्ष्मावगाहनत्वात् जलेषु सर्वत्रापि च भावात् पनक सेवालादयोऽपि जले अवश्यं भाविनः तेभ्योऽपि बादराग्निकायिका इति तेभ्योऽपि बादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणा प

गुणा, बादरपुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, बादरअपज्जत्तगा विसेसाहिया २। एएसिणं भंते! बादरपज्जत्तयाणं बादरपुढविकाइया पज्जत्तयाणं, बादरआउकाइया पज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयापज्जत्तयाणं बादरवाउकाइया पज्जत्तयाणं बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तयाणं बादरनिगोदपज्जत्तयाणं बादरतसकाइयपज्जत्तयाणय

बादर पृथ्वीकाय अप असंख्यातगुणा। बादर पाउकायवा पज्जत्तगा अस बादर वाउकायवा अप अस। बादर अपुकाय अपर्या० अस० बादर वायुकायवा अपर्या० अस। बादर वणस्स अप अण बादर अपज्जत्तगा विसेसाहिया। बादर वनस्पतीका अपर्या अनन्तगुणा बादर अपर्या विसेषाधिक। एएसिणं भंते बादरपज्जत्तगाणं बादरपुढवीकाइया प बादर आउका प बादर तेउका प बादर वाउका० प बादर वणस्सइका इय पण्णत्ता। हे भगवन् एव बादर प बादर पृथ्वीकाय प बादर अपुका प बादर तेउकाय प बादर वाउका० प बादर वनस्पतीकाय प। पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइया प० बादर निगोद प बादर तसका० पज्जत्तगाणय कयरे हिंतो अप्पावा ४। प्रत्येक बादरवनस्पतीकाय प० बादर

कायाप्रदृप्रममायत्वात्, तेभ्योपि प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः ३ । स्थानस्यासंख्येयगुणत्वात् बादरतेजस्कायिकाहि मनुष्य क्षेत्र एव भवन्ति तथाचोक्तं द्वितीय स्थानाख्ये पदे-कहिणं भंते ! बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं अंतो मणु स्सखेत्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु निव्वाघाएणं पन्नरससु कम्मभूमीसु वाघायं पडुच्च पंचसु महाविदेहेसु एत्थणं बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा प न्नत्ता, तत्थेव बादरतेउकाइयाणमपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता इति ॥ बादरवनस्पतिकायिकास्तु त्रिष्वपि लोकेषु भवनादिषु तथाचोक्तं-तस्मिन्नेव द्वितीये स्थानाख्ये पदे-कहिणं भंते ! बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदहीसु सत्तसु घणोदहि वलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलाएसु न

काइया अपज्जत्तगाणं बादरवणस्सइया अपज्जत्तगाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं बादरनि गोदा अपज्जत्तगाणं बादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा वि सेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया अपज्जत्तगा, बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्ज गुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्ज

बादर वायुकाय अप बादर वनस्पतीकाय अप । प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकाय अप बादरनिगोद अप बादर त्रसकाय अपर्याप्तामें कौन किससे अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे बादर त्रसकाय के अपर्याप्ता उस से बादर तेउकाय के अपर्याप्ता असंख्यातगुना । प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकाया अपर्याप्ता असंख्यातगुना बादरनिगोद के अपर्याप्ता असं । उससे प्रत्येकशरीरी बादर वनस्पतीकाय अप असंख्यातगुना बादरनिगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुना । बादरपृथ्वीकाया अपर्याप्ता अस ।

दीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सर २ पंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्लरेसु पल्ललेसु विप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता तथा तत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता इति , ततः क्षेत्रस्याऽसंख्येयगुणत्वात् उपपद्यन्ते धा दरतत्रसकायिकेभ्यो ऽसंख्येयगुणाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका तेभ्यो बादरनिगोदा असंख्येयगुणा यथा अत्यन्तसूक्ष्मावगाहनत्वा जलेषु सर्वत्रापि च भावात् पनक सेवालादयोऽपि जले अवश्यं भाविन स्तेच बादरानन्तकायिका इति तेभ्योऽपि बादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणा अ

गुणा , बादरपुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा , बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा , बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा , बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा , बादरअपज्जत्तगा विसेसाहिया २ । एएसिणं भंते ! बादरपज्जत्तयाणं बादरपुढविकाइया पज्जत्तयाणं , बादरआउकाइया पज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयापज्जत्तयाणं बादरवाउकाइया पज्जत्तयाणं बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तयाणं बादरनिगोदपज्जत्तयाणं बादरतसकाइयपज्जत्तयाणय

बादर पृथ्वीकाय अप असंख्यातगुणा । बादर आउकाइया अपर्यात्ता अस बादर वाउकाइया अप अस । बादर अपकाय अपर्या॰ अस॰ बादर वायुकाइया अपर्या॰ अस । बादर वनस्प॰ अप अप॰ बादर अपर्यात्तगा विसेसाहिया । बादर वनस्पतीका अपर्या अनन्तगुणा बादर अपर्या॰ विसेषाधिक । एएसिणं भंते बादरपज्जत्तगार्ण बादरपुढवीकाइया प बादर आउका प बादर तेउका प बादर वाउका प बादर वणस्सइका इय पज्जता । हेभगवन् एव बादर प बादर पृथ्वीकाय प बादर अपका प बादर तेउकाय प बादर वाउका प बादर वनस्पतीकाय प॰ । पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइया प॰ बादर निगोद प बादर तसका॰ पज्जत्तगाअस प्रत्येक शरीरी [illegible] ४ । प्रत्येक बादरवनस्पतीकाय प बादर

दासु पृथिवीषु सर्वेषु विमानभवनपर्वतादिषु भावात्, तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा बादराप्कायिका समुद्रेषु जलप्राचुर्यात्, तेभ्यो बादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः सुषिर सर्वत्र वायुसम्भवात्, तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा, प्रतिबादरनिगोदं अनन्तानां जीवानां भावात् ८, तेभ्य सामान्यतो बादरा जीवा विशेषाधिका बादरत्रसकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ९ । गतमेकमौघिकानां बादराणामल्पबहुत्वम् इदानीं तेषामेवा ऽपर्याप्तानां द्वितीयमाह-एएसिणं भंते । बायरापज्जत्तगाणं मित्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका अपर्याप्तका युक्तिरत्र प्रागुक्तैव तेभ्यो बाद रतेजस्कायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा असंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वा दित्येवं प्रागुक्तक्रमेण अल्पबहुत्वं भावनीयं, गतं द्वितीयमल्पबहुत्व

कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया, बादरतसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा । बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरापज्जत्तगा विसेसाहिया ३ । एएसिणं भंते ! बादराणं पज्जत्ता २ ण

रनिगोद प० बादर त्रसकाय प० किसे २ से यावत् बहुत इत्यादि । गौतम ! सबसे थोडे बादर तेउकाय प० बादर त्रसकाया प० असं० । प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकाय प० असं० बादरनिगोद प० असं० । प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकाय प० असं० बादरनिगोद प० असंख्यातगुणा । बादर पृथ्वीकाय प० असं० बादर अप्काय प० असं० । बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता असं ख्यातगुणा बादर अप्काय पर्याप्ता असंख्यातगुणा । बादर वायुकाय प० असं० बादरवनस्पतिकाय प० अनंतगुणा । बादर वायुकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणा बादर वनस्पतिकाय पर्याप्ता अनंतगुणा । बादर पर्याप्ता विशेषाधिका । बादर पर्याप्ता विशेषाधिक । एवं त्रिज भंते बादराणं पज्जत्ता २

सिद्धानी मेतेषामव पर्याप्तानां स्तोकत्वमाह-एएसिणं भंते ! बादरपज्जत्तयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिका पर्याप्ता आव
लिकासमयवर्गस्य कतिपयसमयन्यूने रावलिकासमये गुंणितस्य यावान् समयराशिर्भवति तावत्प्रमाणत्वत तथा मुक्तव-आवलिवर्गाकृतावलिगु

कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुगावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरापज्जत्तगा। बा
दरा अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो
अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा १। बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा अ
सखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! बादरआउकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा!
सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जत्तगा बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा। एएसिणं भंते!
बादरतेउकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया? गोयमा!

कम कौन कौनसे हिंता अल्पा ४। हे भगवन् एक बादर पर्याप्ता अपर्याप्तामें किसी २ से ज्यादा इत्यादि। गोयमा सबसे थोडा बादरपर्याप्ता बादर
अपर्याप्ता असंख्यातगुना। इन्होंतम सबसेथोडा बादरपर्याप्ता तेसके बादर अपर्याप्ता असंख्यातगुना। एएसिणं भंते बादरपृथ्वीकायके पज्जत्ता २
कम कौन २ से अल्पा ४। हे भगवन् एक बादरपृथ्वीकायमें प अप किसी २ से ज्यादा इत्यादि। गोयमा सबसेथोडा बादरपृथ्वीकाया अप
पर्याप्ताअसंख्या। इन्होंतम सबसेथोडा बादर पृथ्वीकाय पर्या बादर पृथ्वीकाय अप असंख्यातगुना। एएसिणं भंते बादरआउकायाके पज्जत्ता २ कम
कयर २ हिंता अल्पा ४। हे भगवन् एक बादर अप्कायमें पर्या अप किसी से ज्यादा घणा इत्यादि। गोयमा सबसेथोडा बादर आउकाया प
अप असं०। इन्होंतम सर्वथोडा बादर अप्काय प बादर अप असंख्यातगुना। एएसिणं भंते बादर तेउकायाके पज्जत्ता २ कम कयर २ हिंता अ
ल्पा ४। हे भगवन् एक बादर तेउकाय प अप में किसी २ से घणा घणा इत्यादि। गोयमा सबसेथोडा बादर तेउकाय प बादर तेउकाय अ

तासु पृथिवीषु सर्वेषु विमानभवनपर्वतादिषु भावात् तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा बादराप्कायिकाः समुद्रेषु जलप्राचुर्यात्, तेभ्यो बादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः सुषिरे सर्वत्र वायुसंभवात् तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः प्रतिबादरनिगोद मनन्तानां जीवानां भावात् ८ तेभ्य सामान्यतो बादरा जीवा विशेषाधिका बादरत्रसकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ९। सम्प्रत्येतेषामेवापर्याप्तानां बादराणामल्पबहुत्व मिदानीं तथामेवा ऽपर्याप्तानां द्वितीयमल्प-बहुत्वमाह-सव्वत्थोवा बायरतसकाइया अपज्जत्तगा इत्यादि॥ सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका अपर्याप्तका युक्तिरत्र प्रागुक्तैव तेभ्यो बाद रतेजस्कायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा असंख्येयलोकाकाशप्रदेशमानत्वा दित्येवं प्रागुक्तक्रमेणैव मल्पबहुत्वं भावनीयं गतं द्वितीयमल्पबहुत्वं

कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया प ज्जत्तया, बादरतसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असं खेज्जगुणा । बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादर आउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा । बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरवणस्सइकाइ या पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरापज्जत्तगा विसेसाहिया ३ । एएसिणं भंते ! बादराणं पज्जत्ता २ ण

रनिगोद प० बादर भसकाय प० विशे २ या बादर वस्त इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बायर तेउकाय प० बायर तसकाइया प० असं । प्रत्येक शरीर बादर तउका प० तेहथी बादर वनस्पति प० असं । प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकाय प० असं बादरनिगोद प० असं । प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय प० असं बादरनिगोद असंख्यातगुणा । बायर पृथ्वीका प० असं बायर पाउका० प० असं । बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता असं ख्यातगुणा बादर अपकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा । बायर वाउका० प० असं० बादरवनस्पतीका प० अनंतगुणा । बादर वाउका प० असंख्यात गुणा बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता अनंतगुणा । बायर पज्जत्तगा विसेसाहिया । बादर पर्याप्ता विशेषाधिक । एएसिणं भंते बायराणं पज्जत्ता २

पर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा घनीकृतस्य लोकस्यासङ्ख्येयेषु प्रतरेषु यावन्त आकाशप्रदेशा तावत्प्रमाणत्वात्तेषां ७। तेभ्यो बादरव नस्पतिकायिकाः पर्याप्ता अनन्तगुणा प्रतिबादरैकैकनिगोदमनन्तानां जीवानां भावात् ८। तेभ्य सामान्यतो बादरपर्याप्ता विशेषाधिका बादर तसरकायिकानामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् ९। गत तृतीयमल्पबहुत्व मिदानी मेतेषामेव पर्याप्तापर्याप्तगताल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते!

या अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा। पत्तेयसरीरबादरव णस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! बादरनिगोदाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तगा। बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। एएसिणं भंते! बादरतसकाइयाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा

त्ता २ णं कयरे २ हिंता अप्पावा। हे भगवन् एक प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकायने पर्याप्ता अपर्याप्तामांहि किसा २ थी थोडा छे। गोयमा सव्वत्थोवा पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। हे गौतम सर्वथोडा प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय पर्याप्ता प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। एएसिणं भंते बादरनिगोदाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंता अप्पावा ४। हे भगवन् एक बादरनिगोद पर्याप्ता अपर्याप्तामें किसा २ थी थोडा छे इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बायरनिगोदा पज्जत्ता बायर निगोया अपज्जत्तगा असं । हे गौतम सर्वथोडा बादरनिगोद पर्याप्ता तेहथी बादरनिगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। एएसिणं भंते बायर तसकाइ याणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंता अप्पावा ४। हे भगवन् एक बादर त्रसकायने पर्याप्ता अपर्याप्तामें किसा २ थी थोडा छे इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बायर तसकाइया पज्जत्तगा बायर तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। हे गौतम सर्वथोडा बादर त्रसकाय पर्याप्ता बादर त्रसकाया

विग्रहुयामरातत्र इति तेभ्यो बादरत्रसकायिका पर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा २ प्रतरे यावन्त्य गुलासङ्ख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वा त पा २ तेभ्य प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका पर्याप्ता असङ्ख्येयगुणाः, प्रतरे यावन्त्यङ्गुलासङ्ख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वा तेषा मुक्तञ्च-पत्तयपज्जवयवा हणाउपयरहरतिसोगस्स। अंगुलअसङ्खभागेभ्यमाइयमिति ३ तेभ्यो बादरनिगोदाः पर्याप्तका असङ्ख्येयगुणाः तथा मत्यन्तसू त्मावगाहनत्वात्, जलाशयपु च सर्वत्रभावात् ४ तेभ्यो बादरपृथिवीकायिकाः पर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा अतिप्रभूतसङ्ख्येयप्रतराङ्गुलासङ्ख्येयभागखण्डमा नत्वात ५। तेभ्योपि बादराप्कायिकाः पर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा अतिप्रभूततरसङ्ख्येयप्रतराङ्गुलासङ्ख्येयभागखण्डमानत्वात् ६। तेभ्यो बादरवायुकायिकाः

सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया बादरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! बादरआउकाइयाणं पज्जत्ता२ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जत्तगा। बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता२ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा। बादरवणस्सइकाइ

प र्व । हेगौतम सबसे थोडा बादर तेउकाय पर्या बादर तेउकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। एएसिणं भंते बादर आउकायना पज्ज त्ता २ कवण कवरे २ हिता अल्पा वा ४। हेभगवन् एह बादर अपकायने पर्याप्ता अप र्याप्ता २ मो बहा घणा इत्यादि। गोयमा सबथोवा बादर आउकाया पज्जत्ता बादर आउकाया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। हेगौतम सबथोडा तेउकाया पर्याप्ता तेहथी बादर अपकाय अपर्याप्ता अ संख्यातगुणा। एएसिणं भंते बादर वणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ पत्र कयरे २ हिता अप्पावा ४। हेभगवन् एह बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता अपर्या प्तामांहि किहां २ थो बहा घणा इत्यादि। गोयमा सबथोवा बायरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। हेगौ तम सबथोडा बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता बादर वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। एएसिणं भंते पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइयाणं प

स्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्ताः १ । तेभ्यो बादरत्रसकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः २ । तेभ्यो बादरत्रसकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ३ । तेभ्यो बादरप्रत्येकवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणा ४ । तेभ्यो बादरनिगोदा पर्याप्ता असंख्येयगुणाः ५ । तेभ्यो बादरपृथिवीकायिकाः पर्याप्तका असंख्येयगुणाः ६ । तेभ्यो बादराऽप्कायिका पर्याप्ता असंख्येयगुणाः ७ । तेभ्यो बादरवायुकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः ८ । एतेषु पदेषु युक्तिः प्रागुक्ता अनुसरणीया, तेभ्यो बादरतेजस्कायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः यतो बादरवायुकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयेषु प्रतरेषु यावन्त आकाशप्रदेशा तावत्प्रमाणा बादरतेजस्कायिकास्त्वपर्याप्ता असंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा ततो भवन्त्यसंख्येयगुणाः ९ । ततः प्रत्येकबादरवनस्पतिकायिकाः १० । बादरनिगोद ११ । बादरपृथिवीकायिक १२ । बादराप्कायिक १३ । बादरवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर

वणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ४ । बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्ज० ५ । बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ६ । बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ७ । बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ८ । बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १० । बादरनिगोदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ११ । बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १२ । बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १३ । बादरवाउकाइया

प्कोकाय बादर अप्काय बादर वायुकाय बादर तेउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा जेमको बादर वायुकाय पर्याप्ता असंख्यात प्रतर जेतला आकाश प्रदेश तेतला असंख्यातगुणा । तेतले प्रमाणे बादर तेउकाय अपर्याप्ता असं लोकाकाश प्रमाणे । प्रत्येकशरीर बादर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असं । प्रत्येकशरीर वनस्पतीकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा । बादरनिगोदा बादर पुढवीकाइया बादर आउकाइया बादर वाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । तेहथी बादरनिगोद बादर पृथ्वीकाइया बादर अप्काय बादर वायुकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । बादर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अ

बायराणं पज्जत्तापज्जत्ताणमित्यादि ॥ इह बादरैकैकपर्याप्तनिश्रया असङ्ख्येया बादरा अपर्याप्ता उत्पद्यन्ते ॥ पज्जत्तगनिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा इतिवचनात्, ततः सर्वत्र पर्याप्तेभ्यो ऽपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा वक्तव्याः, त्रसकायिकसूत्रं प्रागुक्तयुक्त्या भावनीय गतं चतुर्थमल्पबहुत्वं। साम्प्रतमेषामेव समुदितानां पर्याप्तापर्याप्तानां पञ्चममल्पबहुत्वमाह-एएसि णं भंते! बायराणं बायरपुढविकाइयाणमि

बादरतसकाइया पज्जत्तगा । बादरतसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ६ । एएसि णं भंते ! बादराणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा २ । बादरतसकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा ३ । बादरपत्तेय

पर्याप्ता असङ्ख्यातगुणा इदं इति थोवा पद बहुत्व कथा, इदं समुदित पद बहुत्व पञ्चमं कथ्यते—एएसि णं भंते बायराणं बायरपुढवीकाइयाणं बायर पद तउ वाउ वणस्सइकाइया। हे भगवन् एतेषां बादर पृथ्वीकायिक अप्कायिके तेउकायिके वाउकायिके वनस्पतीकायिके। पत्तेयसरीर बायर वणस्सइकाइया बायर निगोदाणं बायर तसकाइयाणं कयरे २ हिंतो अप्पा वा ४। प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकायिके बादर निगोदियाने बादर त्रसकायिकपर्याप्ता अपर्याप्ताने किहां २ थी स्तोक घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बायर तेउकाइया पज्जत्तगा बायर तसकाइया पज्जत्तगा पद। इसी तरह बादर तेउकाय पर्याप्ता पचनो युक्ति सर्व पाछलीपरे कहिवा बादर त्रसकाय पर्याप्ता असङ्ख्यातगुणा। बायर तसकाइया अपज्जत्तगा पद। बादर त्रसकाय अपर्याप्ता असङ्ख्यातगुणा। पत्तेयसरीर बायर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा असं। तेहथकी बादर प्रत्येकवनस्पती प्र असङ्ख्यातगुणा इत्यादि। बायर निगोया बायर पुढवीकाइया बायर आउकाइया बायर वाउ बायर तेउकाइया अप असं। तेहथकी बादरनिगोद वा

त्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्ताः १। तेभ्यो बादरत्रसकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः २। तेभ्यो बादरत्रसकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ३। तेभ्यो बादरप्रत्येकवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः ४। तेभ्यो बादरनिगोदाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः ५। तेभ्यो बादरपृथिवीकायिकाः पर्याप्तका असंख्येयगुणाः ६। तेभ्यो बादराऽप्कायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः ७। तेभ्यो बादरवायुकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः ८। एतेषु पदेषु युक्तिः प्रागुक्ता अनुसरणीया तेभ्यो बादरतेजस्कायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः यतो बादरवायुकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयेषु प्रतरेषु यावन्त आकाशप्रदेशा तावत्प्रमाणा बादरतेजस्कायिकाश्चापर्याप्ता असंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा ततो भवन्त्यसंख्येयगुणा ९। ततः प्रत्येकबादरवनस्पतिकायिकाः १०। बादरनिगोद ११। बादरपृथिवीकायिक १२। बादराप्कायिक १३। बादरवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर

वणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ४। बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्ज० ५। बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ६। बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ७। बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ८। बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ९। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १०। बादरनिगोदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ११। बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १२। बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १३। बादरवाउकाइया

वणोकाय बादर पत्काय बादर वायुकाय बादर तेउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा जेभणी बादर वायुकाय पर्याप्ता असंख्यात प्रतर जेतला आकाश तस ८ असंख्यातगुणा। तेहथी प्रमाणे बादर तेउकाय अपर्याप्ता असं आकाशाश प्रमाणे। पत्तेयसरीर बादरवनस्पतिकाया अपज्जत्तगा असं। प्रत्येकशरीर वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। बादरनिगोदा बादर पुढवीकाया बादर आउकाया बादर वाउकाया अपज्जत्तगा असंखे ज्जगुणा। तेहथी बादरनिगोद बादर पृथ्वीकाया बादर अप्काय बादर वाउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। बादर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अ

मसङ्ख्येयगुणा वक्तव्या, यद्यपि चैते प्रत्येकमसङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा स्तथाप्यसङ्ख्यातस्या सङ्ख्यातभेदभिन्नत्वा दित्य यथोत्तरमसङ्ख्येयगुणत्व न विरुध्यत १४। तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका जीवाः पर्याप्ता अनन्तगुणाः, प्रतिबादरैकैकनिगोदमनन्तानां जीवानां भावात् १५। तेभ्यः सामान्य तो बादराः पर्याप्ता विशेषाधिका बादरतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १६। तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगु णा एकैकपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकनिगोदनिश्रया असङ्ख्येयाना मपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकनिगोदाना मुत्पादात् १७। तेभ्यः सामान्यतो बा दराऽपर्याप्ता विशेषाधिका बादरतेजस्कायिकादीना मप्यपर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १८। तेभ्यः पर्याप्तापर्याप्तविशेषणरहिता सामान्यतो बादरा विशेषाधिका बादरपर्याप्ततेजस्कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १९। गतानि बादराभिलाप्यपि पञ्चसूत्राणि, सम्प्रति सूक्ष्मबादरसमुदायगता प व्यनुयोगमभिधित्सु प्रथमत औघिक सूक्ष्मबादरसूत्रमाह-एएसि णं भंते ! इत्यादि ॥ इह प्रथमं बादरगतमल्पबहुत्व बादरसूत्रा यत्प्रथम सूत्रं तद्व द्वाच्यमिदं यावद्वादरवायुकायिकापदं ७। तदनन्तरं यत्सूक्ष्मगतमल्पबहुत्व तत सूक्ष्मपञ्चसूत्र्या यत्प्रथम सूत्र तद्वत् तावद्यावत्सूक्ष्मनिगोदचिन्ता

अप० असंखेज्जगुणा १४। बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा १५। बादरपज्जत्तगा विसेसा हिया १६। बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १७। बादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया १९। बादरा विसेसाहिया २०। एएसि णं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउ

णंतगुणा बायर पज्जत्तया विसेसाहिया बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बायर अपज्जत्तगा विसेसाहिया बायरा विसेसाहिया ६। बा दर वणस्सइकाइय अपर्याप्ता अनन्तगुणा बादर पर्याप्ता विशेषाधिक बादर वणस्सइकाइया अपर्याप्ता असङ्ख्यातगुणा बादरअपर्याप्ता विशेषा धिक तेभ्यो सर्वबादर विशेषाधिक विधि ६ सूत्र कहे छे—एएसि णं भंते सुहुमाणं सुहुमपुढवीकाइयाणं सुहुम आउकाय सुहुम तेउकाय सुहुम वाउ व णस्सइकाइया सुहुमनिगोदानां बादराणं बादरपुढवीकाइयाणं। हे भगवन् एव सूक्ष्मपृथ्वीने सूक्ष्मअप्कायने सूक्ष्मतेउकायने सूक्ष्मवाउकायने सूक्ष्मवनस्पती

१२ । तदनन्तरं बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः प्रतिबादरनिगोदमनन्तानां जीवानां भावात् १३ । तेभ्यो बादरा विशेषाधिका बादरतैजस्का यिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १४ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असङ्ख्येयगुणा बादरनिगोदेभ्यः सूक्ष्मनिगोदानामसङ्ख्येयगुणत्वात् १५ । तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्मा विशेषाधिकाः, सूक्ष्मतैजस्कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १६ । गत मेतत्सम्प्रयुक्तस्य सिद्धामी सेतयासेवा ऽपर्याप्तानां द्वितीयमा प-पद्मदिदं मत ! इत्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका अपर्याप्ताः १ । ततो बादरतेजस्कायिका बादरप्रत्येकवनस्पतिकायिकं बादरनिगोद बादरपृथिवीकायिकबादराप्कायिकबादरवायुकायिका अपर्याप्ताः क्रमेण यथोत्तरं असङ्ख्येयगुणाः अत्र भावना बादरपर्याप्तसूत्र यत् द्वितीयमपर्याप्त

काइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाण बादराण बादरपुढविकाइयाण बादरआउकाइयाण बादरतेउकाइयाण बादरवाउकाइयाण बादरवणस्सइकाइयाण पत्तेयसरीरबादरवण स्सइकाइयाण बादरनिगोदाण बादरतसकाइयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया १ । बादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा । बादरनिगोदा असंखिज्जगुणा । बादरपुढविकाइया असंखेज्जगुणा ५ । बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा

ने सूक्ष्मनिगोदने बादरपृथ्वीकायने । बादर पाणी तेउ वाउ वनस्पतिकाय । बादर प्रत्येक वनस्पतिकायने तेउकायने वनस्पतीकायने । प्रत्येकशरीर बादरव नस्पतिकाय बादर निगोदा ने बादर त्रसकायनेविषे कवणे २ थकी अल्पबहु ४ । प्रत्येकबादर वनस्पतीकायने बादर निगोदने बादर त्रसकायने विषे विशेषो बहु घणो इत्यादि । गौतम सर्वथोडा बादर त्रसकाया बादर तेउकाय असंख्यातगुणा । तेथकी सर्वथी बादर त्रसकाया तेथकी बा दर तेउकाय असंख्यातगुणा । प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकाया असंख्यातगुणा । प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय असंख्यातगुणा । बादरनिगोदा बा दर पुढवीकाया बादर पाणीकाया अस । बादरनिगोद बादर पृथ्वीकाय बादर अप्काय असंख्यातगुणा । बादर वाउकाय सूक्ष्म तेउकाय अस

ममरयेयगुणा वक्तव्या , यद्यपि चैते प्रत्येकमसङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा स्तथाप्यसङ्ख्यातभेदभिन्नत्वात् इत्थं पर्याप्तरमसङ्ख्येयगुणत्व न विरुध्यत १४ । तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका जीवाः पर्याप्ता अनन्तगुणाः , प्रतिबादरैकैकनिगोदमनन्तानां जीवानां भावात् १५ । तेभ्यः सामान्य तो बादरा पर्याप्ता विशेषाधिका बादरतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १६ । तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगु णा एकैकपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकनिगोदनिश्रया असंख्येयानामपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकनिगोदानामुत्पादात् १७ । तेभ्यः सामान्यतो बा दरा ऽपर्याप्ता विशेषाधिका बादरतेजस्कायिकादीनामपर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १८ । तेभ्यः पर्याप्तापर्याप्तविशेषणरहिताः सामान्यतो बादरा विशेषाधिका बादरपर्याप्ततेजस्कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १९ । गतानि बादराभिधान्यपि पञ्चसूत्राणि , सम्प्रति सूक्ष्मबादरसमुदायगता प ञ्चसूत्राणि विवक्षुः प्रथमतः औघिकं सूक्ष्मबादरसूत्रमाह-एएसिणं भंते । इत्यादि ॥ इह प्रथमं बादरगतमल्पबहुत्वं बादरसूत्रा यत्प्रथमं सूत्रं तद्वद् भावनीयं यावद्बादरवायुकायिकपदं ७ । तदनन्तरं यत्सूक्ष्मगतमल्पबहुत्वं तत्र सूक्ष्मपञ्चसूत्र्या यत्प्रथमं सूत्रं तद्वत् तावद्यावत्सूक्ष्मनिगोदचिन्ता

अप० असंखेज्जगुणा १४ । बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा १५ । बादरपज्जत्तगा विसेसा हिया १६ । बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १७ । बादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया १९ । बादरा विसेसाहिया २० । एएसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउक्काइयाणं सुहुमतेउ

न्तगुणा बादर पर्याप्ता विशेषाधिक बादर वनस्पतिकाया अपर्याप्ता असंख्येयगुणा बादर अपर्याप्ता विशेषाधिक बादरा विशेषाधिक ५ । बा दर वनस्पतिकाय अपर्याप्ता अनन्तगुणा बादर पर्याप्ता विशेषाधिक बादर वनस्पतिकाया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा बादरअपर्याप्ता विशेषा धिक तेहथी सबादर विशेषाधिक छिये ५ सूत्र कहे छे—एएसिणं भंते सूक्ष्मानं सूक्ष्मपृथ्वीकायकानं सूक्ष्म अप्काय सूक्ष्म तेउकाय सूक्ष्म वाउ व नस्पतिकाया सूक्ष्मनिगोदानं बादरानं बादरपृथ्वीकायिकानं । हेभगवन् एह सूक्ष्मपृथ्वीने सूक्ष्मअप्कायने सूक्ष्मतेउकायने सूक्ष्मवाउकायने सूक्ष्मवनस्पती

१२ । तदनन्तरं बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः प्रतिबादरनिगोदमनन्तानां जीवानां भावात् १३ । तेभ्यो बादरा विशेषाधिका बादरतेजस्का यिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १४ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा बादरनिगोदेभ्यः सूक्ष्मनिगोदानाम् असंख्येयगुणत्वात् १५ । तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्मा विशेषाधिकाः, सूक्ष्मतेजस्कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १६ । गतं षोडशपदमल्पबहुत्वं मिदानीं मेतेषामेवा ऽपर्याप्तानां द्वितीयमल्प-बहुत्वं मत । इत्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका अपर्याप्ताः १ । ततो बादरतेजस्कायिका बादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका बादरनिगोद बादरपृथिवीकायिकबादराप्कायिकबादरवायुकायिका अपर्याप्ताः क्रमेण यथोत्तरं असंख्येयगुणा अत्र भावना बादरपर्याप्तसूत्रा यत् द्वितीयमपर्याप्त

काइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाण बादराण बादरपुढविकाइयाण बादरआउकाइयाण बादरतेउकाइयाण बादरवाउकाइयाण बादरवणस्सइकाइयाण पत्तेयसरीरबादरवण स्सइकाइयाण बादरनिगोदाण बादरतसकाइयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया १ । बादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा । बादरनिगोदा असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया असंखेज्जगुणा ५ । बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा

मे सूक्ष्म मनाइने बादरपृथ्वीकायने । बादर पाउ तउ वाउ वनस्पतिकाय । बादर प्रत्येक वाउकायने तेउकायने वनस्पतीकायने । पत्तेयसरीर बादरव नस्पतिकाय बादर निगोदा ने बादर तसकाइयाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । प्रत्येकबादर वनस्पतीकायने बादर निगोदने बादर तसकायने किंवा विशेषो अधिक घणा इत्यादि । गोतमा सर्वस्तोका बादर तसकाइया बादर तेउकाय असंख्यातगुणा । हेगोतम सर्वथोडा बादर त्रसकाइया तेहथी बा दर तेउकाय असंख्यातगुणा । पत्तेयसरीर बादर वनस्पतिकाया असंख्यातगुणा । प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय असंख्यातगुणा । बादरनिगोदा बा दर पुढवीकाइया बादर पाउकाइया अस । बादरनिगोद बादर पृथ्वीकाय बादर अपकाय असंख्यातगुणा । बादर वाउकाय सूक्ष्म तेउकाय असं

मसङ्ख्येयगुणा वक्तव्याः, यद्यपि चैते प्रत्येकमसंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा स्तथाप्यसङ्ख्यातस्यासङ्ख्यातभेदभिन्नत्वा दित्थं पर्याप्तबादरासङ्ख्येयगुणत्वं न विरुध्यते १४। तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका जीवाः पर्याप्ता अनन्तगुणाः, प्रतिबादरैकनिगोदमनन्तानां जीवानां भावात् १५। तेभ्यः सामान्यतो बादराः पर्याप्ता विशेषाधिका बादरतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १६। तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणाः एकैकपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकनिगोदनिश्रया असंख्येयानामपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकनिगोदानामुत्पादात् १७। तेभ्यः सामान्यतो बादराऽपर्याप्ता विशेषाधिका बादरतेजस्कायिकादीनामप्यपर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १८। तेभ्यः पर्याप्तापर्याप्तविशेषणरहिताः सामान्यतो बादरा विशेषाधिका बादरपर्याप्ततेजस्कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १९। गतानि बादराश्रितान्यपि पञ्चसूत्राणि, सम्प्रति सूक्ष्मबादरसमुदायगतं प

त्यवच्चमूर्घ्या यद्वितीयं सूत्रं तदत्र १२ । तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदाऽपर्याप्तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका जीवा अपर्याप्ता अनन्तगुणाः प्रतिबादरैकैकनिगो दमनन्तानां सद्भावात् १३ । तेभ्यः सामान्यतो बादरा अपर्याप्तका विशेषाधिका बादरत्रसकायिकाः पर्याप्तादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १४ । तेभ्यः सू क्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणाः बादरनिगोदपर्याप्तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदापर्याप्तानामसङ्ख्येयगुणत्वात् १५ । तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्मापर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्मत्रसकायिकापर्याप्तादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १६ । गतं द्वितीयमल्पबहुत्वमधुनैतेषामेव पर्याप्तानां तृतीयमल्पबहुत्वमाह-एए सि णं भंते ! सुहुमपज्जत्तगाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्ताः १ । तेभ्यो बादरत्रसकायिका २ बादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका अ

ण बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तयाण पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तयाण बादरनिगोदा अप ज्जत्तयाण बादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरत सकाइया अपज्जत्तगा । बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ३ । बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया अपज्जा

य पर्याप्ता । स निगोद पर्याप्त बादर पर्याप्त बादर पृथ्वीकाय पर्याप्त बादर अप्काय पर्याप्त बादर तेउकाय पर्या० बादर वायुकाय पर्या० बादर वनस्प तीकाय पर्या । प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकाया पर्या बादरनिगोदा पर्या बादर त्रसकायया पर्या० कवरे २ हिता अप्पावा ४ । प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय पर्या बादरनिगोद पर्या बादर त्रसकाय पर्या विशे २ गो बाकी सर्वे सरीखा विमय हुवे । गोयमा सर्वस्तोका बादरत्रसकायया प र्याप्तता तथा प असंख्यगुणा । तेहोतम सर्वोका बादर त्रसकायया पर्या तहथी पर्या असंख्यातगुणा । प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकायया पर्या पर्या । तेहथी प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय पर्या असं । बादरनिगोदा पर्या असं । बादरनिगोद पर्या असंख्यातगुणा । बादर पृथ्वीकायया पर्या असं । बादरअप्काय पर्या असं० । बादर वाउकायया पर्याप्तगा असं । बादर अप्काय पर्या० असं० । बादर तेउकाय पर्याप्ता पर्या० ।

कमूं तद्दरकतमाः ७ । ततो यादरवायुकायिकम्यो ऽसङ्ख्यगुणा सूक्ष्मतैजस्कायिका अपर्याप्ता प्रतिप्रभूतासङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात ८ ।
तन्व सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः १ । सूक्ष्माप्कायकायिका २ सूक्ष्मवायुकायिक ३ सूक्ष्मनिगोदा ४ । पर्याप्ता यथोत्तर मसङ्ख्येयगुणा। अत्र भावना–सू

यादरयाउकाइया असंखेज्जगुणा । सुहुमतेउकाइया असंखेज्जगुणा । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमआउकाइया विसेसाहिया । सुहुमयाउकाइया विसेसाहिया । सुहुमनिगोदा असंखेज्जगुणा । यादरयणस्सइकाइया अणंतगुणा यादरा विसेसाहिया । सुहुमवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा १५ । सुहुमाविसेसाहिया १ । एएसिण भंते ! सुहुमअपज्जत्तयाण सुहुमपुढविकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुमआउकाइया अपज्जत्तयाण सुहुमतेउकाइयाण अपज्जत्तयाण सुहुमयाउकाया अपज्जत्तयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण अपज्जत्तयाण सुहुमनिगोदा अपज्जत्तयाण यादरा अपज्जत्तयाण यादरपुढविकाइया अपज्जत्तयाण यादरआउकाइया अपज्जत्तयाण यादरतेउकाइया अपज्जत्तयाण यादरयाउकाइया अपज्जत्तया

सूक्ष्म पृथ्वीकाया वि सूक्ष्मपाणकाय वि सूक्ष्म वायुकाय वि सूक्ष्मनिगोया पर्या । बादर वायुकाय पर्या सूक्ष्मतेउकाय पर्म सूक्ष्म पृथ्वीकाय वि शेषाधिक सूक्ष्मपाणकाया विशेषाधिक सूक्ष्म वायुकाय विशेषाधिक सूक्ष्मनिगोदा पर्म । बादर वनस्पतिकाया अनंतगुणी बादरा विशेषाधिका । ते थकी बादर वनस्पतीकाय अनन्तगुणा बादरविशेषाधिक । सूक्ष्म वनस्पतिकाया पर्म सूक्ष्माविशेषाधिका । १ । सूक्ष्मवनस्पतीकाय असंख्यातगुणा सूक्ष्मविशेषाधिक । एवम् भंते सूक्ष्म अपर्याप्तगाय सूक्ष्मपृथ्वीकाय अपर्याप्तगाय सू पाणका प स तेउका पप स वाउका पप सु वनस्प त्या पप । हेभगवन् एह सूक्ष्मअपर्याप्तानो सूक्ष्मपृथ्वीकायने अपर्याप्तानो सूक्ष्मपाणकाय पर्या सू तेउकाय पप सू वायुकाय पप सू वनस्पतीकाय अपर्याप्तानो । सूक्ष्म निगोद पप० बादर पप बादरपृथ्वीकाय पप बादर पाणकाय अपर्याप्ता बादर वायुकाय अपर्याप्ता बादर वनस्पतिका

त्रायस्त्रमूत्रो यद्वितीय सूत्र तद्दत् १२ । तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदाऽपर्याप्तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका जीवा अपर्याप्ता अनन्तगुणाः प्रतिबादरैकैकनिगो दमनन्तानां सद्भावात् १३ । तेभ्यः सामान्यतो बादरा अपर्याप्तका विशेषाधिका बादरत्रसकायिका पर्याप्तादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १४ । तेभ्यः सू क्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा बादरनिगोदपर्याप्तेभ्य सूक्ष्मनिगोदापर्याप्तानाम् असङ्ख्येयगुणत्वात् १५ । तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्मापर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्मतत्रसकायिकापर्याप्तादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १६ । गत द्वितीयमल्पबहुत्व मधुनैतेषामेव पर्याप्तानां तृतीयमल्पबहुत्वमाह-एए सिण भंते ! सुहुमपज्जत्तयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्ताः १ । तेभ्यो बादरत्रसकायिका २ बादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका ३

ण बादरवणस्सइकाइया अपज्जयाण पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तयाण बादरनिगोदा अप ज्जत्तयाण बादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरत सकाइया अपज्जत्तगा । बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ३ । बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया अपज्ज

य पर्याप्ता । स निगोद पप बादर पप बादर पृथ्वीकाय पप बादर पाकाय पप बादर तेउकाय पप० बादर वायुकाय पप० बादर वनस्प तीकाय पप । पत्तेयसरीर बादरवनस्पतिकायिका पप बादरनिगोदा पप बादर तसकायिका पप० बादरे २ थिता अप्पावा ४ । प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय पप बादरनिगोद पप बादर तसकाय पप बिर्चा २ भो वाता वर्गा सरीआ विगय हुवे । गोयमा सव्वत्थोवा बादरतसकायिका प पर्याप्ता तथा प असंख्यगुणा । तेजोवम सव्वाढा बादर तसकायिका पप तेहथी पर्या असंख्यातगुणा । पत्तेयसरीर बादरवनस्पतिकायिका पप पर्स । तेहथी प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय पप पर्स । बादरनिगोदा पप पस । बादरनिगोद पप असंख्यातगुणा । बादर पृथ्वीकायिका पप० पस० । बादरपृथ्वीकाय पप० पस० । बादर पाउकायिका पपर्याप्ता० पर्स० । बादर पाउकाय पप० पस० । बादर तेउकाय अपर्याप्ता पस० ।

बादरनिगोदा ४ बादरपृथिवीकायिका ५ बादराप्कायिका ६ बादरवायुकायिका ७ पर्याप्ता यथोत्तर असङ्ख्येयगुणाः अथ व्याख्या–बादरपर्याप्तसूक्ष्मा यत् तृतीय पर्याप्तसूत्रे तद्वक्तव्या ७, बादरपर्याप्तवायुकायिकेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिकापर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा बादरवायुकायिकादि असङ्ख्येयप्रतरप्रदेशरा शिप्रमाणाः सूक्ष्मतेजस्कायिकास्तु पर्याप्ता असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा स्ततोऽसङ्ख्येयगुणाः ८। ततः सूक्ष्मपृथिवीकायिक ९ सूक्ष्माप्कायिका १० सूक्ष्मवायुकायिकाः ११ पर्याप्ताः क्रमेण यथोत्तरं विशेषाधिकाः ११, ततः सूक्ष्मवायुकायिकेभ्यः पर्याप्तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदाः पर्याप्तका असङ्ख्येयगु

त्तगा असंखेज्जगुणा। बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखे० ६। बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया ९ सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १०। सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम निगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, बादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया २।

बादर तेउकाय अपर्याप्ता अस। बादर आउकाय अप अस। बादर वाउकाय अप असं। सूक्ष्म तेउकाय अप असं सूक्ष्म पुढवीकाया अ प विसेसाहिया। सूक्ष्म तेउकाय अप अस सूक्ष्म पृथ्वीकाया विशेषाधिक। सूक्ष्म आउकाया अप विसे सूक्ष्म वाउका अप विसे। सूक्ष्म अपकाया अप विशेषाधिक सूक्ष्म वाउकाया अपर्याप्ता विशेषाधिक। सूक्ष्म निगोद अप अस बादरवनस्पतिकाया अप अनंतगुणा। सू क्ष्मानिगोद अप असं गुणा। बादर वनस्पतीकाय अप अनंतगुणा। बादर अप विसे। बादर अप विशेषाधिक। सूक्ष्म वनस्पतिकाया अप अस। सूक्ष्म वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। सुहुमा अपज्जत्ता विसेसाहिया। २। सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक। एएसिणं भंते सुहुम पज्जत्तगा बादरपुढवीकाया पज्जत्तगाणं। भगवन् एह सूक्ष्म पर्याप्ताने सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ताने। सूक्ष्म आउकाय पज्जत्तगाणं। सूक्ष्म पाउका

का लोकामसिप्रसूततया प्रतिभोसर्व भावात् १२। तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका जीवा पर्याप्तका अनन्तगुणाः प्रतिबादरैकैकनिगोदमनन्ताना मा भात् १३। तेभ्य सामान्यतो बादरापर्याप्तका विशेषाधिकाः बादरतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १४ तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायि काः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः बादरनिगोदपर्याप्तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदपर्याप्ताना असंख्येयगुणत्वात् १५। तेभ्यः सामान्यत सूक्ष्माः पर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्मतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १६। गत तृतीयमल्पबहुत्व मिदानी मेतयामेव सूक्ष्मबादरादीनां प्रत्येक पर्याप्तापर्याप्तानां

एएसिण भंते! सुहुमपज्जत्तयाण सुहुमपुढविकाइयपज्जत्तगाण सुहुमआउकाइयपज्जत्तगाण सुहुमतेउकाइयपज्जत्तयाण सुहुमवाउकाइयपज्जत्तयाण सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तयाण सुहुमनिगोयपज्जत्तयाण बादरपज्जत्तगाण बादरपुढविकाइयपज्जत्तयाण बादरआउकाइयपज्जत्तयाण बादरतेउकाइयपज्जत्तयाण बादरवाउकाइयपज्जत्तयाण बादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाण पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाण बादरनिगोदपज्जत्तया बादरतसकाइयपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा बा

य पर्याप्ताना। सूक्ष्म तेजस्काय वायुकाय वनस्पति निगोदा पर्याप्ता। सूक्ष्म तेजस्काय वायुकाय वनस्पतीकाय निगोदने पर्याप्ताने। बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता बादर अप्काय बादर तेजस्काय बादर वायुकाय बादर वनस्पतिकायना पर्याप्ता। बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ताने बादर अप्काय पर्या बादर तेजस्काय पर्या वायुकाय पर्या बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ताने। प्रत्येकशरीर बादर वनस्पति बादर निगोदा बादर त्रसकाय पर्याप्ता २ पण कय रे २ थिता अल्पादा ४। प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ताने बादरनिगोद प बादर त्रसकाय प किसो २ थी थोडा पर्या इत्यादि। गोयमा सर्वथोडा बादर तेजस्काय प बादर त्रसकाय पर्याप्तगा असं। तेथीतम सर्वथोडा बादर तेजस्काय पर्याप्ता बादर त्रसकाय पर्याप्ता असंख्येयगुणा। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकायिया बादरनिगोया बादर पृथ्वीकायिया बादर अप्काय बादर तेजस्काय अपर्याप्तगा असंख्येयगुणा बादर वायुकाय

पृथग् २ चाल्पबहुत्वमाह-पज्जत्तेत्यादि । सुहुमाणं बायराण पज्जत्तापज्जत्ताणमित्यादि ॥ सर्वस्तोकाः बादराः पर्याप्ताः परिमित क्षेत्रवर्तित्वात्, तेभ्यो बादरा अपर्याप्ता असंख्येयगुणा एकैकबादरपर्याप्तनिश्रया असंख्येयानां बादरापर्याप्तानामुत्पादात्, तेभ्यः सूक्ष्मा अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः, सकललोकव्यापितया तथा क्षेत्रस्य संख्येयगुणत्वात्' तेभ्य सूक्ष्मपर्याप्तकाः संख्येयगुणाः चिरकालावस्थायितया तेषां सदैव संख्येय गुणतया प्राप्यमानत्वात् ॥ गतं चतुर्थमल्पबहुत्वम् ॥ इदानीं मेतेषामेव सूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनां बादरपृथिवीकायिकादीनां च प्रत्येकं पर्याप्ता

दरतेउकाइया पज्जत्तगा । बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया पज्जत्तया अस० बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । सुहुमतेउकाइ या पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया । सुहुमनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बाद

अपर्याप्तका सर्वेभ्यगुणाः । प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकाय बादरनिगोद बादर पृथ्वीकाय बादर अप्काय बादर तेजस्काय बादर वायुकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणाः । सूक्ष्मतेजकाय सूक्ष्म पृथ्वीकाय सूक्ष्म अप्काय सूक्ष्म वायुकाय अपर्याप्तका विसेसाहिया सूक्ष्म निगोदा अपर्याप्तका असंख्यातगुणाः । सूक्ष्म तेजकाय पृथ्वीकाय अप्काय वायुकाय निगोदिया अपर्याप्ता असंख्यातगुणाः । बादर वनस्पतिकाया अपर्याप्तका अनंतगुणाः । बादर वनस्पतिकाय अपर्याप्ता अनंतगुणाः । बादर अपर्याप्तका विसेसाहिया । बादर अपर्याप्ता विशेषाधिक । सूक्ष्म वनस्पतिकाय अपर्याप्तका असंख्यातगुणाः सूक्ष्मा अपर्याप्तका विसेसाहिया । सूक्ष्म वनस्पतिकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणाः सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक । २ । उपसितं भते सूक्ष्मप र्याप्तानां सूक्ष्म पृथ्वीकायस्य पर्याप्तकाय । हे भगवन् एह सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ताने । सूक्ष्म अप्काय पर्याप्ताने । सूक्ष्म अप्काय पर्याप्ताने ।

रयणस्सइकाइया पज्जतया श्रणतगुणा, बादरपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा श्रसंखिज्जगुणा । सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया ३ । एएसिण भंते ! सुहुमाणबादराणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहितो श्रप्पाया४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरा पज्जत्तगा, बादरा श्रपज्जत्तगा श्रसंखेज्जगुणा सुहुमा श्रपज्जत्तगा श्रसंखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमपुढविकाइया

सूक्ष्म तेउकाय वाउकाय वनस्पतिकाय निगोद पर्याप्ता । सूक्ष्म तेउकाय वाउकाय वनस्पतीकाय निग द पर्याप्ताना । बादर पृथ्वीकाया पाउ काय तेउकाय वाउकाय वनस्पतिकाय पर्याप्ता । बादर पृथ्वीकाय अपकायनी तेउकाय वाउकाय वनस्पतीकाय पर्याप्ताने । प्रत्येकशरीर बादरवनस्पति काय बादर निगोद बादर त्रसकायना पर्याप्तानाय कयरे २ हिता अप्पावा ४ । प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय बादर निगोदने बादर त्रसकाय पर्याप्तानाम किशी वो वाजा यथो इत्यादि । गोयमा सर्वथी बादर तेउकाया प मत बादर त्रसकाया प० मस । हे गौतम सर्वथी बादर तेउकाय पर्याप्ता बादर त्रसकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा । प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकाय बादर निगोद बादर पृथ्वीकाय अपज्जत्तगा अस० । प्रत्येकशरार बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा बादरनिगोद बादर पृथ्वीकाय असंख्यातगुणा । बादरअप्पकाय बादर वाउकाय पज्जत्ता असंख्यातगुणा बादर अपकाय बादर वाउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । सूक्ष्म तेउकाय प० अस सु पृथ्वीकाय पज्जत्तगा विसेसाहिया सु अप्पकाय सु वाउकाय स निगोद पज्जत्तगा असंख्यगुणा । सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा सू पृथ्वीकाय प र्याप्ता विशेषाधिक सू अप्का य पर्या विश सू वायुकाय प विश सू निगोद पर्या असंख्यातगुणा । बादरवनस्पतिकाय पज्जत्तगा अनंतगुणा । बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता अनंतगुणा । बादर पज्जत्तगा विसेसाहिया । बादर पर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुम वणस्सइकाय पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । सूक्ष्म वनस्पतीकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा । सुहुमपज्जत्तगा विसेसाहिया । १ । सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाधिक घणा बहुत्व, इति त्राजो घणा बहुत्व । एएसिण भंत सुहुमाण बादराणं

ण बादरपुढविकाइयाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरपुढवि काइया पज्जत्तगा बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमआउकाइयाणं बादरआउ काइयाणं पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जत्ता बादरआउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमआ

पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । इममत्र एव सूक्ष्मबादरने पर्याप्ता अपर्याप्ताने विषे २ कोण थोडा घणा सरीषा विशेष हुवे । गोयमा स र्वथोडा बादर पज्जत्तगा अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । इणोतम सर्वथोडा बादर पर्याप्ता तेहथी ते अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । सूक्ष्म अपज्जत्तगा अ संखिज्जगुणा । सूक्ष्म पर्याप्ता असंख्यातगुणा । सूक्ष्म पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । सूक्ष्मपर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसिणं भंते सुहुम पुढवीकाइयाणं बा दरपुढवीकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हे भगवन् एह सू क्ष्मपृथ्वीकायने बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताने विषे २ कोण थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बादरपुढवीकाइया पज्जत्तगा बादर पुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । इणोतम सर्वथोडा बादर पृथ्वीकाय पर्या तेहथी बादर पृथ्वीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । सूक्ष्म पुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्तगा संखिज्ज । सूक्ष्म पृथ्वीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा सू क्ष्मपृथ्वीकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसिणं भंते सुहुम आउकाइयाणं बादर आउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हे भगवन् एह अप्कायने बादर अप्कायने पर्याप्ताने विषे २ कोण थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बादर आउकाइया पज्जत्तगा बादर आउकाइया अपज्जत्तगा असं । हे गोतम सर्वथोडा बादर पर्याप्ता बादर अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । सूक्ष्म आउका इया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा सूक्ष्म आउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । सू अप्काय पर्याप्ता असंख्यातगुणा सू अप्काय अपर्याप्ता असंख्यातगु

उकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण जते ! सुज्ञमतेउकाइयाण यादरतेउकाइयाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो श्रप्पाया४ ? गोयमा ! सम्रत्योत्रा यादरतेउकाइया पज्जत्तया, यादरतेउकाइया श्रपज्जत्तया श्रसखेज्जगुणा, सुज्ञमतउकाइया श्रपज्जत्तया श्रसखेज्जगुणा, सुज्ञमतेउकाइया पज्जत्ता सखेज्जगुणा । एएसिणं जते ! सुज्ञमयाउकाइयाण वादरयाउकाइयाणय पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहितो श्रप्पा या४ ? गोयमा ! सम्रत्योया याउरयाउकाइया पज्जत्तया यादरयाउकाइया श्रपज्जत्तया श्रसखेज्जगुणा । सुज्ञमयाउकाइया श्रपज्जत्तया श्रसखेज्ज० । सुज्ञमयाउकाइया पज्जत्तया श्रसखेज्जगुणा । एएसिण जते ! सुज्ञमयणस्सइकाइयाण यादरवणस्सइकाइयाणय पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहितो श्रप्पाया४ ? गोयमा !

र्वा । एतसिवं भंते सक्षम तेवकायिकार्व बादर बादरतवकायिकार्वच पव्यत्ता २ वव कयरे २ हितो पपपावा । ४ । हेभगवन् एव सू तेवकायमे बादर तवकायमे पर्यापता पपर्यापताने बिशेयो बाता पत्ते इत्यादि । गायमा सम्बत्योवा बादर तवकाय पव्यत्तगा बादर तेवकाय पपव्यत्तगा पसंखिव्य गवा । सर्वोतम सवयाडा बादर तेवकाय पर्याप्ता बादर तेवकाय पपर्यापता पसम्यातमवा । सुक्षम तेवकाय पपव्यत्तगा पसंखेज्जगवा । सक्षम तेव काय पपर्यापता पसम्यातगुवा । सुक्षम तेवकाय पव्यत्तगा सखिव्यगवा । सूक्ष्म तेवकाय पर्यापता पसम्यातगवा । एतसिवं भंते सडुम वाउकायिकाव बादर वाउकायिकाव पव्यत्ता २ वव कयरे २ हितो पपाया ४ । हेभगवन् एव सूक्ष्मवायुकायमे बादर वायुकायने पर्यापता पपर्यापताने बिशे २ थी बाता पत्ते इत्यादि । गायमा सम्बत्योवा बादर वाउकायिका पव्यत्तगा बादर वाउकायिका पपव्यत्तगा पसंखेज्जगवा । सर्वोतम सवयाडा बादर वायु काय पर्याप्ता बादर वायुकाय पपर्यापता पसम्यातमवा । सडुम वाउकाय पपव्यत्तगा पसंखेज्जगवा सडुम वाउकायिका पव्यत्तगा सखिव्यगवा । सू क्ष्म वायुकाय पपर्याप्ता पसम्यातगुवा सूक्ष्म वायुकाय पर्याप्ता पसम्यातगवा । एतसिवं भंते सडुम ववस्सइकायिकार्व बादर ववस्सइकायिकाव पव्य

पयाप्तामा च समुदायेन पञ्चम मल्पबहुत्वमाह-एएसिण भंते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाणमित्यादि ॥ सवस्तोका बादरतेजस्कायिका पर्याप्ता आवलिकासमयवर्गकतिपयसमयन्यूने रावलिकासमये गुणिते यावान् समयराशि स्तावत्प्रमाणत्वात् तथा तभ्यो बादरत्रसकायिका पर्याप्ता असंख्येयगुणा प्रतरे यावन्त्यङ्गुलसंख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वा त्तेषा, तभ्यो बादरत्रसकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा प्रतरे यावन्त्य

सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा, सुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा। सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखिज्जगुणा। एएसिण भंते ! सुहुमनिगोदाण बादरनिगोदाणय पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तया, बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखे०, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तया संखेज्जगुणा ४। एएसिण भंते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुमआउका इयाण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाण बादराण बादर

णा २ चय कतरे २ हिंता अल्पावा ४ । हे भगवन् एव वनस्पतीकायनी बादरवनस्पतीकायनी पर्याप्ता अपर्याप्तामे किशा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोतमा सबसाथी बादर वनस्पतिकायिया पज्जत्तगा बादरवनस्पतिकायिया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हे गोतम सबथोडा बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता बादर वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । सहुम वनस्पतिकायिया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । सूक्ष्म वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । सहुम वनस्पतिकायिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । सूक्ष्म वनस्पतीकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसिण भंते सहुमनिगोयाण बादरनिगोयाण पज्जत्ता २ चय कतरे २ हिंता अल्पावा ४ । हे भगवन् एव सूक्ष्मनिगोदनी बादरनिगोदना पर्याप्ता अपर्याप्तामे किशा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बादरनिगोया पज्जत्तगा बादरनिगोया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हे गोतम सबथोडा बादरनिगोद पर्याप्ता बादर निगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा ।

ङ्गुलासंख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वात् तथा ततः प्रत्येकबादरवनस्पतिकायिकाः ४ बादरनिगोद ५ बादरपृथिवीकायिका ६ बादरा प्कायिक ७ बादरवायुकायिकाः ८ यथासं यथोत्तरं असंख्येयगुणा यद्यप्येते प्रत्येकं प्रतरे यावन्त्यङ्गुलासंख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणा लभ्या अङ्गुलासंख्येयभागस्य असंख्येयभेदभिन्नत्वात् इत्थं यथोत्तरं असंख्येयगुणत्वं अभिधीयमानं न विरुध्यते ८। एतेभ्यो बादरतेजस्कायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा असंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् ९। तत प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिक १० बादरनिगोद ११ बादरपृथिवीकायिक १२ बाद

पुढविकाइयाण बादरआउकाइयाण बादरतेउकाइयाण बादरवाउकाइयाण बादरवणस्सइकाइयाण पत्ते यसरीरबादरवणस्सइकाइयाण बादरनिगोदाण बादरतसकाइयाण पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहितो अप्पा वा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया १। बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा २ बादरतसकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ३। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखिज्ज गुणा ४। बादरनिगोदा पज्जत्तया असंखिज्जगुणा ५। बायरपुढविकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा ६। बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ७। बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ८। बादरतेउ

सूक्ष्म निगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणा सूक्ष्म निगोदा पर्याप्तका संख्येयगुणा। सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता स ख्यातगुणा। एवमिव भते सूक्ष्माणं सूक्ष्मपृथ्वीकायकाणं सूक्ष्म अप्काय सू० तेउ स वाउ सू वनस्पतिकाय सु निगोदाणं बादराणं बादरपृथ्वीका यकाणं बादर अप्प बादर तेउ० वाउ सूक्ष्म वनस्पति। हेभगवन् एस सू० पृथ्वीकायने सू अप्कायने सू तेउकायने सू वायुकायने सू० वनस्पती कायने सू निगोदने, बादर पृथ्वीने बादर अप्कायने बादर तेउने बादर वायुने बादर वनस्पतीने। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकायिका बादर निगोदा व बादरत्रसकायिकाय पर्याप्ता अपर्याप्तानं कयर २ हिंता अल्पावा ४। प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीने बादर निगोदने बादर त्रसकायने पर्याप्ता अ

पर्याप्ता च समुदायेन पञ्चम सहयमुक्तमाह-एएसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणमित्यादि ॥ सव्वस्तोका बादरतेजस्कायिका पर्याप्ता आवलिकासमयवर्गकतिपयसमयन्यूने आवलिकासमये गुणिते यावान् समयराशिः तावत्प्रमाणत्वात् तेषां तेभ्यो बादरत्रसकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः प्रतरे यावन्त्यङ्गुलासंख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वात् तेषां तेभ्यो बादरत्रसकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा प्रतरे यावन्त्य

सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा, सुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा। सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखिज्जगुणा। एएसिणं भंते! सुहुमनिगोदाणं बादरनिगोदाणय पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तया, बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखे०, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तया संखेज्जगुणा ४। एएसिणं भंते! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउका इयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाणं बादराणं बादर

णा २ कय कयरे २ हिंतो अल्पावा ४ । हे भगवन् एषां वनस्पतीकायिकानां बादरवनस्पतीकायिकानां पर्याप्तानां अपर्याप्तानां किंवा २ यो थोवा घना इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा। हे गौतम सर्वतः बादरवनस्पतीकाय पर्याप्ता बादर वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। सुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा। सूक्ष्म वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। सुहुम वणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा। सूक्ष्म वनस्पतीकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा। एएसिणं भंते सुहुमनिगोदाणं बादरनिगोदाणं पज्जत्ता २ कय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हे भगवन् एषां सूक्ष्मनिगोदानां बादरनिगोदानां पर्याप्तानां अपर्याप्तानां किंवा २ यो थोवा घना इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तया बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा। हे गौतम सर्वतः बादरनिगोद पर्याप्ता बादर निगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा।

कायिकाः पर्याप्ता पर्याप्तर विशेषाधिका २२। तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा तेषां गतिप्राचुर्येण सर्वलोकेषु भावात् २३। तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदाः पर्याप्तका सङ्ख्येयगुणाः सूक्ष्मापर्याप्तेभ्य पर्याप्तानां ओघत एव सदा सङ्ख्येयगुणत्वात् एतेन बादरापर्याप्ततेजस्कायिकादय पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यवसानाः षोडश पदार्था यद्यप्यन्यथा विशेषणा सङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणतया सङ्गीयते, तथाप्यसंख्येयस्य सङ्ख्येयभेदभिन्नत्वा दित्थ मसङ्ख्येयगुणत्वं विशेषाधिकत्व सङ्ख्येयगुणत्व प्रतिपाद्यमान न विरोधमागिति २४। तेभ्य पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका पर्याप्ता अनन्तगुणा, प्रतिबादरैकैकनिगोदमनन्तानां जीवानां भावात् २५। तेभ्य सामान्यतो बादराः पर्याप्ता विशेषाधिका, बादरपर्याप्ततेजस्कायिका

अत्तगा विसेसाहिया १७। सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया १८। सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया सखि० १९। सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २०। सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया २१ सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २२। सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असख० २३। सुहुमनिगोदा पज्जत्तया सखि०२४। बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा २५। बादरपज्जत्ता विसेसाहिया २६ बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असखिज्जगुणा २७। बादरअपज्जत्तया विसेसाहिया २८। बादरा

पप विम स वातकाय पप विस। सूक्ष्म तउकाय पप पस सू पृथ्वीकाय पप विशेषाधिक सू पत्काय पप विशेषाधिक सू वायुका य पप विशेषाधिक। स तउकाय पव्वत्तगा पम स पढवीकाय पव्वत्तगा विसे स पाउकाय पाउकाय निगोद पव्व विसे। सू तउका य पप० पर्स सू पृथिवीकाय पपर्याप्ता विश सू पत्काय पप विश सू वायुकाय पप विश सू निगोदोरा पप सपयात्तगुणा। बादर वनस्पतिकाया पज्ज० पर्नतगुणा बादर पव्वत्तगा विसे। बादर वनस्पतीकाय पर्या पनन्तगणा बादर पर्या विशेषाधिक। बादर वनस्पतीकाय पप पम बादर पपव्वत्तगा विसे बादरा विसेसाहिया। बादर वनस्पतीकाय पप पस बादर पप विशेषाधिक बादर विशेषाधिक। सुक्ष्म

रप्कायिक १३ बादरवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तरं असङ्ख्येयगुणाः १४। ततो बादरवायुकायिकेभ्यो ऽपर्याप्तेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता अ सङ्ख्येयगुणाः १५ ततः सूक्ष्मपृथिवीकायिका १६। सूक्ष्माप्कायिक १७ सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तरं विशेषाधिका १८ ततः सूक्ष्मपर्याप्ता स्ते जस्कायिका सङ्ख्यातगुणाः, सूक्ष्मापर्याप्तेभ्यः पर्याप्तानां ओघत एव सङ्ख्येयगुणत्वात् १९। तत सूक्ष्मपृथिवीकायिक २० सूक्ष्माप्कायिक २१ सूक्ष्मवायु

काइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ९। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्ज० १०। बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखे० ११। बादरपुढविकाइया अपज्जत्तया असंखे० १२। बादरआउकाइया अपज्जत्तया असंखे० १३। बादरवाउकाइया अपज्जत्ता असंखे० १४। सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा १५। सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १६। सुहुमआउकाइया अप

पज्जत्ता तेथी विशेष १ थी थोडा बसो सरीखा त्रिगुण छ। थोडा बादर तेउकाइया पज्जत्तगा बादरतेउकाइया पर्याप्ता असंखिज्जगुणा बादरतसकाइय अप असंखेज्जगुणा। ईमोतम सर्वथी बादर तेउकाय पर्याप्ता बादर त्रसकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा बादर त्रसकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। पत्तेय सरीर बायरवणस्सइ पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बायरनिगोद पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा।प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा बादर निगोद पर्याप्ता असंख्यातगुणा। बायर पुढवीकाइय पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बायर आउकाइय पज्जत्तगा अस बायर वाउकाय पप अस बायर तेउकाय अप अस। बादर पृथिवीकाइया पर्याप्ता अस बादर अप्काय पर्या अस० बादर वायुकाय पप० अस बादर तेउकाय अप अस। पत्तेयसरीर बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अस बायरनिगोय अपज्जत्तया अस बायरपुढवीकाइय अप अस बायर आउकाय अप असं बायर वाउकाय अप असं। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय अपर्याप्ता अस बादर निगोदिया अपर्याप्ता अस बादर पृथ्वीकाय पर्या अप बादर अप्काय पर्या असं बादर वायुकाय अप असं। सुहुम तेउकाय अपज्जत्तगा अस० सु पुढवीकाय अप सु आउ

वाग्योगिभ्य हि मनोयोगिन स्तोका इति तेभ्यो वाग्योगिनो संख्येयगुणा द्वीन्द्रियादीना वाग्योगिनां संज्ञिभ्यो संख्यातगुणत्वात् तेभ्यो ऽयोगिना ऽनन्तगुणाः । सिद्धाना मनन्तत्वात् तभ्य काययोगिनो ऽनन्ता वनस्पतीना मनन्तत्वात् । यद्यपि निगोदजीवाना मनन्तानां सर्क शरीर तथापि तमेकम शरीरेण सर्वेप्याहारादिग्रहण कुर्वन्तीति । सर्वेषामपि काययोगित्वा दा नन्तगुणत्वव्याघात तम्य सामान्यत सयोगिनो विशेषाधिका द्वीन्द्रियादीना मपि वाग्याग्यादीनां तत्र प्रक्षेपात् । गत योगद्वार, मिदानीं वेदद्वारमाह-एएसिण भंते । जीवाण सवेयगाणमित्यादि, सर्वे स्तोका पुरुषवेदा संज्ञिनामेव तिर्यग्मनुष्याणा देवाना च पुरुषवेदत्वात् । तभ्य स्त्रीवेदा संख्येयगुणाः यत उक्त जीवाभिगमे-तिरिक्खजोणियपुरिसेहिंतो तिरिक्खजोणियइत्थीओ तिगुणोओ तिरूवाहियाओय तहामणुस्सपुरिसेहिंतो मणुस्सइत्थीओ सत्तावीसगुणाओ सत्तावीसरूवुत्तराओय तहादेवपुरिसेहिंतो देवत्थीओ बत्तीसगुणाओ बत्तीसरूवुत्तराओय इति । वृद्धाचार्यै रप्युक्त-तिगुणातिरूवअहिया तिरियाणइत्थियामुणेयव्वा सत्तावीसगुणापुण मणुयाणतदहियाचेव १ बत्तीसगुणाबत्तीसु रूवअहियाय तहयदेवाणं देवीओपण्णत्ता जिणेहिंजियरागदोसेहि २ अवेदका अनन्तगुणाः सिद्धा नामनन्तत्वात् । तभ्यो नपुंसकवेदा अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकाना सिद्धेभ्यो ऽप्यनन्तगुणत्वात् सामान्यत सवेदका विशेषाधिकाः स्त्रीवेदपुरुषवेदका

हितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणजोगी वयजोगी अ संखेज्जगुणा अजोगीअणंतगुणा कायजोगी अणंतगुणा सजोगी विसेसाहिया, दार ५ । एएसिण भंते ! जीवाण सवेदगाण इत्थीवेदगाण पुरिसवेदगाण नपुंसगवेदगाण अवेदगाणय कयरे २ हितो अप्पावा ४

बहुयावा ४ । हे भगवन् जीवामे सयोगीमे मनयोगीमे वचनयोगीमे काययोगीमे अयोगीने किसी २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सर्वथोडा जीवा मनयोगी वचनयोगी असंख्यातगुणा अयोगी अनन्तगुणा काययोगी अनन्तगुणा सयोगी विसेसाहिया द्वार । हे गौतम सर्वथोडा जीव मनयोगी सन्नी पंचेन्द्रिय भणी वचनयोगी असंख्यातगुणा बेइंद्रियमाटे अयोगी अनन्तगुणा सिद्धनी काययोगी अनन्तगुणा वनस्पतीमाटे सयोगी विशेषाधिक

दीनामपि तत्र प्रक्षेपात् २६ । तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः प्रत्येकपर्याप्तबादरनिगोदेभ्यो असंख्येयानां बादरनिगोदापर्याप्तानां सम्भवात् २७ । तेभ्यः सामान्यतो बादरापर्याप्ता विशेषाधिका बादरतेजस्कायिकादीनां मप्यपर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् २८ । तेभ्यः सामान्यतो बादरा विशेषाधिकाः पर्याप्तानामपि तत्र प्रक्षेपात् २९ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा बादरनिगोदेभ्यः सूक्ष्मनिगोदानां मप्यपर्याप्तानां मप्यसंख्येयगुणत्वात् ३० । ततः सामान्यतः सूक्ष्मा अपर्याप्तका विशेषाधिकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनां मप्यपर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् ३१ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ताः संख्येयगुणाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकपर्याप्तेभ्यो हि सूक्ष्मवनस्पतिकायिकपर्याप्ताः संख्येयगुणाः सूक्ष्मा यतोऽपर्याप्तेभ्यः पर्याप्तानां संख्येयगुणत्वात् ततः सूक्ष्माः पर्याप्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा विशेषाधिकत्वस्य संख्येयगुणत्वबाधनायोगात् ३२ । तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्माः पर्याप्ता विशेषाधिकाः पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ३३ । ततः सामान्यतः सूक्ष्माः पर्याप्तापर्याप्तविशेषणरहिता विशेषाधिकाः अपर्याप्तानामपि तत्र प्रक्षेपात् ३४ । गतं सूक्ष्मबादरसमुदायगतं पंचमं मल्पबहुत्वं तद्गतौ समर्थितानि पञ्चापि सूत्राणीति गतं कायद्वारं मिदानीं योगद्वारं माह-एएसि णं भंते । जीवाणं सजोगीण मित्यादि । सर्वस्तोका मनोयोगिनः संज्ञिनां प

यिसेसाहिया २९ । सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखि० ३० । सुहुमअपज्जत्तगा विसेसाहिया ३१ सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखे० ३२ । सुहुमपज्जत्तगा विसेसाहिया ३३ । सुहुमा विसेसाहिया ३४ दार ८ । एएसि णं भंते ! जीवाणं सजोगीणं मणजोगीणं वयजोगीणं कायजोगीणं अजोगीण य कयरे २

बादरबादरा पच पर्म स पप विसेसाहिया । सू वनस्पतीकाय अप अप सू अप ज्ञेये । स वनस्पतिकाय पञ्जता संखिजगुणा । सूक्ष्म वनस्पतीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता संख्यातगुणा । सूक्ष्मपज्जत्तगा विसेसाहिया सूक्ष्मविसेसाहिया दार । सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाधिक इति सूक्ष्मविसेसाधिक द्वार हिवे कायद्वार कहे—एएसि णं भंते जीवाणं सजोगीण मणजोगीण वयजोगीण कायजोगीण अजोगीण कयरे २ कि

गतं कषायद्वार । मिदानीं लेश्याद्वार-मुपसिस भते । कण्हलेसाय मित्यादि ० सर्वस्तोकाः शुक्ललेश्या लान्तकादिदेवेषु उत्तरपर्यवसानेषु विमानि केषु देवेषु कतिपयेषु च गर्भव्युत्क्रान्तिकेषु कर्मभूमिकेषु संख्येयवर्षायुष्केषु मनुष्येषु तिर्यक्स्त्रीपुंनपुंसकेषु कतिपयेषु संख्येयवर्षायुष्केषु तस्याः सम्भवात् तेभ्यः पद्मलेश्याका संख्येयगुणाः सा हि सनत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्मलोक कल्पवासिषु देवेषु तथाप्रभूतेषु गर्भव्युत्क्रान्तिकेषु कर्मभूमिकेषु संख्येयवर्षायुष्केषु मनुष्यस्त्रीसमपुंसकेषु । तथा गर्भव्युत्क्रान्तिक तिर्यग्योनिकस्त्रीपुंसेषु असंख्येयवर्षायुष्के सद्भावात सनत्कुमारादिदेवापेक्षया समुदितना तकादिदेवादिभ्यः संख्येयगुणा इति भवति शुक्ललेश्याकेभ्य पद्मलेश्याकाः संख्येयगुणाः तेभ्य तेजोलेश्याकाः संख्येयगुणा सर्वेषां सौधर्मेशा भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कदेवानां कतिपयानां च भवनपतिव्यन्तर गर्भव्युत्क्रान्तिक तिर्यक्पञ्चेन्द्रिय मनुष्याणां बादराऽपर्याप्तैकेन्द्रियाणां च तेजोलेश्यासद्भावात्, न स्वसंख्येयगुणाः कथं न भवति कथम भवंती तिचेत उच्यते-इह ज्योतिष्का भवनवासिभ्यो ऽप्यसंख्येयगुणाः किंपुन सनत्कुमारादिदेवभ्य कोचस्यो

अकसाइमाणकसाइअणंतगुणा, कोहकसाई विसेसाहिया, मायाकसाई विसेसाहिया, लोभकसाई विसेसाहिया, सकसाई विसेसाहिया, दार ७। एएसिणं भंते! जीवाणं सलेसाणं किण्हलेसाणं नीललेसाणं काउ

कषाय २ हिता अधिका ४। हे भगवन् एह जीव सकषायने क्रोधकषायने मानकषायने मायाकषायने लोभकषायने अकषायने किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सर्वथी थोडा जीव अकषाई मानकषाई अनंतगुणा। हे गौतम सर्वथी थोडा जीव अकषायी सिद्धमांहे तेहथी मानकषायी अनंतगणा पट्कायनेविषे मान लाभे। क्रोधकषाय विसेसाहिया मायाकसाइ विसेसाहिया लोभकसाई विसेसाहिया सकसाय विसेसाहिया दार। क्रोधकषायने विषयाधिक मानथी क्रोधना कालविशेषाधिक मायाकषायविशेषाधिक क्रोधथी मायाकषायना कालथकी लोभकषाय विषयाधिक बहोत्तर परिणाम कालादिक सकषाय विशेषाधिक मानकषायमांहि भला इति कषायद्वार ७ हिव लेश्याद्वार कहेछे—एएसिणंभंते जीवाणं सलेसाणं किण्हलेसाणं नीललेसाणं काउलेसाणं तेजलेसाणं पद्मलेसा सुक्कलेसाण अलेसाणय कयरे २ हिंता अप्पोवा ४। हे भगवन् एह जीवने सलेशीने कृष्णलेशीने नीललेशीने

नामपि तत्र प्रक्षेपात् मत वेन्द्रारं मिदानीं कपायद्वारमाह ॥ एएसिणं भंते! जीवाणं सकसाइण मित्यादि। सवस्तोका अकषायिणः सिद्धाना कतिपयानां च मनुष्याणां मकषायत्वात्। तन्ना मानकषायिणो मानकषायपरिणामवतो ऽनन्तगुणाः षट्स्वपि जीवनिकायेषु मानकषायपरिणामस्य प्राप्यमाणत्वात् तन्यः क्रोधकषायिणो विशेषाधिकाः तन्या मायाकषायिणो विशेषाधिकाः तन्योपि लोभकषायिणो विशेषाधिकाः मानकषायपरिणामकालापेक्षया क्रोधादिकषायपरिणामकालस्य यथोत्तरं विशेषाधिकतया क्रोधादिकषायाणामपि यथोत्तरं विशेषाधिकत्वभावात् लोभकषायिभ्य सामान्यतः सकषायिणो विशेषाधिकाः, मानादिकषायाणामपि तत्र प्रक्षेपात् सकषायिण इत्यत्रैव व्युत्पत्तिः कषायशब्देन कषायोदय परिगृह्यते तथाच-साक्षेप्यवहारः सकषायो यं कषायोदयवान् नित्यर्थः सह कषायेण कषायोदयेन वर्त्तते सकषायोदया विपाकावस्थाप्राप्ता स्वोदय मुपदर्शयत कषायकर्मपरिमाणवतस्तपुद्गलस्तु जीवत्वाभवेप कषायोदयसम्भवात् सकषायाविद्यन्ते यथात सकषायिण कषायोदयसहिता इति तात्पर्यार्थः,

? गोयमा ! सव्वत्योवा जीवा पुरिसवेदगा इत्थीवेदगा संखेज्जगुणा, अवेदगा अणंतगुणा नपुसगवेदगा अणंतगुणा सवेयगा विसेसाहिया, दारं ६ । एएसिणं भंते ! जीवाणं सकसाईणं कोहकसाईणं माणकसाइणं मायाकसाईणं लोभकसाईणं अकसाइणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा जीवा

वेद्रियादिकमाहि पाभता वेदद्वार कहेछे—ए०मिथं भंते जीवाण सवेयगाण इत्थीवमनाणं पुरिसवेयगा नपुसगवेयगाण अवेयगाणय कयरे २ हिंतो अ इत्यादि । इमययन् एहने जीव सवे नैने स्त्रीवेद न पुरुषवेदन नपुंसकवेद नेम अवदोने बिहाँ २ मो घस्य घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्योवा जीवा पुरिसवेयगा इत्थीवेयगा संखिज्जगुणा अवेदगा अणंतगुणा नपुंसगवेयगा अणंतगुणा सवेयगा विसेसाहिया । हे गौतम सर्वथी थोडा जीव नपुंसकवेदी सर्वस्ती तिर्यंचमां मनुष्यमां बहुलपणे तेम ट तेहथी स्त्रीवेदी संख्यातगणो अवेदी अनन्तगुणा सिद्ध नपुंसकवेदी अनन्तगुणा वनस्पतीमाटे सवेदी विशेषाधिक मोवर्द्धवनवेद पामता इति वेदद्वार ६ । एएसिणं भंते जीवाणं सकसाईणं कोहकसाईणं माणकसाईणं मायाकसाईणं लोहकसाईणं अकसाईणय

त्या विभङ्गज्ञानिका नीललेश्याकादीनामपि तत्र प्रवेशात् गतं लेश्याद्वारं, इदानीं सम्यक्त्वद्वारं माह-एएसिणं भंते ! जीवाणं सम्मदिट्ठीणं मिच्छा दि इत्यादि ॥ सर्वस्तोकाः सम्यग्मिथ्यादृष्टयः । सम्यग्मिथ्यादृष्टिपरिणामकालस्यान्तर्मुहूर्तप्रमाणतयाऽतिस्तोकत्वेन तथा पृच्छासमये स्तोकानामेव लभ्य त्वात् तेभ्यः सम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणाः सिद्धानामनन्तत्वात् तेभ्योपि मिथ्यादृष्टयोऽनन्तगुणाः वनस्पतिकायिकानां सिद्धेभ्योप्यनन्तगुणत्वात् तेषां च मिथ्यादृष्टित्वा दिति । गतं सम्यक्त्वद्वारं अधुना ज्ञानद्वारं माह-एएसिणं भंते ! जीवाणं आभिणिबोहियनाणीणं इत्यादि ॥ सर्वस्तोकामनःपर्यवज्ञानिनः संयतानामेवा मर्षौषध्यादिऋद्धिप्राप्तानां मनःपर्यवज्ञानसंभवात् तेभ्योऽसंख्येयगुणा अवधिज्ञानिनो नैरयिकतिर्यक्पञ्चेन्द्रियमनुष्यदे वानामप्यवधिज्ञानसंभवात् तेभ्य आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च विशेषाधिकाः संज्ञितिर्यक्पञ्चेन्द्रियमनुष्याणां मेवा अवधिज्ञानविकलाना

ठेसा विसेसाहिया कण्हलेसा विसेसाहिया, दार ८। एएसिणं भंते ! जीवाणं सम्मदिट्ठीणं मिच्छादिट्ठीणं सम्मामिच्छदिट्ठीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सम्मामिच्छदिट्ठी, सम्म दिट्ठी अणंतगुणा मिच्छदिट्ठीअणंतगुणा, दार ९। एएसिणं भंते ! जीवाणं आभिणिबोहियणाणीणं

आवानेवाय अप्पसंख्याता यको विशेषाधिक सातमानरक तथा मनुष्य तिर्यचने सर्वलेश्यानाथको विशेषाधिक वाय इति लेश्याद्वार, हिवे सम्यक्त्वद्वार क हे—एएसिणं भंते जीवाण सम्मदिट्ठीणं मिच्छादिट्ठीण सम्मामिच्छादिट्ठीणय कयर २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह जीवने सम्यक्दृष्टिने मिथ्यादृष्टि सम्यक्‌मिथ्यादृष्टिने किहां २ थी अल्प घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा सम्मामिच्छादिट्ठी सम्मदिट्ठी अणंतगुणा मिच्छदिट्ठी अणंतगुणा दार । हेगोतम सर्वथाथोडा सम्यक्‌मिथ्यादृष्टि जेभणी मिश्रगुणठाणानोकाल तमथी तेहथी सम्यक्दृष्टि अनंतागुण अनंता तेहथी मिथ्यादृष्टि अनंता वनस्प ती भेळता इति सम्यक्त्व ८ हिवे ज्ञानद्वार कहे—एएसिणंभंते जीवाण आभिणिबोहियणाणीण सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणीणय कयर २ हिंतो अप्पावा४ । हेभगवन् एह जीवाने मतिज्ञानीने श्रुतज्ञानीने अवधिज्ञानीने मनपर्यवज्ञानीने केवलज्ञानीने किहां २ थी थोडा

तिष्का संख्येयगुणाः सप्तमपृथ्वीनारकापेक्षया ततः प्राग्वदसंख्येयगुणाः तद्युक्तं वस्तुतत्त्वापरिज्ञानात् सङ्ख्यापदेऽपि गर्भव्युत्क्रान्तिकतिर्यग्योनिकानां सम्मूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां च कापोतलेश्याद्यल्पबहुत्वं सूत्रं वक्ष्यति—सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणिया सुक्कलेसा तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ पम्हलेसा गब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणिया संखेज्जगुणा तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ तेउलेसा गब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणिया संखेज्जगुणा, तेउलेसाओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ इति॥ महादण्डके च तिर्यग्योनिकस्त्रीभ्यो व्यन्तरज्योतिष्का च संख्येयगुणा उक्तास्ततो यद्यपि व्यन्तरादिभ्यो ऽप्यसंख्येयगुणा ज्योतिष्का तथापि पद्मलेश्याकेभ्यः तेजोलेश्याकाः संख्येयगुणा एव इदमत्र तात्पर्यम्, यदि केवलान् भवनपतीन् व्यन्तरांश्च पद्मलेश्यान् चिन्तयेत् तदापि तेजोलेश्याका विचार्यते ततो भवन्त्यसंख्येयगुणा यावता तिर्यक्सम्मिश्रया पद्मलेश्याकेभ्यः तिर्यग्सम्मिश्राश्च तेजोलेश्याका चिन्त्यन्ते तिर्यञ्चश्च पद्मलेश्या अपि अतिबहव इति अतः संख्येयगुणा इति। तेभ्यः अलेश्याका अनन्तगुणाः सिद्धानामनन्तत्वात् तेभ्यः कापोतलेश्या अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानामपि कापोतलेश्यायाः संभवात् वनस्पतिकायिकानां च सिद्धेभ्योऽप्यनन्तगुणत्वात् तेभ्योऽपि नीललेश्याविशेषाधिकाः प्रभूततराणां नीललेश्यासंभवात् तेभ्योऽपि कृष्णलेश्याका विशेषाधिकाः प्रभूततराणां कृष्णलेश्यकत्वात् सामान्यतः सल

लेसाण तेउलेसाण पम्हलेसाण सुक्कलेसाण अलेसाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सुक्कलेसा पम्हलेसा संखिज्जगुणा तेउलेसा संखिज्ज० अलेसा अणंतगुणा काउलेसा अणंतगुणा नील

कापोतलेश्यी तेजोलेश्यी पद्मलेश्यी शुक्ललेश्यी अलेश्यी जीव २ मांथी कोण कोणथी अल्प इत्यादि। गौतम! सर्वथी थोडा सर्वथी शुक्ललेश्यी, पद्मलेश्यी संख्यातगुणा। ते शुक्ललेश्यी अलेश्यी लान्तकादिकना देवमां तथा कर्मभूमिना मनुष्यमां ... पद्मलेश्यीमां थकी संख्यातगुणा ईशानादिक देव मनुष्य प्रमुखने होय ते माटे। तेजोलेश्यी संख्यातगुणा, अलेश्यी अनंतगुणा, कापोतलेश्यी अनंतगुणा, नीललेश्यी विशेषाधिका कृष्णलेश्यी विशेषाधिका सलेश्यी विशेषाधिका द्वार ८। तेजोलेश्यी ज्योतिषी प्रमुखने होय ते माटे अलेश्यी ते सिद्धनी अपेक्षाए तेथी अनंता। कापोतलेश्यामां थकी अनंता वनस्पति मध्ये नीललेश्यामां थकी विशेषाधिक पण

योपिकज्ञानिनः मुलज्ञानिन य विशेषाधिकाः सत्यागे तु द्वायपि परस्पर तुल्या मग्रजावना प्रामेयोक्ता तथ्योसस्येयगुणा विजगज्ञानिनो भस्मा स्मुरगतो निरयगतो च सम्यगृदृष्टिभ्यो मिथ्यादृशया असंख्येयगुणा पठ्यन्ते देवनैरयिका य सम्यसृदृष्टयो अवधिज्ञानिनो मिथ्यादृष्टयो विभंगज्ञानिन इत्य सत्येयगुणा सोव्य केवलज्ञानिनो अनन्तगुणा सिद्धाना मनन्तत्वात् तथ्यो मत्यज्ञानि मुसाज्ञानिनदा नन्तगुणा वनस्पतिकायिकानां सिद्धेभ्यो प्यनन्त

अप्पाबा८ ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा विभंगनाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी दोवि तुल्ला अणतगुणा । एएसिण भंते ! जीवाण आभिनिबोहियनाणीण सुयनाणीण ओहिनाणीण मणपज्जवनाणीण । केवलनाणी ण मतिअन्नाणीण सुयअन्नाणीण विभंगनाणीगय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी ओहिनाणी असंखिज्जगुणा , आभिणिबोहियनाणी सुयनाणीय दोवि तुल्ला विसेसाहि या , विभंगनाणी असंखेज्ज० , केवलनाणी अणतगुणा मइअन्नाणी सुयअन्नाणीय दोवि तुल्ला अणतगु

य सरोत्ता विभंगवो पनन्तगणा केवलो मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी वनस्पतामे ताथ तेमाट । एएसिण भते ओशाव पाभिनिबोहियवानोचे सयवाचो पाहिनाचो मणपज्जवनाचो केवलनाचो । इमगवम् पहले मतिज्ञानीमे श्रुतज्ञानीमे पवधिज्ञानीमे मनपर्यवज्ञानीम केवलज्ञानीमे । मतिअज्ञानीच सव पनाचोचे विभंगनाचोवच मयरे १ दिना पचावा ४ । मतिअज्ञानीमे श्रुतअज्ञानीमे विभंगज्ञानीचे विशे २ थाका पचा सरोखा विशेष छावे । नाम मा सम्पतावा जीवा मणपज्जवनाचो पाहिनाचो पसंखिज्जगुणा पाभिनिबोहियनाचो सयनाचो दोवितुल्ला विसेसाहिया । हगोतम सवथावा जीव मनपर्यवज्ञानी सवमा थवो माधुने हुवे । तेहथो पवधिज्ञानी पसख्यातगणा मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी बेसरोखा पवधिज्ञानीथो विशेषाधिक । विभगना नो पसंखिज्जगुणा केवलनाचो पनंतगणा सायमाचो दोवितुल्ला पनन्तगणा दार १ । विभङ्गज्ञानी पसख्यातगणा मिथ्यात्वाम हुवे पिण सम्यग्ज्ञानी नथी तेम टे वासज्ञानी पनन्तगुणा सिद्ध भेलता मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी दाय सरोखा केवलज्ञानीथी पनन्तगुणा वनस्पतीमाटे इति ज्ञानद्वार

मपि कदाचित् आभिनिबोधिकश्रुतज्ञानभावात्, स्वस्थाने तु द्वयोरपि परस्परं तुल्याः जघन्यस्थानाय तत्समसुयनाय जघन्यसुयनाय तत्समस्थानाय मितियव मात् तस्मात् केवलज्ञानिनो ऽनन्तगुणा सिद्धानां अनन्तत्वात् उत्कृष्ट-ज्ञानानि मत्यज्ञानश्रुताज्ञानिनां तत्प्रतिपक्षभूतानां मत्यज्ञानिनां मत्यज्ञश्रुत माइ पर्यायान् मत। जीवाणं मइअन्नाणी मित्यादि ॥ सर्वस्तोका विभङ्गज्ञानिनः कतिपयानामेव नैरयिकदेवतिर्यक्पञ्चेन्द्रियमनुष्याणां विभङ्गज्ञा नात्, तस्मान्मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनो ऽनन्तगुणाः वनस्पतीनामपि मत्यज्ञानश्रुताज्ञानभावात्, स्वस्थाने तु परस्परं तुल्याः जघन्यस्थानाय त त्समपर्यायार्थं जघन्यसुयपर्यायार्थं तत्समस्थानाय मितिवचनात् मत्यश्रुतपर्याया ज्ञानाज्ञानिनां मत्यज्ञश्रुत माइ-पर्यायसिद्धं भंते। जीवाणं मित्यादि ॥ सर्वस्तोका मनःपर्यवज्ञानिनः संयतानामेव तस्य सर्वोपरिष्टाद् बादरप्रमाणानां मनःपर्यवज्ञानसद्भावात् तस्मात् ऽसंख्येयगुणा अवधिज्ञानिनः सर्वस्य ज्ञानिनि

सुयनाणीण ओहिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पावा? १ गोयमा! सव्व त्थोवा मणपज्जवनाणी ओहिनाणी असं० आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया केव लनाणी अणं०। एएसि णं भंते! जीवाणं मइअन्नाणीण सुयअन्नाणीण विभंगनाणीण य कयरे कयरेहिंतो

पर्व इत्यादि भावमा मानवाना जीवा मनपर्यवज्ञानी सर्वथी थोडा छे, केमके मनुष्यमां पण अप्रमत्त संयत मनःपर्यवज्ञानी होय छे, तेथी केवळ मनःपर्यवज्ञानी थोडा होय छे। अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा छे, केमके नारकी देवता तिर्यंच अने मनुष्यमां पण अवधिज्ञानी होय छे, तेमाटे आभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी अधिकतर विशेषाधिक छे। केवळज्ञानी अनंतगुणा छे। मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी परस्पर तुल्य छे अने मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी स्वस्थाने तुल्य छे, कारण अवधिज्ञानीओ विशेषाधिक केवळज्ञानीओ अनंतगुणा सिद्धोनी अपेक्षाए छे। हवे अज्ञानी मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी कहे छे—एएसि णं भंते जीवाणं मइअन्नाणीणं सुयअन्नाणीणं विभंग जीवना वगेरे २ विषे प्रश्न छे। गौतम! सर्वथी थोडा विभंगज्ञानी छे, मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी अनंतगुणा छे, वगेरे २ नो उत्तर इत्यादि। भावमा समजवाना विभंग ज्ञानी मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी तुल्य छे। गौतम! सर्वथी थोडा विभंगज्ञानी छे, कारण नारकी मनुष्य तिर्यंच तेमनो मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी छे

नोसंयता नोप्रसंयतासंयता अनन्तगुणा प्रतिपेधत्रययुक्ता ति सिद्धा स्ते घा मता इति तेभ्यो ऽसंयता अनन्तगुणा वनस्पतीनां सिद्धेभ्यो ऽनन्त स्यात् गत संयतद्वार, संप्रत्यु पयोगद्वार माह एएसिण भंते । जीवाण सागारोवउत्ताय मित्यादि ॥ इहा नाकारोपयोगः कालः सवस्तोकाः सा कारोपयोगकाल स्तु सङ्ख्येयगुणाः ततो जीवा अन्य नाकारोपयोगोपयुक्ताः सर्वस्तोकाः पृच्छासमये तथा स्तोकानामवा प्यमानत्वात्, तस्याः सा कारोपयोगोपयुक्ताः सङ्ख्येयगुणाः साकारोपयोगकालस्य दीर्घतया तेषां पृच्छासमये बहूनांप्राप्यमानत्वात् गत मुपयोगद्वार, मिदानी माहार द्वार-एएसिण भंते । आहारगाव मित्यादि ॥ सवस्तोका जीवा अनाहारका विग्रहगत्यापन्नादीनां मवा नाहारकत्वात्, तेभ्य आ-विग्रहगत्यभाव न्ना कवलिप्रमुख्यायोगीय सिद्धायमवाहारा सेधाआहारगाजीवा ॥ १ ॥ तस्य आहारका असङ्ख्येयगुणाः मनु वनस्पतिकायिकानां सिद्धेभ्यो

जीया सजया सजया ऋसजया ऋसखेजगुणा, नोसजता नोऋसजता नोसजतासजता ऋणतगुणा, ऋसज ता ऋणतगुणा, दार १२। एएसिण भंते । जीयाण सागारोवउत्ताण ऋणागारोवउत्ताणय कयरे२ हितो ऋप्पाया८ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीया ऋणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता सखिज्जगुणा, दार १३। एए

तासयतमे विशे २ वो वाचा घर्ता इत्यादि। गायमा सव्वत्थोवा जीवा संयतासयत पससिज्जगुणा नासयत नो धर्मत्रय घर्मतगुणा ना सयतासयत धर्मतमया घर्मत्रया घघतगुणा द्वार १२। कैतम सवमीवा जीव सयतासयत माचिसइस्स पुहुत्त मखसाए सख्यावमिति यवमात् देशविरति धर्म व्यातगो तिर्येच पंचेन्द्रिय वाय वस प्रतिपद्यवर्त्ती सिद्ध धनन्तगुणा तथ्वो धसयत धनन्तमना वनस्पतीनाममाठे तेभ्यो धसयत धभव्य धनन्तगुणा इति १२। एएसिण भंते जीवाणं सव्वत्थोवा सागारोवउत्ता घणागारोवउत्ताणय कयरे २ हिंतो धप्पावा ४। हेभगवन् एष जीवने साकारोपयोगोने घनाकारोपयोगोने विशे २ वो वाचा घर्ता इत्यादि। गायमा सव्वत्थोवा घणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता संखिज्जगुणा द्वार। हेगौतम सवथोडा जो व घनाकारोपयोगी इच्छासमय थाहाथामे तेथ्वो साकारोपयोगी संख्यातगुणा इच्छासमय धणा लाभे। एएसिण भंते जीवाण आहारगाणं घणाहा

स्यात्, तेषांच मत्यश्रामिश्रुताप्राप्तिमित्वात्, स्वस्थानेतु द्वावपि परस्परं तुल्या' गतं ज्ञानद्वार मिदानीं दर्शनद्वारमाह-एएसिणं भंते! जीवाणं चक्खु दंसणाण मित्यादि ॥ सर्वस्तोका अवधिदर्शनिनो देवनैरयिकाणां कतिपयानां च संज्ञिपंचेन्द्रियतिर्यग्मनुष्याणा मवधिदर्शनभावात् तेभ्यो चक्षुर्दर्शनिनो ऽसंख्येयगुणाः सर्वेषा देवनैरयिकगर्भजमनुष्याणां संज्ञितिर्यग्पंचेन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां च असंज्ञितिर्यग्पंचेन्द्रियाणां चक्षुर्दर्शनभावात् तेभ्यः केवल दर्शनिनोऽनन्तगुणाः सिद्धानामनन्तत्वात् तेभ्यो ऽचक्षुर्दर्शनिनो ऽनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानांसिद्धेभ्योप्यनन्तत्वात् गतं दर्शनद्वारं, अधुना संय तद्वार माह एएसिणं भंते! जीवाणं मित्यादि ॥ सर्वस्तोकाः संयता उत्कृष्टपदेपि तेषां कोटिसहस्रपृथक्त्वमात्रतया लभ्यमानत्वात् कोटिसहस्सपुहुत्त मणुसलोए संजयाण मितिवचनात् तेभ्यः संयतासंयता देशविरता असंख्येयगुणा तिर्यक् पंचेन्द्रियाणा मसंख्यातानां देशविरतिसद्भावात्, तेभ्यो

णा, दार १० । एएसिणं भंते ! जीवाणं चक्खुदंसणीणं अचक्खुदंसणीणं ओहिदंसणीणं केवलदंसणीणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा ओहिदंसणी चक्खुदंसणी असंखेज्जगुणा, केवलदंसणी अणंतगुणा अचक्खुदंसणी अणंतगुणा, दार ११ । एएसिणं भंते ! जीवाणं संजयाणं असंजयाणं संजयासंजयाणं नोसंजया नोअसंजया नोसंजयासंजयाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

१०। अथ भंते जीवोंमें चक्षुदर्शनीवाले अचक्षुदर्शनीवाले अवधिदर्शनीवाले केवलदर्शनीवाले कौन२ किससे अल्पादि ४। हे भगवन् एक चक्षुदर्शनी दर्शनद्वार कहते चक्षुदर्शनी अवधिदर्शनीमें अचक्षुदर्शनीमें किसी २ की बात कहा इत्यादि। गोयमा सबसे थोड़े जीव अवधिदर्शनी चक्षुदर्शनी असंख्यातगुणे। क्यों गौतम सबसे थोड़े जीव अवधिदर्शनी क्योंकी मनुष्य तिर्यंच देव नारकीमें इसे चक्षुदर्शनी असंख्यातगुणे चौरिन्द्रियादिकमें। केवलदर्शनी अनंतगुणा अचक्षुदर्शनी। केवलदर्शनी अनंतगुणे अचक्षुदर्शनी अनंतगुणे वनस्पति कायकाश्री इति ११। एएसिणं भंते जीवा संजयाणं असंजयाणं संजयासंजयाण नोसंजय नोअसंजय नोसंजयासंजय कयरे २ हिंता अप्पावा ४। हे भगवन् इन जीवोंमें संयतमें असंयतमें संयतासंयतमें नोसंयत नोअसंयतमें नोसंय

पर्याप्तिविनूना ऽपाद्दपुद्गलपरायत्तमामर्थ्यसारः कायपरीताः प्रत्येकशरीरिणः तथजघयविपरीताः सवस्तोकाः शुक्लपाक्षिकार्णा प्रत्येकशरीरिका च ये पञ्चीवापमपा तिसाकत्वात् ततो नापरीता नाअपरीता अनन्तगुणा उभयप्रतिषेधवृत्ता रव सिद्धा स्ताथा मता इति तभ्यो ऽपरीता अनन्तगुणाः कृष्णपाक्षिकार्णा साधारणवनस्पतीना वा सिद्धभ्यो ऽनन्तगुणत्वात् गत परीतद्वारं । सम्प्रति पर्याप्तिद्वारं—एएसिण भंत । जीवाण पज्जत्तगाण मित्यादि ॥ सवस्तोका नोपर्याप्तका नोअपर्याप्तका उभयप्रतिषेधवर्तिनो हि सिद्धा स्ताथा पर्याप्तकादिभ्यः सवस्तोका इति तभ्यो ऽपर्याप्तका

कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा परित्ता नोपरित्ता नोअपरित्ता अणंतगुणा अपरित्ता अणंतगुणा, दार १६ । एएसिणं भंते । जीवाणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं नोपज्जत्ता नोअपज्जत्ता णय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा नोपज्जत्तगा नोअपज्जत्तगा अपज्जत्तगा

वाद्य भावभावव सम्यसम्यम बेंद्रियादिव तेइन्वी समायव अनन्तगुणा वनस्पती भेसता इति १५ आपद समाप्त, हिव प्रत्येकद्वार कहछे—एएसिण भंत जीवाणं परित्ताव अपरित्ताव नापरित्ता परित्तापव कयर २ हिता अप्पावा ४ । हे भगवन् एह जीव परित्त अपरित्त दायभट भवपरित्ता काय परित्ता तिवां भवपरित्ता जेहन ससा अहपद्दल बंधिय कायपरित्ता प्रत्येकजीवना परित्ता अपरित्ता सिद्ध कहिये एहमाहि किया २ थी थाडा ब वा इत्यादि प्रश्न विमयाधिक पूर्व । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा परित्ता नापरित्ता २ अनतगणा अपरित्ता अनतगणा द्वार १६ । हे गोतम सर्वथोडा आर मुक्तपणो प्रत्येकशरीर दाय प्रतिपेधवर्ती सिद्ध ते अनन्त तइथो अपरित्ता अपरित्ता अनन्तगणा साधारण वनस्पती भेलता इति प्रत्येकद्वार १६ । एएसिण भंत जीवार्ण पज्जत्ताव अपज्जत्ताव नो पज्जत्ता २ कय कयरे २ हिता अप्पावा ४ । हे भगवन् एह जीव पर्याप्ता अपर्याप्ता न छोय प्रतिपक्षो सिद्ध अपर्याप्ता पर्याप्ता किया २ थी थाडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा नो पज्जत्तगा नो अपज्जत्तगा अपज्जत्तगा अणतगुणा पज्जत्तगा स ङ्खिज्जगुणा द्वार १७ । हे गोतम सर्वथोडा जीव उभयप्रतिपक्षी सिद्ध अपर्याप्ता सिद्धथाडा तेहथी अपर्याप्ता अनन्तगुणा साधारणवनस्पती भणी तइथी सख्या

ण नन्तत्वात्, तेषांच एकस्मिन्नपि सम्भवमानत्वात् कथमनन्तगुणा न भवति तदयुक्तं वस्तुतत्त्वापरिज्ञानात्, इह सूक्ष्मनिगोदाः सर्वसङ्ख्यया व्य मनुष्याः तथा व्यवहारपमपराशितुल्याः सूक्ष्मनिगोदाः अवकाशविग्रहे वर्तमाना लभ्यन्ते ततो नाहारका अप्यतिबहव सकलजीवराश्यसङ्ख्येय गतुल्या इति तस्य आहारका असङ्ख्येयगुणा नव नानन्तगुणा गत आहारद्वार अनाहारकद्वार भाष-पर्याप्त भंत । जीवाण भासगाण मित्यादि सवन्तोका भाषका भाषालब्धिमन्तो द्वीन्द्रियादीना मवभाषकत्वात् अभाषका भाषालब्धिहीना अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकाना मनन्तत्वात् गत भाषकद्वारं, संप्रति परीत्तद्वार माह-एएसिण भंत । जीवाण मित्यादि ॥ इह परीत्ता द्विविधा, भवपरीत्ता कायपरीत्ता च तत्र भवपरीत्ता

गिण भंते । जीवाण आहारगाण अणाहारगाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अणाहारगा आहारगा असंखिज्जगुणा, दार १४ । एएसिण भंते ! जीवाण भासगाण अभासगाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा भासगा अभासगा अणंतगुणा, दार १५ । एएसिण भंते ! जीवाण परित्ताण अपरित्ताण नोपरित्ता नोअपरित्ताणय

नमाहार अवर २ थिका अल्पाछ ४ । हेभगवन् एह जीवने आहारीने किसी २ थाका घना तुल्यादि । गोयमा सर्वस्तोका जीवा अनाहारगा आहारगा असंख्यगुणा । हेगौतम सर्वथोडा जीव अनाहारी विग्रहगति आहारकथी तथा सिद्ध अनाहारी गाथा—विग्गहगइमावन्ना केवलिणोसमुहयाअयोगी य सिद्धायअणाहारा सेसाआहारगाजीवा इति वचनात् तेहथी आहारीजीव असंख्यातगुणा छे अनन्तगुणा नथी तेजिम सूक्ष्मनिगोद सवकाले वि ग्रहगति वर्तमानपणे तमाटे अनाहारी घना पिण सर्वजीवराशि असंख्यातभाग तुल्य छे तेमथी आहारकजीव असंख्यातगुणा जाणे पिण अनाहारीथी अनन्तगुणा समाभे ए आहारकद्वार १४ मो कह्यो । एएसिणं भंते भासगाण अभासगाणय कयरे २ थिका अल्पाछ ४ । हेभगवन् जीवाने भाषकाने बलो अभाषकाने किसी २ थी थाका घना तेह मनु ठिकं गरबो तुल्यादि । गोयमा सव्वत्थोवाजीवा भासगा अभासगा अणंतगुणा दार १५ । ए जिम सर्व

म्यो प्यनन्तगुणत्वात्, गत प्रमतिद्वारं १८। इदानीं जवसिद्धिकद्वार माह-एएसिणं भंते। जीवाण भवसिद्धियाण मित्यादि॥ सर्वस्तोका अभवसिद्धिका: यतस्ते जघन्ययुक्तानन्तकपरिमाणत्वात् अत्र वा सुयोगद्वारेषु उत्कोसयपरित्ताणं रूवेपक्खित्तं जहन्नयजुत्ताणंतयं होइ अभव सिद्धियावित्तियायं ति तस्मा नोभवसिद्धिका नोअभवसिद्धिका अनन्तगुणा यत उभयप्रतिषेधवृत्तय: सिद्धा स्तेचा ऽजघन्योत्कृष्टयुक्तानन्तकपरिमाणा इत्य नन्तगुणा तस्मा भवसिद्धिका अनन्तगुणा यतो भव्यनिगोदस्ये कस्या अनन्तभागकल्पा: सिद्धा भव्यजीवराशिनिगोदा या संख्या लोके इति एवं

दार १९। एएसिणं भंते! जीवाणं भवसिद्धियाणं अभवसिद्धियाणं नोभवसिद्धिया नोअभवसिद्धियाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा अभवसिद्धिया नोभवसिद्धिया, नोअभवसिद्धिया अणंतगुणा भवसिद्धिया अणंतगुणा, दार २०। एएसिणं भंते! धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगास

त्थि० १ यो जीवा यावत् इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा यतो नागपी नागपरो अनन्तगुणा अमरो भवनगुणा द्वार १८। हे गौतम सर्वस्तोका जो अभव्य अनन्ता धरो नामनी मा पक्षो सिद्ध अनन्तगुणा उभयवर्जी तहनो पक्षो अनन्तगुणा इति समोद्वार १८ मा पूरामया। एएसिणं भंते जीवाणं भवसिद्धिया अभवसिद्धियाण ना भवसिद्धिया ना अभवसिद्धियाणय कयरे २ हिंता अप्पावा ४। हे भगवन् जीवमें भवसिद्धमें अभवसिद्धमें नहीं भवसिद्ध नहीं अभवसिद्ध उभयप्रतिषेधवर्ती सिद्धमें त्थि० १ यो जाव यावत् इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा अभवसिद्धिया नोभवसिद्धिया नोअभवसिद्धिया अणंतगुणा भवसिद्धिया अणंतगुणा द्वार २। हे गौतम सर्वथी थोडा अभव्य जीव युक्तानन्त प्रमाणके तेहथी उभय प्रतिषेधो सिद्ध अनन्तगुणा तेमथी अ प्याहार युक्तानन्त प्रमाणके तमाटे अनन्ता तेहथी भव्यसिद्ध अनन्ता जभयो भव्य एक निगोदमें अनन्तमेंभागके इति भव्यसिद्धि, हिवे अस्तिकाय न रा—एएसिणं भंते धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पुग्गलत्थिकाय अद्धासमयाण दव्वठ्ठाए कयरे २ हिंता अप्पावा ४। हे भग न् एहने धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय अद्धासमय ६ इनको त्थि० २ यो यावत् यावत् इत्यादि। गोय

मनन्तगुणाः भापारगयमरपतिषापिज्ञाना सिद्धभ्योगमन्तगुणानां सवकालमपर्याप्तत्वेन लभ्यमानत्वात् तेभ्य पर्याप्ता संख्येयगुणा इह सर्वस्तोको जीवा सूक्ष्माः सूक्ष्माप मवकाल मपर्याप्त ५ः पर्याप्ताः संख्येयगुणा इति। सम्यगवगन्तव्या गत पर्याप्तिद्वार १७। सम्प्रति सूक्ष्मद्वार-एएसिण भंते। जीवाणं सुहुमाण मित्यादि॥ सर्वस्तोका जीवा नोसूक्ष्मा नोबादराः सिद्धास्त्यथ तथा सूक्ष्मजीवराशि बादरजीवराशि यो मनन्तभागकल्पत्वात् तेभ्यो बादरा अनन्तगुणा बादरनिगोदजीवानां सिद्धेभ्यो मनन्तगुणत्वात् तेभ्यः सूक्ष्मा असंख्येयगुणा बादरनिगोदेभ्य सूक्ष्मनिगोदाना मसंख्येयगुणत्वात् गत सूक्ष्मद्वार १८। इदानीं संज्ञिद्वार-मभिधित्सुराह। जीवाण सन्नीण मित्यादि॥ सर्वस्तोकाः संज्ञिनः समनस्कानामेव संज्ञित्वात् तेभ्यो नोसंज्ञिनो नोऽसंज्ञिनो ऽनन्तगुणा उभयप्रतिषेधवृत्ता हि सिद्धा स्तेच संज्ञिभ्यो ऽनन्तगुणा भवति तेभ्यो ऽसंज्ञिनो ऽनन्तगुणा वनस्पतीनां सिद्धे

अणतगुणा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा। एएसिण भंते! सुहुमाण बादराण नोसुहुमाण नोबादराणय कयरे२हिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा नोसुहुमा नोबादरा, बादरा अणतगुणा सुहुमा असंखेज्जगुणा, दार १८। एएसिण भंते! जीवाण सन्नीण असन्नीण नोसन्नीण नोअसन्नीणय कयरे कयरे हिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा सन्नी नोसन्नी नोअसन्नी अणतगुणा, असन्नी अणतगुणा।

मनन्तगुणा पर्याप्ता इति पर्याप्तिद्वार संपूर्ण हुआ, हिवे सूक्ष्मद्वार १८ मा कहवे—एएसिण भंते सुहुमाण बादराणं ना सुहुमाण बादराणय कयर २ हिंतो अप्पावा ४। हेमगवन् एन सूक्ष्मबादरने उभयप्रतिषेधवर्ती सिद्धने किहां २ थी थाडा बहा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा ना सुहुमा ना बादरा बा सिद्ध अनन्तगुणा सूक्ष्मा असंख्येयगुणा बार। इमीतम सर्वथा थोडा जीव उभय प्रतिवर्ती सिद्धमा तेहथी सूक्ष्मबादर जीवराशिने अनन्तसेभागे सिद्ध छे ते हथी बादर अनन्तगुण निगोदिया तेहथी सूक्ष्मनिगोद असंख्यातगुणा छे इति १ पद सूक्ष्मद्वार १८मा कह्या हिवे सन्नीद्वार कहवे—एएसिण भंते जी वाण सन्नीण असन्नीणं नो सन्नीण ना असन्नीणय कयरे २ हिंता अप्पावा ४। हेभगवन् एन जीव मनोपर्याप्तीने संज्ञी असंज्ञी उभयवर्ती सिद्धने

तया चोक्त प्रदेशो सर्वस्तोका पुग्गलापयोगपरिणया मीसपरिणया अनन्तगुणा वीससापरिणया अनन्तगुणा इति । ततो प्रयति जीवास्तिकायात् पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया अनन्तगुणः, तस्मादप्य द्धासमयो द्रव्यतया अनन्तगुण कथ मितिचत् उच्यते–इह एकस्यैवपरमाणो रनागतेकाले तत्तद् द्व्यप्रदेशिकत्रिप्रदेशकयाय द्व्यप्रदेशक सङ्ख्यातप्रदेशका असङ्ख्यातप्रदेशका अनन्तप्रदेशकस्कन्धान्तःपरिणामितया अनन्ता भाविनः संयोगाः पृथक् २ कालाः कयसंयोगोपलक्ष्या यथा चैकस्य परमाणो स्तथा सर्वेषां प्रत्येकं द्विप्रदेशकादिस्कन्धानां च अनन्ताः संयोगाः पुरस्कृताः पृथक् २ कालावपलक्ष्याः स सर्वेषामपि मनुष्यक्षेत्रान्तर्वर्तितया परिणामसम्भवात्, तथा अयतो व्यय परमाणु रमुष्मिन् आकाशप्रदेशे अमुष्मिन्काले अवगाहिष्यते इत्यव मन ताः एकस्य परमाणो भाविनः संयोगा यथैकस्य परमाणो स्तथा सर्वेषां परमाणूनां तथा द्विप्रदेशकादीनामपि स्कन्धानां मनन्तप्रदेशस्कन्धपर्यन्ता नां प्रत्येकं तत्तदेकप्रदेशाद्यवगाहभेदतो भिन्न २ काला अनन्ता भाविन संयोगा स्तथा कालतो व्ययं परमाणु रमुष्मिन् काले प्रदेशो एकसमयस्थि

कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए एएसिण दोवि तुल्ला पदेसठयाए स व्वत्थोवा जीवत्थिकाए पदेसठयाए अणतगुणा पोग्गलत्थिकाए पदेसठाए अणतगुणा अद्धासमए पदेसठ

मपरिणता अपरिणता अनन्तगुणाधी ससापरिणया अनन्तगुणा इति एवं परमाणु अनन्ताकाले तिष्ठतु एव इम सख्यात अनन्त प्रदेशस्कन्ध परमाणनते अनन्तभावा यथासंक्षेपेण ए दोठा इम सर्वे मनुष्यक्ष पुद्गल च अनन्तप्रदेशस्कन्ध असत भावोसकाल पूर्व अनन्तकाल समान इम इत्यादिक सदन आविना द्रव्यतो अम बहुल अल्पा, किवे प्रदेशतो अल्प बहुल कहेछे । एएसिणं भंते धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय अद्धासमयाणं एव पएसठयाए कयरे २ हिता अप्पाबा ४ । हेभगवन् एव धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय अद्धासमय प्रदेशार्थे किहां २ थी थोड़ा घणा इत्यादि । गोयमा धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय एहच ए बहुबिहुमां । सर्वोतम धर्मास्तिका य अधर्मास्तिकाय ए दोय सरीखाछे । पएसठयाए सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए पएसठ याए अनन्तगुण पुग्गलत्थिकाए पएसठयाए अणंतगुणे अद्धासमए प

प्रवसिद्दिकद्वारं २७। सांप्रत मस्तिकायद्वार माह-एएसिण भंते। धम्मत्थिकाये त्यादि धमास्तिकायो ऽधमास्तिकाय आकाशास्तिकाय एते त्र यो ऽपि द्रव्यार्थतया द्रव्यमेवा र्थोद्रव्याय स्तस्यभावो द्रव्यार्थता तया द्रव्यरूपतया इत्यर्थः, तुल्या समानाः प्रत्येक मेकसंख्याकत्वा दतएव सर्वेस्तो का स्तेभ्यो जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतया मनंतगुणः जीवानां प्रत्येक तद्द्रव्यत्वात्तया च जीवास्तिकाय ऽमनंतत्वात् तस्मादपि पुद्गलास्तिकायो द्रव्या र्थतया ममंतगुणः कथ मितिचत् उच्यते-इह परमाणु द्विप्रदेशकादीनि पृथक् २ द्रव्याणि तानि च सामान्यत स्त्रिधा तद्यथा-प्रयोगपरिणतानि मिश्रपरिणतानि विस्रसापरिणतानिच तत्र प्रयोगपरिणतान्यपि तावज्जीवेभ्यो ऽनंतगुणानि एकैकस्य जीवस्य मनंत प्रत्येक ज्ञानावरणीयादिकर्म तु पुद्गलस्कंधै रावेष्टितत्वात् किंपुनः शेषाणि ततः प्रयोगपरिणतेभ्यो मिश्रपरिणतान्य नंतगुणानि तेभ्यो पि विस्रसापरिणतान्य मनंतगुणानि,

---

त्थिकाय जीवत्थिकाय पुग्गलत्थिकाय श्रद्धासमयाण दव्वठयाए कयरे कयरेहितो श्रप्पावा४ ? गोयमा! धम्मत्थिकाए श्रधम्मत्थिकाए श्रागासत्थिकाए एए तिन्निवि तुल्ला दव्वठयाए सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए दव्व ठयाए श्रणतगुणे, पुग्गलत्थिकाए दव्वठयाए श्रणतगुणे श्रद्धासमए दव्वठयाए श्रणतगुणे। एएसिण भंते! धम्मत्थिकाय श्रधम्मत्थिकाय श्रागासत्थिकाय जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए श्रद्धासमयाण पदेसठयाए

माधर्मास्तिकाय धर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय एएत्र तिनवितुला द्रव्यार्थाए। ए त्रणेतम धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय ए ३ द्रव्यार्थपणे द्रव्यरूपपणे २ १ सरीखा छे सर्व्यात्तपणामाटे। सर्वथोडा जीवास्तिकाय द्रव्यार्थपणे अनंतगुणा पुद्गलास्तिकाय द्रव्यार्थपणे अनंतगुणा श्रद्धासमय द्रव्यार्थपणे अनंतगुणा। सर्वथोडा जीवास्तिकाय द्रव्यथी अनंतगुणा छे जीवास्तिकायथी पुद्गलास्तिकाय द्रव्यार्थपणे अनंतगुणा तेमाटे परमाणु २ प्रदेशादि प्रयोगपरिणत मिश्रपरिणत विस्रसापरिणत ३ तिहां ज प्रयोगपरिणत ते जीवथी अनंतगुणा छे जिमाटे एकेकाजीवने अनंत ज्ञानावरणा दिक कर्म स्कंध वेष्टितछे ते प्रयोगपरिणतथी मिश्र अनंतगुणा तेहथी विस्रसा परिणत अनंतगुणा तथा- श्रद्धा समयथी पुद्गल प्रदे

मायूनां च द्विप्रदेशकादीनां स्कन्धानां प्रत्येकं द्रव्यक्षेत्रकालभावविशेषसर्यवशात् अनन्तानन्तामी द्धासमया सर्वा अतीता अपीति सिद्धः पुद्गला सिकायाद् अनन्तगुणो द्धासमयो द्रव्यार्थतयेति । एवं-द्रव्यार्थतया परस्परं सत्यमतुल्य मिदानीं अतपामय प्रदेशार्थतया तदाह-एएसि णं भंते ! ध स्तिकाय त्यादि ॥ धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि परस्परं प्रदेशार्थतया तुल्यौ द्वयोरपि लोकाकाशप्रदेशत्वात् धर्मास्तिकाया ऽद्धासमयापचया च सर्वस्तोकौ ततो जीवास्तिकाय प्रदेशार्थतया अनन्तगुण जीवास्तिकाय जीवानां अनन्तत्वात् एकैकस्य जीवस्य लोकाका शप्रदेशपरिमाणप्रदेशत्वात् तस्मादपि पुद्गलास्तिकाय प्रदेशार्थतया अनन्तगुणः कथ मिति उच्यते-इहैकस्कन्धप्रदेशा अपि तावत्सर्वजीवप्रदेशाभ्यो ऽनन्तगुणा एकैकस्य जीवप्रदेशास्या नन्तानंतैः कर्मपरिमाणुभि रावेष्टितपरिवेष्टितत्वात् किंपुनः सकलपुद्गलास्तिकायप्रदेशाः ततो भवति जी वास्तिकाया त्पुद्गलास्तिकायः प्रदेशार्थतया अनन्तगुण तस्मादप्य द्धासमयः प्रदेशार्थतया अनन्तगुण एकैकस्य पुद्गलास्तिकायप्रदेशस्य प्रागुक्तक्रमेण सतद्रव्यक्षेत्रकालभावविशेष सर्वपर्यावतो ऽनन्तानां मतीताद्धासमयानां मनन्तानां मनागतसमयानां भावात् तस्मा दाकाशास्तिकायप्रदेशार्थतया

सठयाए कयरे कयरेहिंतो ऋप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे एगे ऋधम्मत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदे सठयाए ऋसंखिज्जगुणे। एतस्सणं नंते! ऋागासत्थिकायस्स दव्वठपदसठयाए कयरे कयरेहिंतो ऋप्पावा४

द्रव्यार्थप्रदेशार्थ च भो भगवन् किसौ २ थी थोडा घणां इत्यादि । गौतम सर्वस्तोका धर्मास्तिकाय द्रव्यार्थपणे तेहिज प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा । सर्व थी थोडो धर्मास्तिकाय द्रव्य थकी एकमाटे ते धर्मास्तिकाय प्रदेश थकी असंख्यातगुणो लोकाकाश । एहनुं भगवन् अधर्मास्तिकायनुं द्रव्यार्थप्रदेशार्थप कयरे २ हिता अल्पावा ४ । भगवन् एहने अधर्मास्तिकाय द्रव्य थी प्रदेश थी किसौ २ थी अल्प घणां इत्यादि । गौतम सर्वस्तोका एक अधर्मास्तिकाय द्रव्यार्थ तेहिज प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा । सर्वथी थोडो एक अधर्मास्तिकाय द्रव्य थी एकमाटे अधर्मास्तिकाय प्रदेश थी असंख्यातगुणो लोकाका श प्रदेशप्रमाणथी । एहनुं भंते आकाशास्तिकायनुं द्रव्यार्थ प्रदेशार्थप कयरे २ हिता अल्पावा । भगवन् एह आकाशास्तिकायना द्रव्य थी प्रदेश थी कि

नित्र इत्येव मेकस्यापि परमाणो रेकस्मिन्नाकाशप्रदेशे सप्येया भाविन संयोगा एव सर्वेष्वप्या काशप्रदेशेषु प्रत्येकमसंख्यया भाविमः संयोगा इत ता नूपोभूय सपाकासप्रदशेषु परावृत्तौ कालस्या नन्तत्या वनन्ताः कालतो भाविनः संयोगा यथा चैकस्यपरिमाणो सपा सवपा परमाणूना स र्वेषा च प्रत्यर्क द्विप्रदेशकादीनां स्कन्धाना, तथा भावतो प्य य परमाणुरमुष्मिन्काले एकगुणकालको भवती रयव मकस्यापि परमाणो चित्र २ कामा पमतोः भयाना, यथा चैकस्यपरमाणो तथा परमाणूना सर्वेषाच द्विप्रदेशकादीना स्कन्धानां पृथक् २ पनता भावतः पुरस्कृताः संयोगाः तद्‌व मकस्यापि परमाणो द्रव्यक्षेत्रकालभावविशेषसंयवश्च दनन्ता भाविनः समयाउपसंख्या, यथैकस्य परमाणो सथा सर्वेषा परमाणूनां सर्वे षाच प्रत्यय द्विप्रदेशकानां स्कन्धाना नवै तत्परिणामकालवस्तुव्यतिरेकपरिणामिपुद्गलास्तिकायादि व्यतिरक्त चोपपद्यन्ते ततः सर्वेमिद च तात्त्वि क मवमर्च । तत्रैव-सपाम‌पुरस्कार य नाम भाविनि इ युज्यते कालम हि संयोगपुरस्कारो इसता कथापि तुपपन्न इति । यथा च सर्वेषा पर

याए अणतगुणा आगासत्थिकाए पदेसठ्ठाए अणतगुणा । एएसिण भंते ! धम्मत्थिकायस्स दव्वठ्ठयाए पदे सठ्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विससाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगे धम्म त्थिकाए दव्वठ्ठयाए सोचेव पदेसठ्ठयाए असखिज्जगुणा । एएसिण भंते ! अधम्मत्थिकायस्स दव्वठ्ठयपदे

एकाशाए पर्वतमधे पागासत्थिकाए पदेसठ्ठाए अणतगुणे । प्रदेशतको साकाशप्रदेश परिमान सवकाश जीवास्तिकायपदगाय पनन्तगुणा जो क्ता पनन्ता भारे एकैका जीवमाप्रदेश लाकाकाशप्रदेश प्रकाशके पुद्गलास्तिकायप्रदेशाव पनन्तगुणा पनन्ताकमना परमाणु कारावेष्टितो एकैका जो कनाप्रदेश तेमाटे पनन्ता पुद्गलास्तिकाय थकी पद्धासमय प्रदेशार्थे पनन्तगुणा वुवे पाकाशास्तिकाय पनन्ताके किवे द्रव्याश प्रदेशाकपायो परस्परे पन्न मप्तलववे—पाकाशास्तिकाय प्रदेशथी पनन्तगुणा पोकवता पनन्तामावको तेवको पद्धासमय पनन्तगुणाप्रदेशथी पनन्ता पनागतसमयमें भा क तेहपो पद्धासमया पनन्तगुणा । एएसिण भंत धम्मत्थिकायस्स दव्व पएसठ्ठाए कयरे २ हिंता पप्पावा ४ । वेभमवन् एव धमास्तिकायादिकनी

या अनंतपएसियाणंधा दव्वट्ठयाए परिमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अनंतगुणा संखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा इति ततो यदा सर्व एव पुद्गलास्तिकायाः प्रदेशार्थतया चिन्त्यते तदा अनंतप्रदेशकानां स्कन्धानामतिस्तोकत्वात्परमाणूनां चातिबहुत्वात् तेषां च पृथक् २ द्रव्यत्वात् असंख्येयप्रदेशकानां च स्कन्धानां परमाण्वपेक्षया असंख्येयगुणत्वात् दशसंख्येयगुण एवो पपद्यत इत्यनंतगुणः अद्धासमए न पुच्छिज्जइति । अद्धासमयो द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया न पृच्छ्यते कुत इत्याह-प्रदेशाभावात्, आह च यो च अद्धासमयानां द्रव्यार्थतामिच्छतो यावता प्रदेशार्थता पि तथा विद्यते एव तथाहि-यथा अनंतानां परमाणूनां समुदायस्कन्धो भण्यते स च द्रव्यं तदवयवा च प्रदेशास्तथ इहापि सकलः कालो द्रव्यं तदवयवाश्च समयाः प्रदेशा इति । तदयुक्तं दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकवैषम्यात्परमाणूनां समुदाये तदा स्कन्धो भवति यदा ते परस्परसापेक्षतया परिणमंते परस्परनिरपेक्षाणां केवलपरमाणूनामिव स्कन्धत्वायोगात् अद्धासमयास्तु परस्परनिरपेक्षा एव वर्तमानसमयभावे पूर्वापरसमययो रभावात् ततो नस्कन्धत्वपरिणाम स्तदभावाच्च नाद्धासमयाः प्रदेशाः किंतु पृथक्द्रव्याण्येवेति सम्प्रत्यमीषां धर्मास्तिकायादीनां सर्वेषां युगपद्द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया स्वल्पबहुत्व माह एयसिण भंत । इत्यादि ॥ धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय

हितो अप्पाया८ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए सोचेव पदेसट्ठयाए असंखिज्जगुणा अद्धासमए ण पुच्छिज्जइ पदेसाभावा । एएसिण भंते ! धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीव

द्रव्यपणे सर्वथी थोडामाटे तेथकी परथकी प्रदेशद्रव्य पुद्गलना असंख्यातगणां हुवे तेविम परमाणुआ अने अनंतप्रदेशिया स्कन्धना थोडामाटे असंख्यातप्रदेशस्कन्ध संख्यातघणामाटे असंख्यातगणां हुवे पिण अनंतानंतगुण न थाये द्रव्यासमय द्रव्य प्रदेशार्थपणो न पूछिये प्रदेश अभावथी जेमाटे अनंता परमाणुआने स्कन्धकहिये ते द्रव्य तेहना अवयव ते प्रदेश कहिये ते अद्धासमय अन्यमा अयोगथी तेम ए द्रव्यप्रदेशना विशेष नथी हिव द्रव्य थी धर्मास्तिकायादिकना द्रव्यथी प्रदेशना एकठोदोय अल्प बहुत्व कहेछे—एएसिण भंत धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पुग्गल

पागमागमः धर्मास्तिकायस्य सर्वतोऽप्यनन्तत्वाभावात्, एतत् प्रदेशार्थतया व्यस्पबहुत्व मिदानीं प्रत्येकं द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया ल्पबहुत्व माह-एएसिणं भंते ! इत्यादि॥ धर्मास्तिकायो द्रव्यार्थतया एकत्वात् प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणो लोकाकाशप्रदेशपरिमाणप्रदेशात्मकत्वा देवं अधर्मास्तिकायस्य अपि आकाशास्तिकायो द्रव्यार्थतया सर्वस्तोक एकत्वात् प्रदेशार्थतया अनन्तगुणो ऽपरिमितत्वात् जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतया सर्वस्तोक प्रदेशार्थतया असंख्येयगुण प्रतिजीव लोकाकाशप्रदेशमानत्वात् तथा सर्वस्तोकः पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया द्रव्याणां सर्वत्रापि स्तोकत्वात् अयं पुद्गलास्तिकाय स्तद्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया चिन्त्यमानो ऽसंख्येयगुण ननु यस्य खलु अनन्तानन्तप्रदेशका अपि स्कन्धा विद्यन्ते । ततो ऽनन्तगु णः कस्मा न्नभवति तदयुक्त-वस्तुत्वापरिमाणा दिप हि स्कन्धा अनन्तप्रदेशकाः स्कन्धा परिमाणत्वादपरत्वातियश्च तथा वस्यति अत्र सङ्कल्या

१ गोयमा ! सव्वत्थोवे एगे आगासत्थिकाए दव्वठ्याए सोचेव पदेसठ्याए अणतगुणा, एतस्सण भंते ! जीवत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे जीवत्थिकाए दव्व ठयाए सोचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणा, एतस्सण भंते ! पुग्गलत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे २

वा २ जो जाव यथा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवे एगे आगासत्थिकाए दव्वठ्याए सोचेव पदसठ्याए अणंतगुणे । हे गौतम सर्वथाकः आकाशास्तिका य द्रव्यपणाइ आकाशास्तिकाय प्रदेशथी अनंतगणे अपरिमितमाटे । एएसिणं भंते जीवत्थिकायस्स दव्वठ्याए पएसठ्याए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एक जीवास्तिकाय द्रव्यथी प्रदेशथी किशो २ थी थोडाछे । गोयमा सव्वत्थोवे जीवत्थिकाए दव्वठ्याए सोचेव पएसठ्याए असंखिज्जगुणे । हेगौतम सर्वथोडा जीवास्तिकाय द्रव्यथी ते जीवास्तिकाय प्रदेशथी असंख्यातगणा प्रतिजीव ते आकाशना प्रदेशप्रमाण प्रदेशपणे । एएसिणं भंते पुग्गल त्थिकायस्स दव्वठ्याए पएसठ्याए कयरे २ हिंता अप्पावा ४ । हेभगवन् एक पुद्गलास्तिकाय द्रव्यथी प्रदेशथी किशो २ थी थोडा यथा इत्यादि । गोयमा स व्वत्थोवे पुग्गलत्थिकाए दव्वठ्याए सोचेव पएसठ्याए असंखिज्जगुणे पुद्गलसमय न परिभ्रमण पएसाभावा । हेगौतम सर्वथोडा पुद्गलास्तिकाय द्रव्यथी

माए एगविधं मते । जीवाण परिमाण मित्यादि ४ इह यथा परिभोगवा सम्वी योग्यतयापि ते चरमा उच्यन्ते-तेषा चाद्भ्या इतर ऽचरमा भव्याः सिद्धा च उभयथापि चरमाचरमत्वाभावात् तत्र सर्वस्तोका अचरमा अभव्यानां सिद्धानां च समुदितानाम प्यजघन्योत्कृष्टयुक्तानन्त परिमाणत्वात् तेभ्यो ऽनन्तगुणा चरमा अजघन्योत्कृष्टानन्तानन्तपरिमाणत्वात्, गतं चरमद्वार, अधुनाजीवद्वार माह-एएसिणं भंते । जीवाण पोग्गलाण मित्यादि ७ सर्वस्तोका जीवा स्तभ्यः पुद्गला अनन्तगुणाः २ तेभ्यो ऽद्धासमया अनंतगुणा अत्रभावना प्रागेवकृता ३ तभ्यो ऽद्धासमयेभ्यः सर्वद्रव्याणिविशेषाधिकानि कथ मितिचेत् उच्यते-इह यथा अनन्तरमद्धासमयाः पुद्गलेभ्यो ऽनन्तगुणा उक्ता स्तेप्रत्येकं द्रव्याणि ततो द्रव्यचिन्तायां तापिपरिगृह्यन्ते तत्र च मध्ये सर्वजीवद्रव्याणि सर्वपुद्गलद्रव्याणि धर्माधर्माकाशास्तिकायद्रव्याणि च प्रक्षिप्यन्ते तानिच समुदितान्यप्य द्धासमयानां मनंतभागकल्पानी ति तेषु प्रक्षिप्तेष्वपि समागधिकत्व जात मित्यद्धासमयेभ्यः सर्वद्रव्याणि विशेषाधिकानि ५। तभ्यः सर्वप्रदेशा अनंतगुणा आकाशानंतत्वात ५ तभ्य सर्वपर्याया अनंतगुणा एकैकस्मिन्नाकाशप्रदेश ऽनन्ताना मगुरुलघुपर्यायाणा भावात् ६ गत जीवद्वार मधुनाक्षेत्रद्वारमाह-

---

धम्मत्थिकाएय एएण दोवितुल्ला पदेसठयाए असंखेज्जगुणा, जीवत्थिकाए दव्वठयाए अणंतगुण सो चेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणे पोग्गलत्थिकाए दव्वठयाए अणंतगुण सोचेव पएसठयाए असंखेज्जगुणे

हिवे चरमद्वार कहेछे—एएसिणं भंते जीवाणं चरमाण अचरमाणय कयरे २ जिता अप्पावा ४ । हेभगवन् एह चरमभव जेहनो ते चरम ते भव्य कहिये अचरम ते अभव्य ते सिद्ध कहिये किसो २ थी थोडा २ छे । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा अचरमाचरमा अणंतगुणा द्वार । हेगोतम सव थोडा सिद्ध अने अभव्याश्रय जघन्य परमाणवे चरमभव्य अनंतगुणा अजघन्याश्रय जघन्य प्रमाणवतो इति चरम तीसरे पदे २२ मो द्वार पूरो थया । हिवे जीवद्वार कहेछे—एएसिणं भंते जीवाणं पग्गलाणं । हे भगवन् एह जीवारा पग्गलों। अद्धासमयाणं सव्वदव्वाण सव्वपएसाण। अद्धासमयके सवपर्याय में सवद्रव्य सवप्रदेशाने। पज्जवाणय कयरे २ जिता अप्पावा ४। किसो २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा पुग्गला अणंतगुणा।

एत ग्रयोपि द्रव्यार्थतया तुल्याः सर्वस्तोकाश्च प्रत्येकमेकसंख्याकत्वात् ३ । तेभ्यो धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि प्रदेशार्थतया ऽसं ख्यगुणौ स्वस्थाने तु परस्परं तुल्यौ ताभ्यां जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतया अनन्तगुणः अनन्तानां जीवद्रव्याणां भावात् ६ स एव जीवास्तिकायः प्रदेशा र्थतया असंख्येयगुणः प्रतिजीवमसंख्येयानां प्रदेशानां भावात् ७ । तस्मादपि प्रदेशार्थतया जीवास्तिकायात् पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया अनन्तगु णः प्रतिजीवप्रदेशं प्राभावरजीवाश्रितमपुद्गलस्कन्धानामप्यनन्तानां भावात् ८ । स एव पुद्गलास्तिकायः प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणः अत्र भावना प्रागिव ९ । तस्मादपि प्रदेशार्थतया पुद्गलास्तिकायात् अद्धासमयो द्रव्यार्थतया अनन्तगुणः अत्रापि भावना प्रागिव १० । तस्मादप्या काशास्तिकायः प्रदेशार्थतया अनन्तगुणः सर्वास्वपि दिक्षुविदिक्षु तस्यानन्तभावात् अद्धासमयस्य च मनुष्यक्षेत्रमात्रभावात् ११ , गत मस्तिकाय, मिदानीं चरमद्वार

त्थिकाय पोग्गलत्थिकाय अद्धासमयाण दव्वठयाए पदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाएय एएण तिन्निवि तुल्ला, दव्वठयाए सव्वत्थोवा धम्मत्थिकाए

स्तिकाय यह समयार्थ द्रव्यठयाए पदेसठयाए कयरे २ थिता भरपावा ४ । हे भगवन् ए ह धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकायने जीवास्ति कायन पुद्गलास्तिकायने अद्धासमयने द्रव्यप्रदेशथी किहां २ थी थोडाछे । गौतमा धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए एए तिन्निवि तुल्ला द्र व्य मारत्माथे पदेसठयाए धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए दव्वठयाए अनंतगुणे जाव पदेसठयाए असंखिज्जगणे । हे गौतम धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिका य आकाशास्तिकाय ए ३ ने द्रव्यथकी सरीखा छे सर्वथकी थोडाछे प्रत्येके २ असंख्याताछे द्रव्यथी सरीखा हुवे प्रदेशथी सर्वथकी धर्मास्तिकाय अधर्मास्ति काय ए दोय लोकाकाशमाथ द्रव्यथी असंख्यातगणे प्रदेश अधिकाछे तेह जीवास्तिकायप्रदेशथी असंख्यातगणा द्रव्यप्रदेशछे तेमाटे पुद्गलास्तिकाय द्रव्य थी अनंतगणां ते पुद्गलास्तिकायप्रदेशथी असंख्यातगुणा । अद्धासमय द्रव्यठयपदेसठयाए अनंतगणे आगासत्थिकाए पदेसठयाए अनंतगणे चार । अद्धासमय द्रव्यप्रदेशथी अनंतगुणा आकाशास्तिकाय प्रदेशथकी अनंतगुणा सर्वदिशि विदिशने अनंताछे इति २१ मा अल्पबहुत्व २ पदे पूराहुआ

माह एयस्सि णं भंते ! जीवाणं चरिमाण मित्यादि ४ इह येषां चरिमोऽभवः संभवी योग्यतयापि ते चरमा उच्यन्ते-तेषां पर्य्यन्ते इतरे ऽचरमा अभव्याः सिद्धा च उभयेषामपि चरमाचरमभवाभावात्, तत्र सर्वस्तोका अचरमा अभव्यानां सिद्धानां च समुदितानाम प्यजघन्योत्कृष्टयुक्तानन्तक परिमाणत्वात् तेभ्यो ऽनन्तगुणा चरमा अजघन्योत्कृष्टानन्तानन्तकपरिमाणत्वात्, गतं चरमद्वार, मधुनाजीवद्वार माह-एएसि णं भंते ! जीवाणं पोग्गलाण मित्यादि ॥ सर्वस्तोका जीवा स्तेभ्यः पुद्गला अनन्तगुणा २ तेभ्यो ऽद्धासमया अनन्तगुणा अत्रभावना प्रागेवकृता ३ तेभ्यो ऽद्धासमयेभ्यः सर्वद्रव्याणिविशेषाधिकानि कथ मितिचेत् उच्यते-इह येषा मनन्तरमद्धासमयाः पुद्गलेभ्यो ऽनन्तगुणा उक्ता स्तेप्रत्येकं द्रव्याणि ततो द्रव्यचिं तायां तत्परिगृहीता तेषु च मध्ये सर्वजीवद्रव्याणि सर्वपुद्गलद्रव्याणि धर्माधर्माकाशास्तिकायद्रव्याणि च प्रक्षिप्यन्त तानिच समुदितान्यप्य द्धासम यानां मनंतभागवत्तीनी ति तेषु प्रक्षिप्तेष्वपि समागच्छत्वं जात मित्यद्धासमयेभ्य सर्वद्रव्याणि विशेषाधिकानि ४। तेभ्यः सर्वप्रदेशा अनंतगुणा आ काशानंतत्वात ५ तेभ्य सर्वपर्यवा अनंतगुणा एकैकस्मिन्नाकाशप्रदेशे ऽनन्तानां मगुरुलघुपर्यायाणां भावात् ६ गतं जीवद्वार मधुनाक्षेत्रद्वारमाह-

---

अधम्मत्थिकाएय एएण दोन्निवितुल्ला पदेसठ्याए असंखेज्जगुणा, जीवत्थिकाए दव्वठ्याए अणंतगुणे सो चेव पदेसठ्याए असंखिज्जगुणे पोग्गलत्थिकाए दव्वठ्याए अणंतगुणे सोचेव पएसठ्याए असंखेज्जगुणे

जिवे चरमद्वार कहेछे—एएसिणं भंते जीवाणं चरमाणं अचरमाणय कयरे २ हिंता अप्पावा ४। हेभगवन् एह चरमभव लेहसी ते चरम ते भव्यकहिये अचरम ते अभव्य ते सिद्धने कहिये जिहां २ जो नाहा २ हुवे। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा अचरमाचरमा अणंतगुणा हाए। हेगौतम सब थोडा सिद्धथे अभव्य मिलाय कर अजघन्योत्कृष्ट युक्तानंत परमाणछे चरमथका अनंतगुणा अजघन्योत्कृष्ट अनंतानंत प्रमाणथती इति चरम तीसरे पदे २२ मो द्वार पूरो हुवा। जिवे जीवद्वार कहेछे—एएसिणं भंते जीवाणं पुग्गलाणं। हे भगवन् एह जीवारा पुग्गलाणं। अद्धासमयाणं सव्वदव्वाणं सव्वपएसाणं। अद्धासमयछे सवपर्याय में सबद्रव्य में सबप्रदेशामें। सव्वपज्जवाणय कयरे २ हिंता अप्पावा ४। कहो २ वो अल्प घणा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा पुग्गला अणंतगुणा।

मन त्रयोऽपि द्रव्यार्थतया तुल्याः सर्वेषामेकैकद्रव्यत्वात् ३ । तेभ्यो धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि प्रदेशार्थतया ऽस त्यगुणौ स्वस्थाने तु परस्परं तुल्यौ ताभ्यां जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतया अनंतगुण अनंतानां जीवद्रव्याणां भावात् ६ तस्य जीवास्तिकायः प्रदेशा र्थतया असंख्येयगुणः प्रतिजीवमसंख्येयानां प्रदेशानां भावात् ७ । तस्मादपि प्रदेशार्थतया जीवास्तिकायात् पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया अनंतगु णः प्रतिजीवप्रदेशं ज्ञानावरणीयादिकर्मपुद्गलस्कन्धानामप्यनन्तानां भावात् ८ । स एव पुद्गलास्तिकायः प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणः अत्र भावना प्रागिव ९ । तस्मादपि प्रदेशार्थतया पुद्गलास्तिकायात् अद्धासमयो द्रव्यार्थतया अनंतगुण अत्रापि भावना प्रागिव १० । तस्मादप्याकाशास्तिकाय प्रदेशार्थतया अनंतगुणः सर्वास्वपि दिक्षुविदिक्षु तस्यानंतभावात् अद्धासमयस्य च मनुष्यक्षेत्रमात्रभावात् ११ , गत मस्तिकाय, मिदानी चरमद्वार

त्थिकाय पोग्गलत्थिकाय श्रद्धासमयाण दव्वठयाए पदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो श्रप्पाराइ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए श्रधम्मत्थिकाए श्रागासत्थिकाएय एएण तिन्निवि तुल्ला, दव्वठयाए सव्वत्थोवा धम्मत्थिकाए

त्थिकाय पद समयार्थ द्रव्यार्थपणे प्रदेशार्थपणे कयरे २ थिता माथाला ४ । श्रमणन् एह धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकायने जीवास्ति कायने पुद्गलास्तिकायने अद्धासमयने द्रव्यप्रदेशनो विशे २ यो बालावे । मायमा धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आगासत्थिकाय एए तिन्निवितुल्ला द०-इ थाइ माटेल्लावे प्रदेशार्थपणे धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय असंख्यातगुणे आवत प्रदेशार्थपणे धर्मास्तिकायपणे । हे गोतम धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिका य आकाशास्तिकाय ए ३ मे द्रव्यनो अरीषा छे सर्वथी थोडा छे सर्वथी २ असंख्याता छे द्रव्यनो अरीषा द्रव्य प्रदेशथी सर्वथी थोडा छे धर्मास्तिकाय अधर्मास्ति काय ए दोय अरीषा असंख्यातगुणे द्रव्यनो असंख्यातगुणे प्रदेश अधिकाछे तेह जीवास्तिकायप्रदेशथी असंख्यातगुणा द्रव्यप्रदेशथी तेमाटे पुद्गलास्तिकाय द्रव्य पा अनन्तगुणा ते पुद्गलास्तिकायप्रदेशथी असंख्यातगुणा । अद्धासमय द्रव्यार्थपणे प्रदेशार्थपणे अनंतगणे आकाशास्तिकाय प्रदेशार्थपणे अनंतगणे बार । अद्धासमय द्रव्यप्रदेशथी अनन्तगुणा आकाशास्तिकाय प्रदेशथी अनन्तगुणा सर्वादिशि विदिशे अनंतछे इति ११ मा अस्तिद्वार ९ पछे पूराकृत्ता

पातप्रतरं तद्गतलोकप्रतर एतेव द्वे ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोकवति व्यपदिश्यते तथा ऽनादिप्रवचनपरिभाषा प्रसिद्धेः तथवर्तमानाजीवाः सर्वस्तोका कथमितिचेत् उच्यते-इह ऊर्ध्वलोका तिर्यग्लोक तिर्यग्लोका ऊर्ध्वलोक समुत्पद्यमाना विवक्षित प्रतरद्वयं स्पृशंति ये च तत्रस्था एव केचन स प्रतरद्वयाध्यासिनो वर्तते सकिल विवक्षित प्रतरद्वय वर्तते, नान्य यथुन ऊर्ध्वलोका अधोलोक समुत्पद्यमाना सप्तप्रतरद्वयं स्पृशंति त मध्यपंत, तेषा सूत्रांतरविषयत्वात् तत स्तोकाएवा ऽधिकप्रतरद्वयवर्तिनो जीवा नमू कुलोकगतानामपि सर्वजीवानाम ऽसंख्येयभागो ऽनवरत म्रियमा णो ऽवाप्यते तच तिर्यग्लोक समुत्पद्यमाना विवक्षितं प्रतरद्वयं स्पृशती इति कथम ऽधिकतप्रतरद्वयस्पर्शिनः स्तोका स्तदयुक्तं वस्तुतत्वापरि ज्ञानात् तथाहि-यद्यपि नामकुलोकगतानां सर्वजीवलोकानाम ऽसंख्येयभागो नवरतं म्रियमाणोवाप्यते तथापि न ते सर्वएव तिर्यग्लोके स मुत्पद्यत प्रभूततरावा अधोलोके ऊर्ध्वलोकेच समुत्पादात् ततो ऽधिकतप्रतरद्वयवर्तिनः सर्वस्तोका एव १ तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोक विशेषाधि का इह यद ऽधोलोकस्योपरितन मकप्रादेशिक माकाशप्रदेशप्रतरं यद तिर्यग्लोकस्य सर्वाधस्तनमकप्रादेशिक माकाशप्रदेशप्रतर मेतद्द्वय मथ ऽ धोलोकतिर्यग्लोक इत्युच्यते, तथा प्रवचनप्रसिद्धः तत्र ये विग्रहगत्या तत्रस्थतया वा वर्तते तविशेषाधिकाः कथ मितिचेत् उच्यते-इह ये अधो

सव्वपज्जवाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पोग्गला अणंतगुणा अद्धास मया अणंतगुणा सव्वदव्वा विसेसाहिया सव्वपदेसा अणंतगुणा सव्वपज्जवा अणंतगुणा दार २३ । खित्ता

प्रतर तथा तथ्याच तेषभोगतवाप्रग्रमाप्रतर पकवाप्रवमनो ते वेप् प्रतरना नामकवलाव तियच्या चपवे प्रतरने परसेगे कोव वावाके विम तियञ्चाव उत्कावें उपजता प्रतरने फरसे अरवाव तथा पधालाव अपजतअंगवंसिनो तेमाटथावा १व सामान्ये चवद राजलोके चिपभेदे त विम अरभावें पधालावें तिरगलाव चवचो भागवेपवावे दचि कदेवे मवसेयाकम दचिकउपरि मवसेवाकम तियञ्लाव करेव पधालाव तिर्यं लाव उपरि अतलाववांरकुरावातराप्रमाव अरवाव वारव पचिवसातराअप्रमाव अधोलाव सध्यमवारिवेयाप्रार्थपा तिर्यग्लाव तिर्यो

गेताद्युवापए मणुस्सोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोय इत्यादि॥ क्षेत्रस्यानुपातो ऽनुसारः क्षेत्रानुपातः तेन चिन्त्यमाना जीवाः सर्वस्तोका ऊर्ध्वलोकति र्यग्लोके इह ऊर्ध्वलोकस्य यदधस्तन माकाशप्रदेशप्रतरं यच्च तिर्यग्लोकस्य सर्वोपरितनमाकाशप्रदेशप्रतरं मेतदूर्ध्वलोकप्रतरं तथा प्रवचन प्रसिद्धः तत्र च मत्र भावना इहसामस्त्येन चतुर्दशरज्ज्वात्मकोलोकः स च त्रिधा भिद्यते तद्यथा-ऊर्ध्वलोकःतिर्यग्लोकोऽधोलोक च रुचका त्तेषां विभाग स्तथा हि रुचकस्या धस्ता न्नवयोजनशतानि रुचकस्योपरिष्टा न्नवयोजनशतानि तिर्यग्लोकस्तिर्यग्लोकस्याधस्तादधोलोक उपरिष्टा दूर्ध्व लोका देशोनसप्तरज्जुप्रमाण ऊर्ध्वलोकः समधिकसप्तरज्जुप्रमाणो ऽधोलोको मध्यष्टादशयोजनशतोच्छ्रय स्तिर्यग्लोक स्तत्र रुचकसमा द्भूतलाना नवयोजनशतानि गत्वा य ज्ज्योतिश्चक्रस्योपरितनं तिर्यग्लोकस्यापि एकप्रदेशिक माकाशप्रतरं त त्तिर्यग्लोकप्रतरं तस्य चो परितनप्रदेशिकमा

अद्धासमए दव्वठपदेसठयाए अणंतगुणे आगासत्थिकाए पदेसठयाए अणंतगुणा दार २१। एएसिणं भंते। जीवाण चरिमाण अचरिमाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा च रिमा अणंतगुणा दार २२। एएसिण भंते ! जीवाण पोग्गलाण अद्धासमयाण सव्वदव्वाण सव्वपएसाण

केयोतम मच याण जीवसे तेहथी पहल अनंतगुणा इहां भावना पाछली परें तेहथी अद्धासमय अनंतगुणा सर्व पुद्गलद्रव्य धर्मास्तिकायादिक पासें ते हथकी सर्व द्रव्य विसेषाधिक कह्यो। अद्धासमया अनंतगुणा सव्वदव्वा विसेसाहिया सव्वपएसा अनंतगुणा सव्वपज्जवा अनंतगुणा दार । तेहथकी सर्व द्रव्यविसेषना पाकाश मनावादि अनंतकतो तेहथी सर्वपर्याय अनंतगुणा एकेकआकाशप्रदेश अनंताअगरु लघुपर्यायगुणा विसेषथी एतलें ओ इद्वार कह्यो इति२१मा दार तोबें बरें समाप्त हुआ । हिवे अवतार कहेछे—खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया तिरि यमार ववतिब्राप पर्याप्तमतो कहलोए एवं अहालोए विसेसाहिया अखित्ताणुवाएणं । भाषार्थ-जीव जे ऊर्ध्व लोक तिर्यग्लोक के प्रतरमा ऽमध्य रह्या तेजीव ऊपयो लोकमानपजने इहां कहिया सर्वथोडाजीव ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके ए पाठारेखेतांनन तिर्यक्लोकतेहनो अतिमाप्रमाण

कायप्रतरे तदूर्ध्वलोकप्रतर एतच द्वे अप्यूर्ध्वलोकतिर्यग्लोकइति व्यपदिश्यते तथा ऽनादिप्रवचनपरिभाषा प्रसिद्धेः तमयसंमानाजीवा। स्तोका।
कथमितिचेत् उच्यते-इह ऊर्ध्वलोका तिर्यग्लोक तिर्यग्लोका ऊर्ध्वलोक समुत्पद्यमाना विवक्षित प्रतरद्वय स्पृशंति य च तत्रस्था एव कथन स
प्रतरद्वयाध्यासिनो वर्तन्त तकिल विवक्षिते प्रतरद्वय वर्तंते, मान्य यतुन ऊर्ध्वलोका ऽधोलोके समुत्पद्यमाना सत्प्रतरद्वय स्पृशंति त नगवयंत,
तेषां मूलांतरविषयत्वात् तत ऊर्ध्वलोकाएवा ऽधिकृतप्रतरद्वयवर्तिनो जीवा ननु ऊर्ध्वलोकगतानामपि सर्वजीवानाम असंख्येयभागो ऽमवरत स्त्रियमा
णो ऽवाप्यते तच तिर्यग्लोक समुत्पद्यमाना विवक्षितं प्रतरद्वयं स्पृशती इति कथम ऽधिकृतप्रतरद्वयस्पर्शिमः स्तोका सत्युक्त वस्तुतत्वापरि
ज्ञानात् तथाहि—यद्यपि नामऊर्ध्वलोकगतानां सर्वजीवलोकानाम ऽसंख्येयभागो नवरत स्त्रियमाणोवाप्यते तथापि न ते सर्वएव तिर्यग्लोके स
मुत्पद्यंत प्रभूततराणां अधोलोके ऊर्ध्वलोकच समुत्पादात् ततो ऽधिकृतप्रतरद्वयवर्तिनः सर्वस्तोका एव १ तस्मो ऽधोलोकतिर्यग्लोक विशेषाधि
का इह यद ऽधोलोकस्योपरितन सकलमाकाशप्रदेशप्रतरं यच तिर्यग्लोकस्य सर्वाधस्तनमेकमाकाशप्रदेशप्रतर मेतत्द्वय मध ऽ
धोलोकतिर्यग्लोक इत्युच्यते तथा प्रवचनप्रसिद्धेः तत्र ये विग्रहगत्या तत्रस्थतया वा वर्तंते तविशेषाधिकाः कथ मितिचेत उच्यत-इह ये अधो

सव्वपज्जवाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा पोग्गला अणंतगुणा अद्धास
मया अणंतगुणा सव्वदव्वा विसेसाहिया सव्वपदेसा अणंतगुणा सव्वपज्जवा अणंतगुणा दार २३ । खित्ता

प्रतर तदधो ऊर्ध्वलोक तिर्यग्लोकतथाप्रदेशमात्रप्रतर यकवाप्यसमनो ते येन प्रतरमा मामऊर्ध्वलोक तिर्यग्लोक कथम प्रतरने परमेगे जीव प्राप्ते विम
तिर्यग्लोक ऽमात्रे उपजती प्रतरमे परमें ऊर्ध्वलोक तथा यथायोग व्यपगतविग्रहविग्रहो तेमाटमाका १४ सामाग्ने कष राजलोक विषमेडे त
विम ऊऽजाजे यथायोग तिर्यग्लोके समयो आगमपथामे यदि करेछे मरणेयाऽस्म वचिकउपरि मरणेयाऽस्म तिर्यग्लोक कहेत्र यथायोग तिर्यक
लोक उपरि ऊर्ध्वलोकधारा ऊर्ध्वलोकस्वासाऽमनमाय ऊर्ध्वलोक मांहे पश्चिमसात राजप्रमाण यथायोग मध्यमडारेंचेंद्राप्रमजंत्रा तिर्यग्लोक तिर्ग

गेतापुवापय मणुस्योवा जीवा सम्लोमतिरियलोय इत्यादि॥ क्षेत्रस्यानुपातो नुसारक्षेत्रानुपात स्तन विचिंत्यमामा जीवाः सर्वस्तोका ऊर्ध्वलोकति र्यग्लोके इह ऊर्ध्वलोकस्य सर्वाधस्तनं माकाशप्रदेशप्रतरं यच्च तिर्यग्लोकस्य सर्वोपरितनमाकाशप्रदेशप्रतरं मेषऊर्ध्वलोकप्रतरं स्तथा प्रथमे प्रसिद्धः तत्रे च मध्य प्रायना एकसामरस्येन बसुदायरज्वात्मकोलोकः सच त्रिधा विद्यते तद्यथा–ऊर्ध्वलोकः तिर्यग्लोको ऽधोलोकश्च रुचका षतेषा विभाग स्तथा हि रुचकस्या धस्ता नवयोजनशतानि रुचकस्योपरिष्टा नवयोजनशतानि तिर्यग्लोकस्तिर्यग्लोकस्याधस्तादधोलोक उपरिष्टा दूर्ध्व लोका देशोनसप्तरज्जुप्रमाण ऊर्ध्वलोकः समधिकसप्तरज्जुप्रमाणो ऽधोलोका मध्यष्टादशयोजनशतोच्छ्रय स्तिर्यग्लोक स्तत्र रुचकसमा द्भूतलभागा न्नवयोजनशतानि गत्वा च ज्योतिश्चक्रस्योपरितन तिर्यग्लोकमथवापि एकप्रदेशिक माकाशप्रतर न तिर्यग्लोकप्रतर तस्य यो परिवदमप्रदेशिकमा

अद्धासमए दव्वठपदेसठयाए अणतगुणे आगासत्थिकाए पदेसठयाए अणतगुणा दार २१। एएसिण भंते! जीवाण चरिमाण अचरिमाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा च रिमा अणतगुणा दार २२। एएसिण भंते! जीवाण पोग्गलाण अद्धासमयाण सव्वदव्वाण सव्वपएसाण

केवलज्ञान मन वाला जीवकै तेहथी पहल अनंतगुणा इहां भावना पाछलो परें तेहथी अद्धासमय अनंतगुणा सर्व पुद्गलद्रव्य धर्मास्तिकायादिक माहिं ते तेहथी सर्व द्रव्य विसेसाधिक कह्यो। अद्धासमयना अनंतगुणा सर्वद्रव्य विसेसाधिका सर्वप्रदेश अनंतगुणा सर्वपर्याय अनंतगुणा द्वार। तेहथकी सर्व द्रव्यविसेसमध्ये आकाश धर्माधादि अनंतप्रदेश तेहथी सर्वपर्याय अनंतगुणा एकैकआकाशप्रदेश अनंतागत अनंतपर्यायगत विशेषथी एतलें जीवद्वार कह्यो इति २२ मा द्वार तीजे पदे समाप्त हुआ। हिवे अनंतर कहेछे—क्षेत्रानुवाएण सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए अधोभाग विसेसाहिया तिरि यभार पर्वतिभाव धर्मास्तिकाय एकठाव धर्म अधोभाग विसेसाहिया अस्तिकायानुवाएण। पाप्योजीवा जे जीव मरणांत मेघ समुद्घातगतजीवतणो में प्रतरमध्य मध्य रेखा केवलीकराणो लोकाग्रयजने इहां नवैया सर्वलोकजीव जघन्योत्कृति एकांकि ए आकारिसेंवागम तिर्यक्लोकतिकनो क्षेत्रप्रदेशमान

प्रत्यद्यतःप्रतिसमय मूर्द्ध्वलोकेऽधोलोके च सूक्ष्मनिगोदा उद्वर्त्तन्ते येऽपि तिर्यग्लोकवर्त्तिनः सूक्ष्मनिगोदा उद्वर्त्तन्ते तेऽप्यधोऽधोलोके ऊर्द्ध्वलोके वा पश्चिमसिद्धा वा तिर्यग्लोकसमुत्पद्यन्ते ततो मतलोकत्रयस्पर्शिन इति माऽपितत्सूत्रविषयाः तथाद्ध्वलोकाधोलोकगतानां सूक्ष्मनिगोदानामु द्वत्तमानानां मध्य कश्चित्स्वस्थान एव ऊर्द्ध्वलोके अधोलोके वा समुत्पद्यते अपि तिर्यग्लोके तथ्यो ऽसंख्येयगुणा अधोलोकगता ऊर्द्ध्वलोके ऊर्द्ध्वलोकग ता अधोलोके समुत्पद्यन्ते तत्र तयोत्पद्यमाना लोकमपिलोकाम् स्पृशन्त्यसंख्येयगुणाः कथं पुनरेतदवसीयते यदुत एवम्प्रमाणा बहवो जीवाः सदाविग्रहगत्यापन्ना लभ्यन्त इति यत् उच्यते-युक्तिवशात् तथाहि प्रागुक्तमिदमग्रेऽपि सूत्रपर्याप्तिद्वारे। सर्वस्तोका जीवानोपर्याप्ता नोअपर्याप्ता अपर्याप्ता अनन्तगुणा पर्याप्ता संख्येयगुणा इति। सतत्पर्याप्ता ऽपर्याप्ता बहवो न मैतस्य पर्याप्ता संख्येयगुणा एव नाऽसंख्येयगुणा नाऽप्यनन्तगुणा सर्वाऽपर्याप्ता बहवोऽन्तरगतौ वर्त्तमाना सन्ति इति ४। तस्य ऊर्द्ध्वलोके ऊर्द्ध्वलोकावस्थिता असंख्येयगुणा उपपातक्षेत्रस्यातिप्रभूतत्वात् असंख्येयानाम नामामुत्पत्तनाया सद्भावात् तथ्यो ऽधोलोक अधोलोकवर्त्तिनो विशेषाधिका ऊर्द्ध्वलोकतो ह्यधोलोकक्षेत्रस्य विशेषाधिकत्वात्, तदेव सामान्य

नेरइया तलुक्के अहोलोगतिरियलोगे असंखेज्जा० अहोलोए असंखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोगतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, ते

मधिकृत्य जेनाक्षे प्रतरेऽसंख्येयाः असंख्यातगुणाः ते ऽधोलोके असंख्यातगुणा। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका तिरिक्खजोणिया। येन ऊर्ध्वतिर्यग्योनिका यथाक्रमं अनुनाय विवक्षाविमासाश्रजीवसूत्रे यथायेथायो तिर्यग्योनिका। ऊर्द्ध्वलोक तिरियलोए अहोलोए। तिर्यक्लोके विशेषाधिका। तिरि यलोए विसे तिरियलोए अस तिमुहे अस। तयोतिर्यक्लोके असंख्यातगुणा तेऽधोलोके असंख्यातगुणा। उड्ढलोए असंखिज्जगुणा। ऊर्द्ध्वा सं असंख्यातगुणा इवे। अहोलोए विसेसाहिया खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया। यथायोग्य विशेषाधिका सामान्यसूत्रोक्ता विवा तिर्यञ्चः असंख्यातगुणा येन प्रायो ऊर्ध्वतिर्यग्योनिकाः। उड्ढलोए तिरियलोए असंखिज्जगुणा। सर्वलोकसंस्पर्शेभ्यः असंख्यगुणा अधोलोका

माता तिर्यग्लोकाद्वा ऊर्ध्वलोके इलिकागत्या समुत्पद्यमाना अपिकत प्रतरद्वय स्पृशन्ति येच तत्रस्थाएव केवल तत्प्रतरद्वयम् उध्वा माना वतत तविवक्षितप्रतरद्वयवर्तिनो बहुत्र रथालोका दूद्धलोक समुत्पद्यमाना सत्प्रतरद्वय स्पृशन्ति ते न परिगृह्यन्ते तथा सूत्रान्तरविषयत्वा त् अतम सूत्रोक्ता इर्ध्वलोका विशेषाधिक इत्यधोलोका त्तिर्यग्लोकात् इलिकागत्या समुत्पद्यमाना ऊर्ध्वलोकापेक्षया विशेषाधिका प्राप्यन्ते तता विशेषाधिका २। तस्य तिर्यग्लोकवर्तिनो असंख्येयगुणा तत्क्षेत्रस्य तिर्यग्लोक कृस्यासंख्येयगुणत्वात् ३। तेभ्य त्रैलोक्ये त्रिलोकस्प शिनो असंख्येयगुणा इह य केवलऊर्ध्वलोक अधोलोक तिर्यग्लोक वा वर्तते ये च विग्रहगत्या ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोकौ स्पृशन्ति ते नगृह्यन्ते किंतु य विग्रहगत्यापन्ना त्रीनपिलोकान् स्पृशन्ति ते परिगृह्यन्ते सूत्रस्यविशेषविषयत्वात् तेचतिर्यग्लोकवर्तिभ्यो असंख्येयगुणाएव कथ मितिचेत् उच्यते

णुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखे ज्जगुणा तेलुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा

इविह बम भूतपरि नमसेपावनमार्यो तिर्यक् ग्लोतियवर्त उपरितिसकताकसवंधिश्रप्रदेशोभ्याकाशप्रतर तिसक्षाकप्रतर उपरिते एकप्रदेशो भाकाशप्रतर अधस्तात तिर्यक्लोक वर्तिनो अधस्तात तिर्यक्लोके विशेषाधिक तिर्यक् वे विग्रहगतिवर्तके ते विशेषाधिकाश्च अधोलोक तिर्यक्लोक मध्याकाशप्रतरद्वये अधस्तात उपपातगमनेन तेमाटे विशेषाधिकाश्च तेषको तिर्यक्लोक ३ असंख्यातगुणामाटे असंख्यातगुणा येषु त्रसे ते अस ख्यातगुणा च विग्रहगतिवर्तमान तिर्यक्लोकप्रदेशे तत्रनिर्विशे निगोदोया उपाश्रवाम ओतेषु को उर्ध्वलोकमा असंख्यातगुणा उपपातयेनश्चमाटे तेषको अधोलोके विशेषाधिक अनविशेषाधिकपणामाटे सामान्यपणे सर्वजीवअपार्योमेषपणे अल्पबहुत्वपणे कह्या । सम्यत्वावमेरइयातियोनि घणोसो पतिरियचा एव अधोलोए असंखिज्जगुणा । त्रिवेपारमतिपार्श्वोमरवसा अल्पबहुत्व वे येषपाश्वोसर्वोजामारको विशेषमाध्यमाविमको मेव अमानोवारशामउगरवर्तमोहित्रयममा विवक्षितत्वगैवाकाके तेषको अधोलोक तिर्यक्लोकमर्यादा असंख्यातगुणा के सवाधोपसमुद्रमें तिर्यंचमारको

द्वयस्याप्रतिमभय मूर्द्धलोकेऽधोलोके च सूक्ष्मनिगोदा उद्वर्तंते येषु तिर्यग्लोकवर्तिनः सूक्ष्मनिगोदा उद्वर्तंते तेऽपीदऽधोलोके ऊर्द्धलोके वा कश्चित्सिद्ध वा तिर्यग्लोकमनुत्पद्यते ततो नतलोकद्वयसंस्पर्शिन इति माऽपिएतसूर्यायमः तथास्तुलोकाधोलोकगतानां सूक्ष्मनिगोदानामु द्वसनामानां मध्ये कश्चित्स्वस्थान एवकर्द्धलोके अधोलोकतया समुत्पद्यते, केचित् तिर्यग्लोक तस्मो ऽसंख्येयगुणा अधोलोकगता ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकग ता अधोलोक समुत्पद्यंत, तथ तयोत्पद्यमाना त्रीनऽपिलोकान् स्पृशंतीत्यऽसंख्येयगुणाः कथ पुन रेतदवसीयते य द्रुत एवप्रमाणा यद्वोजीवाः महाविपद्गत्यापया लभ्यत इति चत् उच्यते-युक्तिवशात्, तथाहि मानुषमि दमऽत्रैवसूत्रपर्याप्तिद्वार। सर्वस्तोकावादीपामोपज्ञता नोपपज्ञता अपज्ञता अनंतगुणा पज्ञत्ता संखेज्जगुणा इति ॥ सततएवनामाऽपर्याप्ता अद्यो य मैतस्य पर्याप्ताः संख्येयगुणा एव नाऽसंख्येयगुणा नाऽप्यऽनंतगुणा सत्वाऽपर्याप्तासर्वोऽन्तरमतोयत्तमानासम्यत इति ४। तस्य ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकावस्थिता असंख्येयगुणा उपपातक्षेत्रस्यातिबहुत्वात् असंख्येयानाम प्राणानामुद्वर्तनायाध सनवात् तस्यो ऽधोलोके अधोलोकवर्तिनो विशेषाधिका ऊर्द्धलोकक्षेत्रा दधोलोकक्षेत्रस्य विशेषाधिकत्वात्, सदैव सामान्य

नेरइया तेएक्को अहोलोगतिरियलोगे असंखेज्ज० अहोलोए असंखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोगतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, ते

मोक्षिप्रवेशनाके प्रतरनेमएँ असंख्यातगुणामाटे अधोलोके असंख्यातगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया । सर्व थोडातिर्यंचयोनिया ममवाद्वाळत्वाळ तिर्यक्मात्रिमामान्यज्ञोपमूपने असावैकयोर्के तिमखोविवा । उड्ढलोय तिरियलोए अहोलोए । तिर्यक्मार्के विशेषाधिक । तिरि यलोए विमे तिरियलोए असं तिसके धर्म । तत्वोतिर्यक्ताये असंख्यातगुणा तेरवोमिक्षाके असंख्यातगुणा । उड्ढलोए असंखिज्जगुणा । ऊर्ध्वा के असंख्यातगुणाद्वे । अधोलोए विसेसाहिया खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिणीओ । अधोलाके विशेषाधिकए सामान्यमूर्वोजोविवा तिर्यंचमा असवाद्स्वमरोके नपांत्रीसवबोतिर्यंचयोनिणीओ । उड्ढलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणा । अधस्तात्क्षेत्रमौसेदयवत असंगमुखदधिमोवा

माका तिर्यग्लाके तिर्यग्लोकाद्वा ऽधोलोके इलिकागत्या समुत्पद्यमाना अधिकत प्रतरद्वय स्पृशन्ति येच तत्रस्था एव केवल सत्प्रतरद्वयम ऽध्या गोता पतत तविवक्षितप्रतरद्वयवर्तिना मध्य रूपालोका दूर्ध्वलोके समुत्पद्यमाना सत्प्रतरद्वय स्पृशन्ति ते न परिगृह्यन्त तथा सूत्रस्याविषयत्वा त् कथम मूर्ध्वलोका दधोलोको विशेषाधिक इत्यधोलोका तिर्यग्लोके इलिकागत्या समुत्पद्यमाना ऊर्ध्वलोकापेक्षया विशेषाधिका प्रवाप्यते तता विशेषाधिका २। तन्य तिर्यग्लोकवर्तिनो ऽसंख्येयगुणा तत्क्षेत्रस्याद्विका तिर्यग्लोक क्षेत्रस्यासंख्येयगुणत्वात् ३। तेभ्य त्रैलोक्ये त्रिलोकसंस्पर्शि ना ऽसंख्येयगुणा इह य केचनोर्ध्वलोक अधोलोक तिर्यग्लोके वा वसत यथाविग्रहगत्या ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोकौ स्पृशन्ति ते नगर्यस किंतु ये विग्रहगत्यापन्ना सामर्थ्यात् स्पृशन्ति ते परिगृह्यन्ते सूत्रस्यविषयविषयत्वात् शेषतिर्यग्लोकवर्तिभ्यो ऽसंख्येयगुणा एव कथ मिलितवत उच्यते

गुणाएण सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखि ज्जगुणा तेलुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा

दविह यम मूलपरि नवमेवावगवावे तिर्यग् ज्योतिषचक्र उपरितिर्यग्लोकस्वधिप्रतरद्वयोपाकाशप्रतर तिर्यग्लोकप्रतर उपरितने एकयोगभो वाकाशप्रतर ऊर्ध्वलोकमाकाशे कियत्कालं तिर्यग्लोकस्वे विशेषाधिक तिर्यग् से विषक्षमतिवर्तन्ते ते विशेषाधिकविमले यथाभाव तिर्यग्लोक यथामावप्रतरपरमे सहमाव उपवन्तानमनोवे तेमाटे विशेषाधिकवाद्य तेवको विद्यमान १ असंख्यातमवामाटे असंख्यातगुणा येषफरसे ते पम स्थानवचा च विषदमतिकव माव विपवक्षावपरमे तमनिविवे निगोदोया उपनिवामवातिवयको छद्मस्थावना असंख्यातगुणा उपपातसेवधामाटे तदपचो यथानाचे विशेषाधिक यत्रविषेषाधिकपवामाटे सामान्यपचे सवजीवपायोचेमपचे पमनमुत्वपचेवमा । सवत्यावानेरथ्यातिको पचोसा पतिरियभाव पस पचापाप चमविच्यगुणा । विवेपारमतियायोमरवमा पम्पवात्ववदेवे चेवपायोसवधोवानारको निवाक्रमाप्रमाविसवे सेव दमानोवारमामवनरवमातिवपजना विवाकतेत्रमवावावे तेवयको यथाभीव तियवाकपर्यना असंख्यातगुणा जे यवायोपसमुद्रमे तिर्यवनारको

स्वस्वस्य प्रतिसमय मूद्र्लोकेऽधोलोकेच सूक्ष्मनिगोदा उद्वर्तन्ते येषु तिर्यग्लोकवर्तिन सूक्ष्मनिगोदा उद्वर्तन्ते तेऽपोदऽधोलोके ऊर्द्ध्वलोके वा क्वचित्स्थित्व वा तिर्यग्लोकसमुत्पद्यते ततो नतेलोकत्रयवर्त्तिन इति माऽपिचलसूत्रविषयाः सप्रागुलोकाधोलोकगतानां सूक्ष्मनिगोदानामु द्वृत्तमानानां मध्य कतिपयस्थान एवऊर्द्ध्वलोके अधोलोकया समुत्पद्यते, केचि त्तिर्यग्लोक तस्मो ऽसंख्येयगुणा अधोलोकगता ऊर्द्ध्वलोके ऊर्द्ध्वलोकग ता अधोलोके समुत्पद्यंते, तत्र तदोत्पद्यमाना स्तोनऽपिलोकाम स्पृष्टतीत्यऽसंख्येयगुणा कथ पुन रेतदवसीयत य वृत्त एवमनायो बादरोजीवाः मारविग्रहगत्यापन्ना लभ्यत इति चत् उच्यते-युक्तिवशात् तथाहि प्रागुक्तमि दमऽवैवसूत्रपर्याप्तिद्वार। सव्वत्थोवाजीवाणोपज्जत्ता नोअपज्जत्ता अपज्जत्ता अनंतगुणा पज्जत्ता संखेज्जगुणा इति ॥ ततएवनामाऽपर्याप्ता बहवो य मैतन्य पर्याप्ता संख्येयगुणा एव माऽसंख्येयगुणा माऽप्यऽनंतगुणा सत्वाऽपर्याप्ताबहवोऽत्रनतोवत्तमानालभ्यते इति ४। तस्य ऊर्द्ध्वलोके ऊर्द्ध्वलोकावस्थिता असंख्येयगुणा उपपातक्षेत्रस्यातिबहुत्वात् असंख्यभागाव भागानामुद्वृत्तमानाय सनवात् तस्मो ऽधोलोक अधोलोकवर्तिनो विशेषाधिका ऊर्द्ध्वलोककेभ्य ऽधोलोकक्षेत्रस्य विशेषाधिकत्वात्, सदेव सामान्य

नेरइया तलुक्के अहोलोगतिरियलोगे असंखेज्ज० अहोलोए असंखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोगतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, ते

मांजिअपद्मनाले प्रतरैश्चर्यो असंख्यातगुणामाटे अधोलोके असंख्यातगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका तिरिक्खजोणिया । अथ मात्रोतिर्यञ्चयोनिया अवबोधअर्द्धलोक तिर्यक्माविमानाम्यवबोधमूर्ध्वे अधोवेक्खाके तिमर्त्यविषा। ऊर्द्ध्वलोक तिरियलोए अधोलोए । तिर्यक्लोके विशेषाधिक। तिरि यलोए विसे तिरियलोए असं तिस्रो अस । सर्वतोतिर्यक्लोके असंख्यातगुणा तेजयोत्रिलोके असंख्यातगुणा। ऊर्द्ध्वलोए असंखिज्जगुणा । ऊर्द्ध्वा वे असंख्यातगुणाश्चैव । अधोलोए विसेसाहिया क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका तिरिक्खजोणिया । अधोलोके विशेषाधिकाए सामान्यसूत्रोक्ताविषा तिर्यञ्चा अवबोधस्वरूपे अवधार्योसर्वतोतिर्यञ्चयोनिको। ऊर्द्ध्वलोए तिरियलोए असंखिज्जगुणा । स्वस्थानेभवोत्पद्यत असंख्येयगुणद्विगोचा

माका तियग्माके तियग्मोकाद्वा ऽधोलोके पुलिकागत्या समुत्पद्यमाना अपिकत प्रतरद्वय स्पृशति येष तद्ग्स्थाग्व केवल सत्प्रतरद्वयम ऽप्या मानाः यतन तयिपतितप्रतरद्वयवसिमा यपुग स्थालोका दूद्वमोक समुत्पद्यमाना सत्प्रतरद्वय स्पृशति से न परियत्यत तथा सूत्रातरधिपयत्या त् कथम मूद्मोका दधोलोको विशमाधिक इत्यधोलावा तियग्लोक इलिकागत्या समुत्पद्यमाना ऊर्द्धलाकापतया विशेपाधिका यथाप्यत तता विशेपाधिकाः २। तम्य सियग्लोकवर्तिनो ऽसंख्येयगुणा उत्कृष्टद्विया तियग्लोक ऽग्रस्यासंख्येयगुणत्वात् ३। तेभ्य खेलाको त्रिलोकसंस्प शिनः ऽसंख्येयगुणा इह य कथमऊर्द्धलोक अधोलोक तियग्लोक वा वसत यथविग्रहगत्या ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोको स्पृशति ते भगवर्यत किंतु य विग्रहगत्यावस्था त्रीनपिलोकान् स्पृशंति ते परिगृह्यन्ते सूत्रस्याविशेपाविपयत्वात् सेयतियग्लोकवर्तिभ्यो ऽसंख्येयगुणा एव वय मिति भत् उच्यते

गुयाएण मणुस्योवा जीया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखि ज्जगुणा तेलुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा

दर्शिव मम भूतपरि नयमेवानमारमें तिशा ज्योतिपचक उपरितिमक्षाकसवधियसप्रदेशोमाकाप्रतर तियक्षाकमतर उपरिवे पवदेशभो पाकायप्रतर ऊर्द्धाक तियक्षाक कहिये ऊर्द्धाक तियक्षाके विशेपाधिक तिशा जे विग्रहगतिवर्ती ते विशेपाधिकविमसे अधोलाक तियक्षाक यध्माकप्रतरयरमें ऊर्द्धलाक उपजतानगयोपे तेमाटे विशेपाधिकवहिय तेथको तियक्षाक २ असंख्यातगुणामाटे असंख्यातगुणा ऊर्द्धफरसे ते असं ख्यातगुणा व विग्रहगतिऊर्द्धलाक तियक्षाकफरसे तत्रनिविर्य निमाछोया उपजिवामयोतिषको ऊर्द्धलाकना असंख्यातगुणा उपपातसमयमाटे तेथको अधानाके विशेपाधिकवे अर्थविशेपाधिकपणामाटे सामान्यपर्णे अधोत्रपायोतेषपये अधिकतुल्यपयेरुता । सब्वत्थावानेरइयातिशीले अधोको र्द्धतिरियलाए यथ अधोलाए असंखिज्जगुणा । विवेगतिविपाप्रोकरकना अव्यवहलबले तेनपाथ्योसर्वथोलाकारको विलाकनापणागमाविमर्श मेव अमुपमापाकामा गकरकसहितपमनो विलाकतिर्यग्लोकाकाले तेयको अधोलोक तियक्षाकमना असंख्यातगुणा जे अधादोपसमुद्रमें तिर्यचमारको

तरद्धयं रपभ्रति ततो भवति पूर्वोक्तभ्यो ऽसंख्येयगुणाः क्षेत्रस्यासंख्यातगुणत्वात् मंदरादिवत्रा दसंख्येयद्वीपसमुद्रात्मकं यत्र मऽसंख्येयगुणमित्य
तो भवत्यऽसंख्येयगुणा यस्मेत्य निदपति नारकाश्या ऽसंख्येपु द्वीपसमुद्रेषु तियक्पंचेंद्रियतयोत्पद्यमाना मारणांतिकसमुद्घातेन विधिसमि
प्रात्मप्रदेशवक्रा द्वष्ष्या स्वदि नारकायु प्रतिषवदमा मारका उद्धृतमाना अपि ऽसंख्यया प्राप्यते इति । प्रागुक्तभ्यो ऽसंख्येयगुणा स्तेभ्यो ऽधोलो
के ऽसंख्येयगुणा सत्स तेषां स्वस्थानत्वात् उक्त नारकगति मधिकृत्य क्षेत्रानुपातेना ऽल्पबहुत्व, मिदानीं तियग्गति मधिकृत्या ह-खेत्ताणुवा
एण सव्वत्योवा तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए इत्यादि ॥ इदं सयमपि सामान्यतो जीवसूत्रमिव भावनीय । तदपि तिरश्चएव सूक्ष्मनिगो
दान ऽधिकृत्य भावित मधुना तियग्योनिकस्त्रीविषय मऽल्पबहुत्वमा ह-खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवाओ तिरिक्खजोणिणीओ उड्ढलोए इत्यादि । स

लोए असंखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्जगुणा ।
खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवाओ मणुस्सीओ तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ अहोलोयतिरियलोए संखे
ज्जगुणाओ उड्ढलोए संखेज्जगुणाओ अहोलोए संखेज्ज० तिरियलोए संखेज्ज०, खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा

गमातगुणा । अहालोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए संखि० । जेमाटे वेमानिकदेवतामनुष्यमांहि उपजेतेमतरालगतेवर्त्ते अधोलोक तियग्लोक
ममरातमया भवनपति आदि मनुष्यआवमांहि उपजेवके बसलोक सं गुणविद्याधरादि पुरुषमांहि समूर्च्छिममनुष्यउपजे तेहवो अधालोक संख्यातगु
णा अधाग्रामादि प्रभावितमनुष्यआमाटेनथी । तिरियलोए संखि० तिर्यग्लोकमनुष्यसपुंआश्रिवे लोकेवनामनुष्यसमे ह्विवेलोकवैवे । खेत्ताणुवाए
ण सव्वत्थोवाओ मनुष्यणी तिनाम उड्ढलोयतिरियलोए संखिज्जगुणाओ । अधनोमसे तो सववालोमनुष्यपणेतेमाटे तेमाटेवैमानिकसमदवात कायलोस
महपातकमनेलाभ उत्पन्नतको आइकारतिर्यग्लोक वैमानिकदेवता मनुष्यलोमां उपजे तेहवो संख्यातगुणोहुवे । अहालोयतिरियलोए संखिज्जगुणाओ
उड्ढलोए संखिज्जगुणाओ अहालोए संखिज्जगुणाओ । तेहथी अधालोकतिर्यग्लोके संख्यातगुणो अधालोकग्रामादि तिर्यग्लोकरोने मनुष्यलोपवे उपजतो

तो जीवानां क्षेत्रानुपातेनाऽल्पबहुत्वमुक्तं, मिदानीं चतुर्गतिदण्डकक्रमेण तदभिधित्सुः प्रथमतो नैरयिकाणां माह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा नेरइया तेलोक्के इति व क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण नैरयिका चिन्त्यमानाः सर्वस्तोका त्रैलोक्ये त्रैलोक्यसंस्पर्शिनः कथमेतावत् त्रैलोक्यसंस्पर्शिनो नैरयिका कथवा सेयमता इतिचेत् उच्यते-इह ये मन्दरपर्वते भ्रमन्तदभिमुखपर्यन्तादिषु वा वापीषु वर्तमानानामस्याद्योमारकेपूत्पित्सव ईलिकागत्या प्रदेशा न् विक्षिपन्ति तथिक त्रैलोक्यमपि स्पृशन्ति मारकव्यपदेशं लभन्ते तत्काल समवमरकेपूत्पन्नारकायुष्कप्रतिसंवेदनात, तथेत्यद्भूता कतिपय इति सर्वस्तो काः अन्ये तु व्याचक्षते मारकाण्ययपोत्तवापीषु तिर्यक्पञ्चेन्द्रियतयो त्पद्यमानाः समुद्घातवशतो विक्षिप्तनिजात्मप्रदेशदण्डाः परिगृह्यन्ते ताइविह त दा मारका एव निर्विवादतरायुष्कप्रतिसंवेदनात् त्रैलोक्यसंस्पर्शिनश्च यथोक्तयावी यावदात्मप्रदेशादण्डस्य विक्षिप्तत्वादिति । तत्तो ऽधोलोकति र्यग्लोकमध्ये प्रागुक्तप्रतरद्वयस्य संस्पर्शिनोऽसंख्येयगुणा' यतो बहवोऽसंख्येयेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानरकेषू त्पद्यमाना यथोक्त

एक्के यसंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्ज० अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तिरिक्खजो णिणीउ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्ज०, तेलुक्के असंखेज्ज० अहोलोयतिरिलोए संखिज्जगुणाउ अहोलोए संखेज्जगुणाउ तिरियलोए संखिज्जगुणाउ खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा मणुस्सा तेलुक्के उड्ढलोयतिरिय

[illegible]

तरद्वये स्पृशन्ति ततो भवन्ति पूर्वोक्तेभ्योऽसंख्येयगुणा देवस्थानस्यासंख्यगुणत्वात् भवनादिदेवा असंख्येयद्वीपसमुद्रात्मके क्षेत्रेऽसंख्येयगुणमित्य
तो भवन्त्यसंख्येयगुणा, अन्ये त्वभिदधति नारकाश्च असंख्येयेषु द्वीपसमुद्रेषु तिर्यक्पञ्चेन्द्रियतयोत्पद्यमाना मारणान्तिकसमुद्घातेन विविधानि
बाह्यसमुद्घाता द्रष्टव्या क्वचि नारकायु प्रतिसंवेदना नारका बहुतमाना अपि ऽसंख्येया प्राप्यन्ते इति । मानुष्येभ्योऽसंख्येयगुणा स्वभ्यो ऽधोलो
के ऽसंख्येयगुणा स्वस्य तथा स्वस्थानत्वात् उक्तं नारकगति मधिकृत्य क्षेत्रानुपातेना ऽल्पबहुत्व, सिद्धान्ती तिर्यग्गति मधिकृत्य ख-क्षेत्रानुपा
तेन सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए इत्यादि ॥ इदं सूत्रमपि सामान्यतो जीवसूत्रमिव भावनीय । तदपि तिर्यक्सूत्रमेव सूत्राभिगो
हान ऽधिकृत्य भावित मधुना तिर्यग्योनिकस्त्रीविषय मऽल्पबहुत्वमा ख-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवाउ तिरिक्खजोणिणीउ उड्ढलोए इत्यादि । इ

लोए असंखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्जगुणा ।
खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवाउ मणुस्सीउ तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाउ अहोलोयतिरियलोए संखे
ज्जगुणाउ उड्ढलोए संखेज्जगुणाउ अहोलोए संखेज्ज० तिरियलोए संखेज्ज०, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा

ख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए संखि । वैमानिकदेवतामनुष्यमपि उपचेतप्रतरमेपुरसे अधोलोक तिर्यग्लोके
वंतरागमा भवनपति आदि मनुष्यामपि उपचेवके बहलोक स सुवर्णवासरादि पुरुषमपि सम्मूर्च्छिममनपचपके तेभ्यो अधालोकसंख्यातगु
णा अधाग्रामादि अभावितमनुष्यमामाटेनतो । तिरियलोए संखि० तिर्यग्लोकेमनुष्यसपृचापित्वे लोकेवनामनुष्यमपि विवेणोकसेके । खित्ताणुपाए
य सव्वत्थोवा मनस्सपा तिवाके उड्ढलोयतिरियलोए संखिज्जगुणाया । भवनीमवेवाता संबोलोमभ्यवपेवेतावे तेमाटेवेविमसमवधात अवलोस
मद्वपातमसेवनाम अरगेतभ्यो वहसीवतिसमुहाव वेमानिकदेवता अभयवोमांवपके तेभ्यो सयपातमुपोइवे । अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणोपो
बहुसावसखिमुणाया अहोधाए संखिज्जगुणाया । तेभ्यो अधालोकतिसमुद्वाके संपातमुपो अधालोकयामादि तिर्यग्लोमरोमे मनुष्यलोपके उपपतो

तो त्रीयानां क्षेत्रानुपातेनाऽल्पबहुत्वमुक्तं, इदानीं चतुर्गतिदण्डकक्रमेण तदभिधित्सुः प्रथमतो नैरयिकाणां माह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा नेरइया तेलोक्के इति । क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण नैरयिकाश्चिन्त्यमानाः सर्वस्तोकास्त्रैलोक्ये त्रैलोक्यसंस्पर्शिनः, कथं त्रैलोक्यसंस्पर्शिनो नैरयिका इति चेत् उच्यते-इह ये मन्दरशिखरे अञ्जनदधिमुखपर्वतशिखरादिषु वा वापीषु वर्तमाना मरणे च नारकपृथिवीगमनाभिमुखाः प्रविशन्तो नारकेषु प्रवेशा- न् विदधति तथैव त्रैलोक्यमपि स्पृशन्ति नारकव्यपदेशं च लभन्ते तत्कालं नरकेषूत्पत्स्यमानाऽऽयुःप्रतिसंवेदनात्, तदेते स्तोका इति पर्यवसितं सर्वस्तो- काः, यस्मात् व्याचष्टे नारकाणां पञ्चेन्द्रियतिर्यक्पञ्चेन्द्रियतयोत्पद्यमाना समुद्घातवशतो विक्षिप्तनिजात्मप्रदेशदण्डाः परिगृह्यन्ते तावत्ते तेन न- रा नारका एव निर्विवादं तदायुःप्रतिसंवेदनात् त्रैलोक्यसंस्पर्शिनश्च यतोऽवश्यमेव यावदास्मप्रदेशदण्डस्य विक्षिप्तत्वादिति । तेभ्योऽधोलोकति- र्यग्लोके असंख्येयगुणाः यस्मात् सर्वपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः असंख्येयेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां मध्येषु उत्पद्यमाना यतोऽत्र

तेलुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्ज० अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्खजो- णिणीओ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्ज०, तेलुक्के असंखेज्ज० अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणाओ अहोलोए संखेज्जगुणाओ तिरियलोए संखिज्जगुणाओ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सा तेलुक्के उड्ढलोयतिरिय

यस्तोऽनिर्विवादानिवासाद्वे ये पर्यायाः सर्वदा तावत् तेभ्यो अधःलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः निगमदण्डः सर्वदा एवं तिर्यञ्चो येऽमी विपयादयः नारकाः असंख्येयगुणाः । तिरश्च असंख्येयगुणा भवनपतिव्यन्तरादयो वर्तमाना अतिशयेन पञ्चे । यतोऽधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येय- गुणाः यश्चात् सर्वमिश्रगुणाः । तेभ्यो यथा अतिशयत्वात् असंख्यातगुणा यथा नारकीमरणसमुद्घात विबन्धोपपत्तेः । तिर्यक्लोके संख्येयगु- णाः निजायुत्यागं तेमाटेतेभ्यो यथा असंख्यातगुणाः यथा ग्राम उत्पत्तौ समुद्रमा नन्दीश्वरसमुद्रमा उपपत्ते । सर्वस्तोका मनुष्यातिश- ये उर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा । येषां यो मनुष्य उत्पद्यते वैक्रियसमुद्घातेन अल्पकालं तेभ्यो अधोलोकतिर्यग्लोके ममं

तद्द्वयं स्पृशन्ति ततो भवन्ति पूर्वोक्तेभ्योऽसंख्येयगुणाः तेषां स्वस्थानासन्नत्वात्। भवनादिभ्यो ह्यसंख्येयद्वीपसमुद्रात्मक एव मध्यलोकोऽसंख्येयगुणोऽमित्य तो भवत्यसंख्येयगुणाः समेत्य निपतन्ति नारकायुषः असंख्येयेषु द्वीपसमुद्रेषु तिर्यक्पञ्चेन्द्रियतयोत्पद्यमाना मारणान्तिकसमुद्घातेन विचित्रगति नामनर्दाघर्दनाः स्पृशन्ति यदि नारकायु प्रतिसंवेदना नारका बहुतमाना अपि असंख्येयाः प्राप्यन्ते इति। प्रागुक्तेभ्योऽसंख्येयगुणाः तेभ्योऽधोलो के असंख्येयगुणाः तस्य तेषां स्वस्थानत्वात् उक्तं नारकगति मधिकृत्य क्षेत्रानुपातेना अल्पबहुत्व, मिदानीं तिर्यग्गति मधिकृत्या ह-खेत्ताणुवा एव सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए इत्यादि ॥ इदं सूत्रमपि सामान्यतो जीवसूत्रमिव भावनीयं। तदपि तिर्यक्पञ्च सूत्रमिवो ह्यन अधिकृत्य भावित मधुना तिर्यग्योनिकस्त्रीविषय मल्पबहुत्वमा ह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ तिरिक्खजोणिणीओ उड्ढलोए इत्यादि। दे

लोए असंखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्जगुणा।
खेत्ताणुयाएण सव्वत्थोवाइं मणुस्सीओ तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ अहोलोयतिरियलोए संखे
ज्जगुणाओ उड्ढलोए संखेज्जगुणाओ अहोलोए संखेज्ज० तिरियलोए संखेज्ज०, खेत्ताणुयाएण सव्वत्थोवा

व्यातव्या। अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके अपि। केचिद्वैमानिकदेवता मनुष्यमपि उपभोक्तुमतरलमनेप्रसरे पर्यासान तिर्यक्लोके भवनादीनां भवनपति आदि मनुष्यानामपि उपभोक्तु कालोके स गुण विद्याधरादि पद्ममपि समुच्चिमममप्यनपेक्ष तेषां अधोलोकासंख्यातगु णा अधोग्रामादि अमापितमनुष्यमामाटेषां। तिर्यग्लोके अपि तिर्यग्लोकमनुष्यसदृशापिवे लोकेषु मनुष्ययोर्विशेषोऽवसेयः। क्षेत्रानुपाते च मधर्मादिषाया मनसपा तिर्यक्च उर्ध्वलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणाः। अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा उर्ध्वलोके संख्येयगुणाः समुद्घात समवहतानां सरणे तेषां उर्ध्वलोकतिर्यक्लोके वैमानिकदेवता मनष्यलोकापेक्षया तेभ्यो संख्यातगुणा भवन्ति। अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणाधो ध्रुवसाधारणामिमुख्याया अधोलोके संख्येयगुणाः। तेभ्यो अधोलोकतिर्यक्लोके संख्यातगुणा अधोलोके ग्रामादि तिर्यग्लोक मनुष्यलोक उपरतो

तो जीवानां क्षेत्रानुपातेना ऽल्पबहुत्वमुक्तं, मिदानीं चतुर्गतिसमासेनैव तद्विभिषित्सु प्रथमतो नैरयिकाणां माह–खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा नेरइया
तेलोक्के इति । क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण नैरयिका चिन्त्यमानाः सर्वस्तोका त्रैलोक्ये लोकत्रयसंस्पर्शिनः सर्वस्तोकत्रयसंस्पर्शिनो नैरयिकाः कथम्
तेषामयमाकाश इतिचेत् उच्यते–इह ये मन्दराद्रेर्मरूमदिमुक्तपर्वतशिखरादिषु वा वापीषु वर्तमानामरस्याद्योनारकपूर्वस्थितस्यैव इलिकागत्या प्रदेशा
न् विक्षिपन्ति तदेव त्रैलोक्यमपि स्पृशन्ति नारकव्यपदेशं च लभन्ते तत्कालमवनरकेपूत्पत्त्यमारकायुःप्रतिसंवेदनात्, तथेत्यप्रतीताक्षतिपयेइतिसर्वस्तो
काः, यस्तु व्यावर्त्तते नारकापवपयोगेन वापीषु तिर्यक्पञ्चेन्द्रियतयो त्पद्यमानाः समुद्घातवशतो विचित्रानिजात्ममन्दिरात्माः परित्यजन्ते तस्मिन्नुत्थिते त
दा नारका एव निर्विवादं तदायुःकर्मप्रतिसंवेदनात् त्रैलोक्यसंस्पर्शित्वम् यथोक्तवापी यावन्तास्मप्रदेशाद्दण्डस्य विक्षिप्तस्यादिति । तस्यो ऽधोलोकति
यग्लोकाख्य प्रागुक्तप्रतरद्वयस्य संस्पर्शिनोऽसंख्येयगुणाः यतो बहवोऽसंख्येयेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानरकेषू त्पद्यमाना यथोक्तप्र

लुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्ज० अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तिरिक्खजो
णिणीउ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्ज०, तेलुक्के असंखेज्ज० अहोलोयतिरिलोए संखिज्जगुणाउ
अहोलोए संखेज्जगुणाउ तिरियलोए संखिज्जगुणाउ खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा मणुस्सा तेलुक्के उड्ढलोयतिरिय

स्थातोऽनिचयवानियानांमोद्दश्यं यथपाग्राववाताववियं तेभ्यो ऽधस्ताचतिर्यग्लोकवर्त्तमाना असंख्यातगुणा [illegible] तिर्यग्लो
कोऽधिकमतेरथाविभाग असंख्यातगुणो । तिर्यक् यथांसंख्यगुणापा भवनपतिव्यन्तरेभ्यो ऽधस्तात्तिर्येचप्रत्ये । यदोताम तिरिचमाएं असंख्येय
गुणाया यथागतसंख्येयगुणाया । तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोक असंख्यातगुणा यथा नारकोमरवममघ्यात तिर्यक्लोकोपपद्ये । तिरियलोए संखिज्जगु
णवाच्यभिनाजवाणं तेभ्यो ऽधोलोकमसंख्यातगुणा यथाग्रामयतो तिर्यक्रमाः नवयोजनसंख्येयमा उपजे । सव्वत्थोवा मणुस्सातिस
के उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा । येषां योऽसंख्याता मनुष्य वचावगुरुणे वैक्रियसमुद्घातेना कारणवशतो तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके यत

लोका द्रव्यपतिव्यन्तरमारका लेपकाया अपि चोर्ध्वलोकेऽपि तिर्यक्प्रवेशद्विप्रतरीत्वनो स्पृशते ऊर्ध्वलोकादेवाद्यो ध्यऽधालोकेच ते समवहता निज निजास्प्रदेशदण्डे लोमऽपि लोकान् स्पृशन्ति प्रभूतायत तथा तिर्यग्योनिकत्वायु प्रतिसंवदनात् तिर्यग्योनिकस्तिषद ततः सख्येयगुणाः ३। ताभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोक अधालोकतिर्यग्लोकसत्र प्रतरद्वय वत्तमानाः सख्येयगुणा यद्यपि नारकादयः समुद्घातमतरगाऽपि तिर्यग्लोके तिर्यक्प्रवेशद्वयरीत्वनो स्पृशते तिर्यग्लोकवत्तिनद्य जीवा स्तिर्यग्यामिकत्वीत्येना ऽधोलाकिग्रामाद्र ऽपि च तत्र तयो स्पृशमाना यथास्वप्रत रद्वयं स्पृशति तिर्यग्यामिकस्यायुःप्रतिसंवदना च तिर्यग्योनिकस्तियाऽपि तथा ऽपालौकिकग्रामायोजनसहस्रावगाहापर्यन्ते ऽर्वाक् क्वचित्प्रदेश मयोजनशतावगाहापि तत्र कार्यितिर्यग्योनिकस्त्रिया ऽवस्थानेनाऽप यथास्वप्रतरद्वयाऽध्यासिनो वर्तते ततो भवति पूर्वोक्तेभ्यः सख्येयगुणाः ४। ताभ्यो ऽधोलोक सख्येयगुणा यतोऽधोलौकिकग्रामाः सर्वेऽपिच समुद्रा योजनसहस्रावगाहा ततो नवयोजनशतानामऽधस्तात् या वतत मत्स्यीप्रभृतिका तिर्यग्यामिकस्त्रिय सा स्वस्थानत्वात् प्रभूता इति सख्येयगुणाः क्षेत्रस्य सख्येयगुणत्वात्, ताभ्य स्तिर्यग्लोक सख्येय गुणाः, उक्तं तिर्यग्गतिमध्यधिकृत्य स्वयमुत्व मिदानीं मनुष्यगतिविषमाह खेत्ताणुवाएणमित्यादि॥ क्षेत्रानुपातेन मनुष्या चिन्त्यमाना खेत्ताण्य ऐलोक्यसंस्पर्शिन सयस्ताका यतो य ऊर्ध्वलोकाद् ऽधोलौकिकग्रामषु समुत्पित्सवो मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता भवति ते कचित्समुद्घात वशा द्वहिर्निर्गतैः स्वात्मप्रदेशैः त्रीनऽपिलोकान् स्पृशन्ति यदिच वैक्रियसमुद्घात माहारकसमुद्घात वा गता तथाविधप्रयत्नविशेषा दूरतर मूर्ध्वऽधाविक्षिप्तात्मप्रदेशा यच केवलसमुद्घातगता तपि त्रीनपिलोकान् स्पृशन्ति स्तोकाश्चैते सयस्ताका ताभ्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोक ऊर्ध्वलोक तिर्यग्लोकसञ्ज्ञप्रतरद्वयसंस्पर्शिनो ऽसख्येयगुणा यत इह वैमानिकदेवाः शेषकायाश्च यथासम्भवमूर्ध्वलोका तिर्यग्लोके मनुष्यत्वेन समुत्पद्यमाना

जागुणाहं तिरियलोए सखिज्जगुणाहं खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा जवणवासीदेवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए

विवह(ा)बारवे। वित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा देवा उड्ढलोए। चयपायीमात्ता सव्वाहारवा ।ना अह कालविपे एससहस्रतामोपरेभावना। उड्ढलोए

ग्रामुपातेन तिर्यग्योनिकस्त्रियविरमामाः सवसोका ऊर्ध्वलोके ह्दमदराविमापीमत्रुतिग्रपिपि पर्चेंन्द्रियतिर्यग्योनिकाः स्त्रियोनयासि ताद घे ग्रम्याऽन्यरात् मयलोका सान्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोक ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोकसत्के प्रतरद्वय वत्तमाना असंख्येयगुणाः कथ मितिचेत् उच्यत-याव रमदरारदेयमाव सावद्वा मपि गजच्छ्रातिकातियक्पचेंद्रिययोनिपू स्पद्यते किपुनः शेषकाया सोऽपि ययासम्भमुपरिवत्तनोऽपि तथो स्पद्यत, ततो य मदरारातारवा यम्ऽपव शेषकाया ऊर्ध्वलोका तिर्यग्पर्चेंद्रियस्त्रीत्वेन तदायुः प्रतिसंवदसमाना सत्पद्यते, या स्त्रियग्लोकवर्सिम्य सि यग्पर्चेंद्रियस्त्रिय ऊर्ध्वलोके दयत्वम ययकायत्वनयो त्पद्यमाना मारणांतिकसमुद्घातेनोत्पत्तिदेश मिश्रनिशासकप्रदेशदशान् विविपति सा य पातमनरद्दय स्पद्यति तिर्यग्पानिकस्त्रियस सा यतो ऽसंख्येयगुणा येत्रसा ऽसंख्येयगुणत्वात् सान्य स्त्रेत्रास्य सस्येयगुणा यस्माद ऽधो

देया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा तेलुक्के असंखेज्जगुणा अहोलोए तिरियलोए असंखेज्ज० अहोलोए संखिज्जगुणाउ तिरियलोए संखिज्जगुणाउ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाउ देवीउ उड्ढलोय उड्ढलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणाउ तेलुक्के संखेज्जगुणाउ अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाउ अहोलोए संखे

प्रदमयमें ज्ञा मावमध्यानगयो कोतायेंवेमवदनायें विद्यापरोवातिवके प्रदेशमयेंपर्वोसाके सख्यातगुणा अधापामवपवतो। तिरियलोपसंखिज्जगुणा पा। तिपक्मावदयरातमयो येनपपगयातगुणामाटे। खित्ताणुवाएण सव्वत्थावदेवाउडलाए। विमिदेवतानो मममहलकवेते येनवोसवयावदेवता वत काले ये भवनपतिविमेदन मवारयवेमवयपतेवायतेमाटे। उडलावतिरिलाए मसंखिज्जगुणा। तेहयो क्षेत्र लोकतियगलाक समवयातगुणा भवन पतिव्यतरज्योतियो मोयमविंदगतवपतरमयें। तिम क्षेमखिज्जगुणा पहालायतिरियलाएअसंखगुणा। तेहवोनेनाम ममवयातगया भवनपतिव्यतरवेमिय ममद्यातविवावनेमयें तेहयो पर्वोलाकतिरलोक ममवयातगया भवनपतिव्यंतरतिमलाक पावते तिर्येवाजिनमहि उपसंतेसवयातगुणा। मवा भाउर्पातरमना तिरियलाए संखिज्जगुणा। पवालोकेसवयातगुणा भवनपतिमेपीतामाठामतेहयो मिवेलाकसंपयातगुणा व्यतरज्योतियो व्यसाममाटे

मीला प्रमनपतिप्रतरमारपा शेपकाया अपि चोर्ध्वलोकेऽपि तिर्यक्पञ्चेन्द्रियस्त्रीस्वेनो त्पद्यते ऊर्ध्वलोकाद्यादयो प्यऽधालोकेच ते समवहता निज निजास्थप्रदेशदकै स्वीमऽपि लोकान् स्पृशति प्रभूतावत तथा तिर्यग्योनिकव्यायु प्रतिसंवेदमात् तिर्यग्योनिकस्त्रियश्च तत संख्येयगुणाः ३ । ताभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोक यथालोकतिर्यग्लोकसञ्च प्रतरद्वय वतमानाः संख्येयगुणा यतोहि नारकादय समुद्घातमतरकाऽपि तिर्यग्लोके तिर्यक्पञ्चेन्द्रियस्त्रीत्वेनो त्पद्यते , तिर्यग्लोकवासिनश्च जीवा स्तिर्यग्योनिकस्त्रीत्वेना ऽधोलौकिकग्रामेषु ऽपि च तत्र तयो त्पद्यमाना यथास्वमस रद्वयं स्पृशति तिर्यग्योनिकव्यायुःप्रतिसंवेदना च तिर्यग्योनिकस्त्रियोऽपि तथा ऽधोलौकिकग्रामायोजनसहस्रावगाहापर्यन्ते ऽर्वाक् कियत्प्रदेश नवयोजनशतावगाहापि तत्र काश्चित्तिर्यग्योनिकस्त्रियो ऽवस्थानेनाऽपि यथास्वमतरद्वयाऽध्यासिन्यो वतत ततो भवति पूर्वोक्ताभ्य संख्येयगु णाः ४ । ताभ्यो ऽधोलोक संख्येयगुणा यताऽधोलौकिकग्रामाः सर्वेऽपिच समुद्रा योजनसहस्रावगाहा ततो नवयोजनशतामामऽधस्तात् या यतत मत्स्यीप्रभृतिका: तिर्यग्योनिकस्त्रिय ताः स्वस्थानत्वात् प्रभूता इति संख्येयगुणाः तत्रस्य संख्येयगुणत्वात् ताभ्य स्तिर्यग्लोक संख्येय गुणाः उक्तं तिर्यग्गतिमभ्यधिकृत्य स्वयुक्त मिदानीं मनुष्यगतिविषयमाह खेत्ताणुवाएणमित्यादि॥ क्षेत्रानुपातेन मनुष्या चिन्त्यमाना स्त्रैलोक्य मेलोक्यसंस्पर्शिनः सर्वस्तोका यतो य ऊर्ध्वलोकाद ऽधोलौकिकग्रामेषु समुत्पित्सवो मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता भवति त कचित्समुद्घात वशा द्विनिर्गतैः स्वात्मप्रदेशै स्त्रीमऽपलोकान् स्पृशति यदिच वैक्रियसमुद्घात माहारकसमुद्घात वा गता तथाविधप्रयत्नविशेषा दूरतर मूर्ध्वऽधोविक्षिप्तात्मप्रदेशा यच केवलसमुद्घातगता तापि त्रीनपिलोकान् स्पृशंति ततोऽधिकृत सर्वस्तोका तेभ्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोक ऊर्ध्वलोक तिर्यग्लोकसञ्ज्ञप्रतरद्वयसंस्पर्शिनो ऽसंख्येयगुणा यत इहवैमानिकदेवाः अपकायाद्य यथासंभवमूर्ध्वलोका तिर्यग्लोक मनुष्यत्वेन समुत्पद्यमाना

ऊगुणात्ते तिरियलोए संखिज्जगुणात्त खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सीदेवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए

[illegible] । बत्ते । [illegible] सर्वस्तोका दृश्या ऊर्ध्वला [illegible] । [illegible] सर्वस्तोका ।ना [illegible] । ऊर्ध्वलो

ग्रामुपातेन तिर्यग्लोकस्पर्शिनो भवन्ति विद्याधराणामपि च मन्दरादिषु गमनं तथा च शुक्ररुधिरादिपुद्गले संमूर्च्छिममनुष्याणामुत्पाद इति । ते विद्याध
ग्रस्याऽल्पत्वात् सर्वसन्निधा ऽवगन्तव्याः तथा संमूर्च्छिममनुष्या अपि यथोक्तप्रतरद्वयस्पर्शवन्त उपपातस्तथा तिर्यक्त्वं इत्यसंख्येयगुणाः, लोकं तो ऽ
स्मदसहस्रारदेवलोकेभ्यो यथोक्तलोकतिर्यग्लोकसत्के प्रतरद्वये संख्येयगुणा यतो ऽधोलौकिकग्रामेषु स्वभावतश्च गर्भजमनुष्या सन्ति च तिर्यग्लोका न्म
ततो च सहस्रारान्तेभ्यो वा ऽधोलौकिकग्रामेषु गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यत्वेन संमूर्च्छिममनुष्यत्वेन वा समुत्पित्सवो यदा ऽधोलोकाद् ऽधोलौकिकग्रामरू
पगृर्यपेर्द्रियप्रिय मनुष्यस्य आपकामन्त्यो वा तिर्यग्लोके गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यत्वेन वा संमूर्च्छिममनुष्यत्वेन वा समुत्पत्तुकामा ते यथोक्तं किल प्रतरद्वय
योक्तप्रतरद्वय स्पृशन्ति ते तथा स्वस्थानतोऽपि कश्चिदधोलौकिकग्रामेषु यथोक्तप्रतरद्वयस्पर्शिन इति प्रागुक्तेभ्यो संख्येयगुणा तस्य ऊर्ध्वलोकस्ये
पगका सौमनसादिषु क्रीडार्थं चैत्यवन्दननिमित्तं वा प्रभूततराणां विद्याधरचारणमुनीनां भावात्, तथा च यथायोग रुधिरादिपुद्गलयोगतः सम्
च्छिममनुष्यसंभवात् तेभ्यो ऽधोलोके संख्येयगुणाः स्वस्थानस्थ बहुत्वभावात् तस्य तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः क्षेत्रस्य संख्येयगुणत्वात् स्वस्थानस्या
च संप्रति क्षेत्रानुपातेन मानुषीविषयं अल्पबहुत्वं माह-खेत्ताणुवाएण मित्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन मानुष्यश्चिन्त्यमानाः सर्वस्तोका त्रैलोक्यस्पर्शिन्य
ईलोका ऽधोलोकाच्च समुत्पित्सवो मारणान्तिकसमुद्घातवशविनिर्गतदूरतरात्मप्रदेशा मऽथवा वैक्रियसमुद्घातगतानां केवलिसमुद्घातगतामा
वा त्रैलोक्यसंस्पर्शाम् तासां वा त्रिलोकत्वमिति । सर्वस्तोका तस्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोक ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोकसत्के प्रतरद्वये संख्येयगुणा वैमानि
कदेवानां आपकायाणां यो ऊर्ध्वलोका तिर्यग्लोके मनुष्यस्त्रीत्वेनोत्पद्यमानानां तथा तिर्यग्लोकगतमनुष्यस्त्रीणाम् ऊर्ध्वलोकसमुत्पित्सूनां मारणान्ति

खेत्ताणुवाएणं तेलुक्के संखिज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखिज्जगुणा

तिरिक्खाए पसम्मिलगुणाओ तिक्खमणिमगवाणा । एव ताव तिर्यक्ताव पवनलातगत्थो देवतामोपरितष्णो वैमानिकवयातगुणो । पञ्चातोपति
वताए संखिज्जगणाया । पधासावतिवपुरावपपातगुणो । पवातापर्चपिम्मगुणाया पधापावासवपापपुणोदेशागमा एमपदेवतानापापणापाता

कथमुद्दपातयथा दूरतरमूद्दविदिशास्प्रदेशानाम ऽत्राऽपि कासमकुर्वतीनां यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शोऽभावात् तासांचो प्रयापामऽपि बहुतरत्वात् ताभ्या ऽधोलोकतिर्यग्लोक प्रागुक्तस्वरूपप्रतरद्वयरूप सत्यपगुणा तिर्यग्लोका मनुष्यलोका अपभ्यो वा ऽधोलौकिकग्रामषु यदिवा ऽधोलोका दधोलौकिकग्रामरूपात् ग्रामाद्वा तिर्यग्लोके मनुष्यलोकवती त्वित्सूना कासांचिद ऽधोलौकिकग्रामषऽवस्थानतोऽपि यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शसम्भवात तासांच प्रागुक्ताभ्यो ऽतिबहुत्वात् ताभ्यो ऽप्यूर्ध्वलोकसंख्येयगुणा कोडार्थं चैत्यवन्दनानिमित्तं वा सौमनसादिषु प्रभूततराणां विद्याधरीणां सत्त्वात्, ताभ्योऽपि अधोलोकसंख्येयगुणा स्वस्थानत्वेन तत्रापि बहुतराणां भावात् ताभ्य तिर्यग्लोके संख्येयगुणा क्षेत्रस्य संख्येयगुणत्वात् स्वस्था नत्वा च गत मनुष्यगतिमधिकृत्या स्पबहुत्व मिदानीं देवगतिमधिकृत्याह-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा देवा उड्ढलोए इत्यादि० क्षेत्रानुपातेन चिन्त्यमाना देवाः सर्वस्तोका ऊर्ध्वलोके, ऊर्ध्वलोके वैमानिकानामेव तत्रभावात् तेषां चाऽल्पत्वात् यदपि भवनपतिप्रभृतयो जिनेन्द्रजन्ममहादौ मन्दरादिषु गच्छ ति तऽपि स्वल्पा एव ति सर्वस्तोका स्तेभ्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोकश्च प्रतरद्वय मसंख्येयगुणा सान्निध्योतिष्काणां प्रत्यासन्न मि ति स्वस्थानं तथा भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्का मन्दरादौ सौधर्मादिकल्पगताः स्वस्थानगमागमेन तथा यथोधर्मादिषु देवत्वेनोत्पित्सवो देवायुःप्र तिसंवेदयमाना उत्पत्तिदेशमभिगच्छन्ति यथोक्त प्रतरद्वयं स्पृशन्ति तत सामस्त्येन यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शिनः परिभाव्यमाना अतिबहव इतिपू र्वोक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा स्तेभ्य त्रैलोक्यसंस्पर्शिनः संख्येयगुणाः ३ । ततो भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका देवा स्तथाविधप्रयत्नविशेषवशतो वैक्रियसमुद्घातेन समवहता संत त्रीनपिलोकान् स्पृशन्ति तेच स्वस्थानवर्तिनः प्रागुक्तप्रतरद्वयस्पर्शिभ्यः संख्येयगुणाः अधस्तनलोकोपपत्त्यन्त इति

अहोलोए असंखेज्जा०, खेत्ताणुयाएण सव्वत्थोवा भवणवासिणीउ देवीउ उड्ढलोए तिरियलोए असंखि०,

गोपरिवज्जिता। त्रिवेणियत्रभवनपतिना प्रपव्रजल्पवबेवे। तिरिक्खाएस्सावक्कमयाया तिमवाबवेवांगमा पभ्रस्यात्गुणो। चित्ताक्वाएव भवस्थाया भवनवासोदेवा यतथोऽत्रतां सवधीयाकाऽत्रभवनवासो स्वस्वाके कारपूर्वसंगति सोधर्मदेवलाके तथा तीर्थकरजे जन्मेमरुपर्वताये तेमाटे वाया तेयथो

संख्येयगुणाः । तेभ्योऽधोलोकतिर्यग्लोके ऽधोलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये वर्तमानाः संख्येयगुणाः सन्ति प्रतरद्विके भवनपतिव्यन्तरदेवानां प्रत्यासन्नतया स्वस्थानं तथा बहवो भवनपतयः स्वभावत्या तिर्यग्लोकगमनमपि तयो वर्तमाना मारणान्तिकसमुद्घातेनसमवहता तथा तिर्यग्लोकवर्तिन स्तिर्यक्पञ्चेन्द्रियमनुष्या वा भवनपतित्वेनो त्पद्यमाना भवनपत्याऽऽयुरऽनुभवन्तो यथोक्तप्रतरद्वयस्पर्शिनो ऽतिबहव इति संख्येयगुणा तेभ्यो ऽधोलोक संख्येयगुणा भवनपतीनां स्वस्थानमिति कृत्वा तेभ्य स्तिर्यग्लोके संख्येयगुणा ज्योतिष्कव्यन्तराणां स्वस्थानत्वात्, अधुना देवी रधिकृत्याल्पबहुत्व माह सव्वत्थोवाओ देवीओ उड्ढलोए इत्यादि ॥ एवमेतत्सूत्रमिवाऽविशेषेण भावनीय सदेवमुक्त देवविषयमौघिक मल्पबहुत्व मिदानीं भवनपत्यादिविशेषविषय प्रतिपिपादयिषु प्रथमतो भवनपतिविषयमाह-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा भवा भवणवासीदेवा उड्ढलो ए इत्यादि । क्षेत्रानुपातेन भवनवासिनो देवा चिन्त्यमानाः सर्वस्तोका ऊर्ध्वलोके तथाहि-केषांचि त्सौधर्मादिष्वपि कल्पेषु पूर्वसंगतिकनिश्रया ग मन भवति केषांचि न्मन्दर तीर्थकरजन्ममहिमानिमित्त मञ्जनदधिमुखेष्वाष्टाह्निकानिमित्त मपरपा मन्दिरादिषु क्रीडानिमित्तं गमन मतोऽत्र सर्वेपि स्तोका इति सर्वस्तोका ऊर्ध्वलोके तेभ्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोकसंज्ञ प्रतरद्वये ऽसंख्येयगुणाः, कथमितिचेत् उच्यते-इहहि तिर्यग्लोकस्थावैक्रियसमु द्घातेन समवहता ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोक च स्पृशंति यथा ते तिर्यग्लोकस्थाएव मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता ऊर्ध्वलोके सौधर्मादिषु देवलो केषु बादरपर्याप्तपृथिवीकायिकतया बादरपर्याप्ताऽप्कायिकतया बादरपर्याप्तप्रत्येकवनस्पतिकायिकतया च शुभेषु मणिविमानादिषु स्थानेषूत्प

तेउक्के सखेज्जगुणाढ अहोलोएतिरियलोए असखेज्ज०, तिरियलोए असखिज्ज० अहोलोए असखिज्ज०

ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्यातगुणा सर्वात्मविशेषात प्रमवागतगुणा मरणसमुद्घात कर सौधर्मादिक पथ्वीकायादिकपणे उपजतां तिहांथकी वैक्रिय समवहतगया वैक्रियसमुद्घातेकरीने । तिहांथकी अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्यातगुणा । तेहथी अधोलोकविशेषाद असंख्यातगुणा अधोलोकमें स्वयं तिर्यक्ताकमपमन भवनमांय । तिरियलोए असंख्यातगुणा अहोलोए असंख्यातगुणा । तेहथी विशेषात असंख्यातगुणा समावरण फोकाले समाप

तुकामा यद्याऽपि स्वस्थाने प्रतिवसन्तो न पारभविक पृथ्वीकायिकाद्यायु द्विविधाऽपि मारणान्तिकसमुद्घाते समवहता केचित्स्वारम्भा
विकमायुःप्रतिसंवेदयन्त कश्चित्, तथा चोक्तं प्रज्ञप्तौ-जीवे णं भंते मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए समोहणित्ता जे भविए मंदरस्स पव्वयस्स
पुरत्थिमेणं जावपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते किं तत्थ गए उववज्जेज्जा उयाहु पडिनियत्तेत्ता उववज्जेज्ज गो० ! अत्थेगइए तत्थगए चेव
उववज्जइ, अत्थेगइए तओ पडिनियत्तित्ता दोच्चंपि मारणंतियसमुग्घाएणं समोहणति समोहणित्ता तओ पच्छा उववज्जइत्ति, स्वभवायुःप्रतिसंवेद
नाय ते भवनवासिन एव सन्तस्त इत्यभूता उत्पत्तिदेशे विशिष्टास्पदप्रायत्वात् तथा ऊर्ध्वलोकगमनागमनत स्वप्रतरद्वयप्रत्यासन्नक्रीडास्थानत
यथोक्तं प्रतरद्वयं स्पृशन्ति ततः प्राग्भ्योऽसंख्येयगुणा स्तम्य त्रैलोक्य त्रैलोक्यसंस्पर्शिनः असंख्येयगुणा यतो य ऊर्ध्वलोके तिर्यग्पञ्चेन्द्रिया प्र
वनपतित्वेनोत्पत्तुकामा यच स्वस्थाने वैक्रियसमुद्घातेन मारणान्तिकप्रथमसमुद्घातेन वा तथाविधतीव्रप्रयत्नविशेषेण समवहता स्ते त्रैलोक्यसंस्प
र्शिन इति सङ्ख्येयगुणाः, परस्थानसमवहतत्वेः स्वस्थानसमवहतानां बहुत्वात् तेभ्योऽधोलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्व
ये ऽसङ्ख्येयगुणाः स्वस्थानप्रत्यासन्नतया तिर्यग्लोके गमनागमनभावतः स्वस्थानस्थितक्रोधादिसमुद्घातगमनतश्च बहूनां यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शना

खेत्ताणुयाएण सव्वत्थोवा वाणमंतरदेवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्ज०
अहोलोय तिरियलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखिज्ज०, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थो

मनिरवावस्थायीमाटे तथा तेथी पश्चानार असंख्यातगुणा भवनपतिमोद्देशीना । क्षेत्रानुवादेन सर्वस्थानगा भवनवासीओ देवीओ उर्ध्वलोके ।
तथा जो पन्यवृत्तवश्यके समवाडोत्पन्नमना छतमानि भवनपतिदेवतानीपरेसमवहिता । उर्ध्वलोकतिर्यग्लोक असंख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके
असंख्यातगणा । तिर्यक्लोक संख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोक असंख्य अधोलोक असं तिर्यग्लोक असं । भिन्नाकमस्थानगमाथे वैक्रियसमुद्घात
तथा अधोलोकतिर्यग्लोक असंख्यातगुणो विशेषाधिक असंख्यातगुणो समासर्थे पण ताम असंख्यातगुणा स्थान माटे विशेषाधिक म । निशानवा०ण

वात् तेभ्यः तिर्यग्लोके ऽसङ्ख्येयगुणा समवसरणादौ जन्ममहिमनिमित्तं द्वीपेषु च रमणीयेषु क्रीडानिमित्तमागमसम्भवा दागतार्श्च चिरकालमऽप्यऽ वस्थानात, तस्मा ऽपोलोक ऽसङ्ख्येयगुणानुभवतास्तिमामधोलोकस्य स्वस्थानत्वात् एवं भवनवासिदेवीमतमल्पबहुत्वं भावनीय, साम्प्रतिव्यन्तर गतमल्पबहुत्वमाह-एतासुवाएर्वमित्यादि ॥ सुगमानुपातेन चिन्त्यमाना व्यन्तराः सर्वस्तोका ऊर्ध्वलोके कतिपयानामेव पण्डकवनादौ तथा भावात्

वाह वाणमतरीह देवीह उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणाह तेलुक्के संखिज्जगुणाह अहोलोए तिरियलोए असंखिज्ज० अहोलोए संखिज्ज० तिरियलोए संखिज्जगुणाह खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा जोइसिया देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्ज० तेलुक्के संखेज्जगुणा अहोलोएतिरियलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए असंखेज्जगुणा खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा जोइसिणीह देवीह उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाह तेलुक्के संखेज्जगुणाह अहोलोयतिरियलोए संखेज्ज०, अहो

[illegible] वा व्यन्तरदेवा ऊर्ध्वलोके। [illegible] सर्वत्र [illegible] विशेषमें पूर्वसमतिमें [illegible]। ऊर्ध्वलोक तिर्यग्लोके च तिर्यग्लोके संख्येयगुणा। तेभ्यो [illegible] मरणसमुद्घात तथा बादरमां [illegible] ते असङ्ख्याता [illegible] गुणा वैक्रियसमुद्घाते। अधोलोकतिर्यग्लोक च । अधोलोकतिर्यग्लोके [illegible] गमनागमनकरणे। अधोलोक [illegible] तिर्यग्लोके च [illegible]। तेभ्यो अधोलोके असंख्यातगुणा [illegible] तिर्यग्लोके च समासरणादिषु। [illegible]। सर्वस्तोका [illegible] देवा ऊर्ध्वलोके। [illegible] ऊर्ध्वलोके [illegible] तीर्थकरजन्मे। ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके च तिर्यग्लोके संख्येयगुणा। तेभ्यो [illegible] वैक्रियसमुद्घातकरणे। अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा। अधोलोके तिर्यग्लोके असंख्यातगुणो [illegible]। अधोलोक च० तेभ्यो अधोलोके असंख्यातमाटे। तिर्यग्लोक असंख्येयगुणा [illegible]। तिर्यग्लोके च

तेभ्य ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे असंख्येयगुणाः, केषाञ्चित्स्वस्थानासन्नवर्त्तितया अपरेषां स्वस्थानप्रत्यासन्नतया अन्येषां बहूनां मन्दरादिषु गमनागमनभावतो यथायोग्यं प्रतरद्वयसंस्पर्शात् तथा समुदायेन चिन्त्यमानानामतिबहुत्वभावात्, तेभ्य त्रैलोक्ये संख्येयगुणाः यतो लोकत्रयवर्त्तिनोऽपि व्यन्तराः तथाविधप्रयत्नविशेषवशतो वैक्रियसमुद्घातेन समवहताः सन्तस्त्रीनपि लोकानामवगाहन्ते स्पृशन्ति च प्रागुक्तेभ्यो विशेषत इति संख्येयगुणाः। तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे ऽसंख्येयगुणाः, ते हि बहूनां व्यन्तराणां स्वस्थानानां तत्संस्पर्शिनो बहव इत्यसंख्येयगुणाः। अधोलोके संख्येयगुणाः अधोलौकिकग्रामेषु तथा स्वस्थानभावात् बहूनामधोलोके क्रीडायागमनभावात्, तेभ्यः तिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणाः तिर्यग्लोकस्य तथा स्वस्थानत्वात्॥ एवं व्यन्तरदेवीविषयमप्यल्पबहुत्वं भावनीयम्। साम्प्रतं ज्योतिष्कविषयमल्पबहुत्वमाह "खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिया" इत्यादि॥ क्षेत्रानुपातेन ज्योतिष्का चिन्त्यमानाः सर्वस्तोका ऊर्ध्वलोके यतः केचिदेव मन्दरे तीर्थकरजन्ममहोत्सवनिमित्तं मन्दरादिषु शाश्वतचैत्यवन्दननिमित्तमपरे वा केचित् मन्दरादिषु क्रीडानिमित्तं गमनसम्भवात्, तेभ्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे ऽसंख्येयगुणाः, ते हि प्रतरद्वयं काचित्स्वस्थाने स्थिता अपि स्पृशन्ति प्रत्यासन्नत्वात् इतरे वैक्रियसमुद्घातसमवहताः अन्ये ऊर्ध्वलोके गमनागमनभावतः ततो ऽधिकप्रतरद्वयस्पर्शिनः पूर्वोक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणाः, तेभ्यस्त्रैलोक्ये त्रैलोक्यसंस्पर्शिनः संख्येयगुणाः यदि ज्योतिष्काः तथाविधतीव्रप्रयत्नवैक्रियसमुद्घातेन समवहताः त्रीनपि लोकान् स्पृशन्ति ते स्वभावतो ऽल्पा इति। पूर्वोक्तेभ्यः संख्येयगुणाः तेभ्योऽधोलोकप्रतरद्वये वर्त्तमाना असंख्येयगुणाः, यतो बहवो ऽधोलौकिकग्रामेषु समवसरणादिनिमित्तं अधोलोके क्रीडानिमित्तं गमनागमनभावतो बहवश्चाधोलोके ज्योतिष्केषु समुत्पद्यमाना यथोक्तं प्रतरद्वयं स्पृशन्ति ततो घटन्ते पूर्वोक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणाः, तेभ्यः संख्येयगुणाः अधोलोके बहूनामधोलोके क्रीडानिमित्तमधोलौकिकग्रामेषु समवसरणादिषु चिरकालमवस्थानात्, तेभ्यो ऽसंख्येयगुणाः तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकस्य तथा स्वस्थानत्वात्, एवं ज्योतिष्कदेवीसूत्रमपि भावनीयम्।

साम्प्रतं वैमानिकदेवविषयमल्पबहुत्वं क्षेत्रानुपातेन सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा उड्ढलोयतिरियलोए इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण चिन्त्यमाना वैमानिकाः देवाः सर्वस्तोका ऊर्ध्वलोक ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये यतोऽध: अधोलोके तिर्यग्लोके वा वर्त्तमाना जीवा वैमानिकेषु उत्पद्यन्ते येऽपि तिर्यग्लोके वैमानिका गमनागमनं कुर्वन्ति येऽपि विवक्षितप्रतरद्वयाध्यासिनः क्रीडास्थानं संश्रिता येऽपि तिर्यग्लोकस्थिता एव वैक्रियसमुद्घातं मारणान्तिकसमुद्घातं वा कुर्वाणा तथाविधप्रयत्नविशेषात् दूरं मात्मप्रदेशदण्डं निसृजन्ति ते विवक्षितं प्रतरद्वयं स्पृशन्ति तेषां अल्प इति । सर्वस्तोका तेभ्य त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः कथं मिति चेदुच्यते-इह ये अधोलौकिकग्रामेषु समवसरणादिनिमित्तं मधोलोकवा क्रीडानिमित्तं गताः सन्तः वैक्रियसमुद्घातं मारणान्तिकसमुद्घातं वा कुर्वाणा तथाविधप्रयत्नविशेषात् दूरतरं मूर्ध्वविक्षिप्तात्मप्रदेशदण्डा ये च वैमानिकजन्मा दीक्षिकागत्या च्यवमाना अधोलौकिकग्रामेषु समुत्पद्यन्ते सन्ति त्रीनपि लोकान् स्पृशन्ति, अतस्ते पूर्वोक्तेभ्य इति असंख्येयगुणा, तेभ्योऽपि अधोलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्वयसंस्थाने असंख्येयगुणा अधोलौकिकग्रामेषु समवसरणादौ गमनागमनभावतो विवक्षितप्रतरद्वयाध्यासिनः समवसरणादौ वा ऽवस्थानतो

लोए संखि० तिरियलोए असंखे० खेत्ताणुयाएण सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा २००० उड्ढलोयतिरियलोए तेलुक्के संखेज्ज० अहोलोयतिरियलोय संखिज्ज० अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोय संखेज्ज० उड्ढलोए

स्वस्थानगमने समासरणादौ ज्योतिष्कदेवेषु अभावात् । सर्वस्तोका ज्योतिष्कदेवा उड्ढलोए । तत्र ज्योतिष्का वैमानिकेषु मेरुनैऋत्ये अन्योन्यवैरात्मतिकार्थे । उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा । तेभ्यो उर्ध्वलोकतिर्यग्लोके च प्रतरद्वये वैक्रियसमुद्घातं च । तिलोके संखिज्जगुणा । तेभ्योऽपि अधोलोके वैक्रियसमुद्घातं । अधोलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा । अधोलोके तिर्यग्लोके असंख्यातगुणा गमनागमनभावेन तियञ्च उपजन्ते । अधोलोए संखिज्जगुणा तिरियलोए संखिज्जगुणा । अधोलोके संख्यातगुणा समवसरणादिक्रीडार्थं तिर्यग्लोके संख्यातगुणा असंख्यातगुणतो । भिन्ना पुत्रपद्मे अधोलौकिकग्रामेषु सर्वे उड्ढलोए । स्वस्थानं ज्योतिष्को अधेके सर्वत्रान्ये ज्योतिष्को स्वस्थाने ज्योतिषीनोपरेभावनां । उड्ढलोयतिरि

मपूना पचोत्तमतरद्वपर्यंस्पर्शनायात् तेभ्यो घोलोके सख्येयगुणा । अघोलौकिकग्रामेषु यपूना समयत्रयादाव ऽवस्थानाभावात्, तेभ्य स्तिर्ये
ग्लाक सख्येयगुणा मनुष्यसमवसरणेषु बहुषु च क्रीडास्थानेषु घपूना सवस्थानाभावात् तभ्य ऊद्धलोक ऽसख्येयगुणा ऊद्धलोकस्य स्वस्थानत्वात् त

खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवाइं वेमाणिणीउ देवीउ उड्ढलोयतिरियलोए तेलुक्के संखेज्जगुणाउ अ
होलोयतिरियलोए संखिज्ज० अहोलोयसंखेज्ज० तिरियलोए संखज्ज० उड्ढलोए असंखि० खेत्ताणुवाएण
सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा उड्ढलोए तिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया , तिरियलोए असं

माव पर्यपिज्ञयत्वाया । अहसावे तिदसुपावें पधख्यातगणा । तिम्र क मपि निमाके सख्यातगुणा । पडासायतिरियसाए पम पधाघोवतिसकुमोव
पमवज्ञानगुणो । पडासाप मपि पधामावे पपपातगणा । शिवे वैमानिकनां कडबे । खित्तावचाएवं सव्वत्थावा विमाचोपादेवा चड्ढसायतिरियसों
ए । मवधातमानिकदुवता अवनावतिसयुताक्षेने विमतिसकमावे वत्तनाघोव वैमानिकमां उपसे तथा वैक्रिय समदृघात खप्रदगेवरो वेमतरघांमें
तिमाधे सगिज्ञमणा । तेघोव घाताकें वैमाघ्येमपघातगणा समोसरघावे । पडामायतिरियसा० संखिज्जगणा । पधाकाद तिग्रमसावे वपतरेमर्में समोस
रचावें । पडासाप स तिरियसाए स । पधासाव सघातगणा समासरचायें तिरवसाव सवघातगणा रमवाभपो । वड्ढमाए मस० खित्तावचाएप ।
चवमाव पसपवातगणा घस्नानमाडे शिवे देवोमा कवेवे । सम्मत्वावोपा वमावचोपा देवोपा वड्ढसायतिरियसाए निसाधे स । सवधाचोवेमानिक
मादेवो उवनाव तिरवनावें वैक्रियसमदृयातकरती मनुष्यादिदृ्योमां उपम ते चावोनिसावनें घ्ययमवपातगचो समासरघावें । पडासायतिरियसाए
मंपि० । पधावाकें सपघातगुणो समासरचभचो तिरवसाचे सदघातमषा । पडासाए सं० तिरियसाए स । पधासाके समासरचभचो तिरचेसाके स
वधातरमवाभचो । वड्ढसाए पमपिज्ञगवापा । अवसावें पमपवातणचो घ्यस्वानमचो । खित्तावचाएप सव्वत्थोवा एगेन्द्रिमयोवा वड्ढसाए तिरिसाए ।
एचेन्द्रियमा वचेवे सपघाता पपाम्नोआतों एचेन्द्रियजोव ऊडसाव तिरवेसाव मरणांतसमुद्घातकरता मतरवेसमें तेसावघाता । पडासायतिरियसाए ।

अथ सदेवासुरग्रामात् एव वैमानिकदेवीविषयसूत्र मपि भावनीयं सांप्रतं केंद्रियादिगत मल्पबहुत्व माह-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा एगिंदि या इत्यादि व सवानुपातेनचिंत्यमाना एकेंद्रियाजीवाः सर्वस्तोका ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकस्य मतरद्वय यतो य तत्रस्थाएव कथन यतो ऊर्द्धलोका तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकाद्वा ऊर्द्धलोके समुत्पित्सवः कृतमारणांतिकसमुद्घाता सा किल विवक्षित प्रतरद्वय स्पृशांति स्वरूपाद ते इति सर्वस्तोका तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका यता य अधोलोका त्तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकाद्वा ऽधोलोक इलिकागत्या समुत्पद्यमाना विव क्षितं प्रतरद्वय स्पृशंति तत्रस्थाय ऊर्द्धलोकाद्या धोलोकोविशेषाधिक सातो यद्वा धोलोका तिर्यग्लोक समुत्पद्यमाना बवाप्यत इति विशेषाधि का तस्य तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा एकप्रतरद्विकवेशा तिर्यग्लोकस्यासंख्येयगुणत्वात् तस्य क्षेत्रस्य असंख्येयगुणा यद्वोति ऊर्द्धलोका ए

खेज्जगुणा, तेलुक्के असं०, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा एगिंया जीवा अपज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोए तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असं खेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण

पर्याप्तक तिर्यग्लोके । विशेषाधिका तिर्यग्लोके एव । विशेषाधिक उपपात वैमानिकस्पर्शी तेषामेव तिर्यग्लोके असंख्यातगुणा एवमेव । तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा ऊर्द्धलोके एव । तेभ्यो विशेषा असंख्यातगुणा स स्वभावो लोका सर सावधो । अधोलोके विशेषाधिकाया त्रिलोकवर्तिनः । अधोलोके विशेषाधिक उपपातता यथा यथायोग । सर्वस्तोका एकेंद्रियपर्याप्तका ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके । सर्वस्तोका जीव एकेंद्रिय अपर्याप्ता अधोलोक तिर्यग्लो के समवर्तमानो यदि । अधोलोकतिर्यग्लोके व तिर्यग्लोके एव । अधोलोके तिर्यग्लोके विशेषाधिक तिर्यग्लोके एव । तिर्यग्लोके एव ऊर्द्धलोके एव । त्रिलोके एव ऊर्द्धलोके । अधोलोके विशेषाधिका । ऊर्द्धलोके विशेषाधिक । त्रिलोकवर्तिन् असंख्यातगुणा एकेंद्रियपर्याप्तका ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके । च अधोलोके च । एकेंद्रियजीवपर्याप्ता ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोक भावनायां यदि । अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका तिर्यग्लोके । अधोलोके तिर्यग्लोके

पातोले पधोलाकाद्दा ऊर्ध्वलोके समत्वघाते सेपाप मध्य मध्यो मारणासिकसमुद्घातवशा द्विविसासमर्दवावमा खीनविलोकान स्पृशति ततो सवस्वऽसख्यपनवा सत्य ऊर्ध्वलोके असख्येयगुणा उपपातक्षेत्रस्य ऽतिबहुत्वा तस्यो ऽधोलोके विसपाधिका ऊर्ध्वलोकस्या दधोलोकस्य विस्तावितत्वात एवम ऽपर्याप्तविषयं पर्याप्तविषयं च सूत्रं भावयितव्य मऽपुना द्वीन्द्रियविषय मल्पबहुत्व माह-खत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदि या इत्यादि ॥ यथानुपातन सत्रानुसारेण चिन्त्यमाना द्वीन्द्रिया सर्वस्तोका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकस्यैकदेश तपा सत्त्वात्, तस्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोक प्रत

सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा पज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असं०, अहोलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया अपज्जत्तया उड्ढलोए । उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असं

विग्रहाधिक तिर्यग्लोके पसख्यातगवा । तिसाक पर्स वद्रठनाप पर्स त्रिसाके पसख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असख्यातगुणा । अधोलाप विसेसाहिया पधानाधे विमसाधिक । खित्तापवाएण सव्वत्थोवाबेंदिया वड्ढलोय वडलोकतिरियलाए पसख्यातगुणा तिसाक पसख्यातगुणा । यैनायोलाता सर्व बादरेन्द्रिय उत्तसाक सेवनोपुत्रवावाविमाद्विदवे तेमको तियक्ष्याचे विसत्यवो पधरपत उधको ऊह उपजे तेमको समदपातवेरो मरचातवरता तो मसावमोंं । पधासायतिरियधाए पमपिखगुवा । पधीसाक तियसावे पसख्यातगुणा स्वस्थानमचो । पधासाए संख्ये विरियसाए संख्येयगुणा । पधानाक मसयातगुवा उपल तिर्यग्धावे सपगातगुवा उपजवनाठाम । खित्तापवाएण सव्वत्थोवाबेंदिया पपज्जतगा उडलाए । पपमासमेंं मवयाता बेन्द्रिय पपर्याप्ता ऊर्ध्वलोके भावनापापमोपरे । उड्ढलायतिरियधाए पस० । ऊर्ध्वलोके तियकुसाक पसंख्यातगुणा । तिसाक पर्स० तोमसाकपच पस

अथ सदेवमनुतरम्नाधास एव वैमानिकदेवीविषयसूत्र मपि भावनीयं। साम्प्रते चौरिन्द्रियादिगत मल्पबहुत्व माह- खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंदि या इत्यादि । अत्रानुपातेनचिन्त्यमाना एकेन्द्रियाजीवाः सर्वस्तोका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोकरूप प्रतरद्वय यतो ये तत्रस्था एव कचन यतो ऊर्ध्वलोका तिर्यग्लोक तिर्यग्लोकाद्वा ऊर्ध्वलोके समुत्पित्सवः कृतमारणान्तिकसमुद्घाता स्त किल विग्रहेण प्रतरद्वय स्पृशन्ति स्वल्पाश्च ते इति सर्वस्तोका तस्मादधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका यतो ये अधोलोकात् तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकाद्वा ऽधोलोके इलिकागत्या समुत्पद्यमाना विग्र हेण प्रतरद्वय स्पृशन्ति तत्रस्थाश्च ऊर्ध्वलोकाद्वा अधोलोकविग्रहाधिक सन्ता यश्चतो ऽधोलोका तिर्यग्लोके समुत्पद्यमाना अवाप्यन्त इति विशेषाधिका तस्य तिर्यग्लोक असंख्येयगुणा एतत्प्रतरद्विकक्षेत्रा त्तिर्यग्लोकक्षेत्रस्याऽसंख्येयगुणत्वात् तस्य क्षेत्रास्य असंख्येयगुणा यद्यपि ऊर्ध्वलोका ऊ

संखेज्जगुणा, तेलुक्के असं०, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा अपज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोए तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं

ध्वाधालोक तिर्यग्लोके। विशेषाधिका तिर्यग्लोक असं। विशेषाधिक उपपातो येषां तेभ्यस्तेमाटे तिर्यग्लोके असंख्यातगुणा येभ्यः। तिर्यग्लोके असंख्यातगुणा उर्ध्वलोक असं। तेभ्यो विशेषा असंख्यातगुणा स अधोलोको लोका नाम तावती। अधोलोके विशेषाधिका धिता एवमेव। अधोलो के विग्रह विना उपपातता वा यथा। सम्प्रत्येतत् पर्याप्तोपपातगा उर्ध्वलोकतिर्यग्लोके। सर्वस्तोका जीव एकेन्द्रिय अपर्याप्ता अवस्थाने तिर्यग्लो के अपर्याप्तानी पर्दे। अधोलोकतिर्यग्लोके वि तिर्यग्लोके असं। अधोलोके तिर्यग्लोके विशेषाधिक तिर्यग्लोके असं। तिर्यग्लोके असं उर्ध्वलोक असं। त्रिलोके असं असंख्यात। अधोलोके विशेषाधिका। अवस्थान विशेषाधिक। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका एगिंदियपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए। अ अनोमथैवाद। एकेन्द्रियअपर्याप्ता अवस्थानविकल्प व भावनापाश्चोपरि। अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका तिरियलोए। अधोलोके तिर्यग्लोके

त्पद्यमाना द्वीन्द्रियायु रनुभवंति त्रैलोक्यसंस्पर्शिन स्तेच पूर्वोक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणाः तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा यतो ये द्वीन्द्रिया ध धोलोका तिर्यग्लोके यच द्वीन्द्रिया स्तिर्यग्लोका दधोलोके द्वीन्द्रियत्वेन ग्रपकायत्वेनो त्पित्सवः कृतमारणान्तिकसमुद्घाता द्वीन्द्रियायु रनुभव तः समुद्घातवशतो त्पत्तिदेशंयाव द्विप्रसारितात्मप्रदेशदंडा स्ते यथोक्त प्रतरद्वय स्पृशंति । प्रभूताश्चेति पूर्वोक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा स्तेभ्यो ऽधोलो क संख्येयगुणा स्तत्रो त्पत्तिस्थानाना मतिप्रचुराणां भावात् तेभ्योपि तिर्यग्लोके संख्येयगुणा अतिप्रचुरतराणां योनिस्थानानां तत्र भावात्,

ए अस० । तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अधोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं स व्वत्थोवा तेइंदिया अपज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अ होलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्व त्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोएतिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, अहोलो ए तिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए संखिज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्व

मांध । यथाक्तावे तिरश्चेत्वाच्च संख्यातगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका स्त्रीन्द्रिया अपर्याप्तकाः । त्रीन्द्रियेन्द्रियापर्याप्ता अपर्याप्ता । ऊर्ध्वलोक ऊर्ध्व लोकतिर्यग्लोके असं । ऊर्ध्वलोके भावनार्थे प्रत्युपरे ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्यातगुणा । त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा । त्रिलोके असंख्यातगुणा यथालोके तिरिश्चलोके असं । यथालोके तिरश्चलोके असंख्यातगुणा । यथालोके संख्ये । यथालोके संख्यातगुणा । तिर्यग्लोके संख्ये । तिरश्चलोके स ख्यातगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका स्त्रीन्द्रियपर्याप्तका ऊर्ध्वलोके । अधनालोके सर्वतः त्रीन्द्रियपर्याप्ता ऊर्ध्वलोक । ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोके असं । ऊर्ध्व लोके तिरश्चलोके असंख्यातगुणा । त्रिलोके असं । त्रिलोके असंख्यातगुणा । यथालोके तिर्यग्लोके असं० । यथालोके तिरश्चलोके असंख्यातगुणा । यथा लोके संख्ये० तिर्यग्लोके संख्ये । यथालोके संख्याता तिरश्चलोके संख्यातगुणा त्रीन्द्रियेभ्योपरि चतुरिन्द्रिय सूत्रे । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका चतुरिन्द्रिया

रद्दयकूपे समेसमोयगुणा, यतो य उडुलोका तिय्गलोके तियगलोकाद्वा ऊद्धलोक द्वीन्द्रियत्वेन समुत्पत्तुकामा सहापुरगुनवत प्रसिकागता समुत्प द्यते यच द्वीन्द्रियावय तियग्लोका दूइलोक ऊद्धलोकाद्वा तिर्यग्लोके द्वीन्द्रियत्वमा ऽन्यत्वेनवा समुत्पत्तुकामाः कृतप्रथममारणान्तिकसमुद्घाता य तत्रय द्वीन्द्रियायु प्रतिसंवेदयमाना समुद्घातवशा य पूरवरविमिशनिजात्मप्रदेशदण्डा येव प्रतरद्वयाऽध्यासितक्षत्रसमासीना स्ते यथाक्तप्रतरद्वय स्पर्शिना यस्व येति पूर्वोक्तभ्यो ऽसंख्येयगुणा सान्य खेसोक्य ऽसंख्येयगुणा यतो द्वीन्द्रियाणां प्राचुर्येणो त्पत्तिस्थानान्य ऽधोलोक तस्माद्या ऽति प्रभूतानि तिर्यग्लोक तत्र य द्वीन्द्रिया अधोलोका दूर्द्धलोक द्वीन्द्रियत्वेना ऽन्यत्वेन वा समुत्पत्तुकामाः कृतप्रथममारणान्तिकसमुद्घाता समुद्घात वशाद्वी त्पत्तिदेश यावद्विक्षिप्तात्मप्रदेशदण्डा स्ते द्वीन्द्रियायु प्रतिसंवेदयमाना यतो ऽधोलोका ऽदधोलोक द्वीन्द्रियाक्षायकाया याव द्वीन्द्रियत्वेन समु

खेज्जगुणा, अहोलोए सखे०, तिरियलोए सखे० खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्तया उड्ढलो उ ड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलो ए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलो

पयातगया। पयाकावतिरियलाए यस यथोलोके तियकलोके ससयातगया। पयालाए सखि यथालोके सयातगया। तिरियलोए सखि तिर लेलोके सयातगया। खित्तायवाएय सव्वत्थावा बेइंदियपज्जत्तया उड्ढलोए। य यलोमेलेयाता सयलोका बेइंद्रियपर्याप्ता ऊद्द लोके भावनाथायलोपरि। उड्ढतिरियलोए यस तिलोके यस। अहलोक तियग्लोक ससयातगया तिलोके ससयातगया। यहालोए तिरियलोए यस। यथालोके तिरयेलो के ससयातगया। यहालोए संखि तिरियलोए सखि। यथालोके सख्यातगुणा तिरयेलोके सख्यातगुणा इति तेइंद्रियैकैके। खित्ताणुवाएय सव्वत्था वातेर किया उड्ढलोए उड्ढलोए तिरियलोए यस तिलोके यस। ययलोमध्ये सयलोका तेइंद्रिय अलोके ये द्रयमीपरि तेइंद्रियलोपरि भावनालोके उड्ढला क तिरयेलोक ससख्यातगुणा तिलोके ससख्यातगुणा। यथालोयतिरियलोए यस यथालोके तियग्लोके ससख्यातगुणा। यहालोए स तिर्द्ध यथाए

देवापेक्षया विशिष्टासमवहता पंचेंद्रियाणां स्थानमनुभवति ते त्रैलोक्यसंस्पर्शिन स्तोका उपेयन्ति । अधोलोका ऽसंख्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्व
यरूप संख्येयगुणाः प्रभूततराणा मुपपातेन समुद्घातेन वा यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शनात् तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा अतिप्रभूत
तराणा मुपपातसमुद्घाताभ्या मधोलोकतिर्यग्लोकसंज्ञप्रतरद्वयसंस्पर्शनात् तेभ्य ऊर्ध्वलोके संख्येयगुणा वैमानिकानां मऽवस्थानभावात् ते
भ्यो ऽधोलोके संख्येयगुणा वैमानिकदेवेभ्यः संख्येयगुणानां नैरयिकाणां तत्र भावात् तेभ्य स्तिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणाः संमूर्छिमजलचरखचरा
दीनां व्यन्तरज्योतिष्काणां संमूर्छिममनुष्याणां च तत्र भावात् एवं पर्याप्ताऽपर्याप्तसूत्रमपि भावनीयं पंचेंद्रियपर्याप्तसूत्रं सिद्ध-सूत्रानुसारेण
सर्वस्तोका पंचेंद्रिया पर्याप्ता ऊर्ध्वलोके इत्यादि । क्षेत्रानुपातेन चिन्त्यमानाः पंचेंद्रिया पर्याप्ताः सर्वस्तोका ऊर्ध्वलोके प्रायो वैमानिकानामेव त
त्र भावात् तेभ्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे ऽसंख्येयगुणा विवक्षितप्रतरद्वयप्रत्यासन्नज्योतिष्काणां तद्व्यापिव्यन्तरतिर्यक्पंचेंद्रि

अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखे० । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थो
वा पंचिंदिया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए तिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए
संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पंचिंदिया

तेहथी अधोलोके असंख्यातगुणा तिहांथी असंख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए अस । अधोलोके तिरछेलोके असंख्यातगुणा । अहोलोए स तिरियलोए स ।
अधोलोके तिरछेलोके असंख्यातगुणा । खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पंचिंदिया तेलोक्के उड्ढलोए तिरियलोए य अहोलोयतिरियलोए य । क्षेत्रनेअनुसारे सर्व
थोडा पंचेंद्रिय त्रैलोक्यना फरसनार छे ते थोडा पंचेंद्रिय ऊर्ध्वलोके उपजे तेथकी ऊर्ध्वलोक तिरछेलोके असंख्यातगुणा । उड्ढलोए स अहो
लोए अस तिरियलोए असंखिज्जगुणा । उपपातसमुद्घातवसे ऊर्ध्वलोक अधोलोक तिरछालोके पणमात अतिप्रभूतर उपपातसमुद्घात न थवे प्र
प्रतरमांहे ऊर्ध्वलोके वैमानिकविमानमां उपजता तेहथी अधोलोके असंख्याता नारकी मांहि उपजे यथा तेमाटे यथा मनुष्य तिरछेलोके उपजे,

यचे हमीचिक द्वीन्द्रियसूत्र तथा पर्याप्ताऽपर्याप्तद्वीन्द्रियसूत्रौघिकत्रीन्द्रियपर्याप्तापर्याप्तौघिकचतुरिन्द्रियपर्याप्तापर्याप्तसूत्राणि भावनीयानि सामस मौघिकपञ्चेन्द्रियविषय सत्यवसुत्रमाह-सत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया तेलोक्के इत्यादि ॥ सत्रानपातेन चिन्त्यमानाः पञ्चेन्द्रियाः सर्वस्तोका त्रैलोक्ये त्रैलोक्यसंस्पर्शिनो यतो ये ऽधोलोका वूर्ध्वलोक ऊर्ध्वलोकाद्वा ऽधोलोक [illegible] पञ्चेन्द्रियायुरनुभवन् इलिकागत्या समुत्पद्यते, येच प ञ्चेन्द्रिया ऊर्ध्वलोकाद् ऽधोलोक मधोलोका वूर्ध्वलोक [illegible] पञ्चेन्द्रियत्वमभी त्पिस्सवः कृतमारणान्तिकसमुद्घाताः समुद्घातवशा चोत्पत्ति

त्थोवा चउरिंदिया जीवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा । तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदियाजीवा अपज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिया जीवा पज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा

थोड़ा ऊर्ध्वलोक। उसमें भी सबसे थोड़े चौरिन्द्रिय जीव [illegible] [illegible] ऊर्ध्वलोक। उनसे [illegible] अधोलोकतिर्यक्लोक में असंख्यातगुणा अधोलोक में संख्यातगुणा। तिर्यक्लोक में संख्यातगुणा। क्षेत्रानुपात से [illegible] अपर्याप्तक [illegible] ऊर्ध्वलोक में [illegible] ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोक में असंख्यातगुणा। त्रैलोक्य में असंख्यातगुणा। अधोलोकतिर्यक्लोक में असंख्यातगुणा। अधोलोक में संख्यातगुणा। तिर्यक्लोक में संख्यातगुणा। क्षेत्रानुपात से सबसे थोड़ा चौरिन्द्रिय पर्याप्तक ऊर्ध्वलोक। उसमें भी सबसे थोड़ा चतुरिन्द्रिय जीव पर्याप्त [illegible] ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोक में [illegible] त्रैलोक्य में [illegible]

विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया पज्जत्तया उड्ढलोए तिरियलोए तिरियलोयअहोलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि

बालाव तिरछेलाके सवबातगथा पथाअतर घसान पपा माटे। स तिरियलाए स बकगथा खित्ताणुवाएव सवत्थावा पुढवोबारया उड्ढलार्यति रियलाए भहालायतिरियलाए विसेसाहिया। तेहथी तियकलाव सववातगुणा पचेंद्रियसस्लाम तियचसनथसाहि मावे। हिवे एवे प्रयमा पसयवुल अधैवे पवनीमवे सववाता पुविवोबारव छहवाव तियकाव भावना सर्वपावथो परिवावधो। पथालाकें तिरछेलाके विशेपाधिक। तिरियलाए पस तिलाव पस उड्ढलाए पस पहालाए विसेसाहिया। तिर्यकलाकें पसयथातगुणा त्रिलाकें पसयथातगुणा अवलाक पसयथातगणा पथालाकविशेप धिक। खित्ताणुवाएव सवत्थावा पढवोबारय पपज्जत्तया उड्ढलायतिरियलाए पहालायतिरियलाए विससाहिया। वेथनोसवे सववाता पुढवोबारया पपर्याप्ता छठ लाव तिरछेलाव भावनापाछलो परे। अवलाव पथालाव विशेपाधिक। तिरियलाए पस तिलाव पस उड्ढलाए पसंखि०। तिरछेलाक पसयथातगुणा त्रिलाके पसयथातगणा अव लाके पसयमातगुणा। पहालाए विससाहिया। पथालाके विशेपाधिक। खित्ताणुवारय सवत्था वा पढवोबारयपज्जत्तगा उड्ढलायतिरियलाए। वेथभोमेवे सववाता पुविवोबारय पर्याप्ता अवलाके तियकुलाके भावनापाछलोपरे। पहालायतिरि यलाए विसेसाहिया। पथालाके विशेपाधिक तिरछेलाक। तिरियलाए पसं तिलाके पसं० उड्ढलाए पस० पहालाए विसेसाहया। तिरछेलाव

याया वैमानिकव्यन्तरज्योतिष्कविद्याधरचारणमुनितिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणां ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोके च गमनागमने कुर्वता मऽपिकृतप्रतरद्वयस्पर्शात् तेभ्य स्त्रैलोक्य त्रैलोक्यसंस्पर्शिन असंख्येयगुणाः कथं मितिचेत् यतो ये भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका विद्याधरा वा ऽधोलोकस्थाः कृतवैक्रियसमुद्घाता स्तथाविधप्रयत्नविशेषा ऊर्ध्वलोकविविक्षातप्रदेशवज्ञा स्त त्रीनऽपि लोकान् स्पृशन्ती ति असंख्येयगुणाः तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोक प्रतरद्वयरूप असंख्येयगुणा अधोलोकव्यन्तराः स्वस्थानप्रत्यासन्नतया भवनपतयः तिर्यग्लोक ऊर्ध्वलोकेवा व्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका देवा अधोलौकिकग्रामेषु समवसरणादा वऽधोलोके क्रीडादिनिमित्तं च गमनागमनकरणत तथा समुद्रेषु केचित्तिर्यक्पञ्चेन्द्रियाः स्वस्थानप्रत्यासन्नतया अपर तदभ्यासितकत्वाभितया यथोक्त प्रतरद्वय स्पृशन्ति तत असंख्येयगुणाः तेभ्यो ऽधोलोके असंख्येयगुणा नैरयिकाणां भवनपतीनांच तत्रा ऽवस्थानात् तेभ्य स्तिर्यग्

अपजत्तया, तेलोक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखिज्जगुणा खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पंचिंदिया पज्जत्ता उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असं०, तेलुक्के असं०, अहोलोयतिरियलोए संखेज्ज० अहोलोए संखेज्ज० तिरियलोए असंखेज्ज०, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए

खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचेंदिय अपज्जत्तगा तिलोके । भवनवासी व्यन्तर पंचेंद्रिय अपर्याप्ता तिरछेलोकनाके आवता आवतो परि वस्या । उड्ढलोयतिरियलोए अस । उर्द्धलोके तिरछेलोक असंख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा उड्ढलोए संखिज्जगुणा अहोलोए २ तिरियलोए असंखिज्जगुणा । अधोलोक तिरछेलोके संख्यातगुणा अर लोक अधोलोक असंख्यातगुणा तिरछेलोके असंख्यातगुणा । खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचेंदि अपज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असं । भवनवासी व्यन्तर पंचेंद्रिय पर्याप्ता अर लोके वैमानिकना माहे तिर्यंची अर लोके तिर्यञ्चना च रणादिगुण वैमानिक ज्योतिषी विद्याधरचारण गमनागमने । तिलोक संखिज्जगुणा । अधोलोके असंख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए । अ

तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्ज०, उड्ढलोए असंखिज्ज०, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणु
वाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरि
यलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ता
णुयाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरि
यलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ता
णुयाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए अ

ओघेनैव सर्वस्तोकास्तेजस्कायिका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके भावनापातनीयं। अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका तिर्यग्लोके च । अधोलोके तिर्यग्लोके वि
शेषाधिक तिर्यग्लोके असंख्यातगुणा। त्रिलोके चर्च ऊर्ध्वलोके च अधोलोके विशेषाधिका । त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधो
लोके विशेषाधिक। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका तेजस्कायिकअपर्याप्तकाः। अनन्तरोक्त सर्वस्तोका तेजस्कायिका अपर्याप्ता। ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिरि
यग्लोके विशेषाधिका। ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोक तिर्यग्लोके विशेषाधिक। तिर्यग्लोके च त्रिलोके च ऊर्ध्वलोके च अधोलोके विशेषाधिका।
तिर्यग्लोके असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका तेजस्कायिकपर्याप्तका
अनन्तरोक्त सर्वस्तोका तेजस्कायिकापर्याप्ता। ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका। ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोके अधोलोक तिर्यग्लोके विशे
षाधिक। तिर्यग्लोके च० त्रिलोके च ऊर्ध्वलोके च । तिर्यग्लोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा । अधोलोके वि क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तो
का। अधोलोके विशेषाधिक अनन्तरोक्त सर्वस्तोका। वायुकायिका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके। वायुकायिका ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोके। अधोलोकतिर्यग्लोके विशे
अधोलोके तिर्यग्लोके विशेषाधिक। तिर्यग्लोके च० त्रिलोके च० ऊर्ध्वलोके च अधोलोके विशेषाधिका। तिर्यग्लोके असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्या

सेसाहिया तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसे साहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि सेसाहिया तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलोक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसे साहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोएतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि सेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसे साहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया,

---

असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका अप्कायिका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके । ऊर्ध्वलोकसत्के एकदेशे अधोलोकसत्के एकदेशे तिर्यग्लोके। अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका तिर्यग्लोके अस । अधोलोके तिर्यग्लोके विशेषा धिका तिर्यग्लोके असंख्यातगुणा । तिर्यग् च ऊर्ध्वलोके च । त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा । अधोलोके विशेषाधिका क्षेत्रानुपातेन च । अधोलोके विशेषाधिका अधोलोकसत्के एकदेशे । अप्कायिकपर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके । अपर्याप्ता अपर्याप्ता ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोके सत्के द्विविधोपरि भावना । अधोलोके तिर्यग्लोके विशेषाधिका । अधोलोके तिर्यग्लोके विशेषाधिका । तिर्यग्लोके असंख्यातगुणा त्रिलोके च । तिर्यग्लोके असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा । ऊर्ध्वलोके अस० अधोलोके विशेषाधिका । ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन स र्वस्तोका प्राग्वारपर्याप्तका । अधोलोकसत्के सर्वस्तोका अपर्याप्तापर्याप्ता । ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका । ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोके । अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका तिर्यग्लोके च । अधोलोके तिर्यग्लोके विशेषाधिका तिर्यग्लोके असंख्यातगुणा । त्रिलोके च ऊर्ध्वलोके च अधोलोके विशेषा धिका । त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका तेजस्कायिका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके । अध

तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्ज०, उड्ढलोए असंखिज्ज०, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए अ

लोकमध्ये सवथोडा तेउकायिया ऊर्द्धलोक तिर्यक्लोक मांहि पाथडीपर्दे। अधोलोकतिरियलोए विशेषाधिका तिरियलोए अ । अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक तिरछेलोके असंख्यातगुणा। तिलोके असं ऊर्द्धलोए अ अधोलोए विसेसाहिया । त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। क्षेत्रानुपाते सर्वस्तोका तेउकायअपर्याप्ता। लोकमध्ये सवथोडा तेउकायिया अपर्याप्ता। ऊर्द्धलोयतिरियलोए अधोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक। तिरियलोए अ तिलोके अ० ऊर्द्धलोए अ० अधोलोए विसेसाहिया। तिरछेलोके असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। क्षेत्रानुपाते सर्वस्तोका तेउकायपर्याप्ता लोकमध्ये सवथोडा तेउकायपर्याप्ता। ऊर्द्धलोयतिरियलोए अधोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। ऊर्द्धलोके तिर्यक्लोके अधोलोके तिर्यक्लोके विशेषाधिक। तिरियलोए अ तिलोके अ ऊर्द्धलोए अ०। तिर्यक्लोके असंख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असंख्यातगुणा। अधोलोए वि क्षेत्रानुपाते सर्वस्तोका। अधोलोके विशेषाधिक लोकमध्ये सवथोडा। वायुकायिया ऊर्द्धलोयतिरियलोए। वायुकायिया ऊर्द्धलोके तिर्यक्लोके। अधोलोयतिरियलोए विसे अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक। तिरियलोए अ० तिलोके अ० ऊर्द्धलोए अ अधोलोए विसेसाहिया। तिरछेलोके असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्या

सखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अधोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तेलुक्के असंखेज्जगुणा

[illegible]

लोके ऽसंख्येयगुणा तिर्यक्पंचेन्द्रियमनुष्यव्यन्तरज्योतिष्काणां भवस्थानात् तदेव सूत्र पंचेन्द्रियाणां मल्पबहुत्व मिहापी मेन्द्रियभेदाना पृथिवी कायिकादीनां पंचानां मौघिकपर्याप्तापर्याप्तभेदेन प्रत्येकं षोडशीक्ष्य अल्पबहुत्वानि ५० खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया उड्ढलोयतिरिय

उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया तेलुक्के

तिकाएका पपर्याप्ता उड्ढलोके तिरश्चेकाम । अधोलोकतिर्यग्लोके विसेसाहिया तिर्यग्लोके च त्रिलोके च । अधोलोके तिरश्चेनाके विशेषाधिक ति रश्चेनाक त्रिलोके असंख्यातगुणा । ऊर्ध्वलोके च अधोलोके विशेषाधिका । ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका अपर्याप्तास्तेजस्कायिका । अत्रोपपत्तिः सर्वेषा मनुष्यक्षेत्रापर्याप्ता । ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका । ऊर्ध्वलोके तिरश्चेना च अधोलोक तिरश्चेनाके विशेषाधिक । तिर्यग्लोके च त्रिलोके च ऊर्ध्वलोके च । तिरश्चेनाके असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके च असंख्यातगुणा । अधोलोकविशेषाधिका क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका त्रसकायिका । अधोलोक विशेषाधिक अत्रोपपत्ते सर्वेषा त्रसकायिका । त्रिलोके ऊर्ध्व लोकतिर्यग्लोक अस अधोलोकतिर्यग्लोके संधि । त्रिलोके परसे ते इत्थं पंचेन्द्रियोपरि भावना ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोके असंख्यातगुणा अधोलोके तिर श्चेनाक असंख्यातगुणा । ऊर्ध्वलोक संधि अधोलोक संधि तिर्यग्लोक अस । ऊर्ध्वलोके संख्यातगुणा अधोलोके संख्यातगुणा तिरश्चेनाके असंख्यात गुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका तत्कायिका अपर्याप्तका । अत्रोपपत्ते सर्वेषा अपर्याप्ता अपर्याप्ता । त्रिलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोक अस० अधोलोक

लोए इत्यादि ॥ इमानि पंचदशापिसूत्राणि प्रागुक्तैकेंद्रियसूत्रवद्भावनीयानि सांप्रतं मौघिकत्रसकायापर्याप्तापर्याप्तत्रसकायसूत्राण्या ह-खेत्ताणुवा एणं सव्वत्थोवा तसकाइया तेलोक्के इत्यादि ॥ इमानि पचेंद्रियसूत्रवद्भावनीयानि गतं क्षेत्रद्वारं २४। इदानीं बंधद्वारं वक्तव्यं तच्चोपलक्षितं द्वारं तदाह-पर्याप्तं भंते ! जीवाणं आउयस्स कम्मस्स बंधगाणं अबंधगाणं मित्यादि ॥ इह शुभमयबंधकावंधकानां पर्याप्तापर्याप्तानां सुप्तजागृता

उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखिज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा। दारं २४। एएसिणं भंते! जीवाणं आउस्स कम्मस्स बंधगाणं अबंधगाणं अपज्जत्ताणं पज्जत्ताणं

तिरियलोए संखिज्जगुणा। त्रिलोके सत्त्वाः तिर्यग्लोके असंख्यातगुणाः अधोलोके तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः। उड्ढलोए संखिज्जगु। अहोलोए संखि। ऊर्ध्वलोके संख्यातगुणाः अधोलोके संख्यातगुणाः तिर्यग्लोके असंख्यातगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः त्रसकाय अपर्याप्ताः। त्रैलोक्ये सर्वस्तोका अपर्याप्ता। त्रिलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असं। त्रिलोके अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्यातगुणाः। अधोलोकतिर्यग्लोके संखि। ऊर्ध्वलोके सं। अधोलोकतिर्यग्लोके संख्यातगुणाः ऊर्ध्वलोके संख्यातगुणाः। अधोलोके सं। तिरियलोए असं दारं। अधोलोके संखिज्जगुणा तिर्यग्लोके असंख्यातगुणा इति लोके १ पद २४। जीवोऽल्पा दारं भाविता। एएसिणं भंते जीवाणं। इति बंधद्वारं कथ्यते—हे भगवन् एतेषां जीवानां। आयुष्कर्मबंधकानां अबंधकानां च पर्याप्तानां अपर्याप्तानां। आयुःकर्माबंधकाः आयुःकर्मणः बंधकाः अपर्याप्ताः अपर्याप्ताः। सुप्तानां जागराणां समवहतानां असमवहतानां। सुप्ताः ना

समयइतोममवइताना सातावेदकाऽसातवेदकाना इन्द्रियोपयुक्तनोइन्द्रियोपयुक्तानां साकारोपयुक्ताऽनाकारोपयुक्तानां समुदायेनाऽल्पबहुत्व वक्त
र्थं तत्र प्रत्येक तावद्रूमो येन समुदाय सुखेन वद् ऽवगम्यते तत्र सर्वस्तोका आयुषो बन्धका अबन्धका: संख्येयगुणा:, यतो ऽनुभूयमानभवायुर्
पे त्रिभागाऽवशेषपारभाविक आयु जीवा बध्नन्ति त्रिभागत्रिभागाद्यऽवशेष वा ततो द्वौ त्रिभागा बऽबन्धकाल एक त्रिभागो बन्धकाल इति । व
कम्यो ऽबन्धका: संख्येयगुणा तथा सर्वस्तोका अपर्याप्तका: पर्याप्तका: संख्येयगुणा, एतच्च सूक्ष्मजीवान ऽधिकृत्य वेदितव्य सूक्ष्मेषु हि वातो
पघातो न भवति तत सदऽनावा इहूमां निष्पत्ति: जीवानामेव वा ऽभिप्रेत्य तथा सर्वस्तोका सुप्ता जागरा संख्येयगुणा:, एतदऽपि सू

सुत्ताण जागराण समोहयाण असमोहयाण सातावेदगाण असातावेदगाण इंदियउवउत्ताण णोइंदियउव
उत्ताण सागारोवउत्ताण अणागारोवउत्ताणय कयरे कयरेहितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया
वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आउस्स कम्मस्स बंधगा अपज्जत्तया संखिज्जगुणा, सुत्ता संखिज्जगु
णा, समोहया संखिज्जगुणा, सातावेदगा संखिज्जगुणा, इंदियउवउत्ता संखिज्जगुणा, अणागारोवउत्ता

सताने समाधाने असमोधाने । सातावेदगाणं असातावेदगाणं । सातावेदकने असातावेदकने । इन्द्रियवउत्ताण नोइन्द्रियवउत्ताण । इन्द्रियोपयुक्तने
नोइन्द्रियोपयुक्तने । सागारोवउत्ताणं अणागारोवउत्ताणय । साकारोपयुक्तने अनाकारोपयुक्तने । कयरे २ किंवा अल्पाबहुत्व विसेसाहिया गा सव
स्तोका जीवा आउकम्मस्सबंधगा अपज्जत्तया संखिज्जगुणा सुत्तासंखिज्जगुणा । पछमां किंवा २ जो जीवा अथवा घणा सरीखा विशेषाधिक हवे । जेथी
तम सर्वथी थोडा जीव आयुकर्मबंध त्रिभागविभागे परभवना आव बांधेला जीवो तेथकी अबंध असंख्यातगुणाछे आयुष्य बांधना अबंधकाल त्रिभाग
अबंधकमाटे अबंध असंख्यातगणा सर्वथी अपर्याप्ता सूक्ष्मजीवाश्रीजाणिवा सर्वथी अधिक बीजा संख्यातगणाए पिणसूत्र०केंद्रियने केमाटे
अपर्याप्ता सूता कहिये । असंमोहयासंखिज्जगुणा सातवेदगा स० इन्द्रियवउत्ता स० अणागारोवउत्ता स० सागारोवउत्ता स० नोइन्द्रियवउत्ता वि ।

त्नामे केंद्रियान ऽधिकृत्य वेदितव्य यस्माद् ऽपर्याप्ता सुप्ता एव लभ्यते जागरामपि, उक्त मूलटीकायां–यस्मा अपर्याप्ता सुत्ता लब्भंति, केइ अपज्ज त्तगा केसिं वज्जित्ता समया भणिया ते अयोवा इयर विमोयणा अव सेसा जागरा पज्जत्तगा ते संखिज्जगुणा इति, जागरा पर्याप्ता स्ते न संख्ये यगुणा इति तथा समवहता सवस्तोका यतइह समवहता मारणांतिकसमुद्घातेन परिगृह्यन्त मारणांतिक च समुद्घातो मरणकाले न शेषकाले तत्राऽपि न सर्वेषा मिति सवस्तोका स्तेभ्यो ऽसमवहता असंख्येयगुणा जीवनकालस्या ऽतिबहुत्वात् तथा सवस्तोकाः सातवेदका यत इह य दुपः साधारणशरीरा अथ प्रत्येकशरीरिणः साधारणशरीरा च बहवो ऽसातवेदकाः स्वल्पा सातवेदिनः प्रत्येकशरीरिण सुबहवस्तु सातवेद काः, स्तोका असातवेदिन, ततः स्तोकाः सातवेदका, तेभ्यो ऽसातवेदका असंख्येयगुणा तथा सवस्तोका इन्द्रियोपयुक्ता इन्द्रियोपयोगो हि प्रत्यु त्पन्नकालविषय स्तत स्तदुपयोगकालस्य स्तोकत्वात् पृच्छासमये स्तोका एवाप्यते यदातु तमर्थं इन्द्रियेण दृष्ट्वा विचारयत्यो ऽपभ्रयाऽपि त दा नेन्द्रियोपयुक्तः स व्यपदिश्यते ततो नइन्द्रियोपयोगस्या ऽतीताऽनागतकालविषयतया बहुकालत्वा स्संख्येयगुणा नोइंद्रियोपयुक्ता तथा सर्व स्तोका अनाकारोपयुक्ता अनाकारोपयोगकालस्य स्तोकत्वात् साकारोपयुक्ताः संख्येयगुणा अनाकारोपयोगकाला त्साकारोपयोगस्य संख्येयगु

सखेज्जगुणा, सागारोवउत्ता सखिज्जगुणा, नोइंदियउवउत्ता विसेसाहिया, असातावेदगा विसेसाहिया, असमोहिया विसेसाहिया, जागरा विसेसाहिया, पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउस्स कम्मस्स अबंधगा

मे पर्याप्ता जागता कहिये। तेमाटे असंख्यातगुणा सवजीवा समाहित मरणसमुद्घात पाम्योछे पणिसँ मरणांतसमुद्घात मरणकाले हुवे। तेमाटे अ समाहता असंख्यातगुणा छे जीवनाकालाच घणा माटे सवजीवा सातावेदनीय प्रत्येकशरीरी साधारण शरीरी असातावेदकने असंख्यातगुणा सवजी वा इंद्रियापयुक्त असंख्यातगुणा इंद्रियोपयुक्त प्रत्युत्पन्नकाले ते उपयोगकाल थोडाछे पछीसमये थाता पामिये माटे इंद्रियोपयुक्तकालथी अतीतानाग ना विषय घणा माटे असंख्यातगुणा सर्वजीवा अनाकारोपयोगनाकाल थोडमाटे। भाषाषमेषमा वि० असमाधमा वि० आमरविषे पज्जत्तमा वि

त्वात् इदानीं समुदायगत सूत्रोक्त मऽल्पबहुत्व प्राप्यते, सर्वस्तोका जीवाः आयुःकर्मणो बंधकाः आयुर्बंधकालस्य प्रतिनियतत्वात्, तेभ्यो ऽ
पर्याप्ताः संख्येयगुणा, यस्मा दपर्याप्ता अनुभूयमानभवत्रिभागाद्यऽवशेषायुषः पारभाविक मायु बध्नन्ति ततो ह्री त्रिभागाव अबकाल एको मध
काल इति यथकामाद ऽर्यपकालः संख्येयगुणः तत संख्येयगुणाएवा ऽपर्याप्ता आयुरबंधकाः, तेभ्यो ऽपर्याप्तेभ्यः सुप्ता संख्येयगुणायस्माद ऽप
र्याप्तेषु च पर्याप्तेषु च सुप्ता लभ्यते पर्याप्ताया पर्याप्तेभ्य संख्येयगुणा इत्य ऽपर्याप्तेभ्य सुप्ता संख्येयगुणा साम्य समवहता संख्येयगुणा यद्भना

यिसेसाहिया, दार २५। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पोग्गला तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणा अहो
लोयतिरियलोए विससाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया
दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पोग्गला उड्ढदिसाए अहोदिसाए विसेसाहिया उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्चच्छि
मेणय दोवि तुल्ला असंखेज्जगुणा। दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपच्चच्छिमेणय दोवि तुल्ला विसेसाहिया पुरच्छि

आठकमनाबंधकना द्वार। तेहथी साकारोपयोग असंख्यातमना अनाकारोपयोग थी साकारोपयोगमनो काल घणो छे पर्याप्ता विशेषाधिक आय कर्म
ना बंधनो अबंधक विशेषाधिक एतला द्वार २५। आ तोले पदे अल्पबहुत्वमो अवपूरो थयो। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुद्गल तेलोके उड्ढलोयति
रियलोए अनंतगुणा। शिवे पुद्गलद्वार कहेछे—सघले प्रमाणेकरी द्रव्यथी जे महास्कंध ते त्रैलोक्यव्यापी थोडा पडता छे अहंलोक तिरछेलोक अनंतगुणा।
अहोलोक अनंतदेशने प्रतरनपरसें तेमाटे अनंतगुणा छे। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्जगुणा।
तेहथी अधोलोक तिरछालोके प्रागप्र आकार बेप्रतरने फरसे विशेषाधिकमाटे तेहथी तिरछालोके असंख्यातगुणा असंख्यातगुणा माटे अह थोडे ध
संख्यातगुणा तिरछालोकथी ऊर्ध्वलोक असंख्यातगुणा माटे। अहोलोए विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा अल्प उड्ढदिसाए अहोदिसाए विसेसा
हिया उत्तरपच्छिमेण। अधोलोक विशेषाधिक येषेयेषधिका माटे ७ राजथकी अधिकाअगो विशेषाधिक दिवेदिशि ध्यारप्रदेशे घणा ० राजप्रमा

त्वामेवेन्द्रियाण्यधिकृत्य वेदितव्यं, यस्मादपर्याप्ताः सुप्ता एव लभ्यन्ते जागरा अपि, उक्तं मूलटीकायाम्—अल्पा अपर्याप्ताः सुप्ता लभ्यन्ते, केचन अपर्याप्ता
तथा येषां संक्लिष्टा समया अतीता ते पर्याप्ता इतरे विशेषका एव शेषा जागराः पर्याप्तका ते संख्येयगुणा इति, जागराः पर्याप्ता एते न संख्ये
यगुणा इति तथा समवहताः स्तोकाः यतस्ते समवहता मारणान्तिकसमुद्घातेन परिगृह्यन्ते मारणान्तिकश्च समुद्घातो मरणकाले न शेषकाले
तत्राऽपि न सर्वेषां मिति सर्वस्तोका तेभ्योऽसमवहता असंख्येयगुणा जीवनकालस्याऽतिबहुत्वात् तथा सर्वस्तोकाः सातवेदका यत इह ये
ते साधारणशरीरा अल्पे प्रत्येकशरीरिणः साधारणशरीरा च सर्वेऽसातवेदकाः स्वल्पाः सातवेदिनः प्रत्येकशरीरिण स्तूनुपाश, सातवेद
काः, स्तोका असातवेदिन, ततः स्तोकाः सातवेदकाः, तेभ्योऽसातवेदका असंख्येयगुणा तथा सर्वस्तोका इन्द्रियोपयुक्ता इन्द्रियोपयोगो हि प्रत्यु
त्पन्नकालविषय ततः तदुपयोगकालस्य स्तोकत्वात् पृच्छासमये स्तोका अवाप्यन्ते यदा तु तमर्थं इन्द्रियेण दृष्ट्वा विचारयन्तोऽप्यसावपि त
दा नोइन्द्रियोपयुक्त स अपदिश्यते ततो नोइन्द्रियोपयोगस्याऽतीताऽनागतकालविषयतया बहुकालत्वात् असंख्येयगुणा नोइन्द्रियोपयुक्ता तथा सर्व
स्तोका अनाकारोपयुक्ता अनाकारोपयोगकालस्य स्तोकत्वात् साकारोपयुक्ताः संख्येयगुणा अनाकारोपयोगकालात् साकारोपयोगस्य संख्येयगु

सखेज्जगुणा, सागारोवउत्ता सखिज्जगुणा, नोइंदियउवउत्ता विसेसाहिया, असातावेदगा विसेसाहिया,
असमोहिया विसेसाहिया, जागरा विसेसाहिया, पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउस्स कम्मस्स अबंधगा

मे पर्याप्ता जागता कहिये। तेमाटे पर्याप्तसंख्यातगुणा सर्वथोडा समाचित मरणसमुद्घात आयोसे पछि मरणांतिकसमुद्घात मरणकाले हुवे। तेमाटे अ
समोहया असंख्यातगणा छे जीववानाकाल घणा माटे सर्वथोडा सातावेदनीय प्रत्येकशरीरी साधारण शरीरी असातावेदकने असंख्यातगुणा सर्वथो
डा इन्द्रियोपयुक्त असंख्यातगुणा इन्द्रियोपयुक्त अमन्यमकाले ते उपयोगकाल थोडाछे प्रश्नोसमये वाला पामिये नोइन्द्रियोपयुक्तकालनो अतीतानाग
ता विषय घणा माटे असंख्यातगुणा सर्वथोडा अनाकारोपयोगनाकाल थोडामाटे। आयुबंधगा वि असमोहया वि० जागरविसे पर्याप्तमा वि

ष्य इन्द्रियसाकारोपयुक्तेषु विंशतिरूपेष्वपनीतेषु द्विपञ्चाशद्रूपेषु अनाकारोपयुक्तेषु तेषु मध्ये प्रक्षिप्तेषु द्वेशते चतुर्विंशत्यधिके भवत ततः साकारोपयुक्तान्या नोइन्द्रियोपयुक्ता विशेषाधिका अन्यो ऽसातवेदका विशेषाधिका इन्द्रियोपयुक्तानामप्य ऽसातवेदकत्वात् १० तेभ्यो ऽसमवहता विशेषाधिकाः सातवेदकानामप्यऽसमवहतत्वभावात्, तेभ्यो जागरा विशेषाधिकाः समवहतानामऽपि केषाचि जागरत्वात् १२। तेभ्यः पर्याप्ता विशेषाधिका सुप्तानामऽपि केषाचि त्पर्याप्तत्वात् सुप्ताश्च पर्याप्ताऽपर्याप्ता अपि भवन्ति जागरास्तु पर्याप्ता एवेतिनियमः १३। तेभ्यो ऽपि पर्याप्तस्य आयु कर्मोऽबन्धका विशेषाधिका अपर्याप्तानामप्यायु कर्माबन्धकभावात् १४। एवमेवाऽल्पबहुत्व विनयजनानुग्रहाय स्थापनाराशिभि रुपदर्श्यते-इह द्वे शते उपयोगाद्धेन स्थाप्यते तद्योपरितन्या पङ्क्तौ आयु कर्मबन्धका अपर्याप्ताः सुप्ता समवहताः सातवेदका इन्द्रियोपयुक्ता अनाकारोपयुक्ता। क्रमेण स्थाप्यते तस्या अधस्तन्या पङ्क्तौ तथामेव पदानामधस्तात् यथासंख्य मायुरबन्धका पर्याप्ता जागरा असमवहता असातवेदका नोइन्द्रियोपयुक्ताः साकारोपयुक्ता स्थापनाचैव मात्रामिति तत्परिमाणं यथायामेवः स्थाप्यते ततः आयुष्पदानि किल जघन्येन सख्यगुणानीति द्विगुणो द्विगुणाक तेषु स्थाप्यत तद्यथा-द्वौ चत्वार अष्टौ षोडश द्वात्रिंशत् चतुःषष्टि सर्वोऽपि जीवराशि रनन्तानन्तस्वरूपो ऽप्य ऽसत्कल्पनया षट्पञ्चाशदधिकशतद्वयपरिमाणः परिकल्प्यते ततो ऽस्मा द्राशेरायुर्बन्धकादिगता सङ्ख्या शोधयित्वा यत् शेष मऽवतिष्ठते तदायुर

असंखे॰ अहोलोए अणंतगुणाइं तिरियलोए संखिज्जगुणाइं दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं अहेदिसाए उड्ढदिसाए अणंतगुणाइं उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्चच्छिमेण दोवि तुल्लाइं असंखेज्जगुणाइं दाहिण

थार पर्योनीवतिरियमाए विसेसाहियाइ उड्ढाए अणंतिव्वसवाइ पञ्चाणए पणतगुणाइ तिरियलोए संखिज्जगुणाइ। क्षेत्रानी अपेक्षा द्रव्यमां अलोकायाद्विषये मावें कारणके धर्मास्तिकायपदृमल मध्यान्थ समुद्घातजीवनें पविच तोमलोक फरसें तेहद्रव्यधाराके पर्यन्तजीवनें पद्मनमें द्रव्यैक री जीवद्रव्यने परसेंत्रोने अनन्तगुणा हुवै तहथी अह्यावतियगाके मर्स्य अल्पपमत्वने फरसे वेषअनंतगुणा हुवे। तेहथी पथाषावतियक्षाके वि

पर्योसह ऽपर्याप्तेषु च मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहतानां सदा लभ्यमानत्वात् तेभ्य सातावेदका सङ्ख्येयगुणा आयुर्बन्धकापर्याप्तसमुद्घातेऽपि सा
तवेदकानां लभ्यमानत्वात् तेभ्य इन्द्रियोपयुक्ताः सङ्ख्येयगुणा असातवेदकानाम पि इन्द्रियोपयोगस्य लभ्यमानत्वात्, तेभ्यो ऽनाकारोपयोगोपयु
क्ता इन्द्रियोपयोगेषु नो इन्द्रियोपयोगेषु वा ऽनाकारोपयोगस्य लभ्यमानत्वात् तेभ्यः साकारोपयुक्ता सङ्ख्येयगुणा इन्द्रियोपयोगेषु नोइन्द्रियो
पयोगेषु साकारोपयोगकालस्य बहुत्वात् तेभ्यो नोइन्द्रियोपयुक्ता विशेषाधिका नोइन्द्रियोऽनाकारोपयुक्तानामपि तत्र प्रक्षेपात् साकारानाका
रोपयुक्तानामपि तत्र प्रक्षेपात् अत्र विनयजनानुग्रहाय ऽसद्भावस्थापनया निदर्शनं मुच्यते-इह सामान्यत किल साकारोपयुक्ता द्विनवत्यधिक
शत १९२ तेच किल द्विधा इन्द्रियसाकारोपयुक्ता नोइन्द्रियसाकारोपयुक्ताश्च तत्र इन्द्रियसाकारोपयुक्ता किलाऽशीतिसङ्ख्या इति विंशतिसङ्ख्या
कल्प्यन्ते अयं द्विसप्तत्युत्तर शत १७२। नोइन्द्रियसाकारोपयुक्ता नोइन्द्रियाऽनाकारोपयुक्ताश्च द्विपञ्चाशत्सङ्ख्या शत सामान्यतः साकारोपयुक्ते

मेण असंखेज्जगुणा पच्चत्थिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया खेत्ताणुवाएण
सव्वत्थोवाइं दव्वाइं तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणाइं अहोलोयतिरियलोए विसेसाहियाइं उड्ढलोए

च पश्चात्ये समधिक ७ सातरज्जु बोध्य विशेषाधिक पूर्वे ईशानकूर्पे विद्युत्प्रभमाल्यवन्नामक कूट तेभ्यो पश्चिमपक्षे । दक्षिणपश्चिमक
ोणिका पश्चाद्भागस्य दक्षिणपश्चिमक उत्तरपश्चिमकोणिका विसेसाहिया पश्चिमे असंखेज्जगुणा पच्चत्थिमेण विसेसाहिया दाहिणेण
विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया। दक्षिण पश्चिमे वक्षस्कारे असङ्ख्यातमपि अधिकाः तेभ्यो दक्षिणपूर्वे उत्तरपश्चिमे प्रत्येकं २ विशेषाधिक सस्थान
पं परमेश्वरिया इत्यादि सौमनसगन्धमादननामक कूट तिर्यक् सूक्ष्मपद्मकप्रभृत उपजायते तेभ्यो पूर्वे असङ्ख्यातगुणा यतः असङ्ख्यातया माटे तेभ्यो
पश्चिमे विशेषाधिक पश्चात्भागमें सर्वमावे यथा पद्मकना आवकाशे दक्षिणे विशेषाधिक अधमनेसबनेमावे पद्मकविशेषाधिकके उत्तरपद्मकस्य विशे
षाधिक मानसरोवरके तेमाटे बहुपुद्गलना असङ्ख्येयप्रदेशस्थो बोध्ये । क्षेत्रानुवादेन सर्वस्तोका द्रव्याः तिर्यक् त्रैलोक्ये उर्ध्वलोकतिर्यग्लोकाए अनन्तगु

ष्विन्द्रियसाकारोपयुक्तेषु विंशतिविकल्पेष्वपनीतेषु द्विपञ्चाशत्कल्पेषु अनाकारोपयुक्तेषु तेषु मध्ये प्रक्षिप्तेषु द्वेशते चतुर्विंशत्यधिके भवतः तत साकारोपयुक्तेभ्यो नोइन्द्रियोपयुक्ता विशेषाधिका तेभ्यो ऽसातवेदका विशेषाधिका इन्द्रियोपयुक्तानामप्य ऽसातवेदकत्वात् १० तेभ्यो ऽसमव हता विशेषाधिका। सातवेदकानामप्यऽसमवहतत्वभावात, तेभ्यो जागरा विशेषाधिका। समवहतानामऽपि केषाञ्चि ज्जागरत्वात १२। तेभ्यः पर्याप्ता विशेषाधिका। सुप्तानामऽपि केषाञ्चि त्पर्याप्तत्वात् सुप्ताश्च पर्याप्ताऽपर्याप्ता अपि भवन्ति जागरास्तु पर्याप्ता एवेतिनियम। १३। तेभ्यो ऽपि पर्याप्तेभ्य आयुःकर्माऽबन्धका विशेषाधिका अपर्याप्तानामप्यायुःकर्माबन्धकभावात् १४। इदमत्राऽल्पबहुत्व विषयकमानुसाराय स्थापनारा शिरुपदर्श्यते इह द्वे पङ्क्ती उपर्यधोभावेन स्थाप्येते तत्रोपरितन्यां पङ्क्तौ आयुःकर्मबन्धका अपर्याप्ता। सुप्ता समवहता। सातवेदका इन्द्रियोपयु क्ता अनाकारोपयुक्ता। क्रमेण स्थाप्यन्ते तस्या अधस्तन्यां पङ्क्तौ तथामेव यथाक्रममधस्तात् यथासंख्यं आयुरबन्धका पर्याप्ता जागरा असमवहता अ सातवेदका नोइन्द्रियोपयुक्ता। साकारोपयुक्ताः स्थापनाश्च मायासिति तत्परिमाणं सद्भावमका स्थाप्यन्ते ततः आद्यपदानि किल असत्कल्पनया सप्त गुणानीति द्विगुणो द्विगुणाश्च स्तोकेषु स्थाप्यन्ते तद्यथा- द्वौ चत्वार अष्टौ षोडश द्वात्रिंशत् चतुःषष्टिः सर्वोऽपि जीवराशि रनन्तानन्तस्वरूपो ऽप्य ऽसत्कल्पनया पद्पञ्चाशदधिकशतद्वयपरिमाणः परिकल्प्यते ततो ऽस्मा द्वात्रिंशदायुर्बन्धकादिगता। सङ्ख्या शोधयित्वा यत् शेष मऽवतिष्ठति तदायुर

असंखेज्ज० अहोलोए अणंतगुणाइं तिरियलोए संखेज्जगुणाइं दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं अहेदिसाए उड्ढदिसाए अणंतगुणाइं उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्चच्छिमेण दोवि तुल्लाइं असंखेज्जगुणाइं दाहिण

बार पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चाए विशेषाधिकाए बहुआए असंख्यगुणाए अनन्ताए अनन्तगुणाए तिरिछाए संख्यगुणाए। पेथाग्नी सर्वथोडा द्रव्यधर्मा स्तिकायादिकने भावे परस्पारे धर्मास्तिकायपदेशस महाध्वय समघाततओवर्मे पाविश लोकवाल फरसे तेह द्रव्यवाचाके अनन्तओवने पद्गलने द्रव्येक रो ओवद्रव्यने परसेवरोमे अनन्तगुणा हवे तेहथी अर्द्धाबालतियक्षामे मार्गना सर्वप्रवरमे फरसे तेअनन्तगुणा हुवे। तेहथी अधोलोकतियक्षामे वि

पर्याप्तेषु अपर्याप्तेषु च मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहतानां सदा लभ्यमानत्वात्, तेभ्य सातावेदकाः संख्येयगुणाः आयुर्बन्धकापर्याप्तकप्रभृतिष्वपि सा तवेदकानां लभ्यमानत्वात् तेभ्य इन्द्रियोपयुक्ताः संख्येयगुणा असातवेदकानामपि इन्द्रियोपयोगस्य लभ्यमानत्वात्, तेभ्योऽनाकारोपयोगोपयु क्ताः इन्द्रियोपयोगेषु नो इन्द्रियोपयोगेषु वा अनाकारोपयोगस्य लभ्यमानत्वात् तेभ्यः साकारोपयुक्ताः संख्येयगुणाः इन्द्रियोपयोगेषु नोइन्द्रियो पयोगेषु साकारोपयोगकालस्य बहुत्वात् तेभ्यो नोइन्द्रियोपयुक्ता विशेषाधिकाः नोइन्द्रियोऽनाकारोपयुक्तानामपि तत्र प्रक्षेपात् साकारानाका रोपयुक्तानामपि तत्र प्रक्षेपात् अत्र विनेयजनानुग्रहाय असद्भावस्थापनया निदर्शनमुच्यते—इह सामान्यतः किल साकारोपयुक्ता द्विनवत्यधिक शत १९२ सेव किल द्विधा इन्द्रियसाकारोपयुक्ताः नोइन्द्रियसाकारोपयुक्ताश्च तत्र इन्द्रियसाकारोपयुक्ताः विंशतिसङ्ख्याका इति विंशतिसङ्ख्या कल्प्यन्ते शेषं द्विसप्तत्युत्तरं शत १७२ । नोइन्द्रियसाकारोपयुक्ता नोइन्द्रियानाकारोपयुक्ताश्च द्विपञ्चाशत्सङ्ख्याः सन्तः सामान्यतः साकारोपयुक्ते

मेण असंखेज्जगुणा पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणाइं अहोलोयतिरियलोए विसेसाहियाइं उड्ढलोए

च प्रासाद समधिक ७ सातसो योजन विशेषाधिक पूर्वे रत्नकूटे विद्युत्प्रभ नामना वक्षस्कारना कूट तेथी उपरितनप्रदेश । दक्षिणपश्चिमदिशा व्यवस्थित असंख्येयगुणा दक्षिणपश्चिमेव उत्तरपश्चिमव्यवस्थित विशेषाधिका पश्चिममां असंख्येयगुणा पश्चिमेव विशेषाधिका दक्षिणेव विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका । दक्षिण पश्चिमे वधारियामे असंख्यातगणे अधिका छे तेथी दक्षिणपूर्वे उत्तरपश्चिमे प्रत्येके २ विशेषाधिक असमान छे परस्परेतरिया एवो सौमनस्यवक्षस्कारनामना कूट तेथी सूक्ष्मपुद्गलप्रभूत उपमता छे तेथी पूर्वे असंख्यातगुणा अधिका असंख्यातपणा माटे तेथी पश्चिमे विशेषाधिक अधोलोकग्रामने अर्थभावे तथा पुद्गलना बाहुल्यवे उचितये विशेषाधिक भवनमेस्पर्शभावे पर्दगल विशेषाधिक छे उत्तरपुद्गल विशे षाधिक मानसरोवरके तेमाटे तथा पुद्गलना अल्पबहुत्वने कहेछे । क्षेत्रानुपाते सर्वस्तोका २ द्रव्याइ तेलोक्य उर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अनंतगु

शेषाधिकत्वात्' तत्र पुद्गला विशेषाधिका सौम्य उत्तरपूर्वस्यां दक्षिणपश्चिमायाश्च प्रत्येकमसङ्ख्येयगुणाः स्वस्थाने तु परस्परं तुल्या यत सौ क्षेम
पि दिशौ रुचकाद्विनिर्गते मुक्तावलिसंस्थिते तिर्यग्लोकातमऽधोलोकातमूर्द्धलोकान्त पर्यवसिते तेन शेषस्या असङ्ख्येयगुणत्वात्‌ तत्र पुद्गला असङ्ख्येय
गुणाः शेषतु स्वस्थाने समानिति पुद्गला अपि स्वस्थाने तुल्या सौम्योऽपि दक्षिणपूर्वस्या मुत्तरपश्चिमायाश्च प्रत्येक विशेषाधिकाः स्वस्थानेतु परस्प

पुरच्छिमेण उत्तरपच्चच्छिमेणय दोवि तुल्लाइं विसेसाहियाइं पुरच्छिमेण असंखेज्जगुणाइं पच्चच्छिमेण वि
सेसाहियाइं दाहिणेण विसेसाहियाइं उत्तरेण विसेसाहियाइं। एएसिण भंते ! परमाणुपोग्गलाण संखेज्जप

मधाधिक जिवारेक ७ राज अधिकामधो तेहथी उर्ध्वलोके असंख्यातगुणा मध असंख्यातगुणा माटे अधोलोके अनंतगुणा अधोलोकमां चेषभावद्रव्य
जाणना अनंतपर्याय माटे तिर्यग्लोके कालसद्भावविशेषाधिक असंख्यातगुणा छे। दिशाअपाए अल्पत्वात् द्रव्याइं अधोदिसाइं उर्ध्वदिसाइं अ
नंतगुणाइं उत्तरपश्चिमथ दक्षिणपश्चिमथ दाक्षिताइं असंख्येयगुणाइं। विदिशि आश्री सामान्यपणे द्रव्यनो अल्पबहुत्वकहेछे—दिशिने अनु
सारे अधमादाद्रव्य अधोदिशि पाताळोपरें अधावो तेहथी उर्ध्वदिशि अनंतगुणा किम इहां उर्ध्वलोके मनगो पांचसेंवावन स्फटिकमयकाठ तिहां चद्रा
दिकप्रभावंतरो उर्ध्वदिशि अनंतगुणाछे तेहथी,ईशानकूणे तथा नैऋतकूणे बे दिशि सरीखाछे तेहथी असंख्यातमथा माटें। दाक्षिणपुरच्छिमेण उत्त
रपश्चिमेणय दावितुल्लाइं विसेसाहियाइं। असंख्यातमथा अग्निकूणे वायव्यकूणेए बसरिख छे अनेविशेषाधिकछे विद्युतसमाप्रवर्तंत कूटाम्लीधूमकाला
दि अप्पदूभव थको अपवोछे तमाटे विशेषाधिकछे। पश्चिमेण असंख्येयगुणाइं पश्चिमथ विसेसाहियाइं दाक्षिणेण विसेसाहियाइं उत्तरेण वि।
तेहथी पूर्वनीदिशिद्रव्य असंख्यातगुणा अनअसंख्यातगुणा माटे तेहथी पश्चिमे विशेषाधिक अधोलोकग्रामादि सुषीभावथथा पुद्गलद्रव्य एथित तेहथी
दक्षिणे विशेषाधिक पणे मुख्यभावे। तेहथी उत्तरदिशि विशेषाधिक मानसरोवरने विषे जीवद्रव्यनो तेजस्कामण पुद्गलस्कधनीय द्रव्यघणाछे तेमाटे
विशेषाधिक कहिये। एएसिण भंते परमाणुप्पोग्गलाण संखेज्जपएसियाण असंखेज्जपएसियाणं अणंतपएसियाणं खंधाण दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठप

मन्यकाशेमा परिमाणे स्थापयितव्य तद्यथा-मायुरमत्यकादिपदे द्वे शते पञ्चपञ्चाशदधिके योपेषु यथोत्तरम् द्वेशते चतुःपञ्चाशदधिके द्वेशते द्विपञ्चाशदधिके द्वशते चतुश्चत्वारिंशदधिके द्वशते चत्वारिंशदधिके द्वशते चतुस्त्रिंशदधिके द्विनवत्यधिकं शतम् एवमपि उपरितनपङ्क्तिगतान्यनाकारोपयुक्तपदानि पदानि संख्येयगुणानि द्विगुणानि द्विगुणाऽधिकत्वात् तत परं साकारोपयुक्तपदमऽपि संख्येयगुणं त्रिगुणत्वात् शेषाणितु मो इन्द्रियोपयुक्तादीनि प्रतिलोमं विशेषाधिकानि द्विगुणत्वस्यापि क्वचिदभावात् । तदेवं गत उपद्वार मिदानीं पुद्गलद्वारमाह ॥ खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पोग्गलातेलोक्के इत्यादि ॥ इदमल्पबहुत्वं पुद्गलानां द्रव्यार्थस्य मङ्गीकृत्य व्याख्येयं तथा सम्प्रदायात् तत्र क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण चिन्त्यमाना पुद्गलाः त्रैलोक्ये त्रैलोक्यसंस्पर्शिनः सर्वस्तोकाः सर्वस्तोकानि त्रैलोक्यव्यापीनीति पुद्गलद्रव्याणीति भावः, यस्मा त्मज्ञास्कन्धाएव त्रैलोक्यव्यापिन स्तेचात्पा इति तेभ्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अनन्तगुणा ऊर्ध्वलोकस्य च स्वर्वोपरितनमेकप्रादेशिकं प्रतरं अधोलोकस्य सर्वोपरितनमेक

प्रादेशिकं प्रतरं एते द्वे अपि प्रतरे ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोक उच्यते-तत्राऽनन्ता संख्येयप्रादेशिका अनन्ता असंख्येयप्रदेशिका अनन्ता अनन्तप्रदेशिका स्कन्धा स्पृशन्तीति द्रव्यार्थतया अनन्तगुणा तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके अनन्तगुणाः कारण प्रतरद्वयरूप विशेषाधिका कत्रस्य आयामविष्कम्भाभ्यां मनागविशेषाधिकत्वात् तेभ्य स्तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः यस्मात्ऽसंख्येयगुणत्वात् तेभ्य ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा यत स्तिर्यग्लोकक्षेत्रा दूर्ध्वलोकक्षेत्र मसंख्येयगुणमिति तेभ्यो ऽधोलोके विशेषाधिका ऊर्ध्वलोकात् ऽधोलोकस्य विशेषाधिकत्वात् देशोनसप्तरज्जुप्रमाणो ह्यूर्ध्वलोकः समधिकसप्तरज्जुप्रमाण स्त्वऽधोलोकः, सम्प्रति दिगनुपातेना ऽल्पबहुत्वमाह-दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला उड्ढदिसाए इत्यादि ॥ दिगनुपातेन दिगनुसारेण चिन्त्यमाना पुद्गलाः सर्वस्तोका ऊर्ध्वदिशि इह रत्नप्रभासमभूमितलमेरुमध्य अष्टप्रादेशिको रुचक स्तस्माद्विनिर्गता चतुःप्रदेशा ऊर्ध्वादिरूपाऽऽवलोकान्त यावत् सर्वस्तोकाः पुद्गलाः तेभ्यो ऽधोदिशि विशेषाधिका अधोदिशमपि रुचकादेव प्रभवति चतुःप्रदेशा यावत् लोकान्त ततः तस्यामपि

यस्मात्तत्र प्रतिपरमाण्वादिद्रव्यमनन्तता ततो भवन्त्यधोलोकेऽनन्तगुणानि तेभ्यस्तिर्यग्लोके संख्येयगुणानि अधोलौकिकग्रामप्रमाणोर्ध्वलोकवर्तिनां मनुष्यलोकवर्तिद्रव्याधारभूते संख्येयतमांशमात्रत्वात् साम्प्रतं दिगनुपातेन सामान्यतो द्रव्याणामल्पबहुत्वमाह-दिसाणुवाएणं सव्व त्थोवाइं दव्वाइं अहे दिसाए इत्यादि ॥ दिगनुपातेन दिगनुसारेण चिन्त्यमानानि सामान्यतो द्रव्याणि सर्वस्तोकानि अधोदिशि प्रागुक्तावर्णित स्वरूपायां तस्य ऊर्ध्वदिश्यनन्तगुणानि किमत्र कारणमितिचेत् उच्यते-इह ऊर्ध्वलोके मेरुः पञ्चयोजनशतिक स्फटिकमयं काण्डं तत्र चन्द्रादित्यप्रभानु प्रवेशात् द्रव्याणां क्षणादिकालप्रतिभागोऽस्ति कालश्च प्रागुक्तनीत्या प्रतिपरमाण्वादिद्रव्यमनन्तस्ततोऽनन्तगुणानि तस्य उत्तरपूर्वस्यामीशान्यां दक्षिणपश्चिमायां नैर्ऋत्यां च द्वयोरपि विशेषाधिकानि सर्वस्तोकासंख्येयगुणत्वात्, स्वस्थाने तु द्वयान्यपि परस्परं तुल्यानि समानत्वात् तस्या दक्षिणपूर्वस्यामाग्नेय्यामुत्तरपश्चिमायां वायव्यां च इतिभावः विशेषाधिकानि विद्युत्प्रभमाल्यवत्कूटाश्रितानां धूमिकावश्यायादिसूक्ष्मपुद्गलद्रव्याणां बहूनां सम्भवात् तस्यां पूर्वस्यां दिशि असंख्येयगुणानि क्षेत्रस्यासंख्येयगुणत्वात् तस्याः पश्चिमायां विशेषाधिकानि अधोलौकिकग्रामेषु सुषिरभावतो बहूनां पुद्गलद्रव्याणामवस्थानात् ततो दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिकानि बहुभवनसुषिरभावात्, तत उत्तरस्यां विशेषाधिकानि तत्र मा नससरसि जीवद्रव्याणां तदाश्रितानां तैजसकार्मणपुद्गलस्कन्धद्रव्याणां च भूयसां भावात्, साम्प्रतं परमाणुपुद्गलानां संख्येयप्रदेशानामसंख्येयप्रदे शानामनन्तप्रदेशानां परस्परमल्पबहुत्वमाह-एएसि णं भंते ! परमाणुपुग्गलाणं संखेज्जपएसियाणं मित्यादि ॥ पाठसिद्धं ॥ अधुना यथाल्पबहुत्व प्रज्ञापनायामत्र तथा स्थानाख्यं कारणं वाच्यं साम्प्रतं तेषामेव क्षेत्रप्राधान्येनाल्पबहुत्वमाह-एएसि णं भंते ! एगपएसोगाढाणमित्यादि ॥ इह यथा

कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गो०, ! सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अ

परमाणु पुद्गला अनन्तगुणाः । संखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखिज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असं० पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंत पएसिया खंधा । संख्यातप्रदेशभ्य द्रव्यतो संख्यातगुणास्तेभ्य असंख्यातप्रदेशो अपि द्रव्यतो असंख्यातगुणाः सर्वस्तोकाः अनन्तप्रदेशाः स्कन्धाः । परमाणुप

रं तुल्या' कथं विशेषाधिका इति चेत् उच्यते—इह सौमनसगन्धमादनेषु सप्त २ कूटानि त्रिपुरमनमाल्यवतो नव २ तेषु च कूटेषु धूमिका भ्रमरप्रभा यादिसूक्ष्मपुद्गलाः प्रभूताः सम्भवन्ति ततो विशेषाधिकाः स्वस्थानेतु समस्य पर्वतादय समानस्था तुल्या स्तम्भः पूर्वस्या दिशि असंख्येयगुणा वे अस्याऽसंख्येयगुणत्वात् तेभ्य' पश्चिमायां विशेषाधिका अधोलौकिकग्रामेषु सुषिरभावतो बहूना पुद्गलानामवस्थानभावात् तभ्यो दक्षिणस्या विशेषाधिका बहुभवनसुषिरभावात् तेभ्य उत्तरस्यां विशेषाधिकाः यत उत्तरस्यामायामविष्कम्भाभ्यां सङ्ख्येययोजनकोटीकोटीप्रमाण मानस सर तत्र ये जलचरा पनकसवालादयश्च सत्वा स्ते अतिबहव इति तथा ये तैजसकार्मणपुद्गला स्त अधिकाः प्राप्यते इति पूर्वोक्तभ्यो विशेषाधि काः तदेव पुद्गलविषयमल्पबहुत्वमुक्त मिदानीं सामान्यतो द्रव्यविषय यथानुपातेन आह—खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं तेलोक्के इत्यादि ॥ क्षे त्रानुपातेन चिन्त्यमानानि द्रव्याणि सर्वस्तोकानि त्रैलोक्यसंस्पर्शीनि यतो धर्मास्तिकायाऽधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायद्रव्याणि पुद्गलास्तिकायस्य महास्कन्धोजीवास्तिकायस्य मारणान्तिकसमुद्घातेन तीव्रसमवहता जीवा स्त्रैलोक्यव्यापिन स्तथारूपे इति सर्वस्तोकानि तस्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अनुगतरूपप्रतरद्वयात्मके अनन्तगुणानि यतोऽनंते पुद्गलद्रव्ये स्तते जीवद्रव्ये स्तस्य संस्पर्शनात् तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकानि ऊर्ध्व लोकतिर्यग्लोकादधोलोकतिर्यग्लोकस्य मनाग् विशेषाधिकत्वात् तेभ्य ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणानि क्षेत्रस्याऽसंख्येयगुणत्वात् तेभ्यो ऽधोलोके च नन्तगुणानि' कथमितिचेत् उच्यते इहाधोलोकग्रामेषु कालोस्ति तस्य च कालस्य तत्तत्परमाणुसंख्येयाऽसंख्येयाऽनन्तप्रादेशिकद्रव्यपर्यायप्रकाशनभावपया

देसियाण असंखिज्जपदेसियाण अणंतपदेसियाणय खंधाण दव्वठयाए पएसठयाए दव्वठ पदेसठयाए

एकड्याए। किंवे परमाणुपद्गल संख्यातप्रदेश अनंतप्रदेशात्मो क्षयकस्कंधोंके—हेभगवन् एकने परमाणुपुद्गलद्रव्यमें संख्यातप्रदेशी असंख्यातप्रदेशी अनंतप्रदेशी एकमें द्रव्यकी अपेक्षा द्रव्यमें प्रदेशमें द्रव्याथ प्रदेशाथप माहि। कवर २ किसी अल्पाबा ४ तोलमा समस्तावा अनंतपर्यायिया यथा द्रव्याथप परमाणुपुद्गलद्रव्याथप अनंतगुणा। वेदा २ को बाका अथा ४-गोतम सर्वजीवा अनंतप्रदेशी सिको गोम्पनाथप तेवाका सभाषेके द्रव्यको

यथाभ्यधिका इत्यतिपरमाण्वादिद्रव्यऽनन्तता ततो नपुंसकऽपीभोये ऽनन्तगुणानि तेभ्य स्तिर्यग्लोके असंख्येयगुणानि अधोलौकिकग्रामसमावाना स
यतानां मनुष्यलोक कालद्रव्याधारभूत सद्रूपाना मवाप्यमानत्वात् साम्प्रतिदिगनुपातेन सामान्यतो द्रव्याणा मल्पबहुत्वमाह-दिसाणुवाएण सव्व
त्थोवाइ दव्वाइं अहे दिसाए इत्यादि ॥ दिगनुपातेन दिगनुसारेण चिन्त्यमानानि सामान्यतो द्रव्याणि सर्वस्तोकानि अधोदिशि प्राग्व्यावर्णित
स्वरूपायां तस्य ऊर्ध्वदिश्यऽनन्तगुणानि किंकारणमितिचेत उच्यते-इह ऊर्ध्वलोक मेरौ पञ्चयोजनशतक स्फाटिकमयं काण्डं तत्र चन्द्रादित्यप्रभानु
प्रवेशात् द्रव्याणां क्षणादिकालप्रतिभागोऽस्ति कालस्य प्रागुक्तनीत्या प्रतिपरमाण्वादिद्रव्यसामर्थ्या तस्यो ऽनन्तगुणानि तस्य उत्तरपूर्वस्यामीशान्यां
दक्षिणपश्चिमायां नैर्ऋतकोणे इत्यर्थः असंख्येयानि असंख्यासंख्येयगुणत्वात्, स्वस्थाने तु द्वयोरपि परस्परं तुल्यानि समानत्वात् तेभ्यो दक्षि
णपूर्वस्यामाग्नेय्यामुत्तरपश्चिमायां वायव्यकोणे इतिभावः, विशेषाधिकानि विद्युत्प्रभमाल्यवन्तकूटाश्रितानां धूमिकावश्यायादिसूक्ष्मपुद्गलद्रव्याणां,
बहूनां सम्भवात् तस्यां पूर्वस्यां दिशि असंख्येयगुणानि तत्रस्या असंख्येयगुणत्वात् तस्यां पश्चिमायां विशेषाधिकानि अधोलौकिकग्रामेषु शुषिरमा
वतो बहूनां पुद्गलद्रव्याणामवस्थानात् ततो दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिकानि बहुभवनशुषिरभावात तत उत्तरस्यां विशेषाधिकानि तत्र मा
नससरसि जीवद्रव्याणां तदाश्रितानां तैजसकार्मणपुद्गलस्कन्धद्रव्याणां च भूयसां भावात, साम्प्रतं परमाणुपुद्गलानां सङ्ख्येयप्रदेशानां असङ्ख्येयप्रदे
शानामनन्तप्रदेशानां परस्परमल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! परमाणुपुग्गलाणं संखेज्जपएसियाणं मित्यादि ॥ पाठसिद्धं ॥ नवरं अत्राल्पबहुत्व
भावनायां सर्वत्र तथा स्वाभाव्यं कारणं वाच्यं साम्प्रतमेषामेव क्षेत्राधान्येनाल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! एगपएसोगाढाणमित्यादि ॥ इह यत्रा

कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गो० ! सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अ

परमाणु पुद्गलाः अनन्तगुणाः । संखिज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असं० पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंत
पएसिया खंधा । संख्यातप्रदेशाः द्रव्यतो संख्यातगुणा बहवः असंख्यातप्रदेशाः द्रव्यतो असंख्यातगुणा सर्वेषाम् अनन्तप्रदेशाश्च । परमाणव

र तुल्याः कथं विशेषाधिका इति चेत् उच्यते-इह सौमनसगन्धमादनेषु सप्त २ कूटानि विद्युत्प्रभमाल्यवतो नव २ तेषु च कूटेषु धूमिका अवश्या यादिसूक्ष्मपुद्गलाः प्रभूताः सम्भवन्ति ततो विशेषाधिकाः स्वस्थानेषु च तस्य पर्यन्तादेव समानत्वात् तुल्या तेभ्यः पूर्वस्यां दिशि असंख्येयगुणा क्षे त्रस्याऽसंख्येयगुणत्वात् तेभ्य पश्चिमायां विशेषाधिका अधोलौकिकग्रामेषु शुषिरभावतो बहूनां पुद्गलानामवस्थानभावात् तेभ्यो दक्षिणस्यां विशेषाधिका बहुभवनशुषिरभावात् तेभ्य उत्तरस्यां विशेषाधिकाः यत उत्तरस्यामायामविष्कम्भाभ्यां सङ्ख्येययोजनकोटीकोटीप्रमाणं मानस सर स्तत्र ये जलचराः पनकसेवालादयश्च सत्त्वा ते अतिबहव इति तथा ये तैजसकार्मणपुद्गला स अधिकाः प्राप्यन्ते इति पूर्वोक्तेभ्यो विशेषाधि काः तदेव पुद्गलविषयमल्पबहुत्वमुक्त मिदानीं सामान्यतो द्रव्यविषय मल्पबहुत्वं क्षेत्रानुपातेन चाह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं तेलोक्के इत्यादि ॥ क्षे त्रानुपातेन चिन्त्यमानानि द्रव्याणि सर्वस्तोकानि त्रैलोक्यस्पर्शीनि यतो धर्मास्तिकायाऽधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायद्रव्याणि पुद्गलास्तिकायस्य महास्कन्धो जीवास्तिकायस्य मारणान्तिकसमुद्घातेना तीवसमवहता जीवाः त्रैलोक्यव्यापिन स्त्रकाश्चे इति सर्वस्तोकानि, तेभ्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके प्रागुक्तस्वरूपप्रतरद्वयात्मके अनन्तगुणानि यतोऽत्र पुद्गलद्रव्यं रमते जीवद्रव्यं तस्य संस्पर्शनात्, तेभ्योऽधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकानि ऊर्ध्व लोकातिर्यग्लोकादधोलोकतिर्यग्लोकस्य मनाग् विशेषाधिकत्वात् तेभ्य ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणानि क्षेत्रस्याऽसंख्येयगुणत्वात्, तेभ्योऽधोलोके च नन्तगुणानि कथमिति चेत् उच्यते इहाधोलोकग्रामेषु कालोऽस्ति तस्य च कालस्य तत्तत्परमाणुसंख्येयाऽसंख्येयाऽनन्तप्रादेशिकद्रव्यक्षेत्रकालभावपर्या

देसियाणं असंखिज्जपदेसियाणं अणंतपदेसियाणय खंधाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ पदेसट्ठयाए

दव्वट्ठयाए । किं परमाणुपुद्गलस्स संख्यातप्रदेश अनन्तप्रदेशानां च अल्पबहुत्वविचारे—हे भगवन् एतेषां परमाणुपुद्गलद्रव्याणां संख्यातप्रदेशी असंख्यातप्रदेशी अनन्तप्रदेशी अध्यमें द्रव्याणि अल्पयोगी द्रव्याणि यत्र अधिकानि द्रव्याणि अल्पानि बहूनि वा संख्यानि मां हि । बयरे २ किनो अध्यात्मा ४ तोल्मा सम्बन्धात् अर्थन्तप्रदेशिका यथा द्रव्यार्थाय परमाणुपमानाद्रव्यार्थाय अनन्तगुणा । बेहो २ यो याका वरा ५-कोतम सम्बोधन अनन्तप्रदेशो भिक्खो नोन्यमार्थम तेभाका सभावेन द्रव्यको

एकप्रदेशावगाहनपरिणामपरिणतानां परमाणवादीनां मवकाशप्रदानपरिणामेन परिणतो भवतीति इति। तेभ्यः सङ्ख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्या
र्थतया सङ्ख्यातगुणा, कथमितिचेत्? उच्यते-इहापि क्षेत्रप्राधान्यात् द्व्यणुकाद्यनन्ताणुकस्कन्धा द्विप्रदेशावगाढा एकद्रव्यत्वेन विवक्ष्यन्ते तानि

गाढाण संखेज्जपदेसोगाढाणय पोग्गलाण दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोवगाढा पुग्गला दव्वठयाए संखेज्जपएसोवगाढा पुग्गला दव्वठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वठयाए असंखिज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठयाए संखिज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठयाए असंखेज्जगुणा दव्वठपदेसठयाए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वठयपदेसठयाए संखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वठयाए संखेज्जगुणा तेचेव पएसठयाए संखेज्जगुणा

द्रव्यतो प्रदेशतो द्रव्यार्थप्रदेशार्थतो विचार्य यथा इत्यादि हे गौतम। सर्वस्तोका पुद्गला एकप्रदेशावगाढा द्रव्यार्थतया संख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा। सर्वत्रापि पुद्गलप्रदेशावगाढद्रव्यार्थे संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलप्रदेशो संख्यातगुणा। असंख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणा। असंख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गल द्रव्यार्थे असंख्यातगुणा। प्रदेशार्थतया सर्वस्तोका एकप्रदेशावगाढा पुद्गला प्रदेशार्थतया। प्रदेशार्थे सर्वस्तोकप्रदेशावगाढ पुद्गलप्रदेशो। संख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला प्रदेशार्थतया संख्येयगुणा। संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलप्रदेशो संख्यातगुणा। असंख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणा। असंख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलप्रदेशो असंख्यातगुणा। द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया सर्वस्तोका एकप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया। द्रव्यार्थप्रदेशार्थतो सर्वस्तोका एकप्रदेशावगाढ पुद्गलद्रव्यार्थ प्रदेशार्थ। संख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा। संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गल द्रव्यार्थे संख्यातगुणा। तथैव प्रदेशार्थतया सं०। तिमज्ज प्रदेशार्थे संख्यातगुणा। असंख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया।

पिकारत चेत्रस्य माचाग्या स्परमाणुकाद्यनन्ताणुका स्कन्धा अपि विवक्षितैकप्रदेशावगाढा आधाराधेययोरभेदोपचारा देकद्रव्यत्वेन व्यपदिश्यन्त इत्यभूता एकप्रदेशावगाढा॥ पुद्गला॥ पुद्गलद्रव्याणि सर्वस्मिन्नपि लोकाकाशप्रदेशप्रमाणामीत्यथ नापि स कोपि द्रव्यभूत आकाशप्रदेशोऽस्ति य

णतगुणा संखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए परमाणुपोग्गला अणंतगुणा संखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपएसिया खंधा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा दव्वट्ठपदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए तेचेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा परमाणुपोग्गला दव्वट्ठपदेसट्ठयाए अणंतगुणा संखिज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखिज्जगुणा तेचेव पदेसट्ठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखिज्जगुणा तेचेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! एगपदेसो

[illegible] अनन्तगुणा संखिज्जपएसिया खंधा पएसट्ठयाए संखिज्जगुणा । परमाणुपुद्गल [illegible] अनन्तगुणा [illegible] प्रदेशार्थतो संख्यातगुणा । असंखिज्जपएसिया खंधा पएसट्ठयाए असंखिज्जगुणा [illegible] । असंख्यातप्रदेशो [illegible] असंख्यातगुणा [illegible] सर्वस्तोका अनन्तपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए तेचेव पएसट्ठयाए अनन्तगुणा । [illegible] अनन्तप्रदेशो [illegible] अनन्तगुणा । परमाणुपुद्गला दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए अनन्तगुणा । परमाणुपुद्गल [illegible] प्रदेशार्थतो अनन्तगुणा । संखिज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखिज्जगुणा तेचेव पएसट्ठयाए संखिज्जगुणा । संख्यातप्रदेशो [illegible] संख्यातगुणा ते [illegible] । असंखिज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखिज्जगुणा तेचेव पएसट्ठयाए असं । [illegible] तिम [illegible] । एएसिणं भंते एगपएसोगाढ संखिज्जपएसोगाढ असंखि [illegible] पदार्थ । [illegible] एकप्रदेशावगाढेभ्यः संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलाः असंख्यप्रदेशावगाढपुद्गलाः । द्रव्यट्ठयाए पएसट्ठयाए [illegible] [illegible]

प्रकर्षे ज्ञायमानपरिणामपरिणतामा परमाण्वादीना मवकाशप्रदानपरिणामेन परिणतो भवतीति इति । तेभ्य सख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्या र्थतया सख्यगुणाः कथमितिचेत् । उच्यते-इहापि तत्स्वभावत्वात् अवगाहनानामुत्कृष्टा हिमदेशावगाढा एकद्रव्यत्वेन विवक्ष्यते तानि

गाढाण सखेज्जपदेसोगाढाण असंखिज्जपदेसोगाढाणय पोग्गलाण दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोयगाढा पुग्गला दव्वठयाए सखेज्जपएसोवगाढा पग्गला दव्वठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वठयाए असंखिज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठयाए संखिज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठयाए सखेज्जगुणा असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठयाए असंखेज्जगुणा दव्वठपदेसठयाए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वठपदेसठयाए सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वठयाए सखेज्जगुणा तेचेव पएसठयाए सखेज्जगुणा

द्रव्यो प्रदेशो द्रव्याय प्रदेशार्थो विभाग्यो वा यथा इत्यादि चेतीतम । सर्वस्तोका पुद्गला एकप्रदेशावगाढा द्रव्यार्थतया संख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा । यथा पद्गलप्रदेशावगाढद्रव्याणि संख्यातप्रदेशावगाढ पद्गलप्रदेशो सर्वस्तोका । असंख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणा । असंख्यातप्रदेशावगाढ पद्गल द्रव्याणि असंख्यातगुणा । प्रदेशार्थतया सर्वस्तोका एकप्रदेशावगाढा पुद्गला प्रदेशार्थतया । प्रकर्षेण सर्वस्तोका प्रदेशावगाढ पद्गलप्रदेशाः । संख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला प्रदेशार्थतया संख्येयगुणा । संख्यातप्रदेशावगाढ पद्गलप्रदेशाः संख्यातगुणा । असंख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणा । असंख्यातप्रदेशावगाढ पद्गलप्रदेशाः असंख्यातगुणा । द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया सर्वस्तोका एकप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यप्रदेशार्थतया । द्रव्यात्प्रदेशाश्चो सर्वस्तोका एकप्रदेशावगाढ पद्गलद्रव्याणां प्रदेशाय । संख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा । संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गल द्रव्याणि संख्यातगुणा । तथैव प्रदेशार्थतया स० । तिष्ठतीत्र प्रदेशाणि संख्यातगुणा । असंख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया ।

च तथाभूतानि पुद्गलद्रव्याणि पूर्वोक्तेभ्यः संख्येयगुणानि तथाहि-सर्वलोकप्रदेशा तत्त्वतो ऽसंख्येया अपि असत्कल्पनया दश परिकल्प्यन्ते तेच प्रत्येकचिन्तायां दशैवेति दश एकप्रदेशावगाढानि पुद्गलद्रव्याणि लभ्यानि तस्यैव दशकस्य प्रदेशान्यप्रदेशान्यमीलनद्वारेण यावन्तो द्विकसंयोगा लभ्य न्त इति पञ्चचत्वारिंशत्प्रदेशावगाढस्यो द्विप्रदेशावगाढानि पुद्गलद्रव्याणि संख्येयगुणानि एवं तस्यापि त्रिप्रदेशावगाढानि एवमुत्तरोत्तर यावदुत्कृष्ट संख्येयप्रदेशावगाढानि ततः स्थितमेतत् एकप्रदेशावगाढेभ्य संख्येयप्रदेशावगाढपुद्गला द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा इति, एवं तेभ्यो ऽसंख्येयप्रदे शावगाढाः पुद्गला द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणा असंख्यातस्य असंख्यातभेदभिन्नत्वात् प्रदेशार्थतासूत्रं द्रव्यार्थपर्यायार्थतासूत्रञ्च सुगमत्वात् स्वयं भाव

असंखिज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वठ्ठयाए असंखेज्जगुणा तेचेव पएसठ्ठयाए असंखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! एगसमयठितीयाण संखिज्जसमयठितीयाण असंखिज्जसमयठितीयाणय पोग्गलाण दव्वठ्ठयाए पदेसठ्ठयाए दव्वठ्ठपदेसठ्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगसमयठिइया पोग्गला दव्वठ्ठयाए संखेज्जसमयठितीया पोग्गला दव्वठ्ठयाए संखेज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वठ्ठयाए असंखिज्जगुणा पदेसठ्ठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिइया पोग्गला पदेसठ्ठयाए संखेज्जसमयठिईया पोग्गला

असंख्यातप्रदेशावगाढाः पुद्गला द्रव्यार्थं । असंख्येयगुणा तएव प्रदेशार्थाय अस । असंख्यातगुणा तिलोकप्रदेशा पञ्चसंख्यातगुणा एतेषां भंते एगसम यस्थितिकानां संख्येयसमयस्थितिकानां । हेमवन्तं पं० एकसमयतो प्रतिमानो संख्यातसमयतो प्रतिमानो । असंख्येयसमयस्थितिकानाञ्च पुद्गलानां द्रव्यार्थाय असंख्येयसमयतो प्रतिमापुद्गला द्रव्यतो । प्रदेशार्थाय च द्रव्यप्रदेशार्थाय । प्रदेशतो द्रव्यार्थप्रदेशार्थ । कतरे २ कितो अल्पावा ४ गौ । कितो २ को अल्पवा इत्यादि गौतम । सर्वस्तोका एकसमयस्थितिका पुद्गला द्रव्यार्थाय । संख्याता एकसमयतो प्रतिमापुद्गले तेभ्यो । संख्येयसमयस्थितिका पुद्ग ला द्रव्यार्थाय अपि । संख्यातसमयतो प्रतिमापुद्गले तेभ्यो संख्यातगुणा । असंख्येयसमयस्थितिका पुद्गला द्रव्यार्थाय अस । असंख्यातसमयतो *

पएसट्ठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला पदेसट्ठयाए असंखिज्जगुणा दव्वट्ठपदेसट्ठयाए
सव्वत्थोवा एगसमयठिइया पुग्गला दव्वट्ठपएसट्ठयाए संखेज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा
तेचेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखिज्जगुणा तेचेव पदेस
ट्ठयाए असंखिज्जगुणा । एएसि णं भंते ! एगगुणकालगाण संखिज्जगुणकालगाण असंखेज्जगुणकालगाण
अणंतगुणकालगाणय पोग्गलाण दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४
? गोयमा ! जहा परमाणुपोग्गला तहा भाणियव्वा, एवं संखेज्जगुणकालयाणवि, एवं सेसाणवि वण्णरस

तिमाणुपुद्गले तदपो द्रव्य सप्पयातगुणा। पपसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगसमयट्ठितीया। प्रदेशार्थं सर्वथापो एकसमयस्थितानि। पुमला पपसट्ठयाए संखि
ज्जसमयट्ठितीया। पुद्गलप्रदेशार्थं सपयातसमयस्थितिना। पमसा पपसट्ठयाए संखि। पद्गलप्रदेशार्थं सपपातगुणा। पसंखिज्जसमयट्ठितीया पमसा पप
सट्ठयाए पस दव्वट्ठपपसट्ठयाए। पपपपातसमयनो स्थितिपुद्गलप्रदेशो मपपपातमुणा द्रव्यप्रदेशार्थं। सव्वत्थोपा एगसमयट्ठितीया पुमाला दव्वट्ठपएसट्ठयाए
सपयाता एकसमयनो स्थितिमान पद्गलद्रव्यप्रदेशनै। संखिज्जसमयट्ठितीया पमसा दव्वट्ठयाए संखि। सपप्रातसमयनो प्रतिमा पुद्गलद्रव्याद सपयात
गुणो। तचेव पपसट्ठयाए संखि। तिमशोचप्रदेशार्थं सपयातगुणा। पसंखिज्जसमयट्ठितीया पमसा दव्वट्ठयाए पस। पसंपपातसमयस्थितिना पद्गल
द्रव्यो पसपपातगुणा। तचेव पएसट्ठयाए पस। एएसि णं भंते। तिमशोचपदेशे पसपपातगणा चेभमवम्। एगगुणकालगाण संखिज्जसमकालगाण
पद्गलगुणकालादिकानें सपपातगणाकासे। पसंखिज्जगुणकालगार्थ। पसंपातगुणा कालमे। पणंतगणकालगाणय पमसाण दव्वट्ठयाए पपसट्ट
याए। पणंतगुणकालने पद्गलने द्रव्यपो प्रदेशपो। दव्वट्ठपपसट्ठयाए कयरे हिंतो पप्पावा ४ पो। द्रव्यपो प्रदेशार्थं विचार पप्प पपा इत्यादि चेभो।
सव्वत्थोवा जहा परमाणुपपसा तहा भा०। सपपाता जिमपरमाणुपुद्गल तिम सपवचिया एवं संखिज्जगुणकालगाणवि एव सेसाणवि वण्णगंधरसा भाणि

नीयम् कालसज्ञावसूत्राण्यपि सुगमत्वा दस्वयम्भावयितव्यानि नवरं ॥ तहा पोग्गला तहा जाणियव्वा इति ॥ यथा प्राक् सामान्यत पुद्गला उक्तास्तथा एकगुणकालत्वादयोपि वक्तव्या तेचैव—सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा एगगुणकालगा परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए एगगुणकालगा अणंतगुणा संखेज्जपएसिया खंधा एगगुणकालगा संखेज्जगुणा असंखेज्जपएसिया खंधा एगगुणकालगा असंखेज्जगुणा पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा एगपरमाणुपोग्गला एगगुणकालगा अणंतगुणा इत्यादि ॥ एवं संख्येयगुणकालकानामनन्तगुणकालकानामपि वाच्य मेवं शेषवर्णगन्धरसा अपि वक्तव्याः कर्कशमृदुगुरुलघवः स्पर्शा यथा एकप्रदेशावगाढा भणिता स्तथा वक्तव्याः तेचैव—सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा एगगुणकक्खडफासा दव्वट्ठयाए संखेज्जपएसोगाढा एगगुणकक्खडफासा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा इति, एवं संख्येयगुणकर्कशस्पर्शा असंख्येयगुणकर्कशस्पर्शा वाच्याः एवं मृदुगुरुलघव अवशेषा चत्वारः शीतादय स्पर्शा यथा वर्णादय उक्ता स्तथा वक्तव्या अत्र पाठोप्यर्थानुसारेण सुगमत्वात् स्वय भावनीयो, गतं पुद्गलद्वारं ॥ २६ ॥ इदानीं महादण्डक विवक्षु पृच्छति—अहभंते ! इत्यादि ॥ अथ भदन्त ! सर्वजीवाल्पबहुत्व सर्वजीवाल्पबहुत्ववक्तव्यतात्मक

गंधा जाणियव्वा, फासाणं कक्खडमउयगरुयलहुयाणं जहा एगपदेसोगाढाणं भणियं तहा भणियव्वं अवसेसा फासा जहा वण्णा तहा भणियव्वा दारं २६ । अह भंते ! सव्वजीवप्पबहुं महादंडयं वत्तइस्सामि सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतियमणुस्सा मणुस्सीओ संखेज्जगुणाओ बादरतेउकाइयापज्जत्तया असंखिज्जगुणा

पणा । इम सघला भाववि इम जीवा पण नमरप मन कहिवा । फासाव कक्खडमउयगरुयलहुयाव । परमाणो कर्कशमृदुगुरुलघु । जहा एगपदेसोगाढाव भणिय तहा भा । एकने एकजिम प्रदेशावगाढ कह्यो तिमकहिवो । अवसेसा फासा तवशा वण्णा भणिया तहा भा दार । यावतापरस जिम वर्णा तिम कहिवा पुद्गलद्वार इति ३ पदे २६ द्वार समाप्त हुवे । हिवे महादंडकवडे कोहमा अल्पबहुत्व । अह भंते सव्वजीवप्पबहुमहादंडयं वत्तइस्सामि देसमवप् एक सवजीवनो पठा पाणे । सव्वत्थोवागब्भवक्कंतियमणुस्सा । सव्वथोवा जीवगर्भजमनुष्य । मणुस्सीओ संखिज्जगुणाओ बादरतेउकाइयापज्जत्तया

महादण्डकं वक्ष्यामि रचयिष्यामीति तात्पर्यार्थः, अनेन एतत् ज्ञापयति-तीर्थकरानुज्ञामात्रसापेक्ष एव भगवान् गणधर सूत्ररचना प्रतिप्रय तते प्रभुरत्रं मुताभ्यासपुरस्सरमिति, यद्वैतज्ज्ञापयति कुशलपि कमपि विशेषम गुरुमनापृच्छ्य न प्रवर्तितव्य किन्तु तदनुज्ञापुरस्सर मन्यथा विने यत्वायोगात् विनेयस्यापि सर्वमिद-गुराज्ञावर्तितासमायो गुरुभावानुवर्तका । सुत्तपर्यन्तप्रसिद्धं सविनेयः प्रकीर्तितः ॥ १ ॥ गुरुरपि च प्रच्छनी

अणुत्तरोववाइया देवा असंखेज्जगुणा उवरिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा मज्झिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा हेट्ठिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा अच्चुएकप्पे देवा संखेज्जगुणा आरणे कप्पे देवा संखेज्जगुणा पाणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा आणएकप्पे देवा संखिज्जगुणा अहे सत्तमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया अस० सहस्सारे कप्पे देवा असंखिज्जगुणा महासुक्के कप्पे देवा असंखिज्जगुणा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए णेरइया अस० लंतए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, चउत्थीए पंकप्प

पर्याप्तकास्ते पश्चात्तरावभासा असंख्यगुणा । तदृष्ट्वो सम्पर्को सख्यातगुणो २७ ततो तदृष्ट्वो बादरतेजस्कायपर्याप्ता असंख्यातगुणा असंख्यात अनु त्तरोपपातदेवता असंख्यातगुणा । उपरिमग्रैवेयकदेवा संख्येयगुणा । तदृष्ट्वो उपरिमग्रैवेयकदेवता संख्यातगुणा । मध्यमग्रैवेयकदेवा स ख्येयगुणा अधस्तनग्रैवेयकदेवा संख्येयगुणा । मध्यमग्रैवेयकदेवता संख्यातगुणा तदृष्ट्वो अधस्तनग्रैवेयकदेवता संख्यातगुणा । अच्युतकल्पदेवा संख्येयगुणा । तदृष्ट्वो अच्युतदेव संख्यातगुणा । आरणकल्पदेवा संख्येयगुणा प्राणतकल्पदेवा संख्येयगुणा । आनतकल्पदेव संख्यातगुणा । अधःसप्तमाप पृथ्वीनैरयिका संख्येयगुणा षष्ठीतमाए पृथ्वीनैरयिका असंख्येयगुणा । तदृष्ट्वो नीचैं सप्तमीनरकवासनारको संख्यातगुणा षष्ठनरकवासनारको अ सख्यातगुणा । सहस्रारकल्पदेवा असंख्येयगुणा । तदृष्ट्वो सहस्रारकल्पवासिदेवता असंख्यातगुणा । महाशुक्रकल्पदेवा असंख्येयगुणा । तदृष्ट्वो महाशुक्र वासदेव असंख्यातगुणा । पञ्चमाए धूमप्रभाए पृथ्वीनैरयिका असंख्येयगुणा । पाँचमानरकवासनारको असंख्यातगुणा । लान्तककल्पदेवा असंख्येयगुणा

नीयम् कालेनाव्यूणायमपि सुगमत्वा स्वयमभ्यायितव्यानि नवरं॥ जहा पोग्गला तहा णायिव्वा इति॥ यथा प्राक् सामान्यत पुद्गला उक्तास्तथा एकगुणकालकादयोपि वक्तव्या तथैव-सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा एगगुणकालगा परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए एगगुणकालगा अणंतगुणा संखेज्जपएसिया खंधा एगगुणकालगा संखेज्जगुणा असंखेज्जपएसिया खंधा एगगुणकालगा असंखेज्जगुणा पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा एगपरमाणुपोग्गला एगगुणकालगा अणंतगुणा इत्यादि॥ एवं संख्येयगुणकालकानां अनन्तगुणकालकानामपि वाच्य मेव मपवर्णगन्धरसा अपि वक्तव्याः कर्कशमृदुगुरुलघवः स्पर्शा यथा एकप्रदेशावगाढा भणिता तथा वक्तव्याः तेषैव-सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा एगगुणकक्खडफासा दव्वट्ठयाए संखेज्जपएसोगाढा एगगुणकक्खडफासा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा इति, एवं संख्येयगुणकर्कशस्पर्शा असंख्येयगुणकर्कशस्पर्शा वाच्या एवं मृदुगुरुलघवः अवशेषा चत्वारः शीतादयः स्पर्शा यथा वर्णादय उक्ता तथा वक्तव्या तत्र पाठोप्यक्तानुसारेण सुगमत्वात् स्वय भावनीयो, गतं पुद्गलद्वारं॥ २६॥ इदानीं महादण्डक विवक्षु गौतमापृच्छति-अहमते। इत्यादि॥ अथ भदन्त। सर्वजीवाल्पबहुत्वं सर्वजीवाल्पबहुत्ववक्तव्यतात्मक

गघा नाणियव्वा, फासाण कक्खडमउयगरुयलहुयाण जहा एगपदेसोगाढाण भणिय तहा भाणियव्वं अवसेसा फासा जहा वन्ना भणिया तहा भाणियव्वा दारं २६। अह भंते! सव्वजीवप्पबहुं महादंडयं वत्तइस्सामि सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतियमणुस्सा मणुस्सीओ संखेज्जगुणाओ बादरतेउकाइयापज्जत्तया असंखिज्जगुणा

वन्ना। एम सव्वा जाव तिप एम पोला अव अवरप सव वषिया। फासाव कक्खडमउयगरुयलहुयाण। फरसओ कर्कशमृदुगुरुलघु। अवसेसगपएसोगा हावं भणिय तहाभा। पवने पवजिम प्रदेशावगाढ कओ तिमवषियो। अवसेसा फासा तव्वा जहा भणिया तहा भा दार। यावतापरस जिम व जा तिम कहिवा पदवार इति ३ पदे २६ दार समाप्त हुवे। हिवे महादंडकरेहैं कोइमा अल्पबहुत्व। अथ भंते सर्वजीवअल्पबहुमहादंडक वत्तइस्सामि रचमनम् ईत सर्वजीवनो पठा पामे। गर्भजावामअपक्रांतियमनुष्य। गर्भजा-जीवनभवमनुष्य। मनुष्योथा संख्यातगुणा थी बादरतेउकायअपर्याप्तता

महादण्डकं वर्तयिष्यामि रचयिष्यामीति तात्पर्यार्थः, अनेन एतत् ज्ञापयति-तीर्थकरानुज्ञामात्रसापेक्ष एव भगवान् गणधरः सूत्ररचनां प्रति प्रवर्तते नपुनः गुताम्नायपुरस्सरमिति, यद्वैतज्ज्ञापयति कुशलमपि कर्मणि विनेयेन गुरुमनापृच्छ्य न प्रवर्तितव्यं किन्तु तदनुज्ञापुरस्सरं अन्यथा विनेयस्यायोगात् विनेयस्यापि लक्षणमिदं-गुराणामनिदितात्मायो गुरुभावानुवर्त्तकः । गुरुणामर्थे च प्रीतमित्थं सविनेयः प्रकीर्त्तितः ॥ १ ॥ गुरुरपि यः प्रच्छनी

अणुत्तरोववाइया देवा असंखेज्जगुणा उवरिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा मज्झिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा हेट्ठिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा अच्चुएकप्पे देवा संखेज्जगुणा आरणे कप्पे देवा संखेज्जगुणा पाणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा आणएकप्पे देवा संखिज्जगुणा अहे सत्तमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया अस० सहस्सारे कप्पे देवा असंखिज्जगुणा महासुक्के कप्पे देवा असंखिज्जगुणा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए णेरइया अस० लंतए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, चउत्थीए पंकप्प

असंख्येयगुणाः अनुत्तरोपपातिका असंख्येयगुणाः । ततो गर्भजो मनुष्यो संख्यातगुणो २० गतो ततो बादरतेजस्कायपर्याप्ता असंख्यातगुणा असंख्यात अनुत्तरोपपातदेवता असंख्यातगुणा । उपरिमग्रैवेयकदेवा संख्येयगुणाः । ततो उपरितनग्रैवेयकदेवता संख्यातगुणा । मध्यमग्रैवेयकदेवा संख्येयगुणा हिट्ठिमगेविज्जगादेवा संख्येयगुणा । मध्यमग्रैवेयकनिकायदेवता संख्यातगुणा ततो अधस्तननिकायदेवता संख्यातगुणा । अच्युतकल्पदेवा संख्येयगुणा । ततो अच्युतदेव संख्यातगुणा । आरणकल्पदेवाः संख्येयगुणाः प्राणतकल्पदेवाः संख्येयगुणाः । आनतकल्पदेव संख्यातगुणा । अधःसप्तमाए पुढवीए नैरयिकाः संख्येयगुणाः षष्ठीतमाए पुढवीनैरयिका असंख्येयगुणाः । ततो नीचे सातमीनरकनागारको संख्यातगुणा छट्ठानरकनागारको असंख्यातगुणा । सहस्रारकल्पदेवा असंख्येयगुणाः । ततो सहस्रारकल्पनादेवता असंख्यातगुणा । महाशुक्रकल्पदेवा असंख्येयगुणा । ततो महाशुक्रनादेव असंख्यातगुणा । पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीएनेरइया असंख्येयगुणा । पांचमानरकनागारको असंख्यातगुणा । लंतककल्पदेवा असंख्येयगुणा

यः स एवरूपो धर्मोपदेशकोऽपि सदा धर्मप्रवृत्त ॥ सर्वेभ्योऽप्यल्पत्वाय देशकोऽग रुच्यते ॥ १ ॥ इति महादण्डकं वर्तयिष्यामीत्युक्त्वा ततः प्रतिघातमेव निर्वाहयति-सर्वस्तोका गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यास्त्यादि ॥ सर्वस्तोका गर्भव्युत्क्रान्तिका मनुष्या सङ्ख्येयकोटीकोटीप्रमाणत्वात् १ तेभ्यो मानुष्यो मनुष्यस्त्रियः सङ्ख्येयगुणाः सप्तविंशतिगुणत्वात् उक्तञ्च-सत्तावीसगुणाओ मणुयाणं तदहियाओ चेव त्ति ॥ २ ॥ ताभ्यो बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्ता असङ्ख्येयगुणाः कतिपयवर्गसमूहावलिकाघनसमयप्रमाणत्वात् ३ तेभ्यो ऽनुत्तरोपपातिनो देवा असङ्ख्येयगुणाः क्षेत्रपल्योपमासङ्ख्येयभागवर्तिनभःप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ४ तेभ्य उपरितनग्रैवेयकत्रिकदेवाः सङ्ख्येयगुणाः बृहत्तरक्षेत्रपल्योपमासङ्ख्येयभागवर्तिनभःप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् एतदपि कथमवसेयमिति चेत् उच्यते-विमानबाहुल्यात् तथाह्यनुत्तरदेवानां पञ्च विमानानि विमानशतं तूपरितनग्रैवेयकत्रिके प्रतिविमानं वा ऽसङ्ख्येया देवा यथा २ चाधोवर्तीनि विमानानि तथा २ देवा अपि प्राचुर्येण लभ्यन्ते ततोऽवसीयते अनुत्तरोपपातिदेवेभ्यो बृहत्तरक्षेत्रपल्योपमासङ्ख्येयभागवर्त्याका-

---

शप्रदेशराशिप्रमाणा उपरितनग्रैवेयकत्रिकदेवा एवमुत्तरत्रापि भावना कार्या यावदानतकल्पः ५ तेभ्योऽप्युपरितनग्रैवेयकत्रिकदेवेभ्यो मध्यमग्रैवेयकत्रिकदेवाः सङ्ख्येयगुणाः ६ तेभ्यो ऽधस्तनग्रैवेयकत्रिकदेवा सङ्ख्येयगुणाः ७ तेभ्यो ऽच्युतकल्पदेवाः सङ्ख्येयगुणाः ८, तेभ्य आरणकल्पदेवाः सङ्ख्येयगुणा यद्यप्यारणाच्युतकल्पौ समश्रेणीकौ समविमानसङ्ख्याकौ च तथापि कृष्णपाक्षिका स्वभावात् प्राचुर्येण दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते नोत्तरस्यां बहवश्च कृष्णपाक्षिका स्तोकाः शुक्लपाक्षिका अतो ऽच्युतकल्पदेवापेक्षया आरणकल्पे देवाः सङ्ख्येयगुणाः ९, तेभ्योऽपि प्राणतकल्पे देवाः सङ्ख्येयगुणाः १० तेभ्योऽप्यानतकल्पे देवाः सङ्ख्येयगुणाः भावना आरणकल्पवत् कर्तव्या ११ तेभ्यो ऽधःसप्तमनरकपृथिव्यां नैरयिका असङ्ख्येयगुणाः असङ्ख्येयश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् १२ तेभ्यः षष्ठपृथिव्यां नैरयिका असङ्ख्येयगुणा एतच्च प्रागेव दिगनुपातेन नैरयिकाल्पबहुत्वचिन्तायां भावितं १३, तेभ्योऽपि सहस्रारकल्पदेवा असङ्ख्येयगुणाः षष्ठपृथिवीनैरयिकपरिमाणहेतुश्रेण्यसङ्ख्येयभागापेक्षया सहस्रारकल्पदेवपरिमाण

यतो मेरुसंख्येयभागस्य असंख्येयभागत्वात् १४। तेभ्यो महाशुक्रे कल्पे देवा असंख्येयगुणा विमानमात्रत्वात् तथाहि-पञ्चसहस्राणि विमानानां सहस्रारकल्प चत्वारिंशत् सहस्राणि महाशुक्र अन्यत्रापि विमानवासिनो देवा बहुबहुतराः लोकलोकतरा योपरितनोपरितनविमानवासिनः तत्र सहस्रारदेवेभ्यो महाशुक्रकल्प देवा असंख्येयगुणाः १५। तेभ्योपि पञ्चमपृथ्वीधूमप्रभाभिधाननरकपृथिव्या नैरयिका असंख्येयगुणाः घनतमप्रदेश संख्येयभागवर्तिनभःप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् १६। तेभ्योपि लान्तके कल्पे देवा असंख्येयगुणा अतिवृहत्तरश्रेण्यसंख्येयभागगतनभःप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् १७। तेभ्योपि चतुर्थ्यां पङ्कप्रभायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणा युक्तिःप्रागुक्तैव भावनीया १८। तेभ्योपि ब्रह्मलोके कल्पे देवा असंख्येयगुणा युक्तिःप्रागुक्तैव १९। तेभ्योपि तृतीयस्यां वालुकाप्रभायां पृथिव्यां नैरयिकाः असंख्येयगुणाः २०। तेभ्योपि माहेन्द्रकल्प देवा असंख्येयगुणा २१। तेभ्योपि सनत्कुमारकल्प देवा असंख्येयगुणा २१। तेभ्योपि सनत्कुमारकल्प देवा असंख्येयगुणा युक्तिरत्रापि प्रागुक्तैव २२। तेभ्यो द्विती यस्यां शर्कराप्रभायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणा एतच सप्तमपृथिवीनारकादयो द्वितीयपृथिवीनारकपर्यन्ताः प्रत्येक स्वस्थाने चिन्त्यमानाः स

ञाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा बंभलोए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए णे रइया असंखेज्जगुणा माहिंदे देवा असंखिज्जगुणा सणकुमारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा दोच्चाए सक्करप्प भाए पुढवीए णेरइया असं० समुच्छिममणुस्सा असंखेज्जा० ईसाणे कप्पे देवा असं० ईसाणे कप्पे देवीओ

चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखिज्जगुणा। बंभलोए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा तच्चो वालुयप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा। माहिंदे कप्पे देवा असं खिज्जगुणा। सणंकुमारकप्पे देवा असंखेज्जगुणा। दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखिज्जगुणा। सम्मुच्छिममणुस्सा असंखेज्जगुणा। ईसाणे कप्पे देवा असं खिज्जगुणा। ईसाणे कप्पे देवीओ असंखिज्जगुणा। सोहम्मे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा। सोहम्मे कप्पे देवीओ असंखिज्जगुणा। भवणवासिदेवा असंखेज्जगुणा तेहिंतो सम्मुच्छिममणुस्सा असंखेज्जगुणा। ईसाणकप्पदेवा असंखिज्जगुणा

। स यथारूपो धर्मोपपमकर्तेव सदा धर्मे प्रवर्तत ॥ सत्येभ्योपमसारस्थाय देशकोगुरुसम्यसे ॥ १ ॥ इति महादण्डकं वक्तयिष्यामीत्युक्त्वा ततः प्र
तिज्ञातमेव निर्वाहयति-सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतियमणुस्सत्यादि ॥ सर्वस्तोका गर्भव्युत्क्रान्तिका मनुष्याः सङ्ख्येयकोटीकोटीप्रमाणत्वात् १ तेभ्यो मानु
षो मनुष्यस्त्रियः सङ्ख्येयगुणाः सप्तविंशतिगुणत्वात् उक्तञ्च-सत्तावीसगुणा पुण मणुयाणं तदहिया चेव त्ति ॥ २ ॥ ताभ्यो बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्ता
असङ्ख्येयगुणाः कतिपयवर्गन्यूनावलिकाघनसमयप्रमाणत्वात् ३ तेभ्योऽनुत्तरोपपातिनो देवा असङ्ख्येयगुणाः क्षेत्रपल्योपमासङ्ख्येयभागवर्तिनभःप्रदे
शराशिप्रमाणत्वात् ४ तेभ्य उपरितनग्रैवेयकत्रिकदेवाः सङ्ख्येयगुणाः बृहत्तरक्षेत्रपल्योपमासङ्ख्येयभागवर्तिनभःप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् एतदपि कथम
वसेय मितिचेदुच्यते-विमानबाहुल्यात् तथाह्यनुत्तरदेवानां पञ्च विमानानि विमानशतं तूपरितनग्रैवेयकत्रिके प्रतिविमानं चाऽसङ्ख्येया देवा यथा
२ चाधोवर्तीनि विमानानि तथा २ देवा अपि प्राचुर्येण लभ्यन्ते ततोऽवसीयते अनुत्तरोपपातिदेवेभ्यो बृहत्तरक्षेत्रपल्योपमासङ्ख्येयभागवर्त्याकाश

प्रदेशराशिप्रमाणा उपरितनग्रैवेयकत्रिकदेवा एवं मुत्तरत्रापि भावना कार्या यावदानतकल्पः ५ तेभ्योऽप्युपरितनग्रैवेयकत्रिकदेवेभ्यो मध्यमग्रैवेयक
त्रिकदेवाः सङ्ख्येयगुणाः ६ तेभ्यो ऽधस्तनग्रैवेयकत्रिकदेवाः सङ्ख्येयगुणाः ७ तेभ्योऽच्युतकल्पदेवाः सङ्ख्येयगुणाः ८ तेभ्य आरणकल्पदेवाः सङ्ख्ये
यगुणाः यद्यप्यारणाच्युतकल्पौ समश्रेणीकौ समविमानसङ्ख्याकौ च तथापि कृष्णपाक्षिकाः स्वभावात् प्राचुर्येण दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते
आरणस्य ऽच्युत च कृष्णपाक्षिकाः स्तोकाः शुक्लपाक्षिका स्ततोऽच्युतकल्पदेवापेक्षया आरणकल्पे देवा सङ्ख्येयगुणाः ९ तेभ्योऽपि प्राणतकल्प देवाः
सङ्ख्येयगुणाः १० तेभ्योऽप्यानतकल्पे देवाः सङ्ख्येयगुणा भावना प्राणतकल्पवत् स्वतन्त्रा ११ तेभ्यो ऽधःसप्तमनरकपृथिव्या नैरयिका असङ्ख्येयगुणाः
श्रेण्यसङ्ख्येयभागगतनभःप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् १२ तेभ्यः षष्ठपृथिव्या नैरयिका असङ्ख्येयगुणा एतच्च प्रागेव दिगनुपातेन नैरयिकाल्पबहुत्वचि
न्तायां भावित १३, तेभ्योऽपि सहस्रारकल्पदेवा असङ्ख्येयगुणाः षष्ठपृथिवीनैरयिकपरिमाणहेतुश्रेण्यसङ्ख्येयभागापेक्षया सहस्रारकल्पदेवपरिमाण

तर्विचिकूलदार्विंशतमभागकल्पा ईशानदेवा सतो देवाः संमूर्च्छिममनुष्येभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणा २४। तेभ्य ईशानकल्पे देव्य ऽसङ्ख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गु णत्वात्, यतोसगुणावर्त्ती सरूपाधिकाद्वोर्तिंशदेव इतिवचनात् २६। ताभ्यः सौधर्मकल्पे देवाः सङ्ख्येयगुणा तत्र विमानबाहुल्यात्, तथाहि- तत्र द्वात्रिंशत्शतसहस्राणि विमानानां अष्टाविंशतिशतसहस्राणि ईशाने कल्पे अपिच दक्षिणदिग्वर्त्ती सौधर्मकल्प ईशानकल्प उत्तरदिग्वर्त्ती द क्षिणस्यां च दिशि बहवः कृष्णपाक्षिकाः समुत्पद्यन्त ततः ईशानदेवेभ्यः सौधर्मदेवाः सङ्ख्येयगुणाः, अन्यच्च युक्ति माहेन्द्रसनत्कुमारकल्पयो रप्यु क्ता परं तत्र माहेन्द्रकल्पापेक्षया सनत्कुमारकल्पदेवा असंख्येयगुणा उक्ता इह तु सौधर्मकल्प संख्येयगुणा सदेव तस्माच्च उच्यते-वचनप्रामाण्यात्

चिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा सखेज्जगुणा जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीहं संखिज्जगुणाहं वाणमंतरा देवा संखेज्जगुणा वाणमंतरीहं देवीहं सखेज्ज० जोइसिया देवा सखेज्जगुणा जोइसिणीहं देवीहं संखिज्ज गुणाहं खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखिज्ज० थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया स खेज्ज० जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया सखे० चउरिंदिया पज्जत्तया सखेज्ज० पंदिया पज्जत्ता

खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका सङ्ख्यातगुणा। जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनीभ्यः सं वाणमन्तरा देवा संख्येयगुणा वाणमन्तरीभ्यो देवीभ्यः स । जलचरभ्यो वाणव्यन्तरदेव सङ्ख्यातगुणा तेभ्यो वाणव्यन्तरीभ्यो सङ्ख्यातगुणा । ज्योतिष्कादेवा स ज्योतिष्कीभ्यो देवीभ्यः स । तेभ्यो ज्योतिषी सङ्ख्यातगुणा ज्योतिषीभ्यो सङ्ख्यातगुणा। खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका नपुंसका स । तेभ्यो स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसक स ङ्ख्यातगुणा। जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका नपुंसका स० । तेभ्यो जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसक सङ्ख्यातगुणा। जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनि का नपुंसका चतुरिन्द्रियपर्याप्तका स० पञ्चेन्द्रियपर्याप्तका विशे त्रीन्द्रियपर्याप्तका विशे तेइन्द्रियपर्याप्तका वि० । तेभ्यो जलचरपञ्चेन्द्रिय नपुंसक सङ्ख्यात गुणा चतुरिन्द्रियपर्याप्ता सङ्ख्यातगुणा पञ्चेन्द्रियपर्याप्ता विशेषाधिक द्वीन्द्रियपर्याप्ता विशेषाधिक त्रीन्द्रियपर्याप्ता विशेषाधिक । पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्तका असं० च

र्वपि घनीकृतलोकश्रेण्यसंख्येयभागवर्तिनभःप्रदेशराशिप्रमाणा प्रज्ञप्ताः केवलं श्रेण्यसंख्येयभागोऽसंख्येयभेदभिन्न इति इत्यमसंख्येयगुणतया प्ररूप
णुत्वमभिधीयमानं न विरुध्यति २३। तेभ्यो द्वितीयनरकपृथिवीनारकेभ्यः सम्मूर्च्छिममनुष्या असंख्येयगुणा इति अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशेः सम्ब
न्धिनि तृतीयवर्गमूलेन गुणिते प्रथमवर्गमूले यावान् प्रदेशराशिस्तावत्प्रमाणानि खण्डानि यावन्त्येकस्याः श्रेणेरपहियन्ते भवन्ति तावत्प्रमा
णाः २४। तेभ्य ईशाने कल्पे देवा असंख्येयगुणा यतोऽङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशेः सम्बन्धिनि द्वितीये वर्गमूले तृतीयेन वर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेश
राशिर्भवति तावत्प्रमाणासु घनीकृतस्य लोकस्यैकप्रादेशिकीषु श्रेणिषु यावन्तो नभःप्रदेशास्तावत्प्रमाणा ईशानकल्पगतो देवदेवीसमुदाय इत्य

सखे०, सोहम्मे कप्पे देवा संखेज्ज० सोहम्मे कप्पे देवीओ संखेज्जगुणाओ भवणवासीदेवा असंखेज्जगुणा भ
वणवासिणीओ देवीओ संखिज्जगुणाओ। इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया असंखिज्जगुणा खहचरपंचि
दियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ थलयरपंचि
दियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ जलयरप

ईशानकल्पदेव्यो संख्येयगुणाः। तेभ्यो ईशानकल्पे देवा असंख्यातगुणाः तेभ्यो ईशानकल्पदेव्यो असंख्यातगुणाः। सौधर्मदेवाः संख्येयगुणाः सौधर्मकल्पे
देव्यः संख्येयगुणाः। तेभ्यो सौधर्मकल्पे देवाः असंख्यातगुणाः तेभ्यो सौधर्मदेव्यः संख्यातगुणाः। भवनवासीदेवा असं भवनवासिन्यो देव्यः संख्ये।
तेभ्यो भवनपतिदेवाः असंख्यातगुणाः तेभ्यो भवनपतिदेव्यः संख्यातगुणाः। इमीसे रत्नप्रभाए पृथ्वीए नैरयिका असं खचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः
पुरुषाः संख्ये। तेभ्यो रत्नप्रभानारको असंख्यातगुणाः तेभ्यो खचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः संख्यातगुणाः। खचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः असं थल
चरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषाः सं। तेभ्यो खचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः संख्यातगुणाः, थलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः असंख्यातगुणाः। थल
चरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः सं। थलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः संख्यातगुणाः। जलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषाः सं। तेभ्यो ज

प्रभायां पृथिव्यां नैरयिका असङ्ख्येयगुणा अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशौ सम्बन्धिनि प्रथमवर्गमूले द्वितीयेन वर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेशराशिः स्तावत्प्रमाणासु श्रेणिषु यावन्त आकाशप्रदेशास्तावत्प्रमाणत्वात् ३१ । तेभ्योऽपि खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषा असङ्ख्येयगुणाः प्रतरासङ्ख्येयभागवर्त्यसङ्ख्येयश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ३२ । तेभ्योऽपि खचरपञ्चेन्द्रियास्तिर्यग्योनिकाः स्त्रियः सङ्ख्येयगुणास्त्रिगुणत्वात् तिगुणातिरूवअहिया तिरियाणइत्थियामुणेयव्वा इतिवचनात् ३३ । ताभ्यः स्थलचरपञ्चेन्द्रियास्तिर्यग्योनिकाः पुरुषाः संख्येयगुणाः बृहत्तरप्रतरासङ्ख्येयभागवर्त्यसङ्ख्येयश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ३४ । तेभ्यः स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः स्त्रियः सङ्ख्येयगुणास्त्रिगुणत्वात् ३५ । ताभ्यो जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषाः सङ्ख्येयगुणा बृहत्तमप्रतरासङ्ख्येयभागवर्त्यसङ्ख्येयश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ३६ । तेभ्यो जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्त्रियः सङ्ख्येयगुणास्त्रिगुणत्वात् ३७ । ताभ्यो व्यन्तरा देवाः पुंवेदोदयिनः सङ्ख्येयगुणा यतः-सङ्ख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाणानि सूची-

---

रूपाणि खण्डानि यावन्त्येकस्मिन् प्रतरे भवन्ति तावन्तः सामान्येन व्यन्तराः केवलमिह पुरुषा विवक्षिता इति सकलसमुदायापेक्षया किञ्चिन्न्यूनद्वात्रिंशत्तमभागकल्पा वेदितव्याः ततो घटन्ते जलचरयुवतिभ्यः सङ्ख्येयगुणाः ३८ । तेभ्यो व्यन्तर्यः सङ्ख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात् ३९ । ताभ्यो ज्योतिष्कदेवाः सङ्ख्येयगुणाः तेऽपि सामान्यतः षट्पञ्चाशदधिकशतद्वयाङ्गुलप्रमाणानि सूचीरूपाणि खण्डानि यावन्त्येकस्मिन् प्रतरे भवन्ति तावत्प्रमाणाः परमिह पुरुषा विवक्षिता इति ते सकलसमुदायापेक्षया किञ्चिन्न्यूनद्वात्रिंशत्तमभागकल्पाः प्रतिपत्तव्या ततः उपपद्यन्ते व्यन्तरीभ्यः सङ्ख्येयगुणाः ४० । तेभ्यो ज्योतिष्कदेव्यः सङ्ख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात् ४१ । ताभ्यः खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः सङ्ख्येयगुणाः क्वाचित्क असंख्येयगुणा इतिपाठः स न समीचीनो यत एते च ये पर्याप्तचतुरिन्द्रिया वक्ष्यन्ते तेऽपि ज्योतिष्कदेव्यपेक्षया सङ्ख्येयगुणा एवोपपद्यन्ते तथाहि-षट्पञ्चाशदधिकशतद्वयाङ्गुलप्रमाणानि सूचीरूपाणि खण्डानि यावन्त्येकस्मिन्प्रतरे भवन्ति तावत्प्रमाणा ज्योतिष्का उक्तं च-छप्पन्नदोसयअंगुल सूइपएसेहि भाइयं

मथाव पारठ्यमो पतोम्यपाप्युक-इसावेसवत्यमि पतोसगुणाठशीतिदेवीसं । सर्वेभ्यासौऽस्मे तहोपसवात्तवपवासी ॥ १ ॥ २७ । इति तेभ्योपि त
स्मिनव सौधमकल्पे देव्यः सङ्ख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात् । सवत्यविमतो सगुणाठशीतिदेवीठइतिवचनात् २८ । ताभ्योप्यसङ्ख्येयगुणा भवनवासि
नः कथमितिचत् इह पङ्गुलमात्रप्रमदतराकः सम्बन्धिनि प्रथमे वर्गमूल तृतीयेन वर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेशराशि भवति तावत्प्रमाणासु प
नीकृतस्य लोकस्य एकप्रादेशिकीषु श्रेणिषु यावतो नभःप्रदेशा स्तावत्प्रमाणो भवनपतिदवदेवीसमुदाय तद्गतद्विचिवूनद्वात्रिंशद्भागकल्पा च भवनप
तयो इवा ततो पठन्त सौधमदवीभ्य स्ते ऽसंख्येयगुणाः २९ । तभ्यो भवनवासिभ्यादेव्य सङ्ख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात् ३० । ताभ्यो व्यस्या रत्न

थिसेसाहिया येइंदिया पज्जत्ता विसे० । पञ्चिदिया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा चउरिदिया अपज्जत्तया
थिसेसाहिया तेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया येइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया पत्तेयसरीरबादरव
णस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरपुढवियिकाइया अप
ज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखि

न्द्रियपर्याप्तका वि । पंचेंद्रिय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा चौरिंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक । तइंद्रिय अपर्याप्तका वि बेइंद्रिय अपर्याप्तका विशेषा०
तेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक बेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक । प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकपर्याप्तका अस । प्रत्येकशरीरबादर वनस्पतिकायिक पर्या
प्ता असंख्यातगुणा । बादरनिगोदपर्याप्ता अस बादरपृथ्वीकायिकपर्याप्तका अस । बादरनिगोदोऽपर्याप्ता असंख्यातगुणा बादरपृथिवीकायिकपर्या
प्ता असंख्यातगुणा । बादरअप्कायिकपर्याप्तका अस बादरवायुकायिकपर्याप्तका अस । बादर अप्कायिकापर्याप्ता असंख्यातगुणा बादरवायुकायि
कापर्याप्ता असंख्यातगुणा । बादरतेजस्कायिक अपर्याप्तका अस । बादरतेजस्कायिका पर्याप्ता असंख्यातगुणा । प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका पर
प्ता अस० । प्रत्येकशरीरबादर वनस्पतिकायिका अपर्याप्ता अस० । बादरनिगोद अपर्याप्तका अ बादरपृथ्वीकायिक अपर्याप्तका अ । बादर

माथा यम्यश्रोता लपाप्यकुलाभ्स्पेयपामस्था सखयेयमेद भिन्नत्वात् बादरपर्याप्तप्रत्येकवनस्पतिपरिमाणचिन्तायां मगुलासंख्ययभागो ऽसख्येय गखीमः परिपस्ता ततो न कविद्विरोधः ५३ । तम्यो बादरनिगोदा अनन्तकायिकशरीररूपा पर्याप्ता असंख्येयगुणाः ५४ । तम्योपि बादरप पिथीकायपका पर्याप्ता असंख्येयगुणा ५५ । तम्योप पर्याप्तबादराप्कायिका असंख्ययगुणा यद्यपिच पर्याप्तबादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका ऽप्काथि का प्रत्येकमङ्गुलासंख्येयभागमात्राणि सूचीरूपाणि खण्डानि यावत्येकस्मिन् प्रतरे भवन्ति तावत्प्रमाणा अन्यत्रापि विशेषेणोक्ता तथाप्यङ्गुलासंख्येय भागस्य असंख्येयभेदभिन्नत्वा दित्यसंख्येयगुणत्वा दित्य मभिधाने न कविद्दोषः ५६ । तम्यो बादरपर्याप्ताप्कायिकेभ्यो बादरवायुकायिकाः प भागता असंख्येयगुणा घनीकृतलोकासंख्येयभागवर्त्यसंख्येयप्रतरगतनभःप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ५७ । तम्या बादरतेजस्कायिका अपर्याप्ता असंख्येय

ज्जगुणा बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असं खिज्जगुणा बादरनिगोदा अपज्जत्तया संखिज्जगुणा बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बाद रआउकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्ज० सुहु

निगोद पर्याप्ता एवं बादरपृथिवीकायिका पर्याप्ता एव । बादर पाठकाइया पर्याप्तका एव । बादर वायुकायिका पर्याप्ता असंख्येयगुणा । बादरतेजस्कायिका अपर्याप्ता एव । बादरवायुकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा । सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता एवं । सूक्ष्मतेजस्कायिका पर्याप्ता असंख्येयगुणा । सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्ता वि सूक्ष्म पाठकाइ अपर्याप्ता वि सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता वि । सूक्ष्मपृथिवीकायिका पर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मपाठकायिक विशेषाधिक सूक्ष्मवायुकायिक पर्याप्ता विशेषाधिक । सूक्ष्मतेजस्कायिक पर्याप्ता स सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्ता वि सु

पयरं । तेइंदियपज्जत्तगविसेसाहिए अङ्गुलसङ्ख्येयभागमात्राणि सूचीरूपाणि खण्डानि यावन्त्येकस्मिन्प्रतरे भवन्ति तावत्प्रमाणाश्चतुरिन्द्रिया उक्त-प र्याप्तका विति यथासविशेषवदरति । अंगुलसंखाऽसंख पएसपएसपुण्णपयरं । अङ्गुलस्यासङ्ख्येयभागस्तथा षट्पञ्चाशदधिकमङ्गुलशतद्वयं स ङ्ख्येयगुणं ततो ज्योतिष्कापेक्षया परिभाव्यमानाः पर्याप्तचतुरिन्द्रिया अपि सङ्ख्येयगुणा एव घटन्ते किंपुनः पर्याप्तचतुरिन्द्रियापेक्षया सङ्ख्येयभागमा त्रखेचरपञ्चेन्द्रियनपुंसका इति ४२ । तेभ्योऽपि स्थलचरपञ्चेन्द्रियनपुंसकाः सङ्ख्येयगुणाः ४३ । तेभ्योऽपि जलचरपञ्चेन्द्रियनपुंसकाः सङ्ख्येयगुणाः ४४ । ते भ्योऽपि पर्याप्तचतुरिन्द्रियाः सङ्ख्येयगुणाः ४५ । तेभ्योऽपि पर्याप्ताः सम्मूर्छिमजलचरादिका पञ्चेन्द्रिया विशेषाधिकाः ४६ । तेभ्योऽपि पर्याप्ता द्वीन्द्रिया विशेषाधिकाः ४७ । तेभ्योऽपि पर्याप्तत्रीन्द्रिया विशेषाधिका ४८ । यद्यपि पर्याप्तचतुरिन्द्रियादीनां पर्याप्तत्रीन्द्रियपर्यन्तानां प्रत्येकमङ्गुलासङ्ख्येयभा गमात्राणि सूचीरूपाणि खण्डानि यावन्त्येकस्मिन् प्रतरे भवन्ति तावत्प्रमाणत्वमविशेषेणाभ्यधायि तथाप्यङ्गुलासङ्ख्येयभागस्य सङ्ख्येयभेदभिन्नत्वा

द्विशेषाधिकत्वमुच्यमानं न विरुद्धं तदपेक्षय मत्स्यप्रभृत्य सम्यगापि ततो नपुंसकं खचरसंज्ञा जलचरस्थलचरनपुंसका चतुरिन्द्रिय तद्वपेक्षया वि शेषाधिका इति ४८ । तेभ्योऽपि पर्याप्तत्रीन्द्रियेभ्योऽपर्याप्ताः पञ्चेन्द्रिया असङ्ख्येयगुणाः ४९ । अङ्गुलासङ्ख्येयभागमात्राणि खण्डानि सूचीरू पाणि यावन्त्येकस्मिन् प्रतरे भवन्ति तावत्प्रमाणत्वात् ४९ । तेभ्यश्चतुरिन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका ५० । तेभ्योऽपि त्रीन्द्रिया अपर्याप्ता विशे षाधिकाः ५१ । तेभ्यो द्वीन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका यद्यपि चापर्याप्ता चतुरिन्द्रियादयोऽपर्याप्तद्वीन्द्रियपर्यन्ताः प्रत्येकमङ्गुलस्यासङ्ख्येयभाग मात्राणि खण्डानि सूचीरूपाणि यावन्त्येकस्मिन् प्रतरे भवन्ति तावत्प्रमाणा अविशेषेणोक्ता तथाप्यङ्गुलासङ्ख्येयभागस्य विचित्रत्वात् इत्थं वि शेषाधिकत्वमुच्यमानं न विरोधमास्कन्दति ५२ । तेभ्योऽपि द्वीन्द्रियापर्याप्तेभ्यः प्रत्येकबादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा यद्यपि चा पर्याप्तद्वीन्द्रियादिवत् पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका अप्यङ्गुलासङ्ख्येयभागमात्राणि सूचीरूपाणि खण्डानि यावन्त्येकस्मिन् प्रतरे भवन्ति तावत्प्र

विशेषाधिका ७१ । तेभ्योऽपि सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ७२ । तेभ्योऽपि पर्याप्ताः सूक्ष्मनिगोदाः संख्येयगुणाः यद्यपि च पर्याप्ततेज स्कायिकादयः पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यन्ता अविशेषेणाऽप्यन्यत्राऽसंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा उक्ता तथाऽपि लोकाऽसंख्येयस्याऽसंख्येय भेदाभिन्नत्वादित्यमल्पबहुत्वमभिधीयमानमुपपन्नं द्रष्टव्यं ७३ । तेभ्योऽभवसिद्धिका अनन्तगुणा जघन्ययुक्तानन्तकप्रमाणत्वात् ७४ । तेभ्यः प्रतिपतित सम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणाः ७५ । तेभ्यः सिद्धा अनन्तगुणाः ७६ । तेभ्योऽपि बादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता अनन्तगुणा ७७ । तेभ्योऽपि सामान्यतो बादरपर्याप्ता विशेषाधिका बादरपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ७८ । तेभ्यो बादरापर्याप्तवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा ए कैकबादरनिगोदपर्याप्तनिश्रयाऽसंख्येयगुणानां बादरापर्याप्तनिगोदानां सम्भवात् ७९ । तेभ्यः सामान्यतो बादरापर्याप्ता विशेषाधिका बादरा पर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८० । तेभ्यः सामान्यतो बादरा विशेषाधिकाः पर्याप्ताऽपर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् ८१ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ८२ । तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्माऽपर्याप्तपृथिवी कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः पर्याप्तसूक्ष्माणामपर्याप्तसूक्ष्मेभ्यः स्वभा

विसेसाहिया बादरा विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्ज० सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमा विसेसाहि

वि० बादरवणस्सइकाइय अपज्जत्तगा अस० । बादरपर्याप्ता विशेषाधिक बादरवनस्पतिकायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । ओघा बादरा अपज्जत्तगा वि० बादरा विसेसाहिया । सुहुमवणस्सइकाइय अपज्जत्तगा अस० सुहुमअपज्जत्तगा वि० । सूक्ष्मवनस्पतिकायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तगा सं० सुहुमपज्जत्तगा वि० । सूक्ष्मवनस्पतिकायिकपर्याप्ता संख्यातगुणा सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमा वि० भवसिद्धिया विसेसाहिया निगोयजीवा विसेसाहिया । सूक्ष्मविशेषाधिक तेहथी भवसिद्धिया विशेषाधिक तेहथी निगोदजीव विशेषाधिक ।

गुणा असंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ५८ । तेभ्यः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ५९ । तेभ्योऽपि बादर निगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ६० । तेभ्यो बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ६१ । तेभ्यो बादराप्कायिका अपर्याप्ता असं ख्येयगुणाः ६२ । तेभ्यो बादरवायुकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ६३ । तेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ६४ । तेभ्यः सूक्ष्म पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः ६५ । तेभ्यः सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः ६६ । तेभ्यः सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विशे षाधिकाः ६७ । तेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्याप्तका असंख्येयगुणा अपर्याप्तकसूक्ष्मेभ्यः पर्याप्तसूक्ष्माणां स्वभावत एव प्राचुर्येण भावात् तथा चाह- मस्यैव प्रज्ञापनायां समुद्रविचारः-"जीवाणमऽपज्जत्ता बहुतरगा बायराण विन्नेया । सुहुमाण य पज्जत्ता ओहेण य केवली बिंति" ॥ ६८ ॥ तेभ्योऽपि सूक्ष्म पृथिवीकायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः ६९ । तेभ्योऽपि सूक्ष्माप्कायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः ७० । तेभ्योऽपि सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्ता वि

मपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमवाउकाइया पज्ज त्तगा विसेसाहिया सुहुमणिगोदा अपज्जत्तगा असंखे० सुहुमणिगोदा पज्जत्तया संखिज्जगुणा अभवसिद्धि या अणंतगुणा पडिवडियसम्मदिट्ठी अणंतगुणा सिद्धा अणंतगुणा बादर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अ णंतगुणा बादरपज्जत्ता विसेसाहिया बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा बादरअपज्जत्तया

सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्याप्तका वि । सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्याप्ता असंख्यातगुणाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः । सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्तका वि सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका अ । सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्ता असंख्यातगुणाः । सूक्ष्म निगोदपर्याप्तकाः सं अभवसिद्धिका अनंतगुणाः प्रतिपतितसम्यग्दृष्टयः अनं सिद्धाः अनं । सूक्ष्मनिगोदपर्याप्ता संख्यातगुणाः तेभ्यो अभवसिद्धिकाः अनंतगुणाः प्रतिपतितसम्यग्दृष्टिः अनंतगुणाः सिद्धा अनंतगुणाः । बादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तकाः अनं । बादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता अनंतगुणाः । बादरपर्याप्तकाः

शेषाधिका ७१ । तेभ्योऽपि सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ७२ । तेभ्योऽपि पर्याप्ताः सूक्ष्मनिगोदाः संख्येयगुणाः यद्यपि च पर्याप्ततेजस्कायिकादयः पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यन्ता अविशेषेणाऽन्यत्राऽसंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा उक्ता तथाऽपि लोकाऽसंख्येयत्वस्याऽसंख्येयभेदभिन्नत्वादित्थमल्पबहुत्वमभिधीयमानमुपपन्नं द्रष्टव्यं ७३ । तेभ्यो ऽभवसिद्धिका अनन्तगुणा जघन्ययुक्तानन्तकप्रमाणत्वात् ७४ । तेभ्यः प्रतिपतितसम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणाः ७५ । तेभ्यः सिद्धा अनन्तगुणाः ७६ । तेभ्योऽपि बादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता अनन्तगुणाः ७७ । तेभ्योऽपि सामान्यतो बादरपर्याप्ता विशेषाधिका बादरपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ७८ । तेभ्यो बादरापर्याप्तवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा एकैकबादरनिगोदपर्याप्तनिश्रयाऽसंख्येयगुणानां बादरापर्याप्तनिगोदानां सम्भवात् ७९ । तेभ्यः सामान्यतो बादरापर्याप्ता विशेषाधिका बादरापर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८० । तेभ्यः सामान्यतो बादरा विशेषाधिकाः पर्याप्ताऽपर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् ८१ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ८२ । तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्माऽपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः पर्याप्तसूक्ष्माणामऽपर्याप्तसूक्ष्मेभ्यः संख्या

विसेसाहिया बादरा विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्ज० सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमा विसेसाहि

वि० बायरवणस्सइकाइय अपज्जत्तगा अस । बादरपर्याप्ता विशेषाधिका बादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । ओघबायरा अपज्जत्तगा वि बायराविसेसाहिया । सुहुमवणस्सइकाइय अपज्जत्तगा अस० सुहुमअपज्जत्तगा वि । सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्यातगुणा सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिका । सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तगा सं सुहुमपज्जत्तगा वि । सूक्ष्मवनस्पतिकायिकपर्याप्ता संख्यातगुणा सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषाधिका । सुहुमा वि भवसिद्धिया विसेसाहिया निगोयजीवा विसेसाहिया । सूक्ष्मविशेषाधिका तेभ्यो भवसिद्धिया विशेषाधिका तेभ्यो निगोदजीव विशेषाधिका ।

गुणा असंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ५८। तेभ्यः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ५९। तेभ्योऽपि बादर निगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ६०। तेभ्यो बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ६१। तेभ्यो बादराप्कायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ६२। तेभ्यो बादरवायुकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ६३। तेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ६४। तेभ्यः सूक्ष्म पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः ६५। तेभ्यः सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्ता विशेषाधिका ६६। तेभ्यः सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः ६७। तेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्याप्तका असंख्येयगुणा अपर्याप्तकसूक्ष्मेभ्यः पर्याप्तसूक्ष्माणां स्वभावत एव प्राचुर्येण भावात् तथा चाऽऽह- प्रज्ञापनायां संग्रहणिकारः- जीवाणमपज्जत्ता बहुतरगा बायराण विन्नेया। सुहुमाण य पज्जत्ता ओहेण य केवली बिंति ॥ ६८ ॥ तेभ्योऽपि सूक्ष्म पृथिवीकायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः ६९। तेभ्योऽपि सूक्ष्माप्कायिका पर्याप्ता विशेषाधिका ७०। तेभ्योऽपि सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्ता वि

मपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमणिगोदा अपज्जत्तगा असंखे० सुहुमणिगोदा पज्जत्तया संखिज्जगुणा अभवसिद्धिया अणंतगुणा पडिवडियसम्मदिट्ठी अणंतगुणा सिद्धा अणंतगुणा बादर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा बादरपज्जत्ता विसेसाहिया बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा बादरअपज्जत्तया

सूक्ष्मआउकाय पज्जतगा वि० । सूक्ष्मतेउकायपर्याप्ता संख्यातगुणा सूक्ष्मपृथ्वीकायपर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मअप्कायपर्याप्ता विशेषाधिक। सूक्ष्मवाउकाय पज्जत्तगा वि० सूक्ष्मनिगोद अपज्जत्तगा अ० । सूक्ष्मवायुकायपर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। सूक्ष्म निगोदपज्जत्तगा सं० अभवसिद्धिया अनंतगुणा पडिवडितसम्यक्त्वी अनं० सिद्धा अनं० । सूक्ष्मनिगोदपर्याप्ता संख्यातगुणा तेहथी अभवसिद्धिक अनंतगुणा प्रतिपतितसम्यग्दृष्टि अनंतगुणा सिद्ध अनंतगुणा। बादरवणस्सइकाय पज्जत्तगा अनं० । बादरवनस्पतिकायपर्याप्ता अनंतगुणा। बादरपज्जत्तगा

जीवाधिकाः ७१ । तेभ्योऽपि सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ७२ । तेभ्योऽपि पर्याप्ता सूक्ष्मनिगोदाः संख्येयगुणाः यद्यपि च पर्याप्तेभ्य एकादयः पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यन्ता अविशेषेणाऽप्यसंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा उक्तास्तथाऽपि लोकाऽसंख्येयत्वस्याऽसंख्यभेदभिन्नत्वादित्थमल्पबहुत्वमविरोधमनुपपन्नं द्रष्टव्यं ७३ । तेभ्यो ऽभवसिद्धिका अनन्तगुणा जघन्ययुक्तानन्तकप्रमाणत्वात् ७४ । तेभ्यः प्रतिपतितसम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणाः ७५ । तेभ्यः सिद्धा अनन्तगुणाः ७६ । तेभ्योऽपि बादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता अनन्तगुणाः ७७ । तेभ्योऽपि सामान्यतो बादरपर्याप्ता विशेषाधिकाः बादरपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ७८ । तेभ्यो बादरापर्याप्तवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा एकैकबादरनिगोदपर्याप्तनिश्रयाऽसंख्येयगुणानां बादरापर्याप्तनिगोदानां सम्भवात् ७९ । तेभ्यः सामान्यतो बादरापर्याप्ता विशेषाधिका बादरापर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८० । तेभ्यः सामान्यतो बादरा विशेषाधिकाः पर्याप्ताऽपर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् ८१ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ८२ । तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्माऽपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः पर्याप्तसूक्ष्माणामपर्याप्तसूक्ष्मेभ्यः स्वभा

विसेसाहिया बादरा विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्ज० सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमा विसेसाहि

वि० बायरवणस्सइकाइय अपज्जत्तगा अस । बादरपर्याप्ता विशेषाधिक बादरवनस्पतिकायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । ओघाबायरा अपज्जत्तगा वि बायराविसेसाहिया । सुहुमवणस्सइकाइय अपज्जत्तगा अस सुहुमअपज्जत्तगा वि । सूक्ष्मवनस्पतिकायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तगा स सुहुमपज्जत्तगा वि । सूक्ष्मवनस्पतिकायिकपर्याप्ता संख्यातगुणा सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमा वि० भवसिद्धिया विसेसाहिया निगोयजीवा विसेसाहिया । सूक्ष्मविशेषाधिक तेहथी भवसिद्धिया विशेषाधिक तेहथी निगोदजीव विशेषाधिक ।

गुणा असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ५८ । तेभ्यः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा ५९ । तेभ्योऽपि बादर निगोदा अपर्याप्तका असङ्ख्येयगुणाः ६० । तेभ्यो बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असङ्ख्येयगुणा ६१ । तेभ्यो बादराप्कायिका अपर्याप्ता असं ख्येयगुणाः ६२ । तेभ्यो बादरवायुकायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणाः ६३ । तेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणाः ६४ । तेभ्यः सूक्ष्म पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः ६५ । तेभ्यः सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्ता विशेषाधिका ६६ । तेभ्यः सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विशे षाधिकाः ६७ । तेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिका पर्याप्तका असङ्ख्येयगुणा अपर्याप्तकसूक्ष्मेभ्यः पर्याप्तसूक्ष्माणां स्वभावत एव प्राचुर्येण भावात् तथा चाह- अस्यैव प्रज्ञापनाया वृद्धविवरः-जीवाणमपज्जत्ता बहुतराबादरा वि विवरे सुहुमाणपज्जत्ता ठिइयक्खलीयिति ॥ ६८ ॥ तेभ्योऽपि सूक्ष्म पृथिवीकायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः ६९ । तेभ्योऽपि सूक्ष्माप्कायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिका ७० । तेभ्योऽपि सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्ता वि

मपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमवाउकाइया पज्ज त्तगा विसेसाहिया सुहुमणिगोदा अपज्जत्ता असंखे० सुहुमणिगोदा पज्जत्तया संखिज्जगुणा अभवसिद्धि या अणंतगुणा पडिवडियसम्मादिठी अणंतगुणा सिद्धा अणंतगुणा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अ णंतगुणा बादरपज्जत्ता विसेसाहिया बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा बादरअपज्जत्तया

वि । सूक्ष्मतेजस्कायपर्याप्ता संख्यातगुणा सूक्ष्मपृथिवीकायपर्याप्ता विशेषाधिका सूक्ष्माप्कायपर्याप्ता विशेषाधिका । सूक्ष्मवायुकाय पर्याप्ता वि सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्ता अ । सूक्ष्मवायुकायपर्याप्ता विशेषाधिका सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । सूक्ष्म निगोदपर्याप्ता संख्यातगुणा अभवसिद्धिया अनंतगुणा प्रतिपतितसम्यक्त्वा अनंतगुणा सिद्धा अनंतगुणा । सूक्ष्मनिगोदपर्याप्ता संख्यातगुणा तेभ्यो अभवसिद्धिक अनंतगुणा प्रतिपतितसम्यग्दृष्टि अनंतगुणा सिद्ध अनंतगुणा । बादरवनस्पतिकाय पर्याप्ता अन । बादरवनस्पतिकायपर्याप्ता अनंतगुणा । बादरपर्याप्ता

षाधिकाः ७१ । तेभ्योऽपि सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ७२ । तेभ्योऽपि पर्याप्ताः सूक्ष्मनिगोदाः संख्येयगुणाः यद्यपि च पर्याप्ततेजस्कायिकादयः पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यन्ता अविशेषेणाऽपद्याऽसंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा उक्ता तथाऽपि लोकाऽसंख्येयस्याऽसंख्येयभेदभिन्नत्वादित्यमल्पबहुत्वमभिधीयमानमुपपन्नं द्रष्टव्यं ७३ । तेभ्योऽभवसिद्धिका अनन्तगुणाः जघन्ययुक्तानन्तकप्रमाणत्वात् ७४ । तेभ्यः प्रतिपतितसम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणाः ७५ । तेभ्यः सिद्धा अनन्तगुणाः ७६ । तेभ्योऽपि बादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता अनन्तगुणाः ७७ । तेभ्योऽपि सामान्यतो बादरपर्याप्ता विशेषाधिकाः बादरपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ७८ । तेभ्यो बादरापर्याप्तवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः एकैकबादरनिगोदपर्याप्तनिश्रयाऽसंख्येयगुणानां बादरापर्याप्तनिगोदानां सम्भवात् ७९ । तेभ्यः सामान्यतो बादरापर्याप्ता विशेषाधिकाः बादरापर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८० । तेभ्यः सामान्यतो बादरा विशेषाधिकाः पर्याप्ताऽपर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् ८१ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ८२ । तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्माऽपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः पर्याप्तसूक्ष्माणामऽपर्याप्तसूक्ष्मेभ्यः स्वभा

विसेसाहिया बादरा विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्ज० सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमा विसेसाहि

वि० बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असं० । बादरपर्याप्ता विशेषाधिक बादरवनस्पतिकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । ओघाबादरा अपज्जत्तगा वि बादराविशेषाधिका । सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अस सुहुमअपज्जत्तगा वि । सूक्ष्मवनस्पतिकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तगा सं सुहुमपज्जत्तगा वि । सूक्ष्मवनस्पतिकायपर्याप्ता संख्यातगुणा सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमावि० भवसिद्धिया विसेसाहिया निगोयजीवा विसेसाहिया । सूक्ष्मविशेषाधिक तेहथी भवसिद्धिया विशेषाधिक तेहथी निगोदजीव विशेषाधिक ।

गुणा असंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ५८। तेभ्यः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ५९। तेभ्योपि बादर निगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ६०। तेभ्यो बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ६१। तेभ्यो बादराप्कायिका अपर्याप्ता अस ख्येयगुणाः ६२। तेभ्यो बादरवायुकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ६३। तेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ६४। तेभ्यः सूक्ष्म पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः ६५। तेभ्यः सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः ६६। तेभ्यः सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विशे षाधिकाः ६७। तेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्याप्तका असंख्येयगुणाः अपर्याप्तकसूक्ष्मेभ्यः पर्याप्तसूक्ष्माणां स्वभावत एव प्राचुर्येण भावात् तथाचाह- त्रस्यांमेव प्रज्ञापनायां मलयगिरिः-जीवाणमपज्जत्ता बहुतरगा बायराण विन्नेया सुहुमाण य पज्जत्ता ओहेण य केवली बिंति ॥ ६८ ॥ तेभ्योपि सूक्ष्म पृथिवीकायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः ६९। तेभ्योपि सूक्ष्माप्कायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः ७०। तेभ्योपि सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्ता वि

मपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमणिगोदा अपज्जत्ता असंखे० सुहुमणिगोदा पज्जत्तया संखिज्जगुणा अभवसिद्धिया अणंतगुणा पडिवडियसम्मदिट्ठी अणंतगुणा सिद्धा अणंतगुणा बादर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा बादरपज्जत्ता विसेसाहिया बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा बादरअपज्जत्तया

ऊर्ध्वमायकायिक पर्याप्तका वि । सूक्ष्मतेजस्कायिकपर्याप्ता संख्यातगुणा सूक्ष्मपृथ्वीकायिकपर्याप्ता विशेषाधिका सूक्ष्माप्कायिकपर्याप्ता विशेषाधिका। सूक्ष्मवायुकायिकपर्याप्तका वि सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्तका अ । सूक्ष्मवायुकायिकपर्याप्ता विशेषाधिका सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। सूक्ष्म निगोदपर्याप्तका स अभवसिद्धिया अनंतगुणा प्रतिपतितसम्यक्त्वा अन सिद्धा अन । सूक्ष्मनिगोदपर्याप्ता संख्यातगुणा तेभ्यो अभवसिद्धिका अनंतगुणा प्रतिपतितसम्यग्दृष्टि अनंतगुणा सिद्ध अनंतगुणा। बादरवनस्पतिकायिकपर्याप्तका अन । बादरवनस्पतिकायिकपर्याप्ता अनंतगुणा। बादरपर्याप्तका

तुरिन्द्रियतिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणामपि तत्र प्रक्षेपात् ९१ । तेभ्य चतुर्गतिभाविनो मिथ्यादृष्टयो विशेषाधिका एव कतिपयाविरतसम्यग्दृष्ट्यादिसंज्ञि व्यतिरेकेण शेषाः सर्वेपि तिर्यञ्चो मिथ्यादृष्टिविचारायां चासंख्येयनारकादय सत्र प्रक्षिप्यन्ते तत क्षियगज्जीवराश्यपेक्षया चतुर्गतिका मिथ्यादृष्टय चिन्त्यमाना विशेषाधिकाः ९२ । तेभ्योप्यविरता विशेषाधिका अविरतसम्यग्दृष्टीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ९३ । तेभ्यः सकषायिको विशेषाधिका दे शविरतादीनामप्यत्र प्रक्षेपात् ९४ । तेभ्यः छद्मस्था विशेषाधिका उपशान्तमोहादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ९५ । तेभ्यः सयोगिनो विशेषाधिकाः सयोगिकेवलिनामपि तत्र प्रक्षेपात् ९६ । तेभ्यः संसारस्था विशेषाधिका अयोगिकेवलिनामपि तत्र प्रक्षेपात् ९७ । तेभ्य सर्वजीवा विशेषाधि काः सिद्धानामपि तत्र प्रक्षेपात ९८ ॥ इतिश्री मलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां अल्पबहुत्वाख्यं तृतीय पदं समाप्तम् ॥ ३ ॥

व्याख्यातं तृतीयपद मिदानीं चतुर्थमा रभ्यते-तस्य चायमभिसम्बन्धः इहानन्तरपदे दिगनुपातादिनाऽल्पबहुत्वसङ्ख्या निर्धारिता अस्मिस्तु तया अल्पबहुत्वसङ्ख्या निर्धारितानां जीवानां सत्वानां अमतः प्रभृत्यामरणात् यथास्वायुर्विपर्यासरूपेण व्यवस्थित भवस्थान न चिन्त्यते, अतम स त्स्यपदार्थस्यास्येदमादिम सूत्र-नेरइयाणं भंते । केवइयं कालं ठिइपन्नत्ता इति ॥ नैरयिकाणां भदन्त । कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता तत्र स्थि

चउत्थठिइपयं सम्मत्तं ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

णेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं साग

नैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि अपर्याप्तनैर

हारको महादेव चत्वबहलना पद तोका समासतया इपतोत्त पदे भत्तबहल बोलना बन्ना २० बार प्रज्ञापना भगवती सोधि । २ ।

नेरइयाणं भंते केवतियं कालठिई प । किये पहेलेपद पहेला पर्याप्तअपर्याप्तस्थिति आयुनो कहेछे—नारकीनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही । गो०

जघन्ये दसहजारवर्षनी उ तेत्रीससागरोपमनी । हे गौतम जघन्य थकी दशहजारवर्षनी स्थितिप्रमाणो अपर्याप्त उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपम

यतः सदैव सर्ववेदगतया प्राप्यमानत्वात् तथाकेवलवेदयोऽनुपलब्धेः ८४। तेभ्योऽपि सामान्यतः सूक्ष्माः पर्याप्ता विशेषाधिकाः पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८५। तेभ्यः पर्याप्ताऽपर्याप्तविशेषरहिताः सूक्ष्मा विशेषाधिका अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिकायिकानामपि तत्र प्रक्षेपात् ८६। तेभ्योऽपि भवसिद्धिका भवे सिद्धिर्येषां ते भवसिद्धिका भव्या विशेषाधिका जघन्ययुक्तानन्तकमात्राऽभव्यपरिहारेण सर्वजीवानां प्राप्यत्वात् ८७। तेभ्यः सामान्यतो निगोदजीवा विशेषाधिकाः इह भव्या अभव्या वाऽतिप्राचुर्येण बादरसूक्ष्मनिगोदजीवराशावेव प्राप्यन्ते नाऽन्यत्राऽन्यथा सर्वेषामपि मिलिता नामसंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् अजघन्योत्कृष्टानन्तकसंख्यामात्रपरिमाण एतो भव्यापेक्षया ते किञ्चिन्मात्रा अभव्याः प्राणऽनन्तपरिहारेण चिन्तिता इदानीं तु बादरसूक्ष्मनिगोदचिन्तायां तेऽपि प्रक्षिप्यन्ते इति विशेषाधिकाः ८८। तेभ्यः सामान्यतो वनस्पतिजीवा विशेषाधिकाः प्रत्येकशरीरिणामपि वनस्पतिजीवानां तत्र प्रक्षेपात् ८९। तेभ्यः सामान्यत एकेन्द्रिया विशेषाधिकाः बादरसूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामपि तत्प्रक्षेपात् ९०। तेभ्यः सामान्यतः तिर्यग्योनिका विशेषाधिकाः पर्याप्तापर्याप्तद्वित्रिच

या भवसिद्धिया विसेसाहिया निगोदा जीवा विसेसाहिया वणस्सइजीवा विसेसाहिया एगिंदिया विसेसाहिया तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया मिच्छदिठी विसेसाहिया अविरया विसेसाहिया छउमत्था विसेसाहिया सजोगी विसेसाहिया संसारत्था विसेसाहिया सव्वजीवा विसेसाहिया ॥ पन्नवणाए भगवईए

भवसिद्धिजीवा विससाहिया एगिंदिया विसेसाहिया। वनस्पतिजीव विशेषाधिक एकेन्द्रिय विशेषाधिक। तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया मिच्छदिट्ठी विसेसाहिया। तेहथी तिर्यंचयोनिया विशेषाधिक तेहथी मिथ्यादृष्टि विशेषाधिक। अविरतो विसेसाहिया सवसार विसेसाहिया छउमत्था विसेसा सजोगी विसेसाहिया संसारत्था विसेसाहिया। तेहथी अविरती सम्यग्दृष्टी विशेषाधिक संसार विशेषाधिक छद्मस्थ विशेषाधिक सजोगी विशेषाधिक संसारीजीव विशेषाधिक। सव्वजीवा विसेसाहिया ९८ पन्नवणाए भगवईए अनुक्रमतया पद संपूर्ण। तेहथी सर्वजीव विशेषाधिक विशेषाधिक ९८

तुरिन्द्रियतिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणामपि तत्र प्रक्षेपात् ८१ । तेभ्य चतुर्गतिभाविनो मिथ्यादृष्टयो विशेषाधिका इह कतिपयाविरतसम्यग्दृष्ट्यादिवर्ज्ज्य व्यतिरेकेण शेषाः सर्वेऽपि तिर्यञ्चो मिथ्यादृष्टिविशेषाः चासङ्ख्येयनारकादय तत्र प्रक्षिप्यन्ते तत क्षियज्जीवराश्यपेक्षया चतुर्गतिका मिथ्यादृष्टय विवक्ष्यमाणा विशेषाधिकाः ८२ । तेभ्योऽप्यविरता विशेषाधिका अविरतसम्यग्दृष्टीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेभ्यः सकषायिको विशेषाधिका दे शविरतादीनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८४ । तेभ्यः छद्मस्था विशेषाधिका उपशान्तमोहादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८५ । तेभ्यः सयोगिनो विशेषाधिका सयोगिकेवलिनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८६ । तेभ्य संसारस्था विशेषाधिका अयोगिकेवलिनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८७ । तेभ्य सर्वजीवा विशेषाधि काः सिद्धानामऽपि तत्र प्रक्षेपात ८८ ॥ इतिश्री मलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां बहुवक्तव्याख्यं तृतीय पद समाप्तम् ॥ ३ ॥

व्याख्यातं तृतीयपद मिदानीं चतुर्थमा रभ्यते-तस्य चायमभिसम्बन्धः इहानन्तरपदे दिगनुपातादिनाऽल्पबहुत्वसङ्ख्या निर्द्धारिता अस्ति तु तया अल्पबहुत्वसङ्ख्या निर्द्धारितानां जीवानां सत्त्वामर्तामानतः प्रवृत्यामरणात् प्रमारकादिपर्यायरूपेण अवच्छिन्न भवस्थान न ज्ञायते, अमन स्तद्रूपणायातस्यास्येदमादिम सूत्र-नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिइपण्णत्ता इति ॥ नैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता तत्र स्थि

चउत्थमठिइपद सम्मत्त ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

णेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइं उक्कोसेण तत्तीसं साग

नैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि अपर्याप्तनैर

इसका सन्दर्भक अल्पबहुत्वका पद तीसरा समाप्त हुवा इसतोरे पदे अल्पबहुत्व बोलना कहा २७ वार प्रज्ञापना भगवती सोत्र ॥ ३ ॥

नरइया भंत अहतिय कालठिइ प । किसे चतुर्थपदे चौथा पदबंधपर्याय स्थिति आयुष्यो कहेछे—नारकीनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही । गो

अहणं दसवासहस्साइ उ तित्तीससागरोवमाइ । हे गौतम जघन्य काळो दशहजारवर्षनी स्थितिप्रमाणो अपर्याप्त उत्कृष्टो तत्तीसस गरोपम

यतः सदैव सर्वथैवमुपलतया प्राप्यमाणत्वात्, तथाकेवलवेदसोऽनुपलम्भेः ८४ । तेभ्योऽपि सामान्यतः सूक्ष्माः पर्याप्ता विशेषाधिका अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८५ । तेभ्यः पर्याप्तापर्याप्तविशेषणरहिताः सूक्ष्मा विशेषाधिका अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिकायिकानामपि तत्र प्रक्षेपात् ८६ । तेभ्योऽपि भवसिद्धिका भवे सिद्धिर्येषां ते भवसिद्धिका भव्या विशेषाधिका जघन्ययुक्तानन्तकमात्राऽभव्यपरिहारेण सर्वजीवानां भव्यत्वात् ८७ । तेभ्यः सामान्यतो निगोदजीवा विशेषाधिकाः इह भव्या अभव्या वाऽतिप्राचुर्येण बादरसूक्ष्मनिगोदजीवराशावेव प्राप्यन्ते नाऽन्यत्राऽन्येषां सर्वेषामपि मिलिता नामसंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् अभव्यास्तु युक्तानन्तकसंख्यामात्रपरिमाणाः सन्तो भव्यापेक्षया ते किञ्चिन्मात्रा अभव्यास्तु प्रायोऽल्पपरिहारेण विनिश्चिता इदानींतु बादरसूक्ष्मनिगोदचिन्तायां तेऽपि प्रक्षिप्यन्ते इति विशेषाधिकाः ८८ । तेभ्यः सामान्यतो वनस्पतिजीवा विशेषाधिकाः प्रत्येकशरीरिणामपि वनस्पतिजीवानां तत्र प्रक्षेपात् ८९ । तेभ्यः सामान्यत एकेन्द्रिया विशेषाधिकाः बादरसूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामपि तत्प्रक्षेपात् ९० । तेभ्यः सामान्यत स्तिर्यग्योनिका विशेषाधिकाः पर्याप्तापर्याप्तद्वित्रिच

या भवसिद्धिया विसेसाहिया निगोदा जीवा विसेसाहिया वणस्सइजीवा विसेसाहिया एगिंदिया विसेसाहिया तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया मिच्छादिठी विसेसाहिया अविरया विसेसाहिया छउमत्था विसेसाहिया सजोगी विसेसाहिया ससारत्था विसेसाहिया सब्बजीवा विसेसाहिया ॥ पन्नवणाए भगवईए

वनस्सइजीवा विसेसाहिया एगिंदिया विसेसाहिया । वनस्पतिजीव विशेषाधिक एकेन्द्रिय विशेषाधिक । तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया मिच्छदिठी विसेसाहिया । तेहथी तिर्यंचजोनिया विशेषाधिक तेहथी मिथ्यादृष्टि विशेषाधिक । अविरती विसेसाहिया सकसाइ विसेसाहिया छउमत्था विसेसाहिया सयोगी विसेसाहिया ससारत्था विसेसाहिया । तेहथी अविरती सम्यग्दृष्टि विशेषाधिक सकषाई विशेषाधिक छद्मस्थ विशेषाधिक सयोगी विशेषाधिक संसारीजीव विशेषाधिक । सर्वजीवा विसेसाहिया ९८ पन्नवणाए भगवइए बहुवत्तवया पयं सम्मत्तं । तेहथी सर्वजीव विशेषाधिक सिद्धजीवाथ ९८

केयइय काल ठिई पयात्ता ? गोयमा ! जहणेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण सागरोवम अपज्जत्तरयणप्प
भापुढविणेरइयाण केयइय काल ठिई पयात्ता ? गोयमा । जहणणवि अतोमुहुत्त उक्कोसणवि अतोमु
हुत्त पज्जत्तयरयणप्पभापुढविणेरइयाण भते । केवइय काल ठिई पयात्ता ? गोयमा । जहणेण दसवा
ससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेण सागरोवम अतोमुहुत्तूण । सक्करप्पभापुढविणेरइयाण भते । केव
इय काल ठिई पयात्ता ? गोयमा ! जहणेण एग सागरोवम उक्कोसेण तिण्णि सागरोवमाइ अपज्जत्तय
सक्करप्पभापुढविणेरइयाणं भते ! केवइय काल ठिई पयात्ता ? गोयमा । जहणेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण
वि अतोमुहुत्त पज्जत्तसक्करप्पभापुढविणेरइयाण भते । केयइय काल ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेण साग

थिवीनैरयिकाणां भदन्त । कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तमुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तमुहूर्तं पर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवी नैरयिकाणां भदन्त । कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम । जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तमुहूर्तोनानि उत्कर्षेण सागरोपममन्तर्मुहूर्तोनम् । शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त । कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम । जघन्येनैकं सागरोपममुत्कर्षेण त्रीणि सागरोपमाणि, अपर्याप्तकशर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त । कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम । जघन्यमान्तमुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तमुहूर्त

म । पर्याप्तकनो उत्कृष्टी सागरोपम पर्याप्तक रत्नप्रभामा नारकीनी स्थिति कही छे हे भगवन् । गोयमा जघन्य उ दससागरोपम । शर्करापृथिवी त्रिणसागरोपम । हे गौतम जघन्य एकसागरोपम उत्कृष्ट त्रणसागरोपमनी स्थिति । अपर्याप्तशर्कराप्रभापृथ्वीनैरयिकनी भते के । अपर्याप्ता शर्कराप्रभामा नारकीनी कतनीस्थिति हे भगवन् । गोयमा जघन्य अंतमुहूर्त उ अंतमुहूर्त । हे गौतम जघन्य अंतमुहूर्त उत्कृष्ट अंतमुहूर्त । पर्याप्त शर्कराप्रभापृथ्वीनैरयिकनी भते क । पर्याप्ता शर्कराप्रभापृथ्वीमां नारकीनी स्थिति हे भगवन् केतलीस्थितिकही । गोयमा जघन्य सागरोपम अंतमुहु

पते ऽवस्थीयते अनया ऽऽयुःकर्मानुभूत्येति स्थिति स्थितिरायुःकर्मानुभूति र्जीवनमितिपर्याया यद्यप्यत्र जीवेन मिथ्यात्वादिजितपातामा कमपु

रोयमाइं श्रपज्जत्तणेरइयाण भंते । केवइय कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण श्रंतोमुहुत्त उक्को
सेणवि श्रंतोमुहुत्त पज्जत्तगणेरइयाण भंते । केवइय काल ठिइ पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण दसवासस
हस्साइं श्रंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं श्रंतोमुहुत्तूणाइं रयणप्पभापुढविणेरइयाण भंते !

यिकाणां भदन्त ! कियन्त कालं स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यमान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्त पर्याप्तकनैरयिकाणां कियन्त कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतो दशवर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षत त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्तोनानि रत्नप्रभापृथि वीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतो दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतः सागरोपमम्, अपर्याप्तरत्नप्रभाप

नो स्थिति तमतमा पृथिवीनो पपयाँ । पपज्जत्तम नरयाण भत केवतिय कालंठिर प । पपवींसामारकोनो कतवाकाममोस्थितिकारी । गा अह
नन पतामहत्त बकासवनि पतामहत्त । हेगौतम जघन्येपिच पतर्मुहूर्त्त उत्कर्षेपिच पतमहत्त । पज्जत्तगनेरइयार्थ भते केवतिय कालठिरं प । पर्यामा
नारकोनो कतवाकाममोस्थितिकारी । गा जघन्येन दसवाससहस्राद । हेगौतम जघन्येदशवर्षसहस्र । पतामहत्तु बार उकोसेन तेत्तीससागरोप
माइं पंतामहत्तूणाद । पंतमहत्तऊणी उत्कृष्टोतेत्रीससागरोपम पंतर्मुहूर्तऊणो । रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणभंतेकव । रत्नप्रभा पृथिवीना नारकानी
हेभगवन् कतलाकालोस्थिति । गोयमा जघन्येन दसवाससहस्राद उकोसेन सागरोपमं । हेगौतम जघन्यदशसहस्रवर्ष उत्कृष्टे एकसागरोपम । अपज्ज
त्तरयणप्पभपुढवीनेरइयार्थ भंते के । अपर्यामा रत्नप्रभाना नारकीनो केतलीस्थिति हेभगवन् । गोयमा जघन्येनवि अंतामहत्त उकासेनवि अंतो मुहत्त ।
हेगौतम जघन्येपिच पंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टेपिच पंतर्मुहूर्त्त । पज्जत्तरयणप्पभपुढवीनेरइयार्थ भंते के । पर्यामा रत्नप्रभाना नारकीनो केतलीस्थिति हेभगवन् ।
गोयमा जघन्येन दशवाससहस्राद । हेगौतम जघन्येदशवर्षसहस्र । पंतामुहत्तूणार उकासेन सागरोपमं अंतामुहत्तूण रत्नप्रभपुढवीनेरइयार्थ भंते

केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं सागरोवमं अपज्जत्तरयणप्प भापुढविणेरइयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयरयणप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं । सक्करप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं सागरोवमं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं अपज्जत्तय सक्करप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तसक्करप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेणं साग

थिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तं पर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवी नैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षेण सागरोपममन्तर्मुहूर्तोनम् । शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनैकं सागरोपममुत्कर्षेण त्रीणि सागरोपमाणि, अपर्याप्तकशर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तं

म । पर्याप्तकों की उत्कृष्ट सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम । शर्कराप्रभा नारकों की स्थिति कितने काल की है भगवन् ! गौतम ! जघन्य एक सागरोपम उत्कृष्ट तीन सागरोपम । हे गौतम ! जघन्य एक सागरोपम उत्कृष्ट तीन सागरोपम की स्थिति । अपर्याप्तक शर्कराप्रभा पृथ्वी नैरयिकों की भंते ! । अपर्याप्त शर्कराप्रभा नारकों की स्थिति हे भगवन् ! गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त व अन्तर्मुहूर्त । हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्तक शर्कराप्रभा पृथ्वी नैरयिकों की भंते ! । पर्याप्त शर्कराप्रभा पृथ्वी के नारकों की स्थिति हे भगवन् कितने काल की है । गौतम ! जघन्य सागरोपम अन्तर्मु

पते ऽपर्याप्ते चनया ऽायुःकर्मानुभूतेति स्थितिः स्थितिराय कर्मानुभूति जीवनमितिपर्यायाः। अथाप्यत्र जीवेन मिथ्यात्वादिभिरुपात्तानां कर्मपु

रोवमाइं अपज्जत्तगणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तगणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं रयणप्पभापुढविणेरइयाणं भंते !

यिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तं पर्याप्तकनैरयिकाणां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतो दशवर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतः त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्तोनानि रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतो दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतः सागरोपमम् अपर्याप्तरत्नप्रभापृ

नी स्थिति तमतमा पृथिवीनो अपेक्षाए । अपर्याप्त नैरयिकनी भंते केटली कालनी स्थिति ? । अपर्याप्ता नारकोनी जघन्यथी अंतर्मुहूर्तनी । गौतम ! जघन्यथी अने उत्कृष्टथी पण अंतर्मुहूर्त । हे गौतम ! जघन्यथी पण अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टथी पण अंतर्मुहूर्त । पर्याप्तनैरयिकोनी भंते केटली कालनी स्थिति ? । पर्याप्ता नारकोनी जघन्यथी उत्कृष्टथी । गौतम ! जघन्यथी दसहजार वर्ष । हे गौतम ! जघन्यथी दसहजारवर्ष । अंतर्मुहूर्त न्यून उत्कृष्टथी तेत्रीससागरोपम अंतर्मुहूर्तन्यून । अंतर्मुहूर्त न्यून उत्कृष्ट तेत्रीससागरोपम अंतर्मुहूर्तन्यून । रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिकोनी भंते केटली । रत्नप्रभा पृथिवीना नारकोनी हे भगवन् जघन्यथी स्थिति । गौतम ! जघन्यथी दसहजारवर्ष उत्कृष्टथी सागरोपम । हे गौतम ! जघन्य दसहजारवर्ष उत्कृष्ट एकसागरोपम । अपर्याप्त रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकोनी भंते केटली । अपर्याप्ता रत्नप्रभाना नारकोनी केटली स्थिति हे भगवन् । गौतम ! जघन्यथी पण अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टथी पण अंतर्मुहूर्त । हे गौतम जघन्यथी पण अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टथी पण अंतर्मुहूर्त । पर्याप्त रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकोनी भंते केटली । पर्याप्ता रत्नप्रभाना नारकोनी केटली स्थिति हे भगवन् । गौतम ! जघन्यथी दसहजारवर्ष । हे गौतम ! जघन्य दसहजारवर्ष । अंतर्मुहूर्तन्यून उत्कृष्टथी सागरोपम अंतर्मुहूर्तन्यून रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकोनी भंते

द्रव्याणां प्राणावरवीर्यादिरूपतया परिणतानां यदवस्थानं सा स्थिति रितिप्रसिद्ध तथापि नारकादिव्यपदेशहेतुरायुःकर्मानुभूति स्थापि-यद्यपि नरकगतिपञ्चेन्द्रियजात्यादिनामकर्मोदयाश्रयो नारकत्वपर्याय स्तथापि नारकायुःप्रथमसमयसंवेदनकालएव तन्निबन्धनतारकक्षेत्रमप्राप्तोऽपि नारक स्य व्यपदेशं लभन्ते, तथाच श्रीमीन्द्र प्रवचन-नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ ? गो० ! नेरइए नेरइएसु उवव ज्जइ नो अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ इत्यादि, ततः सैवायु कर्मानुभूति रिह यथाऽऽत्म्युत्पत्त्या स्थिति रभिधीयते इति, अत्र निर्वचनमाह-गो यमेत्यादि ॥ एतच पर्याप्तापर्याप्तविभागाभावेन सामान्यत उक्त यदा तु पर्याप्तापर्याप्तविभागेन चिन्ता तदेदं सूत्र-अपज्जत्तनेरइयाणं भंते । इत्यादि ॥ इहापर्याप्ता द्विविधा लब्ध्या करणैश्च तत्र नैरयिका देवा असंख्येयवर्षायुष्क तिर्यग्मनुष्याः करणैरेवाऽपर्याप्ता न लब्ध्यालब्ध्याऽपर्याप्तकाना तेषु मध्ये उत्पादासम्भवात् तत एते उपपातकालएव करणैः किंयन्त काल मपर्याप्ता द्रष्टव्याः शेषास्तु तिर्यग्मनुष्या लब्ध्या अपर्याप्ता उपपातकाले च, उ क्तञ्च-नारगदेवा तिरियमणु यगब्भया जे असंखवासाउ । एए उ अपज्जत्ता उववाए चेव बोधव्वा ॥ १ ॥ सेसा य तिरियमणुया लद्धिं पप्पोववायकाले य । दुहओ वि य भइयव्वा पज्जत्तियरे य जिणवयणं ॥ २ ॥ अपर्याप्तकाश्च कियन्त उत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्तं मत उक्त-गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥ अपर्याप्ताद्धापगमे च शेषकालः पर्याप्ताद्धा तत उक्त पर्याप्तसूत्रे-गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोव माइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ एतच पृथिव्यऽविभागेन चिन्तितं सम्प्रति पृथिवीविभागेन चिन्तयति-रयणप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! इत्यादि सुग

मा ! जहन्नेणं तिन्नि सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं पकप्प

न्यून त्रीणि सागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतः सप्तसागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्तोनानि । पङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकाणां प्रश्नः । त्रियस्त

हे भगवन् कितना कालनी स्थिति कही छे । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त नो उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त नो कह्यो । पर्यानत्र पकप्पभत्ति । पर्याप्ता पंकप्रभाइपृथिवीना नारकीनो हे भगवन् कितना कालनी स्थिति कही छे । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून सात सागरोपम उत्कृष्ट अन्तर्मुह

रोयमा ! अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । वालुयप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं तिण्णि सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं । अपज्जत्तयवालुयप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयवालुयप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोय

म् । पर्याप्तकशर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तोनं सागरोपमं उत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्तोनानि त्रीणि सागरोपमाणि । वालुकाप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन त्रीणि सागरोपमाणि उत्कर्षतः सप्तसागरोपमाणि । अपर्याप्तकवालुकाप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यमन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकवालुकाप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघ

...न तीन सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम । हे भगवन् जघन्य एक सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम की उत्कृष्ट तीन सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम की । वालुकाप्रभापृ...
...नेरियों की भंते ! वालुकाप्रभा नारकी की कितनी स्थिति हे भगवन् । गौतमा जघन्य तीन सागरोपम की उ सात सागरोपम की । हे गौतम ज...
...घन्य तीन सागरोपम उत्कृष्ट सात सागरोपम । अपर्याप्ता वालुकाप्रभापृथ्वी नेरियों की भंते ! अपर्याप्ता वालुकाप्रभा नारकी की कितनी स्थिति हे भगवन्
...गौतमा जघन्य अंतर्मुहूर्त की अंतर्मुहूर्त । हे गौतम जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त । पर्याप्ता वालुकाप्रभापृथ्वी नेरियों की भंते ! पर्याप्ता वा...
...लुकाप्रभा नारकी की कितनी स्थिति हे भगवन् । गौतमा जघन्य तीन सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम । हे गौतम जघन्य तीन सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम ।
...सात सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम । उत्कृष्ट सात सागरोपम की अंतर्मुहूर्त कम की । पंकप्रभापृथ्वी नेरियों की भंते ! पंकप्रभा नारकी की कितनी स्थिति
...की प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य सात सागरोपम उत्कृष्ट दस सागरोपम की स्थिति कही । अपर्याप्ता पंकप्रभा नारकी

उक्कोसेण सत्तरससागरोवमाइं । अपज्जत्तयधूमप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयधूमप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, तमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं उक्कोसेणं बावीससागरोवमाइं । अपज्जत्तयतमप्पभापुढविनेरइयाणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि । अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयतमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केव

पर्याप्तकधूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दश सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कृष्टतः सप्तदशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि तमःप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन सप्तदशसागरोपमाण्युत्कृष्टतः द्वाविंशतिं सागरोपमाणि । अपर्याप्तकतमःप्रभापृथिवीनैरयिकाणां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकतमःप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन सप्तदश

उत्कृष्ट बावीस सागरोपम नी कही । अपज्जत्तयतमत्ति । अपर्याप्त तमप्रभा पृथिवीना नारकीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही छे ? उत्तर हे गौतम जघन्य स्थिति अन्तमुहूर्त नी उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त नी कही । पज्जत्तयतमत्ति । पर्याप्ता तमप्रभा पृथिवीना नारकीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही छे ? उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून सतरह सागरोपमनी उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त न्यून बावीस सागरोपम नी कही । अहेसत्तमत्ति । अधःसप्तमी पृथिवी ना नारकीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही छे ? उत्तर हे गौतम जघन्य बावीस सागरोपम नी उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपम नी कही । अपज्जत्तय अहेसत्तमत्ति । अपर्याप्त नाम सातमी पृथिवीना नारकीनी केतला कालनी स्थिति कही छे ? उत्तर

ज्जापुढविनेरइयाण भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण सत्तसागरोवमाइं उक्कोसेण दससागरोवमाइं । अपज्जत्तयपंकप्पभापुढविनेरइयाण भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयपंकप्पभापुढविनेरइयाण भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण सत्तसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं धूमप्पभापुढविनेरइयाण भंते ! केव[illegible] कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण दससागरोवमाइं

काल स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन सप्तसागरोपमाणि उत्कर्षतो दशसागरोपमाणि अपर्याप्तकपंकप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतो अन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् पर्याप्तकपंकप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन सप्तसागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतो दशसागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्तोनानि । धूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दश सागरोपमाण्युत्कर्षतः सप्तदश सागरोपमाणि । अपर्याप्तधूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भगवन् ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्त मुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् ।

त न्यून दस सागरोपम की कही । धूमप्पभत्ति । धूमप्रभापृथिवी का नारकीयों हे भगवन् कितना कालकी स्थिति कही है । उत्तर हे गौतम जघन्य दस सागरोपम की उत्कृष्ट सत्तरह सागरोपम की कही । अपज्जत्तय धूमत्ति । अपर्याप्त धूमप्रभा पृथिवीका नारकीयों हे भगवन् कितना काल की स्थिति कही है । उत्तर हे गौतम जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त की कही । पज्जत्तधूमत्ति । पर्याप्त धूमप्रभा पृथिवीका नारकीयों हे भगवन् कितना कालकी स्थिति कही है । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून दश सागरोपम उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम सतरे सागरोपम कही । तमप्पभेत्ति । तमप्रभा पृथिवीका नारकीयों हे भगवन् कितना कालकी स्थिति कही है । उत्तर हे गौतम जघन्य सतरह सागरोपम

समहस्साइं उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं । अपज्जत्तदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा !
जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा !
जहण्णेण दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तऊणियाए । देवीणं
भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइं उक्कोसेण पणपन्नपलिओवमाइं । अपज्ज-
त्तगदेवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं
पज्जत्तयदेवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं

गरोपमाणि । अपर्याप्तदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकदेवा-
नां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि अन्तर्मु-
हूर्तोनानि । देवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षेण पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमानि, अप-
र्याप्तकदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तदेवीनां भदन्त ! कि-

---

पिण अन्तर्मुहूर्त नी कही । अपज्जत्तदेवाश्रित । पर्याप्ता देवतानी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त
ऊन दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त ऊन तेत्रीस सागरोपम नी कही । देवीय आश्रित । देवीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही
प्रश्न । उत्तर हे गौतम जघन्य दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट पचावन ५५ पल्योपमनी कही । अपज्जत्तदेवीआश्रित । अपर्याप्ता देवीनी हे भगवन् केतला
कालनी स्थिति कही प्रश्न । उत्तर हे गौतम जघन्य पिण अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त नी कही । पज्जत्तदेवीआश्रित । पर्याप्ता देवीनी हे भगवन्
केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त ऊन दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त ऊन ५५ पचावन पल्योपम नी क-

इय काल ठिइ पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण सतरसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण बावीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । अहे सत्तमपुढविनेरइयाण भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण बावीस सागरोवमाइं उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं । अपज्जत्तयअहेसत्तमपुढविनेरइयाण भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयअहेसत्तमपुढविनेरइयाण भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण बावीससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ देवाण भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण दसवा

सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनान्युत्कर्षतो द्वाविंशति सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । अधःसप्तमापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन द्वाविंशतिः सागरोपमाण्युत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । अपर्याप्तकाधःसप्तमापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकाधःसप्तमापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन द्वाविंशतिः सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । देवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सा

हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त की कही । पश्न अधःसप्तमभूमि । पर्याप्त नीच सातवी पृथिवी के नारकीयों की हे भगवन् कितना कालकी स्थिति कही है । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून बावीस सागरोपम उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त न्यून तेतीस सागरोपम की प्ररूपी देवार्थ मतोनि । देवताओं की हे भगवन् कितना कालकी स्थिति कही है । उत्तर हे गौतम जघन्य दस हजार वर्षकी उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की प्ररूपा । अपज्जत्तदेवाणवि । अपर्याप्त देवताओं की हे भगवन् कितना कालकी स्थिति प्ररूपी है । उत्तर हे गौतम जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट

ससहस्साइं उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं । अपज्जत्तदेवाण ज्ञते ! केवइय काल ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तदेवाण ज्ञते ! केवइय काल ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तऊणियाए । देवीण ज्ञते । केवइय काल ठिई प० ? गोयमा । जहण्णेण दसवाससहस्साइं उक्कोसेण पणपन्नपलिओवमाइं । अपज्जत्तदेवीण ज्ञत ! केवइय काल ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयदेवीण ज्ञते ! केवइय काल ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं

गरोपमाणि । अपर्याप्तदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्तोनानि । देवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमानि, अपर्याप्तकदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तदेवीनां भदन्त ! कि

पिण अन्तर्मुहूर्त नी कही । अपज्जत्तदेवापति । पर्याप्ता देवतानो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त ऊन दश हजार वर्षनो उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त ऊन तेत्रीस सागरोपम नी कही । देवीण भंतेत्ति । देवीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न । उत्तर हे गौतम जघन्य दस हजार वर्षनो उत्कृष्ट पचावन ५५ पल्योपमनी कही । अपज्जत्तदेवीपति । अपर्याप्ता देवीनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न । उत्तर हे गौतम जघन्य पिण अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त नी कही । पज्जत्तदेवीपति । पर्याप्ता देवीनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त ऊन दस हजार वर्षनो उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त ऊन ५५ पचावन पल्योपम नो क

उक्कोसेणं पणपन्नपलिउवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । भवणवासीण भंते ! देवाण केवइय काल ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण दसवाससहस्साइं उक्कोसेण सातिरेगं सागरोवमं । अपज्जत्तयभवणवासीण भंते ! देवाण केवइय काल ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयभवणवासीण भंते ! देवाण केवइय काल ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण सातिरेगं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं । भवणवासिणीण भंते ! देवीण केवइय काल ठिई प०

यन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तोनानि दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि ॥ भवनवासिदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतः सातिरेकं सागरोपमम् । अपर्याप्तकभवनवासिदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकभवनवासिदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतः सातिरेकं सागरोपममन्तर्मुहूर्तोनम् । भवनवासिनीनां देवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतः अर्द्धपञ्चमानि

की । भवनवासीन भणंति । भवनवासी देवताओ हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न । उत्तर गौतम जघन्य थी दशहजार वर्षनी उत्कृष्ट थी सातिरेक सागरोपम कही । अपज्जत्तभवणवासीणंति । अपर्याप्त भवनवासी देवताओ केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर गौतम जघन्य था पिण अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तभवणवासीणंति । पर्याप्त भवनवासी देवताओ हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर गौतम जघन्य थी दश हजार वर्षनी अन्तर्मुहूर्त न्यून उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त न्यून सातिरेक सागरोपम । भवणवासिणीणंति । भवनवासि देवीनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट थी साढा चार पल्योपम नो कह्यो । अपज्जत्तिया

? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइं उक्कोसेण अद्धपंचमाइं -। पलिओवमाइं अपज्जत्तियाणं भंते !
भवणवासिणीणं देवीणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमु
हुत्तं । पज्जत्तियाणं भंते ! भवणवासिणीणं देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण दसवा
ससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । असुरकुमाराणं भंते !
देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइं उक्कोसेण साइरेगं सागरोवमं
अपज्जत्तयअसुरकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं

(सार्धानि) पल्योपमानि । अपर्याप्तभवनवासिदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यमाप्यन्तर्मुहूर्तं मुत्कर्षेणाप्य
न्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तभवनवासिदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतो
ऽर्धपञ्चमानि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि ॥ असुरकुमाराणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतो दशवर्षसहस्राण्युत्क
र्षतः सातिरेकं सागरोपमम् । अपर्याप्तासुरकुमारदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यमाप्यन्तर्मुहूर्त मुत्कर्षतो

प भवनवासिनीओंकी । अपर्याप्त भवनवासि देवीओंकी हे भगवन् कितना कालकी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो पिण अन्तमुहूर्त उत्कृष्ट
तो पिण अन्तर्मुहूर्त कही । पर्याप्ताकी भवनवासिनीओंकी । पर्याप्त भवनवासी देवीओंकी हे भगवन् कितना कालकी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम
जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त न्यून दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तो अन्तर्मुहूर्त न्यून साढा चार पल्योपम की कही । असुरकुमारकी अधिकार । असुरकुमार देवताओं
की हे भगवन् कितना कालकी स्थिति कही प्र० उ० हे गौतम जघन्य दश हजार वर्षकी उत्कृष्ट तो सातिरेक सागरोपम की कही । अपर्याप्ता असुरकुमारा
की । अपर्याप्ता असुरकुमार देवताओं की हे भगवन् कितना कालकी स्थिति कही प्र० उत्तर गौतम जघन्य तो पिण अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पिण अन्तमुहूर्त

उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्त। पज्जत्तयअसुरकुमाराण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण दसवाससहस्साइ अन्तोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेण सातिरेग सागरोवम अन्तोमुहुत्तूण। असुरकुमारीण भंते ! देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण अद्धपंचमाइं पलिओवमाइ। अपज्जत्तियाण असुरकुमारीण भंते ! देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणवि अन्तोमुहुत्त उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्त। पज्जत्तियाण असुरकुमारीण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गो

प्यन्तमु हूर्तम्। पर्याप्तकासुरकुमाराणां देवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तमुहूर्तोनानि दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतः सातिरेकं सागरोपममन्तमुहूर्तोनम्। असुरकुमारदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतोऽर्धपञ्चमानि पल्योपमानि। अपर्याप्तकासुरकुमारदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तमुहूर्तम्। पर्याप्ता सुरकुमारदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तमु

की कही। पर्याप्त असुरकुमाराधिकार। पर्याप्त असुरकुमार देवताओं के भगवन् कितना कालकी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त न्यून दश हजार वर्षकी उत्कृष्ट तो अन्तर्मुहूर्त न्यून कुछ अधिक सागरोपम कही। असुरकुमारीके भले देवीअधि। असुरकुमार देवीओं के भगवन् कितना कालकी स्थिति कही प्र उत्तर हे गौतम जघन्य दश हजार वर्षकी उत्कृष्ट साढे चार पल्योपमकी कही। अपर्याप्तसाव असुरकुमारीअधिकार। अपर्याप्त असुरकुमारदेवीओं के भगवन् कितना आयु कहा प्र उ० हे गौतम जघन्य तो भी अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट तो भी अन्तर्मुहूर्त का। पर्याप्तियाव असुरकुमारीअधि। पर्याप्ता असुरकुमारकी देवीओं कितना आयु कहा प्र उ हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त न्यून दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तो अन्तर्मुहूर्त न्यून साढे चार पल्योपमकी कही। नागकुमाराधिकार देवाधिक। नागकुमार देवताओं के भगवन् कितना आयु कहा प्र उ० हे गौ

यमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । नागकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं दोण्णि पलिओवमाइं देसूणाइं । अपज्जत्तयाणं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं दोण्णि पलिओवमाइं देसूणाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं

हूर्तोनान्युत्कर्षतोऽर्धपञ्चमानि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि । नागकुमाराणां भदन्त ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतो दशोने द्वे पल्योपमे । अपर्याप्तकनागकुमाराणां भगवन् ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकानां भदन्त ! नागकुमाराणां देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनान्युत्कर्षतो देशोने द्वे पल्योपमेऽन्तर्मुहूर्तोने । नागकुमारीणां भदन्त ! देवीनां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतो (दशोन ऊन) दशोन (किञ्चिन्न्यून) पल्योपमम् । अपर्याप्तकनागकुमारीणां भदन्त ! देवीनां कियन्तं

जघन्य तो दसहजार वर्ष उत्कृष्ट तो देशोन दोय पल्योपम कही । अपर्याप्ता नागकुमारों की । अपर्याप्त नागकुमार देवताओं की हे भगवन् कितनी आयु कही प्र० उ० जघन्य तो भी अन्तर्मुहूर्त कही उत्कृष्ट तो भी अन्तर्मुहूर्त कही । पर्याप्ता नागकुमारों की । पर्याप्त नागकुमार देवताओं की हे भगवन् कितनी आयु कही प्र० उ० हे गौ० जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून दसहजार वर्ष उत्कृष्ट देशोन दोय पल्योपम उतनी अन्तर्मुहूर्त न्यून दोय पल्योपम कही नागकुमारी की । नागकुमारी देवी की भग० कितनी आयु कही प्र० उ० हे गौ० जघन्य दसहजार वर्ष की उत्कृष्ट देशोन पल्योपम । अपर्याप्ता नागकु

दसवाससहस्साइं उक्कोसेण देसूण पलिओवमं । अपज्जत्तियाणं नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तियाणं नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं । सुवण्णकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणपुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्को

काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतोऽप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकनागकुमारीणां भदन्त ! देवीनां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतो देशोनं पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनम् ॥ सुवर्णकुमाराणां भगवन् ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतो द्वे पल्योपमे देशोने । अपर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्यतोऽप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतो देशोने द्वे पल्योपमेऽन्तर्मुहूर्तोने । स

माराचांत । अपर्याप्त नागकुमार देवोना हे भगवन् केटला आयु कह्या प्र० उ० हे गो० जघन्य पिण अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्तिवान्त नागकुमारीना । पर्याप्त नागकुमारी देवीना हे भगवन् केटला आयु कह्या प्र० उ० हे गो० जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून दशहजार वर्षना उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त न्यून देशोन पल्योपम । सुवर्णकुमारानेविषे । सुवर्णकुमार देवतानो केटलो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो दशहजार वर्ष उत्कृष्ट तो देशोन दोय पल्योपम । अपर्याप्तिवान पृच्छा, अपर्याप्त सुवर्णकुमारना प्र० चोथा उत्तर हे गौतम जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्त वान पृच्छा । पर्याप्तना प्र० चोथा उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त न्यून दशहजारवर्ष उत्कृष्ट तो अन्तर्मुहूर्त न्यून देशोन दोय पल्योपम । सुव

सेण दो पलिओवमाइं देसूणाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। सुवण्णकुमारीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवा ससहस्साइं उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं। अपज्जत्तियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अं तोमुहुत्तं। पज्जत्तियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, एवं एएणं अभिलावेणं ओहियअपज्जत्तपज्जत्तसुत्तत्तयं देवाण देवीणय णेयव्वं जाव थणियकुमाराणं जहा नागकुमाराणं। पुढविकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गो० ! जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं। अपज्जत्तयपुढविकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गो० !

पर्णकुमारदेवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतो देशोनं पल्योपमम्। अपर्याप्तकसुपर्णकुमारदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्तकसुपर्णकुमारदेवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतो देशोनं पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनम्। एवमनेनाभिलापेनौघिकापर्याप्तपर्याप्तसूत्रत्रयं देवानां देवीनाञ्च ज्ञातव्यं यावत्स्तनितकुमाराणां यथा नागकुमा राणाम्॥ पृथिवीकायिकानां भदन्त ! कियत्कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि। अपर्याप्त

[illegible] पृच्छा। [illegible] कितनी कही है ? हे गौतम जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट देशोन पल्योपम। अपर्याप्तिया की पृच्छा। पर्याप्त सुवर्णकुमार [illegible] हे गौतम जघन्य तो [illegible] अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट भी [illegible] अन्तर्मुहूर्त। पर्याप्तिया की पृच्छा। पर्याप्त सुवर्णकुमारनी [illegible] कितनी कही है ? हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तो अन्तर्मुहूर्त न्यून देशोन पल्योपम इस प्रकार [illegible] [illegible] पर्याप्त २ पर्याप्त २ सूत्र तीन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नागकुमार की कही तिस [illegible]। पृथिवीकायिक की [illegible] हे भगवन् कितनी आयु कही है ? हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष। अपर्याप्त पुढविकाइयाणंके। अपर्याप्त पृथिवीकायको

जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयपुढविकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सुहुमपुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं अपज्जत्तयसुहुमपुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयसुहुमपुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । बादरपुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं । अपज्जत्तयबादरपुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ।

पृथिवीकायिकानां भदन्त ! कियत्कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्यतोऽप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकपृथिवीकायिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तं उत्कर्षतो द्वाविंशतिवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतोऽप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । अपर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्यतोऽप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । बादरपृथिवीकायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्त

हे भगवन् कितना आयु कही प्रश्न उत्तर हे गौतम ! जघन्य तो भिन्न अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो भिन्न अन्तर्मुहूर्त का कहा । पज्जत्तपुढविकाइयाणंति । पर्याप्त पृथिवीकाय का हे भगवन् कितनी आयु कहा प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो अन्तर्मुहूर्त न्यून २२ हजार वर्ष की कही । सुहुमपुढविकाइयाणंति । सूक्ष्मपृथिवीकाय का प्रश्न पूछा उत्तर हे गौतम जघन्य तो भिन्न उत्कृष्ट तो भिन्न अन्तर्मुहूर्त का । अपज्जत्तसुहुम । अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक का प्र पूछा उत्तर हे गौतम जघन्य तो भिन्न उत्कृष्ट तो भिन्न अन्तर्मुहूर्त की । पज्जत्तसुहुमंति । पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिक का प्र पूछा उत्तर हे गौतम जघन्य तो भिन्न उत्कृष्ट तो भिन्न अन्तर्मुहूर्त का । बादरपुढविकाइयाणंति । बादरपृथिवीकायका प्र पूछा उत्तर हे

पज्जत्तयबादरपुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण बावीसं वाससहस्साइं अं-
तोमुहुत्तूणाइं । आउकाइयाण भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसे-
ण सत्तवाससहस्साइं । अपज्जत्तयआउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहु-
त्तं । पज्जत्तयआउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण सत्तवाससहस्साइं अंतो-
मुहुत्तऊणिआइं । आउकाइयाण ओहियाण अपज्जत्तयाण पज्जत्तयाण जहा सुहुमपुढविकाइयाण तहा भा

मुहूर्तमुत्कर्षतो द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकबादरपृथिवीकायिकानां पृच्छा गौतम । जघन्यमाप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकबादरपृथिवीकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यमन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो द्वाविंशतिवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि ॥ अप्कायिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः सप्तवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकाप्कायिकानां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षताप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकाप्कायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्यमन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः सप्तवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । अप्का

गोतम जघन्य तो अंतमुहूर्त्त ना उत्कृष्ट तो बावीसहजारवर्ष ना । अपज्जत्तयबादरपुढविकायिकानीपति । अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिक नी प्रश्न कीधा उत्तर के गोतम जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अंतर्मुहूर्त ना । पज्जत्तबादरपुढविति । पर्याप्त बादरपृथिवीकायिक ना प्र कीधो उत्तर के गोतम जघन्य तो अंतमुहूर्त नो उत्कृष्ट तो अंतमुहूर्त ऊन बावीसहजार वर्ष नो । आउकाइयाणं भंते त्ति । अप्कायिक नो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्र उत्तर हे गोतम जघन्य तो अंतर्मुहूर्त ना उत्कृष्ट तो सातहजारवर्ष नो । अपज्जत्तयआउकाइयाणंति । अपर्याप्ताप्कायिक नो प्र कीधा उत्तर के गोतम जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अंतमुहूर्त नो कह्यो । पज्जत्तय आउकाइयाणंति । पर्याप्त अप्कायिक नो प्र कीधो उत्तर हे गोतम जघन्य तो अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो सातहजारवर्ष अंतर्मुहूर्त ऊन । आउकाइयाणं आहियाणंति । अप्कायिक औधिक १ अपर्याप्त २ पर्याप्तने जिम स

णियस्स । बादरआउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण सत्तवाससहस्साइं अपज्ज त्तयबादरआउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण सत्तवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । तेउकाइयाण भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिन्नि राइंदियाइं । अपज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं

यिकानामौघिकानामपर्याप्तकानां पर्याप्तकानां यथा सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां "भणितं" तथा भणितव्यम् । बादराप्कायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्यमन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः सप्तवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तबादराप्कायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तं । पर्याप्तकानां पृच्छा , गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः सप्तवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । तेजस्कायिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्यनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि रात्रिंदिवानि । अपर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्यमन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि रात्रिंदिवानि अन्तर्मुहूर्तोनानि । सूक्ष्मतेजस्कायिकानां पृच्छा , गौतम ! जघन्ये

त्म पृथिवी कायिक कह्या तिम कहवा । बादरआउकायार्थवि । बादर अप्कायिकना प्र कोधा उ गोतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो सात हजारवर्ष नो कह्या । अपज्जत्तबादर आउकायाचति । अपर्याप्तबादर अप्कायिक ना प्रश्न उत्तर हे गोतम जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तयाचति । पर्याप्तक ना प्र कोधा उत्तर हे गोतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष तो सातहजारवर्ष अन्तर्मुहूर्त ऊण कह्या । तेउकाइयाचति । तेजस्काय ना प्र कोधा उत्तर हे गोतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष तो तीन अहोरात्र । अपज्जत्तियाचति । अपर्याप्त तेजस्कायिक ना प्र कोधा उ हे गोतम जघन्य तो पिण उत्कर्ष तो पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तियाचति । पर्याप्त तेजस्कायिक ना प्र० कोधा उ हे गोतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त ना ऊण

उक्कोसेणं तिण्णि राइंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सुहुमतेउकाइयाणं पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । अपज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमाणं पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । बादरतेउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि राइंदियाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा, ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि राइंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । वाउकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं । अपज्जत्तयवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्ने

नाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । अपर्याप्तपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । बादरतेजस्कायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि रात्रिदिवानि । अपर्याप्तकबादरतेजस्कायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् पर्याप्तकबादरतेजस्कायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि रात्रिदिवानि अन्तर्मुहूर्तोनानि । वायुकायिकानां

न की तीन रात्रिदिन । सूक्ष्मतेजकायाधिकार । सूक्ष्मतेजस्कायिक की प्र० पृच्छा उत्तर हे गौतम जघन्य भी पिण उत्कृष्ट भी पिण अन्तर्मुहूर्त की कही । अपज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमाणं । अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक की प्र० पृच्छा उत्तर हे गौतम जघन्य भी पिण उत्कृष्ट भी पिण अन्तर्मुहूर्त की । बादरतेउकायाधिकार । बादरतेजस्काय की प्र० पृच्छा उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन अहोरात्र । अपज्जत्तयाधिकार । अपर्याप्त बादरतेजस्काय की प्र० पृच्छा उत्तर हे गौतम जघन्य भी पिण उत्कृष्ट भी पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्ताधिकार । पर्याप्त बादर तेजस्काय की प्र० पृच्छा उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो तीन रात्रिदिन अन्तर्मुहूर्त कम । वाउकायाधिकार । वायुकायिक की हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही । गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त नो उत्कृष्ट तो तीन हजारवर्ष नो । अपज्जत्तवाउकायाधिकार । अपर्याप्त वायुकायिक की प्र० पृच्छा उत्तर हे गौतम जघ

णयि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सुहुमवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । अपज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । बादरवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं । अपज्जत्तबादरवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसे

पृच्छा गौतम ! जघन्यमन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकवायुकायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि ॥ सूक्ष्मवायुकायिकानां पृच्छा गौतम ! ज घन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । अपर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्यतोऽप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येना प्युत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम् । बादरवायुकायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राणि । अपर्याप्तबादरवायुकायि

न्य भी फिर उत्कृष्ट भी फिर अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्ताणवति । पर्याप्त वायुकायमा प्रश्न कीया उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो तीनहजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त ऊन । सुहुमवाउकाइयाणवति । सूक्ष्मवायुकाय मा प्रश्न कीया उ हे गौतम जघन्य भी फिर उत्कृष्ट भी फिर अन्तर्मुहूर्त । अपज्जत्तयाण ति । अपर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिक मा प्रश्न कीया उत्तर हे गौतम जघन्य भी फिर उत्कृष्ट भी फिर अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तयाणवति । पर्याप्त सूक्ष्मवायुकाय मा प्रश्न कीया उत्तर हे गौतम जघन्य भी फिर उत्कृष्ट भी फिर अन्तर्मुहूर्त । बादर वाउकाइयाणवति । बादर वायुकाय मी प्रश्न कीया उत्तर हे गौतम ज घन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीनहजारवर्ष मा । अपज्जत्तबादरवाउकाइयाणवति । अपर्याप्तबादर वायुकायिक मा प्र कीया उत्तर हे गौतम जघन्य भी फिर उत्कृष्ट भी फिर अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तबादर वायु । पर्याप्तबादर वायुकाय मा प्रश्न कीया उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो तीन

णवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयबादरवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । वणस्सइकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सुहुमवणस्सइकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्तापज्जत्ताणय अंतोमुहुत्तं । बादरवणस्सइकाइयाणं

काना पृच्छा गौतम ! जघन्यमप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तबादरवायुकायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि ॥ वनस्पतिकायिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यमप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तवनस्पतिकायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानामौघिकानामपर्याप्तपर्याप्तकानां चान्तर्मुहूर्तम् ॥ बादरवनस्पतिकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्यमप्युत्कर्षतोऽप्यन्त

हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त ऊन । वनस्पतिकायाधिकार । वनस्पतिकाय को हे भगवन् कितना कालनी स्थिति कही ? हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश हजार वर्षनी । अपर्याप्तनिकाय पुच्छा । अपर्याप्त वनस्पतिकाय ना प्रश्न कीधा उत्तर हे गौतम जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अन्तर्मुहूर्त पर्यन्तस्थायी । पर्याप्त वनस्पतिकाय ना प्र० कीधा उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो दशहजारवर्ष अन्तर्मुहूर्त ऊन । सूक्ष्मवनस्पतिकायस्थिति । सूक्ष्मवनस्पतिकायिक औधिक अपर्याप्त पर्याप्त नो अन्तर्मुहूर्त ना आयु कह्या । बादरवनस्पतिकायस्थिति । बादरवनस्पतिकाय ना प्र० कीधा उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट दशहजारवर्ष ना कह्या । अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायस्थिति । अपर्याप्त बादर वनस्पतिकाय ना प्र०

णवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिन्नि वा
ससहस्साइं अंतोमुहुत्तमूणाइं । सुहुमवाउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमु
हुत्तं । अपज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाण पुच्छा ? गो
यमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । बादरवाउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहु
त्तं उक्कोसेण तिन्नि वाससहस्साइं । अपज्जत्तबादरवाउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसे

पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकवायुकायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त म । पर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । सूक्ष्मवायुकायिकानां पृच्छा गौतम ! ज घन्यतोऽप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । अपर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्यतोऽप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येना प्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । बादरवायुकायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राणि । अपर्याप्तबादरवायुकायि

न्य की स्थिति उत्कृष्ट की स्थिति अन्त मुहूर्त । पर्याप्तावति । पर्याप्त वायुकाय का प्रश्न पोछा उत्तर हे गौतम जघन्य का अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट या तीन हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम । सूक्ष्मवायुकायावति । सूक्ष्मवायुकाय का प्रश्न पोछा उ हे गौतम जघन्य की स्थिति उत्कृष्ट की स्थिति अन्तर्मुहूर्त । अपज्जतिवाय ति । अपर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिक का प्रश्न पोछा उत्तर हे गौतम जघन्य की स्थिति उत्कृष्ट की स्थिति अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तावति । पर्याप्त सूक्ष्मवायुकाय का प्रश्न पोछा उत्तर हे गौतम जघन्य की स्थिति उत्कृष्ट की स्थिति अन्तर्मुहूर्त । बादर वाउकायावति । बादर वायुकाय की प्रश्न पोछा उत्तर हे गौतम ज घन्य की अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष का । अपज्जत्तबादरवाउकायावति । अपर्याप्तबादर वायुकायिक का प्र पोछा उत्तर हे गौतम जघन्य की स्थिति उत्कृष्ट की स्थिति अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तबादर वायु । पर्याप्तबादर वायुकाय का प्रश्न पोछा उत्तर हे गौतम जघन्य की अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट की तीन

णवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयबादरवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । वणस्सइकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सुहुमवणस्सइकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्तापज्जत्ताणय अंतोमुहुत्तं । बादरवणस्सइकाइयाणं

कानां पृच्छा गौतम ! जघन्यतोऽप्युत्कृष्टतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तबादरवायुकायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्यमन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । वनस्पतिकायिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्यमन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतोऽप्युत्कृष्टतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकवनस्पतिकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानामौघिकानामपर्याप्तपर्याप्तकानामन्तर्मुहूर्त्तम् । बादरवनस्पतिकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्यतोऽप्युत्कर्षतश्चान्त

हजारवर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊण । वणस्सइकाइयाणंति । वनस्पतिकाय ना हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही । हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट दश हजार वर्षनी । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । अपर्याप्त वनस्पतिकाय ना प्रश्न कीधा उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त पज्जत्तयाणंति । पर्याप्त वनस्पतिकाय ना प्र० कीधा उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी दशहजारवर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊण । सुहुमवणस्स- इकाइयाणंति । सूक्ष्मवनस्पतिकायिक ओघिक अपर्याप्त पर्याप्त ना अन्तर्मुहूर्त्त ना आयु कह्या । बादरवणस्सइकाइयाणंति । बादरवनस्पतिकाय ना प्र० कीधा उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट दशहजारवर्ष ना कह्या । अपज्जत्तबादरवणस्सइकाइयाणंति । अपर्याप्त बादर वनस्पतिकाय ना प्र०

पुच्छा ? गो० ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण दसवाससहस्साइं । अपज्जत्तयबादरवणस्सइकाइयाण पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयबादरवणस्सइकाइयाण पुच्छा ? गो० ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । बेइंदियाण भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गो० ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण बारस संवच्छराइं । अपज्जत्तयबेइंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयबेइंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण बारस संवच्छराइं अंतोमुहुत्तूणाइं । तेइंदियाण भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं

मुहूर्तम् । पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । द्वीन्द्रियाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो द्वादश संवत्सराणि । अपर्याप्तद्वीन्द्रियाणां पृच्छा गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तद्वीन्द्रियाणां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो द्वादश संवत्सराण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । त्रीन्द्रियाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षत एकोनपञ्चाशद्रात्रिदिवानि । अपर्याप्तत्रीन्द्रियाणां भदन्त !

काया हे गौतम जघन्य तो भिन्न उत्कृष्ट तो भिन्न अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्तबादर वनस्पतिकायानी पृच्छा । पर्याप्त बादर वनस्पतिकाय ना प्र० पूछ्या उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो दशहजारवर्ष ना अन्तर्मुहूर्त ऊण । बेइन्द्रियानी पृच्छा । बेइन्द्रियनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो बारेवर्ष । अपर्याप्ता बेइन्द्रियानी पृच्छा । अपर्याप्त बेइन्द्रिय ना प्र० पूछ्या उत्तर हे गौतम जघन्य भी भिन्न अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो भिन्न अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्ता बेइन्द्रियानी पृच्छा । पर्याप्त बेइन्द्रिय ना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो बारे वर्ष अन्तर्मुहूर्त ऊण । तेइन्द्रियानी पृच्छा । तेइन्द्रियनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो ओगण

उक्कोसेण एगूणवण्णराइंदियाइं । अपज्जत्ततेइंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्ततेइंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! अंतोमुहुत्तं जहन्नेण उक्कोसेण एगूणवण्णराइंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । चउरिंदियाण भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण छम्मासा । अपज्जत्तयचउरिंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयचउरिंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण छम्मासा अंतोमुहुत्तूणा । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइं ।

पृच्छा गौतम ! जघन्येनोत्कर्षत अन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तत्रीन्द्रियाणां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षत एकोनपञ्चाशद्रात्रिंदिवानि अन्तर्मुहूर्तोनानि । चतुरिन्द्रियाणां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः षण्मासाः । अपर्याप्तकचतुरिन्द्रियाणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकचतुरिन्द्रियाणां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः षण्मासा अन्तर्मुहूर्तोनाः ॥ पञ्चेन्द्रिय

चास अहोरात्र । अपज्जत्ततेइंदियाणंति । अपर्याप्त तेरिंद्रिय का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्ततेइंदियाणंति । पर्याप्त तेरिंद्रिय का प्र० पीछा उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो उगुणपचास अहोरात्र अन्तर्मुहूर्त ऊन । चउरिंदियाणंति । चौरिंद्रियनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो छ मासनी कही । अपज्जत्तयचउरिंदियाणंति । अपर्याप्त चतुरिंद्रियनो केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अन्तर्मुहूर्त कही । पज्जत्तचउरिंदियाणंति । पर्याप्त चौरिंद्रीनो केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो अन्तर्मुहूर्त न्यून छ मास । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणंति । पंचेंद्रियतिर्यंच योनिकनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो तीन पल्यो

अपज्जत्तपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं , पज्जत्तपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तयसम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयसम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उ

तिर्यग्योनिकानां प्रश्नः । कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्यतोऽप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि । सम्मूर्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः । अपर्याप्तकसम्मूर्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्यतोऽप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तसम्मूर्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्तोना । गर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्त

म । [illegible] । अपर्याप्त पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य भी भिन्न उत्कृष्ट भी भिन्न अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्तपंचेंद्रियत । पर्याप्त पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त-उत्कृष्ट भी तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून । सम्मूर्छिमपंचेंद्रियति[illegible] । सम्मूर्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक का प्र० चौथा उत्तर हे गौतम जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट भी पूर्वकोटि । अपर्याप्तकसम्मूर्छिति । अपर्याप्त सम्मूर्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य भी भिन्न उत्कृष्ट भी भिन्न अन्तर्मुहूर्त । [illegible] । पर्याप्त सम्मूर्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त न्यून पूर्वकोटि । [illegible] । गर्भव्युत्क्रान्तिक

क्कोसेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमूणा। गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा? गो०! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं। अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणवि अंतोमुहुत्त उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त। पज्जत्तगगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी। अपज्जत्तजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त। पज्जत्तयज

मुहूर्तमुत्कर्षतः त्रीणि पल्योपमानि। अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम! जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम! जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः त्रीणि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि। जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः। अपर्याप्तजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम! जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्तजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्ता

पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिकना प्र० उ० गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो तीन पल्योपम। अपज्जत्तगब्भवक्कंतियत्ति। अपर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकना प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो उत्कृष्ट तो पिण अन्तर्मुहूर्त। पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिक पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिकना प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त ऊन। जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिय त्ति। जलचरपंचेंद्रिय तिर्यंच योनिकना हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो पूर्वकोडी। अपज्जत्त जलयरपंचिंदिय त्ति। अपर्याप्त जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक ना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अन्तर्मुहूर्त ना। पज्जत्तयचंदिय त्ति। पर्याप्त जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक नी

अपज्जत्तपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तपं
चिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतो
मुहुत्तूणाइं। सम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं
पुव्वकोडी। अपज्जत्तयसम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि
अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयसम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उ

तिर्यग्योनिकानां प्रश्नः। कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि। अपर्याप्तकपञ्चेन्द्रियति
र्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्तपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्क
र्षतस्त्रीणि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि। सम्मूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः। अप
र्याप्तकसम्मूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्तसम्मूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृ
च्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्तोना। गर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्त

पम। अपर्याप्त पंचेंद्रियकी। अपर्याप्त पंचेंद्रिय तिर्यंच आश्रित का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो भिन्न उत्कृष्ट तो भिन्न अन्तर्मुहूर्त। पर्याप्त पंचेंद्रिय
ति। पर्याप्त पंचेंद्रिय तिर्यंच आश्रित का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून। समूर्छिम पंचेंद्रियति
रिच्छ आश्रित की। समूर्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच आश्रित का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो पूर्व क्रोड़। अपर्याप्तक समूर्छि
मकी। अपर्याप्त समूर्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो भिन्न उत्कृष्ट तो भिन्न अन्तर्मुहूर्त। पर्याप्तक समूर्छिमकी। पर्याप्त समू
र्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच आश्रित का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो अन्तर्मुहूर्त न्यून पूर्व क्रोड़। गर्भजकी तिर्यंच। गर्भव्युत्क्रान्तिक

णियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अन्तोमुहुत्तूणा । चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं अपज्जत्तयचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तयचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं । सम्मुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा,

---

र्भव्युत्क्रान्तिकजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्त्तोना पूर्वकोटिः । चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तचतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सम्मूर्छिमचतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षत चतुरशीतिवर्ष

र्भज जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियनि । पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोड़ । चउप्पय थलयरपंचिंदियतिरिक्खनि । चतुष्पदस्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक को प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो तीन पल्योपम अपज्जत्तचउप्पयथलयरपंचिंदियनि । अपर्याप्त चतुष्पदस्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तयचउप्पयथलयरपंचिंदियनि । पर्याप्त चतुष्पदस्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो

लयरपञ्चिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी अंतोमुहु-त्तूणा । सम्मूच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तसम्मूच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । गब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी । अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजो-

---

मा । सम्मूर्च्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण पूर्वकोटिः । अपर्याप्तसम्मूर्च्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनोत्कर्षेणान्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तसम्मूर्च्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्तोना । गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण पूर्वकोटिः । अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षेणान्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तगर्भव्यु-

---

उत्तर हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से अन्तर्मुहूर्त न्यून पूर्वकोटी । सम्मूर्छिम जलचरपंचेन्द्रियतिर्यञ्च । संमूर्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चयोनिक का प्रश्न । हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से पूर्वकोटी । अपर्याप्त सम्मूर्छिम जलचर पंचेन्द्रिय । अपर्याप्त सम्मूर्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चयोनिक का प्रश्न । हे गौतम जघन्य से भी उत्कृष्ट से भी अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्त सम्मूर्छिम जलचर पंचेन्द्रिय । पर्याप्त सम्मूर्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चयोनिक का प्रश्न । हे गौतम जघन्य से भी अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से पूर्वकोटी अन्तर्मुहूर्त कम । गर्भव्युत्क्रांतिक जलचर । गर्भव्युत्क्रांतिक जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चयोनिक का प्रश्न । हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से पूर्वकोटी । अपर्याप्त गर्भज जलचर । अपर्याप्त गर्भज

पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तगगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अपज्जत्तयउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । सम्मूच्छिमसामण्णपुच्छा कायव्वा, गोयमा ! जहन्नेणं

न्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्यमन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि । उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यमन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः । अपर्याप्तकोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यमन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्तोना पूर्वकोटिः । संमूर्च्छिमसामान्यपृच्छा गौतम ! जघन्यमन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः त्रिपल्योपमान्यपि । अपर्याप्तकसंमूर्च्छिमो

हे गौतम जघन्य से भी और उत्कृष्ट से भी अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्तक गर्भज चतुष्पद स्थलचर पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून । उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक का प्रश्न गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से पूर्वकोटी । अपर्याप्तक उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से भी अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्त उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से पूर्वकोटी अन्तर्मुहूर्त न्यून । संमूर्छिमसामान्य । संमूर्छिमकी सामान्य पृच्छा

? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं चउरासीइं वाससहस्साइं अपज्जत्तयसम्मूच्छिमचउप्पयथलय
रपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गो० । जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तगसम्मूच्छिम चउप्प
यथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गो० । जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं चउरासीइं वाससहस्साइं
अंतोमुहुत्तूणाइं । गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अं
तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं । अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं

सहस्राणि । अपर्याप्तसम्मूर्च्छिमस्थलचरचतुष्पदपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम । अजघन्योत्कर्षेणान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तसम्मूर्च्छिम
चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतश्चतुरशीतिवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । गर्भव्युत्क्रा
न्तिकचतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्ति
कचतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम । अजघन्योत्कर्षेणान्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकचतुष्पदस्थलचरपञ्चे

तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम । सम्मूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचरपंचिंद्रियति । सम्मूर्च्छिम चतुष्पदस्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक का प्र. उत्तर हे गौतम
जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो चौरासी सहस्र वर्ष । अपर्याप्तसम्मूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचरपंचिंद्रियतिरिक्खति । अपर्याप्त सम्मूर्च्छिम चतुष्पदस्थलचर
पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक का प्र. उत्तर हे गौतम जघन्य भी पिण उत्कृष्ट भी पिण अन्तर्मुहूर्त का । पज्जत्तसम्मूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचरपंचिंद्रियतिरिक्खजो
णियाण पुच्छा । पर्याप्त सम्मूर्च्छिम चतुष्पदस्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक का प्रश्न है गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो चौरासी हजार वर्ष
अन्तर्मुहूर्त कम । गर्भजतिर्यंचचतुष्पदस्थलचरपंचिंदियति । गर्भव्युत्क्रान्तिक चौपद स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो
अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो तीन पल्योपम । अपर्याप्तगर्भजतिर्यंचचतुष्पदस्थलचरति । अपर्याप्त गर्भज चौपद स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक का प्रश्न । उत्तर

पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तगगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अपज्जत्तयउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । सम्मुच्छिमसामन्नपुच्छा कायव्वा, गोयमा ! जहन्नेणं

न्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणापि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि । उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः । अपर्याप्तकोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण चान्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्तोना पूर्वकोटिः । सम्मूर्छिमसामान्यपृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण द्विपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकसम्मूर्छिमो

हे गौतम जघन्य सो पिण उत्कृष्ट सो पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तगगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिर्यंचकी पृच्छा हे गौतम जघन्य सो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट सो तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून । उरपरिसप्पथलयरपंचिंदिय तिर्यंच योनिकाका प्र० गौतम जघन्यसो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टसो पूर्वकोडी । अपज्जत्तउरपरिसप्पथलयरपंचिंदिय तिर्यंच योनिकाका प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्यसो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टसो पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तगउरपरिसप्पथलयर पंचिंदिय तिर्यंच योनिका का प्र० उ० हे गौतम जघन्य सो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट सो पूर्वकोडी अन्तर्मुहूर्त न्यून । समुच्छिमसामन्यति । संमूर्छिमकी सामान्य पृच्छा

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तेवण्णवाससहस्साइं। अपज्जत्तगसम्मूच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तगसम्मूच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तेवण्णं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं। गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी। अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तगगब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्ख

रःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्तकसम्मूर्च्छिमोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रिपञ्चाशद्वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि। गर्भव्युत्क्रान्तिकोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः। अपर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियति

वर्षो० उ० हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से त्रेपन हजार वर्ष की। अपर्याप्त सम्मूर्च्छिम उरपरिसर्प। पर्याप्त सम्मूर्च्छिम उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य से उत्कृष्ट से भी अन्तर्मुहूर्त। पर्याप्त गर्भज उरपरिसर्प। पर्याप्त सम्मूर्च्छिम उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से त्रेपन हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त न्यून। गर्भव्युत्क्रान्तिक उरपरिसर्प। गर्भव्युत्क्रान्तिक उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से पूर्वकोटी। अपर्याप्त गर्भज ... तिर्यग्योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य से भी उत्कृष्ट से भी अन्तर्मुहूर्त। पर्या

ओणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । भुयपरिसप्पथ
लयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी । अपज्जत्त
यभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं
पज्जत्तयभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण
पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । सम्मुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा !
जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण बायालीसं वाससहस्साइं । अपज्जत्तयसम्मुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदि

योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्तोना । भुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः । अपर्याप्तभुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तभुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्तोना । सम्मूर्च्छिमभुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो द्विचत्वारिंशद्वर्षसहस्राणि । अपर्याप्तसम्मू

[illegible]परिसर्प्पत्ति । पर्याप्त भुज परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से पूर्व कोडी अन्तर्मुहूर्त न्यून । भुजपरिसर्पस्थलचरत्ति । भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से पूर्वकोडी । अपर्याप्तभुजपरिसर्पत्ति । अपर्याप्त भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य से भी उत्कृष्ट से भी अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्त भुजपरिसर्प स्थलचर की प्र० उ० हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से पूर्वकोडी अन्तर्मुहूर्त न्यून । सम्मूर्छिम भुजपरिसर्प पंचेन्द्रिय की प्र० उ० हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से बैतालीस हजार वर्ष । अपर्याप्त सम्मूर्छिम भुजपरिसर्पत्ति । अपर्याप्त सम्मूर्छिम भुज

यतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगसम्मुच्छिमभुयपरि
सप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बायालीसं वा
ससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । गब्भवक्कंतियभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गो
यमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियति
रिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगगब्भवक्कंतियभुजपरिस
प्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमु

च्छिमभुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तसम्मूर्च्छिमभुजपरिसर्पस्थलचर
पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो द्विचत्वारिंशद्वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । गर्भव्युत्क्रान्तिकभुजपरिस
र्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटि । अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकभुजपरिसर्पस्थलचरप
ञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकभुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका

परिसर्प स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य भी अपि उत्कृष्ट भी अपि अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्तक सम्मूर्च्छिम भुजपरिसर्पकी । पर्या
प्तक सम्मूर्च्छिम भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो बयालीस हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम
गर्भज भुजपरिसर्प की । गर्भव्युत्क्रान्तिक भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो पूर्व
कोटि । अपर्याप्तक गर्भव्युत्क्रान्तिक भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य भी अपि उत्कृष्ट भी अपि अन्तर्मुहूर्त । पर्या
प्तक गर्भज भुजपरिसर्प की । पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट

उणगा । खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण भंते । केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो । अपज्जत्तयखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखिज्जइभागो अंतोमुहुत्तूणं । सम्मूच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण बावत्तरिवाससहस्साणि । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतो

णां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्त्तोना । खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पल्योपमस्यासंख्येयभागः । अपर्याप्तखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पल्योपमस्यासंख्येयो भागो ऽन्तर्मुहूर्तोनः । सम्मूर्छिमखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो द्विसप्ततिवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तसम्मूर्छिमखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो द्विसप्ततिवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । गर्भव्युत्क्रान्तिक

की पूर्वक्रोड अन्तर्मुहूर्त कम । खहयरपंचिंदियत्ति । खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक को प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो पल्योपम का असंख्यातमो भाग । अपज्जत्तखहयरत्ति । अपर्याप्त खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक को प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य भी पिण उत्कृष्ट भी पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तयखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणंति । पर्याप्त खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक को प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो पल्योपम को असंख्यातमो भाग अन्तर्मुहूर्त न्यून । सम्मूच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । सम्मूर्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक को

यतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगसम्मुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण बायालीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी । अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगगब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी अंतोमु

च्छिमउरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तसम्मूर्च्छिमउरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो द्विचत्वारिंशद्वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । गर्भव्युत्क्रान्तिकउरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः । अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकउरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकउरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका

परिसर्प स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य से भी उत्कृष्ट से भी अन्तर्मुहूर्त । अपर्याप्त सम्मूर्च्छिम उरपरिसर्प की स्थिति । पर्याप्त सम्मूर्च्छिम उरपरिसर्प स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से बयालीस हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम । गर्भव्युत्क्रान्तिक उरपरिसर्प की स्थिति । गर्भव्युत्क्रान्तिक उरपरिसर्प स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से पूर्व कोटि । अपर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक उरपरिसर्प स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य से भी उत्कृष्ट से भी अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक उरपरिसर्प की स्थिति । पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक उरपरिसर्प स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट

क्कमणा । खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अं
तोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिउवमस्स असंखेज्जइभागो । अपज्जत्तयखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिउवमस्स असंखिज्जइभागं अंतोमुहुत्तूणं । सम्मुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावत्तरिवाससहस्साणि । अपज्जत्तयसम्मुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतो

मा पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्तोना । खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पल्योपमस्यासंख्येयभागः । अपर्याप्तखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पल्योपमस्यासंख्येयो भागोऽन्तर्मुहूर्तोनः । सम्मूर्च्छिमखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो द्विसप्ततिवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तसम्मूर्च्छिमखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो द्विसप्ततिवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । गर्भव्युत्क्रान्तिक

की पूर्वकोटी अन्तर्मुहूर्त कम । खचरपर्याप्तवर्णन । खचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उ० हे गौतम जघन्य की अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट की पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग । अपर्याप्तखचरवर्णन । अपर्याप्त खचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य की भी उत्कृष्ट की भी अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्तखचरपंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिकवर्णन । पर्याप्त खचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य की अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट की पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग अन्तर्मुहूर्त न्यून । सम्मूर्च्छिमखचरपंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक पृच्छा । सम्मूर्च्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक की

मुहुत्तं । पज्जत्तयसम्मुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावत्तरिवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । गब्भवक्कंतियखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं । अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयगब्भवक्कंतियखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो अंतोमुहुत्तूणो । मणुस्साणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं

खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा ? गौतम ! जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो पल्योपमस्याऽसंख्येयो भागः । अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा ? गौतम ! जघन्यमप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पल्योपमस्यासंख्येयतमो भागः अन्तर्मुहूर्तोनः । मनुष्याणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तकमनुष्याणां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकमनुष्याणां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः त्रीणि पल्योपमानि अन्तर्मुहूर्तोनानि । सम्मूर्छिममनुष्याणां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येना

प्र० उ० हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से बहत्तर हजार वर्ष । अपर्याप्तसम्मूर्छिमखेचरपंचेन्द्रियति । अपर्याप्त सम्मूर्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य से भी उत्कृष्ट से भी अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्तसम्मूर्छिमखेचरपंचेन्द्रियति । पर्याप्त सम्मूर्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का प्र० उ० हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से बहत्तर हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त न्यून । गर्भजतिर्यक्खेचरपंचेन्द्रियति गर्भव्युत्क्रान्तिक खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का प्र० उ० हे गौतम जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से पल्योपम का असंख्यात का भाग । अपर्याप्तगर्भ

अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं। अपज्जत्तगमणुस्साण पुच्छा? गोयमा! जहन्नेणवि उक्को
सेणवि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तयमणुस्साण पुच्छा? गोयमा! जहन्नेण अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण तिण्णि पलिओ
वमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं। सम्मुच्छिममणुस्साण पुच्छा? गोयमा! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं
गब्भवक्कंतियमणुस्साण पुच्छा? गोयमा! जहन्नेण अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं। अपज्जत्त
गब्भवक्कंतियमणुस्साण पुच्छा? गोयमा! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तगगब्भवक्कंतियमणु
स्साण पुच्छा? गोयमा! जहन्नेण अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं। वाणमंतराण

त्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम्। गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां पृच्छा गौतम! जघन्येनाऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणत्रीणि पल्योपमानि। अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्ति
कमनुष्याणां पृच्छा गौतम! जघन्येनाप्युत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां पृच्छा, गौतम! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण
त्रीणि पल्योपमानि अन्तर्मुहूर्तोनानि। वानव्यन्तराणां देवानां भदन्त! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता गौतम! जघन्येन दश वर्षसहस्रा

गर्भजतिर्यञ्चखचरकी। अपर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक खचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त।
पर्याप्तगर्भजतिर्यञ्चखचरकी। पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक खचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक को प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम
का असंख्यातवाँ भाग अन्तर्मुहूर्त न्यून। मनुष्यों की स्थि०। मनुष्य की हे भगवन् कितने काल की स्थिति कही? प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य की अन्त
र्मुहूर्त उत्कृष्ट की तीन पल्योपम। अपर्याप्तमनुष्य का पृच्छा। अपर्याप्त मनुष्य का प्र० उ० गौतम जघन्य की भी उत्कृष्ट की भी अन्तर्मुहूर्त। पर्या
प्तमनुष्य की स्थि०। पर्याप्त मनुष्य का प्र० बोले उत्तर हे गौतम जघन्य की अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट की तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून। सम्मूर्च्छिमम
नुष्य की पृच्छा। सम्मूर्च्छिम मनुष्य का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य की अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट की भी तैसेही। गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यों की पृच्छा। गर्भज मनुष्य

ज्जते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पलिओवमं ।
अपज्जत्तयवाणमंतरदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयवाणमंतर
देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं पलिओवमं अंतोमुहु
त्तूणं । वाणमंतरीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं । अ
पज्जत्तियाणं भंते ! वाणमंतरीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्ज

पि उत्कर्षेण पल्योपमम् । अपर्याप्तकवानव्यन्तर देवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकवानव्यन्तराणां देवा
नां पृच्छा गौतम ! जघन्येन दश वर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्तोनं पल्योपमम् । वानव्यन्तरीणां देवीनां पृच्छा ? गौत
म ! जघन्येन दश वर्षसहस्राणि उत्कर्षतो अर्द्धपल्योपमम् । अपर्याप्तदेवीनां भदन्त ! पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्तम् ।
पर्याप्तकवानव्यन्तरीणां भदन्त ! पृच्छा गौतम ! जघन्येन दश वर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपमम् अन्तर्मुहूर्तोनम् ।
ज्योतिष्काणां भदन्त ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन पल्योपमाष्टभागो उत्कर्षेण पल्योपमं वर्षशतसहस्राभ्यधिकम् ।

ना प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तमुहूर्त उत्कृष्ट तो तीन पल्योपम । अपज्जत्ता गब्भवक्कंतियमणुस्साणं ति । अपर्याप्त गर्भज मनुष्य का प्रश्न कीधो
उत्तर हे गौतम जघन्य भी पिण उत्कृष्ट भी पिण अन्तमुहूर्त का । पज्जत्तगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ति । पर्याप्त गर्भज मनुष्य का प्र उत्तर हे गौतम जघन्य
तो अन्तमुहूर्त उत्कृष्ट तो तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून । वाणमंतराणं भंते देवाणं ति । वाणव्यन्तर देवनी हे भगवन् केतला काल नी स्थिति क
ही प्र उ हे गौतम जघन्य तो दशहजार वर्ष उत्कृष्ट तो पल्योपम । अपज्जत्तवाणमंतराणं ति । अपर्याप्त वाणव्यन्तर देवता का प्र उ हे गौतम
जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तयवाणमंतराणं देवाणं ति । पर्याप्त वाणव्यन्तर देवता का प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो अन्तमुहूर्त

सियाणं भंते ! वाणमंतरीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं । जोइसियाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमट्ठभागो उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं । अपज्जत्तयजोइसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयजोइसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमट्ठभागो अंतोमुहुत्तूणो उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं । जोइसिणीणं

अपर्याप्तज्योतिष्काणां पृच्छा गौतम ! जघन्यमप्युत्कृष्टमप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तज्योतिष्काणां पृच्छा गौतम ! जघन्येन पल्योपमाष्टभागम् अन्तर्मुहूर्तोनमुत्कृष्टतः पल्योपमं वर्षशतसहस्राभ्यधिकमन्तर्मुहूर्तोनम् । ज्योतिष्कदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतः पल्योपमाष्टभाग उत्कृष्ट

न्यून दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट आधे पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून । वाणमंतरीणं देवाणं ति । वाणव्यन्तर देवी की प्र० उ० गौतम जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट आधे पल्योपम । अपज्जत्तियाणं भंते वाणमंतरीणं देवीणं ति । अपर्याप्त वाणव्यन्तर देवी का हे भगवन् कितना आयु कहा ? हे गौतम जघन्य भी अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट भी अंतर्मुहूर्त । पज्जत्तियाणं भंते वाणमंतरीणं देवीणं ति । पर्याप्त वाणव्यन्तरनी देवी का प्र० उ० हे गौतम जघन्य दश हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त ऊन उत्कृष्ट आधे पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून । जोइसियाणं भंते देवाणं ति । ज्योतिषी देवता का हे भगवन् कितना काल की स्थिति कही प्र० उ० हे गौतम जघन्य पल्योपम का आठमा भाग उत्कृष्ट पल्योपम एक लाख वर्ष अधिक । अपज्जत्तयजोइसियाणं पुच्छा । अपर्याप्त ज्योतिषी का प्र० उ० हे गौतम जघन्य भी अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट भी अंतर्मुहूर्त । पज्जत्तयजोइसियाणंति । पर्याप्त ज्योतिषी का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य पल्योपम का आठमा भाग अन्तर्मुहूर्त न्यून उत्कृष्ट पल्योपम लाख वर्ष अधिक अन्तर्मुहूर्त न्यून । जोइसणीणं भंते देवीणं ति । ज्योतिष्क देवी का प्र० उ० हे गौतम जघन्य पल्योपम का आठमा भाग उत्कृष्ट आधा पल्योपम पचास हजार वर्ष अधिक । अपज्जत्तियाणं जोइसणीणंति । अ

भंते ! देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमट्ठभागो उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासवाससहस्समब्भहियं । अपज्जत्तियाणं जोइसिणीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तियाणं जोइसिणीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमट्ठभागो अंतोमुहुत्तूणो उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासवाससहस्सेहिं अब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं । चंदविमाणेणं भंते ! देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं । चंदविमाणेणं भंते ! अपज्जत्तयाणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । चंदविमाणेणं भंते ! पज्जत्तयाणं देवाणं

कोऽर्द्धं पल्योपमं पञ्चाशद्वर्षसहस्राभ्यधिकम् । अपर्याप्तकज्योतिष्कदेवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तज्योतिष्कदेवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्यतः पल्योपमाष्टमभागोऽन्तर्मुहूर्तोन उत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपमं पञ्चाशद्वर्षसहस्रैरधिकमन्तर्मुहूर्तोनम् । चन्द्रविमाने भदन्त ! देवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममुत्कर्षेण पल्योपमं वर्षशतसहस्राभ्यधिकम् । चन्द्रविमाने भदन्त ! अपर्याप्तकदेवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । चन्द्रविमाने भदन्त ! पर्याप्तकानां देवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन पल्योपमचतुर्भागम

पचास जोतिष्क देवी नो प्र० ? हे गौतम ! जघन्य तो उत्कृष्ट तो भिन्न अन्तर्मुहूर्त । अपर्याप्ति आश्री ए बोलवो । पर्याप्त जोतिष्क देवी नो प्र० ? हे गौतम ! जघन्य तो पल्योपम नो आठमो भाग अन्तर्मुहूर्त ऊन उत्कृष्ट तो अन्तर्मुहूर्त ऊन पचास हजार वर्ष अधिक अर्द्ध पल्योपम । चंद्रविमानना भंते देवता नी । चन्द्रविमान भदन्त देवताओ कतला कालनी स्थिति कही प्रश्न उत्तर हे गौतम ! जघन्य तो चतुर्भाग पल्योपम उत्कृष्ट तो पल्योपम लाख वर्ष अधिक । चंद्रविमानना भंते अपर्याप्ता देवता नी । चन्द्रविमान ना हे भगवन् अपर्याप्त देवनी पृच्छा हे गौतम ! जघन्य तो भिन्न उत्कृष्ट तो भिन्न अन्तर्मुहूर्त । चंद्रविमानना भंते पर्याप्ता देवता नी । चन्द्रविमान ना देवताओ हे भगवन् केतला आयु प्रश्न उत्तर हे गौतम ! जघन्य तो चतुर्भाग पल्योपम

मं ० सोपमपि सुगमं नवरं चन्द्रविमानेषु भदन्त ! देवानामित्यादि ॥ चन्द्रविमाने चन्द्र उत्पद्यते शेषास्तु तत्परिवारभूता तत्र त-
त्परिवारभूतानां जघन्यतश्चतुर्भागपल्योपमप्रमाणा उत्कर्षतः सामानिकादीनां वर्षलक्षाभ्यधिकं पल्योपमं चन्द्रदेवस्य तु यथोक्तमुत्क-

पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण चउब्भागपलिओवम अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण पलिओवम वाससयसहस्समब्भहिय अंतोमुहुत्तूण । चंदविमाणेण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण चउब्भागपलिओवम उक्कोसेण अद्धपलिओवम पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय । चंदविमाणेण अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । चंदविमाणेण पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउब्भागपलिओवम अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण अद्धपलिओवम पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय अंतोमुहुत्तूण । सूरवि

र्षमुहूर्तोनमुत्कर्षतः पल्योपमं वर्षशतसहस्राधिकमन्तर्मुहूर्तोनम् । चन्द्रविमाने देवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्येन पल्योपमचतुर्भागमुत्कर्षतोऽर्द्ध-
पल्योपमं पञ्चाशद्वर्षसहस्रैरधिकम् । चन्द्रविमाने अपर्याप्तकदेवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । चन्द्रविमाने पर्याप्तकदे-
वीनां पृच्छा गौतम ! जघन्येन पल्योपमचतुर्भागमन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपमं पञ्चाशद्वर्षसहस्रैरधिकमन्तर्मुहूर्तोनम् । सूर्यविमाने प्रद

अन्तर्मुहूर्त ऊन उत्कृष्ट थी पल्योपम लाख वर्ष अधिक अन्तर्मुहूर्त ऊन। चंदविमाणे देवीणं । चन्द्रविमान मां देवीना प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य
थी पल्योपम ना चोथा भाग उत्कृष्ट थी पचास हजार वर्ष अधिक अर्द्ध पल्योपम। चंदविमाणे अपज्जत्तियाण देवीणं । चन्द्रमा ना विमानमां अप
र्याप्ता देवीनी स्थितिना प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी पण उत्कृष्ट थी पण अन्तर्मुहूर्त। चंदविमाणे पज्जत्तियाण देवीणं । चन्द्रमाना विमान
ने विषे पर्याप्ता देवीनी स्थिति ना प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पल्योपम ना चोथा भाग अन्तर्मुहूर्त न्यून उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त न्यून पचास ह
जार वर्ष अधिक अर्द्ध पल्योपम। सूरविमाणेणं भंते देवाणं। सूर्यना विमानमां हे भगवन् देवताओ केटला कालनी स्थिति कही प्रश्न उत्तर हे गो

माणेण भंते ! देवाण केवइय काल ठिइ पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण चउब्भागपलिओवम उक्कोसेण पलि
ओवम वाससहस्समब्भहिय । सूरविमाणे अपज्जत्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतो
मुहुत्त । सूरविमाणे पज्जत्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउब्भागपलिओवम अंतोमुहुत्तूण उक्को
सेण पलिओवम वाससहस्समब्भहिय अंतोमुहुत्तूण । सूरविमाणदेवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउ
ब्भागपलिओवम उक्कोसेण अद्धपलिओवम पंचहि वाससएहि अब्भहिय । सूरविमाणे अपज्जत्तियाण देवीण
पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । सूरविमाणे पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गो

न्त ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन पल्योपमचतुर्भागमुत्कर्षतः पल्योपमं वर्षसहस्राभ्यधिकम् । सूर्यविमाने अप
र्याप्तदेवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । सूर्यविमाने पर्याप्तदेवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममन्तर्मुहू
र्तोनम् उत्कर्षतः पल्योपमं वर्षसहस्राभ्यधिकमन्तर्मुहूर्तोनम् । सूर्यविमाने देवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्येन पल्योपमचतुर्भागमुत्कर्षतोऽर्द्ध
पल्योपमं पञ्चभिर्वर्षशतैरधिकम् । सूर्यविमाने अपर्याप्तदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । सूर्यविमाने पर्याप्तकदेवीनां पृ

तम जघन्य थी चोथ भागे पल्योपमनी उत्कृष्ट पल्योपम हजारवर्ष अधिक । सूरविमाणे अपज्जत्तदेवाणति । सूर्यना विमाननें विषे अपर्याप्त देवनो प्रश्न
न हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तमुहूर्त । सूरविमाणे पज्जत्तदेवाणति । सूर्यविमाननें विषे पर्याप्त देवनो प्रश्न न हे गौतम जघन्य
थी अन्तमुहूर्त न्यून पल्योपमनो चोथो भाग उत्कृष्ट थी अंतमुहूर्त न्यून हजारवर्ष अधिक पल्योपम । सूरविमाणे देवीणति । सूर्यना विमाननें विषे दे
वीनो प्र न हे गौतम जघन्य थी पल्योपमनो चोथो भाग उत्कृष्ट पांच सय अधिक अर्द्ध पल्योपम । सूरविमाणे अपज्जत्तियाण देवीणति । सूर्यना
विमाननें विषे अपर्याप्त देवीनो प्र न हे गौ जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अंतमुहूर्त । सूरविमाणे पज्जत्तियाण देवीणति । सूर्यना विमाननें विषे

यमा ! जहन्नेण चउब्भागपलिओवम अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण अद्धपलिओवम पन्नाहि वाससएहि अब्भहियं
अंतोमुहुत्तूण। गहविमाणे देवाण पुच्छा? गो०! जहन्नेण चउब्भागपलिओवम उक्कोसेण पलिओवम। गहवि
माणे अपज्जत्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । गहविमाणे पज्जत्तदेवा
ण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउब्भागपलिओवम अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण पलिओवम अंतोमुहुत्तूण ।
गहविमाणे देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउब्भागपलिओवम उक्कोसेण अद्धपलिओवम । गहविमाणे
अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तियाण गहविमाणे

च्छा गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपमं पञ्चाशद्वर्षशतैरधिकमन्तर्मुहूर्तोनम् । ग्रहविमान देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममुत्कर्षतः पल्योपमम् । ग्रहविमानेऽपर्याप्तदेवानां पृच्छा गौतम ! जघन्यमुत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । ग्रहविमाने पर्याप्तदेवानां पृच्छा गौतम ! जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तोनं पल्योपमचतुर्भागमुत्कर्षतः पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनम् । ग्रहविमाने देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममुत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपमम् । ग्रहविमानेऽपर्याप्तदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । ग्रह

पर्याप्त देवीनी स्थिति ना प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो अंतमुहूर्त न्यून पल्योपम नो चोथो भाग उत्कृष्ट तो पांच सय अधिक पल्योपम अंतर्मुहूर्त न्यून। ग्रहविमाणे देवाणं पुच्छा। ग्रहना विमानने विषे देवता ना प्र० उ० हे गो० जघन्य तो पल्योपमनो चोथो भाग उत्कृष्ट तो पल्योपम। ग्रहविमाणे अपज्जत्तदेवाणं वि०। ग्रहना विमान मां अपर्याप्त देवता नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अंतर्मुहूर्त। ग्रहविमाणे पज्जत्तदेव ना पुच्छा। ग्रहना विमानने विषे पर्याप्त देवता प्र० उ० हे गौतम जघन्य अंतर्मुहूर्त न्यून पल्योपम नो चोथो भाग उत्कृष्ट तो पल्योपम अंतर्मुहूर्त ऊन ग्रहविमाणे देवीण पुच्छा। ग्रहना विमानने विषे देवीना प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो पल्योपम चतुर्भाग उत्कृष्ट अर्द्ध पल्योपम । ग्रहविमाणे अपज्ज

देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेण अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूण। नक्खत्तविमाणे देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेण अद्धपलिओवमं । नक्खत्तविमाणे अपज्जत्तयाण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । णक्खत्तविमाणे पज्जत्तयाण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण चउब्भागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूण । नक्खत्तविमाणदेवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेण

विमाने पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तोन पल्योपमचतुर्भागमुत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपममन्तर्मुहूर्तोनम् । नक्षत्रविमाने देवाना पृच्छा गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममुत्कर्षतोऽर्द्धं पल्योपमम् । नक्षत्रविमानेऽपर्याप्तदेवाना पृच्छा गौतम ! जघन्यतोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । नक्षत्रविमाने पर्याप्तकदेवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपममन्तर्मुहूर्तोनम् । नक्षत्रविमाने देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतश्चतुर्भाग पल्योपममुत्कर्षतस्सातिरेकं चतुर्भागपल्योपमम् । नक्षत्रविमानेऽपर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम !

तियाँ देवों पृच्छा । चन्द्रविमानमें स्थित अपर्याप्त देवोंका प्र उ हे गौतम जघन्य भी स्थिति उत्कृष्ट भी स्थिति अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्तियाँ पति । पर्याप्त चन्द्रविमानकी देवताओंका प्र उ हे गौतम जघन्य भी अन्तमुहूर्त न्यून पल्योपम चतुर्भाग उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त न्यून अर्द्ध पल्योपम । नक्षत्रविमाने देवाण पृच्छा । नक्षत्र विमानमें देवताओंका प्र उ हे गौतम जघन्य भी चतुर्भाग पल्योपम उत्कृष्ट भी अर्द्ध पल्योपम । नक्षत्रविमाने अपज्जत्तयाण देवाणति नक्षत्र विमानमें स्थित अपर्याप्त देवताओंका प्र उ हे गौ जघन्य भी स्थिति उत्कृष्ट भी स्थिति अन्तर्मुहूर्त । नक्षत्रविमाणे पज्जत्तदेवाणति । नक्षत्र विमानमें स्थित पर्याप्त देवताओंका प्र उ हे गौ जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपम चतुर्भाग उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त न्यून अर्द्ध पल्योपम । नक्खत्तविमाणे देवी पुच्छा । नक्षत्र विमानमें स्थित देवीका प्र उ हे गौतम जघन्य भी चतुर्भाग पल्योपम उत्कृष्ट भी सातिरेक चतुर्भाग पल्योपम । नक्षत्र विमान में

सातिरेगं चउभागपलिओवमं। नक्खत्तविमाणे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा? गो०! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि
अंतोमुहुत्तं। नक्खत्तविमाणे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा? गो०! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं
उक्कोसेणं सातिरेगं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं। ताराविमाणे देवाणं पुच्छा? गो०! जहण्णेणं अट्ठ
भागपलिओवमं उक्कोसेणं चउभागपलिओवमं। ताराविमाणे अपज्जत्तदेवाणं पुच्छा? गो०! जहण्णेणवि उक्को
सेणवि अंतोमुहुत्तं। ताराविमाणे पज्जत्तदेवाणं पुच्छा, गो०! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उ

जघन्यमप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम्। नक्षत्रविमाने पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा गौतम! अन्तर्मुहूर्तोन चतुर्भागपल्योपममुत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्तोन साति
रेकं चतुर्भागपल्योपमम्। ताराविमाने देवानां पृच्छा गौतम! जघन्येनाष्टभागं पल्योपममुत्कर्षतश्चतुर्भागं पल्योपमम्। ताराविमानेऽपर्या
प्तदेवानां पृच्छा गौतम! जघन्यतोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम्। ताराविमाने पर्याप्तदेवानां पृच्छा, गौतम! जघन्येनान्तर्मुहूर्तोनमष्टभागपल्यो
पममुत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्तोन चतुर्भागपल्योपमम्। ताराविमाने देवीनां पृच्छा, गौतम! जघन्येनाष्टभागपल्योपममुत्कर्षतः सातिरेकमष्टभागपल्या

विषे अपर्याप्त देवीना प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त। नक्षत्रविमान वि पर्याप्तायांपति। नक्षत्र विमानने विषे पर्याप्त
देवीना प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी चतुर्भाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून उत्कृष्ट थी सातिरेक चतुर्भाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून। ताराविमाने
देवायांति। ताराविमानने विषे देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अष्टभाग पल्योपम उत्कृष्ट थी चतुर्भाग पल्योपम। ताराविमाने अपर्याप्तदे
वायांति। ताराविमानने विषे अपर्याप्त देवताना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त। ताराविमाने पर्याप्तदेवायांति।
ताराविमानने विषे पर्याप्त देवताना प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अष्ट भाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून उत्कृष्ट थी चतुर्भाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून
ताराविमाने देवीयांति। ताराविमानने विषे देवीना प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अष्ट भाग पल्योपम उत्कृष्ट थी सातिरेक अष्ट भाग पल्योपम।

देवीण

ण। न चउब्भागपलिओवम अंतोमुहुत्तूण। ताराविमाणे देवीण पुच्छा? गो०। जहन्नेण अट्ठभागपलिओवम

स्कर्मा ण साइरेग अट्ठभागपलिओवम। ताराविमाणे अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गो०। जहन्नेणवि उक्को

माणे र अंतोमुहुत्तं। ताराविमाणे पज्जत्तयाण देवीण पुच्छा? गोयमा। जहन्नेण अट्ठभागपलिओवम

लिओवम तूण उक्कोसेण साइरेग अट्ठभागपलिओवम अंतोमुहुत्तूण। वेमाणियाण भंते! देवाण केवइय

ई पण्णत्ता? गोयमा! जहन्नेण पलिओवम उक्कोसेण तत्तीस सागरोवमाइ। अपज्जत्तयवेमाणिया

विमाने र ! पुच्छा? गोयमा! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त। पज्जत्तवेमाणियाण पुच्छा? गोयमा

पमम्। ताराविमानेऽपर्याप्तदेवीनां पृच्छा गौतम। जघन्येनोत्कर्षेणान्तर्मुहूर्तम्। ताराविमाने पर्याप्तदेवीनां पृच्छा गौतम। जघन्येना न्तर्मुहूर्तोनमष्टभाग पल्योपममुत्कर्षेणान्तर्मुहूर्तोनं सातिरेकमष्टभागपल्योपमम्। वैमानिकानां भदन्त! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता? गौतम। जघन्यतः पल्योपममुत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि। अपर्याप्तकवैमानिकानां पृच्छा। गौतम। जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्तवैमानिकानां पृच्छा गौ०। जघन्येन पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि। वैमानिकदेवीनां पृच्छा।

ताराविमाने अपर्याप्तदेवीयोंकी। ताराविमानमें स्थित अपर्याप्त देवीयाँ प्र० उ० हे गौतम जघन्य भी स्थिति उत्कृष्ट भी स्थिति अन्तर्मुहूर्त। ताराविमान पर्याप्तक देवीयोंकी। ताराविमानमें स्थित पर्याप्त देवीयाँ प्र० उ० हे गौतम जघन्य भी अष्ट भाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून उत्कृष्ट भी सातिरेक अष्टभाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून। वैमानिकोंकी स्थिति। वैमानिक देवको हे भगवन् केतना कालकी स्थिति कही प्र० उ० हे गौतम जघन्य भी पल्योपम उत्कृष्ट भी तेतीस सागरोपम। अपर्याप्तवैमानिकोंकी देवोंकी। अपर्याप्त वैमानिक का प्र० उ० हे गौतम जघन्य भी स्थिति उत्कृष्ट भी स्थिति अन्तर्मुहूर्त। पर्याप्तवैमानिकोंकी पृच्छा। पर्याप्त वैमानिकका प्र० उ० हे गौतम जघन्य भी पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपम उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त न्यून तेतो

जहन्नेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । वेमाणिणीणं भंते !
देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं । अप
ज्जत्तियाणं देवीणं वेमाणिणीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तियाणं वेमा
णिणीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमं अंतो
मुहुत्तूणं । सोहम्मेणं भंते ! कप्पे देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं उक्को
सेणं दो सागरोवमाइं । सोहम्मे कप्पे अपज्जत्तदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतो

? गौतम ! जघन्यतः पल्योपममुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमानि । अपर्याप्तकवैमानिकदेवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकवैमानिकदेवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्येन पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि । सौधर्मे भदन्त ! कल्पे देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन पल्योपममुत्कर्षतो द्वे सागरोपमे । सौधर्मे कल्पेऽपर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । सौधर्मे कल्पे पर्याप्तकदेवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतो

स सागरोपम । वेमाणीय भी हवेछे । वैमानिकनी देवीना हे भगवन् कतला आयु कह्या प्र० उ० हे गौ० जघन्य तो पल्योपम उत्कृष्ट तो पचावन पल्योपम । अपज्जत्तियाय वेमाणीयति । अपर्याप्त वैमानिकनी देवीना प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अन्तमुहूर्त । पज्जत्तियाय वेमाणीय देवीयति । पर्याप्त वैमानिक देवीना प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपम उत्कृष्ट तो अन्तर्मुहूर्त न्यून पचावन पल्योपम आयुष्य भंतेरि । सौधर्म देवलोकने विषे हे भगवन् देवताने केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो पल्योपम उत्कृष्ट तो दो सागरोपम । सोहम्म कप्पे अपज्जत्तदेवाणति । सौधर्म देवलोकने विषे अपर्याप्त देवना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अन्तर्मुहूर्त ।

देवीण। चउब्भागपलिओवम अंतोमुहुत्तूण । ताराविमाणे देवीण पुच्छा ? गो० । जहन्नेण अट्ठभागपलिओवम
ण । न॰ण साइरेग अट्ठभागपलिओवम । ताराविमाणे अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गो० । जहन्नेणवि उक्को
स्सेण॰ अंतोमुहुत्त । ताराविमाणे पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा । जहन्नेण अट्ठभागपलिओवम
माणे प॰ तूण उक्कोसेण साइरेग अट्ठभागपलिओवम अंतोमुहुत्तूण । वेमाणियाण भंते ! देवाण केवइय
लिओवमं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण पलिओवम उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं । अपज्जत्तयवेमाणिया
[illegible] ! पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । पज्जत्तवेमाणियाण पुच्छा ? गोयमा

पमम् । ताराविमानेऽपर्याप्तदेवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्येनोत्कर्षेणान्तर्मुहूर्तम् । ताराविमाने पर्याप्तदेवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्येना
न्तर्मुहूर्तोनमष्टभागं पल्योपममुत्कर्षेणान्तर्मुहूर्तोनं सातिरेकमष्टभागपल्योपमम् । वैमानिकानां भदन्त ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता
? गौतम ! जघन्येन पल्योपममुत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । अपर्याप्तकवैमानिकानां पृच्छा गौतम । जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् ।
पर्याप्तवैमानिकानां पृच्छा गौ० । जघन्येन पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । वैमानिकदेवीनां पृच्छा ।

ताराविमानों में अपर्याप्त देवियाँ । ताराविमानों में स्थित अपर्याप्त देवियों प्र० उ० हे गौतम जघन्य की स्थिति उत्कृष्ट की अन्तर्मुहूर्त । ताराविमा
नों में पर्याप्त देवियाँ । ताराविमानों में स्थित पर्याप्त देवियों प्र० उ० हे गौतम जघन्य की अष्ट भाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून उत्कृष्ट की सातिरेक अ
ष्टभाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून । वैमानिक देव । वैमानिक देवों की हे भगवन् कितने काल की स्थिति कही प्र० उ० हे गौतम जघन्य की पल्यो
पम उत्कृष्ट की तेतीस सागरोपम । अपर्याप्त वैमानिक देव । अपर्याप्त वैमानिकों प्र० उ० हे गौतम जघन्य की स्थिति उत्कृष्ट की स्थिति
अन्तर्मुहूर्त । पर्याप्त वैमानिकों की पृच्छा । पर्याप्त वैमानिकों प्र० उ० हे गौतम जघन्य की अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपम उत्कृष्ट की अन्तर्मुहूर्त न्यून तेतो

जहण्णेण पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । वेमाणिणीणं भंते !
देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा । जहन्नेणं पलिओवमं उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं । अप
देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा । जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं वेमा
ज्जत्तियाणं देवीणं वेमाणिणीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमं अंतो
णिणीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा । जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं । सोहम्मे णं भंते ! कप्पे देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं उक्को
सेणं दो सागरोवमाइं । सोहम्मे कप्पे अपज्जत्तदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतो

? गौतम ! जघन्येन पल्योपममुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमानि । अपर्याप्तकवैमानिकदेवीनां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहू
र्तम् । पर्याप्तकवैमानिकदेवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्येन पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि । सौधर्मे
भदन्त ! कल्पे देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन पल्योपममुत्कर्षतो द्वे सागरोपमे । सौधर्मे कल्पेऽपर्याप्तकदेवानां
पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । सौधर्मे कल्पे पर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतो

... सागरोपम । वैमानिक मतें देवो अति । वैमानिकनी देवीना हे भगवन् केटला काळ सुधी स्थिति कही छे ? हे गौतम जघन्य पल्योपम उत्कृष्ट पचावन
पल्योपम । अपर्याप्त वैमानिक देवीओ अति । अपर्याप्त वैमानिकनी देवीना प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य ने पण उत्कृष्ट ने पण अंतर्मुहूर्त । पर्याप्तिकाल
वैमानिक देवीओ अति । पर्याप्त वैमानिक देवीना प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य ते अंतर्मुहूर्त न्यून पल्योपम उत्कृष्ट ते अंतर्मुहूर्त न्यून पचावन पल्योपम
... देवलोकना विषे हे भगवन् देवताओ केटला कालनी स्थिति कही छे प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य ते पल्योपम उत्कृष्ट ते बे
सागरोपम । बारमा कल्पे पर्याप्तदेवाओ अति । सौधर्म देवलोकने विषे अपर्याप्त देवना प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य ने पण उत्कृष्ट ने पण अंतर्मुहूर्त ।

मुहुत्त । सोहम्मे कप्पे पज्जत्तदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण पलिओवमं अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण दो सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ । सोहम्मे कप्पे देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण पलिओवमं उक्कोसेण पन्नास पलिओवमाइ । सोहम्मे कप्पे अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त (ग्रन्थाग्र २५००) सोहम्मे कप्पे पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण पलिओवमं अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण पन्नास पलिओवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण देवीण पु

द्वे सागरोपमेऽन्तर्मुहूर्तोने । सौधर्मे कल्पे देवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्येन पल्योपममुत्कर्षतः पञ्चाशत्पल्योपमानि । सौधर्मे कल्पेऽपर्याप्तकदेवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्यतोऽप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । सौधर्मे कल्पे पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तोनं पल्योपममुत्कर्षतः पञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि । सौधर्मे कल्पे परिगृहीतानां देवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्येन पल्योपममुत्कर्षतः सप्तपल्योपमानि । सौधर्मे कल्पे परिगृहीतानामपर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । सौधर्मे कल्पे परिगृहीत

म्मे कप्प पज्जत्तदेवाण पुच्छा । सौधर्मे कल्प पर्याप्त देवों का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून उत्कृष्ट दो सागरोपम
अन्तर्मुहूर्त न्यून । सोहम्मे कप्प देवीपति । सौधर्म कल्प में स्थिति देवियों का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो पल्योपम उत्कृष्ट तो पचास पल्योपम । सोहम्मे
कप्पे अपज्जत्तियदेवीपति । सौधर्म कल्प में स्थिति अपर्याप्त देवियों का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो स्थिति उत्कृष्ट तो स्थिति अन्तर्मुहूर्त । सोहम्मे कप्पे पज्जत्ति
याण देवीपति । सौधर्मे कल्प में स्थिति पर्याप्त देवियों का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपम उत्कृष्ट तो अन्तर्मुहूर्त ऊन पचास पल्योपम
म्मे कप्प परिग्गहियाणं देवीपति । सौधर्म कल्प में स्थिति परिगृहीत देवियों का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो पल्योपम उत्कृष्ट तो सात पल्योपम । सो
म्मे कप्प परिग्गहियाण अपज्जत्तिय । सौधर्म कल्प में स्थिति परिगृहीत अपर्याप्त देवियों का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो स्थिति उत्कृष्ट तो स्थिति अन्तर्मुहूर्त

च्छा, गोयमा ! जहन्नेण पलिउवम उक्कोसेण सत्त पलिउवमाइ। सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण अपज्जत्ति याण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण पलिउवम अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण सत्त पलिउवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण पलिउवम उक्कोसेण पन्नासपलिउव माइ। सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाण अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतो मुहुत्त । सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाण पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण पलिउवम अंतो

पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतः सप्तपल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि । सौधर्मे कल्पेऽपरिगृहीतानां देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपममुत्कर्षतः पञ्चाशत्पल्योपमानि । सौधर्मे कल्पेऽपरिगृहीतानामपर्याप्तकानां देवीनां पृच्छा, गौतम !, जघन्यतोऽप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । सौधर्मे कल्पेऽपरिगृहीतानां पर्याप्तकानां देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षेण

सौधर्म कल्प परिग्रहिताओं पर्याप्तिवाली देवीओंकी । सौधर्म कल्पमें स्थिति परिगृहीत पर्याप्त देवीओं प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त कम पल्योपम उत्कृष्ट तो अन्तर्मुहूर्त कम सात पल्योपम । सौधर्म कल्पे अपरिग्रहिताओं देवीओंकी । सौधर्म कल्पमें स्थिति अपरिगृहीत देवीओं प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो पल्योपम उत्कृष्ट तो पचास पल्योपम । सौधर्म कल्पे अपरिग्रहिताओं अपर्याप्तिवाली देवीओंकी । सौधर्म कल्पमें स्थिति अपरिगृहीत अपर्याप्त देवीओं प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य भी स्थिति उत्कृष्ट भी स्थिति अन्तर्मुहूर्त । सौधर्म कल्पे अपरिग्रहिताओं पर्याप्तिवाली देवीओंकी । सौधर्म कल्पमें स्थिति अपरिगृहीत पर्याप्त देवीओं प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट तो पचास पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम । ईशान कल्प देवीओं पृच्छा । ईशान कल्पमें स्थिति देवीओंकी प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो सातिरेक पल्योपम उत्कृष्ट तो सातिरेक सा

मुहुत्तूणाइ । ईसाणे कप्पे देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण साइरेग पलिओवम उक्कोसेण साइरेगाइ दो सागरोवमाइ । ईसाणे कप्पे अपज्जत्तयाण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त ईसाणे कप्पे पज्जत्तयाण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण सातिरेग पलिओवम अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण सातिरेगाइ दो सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ । ईसाणे कप्पे देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण सातिरेग पलिओवम उक्कोसेण पणपन्नपलिओवमाइ । ईसाणे कप्पे देवीण अपज्जत्तियाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । ईसाणे कप्पे पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण साइरेग

पञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि । ईशाने कल्पे देवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन सातिरेकं पल्योपममुत्कर्षतः सातिरेके द्वे सागरोपमे । ईशाने कल्पेऽपर्याप्तकदेवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । ईशाने कल्पे देवानां पर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन सातिरेकं पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनम् । उत्कर्षतः सातिरेके द्वे सागरोपमेऽन्तर्मुहूर्तोने । ईशाने कल्पे देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतः सातिरेकं पल्योपममुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमानि । ईशाने कल्पेऽपर्याप्तकदेवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । ईशाने

सागरोपम । ईशान कल्प अपर्याप्तिकार्थ देवस्थिति । ईशान कल्प में स्थित अपर्याप्तक देवों का प्र० उ० हे गौतम जघन्य भी स्थिति उत्कृष्ट भी स्थिति अन्तर्मुहूर्त । ईशान कल्प पर्याप्तक देवस्थिति । ईशान कल्प में स्थित पर्याप्तक देवताओं का प्र० उ० हे गौतम जघन्य भी सातिरेक पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट दो सातिरेक दो सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम । ईशान कल्प देवीस्थिति । ईशान कल्प में स्थित देवीओं का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य दो सातिरेक पल्योपम उत्कृष्ट दो पचपन पल्योपम । ईशान कल्प अपर्याप्तिदेवीस्थिति । ईशान कल्प में स्थित अपर्याप्तक देवीओं का प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य भी स्थिति उत्कृष्ट भी स्थिति अन्तर्मुहूर्त । ईशान कल्प पर्याप्तिदेवीस्थिति । ईशान कल्प में स्थित पर्याप्तक देवीओं का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य भी सातिरेक

पलिउंवम खुतोमुहुत्तूण उक्कोसेणं पणपण्णपलिउंवमाइ खुंतोमुहुत्तूणाइं । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण साइरेग पलिउंवम उक्कोसेण नव पलिउंवमाइ । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाण खुपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि खुंतोमुहुत्तं । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाण पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण साइरेग पलिउंवम खुंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण नव पलिउंवमाइ खुतोमुहुत्तूणाइ । ईसाण कप्प खुपरिग्गहियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जह

कल्प पर्याप्तकदेवीना पृच्छा गौतम । जघन्येन सातिरेकं पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षत पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि । ईशाने कल्प परिगृहीताना देवीनां पृच्छा, गौ० । जघन्येन सातिरेकं पल्योपममुत्कर्षतो नव पल्योपमानि । ईशाने कल्प परिगृहीतानामपर्याप्तक देवीनां पृच्छा गौतम । जघन्यमप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । ईशान कल्पे परिगृहीताना पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा गौतम । जघन्येन सातिरेकं पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतो नवपल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि । ईशाने कल्पेऽपरिगृहीताना देवीनां पृच्छा गौतम । जघन्येन सातिरेक

पल्योपम अन्तर्मुहूर्त ऊन । उत्कृष्ट से पचावन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त ऊन । ईशाने कल्प परिग्रहिताय देवीयति । ईशान कल्पमें जिन परिग्रहीत देवीनां प्र उत्तर हे गौतम जघन्य से सातिरेक पल्योपम उत्कृष्ट से नव पल्योपम । ईशाने कल्प परिग्गहियाणं अपज्जत्तियदेवीयति । ईशानकल्पमें जिन परिग्रहीत पर्याप्तक देवीनां प्र उ हे गौतम जघन्य से भिन्न उत्कृष्ट से भिन्न अन्तर्मुहूर्त । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाणं पज्जत्तियाणं देवीण ईशान कल्पमें जिन परिग्रहीत पर्याप्त देवीनां प्र उ हे गौतम जघन्य से सातिरेक पल्योपम अन्तर्मुहूर्त ऊन उत्कृष्ट से नव पल्योपम अन्तर्मुहूर्त ऊन । ईसाणे कप्पे अपरिग्गहियाणं देवीण पुच्छा । ईशान कल्पमें जिन अपरिग्रहीत देवीनां प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य से सातिरेक पल्योपम उत्कृष्ट से पचावन पल्योपम । ईसाणे कप्पे अपरिग्गहियाणं अपज्जत्तियाणं देवीण पुच्छा । ईशान कल्पमें जिन अपरिग्रहीत अपर्याप्तक देवीनां प्र उ०

न्नेण साइरेग पलिओवम उक्कोसेण पणपन्नपलिओवमाइं । ईसाणे कप्पे अपरिग्गहियाण अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । इसाणे कप्पे अपरिग्गहियाण पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण साइरेग पलिओवम अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण पणपन्नपलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सणंकुमारे कप्पे देवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण दो सागरोवमाइं उक्कोसेण सत्त सागरोवमाइं । सणंकुमारे कप्पे अपज्जत्ताण देवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । सणंकुमारे कप्पे पज्जत्ताण देवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण दो सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण

पल्योपममुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमानि । ईशान कल्पेऽपरिगृहीतानामपर्याप्तकदेवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्यमोत्कर्षेणापन्तर्मुहूर्तम् । ईशान कल्पेऽपरिगृहीतानां पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा गौतम ! जघन्येन सातिरेकं पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमानि अन्तर्मुहूर्तोनानि । सनत्कुमार कल्पे देवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन द्वे सागरोपमे उत्कर्षतः सप्त सागरोपमाणि । सनत्कुमारे कल्पेऽपर्याप्तकदेवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । सनत्कुमार कल्पे पर्याप्तकानां देवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन द्वे सागरो

मो० जघन्य सो पिण उत्कृष्ट सो पिण अन्तर्मुहूर्त । इसाण कल्पे अपरिग्गहियाण पज्जत्तियाण देवीनी स्थिति । ईशान कल्पदेवताकने विषे अपरिगृहीत पर्याप्त देवीना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य सो सातिरेक पल्योपम अन्तर्मुहूर्त ऊन उत्कृष्ट सो पंचावन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त ऊन । सनत्कुमारे कल्पे देवाय पृच्छा । सनत्कुमार कल्पने विषे देवताना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य सो दोय सागरोपम उत्कृष्ट सो सात सागरोपम । सनत्कुमारे कल्पे अपर्याप्ताय देवाना । सनत्कुमार कल्पदेवताकने विषे अपर्याप्त देवताना प्र० उ० हे गो० जघन्य सो पिण उत्कृष्ट सो पिण अन्तर्मुहूर्त । सनत्कुमारे कल्पे पर्याप्ता देवति सनत्कुमार देवताकने विषे पर्याप्त देवना प्र० उ० हे गौतम जघन्य सो अन्तर्मुहूर्त ऊन दोय सागरोपम उत्कृष्ट सो अन्तर्मुहूर्त ऊन सात सागरोपम । सा

सत्त सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । माहिंदे कप्पे देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण साइरेगाइं दो सागरोवमाइं उक्कोसेण सत्त साहियाइं सागरोवमाइं । माहिंदे अपज्जत्ताण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसणवि अंतोमुहुत्तं । माहिंदे पज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण साइरेगाइं दो सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण सत्तसाहियाइं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । बम्भलोए कप्पे देवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण सत्तसागरोवमाइं उक्कोसेण दससागरोवमाइं । बम्भलोए अपज्जत्ताण पुच्छा ,

---

पमेन्तर्मुहूर्तोने उत्कर्षतः सप्तसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । माहेन्द्रे कल्पे देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सातिरेके द्वे सागरोपमे उत्कर्षतः सप्तसागरोपमाणि साधिकानि । माहेन्द्रे कल्पेऽपर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यमोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । माहेन्द्रे कल्पे पर्याप्तकानां देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सातिरेके द्वे सागरोपमेऽन्तर्मुहूर्तोने उत्कर्षतः सप्तसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । ब्रह्मलोके कल्पे देवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन सप्तसागरोपमाण्युत्कर्षतः दशसागरोपमाणि । ब्रह्मलोके कल्पेऽपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यमोत्कर्षतः

स्थिति कही है । माहेन्द्र देवलोक में देवताओं का प्र० उ० हे गौतम जघन्य दो सातिरेक दो सागरोपम उत्कृष्ट सात सागरोपम । माहेन्द्र कल्पे अपर्याप्त देवों की स्थिति । माहेन्द्र देवलोक में अपर्याप्त देवता का प्र० उ० हे गौतम जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त । माहेन्द्र पर्याप्त पृच्छा । माहेन्द्रदेवलोक में पर्याप्त देवता का प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य दो सातिरेक दो सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम । उत्कृष्ट सात अधिक सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम । ब्रह्मलोक कल्पे देवस्थिति । ब्रह्मलोक कल्प में देवताओं का प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य सात सागरोपम उत्कृष्ट दस सागरोपम । ब्रह्मलोक अपर्याप्त स्थिति । ब्रह्मलोक में अपर्याप्त देवताओं का प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त । ब्रह्मलोक पर्याप्त स्थिति । ब्रह्मलोक में पर्याप्त देवताओं का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य सात सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट दस साग

? गोयमा । जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । वंभलोए पज्जत्ताण पुच्छा , गोयमा । जहन्नेण सत्त सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उक्कोसेण दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । लंतए पुच्छा ? गो० । जह न्नेण दससागरोवमाइं उक्कोसेण चउदससागरोवमाइं । लंतए अपज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । लंतए पज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण चउदससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । महासुक्के देवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण चउदससा गरोवमाइं उक्कोसेण सत्तरससागरोवमाइं । महासुक्के अपज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसे

र्यान्तर्मुहूर्तम् । ब्रह्मलोके पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सप्तसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतो दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तो नानि । लान्तके पृच्छा गौ० । जघन्येन दशसागरोपमाण्युत्कर्षेण चतुर्दशसागरोपमाणि । लान्तकेऽपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षेण चान्तर्मुहूर्तम् । लान्तके पर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षेण चतुर्दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । महा शुक्रे देवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन चतुर्दश सागरोपमाण्युत्कर्षेण सप्तदश सागरोपमाणि । महाशुक्रेऽपर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघ न्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । महाशुक्रे पर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन चतुर्दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनान्युत्कर्षेण सप्तदशसागरोपमाण्य

षम र्यन्तर्मुहूर्त की कम । लंतक पृच्छा । भगवान् प्र उत्तर हे गौतम जघन्य की दश सागरोपम उत्कृष्ट की चवदे सागरोपम । लंतक अपर्या प्ति । लंतक देवलोकमें किय अपर्याप्त देवताको प्र उत्तर हे गौतम जघन्य को पिण उत्कृष्ट को पिण अन्तर्मुहूर्त । लंतए पज्जत्तापति । लंकमें किय पर्याप्त देवताका प्र उत्तर हे गौतम जघन्य की दस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त की कम उत्कृष्ट की अन्तर्मुहूर्त की कम चवदे सागरोपम । दानवेदराचति । महाशुक्र देवलोकमें किय देवताका प्र उत्तर हे गौतम जघन्य को चवदे सागरोपम उत्कृष्ट को सतरे सागरोपम । महाशुक्रे

णयि अंतोमुहुत्त । महासुक्के पज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण चोद्दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं
उक्कोसेण सत्तरसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सहस्सारे देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण सत्तरसाग
रोवमाइं उक्कोसेण अट्ठारससागरोवमाइं । सहस्सारे अपज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसे
णवि अंतोमुहुत्त । सहस्सारे पज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण सत्तरसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं
उक्कोसेण अट्ठारस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । आणए देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अट्ठारस

न्तर्मुहूर्तोनानि । सहस्रार देवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन सप्तदश सागरोपमाण्युत्कर्षेणाष्टादशसागरोपमाणि । सहस्रारेऽपर्याप्तकानां पृच्छा,
गौतम ! जघन्येनोत्कर्षेणान्तर्मुहूर्तम् । सहस्रारे पर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन सप्तदश सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तान्युत्कर्षतो ष्टादश
सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । आनत कल्प देवानां पृच्छा गौतम ! जघन्यनाष्टादशसागरोपमाण्युत्कर्षत एकोनविंशतिः सागरोपमाणि । आ
नत कल्पेऽपर्याप्तकानां देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षेणान्तर्मुहूर्तम् । आनते कल्पे पर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येना ष्टा

अपज्जत्तावंति । महाशुक्र देवलोकने विषे अपर्याप्त देवताना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त । महासुक्के पज्ज
त्तावंति । महाशुक्र विषे पर्याप्त देवताना प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी चउदे सागरोपम । अन्तर्मुहूर्त धाटि ऊण उत्कृष्ट थी सतरे सागरोपम अन्त
र्मुहूर्त धाटि ऊण । सहस्सारे देवावंति । सहस्रार देवलोकने विषे देवताना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी सतरह सागरोपम उत्कृष्ट थी अठारे सा
गरोपम । सहस्सारे अपज्जत्तावंति । सहस्रारकल्पने विषे अपर्याप्त देवताना प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त । सहस्सारे
पज्जत्ताण दसावंति । सहस्रारे कल्पने विषे पर्याप्त देवताना प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी सतरह सागरोपम अन्तर्मुहूर्त ऊण उत्कृष्ट थी अठारे
सागरोपम अन्तर्मुहूर्त ऊण । आणए कप्पेति । आनतकल्पे देवताना प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अठारे सागरोपम उत्कृष्टे उगणीस सागरोपम ।

? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । बंभलोए पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं सत्त सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उक्कोसेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । लंतए पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणं दससागरोवमाइं उक्कोसेणं चउद्दससागरोवमाइं । लंतए अपज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । लंतए पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं चउद्दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । महासुक्के देवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं चउद्दससागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्तरसागरोवमाइं । महासुक्के अपज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसे

णान्तर्मुहूर्तम् । ब्रह्मलोके पर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन सप्तसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतो दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । लान्तक पृच्छा गौ० ! जघन्येन दशसागरोपमाण्युत्कर्षतः चतुर्दशसागरोपमाणि । लान्तकेऽपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । लान्तकपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनान्युत्कर्षतश्चतुर्दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । महाशुक्रदेवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन चतुर्दश सागरोपमाण्युत्कर्षतः सप्तदश सागरोपमाणि । महाशुक्रेऽपर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । महाशुक्र पर्याप्तकानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन चतुर्दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनान्युत्कर्षतः सप्तदशसागरोपमाण्य

रोपम अन्तर्मुहूर्त की कम । लांतक पृच्छा ? उत्तर अहो गौतम जघन्य तो दस सागरोपम उत्कृष्ट तो चउदे सागरोपम । लांतक अपर्याप्ता पति । लांतक देवलोकमें विषे अपर्याप्त देवताओंको प्र उत्तर हे गौतम जघन्य तो भिण उत्कृष्ट तो भिण अन्तर्मुहूर्त । लांतक पर्याप्ता पति । तकमें विषे पर्याप्त देवताओंको प्र उत्तर हे गौतम जघन्य तो दस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त की कम उत्कृष्ट तो अन्तर्मुहूर्त की कम चउदे सागरोपम । देवदेवताओंकि । महाशुक्र देवलोकमें विषे देवताओंको प्र उत्तर हे गौतम जघन्य तो चउदे सागरोपम उत्कृष्ट तो सतरे सागरोपम । महाशुक्र

गोयमा ! जहन्नेण वीससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण एकवीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।
अच्चुएकप्पे देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण एक्कवीस सागरोवमाइं उक्कोसेण बावीससागरोवमाइं ।
अच्चुए अपज्जत्ताण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । अच्चुए पज्जत्ताण
देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण एकवीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण बावीस सागरोवमाइं
अंतोमुहुत्तूणाइं । हेठिम हेठिम गेविज्जदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण बावीससागरोवमाइं उक्को
सेण तवीससागरोवमाइं । हेठिम हेठिम अपज्जत्तदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतो
मुहुत्तं । हिठिम २ पज्जत्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण बावीससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्को

देवताना प्र० उ० हे गौ० जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अंतर्मुहूर्त । आरणकल्प पर्याप्ता देवता नी पृच्छा । आरणकल्पना विषे पर्याप्त देवता नो प्र० उ०
हे गौ० जघन्य तो वीससागरोपम अंतर्मुहूर्त ऊण उत्कृष्ट तो इकवीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त ऊण । अच्युतकल्प देवता नी पृच्छा । अच्युतकल्प ने विषे देव
ताना प्र० उ० हे गौ० जघन्य तो इकवीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त ऊण उत्कृष्ट तो बावीससागरोपम अंतर्मुहूर्त ऊण । अच्युतकल्प अपर्याप्त देवता नी पृच्छा ।
अच्युतकल्प ने विषे अपर्याप्त देवता ना प्र० उ० हे गौ० जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अंतर्मुहूर्त । अच्युतकल्पे पर्याप्ता नी पृच्छा । अच्युत कल्प ने विषे पर्याप्त
देवताना प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो इकवीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त ऊण उत्कृष्ट तो बावीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त ऊण । हिट्ठिमहिट्ठिम देवा नी
पृच्छा । हेठिमहेठिम देवताना प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो बावीस सागरोपम उत्कृष्ट तो पिण तेवीस सागरोपम । हिट्ठिमहिट्ठिम अपर्याप्ता नी ।
हिठिमहिठिम अपर्याप्त देवताना प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अंतर्मुहूर्त । हिट्ठिमहिट्ठिम पर्याप्ता नी । हेठिमहेठिम पर्याप्ता
ना प्र० उ० हे गौ० जघन्य तो बावीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त ऊण उत्कृष्ट तो तेवीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त ऊण । हेट्ठिमहेट्ठिमगेविज्जदेवा नी पृच्छा ।

सागरोवमाइं उक्कोसेण एगूणवीस सागरोवमाइं । आणए अपज्जत्ताण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । आणए पज्जत्ताण देवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण अठारस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण एगूणवीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । पाणए कप्पे देवाण पुच्छा, ? गोयमा ! जहन्नेण एगूणवीस सागरोवमाइं उक्कोसेण वीससागरोवमाइं । पाणए अपज्जत्ताण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पाणए पज्जत्ताण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण एगूणवीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण वीससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । आरणे देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण वीससागरोवमाइं उक्कोसेण एक्कवीस सागरोवमाइं । आरणे अपज्जत्ताण देवाण पुच्छा, गोयमा । जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । आरणे पज्जत्ताण देवाण पुच्छा,

---

दशसागरोपमाण्यन्तमुहूर्तोनानि उत्कृष्टतः विंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । अपर्याप्तग्रैवेयकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन च

आनत कल्प अपर्याप्तदेवानाम् । आनत कल्पे अपर्याप्त देवताओं प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य से भी अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट से भी अन्तर्मुहूर्त । आनत कल्पे पर्याप्तानाम् । आनतकल्पे पर्याप्त देवताओं प्र० उ० हे गौतम जघन्य अठारह सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट उन्नीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम । प्राणत कल्पे देवानां पृच्छायाम् । प्राणत कल्प में देवताओं प्र० उ० हे गौतम जघन्य से उन्नीस सागरोपम उत्कृष्ट से बीस सागरोपम । प्राणत अपर्याप्तानाम् । प्राणत कल्पे अपर्याप्त देवताओं प्र० उ० हे गौतम जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त । प्राणत पर्याप्तानाम् । प्राणत कल्पे पर्याप्त देवताओं प्र० उ० हे गौ० जघन्य से उन्नीससागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट बीससागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम । आरणकल्पे देवानां पृच्छेति । आरणकल्पे देवताओं उ० प्र० हे गौ० जघन्य से बीस सागरोपम उत्कृष्ट इक्कीससागरोपम । आरणकल्पे अपर्याप्तदेवानाम् । आरणकल्प में अपर्याप्त

ऊठेयाण पज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा! जहन्नेण चउवीस सागरोयमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेण पणवीस सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा! जहन्नेण पणवीस सागरोवमाइ उक्कोसेण छव्वीस सागरोवमाइ । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण अपज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । मज्झिमहिठिमगेविज्जदेवाण पज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण पणवीस सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेण छव्वीस सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ । मज्झिमर गेवि

ऽन्तर्मुहूर्तम् । उपरितनाधस्तनग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तानां पृच्छा गौ० । जघन्येन चतुर्विंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षेण पञ्चविंशति सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । मध्यमाधस्तनग्रैवेयकदेवानां पृच्छा, गौतम । जघन्येन पञ्चविंशतिसागरोपमाण्युत्कर्षतः षड्विंशति सागरोपमाणि । मध्यमाऽधस्तन ग्रैवेयकदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा गौतम । जघन्येनाप्युत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम् । मध्यमाधस्तनग्रैवेयकपर्याप्त देवानां पृच्छा, गौतम । जघन्येन पञ्चविंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षेण षड्विंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । मध्यममध्यम ग्रैवेयकदेवानां पृच्छा, गौतम । जघन्येन षड्विंशतिसागरोपमाणि उत्कर्षेण सप्तविंशतिसागरोपमाणि । मध्यममध्यमग्रैवेयके अपर्याप्तानां दे

उत्कृष्ट तो पचीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम । मध्यमहेठिमग्रैवेयकदेवाधिकार । मध्यम हेठिमग्रैवेयक देवताओं प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो पचीस सागरोपम उत्कृष्ट तो छब्बीस सागरोपम । मध्यम हेठिमग्रैवेयक अपर्याप्तदेवाधिकार । मध्यम हेठिम ग्रैवेयक के अपर्याप्त देवताओं प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो भी उत्कृष्ट तो भी अन्तर्मुहूर्त । मध्यमहेठिमग्रैवेयकपर्याप्तदेवाधिकार । मध्यम हेठिम ग्रैवेयक के पर्याप्त देवताओं प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो पचीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट तो छब्बीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम । मध्यम २ ग्रैवेयकदेवाधिकार । मध्यम २ ग्रैवेयक देवताओं प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो छब्बीस सागरोपम उत्कृष्ट तो सत्तावीस सागरोपम । मध्यम २ ग्रैवेयकअपर्याप्तदेवाधिकार । मध्यम२

सेणं तेवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । हिट्ठिममज्झिम गेविज्जदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं चोवीसं सागरोवमाइं । हिट्ठिममज्झिम अपज्जत्तयदेवाणं पुच्छा, गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । हिट्ठिममज्झिम पज्जत्तदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं चोवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । हिट्ठिमउवरिमगेविज्जदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं पणवीससागरोवमाइं । हेट्ठिमउवरिमगेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । हेट्ठिमउवरिमगेवि

तुर्विंशतिसागरोपमाण्युत्कर्षतः पञ्चविंशतिसागरोपमाणि । अधस्तनो परितन ग्रैवेयकदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनोत्कर्षत

अधस्तनाधस्तन ग्रैवेयक देवताओं प्रश्न उ० हे गौ० जघन्य तो स्थिति तेवीस सागरोपम उत्कृष्ट तो स्थिति बावीससागरोपम । हेट्ठिमहेट्ठिम अपज्जत्तदेवाणंति । अधस्तनाधस्तन ग्रैवेयकमें स्थित अपर्याप्त देवताओं प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य तो स्थिति उत्कृष्ट भी स्थिति अन्तर्मुहूर्त । हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जदेवाणं पुच्छेति । अधस्तनमध्यम ग्रैवेयकके देवताओं प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य तो स्थिति तेवीस सागरोपम उत्कृष्ट तो स्थिति बावीस सागरोपम । हेट्ठिममज्झिम अपज्जत्तदेवाणंति । इन्हें मध्यम अपर्याप्त देवताओं प्रश्न उ० हे गौतम ! जघन्य तो स्थिति उत्कृष्ट तो स्थिति अन्तमुहूर्त । हेट्ठिममज्झिम पज्जत्तदेवाणंति । हेट्ठिम मध्यम पर्याप्त देवताओं प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो तेवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट तो चोवीस सागरोपम अन्तमुहूर्त कम । हिट्ठिम उवरिमगेविज्जदेवाणंति । हेट्ठिम उपरिमग्रैवेयक देवताओं प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो चउवीस सागरोपम उत्कृष्ट तो पंचविंशति सागरोपम । हेट्ठिम उवरिमगेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणंति । हेट्ठिम उपरिमग्रैवेयक देवता अपर्याप्ता का प्र० उ० हे गौतम जघन्य भी स्थिति उत्कृष्ट भी स्थिति अन्तर्मुहूर्त । हेट्ठिमउवरिमगेविज्जदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छति । अ० हेट्ठिमउपरिम ग्रैवेयकमें पर्याप्त देवताओं प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो चोवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम

ज्जदेवाण पज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा! जहन्नेण चउवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण पणवीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा! जहन्नेण पणवीस सागरोवमाइं उक्कोसेण छव्वीसं सागरोवमाइं। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाण अपज्जत्ताण पुच्छा? गोयमा! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाण पज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा! जहन्नेण पणवीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण छव्वीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। मज्झिम२ गेवि

न्तर्मुहूर्तम्। अधस्तनोपरितनग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तानां पृच्छा, गौ०। जघन्येन चतुर्विंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षेण पञ्चविंशति सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि। मध्यमाधस्तनग्रैवेयकदेवानां पृच्छा गौतम! जघन्येन पञ्चविंशतिसागरोपमाण्युत्कर्षतः षड्विंशति सागरोपमाणि। मध्यमाऽधस्तनग्रैवेयकदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा गौतम! जघन्येनाप्युत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम्। मध्यमाधस्तनग्रैवेयकपर्याप्त देवानां पृच्छा गौतम! जघन्येन पञ्चविंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षेण षड्विंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि। मध्यममध्यम ग्रैवेयकदेवानां पृच्छा, गौतम! जघन्येन षड्विंशतिसागरोपमाणि उत्कर्षेण सप्तविंशतिसागरोपमाणि। मध्यममध्यमग्रैवेयके अपर्याप्तानां दे

उत्कृष्ट तो पचीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त ऊन। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणंति। मध्यम हेट्ठिम ग्रैवेयक देवताओं प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो पचीस सागरोपम उत्कृष्ट तो छवीस सागरोप। मज्झिम हेट्ठिमगेविज्ज अपज्जत्तदेवाणंति। मध्यम हेठिम ग्रैवेयक अपर्याप्त देवताओं प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अन्तर्मुहूर्त। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाण पज्जत्ताणंति। मध्यम हेठिम ग्रैवेयक पर्याप्त देवताओं प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो पचीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त ऊन उत्कृष्ट तो छवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त ऊन। मज्झिम २ गेविज्जदेवाणंति। मध्यम २ ग्रैवेयक देवताओं प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो छवीस सागरोपम उत्कृष्ट तो सत्तावीस सागरोपम। मज्झिम २ गेविज्ज अपज्जत्तदेवाणंति। मध्यम२

सेण तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । हिट्ठिममज्झिम गेविज्जदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण तेवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेण चोवीसं सागरोवमाइं । हिट्ठिममज्झिम अपज्जत्तयदेवाण पुच्छा, गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । हिट्ठिममज्झिम पज्जत्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण तेवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण चोवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । हिट्ठिमउवरिमगेविज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण चउवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेण पणवीससागरोवमाइं । हेट्ठिमउवरिमगेविज्जदेवाण अपज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । हेट्ठिमउवरिमगेवि

तुर्विंशतिसागरोपमाण्युत्कर्षतः पञ्चविंशतिसागरोपमाणि । अपर्याप्तानां परितन ग्रैवेयकदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनोत्कर्षत

हेट्ठिमहेट्ठिम ग्रैवेयकों देवताओं प्रश्न के उत्तर में हे गौतम ! जघन्य से तेवीस सागरोपम उत्कृष्ट से चौबीस सागरोपम । हेट्ठिमहेट्ठिम अपर्याप्तदेवावलि । हेट्ठिमहेट्ठिम ग्रैवेयक के अपर्याप्त देवताओं प्रश्न हे गौतम जघन्य से उत्कृष्ट से अन्तर्मुहूर्त । हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जदेवाणं पुच्छेति । हेट्ठिममध्यम ग्रैवेयकों देवताओं प्रश्न हे गौतम जघन्य से तेवीस सागरोपम उत्कृष्ट से चौबीस सागरोपम । हेट्ठिममज्झिम अपज्जत्तदेवाण ति । हेट्ठिम मध्यम अपर्याप्त देवताओं प्रश्न हे गौतम ! जघन्य से उत्कृष्ट से अन्तर्मुहूर्त । हेट्ठिममज्झिम पज्जत्तदेवाणवि । हेट्ठिम मध्यम पर्याप्त देवताओं प्र हे गौतम जघन्य से तेवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट से चौबीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम । हिट्ठिम उवरिमगेविज्जदेवाणति । हेट्ठिम उपरिमग्रैवेयक देवताओं प्र हे गौतम जघन्य से चउवीस सागरोपम उत्कृष्ट से पंचविंशति सागरोपम । हेट्ठिम उवरिमगेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणति । हेट्ठिम उपरिमग्रैवेयक देवता अपर्याप्त का प्र हे गौतम जघन्य से उत्कृष्ट से अन्तर्मुहूर्त । हेट्ठिमउवरिमगेविज्जदेवाणं पज्जत्ताण पुच्छति । हेट्ठिमउपरिम ग्रैवेयक पर्याप्त देवताओं प्र उत्तर हे गौतम जघन्य से चौवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम

ज्जदेवाण पज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा! जहन्नेण चउवीस सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेण पणवीस सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ। मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा। जहन्नेण पणवीस सागरोवमाइ उक्कोसेण छव्वीस सागरोवमाइ। मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण अपज्जत्ताण पुच्छा? गोयमा! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। मज्झिमहिठिमगेविज्जदेवाण पज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा! जहन्नेण पणवीस सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेण छव्वीस सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ। मज्झिम२ गेवि

न्तर्मुहूर्तम्। अधस्तनोपरितनग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तानां पृच्छा गौ०। जघन्येन चतुर्विंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षेण पञ्चविंशति सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि। मध्यमाधस्तनग्रैवेयकदेवानां पृच्छा गौतम! जघन्येन पञ्चविंशतिसागरोपमाण्युत्कर्षतः षड्विंशति सागरोपमाणि। मध्यमाऽधस्तनग्रैवेयकदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा गौतम! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्तम्। मध्यमाधस्तनग्रैवेयकपर्याप्तदेवानां पृच्छा गौतम! जघन्येन पञ्चविंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षेण षड्विंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि। मध्यममध्यमग्रैवेयकदेवानां पृच्छा, गौतम! जघन्येन षड्विंशतिसागरोपमाणि उत्कर्षेण सप्तविंशतिसागरोपमाणि। मध्यममध्यमग्रैवेयके अपर्याप्तानां दे

त्कृष्ट की पचीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम। मज्झिमहेट्ठिमगविज्जदेवाणंति। मध्यम हेट्ठिमग्रैवेयक देवताओं का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य की पचीस सागरोपम उत्कृष्ट की छब्बीस सागरोपम। मज्झिम हेट्ठिमगेविज्जग अपज्जत्तदेवाणंति। मध्यम हेठिम ग्रैवेयकना अपर्याप्त देवताओं का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य की भी उत्कृष्ट की भी अन्तर्मुहूर्त। मज्झिमहेट्ठिमगविज्जदेवाण पज्जत्ताणंति। मध्यम हेठिम ग्रैवेयकना पर्याप्त देवताओं का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य की पचीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट की छब्बीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम। मज्झिम २ गेविज्जदेवाणंति। मध्यम २ ग्रैवेयक देवताओं का प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य की छब्बीस सागरोपम उत्कृष्ट की सत्तावीस सागरोपम। मज्झिम २ गेविज्ज अपज्जत्तदेवाणंति। मध्यम२

मेण तेवीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । हिट्ठिममज्झिम गेविज्जदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण तेवीस सागरोवमाइं उक्कोसेण चोवीस सागरोवमाइं । हिट्ठिममज्झिम अपज्जत्तयदेवाण पुच्छा, गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । हिट्ठिममज्झिम पज्जत्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण तेवीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण चोवीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । हिट्ठिमउवरिमगेविज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण चउवीस सागरोवमाइं उक्कोसेण पणवीससागरोवमाइं । हेट्ठिमउवरिमगेविज्जदेवाण अपज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । हेट्ठिमउवरिमगेवि

तुर्विंशतिसागरोपमाण्युत्कर्षतः पञ्चविंशतिसागरोपमाणि । अधस्तनो परितन ग्रैवेयकदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा गौतम । अधन्येनोत्कर्षत

हिट्ठिमहिट्ठिम गेवेज्जदेवाणं भंते ! ... जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं चोवीसं सागरोवमाइं । हेट्ठिमहेट्ठिम अपज्जत्तदेवाणं पुच्छा ... हिट्ठिमहेट्ठिम गेवेज्ज अपज्जत्तदेवाणं ... गोयमा जहन्नेणं ... उक्कोसेण ... अंतोमुहुत्तं । हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जदेवाणं पुच्छेति । हिट्ठिममज्झिम गेवेज्जदेवाणं ... गोयमा जहन्नेण ... तेवीस सागरोवमं उक्कोसेण ... चोवीसं सागरोवमं । हेट्ठिममज्झिम अपज्जत्तदेवाणं ... हेट्ठिममज्झिम अपज्जत्तदेवाणं ... गोयमा । जहन्नेण ... उक्कोसेण ... अंतोमुहुत्तं । हेट्ठिममज्झिम पज्जत्तदेवाणंति । हेट्ठिम मज्झिम पज्जत्त देवाणं ... गोयमा जहन्नेण तेवीस सागरोवमं अंतोमुहुत्तं ऊणं उक्कोसेण चोवीस सागरोवमं अंतोमुहुत्तं ऊणं । हिट्ठिम उवरिमगेविज्जदेवाणंति । हेट्ठिम उवरिमगेवेज्ज देवाणं ... गोयमा जहन्नेण चउवीसं सागरोवमं उक्कोसेण पणवीसं सागरोवमं । हेट्ठिम उवरिमगेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणंति । हेट्ठिम उवरिमगेवेज्ज देवा अपज्जत्ता ... गोयमा जहन्नेण ... उक्कोसेण ... अंतोमुहुत्तं । हेट्ठिमउवरिमगेविज्जदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छत्ति । ... उवरिम गेवेज्जा पज्जत्त देवाणं ... गोयमा जहन्नेण चोवीस सागरोवमं अंतोमुहुत्तं ऊणं

ण सत्तावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण अट्ठावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उवरिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं । उवरिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । उवरिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उवरिममज्झिमगेविज्जदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं । उवरिममज्झिमगेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणं

धस्तनग्रैवेयकदेवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन अष्टाविंशतिसागरोपमाणि उत्कर्षेण एकोनत्रिंशत्सागरोपमाणि । उपरितनाधस्तनग्रैवेयकदेवानाम् अपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम् । उपरितनाधस्तनग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाष्टाविंशतिं सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षेण एकोनत्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । उपरितनमध्यमग्रैवेयकदेवानां पृच्छा,

अन्तर्मुहूर्त कम उत्कर्ष की अट्ठाईस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम । उवरिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणंति उपरिमहेठिम ग्रैवेयकना देवताना प्र० उ० हे गौतम जघन्य की अट्ठाईस सागरोपम उत्कृष्ट की उगणतीस सागरोपम नी स्थिति । उवरिम हेट्ठिमगेविज्जग अपज्जत्तदेवाणंति । उपरिम हेठिम ग्रैवेयकना अपर्याप्त देवताना प्र० उ० हे गौतम जघन्य भी तिम उत्कृष्ट भी तिम अन्तर्मुहूर्त । उवरिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणं पज्जत्ताणंति उपरिम अधस्तन ग्रैवेयकना देवता पर्याप्ता नी प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य की अट्ठाईस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त ऊन उत्कृष्ट की एगणतीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त ऊन । उवरिममज्झिमगेविज्जदेवाणंति । उपरिममध्यमग्रैवेयकना देवताना प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य की एगणतीस सागरोपम उत्कृष्ट की तीस सागरोपम । उवरिममज्झिमगेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणंति । उपरिममध्यम ग्रैवेयकना अपर्याप्त देवताना प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य की तिम उत्कर्ष की तिम अंतर्मु

ऊद्देवाण पुच्छा, गोयमा! जहण्णेण छव्वीस सागरोवमाइं उक्कोसेण सत्तावीस सागरोवमाइं। मज्झिम२ गेविज्जदेवाण अपज्जत्ताण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। मज्झिम२ गेविज्जदेवाण पज्जत्ताण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण छव्वीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण सत्तावीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। मज्झिमउवरिमगेविज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा! जहण्णेण सत्तावीस सागरोवमाइं उक्कोसेण अट्ठावीस सागरोवमाइं। मज्झिमउवरिमगेविज्जदेवाण अपज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। मज्झिमउवरिमगेविज्जदेवाण पज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा! जहण्णे

वानां पृच्छा, गौतम! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्तानां तथैव पृच्छा गौतम! जघन्यम् षड्विंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतः सप्तविंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि। मध्यमोपरितनग्रैवेयकदेवानां पृच्छा गौतम! जघन्यम् सप्तविंशतिसागरोपमाणि उत्कर्षतः अष्टाविंशतिसागरोपमाणि। तथैवापर्याप्तानां पृच्छा गौतम! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम्। मध्यमोपरिम ग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तानां पृच्छा, गौतम! जघन्येन सप्तविंशतिसागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतः अष्टाविंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि। उपरितना

ग्रैवेयक के अपर्याप्त देवताओं के प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो स्थिति उत्कृष्ट तो स्थिति अन्तर्मुहूर्त। मज्झिम २ गविज्जदेवाण अपज्जत्ताणं ति। मध्यम २ ग्रैवेयक के पर्याप्त देवताओं के प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो छब्बीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट तो सत्तावीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम। मज्झिमउवरिमगविज्जदेवाणं ति। मध्यम उपरिम ग्रैवेयक के देवताओं के प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो सत्तावीस सागरोपम उत्कृष्ट तो अट्ठावीस सागरोपम। मज्झिमउवरिमगेविज्जग अपज्जत्तदेवाणं ति। मध्यम उपरिम ग्रैवेयक के अपर्याप्त देवताओं के प्र० हे गौतम जघन्य तो स्थिति उत्कृष्ट तो स्थिति अन्तर्मुहूर्त। मज्झिमउवरिमगविज्जग पज्जत्तदेवाणं ति। मध्यम उपरिम ग्रैवेयक के पर्याप्त देवताओं के प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो सत्तावीस सागरोपम

उक्कोसेण एक्कतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । विजयवेजयंतजयंतअपराजिएसु णं भंते देवाणं केवइ य कालं ठिइ पणत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कतीसं सागरोवमाइं उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिइ पणत्ता ? गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिइ पणत्ता । सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं अपज्जत्ताणं

तेषु भदन्त ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनैकत्रिंशत्सागरोपमाण्युत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । विजयवैजयन्तजयन्तापराजितदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । विजयवैजयन्तजयन्तापराजितेषु पर्याप्तदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनैकत्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सर्वार्थसिद्धकदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! अजघन्यानुत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता । सर्वार्थसिद्धकदेवानामपर्याप्तका

जयंत अपराजित विमान ना देवतानी प्र० उ० हे गौतम जघन्य तो एकत्रीस सागरोपम उत्कृष्ट तो तेत्रीस सागरोपम । विजयवैजयंतजयंत अपराजितदेवाणं अपज्जत्ताणं । विजय वैजयंत जयंत अपराजितना अपर्याप्त देवतानी प्र० उ० हे गो० जघन्य तो पिण उत्कृष्ट तो पिण अंतमुहूर्त्त । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाणं पज्जत्ताणं । विजय वैजयंत जयंत अपराजित विमानना पर्याप्त देवतानी प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य तो एकत्रीस सागरोपम अंतमुहूर्त्त ऊन उत्कृष्ट तो तेत्रीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त्त ऊन । सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं भंते केवइयंति । सर्वार्थसिद्ध विमानना देवतानो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम अजघन्य अनुत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपम नी कही । सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं अपज्जत्ताणंति । सर्वा

पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । उवरिममज्झिमगेविज्जगदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उवरिम २ गेविज्जगदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं तीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं । उवरिम २ गेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । उवरिम २ गेविज्जदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा जहन्नेणं तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं

गौतम ! जघन्येनैकोनत्रिंशत्सागरोपमाण्युत्कर्षतः त्रिंशत्सागरोपमाणि । उपरितनमध्यमग्रैवेयकदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । उपरितनमध्यमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनैकोनत्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनान्युत्कर्षतः त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । उपरिमोपरिमग्रैवेयकदेवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येन त्रिंशत्सागरोपमाण्युत्कर्षतः एकत्रिंशत्सागरोपमाणि । उपरिमोपरिमग्रैवेयकापर्याप्तकदेवानां पृच्छा गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । उपरिमोपरिमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतः एकत्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । विजयवैजयन्तजयन्तापराजि

हैं। ऊपरिममध्यमग्रैवेयकदेवोंकी पृच्छा करते हैं । उपरिममध्यम ग्रैवेयकके पर्याप्त देवताओंका प्रश्न ? हे गौतम जघन्य तो एकुणतीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट तो तीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम । ऊपरिम २ ग्रैवेयकदेवोंकी पृच्छा करते हैं । उपरिम२ ग्रैवेयकके देवताओंका प्रश्न ? हे गौतम जघन्य तो तीस सागरोपम उत्कृष्ट तो एकतीस सागरोपम । ऊपरिम २ ग्रैवेयकदेवोंके अपर्याप्ताकी पृच्छा करते हैं। उपरिम २ ग्रैवेयकके अपर्याप्त देवताओंका प्रश्न ? हे गौतम जघन्य तो भी उत्कृष्ट तो भी अन्तर्मुहूर्त । ऊपरिम २ पर्याप्तदेवोंकी पृच्छा करते हैं। ऊपरिमोपरिम ग्रैवेयकके पर्याप्त देवताओंका प्रश्न ? हे गौतम जघन्य तो तीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट तो एकतीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम । विजयवैजयन्तजयन्तापराजितदेवोंकी पृच्छा करते हैं। विजयवैजयन्त

वाद्याजीवाय द्रव्यावि, द्रव्यस्वयं चेदं "गुणपर्यायवद्द्रव्यमिति" ततो जीवाजीवपर्यायभेदावगमाय मेयं पृष्टवान् तथाच भगवानपि निर्वचनमेव माह-गा० । दुविहा पज्जवा प त-जीवपज्जवा य अजीवपज्जवा य इति ॥ तत्र पर्याया गुणा विशेषा धर्मा इत्यनर्थान्तर नतु सम्बन्धप्रतिपादय तन्मूलं इत्यौदयिकादिनावाप्यपर्यायपरिमाणाऽवधारण प्रतिपाद्यत इति औदयिकादयश्च भावा जीवाश्रया ततो जीवपर्याया एव मन्तव्ये यच वास्मिन्नियपनसूत्रे द्रव्यानामपि पर्याया उक्ता ततो न सुदरः सम्बन्ध तद्युक्तमभिप्रायापारिज्ञानात् औदयिकोऽपि भावः पुद्गलवृत्तिरपि नवति ततो जीवाजीवप्रदेशोदयिकभावस्य द्वैविध्या स सम्बन्धः, अथ न निवचनसूत्रयो विरोध ' सम्प्रति सम्बन्धपरिमाणावगमाय पृच्छति-जी वपज्जवाण भंते । किं संखेज्जा इत्यादि ॥ इह यस्माद्वनस्पतिविहवर्जं सर्वेऽपि नैरयिकादयः प्रत्येकमसङ्ख्येया मनुष्यस्तसङ्ख्यस्य सम्मूर्च्छिममनुष्यापेक्षया वनस्पतयः सिद्धाश्च प्रत्येकमनन्ता ततः पर्यायिणामनन्तत्वा दनन्तमन्ता जीवपर्यायाः तदर्थं गौतमेन सामान्यतो जीवपर्यायाः पृष्टा भगवानपि

दुविहा पज्जवा, तंजहा—जीवपज्जवा य अजीवपज्जवा य । जीवपज्जवाणं भंते ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नोसंखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवपज्जवा नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! असंखेज्जा णेरइया असंखेज्जा असुरा असंखेज्जा नागा

येन साजीवपर्यायाः । जीवपर्याया भदन्त ! किं सङ्ख्येयाः असङ्ख्येया अनन्ताः ? गौतम ! नोसङ्ख्येया नोऽसंख्येया अनन्ताः । अथ कस्मादेवं भदन्त ! एवमुच्यते-जीवपर्याया नो सङ्ख्येया नो असंख्येया अनन्ताः ? गौतम ! असङ्ख्येया नैरयिका असङ्ख्येया असुरा असङ्ख्येया नागा असङ्ख्येयाः

र पर्याय हे भगवन् सङ्ख्याता असङ्ख्याता अनन्ता छे प्रश्न उत्तर हे गौतम जीव पर्याय सङ्ख्याता नथी असङ्ख्याता पिण नथी अनन्ता छे । तेह शामा टे हे भगवन् इम कह्या जीवपर्याय सङ्ख्याता नथी असङ्ख्याता पिण नथी अनन्ता छे प्रश्न उत्तर हे गौतम असङ्ख्याता नारकी छे असङ्ख्याता असुर छे अस ङ्ख्याता नाग छे असङ्ख्यात सुवर्णकुमार छे असङ्ख्याता विद्युत्कुमार छे असङ्ख्याता अग्निकुमार छे असङ्ख्याता द्वीपकुमार छे असङ्ख्याता उदधिकुमा

गाग मथ सूर्यादिविमानेष्वपि भावनीय । इतिश्री मलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां चतुर्थं स्थितास्य पद समाप्त ॥ ४ ॥

दुर्य व्याख्यात चतुर्थपदमिदानीं पञ्चममारभ्यते तस्य चायमभिसम्बन्धः इहानन्तरपद नारकादिपर्यायरूपस्य सत्त्वानामवस्थितिरुक्ता इहत्वौ
दयिकक्षायोपशमिकक्षायिकभावाश्रयपर्यायप्रकारं प्रतिपाद्यते तत्रेदमादिम सूत्र-कतिविहा णं भंते । पज्जवा पन्नत्ता इति । अथ कस्मान्निम
वेव गौतमस्वामिना भगवानेव पृष्टः? उच्यते-उक्तमादौ प्रथमपदे प्रज्ञापना द्विविधा: प्रज्ञप्ता तद्यथा-जीवप्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापना चेति तत्र जी

पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । सव्वट्ठसिद्धदेवाणं पज्जत्ताणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ठिई पण्णत्ता । पण्णव णाए भगवतीए चउत्थं ठिइपदं समत्तं ॥ ४ ॥ कइविहा णं भंते! पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा !

मा पृच्छा गौतम ! जघन्यतोऽप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । सर्वार्थसिद्धकदेवानां भदन्त ! पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! अजघन्यानुत्कर्षेण त्र यस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि स्थितिः प्रज्ञप्ता ॥ इतिश्रीप्रज्ञापनासूत्रसस्कृतानुवादे रामचन्द्रगणिविनयेन मानविजयेन विरचित चतुर्थं स्थितिपदं सम्पूर्णम् ॥ ४ ॥ कतिविधा भदन्त ! पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-जीवप

र्वसिद्ध विमानना अपर्याप्त देवताओ हे भगवन् केटला कालनी स्थिति कही ? उ० हे गौतम जघन्य थी पण उत्कर्ष थी पण अन्तर्मुहूर्त नी कही
सर्वार्थसिद्ध विमानना पर्याप्त देवताओ केटला कालनी स्थिति कही ? उत्तर हे गौतम अजघन्य थी अनुत्कृष्ट थी
तेत्रीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त न्यून नी कही । एतले प्रज्ञापना नो चौथा स्थिति पद पूर्ण थया ॥ ४ ॥ चतुर्थ पदमें विषे नारकादि पर्या
यरूप थी जीव नी स्थिति कही हवे पञ्चम पदने विषे तो औदयिक क्षायोपशमिक क्षायिक भाव आश्री पर्याय ना प्रकारपणा कहिये—इति विचार्य
भंतेति । प्रश्ने भदंत हे भगवन् पर्याय केटला प्रकार कह्या उत्तर हे गौतम बे प्रकार कह्या ते कहिये—जीव पर्याव अने अजीव पर्याव । जीवपर्यायाश्च भवन्ति । जी

यय पर्यायाणामानन्त्यं कथं घटते इति पृष्टे तदेव पर्यायाणामानन्त्यं यथायुक्त्युपपन्नं भवति तथा निरूपणीय मान्यत्, ततः केनाभिप्रायेण भग

यामेवं निर्वचनमवादि नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्य इति ? उच्यते एकमपि द्रव्यमनन्तपर्यायमित्यस्य न्यायस्य प्रदर्शनाय तत्र यस्मादि

दमपि नारकजीवद्रव्यमेकसङ्ख्याऽवरुद्धमिदमिति नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यो द्रव्यमेवार्थो द्रव्यार्थः सङ्ख्यायाः द्रव्यायतया तथा तुल्य एव तावद्द्रव्या

दमपि नारकजीवद्रव्यं लोकाकाशप्रदेशपरिमाणप्रदेशमिति यतया तुल्यत्वमभिहितं मिदानीं प्रदेशार्थतामधिकृत्य तुल्यत्वमाह पएसट्ठयाए तुल्ले ॥ इदमपि नारकजीवद्रव्यं लोकाकाशप्रदेशपरिमाणप्रदेशमिति

प्रदेशार्थतयापि नैरयिको नैरयिकस्य तुल्यः प्रदेशापेक्षया। प्रदेशापेक्षयाऽवः प्रदेशार्थता तया प्रदेशार्थतया कस्मादभिहितमितिचेत्? उच्यते-द्र

व्यद्वैविध्यप्रदर्शनार्थं तथाहि-द्विविधं द्रव्यं प्रदेशवत् अप्रदेशवच, तत्र परमाणुरप्रदेशो द्विप्रदेशादिकं तु प्रदेशवत् एतत् द्रव्यद्वैविध्यं पुद्गलास्ति

एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तेणं णोसंखेज्जा नो असंखिज्जा अणंता । णेरइयाणं भंते ! केवइया प

ज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—णेरइयाणं अणंता प

ज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! णेरइए णेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले उग्गाहणट्ठयाए सियहीणे

ष्या असङ्ख्येया वानव्यन्तरा असङ्ख्येया ज्योतिष्का असङ्ख्येया वैमानिका अनन्ताः सिद्धा एतेनार्थेन गौतम । एवमुच्यते-ते (जीवपर्यायाः) नो

य सङ्ख्येया नैवासङ्ख्येया अनन्ताः । नैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ता । अथ केनार्थेन भद

न्त ! एवमुच्यते-नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया

जीव सङ्ख्याता नथी असङ्ख्याता पिण नथी अनन्ता छे । नारकी नाहि ह भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र उत्तर ह गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते

कवि पर्वे हे भगवन् एम कह्यो के नारकी ना पर्याय अनन्ता छे प्र उत्तर हे गौतम नारकी नारकीने द्रव्यार्थपणे करी तुल्य छे पणे प्रदेशार्थपणे करी

पिण नारकी नारकीने समछे नारक जीव द्रव्य लोकाकाशप्रदेश परिमाण प्रदेशीछे तेथी अवगाहनार्थतायें करी कदाचित् हीन थाओ अवगाहना

च सामान्येन निर्वचनमुक्त्वान् इदानीं विशेषनिर्वचनमाह गौतम आह-नैरयिकाः भंते ! केवइया पज्जवा पन्नत्ता इति ॥ अथ कस्मादभिप्रायेणैव गौ तमः पृष्टवान् ? उच्यते-पूर्वं किल साम न्यप्रश्ने पर्यायिकामनन्तत्वात् पर्यायाणामानन्त्यमुक्तं यत्र पुन पर्यायिकामानन्त्य नास्ति तत्र कथमिति प्र श्नाति नरइयाणमित्यादि ॥ तत्रापि निर्वचनमिदमनन्ता इति यत्रैव आत्मभयः प्रश्न इति केवेवढेव भंते ! इत्यादि ॥ अथ कस्मादेवं कम आर क्रम इतुना प्रदत्त ! एवमुच्यते-नैरयिकाणां पर्याया एव अनन्ता इति भगवानाह-गोयमा ! नेरइए नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले इत्यादि ॥

असंखेज्जा सुवण्णा असंखेज्जा विज्जुकुमारा असंखेज्जा अग्गिकुमारा असंखेज्जा दीवकुमारा असंखिज्जा उदहिकुमारा असंखेज्जा दिसाकुमारा असंखेज्जा वायुकुमारा असंखेज्जा थणियकुमारा असंखिज्जा पुढवि काइया असंखिज्जा आउकाइया असंखेज्जा तेउकाइया असंखेज्जा वाउकाइया अणंता वणस्सइकाइया असंखेज्जा बेइंदिया असंखेज्जा तेइंदिया असंखेज्जा चउरिंदिया असंखेज्जा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया असंखेज्जा मणुस्सा असंखेज्जा वाणमंतरा असंखेज्जा जोइसिया असंखेज्जा वेमाणिया अणंता सिद्धा से

सुपर्णा असंख्येया विद्युत्कुमारा असंख्येया अग्निकुमारा असंख्येया द्वीपकुमारा असंख्येया उदधिकुमारा असंख्येया दिक्कुमारा असंख्येया वा युकुमारा असंख्येयाः स्तनितकुमारा असंख्येयाः पृथिवीकायिका असंख्येया अप्कायिका असंख्येया तेजस्कायिका असंख्येया वायुकायिका अ नन्ता वनस्पतिकायिका असंख्येया द्वीन्द्रिया असंख्येयास्त्रीन्द्रिया असंख्येया चतुरिन्द्रिया असंख्येया पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका असंख्येया मनु

एवं असखात दिसाकुमार असंखाता वाउकुमार असंखाता थणितकुमार असंखाता पुढवीकायिक असंखात अपकायिक असंखाता तेजस्का यिक असंखाता वाउकायिक अनंता वनस्पतिकायिक असंखाता बेरिन्द्री असंखात तेरिन्द्री असंखाता चौरिन्द्री असंखाता पंचेन्द्रिय तिर्यच यो निक असंखाता मनुष्य असंखाता वाणव्यंतर असंखाता जोतिषी असंखाता वैमानिक अनन्ता सिद्ध ते तेणे अर्थे हे गोतम इम कह्या जीवना प

अथ पर्यायाणामानन्त्यं कथं घटते इति पृष्टे सदैव पर्यायाणामानन्त्यं यथा सुष्ठूपपन्नं भवति तथा निर्वचनीय मास्यत्, ततः केनाभिप्रायेण भग यामेवं निर्वचनमवादि नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्य इति ? उच्यते-एकमपि द्रव्यमनन्तपर्यायमित्यस्य न्यायस्य प्रदर्शनार्थं तत्र यस्मादि इमपि नारकजीवद्रव्यमेकमेकाऽवगहमिदमिति नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यो द्रव्यमेवार्थो द्रव्यार्थं स्तद्भावो द्रव्यार्थता तया तुल्य एव तावद्द्रव्या र्थतया तुल्यत्वमभिहित मिदानीं प्रदेशार्थतामधिकृत्य तुल्यत्वमाह-पएसठ्ठयाए तुल्ले ॥ इदमपि नारकजीवद्रव्यं लोकाकाशप्रदेशपरिमाणप्रदेशमिति प्रदेशार्थतयापि नैरयिको नैरयिकस्य तुल्यः प्रदेशरूपार्थः प्रदेशार्थस्तद्भावः प्रदेशार्थता तया प्रदेशार्थतया कस्मादभिहितमितिचेत् ? उच्यत-द्र व्यद्वैविध्यप्रदर्शनार्थं तथाहि-द्विविधं द्रव्यं प्रदेशवत् अप्रदेशवच्च, तत्र परमाणुरप्रदेशो द्विप्रदेशादिकं तु प्रदेशवत् एतच्च द्रव्यद्वैविध्यं पुद्गलास्ति

एएणठ्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—तेणं णोसंखेज्जा नो असंखिज्जा अणंता । णेरइयाणं भंते ! केवइया प ज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणठ्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—णेरइयाणं अणंता प ज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! णेरइए णेरइयस्स दव्वठ्ठयाए तुल्ले पदेसठ्ठयाए तुल्ले उग्गाहणठ्ठयाए सियहीणे

या असंख्येया वानव्यन्तरा असंख्येया ज्योतिष्का असंख्येया वैमानिका अनन्ताः सिद्धा अनन्तार्थेन गौतम ! एवमुच्यते-ते (जीवपर्यवाः) नो व संख्येया नोवासंख्येया अनन्ता । नैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्ययाः प्रज्ञप्ता । अथ केनार्थेन भद न्त ! एवमुच्यते नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया

जीव संख्याता नथी असंख्याता पिण नथी अनन्ता छे । नारकी ना कि भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते ओ किम् हे भगवन् इम कह्यो ते नारकी ना पर्याय अनन्ता छे प्र उत्तर हे गौतम नारकी नारकीने द्रव्याथ पणे करी तुल्य छे वली प्रदेशार्थ पणे करी पिण नारकी नारकीने सरखे नारक जीव द्रव्य लोकाकाशप्रदेश परिमाण प्रदेशीक तेथी प्रदेशार्थतायें करी कदाचित् हीन मात्रो अवगाहना

च सामान्येन निर्वचनमुक्तवान्' इदानीं विशेषविषयप्रश्न गौतम आह-नेरइयाणं भंते । केवइया पज्जवा पन्नत्ता इति ॥ अथ कनाभिप्रायेणैव गौ तमः पृष्टवान् ? उच्यते-पूर्वं किल नाम च्यमझे पर्यायिनामनन्तत्वात पर्यायाणामानन्त्यमुक्तं अत्र पुनः पर्यायिणामानन्त्यं नास्ति तत्र कथमिति प्व्यति-नरइयाणमित्यादि ॥ तथापि निवचनमिदमनन्ता इति अवैव जातसंशयः प्रश्न इति येणेकडेण भंते । इत्यादि ॥ अथ कनार्थेन कम आर सम कन इतुना प्रदत्त । एवमुच्यते-नैरयिकाणां पर्याया एव मनन्ता इति भगवानाह-गोयमा । नेरइए नेरइयस्स दव्वट्टयाए तुल्ले इत्यादि ॥

असंखेज्जा सुवण्णा असंखेज्जा विज्जुकुमारा असंखेज्जा अग्गिकुमारा असंखेज्जा दीवकुमारा असंखिज्जा उदहिकुमारा असंखेज्जा दिसाकुमारा असंखेज्जा वायुकुमारा असंखेज्जा थणियकुमारा असंखिज्जा पुढविकाइया असंखिज्जा आउकाइया असंखेज्जा तेउकाइया असंखेज्जा वाउकाइया अणंता वणस्सइकाइया असंखेज्जा बेइंदिया असंखेज्जा तेइंदिया असंखेज्जा चउरिंदिया असंखेज्जा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया असंखेज्जा मणुस्सा असंखेज्जा वाणमंतरा असंखेज्जा जोइसिया असंखेज्जा वेमाणिया अणंता सिद्धा से

सुपर्णा असंख्येया विद्युत्कुमारा असंख्येया अग्निकुमारा असंख्येया द्वीपकुमारा असंख्येया उदधिकुमारा असंख्येया दिक्कुमारा असंख्येया वायुकुमारा असंख्येयाः स्तनितकुमारा असंख्येयाः पृथिवीकायिका असंख्येया अप्कायिका असंख्येया तेजस्कायिका असंख्येया वायुकायिका अनन्ता वनस्पतिकायिका असंख्येया द्वीन्द्रिया असंख्येयास्त्रीन्द्रिया असंख्येया चतुरिन्द्रिया असंख्येया पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका असंख्येया मनु

ये असंख्यात दिशाकुमार असंख्याता वायुकुमार असंख्याता स्तनितकुमार असंख्याता पृथिवीकायिक असंख्यात अप्कायिक असंख्याता तेजस्कायिक असंख्याता वायुकायिक अनन्ता वनस्पतिकायिक असंख्याता बेइन्द्री असंख्यात तेइन्द्री असंख्याता चौरिन्द्री असंख्याता पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक असंख्याता मनुष्य असंख्याता वाणव्यन्तर असंख्याता ज्योतिषी असंख्याता वैमानिक अनन्ता सिद्ध ते तेणे अर्थे हे गौतम इम कह्या जीवना प

यय पर्यायाणामानन्त्यं कथ घटते इति पृष्टे तदैव पर्यायाणामानन्त्य यथायुक्त्युपपन्न भवति तथा निर्वचनीय मान्यत्, ततः केमाभिप्रायेण भग
वानेवं निर्वचनमवाचि नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्य इति ? उच्यते एकमपि द्रव्यमनन्तपर्यायमित्यस्य न्यायस्य प्रदर्शनार्थ तत्र यस्मादि
दमपि नारकजीवद्रव्यमेकसङ्ख्याऽवरुद्धमिदमपि नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यो द्रव्यमेवार्थो द्रव्यार्थे सद्भावो द्रव्यार्थता तया तुल्य एव तावद्द्रव्या
र्थतया तुल्यत्वमभिहित मिदानीं प्रदेशार्थतामधिकृत्य तुल्यत्वमाह पएसट्ठयाए तुल्ले । इदमपि नारकजीवद्रव्य लोकाकाशप्रदेशपरिमाणप्रदेशमिति
प्रदेशार्थतयापि नैरयिको नैरयिकस्य तुल्यः प्रदेशएवार्थः प्रदेशार्थस्तद्भावः प्रदेशार्थता तया प्रदेशार्थतया कस्मादभिहितमितिचेत् ? उच्यते–द्र
व्यद्वैविध्यप्रदर्शनार्थ तथाहि–द्विविधं द्रव्य प्रदेशवत् अप्रदेशवच, तत्र परमाणुरप्रदेशो द्विप्रदेशादिकं तु प्रदेशवत् एतच द्रव्यद्वैविध्य पुद्गलास्ति

एएणठेण गोयमा ! एव वुच्चइ–तेण णोसखेज्जा नो असखिज्जा अणता । णेरइयाण भंते ! केवइया प
ज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता । से केणठेण भंते ! एव वुच्चइ–णेरइयाण अणता प
ज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! णेरइए णेरइयस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले उग्गाहणठयाए सियहीणे

ख्या असङ्ख्येया वानव्यन्तरा असङ्ख्येया ज्योतिष्का असङ्ख्येया वैमानिका अनन्ताः सिद्धा इत्यनेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते–ते (जीवपर्यया) नो
न सङ्ख्येया नैवासंख्येया अनन्ताः । नैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भद
न्त ! एवमुच्यते नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्य प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया

जीव सख्याता नथी असख्याता पिण नथी अनन्ता छे । नारकी नाहि हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते
कहे यर्थ हे भगवन् इम कह्यो के नारकी ना पर्याय अनन्ता छे प्र उत्तर हे गौतम नारकी नारकीने द्रव्यार्थ पणे करी तुल्य छे वली प्रदेशार्थ पणे करी
पिण नारकी नारकीने समछे नारक जीव द्रव्य लोकाकाशप्रदेश परिमाण प्रदेशोछ तेथी अवगाहनायतायें करी कदाचित् हीन थाको अवगाहना

च सामान्येन निवचनमुक्तवान् इदानीं विशेषविषयप्रश्न गौतम आह–नरइयाणं भंते । केवइया पज्जवा पन्नत्ता इति ॥ अथ केनाभिप्रायेणैवं गौ तम पृष्टवान् ? उच्यते पूर्वं किल सामन्येनासे पर्यायानामनन्तत्वात पर्यायाणामानन्त्यमुक्तं यत्र पुनः पर्यायिणामानन्त्यं नास्ति तत्र कथमिति प च्छति–नरइयाणमित्यादि ॥ तत्रापि निवचनमिदममनन्ता इति अत्रैव जातसंशयः प्रश्न इति केनेटठेणं भंते । इत्यादि ॥ अथ कनार्थेन कन कार ण न इतुना मदन्त । एवमुच्यते–नैरयिकाणां पर्याया एव मनन्ता इति भगवानाह–गोयमा । नेरइए नेरइयस्स दव्वठ्याए तुल्ले इत्यादि ॥

असंखेज्जा सुवण्णा असंखेज्जा विज्जुकुमारा असंखेज्जा अग्गिकुमारा असंखेज्जा दीवकुमारा असंखिज्जा उदहिकुमारा असंखेज्जा दिसाकुमारा असंखेज्जा वायुकुमारा असंखेज्जा थणियकुमारा असंखिज्जा पुढवि काइया असंखिज्जा आउकाइया असंखेज्जा तेउकाइया असंखेज्जा वाउकाइया अणंता वणस्सइकाइया असंखेज्जा बेइंदिया असंखेज्जा तेइंदिया असंखेज्जा चउरिंदिया असंखेज्जा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया असंखेज्जा मणुस्सा असंखेज्जा वाणमंतरा असंखेज्जा जोइसिया असंखेज्जा वेमाणिया अणंता सिद्धा से

सुपर्णा असंख्येया विद्युत्कुमारा असंख्येया अग्निकुमारा असंख्येया द्वीपकुमारा असंख्येया उदधिकुमारा असंख्येया दिक्कुमारा असंख्येया वा युकुमारा असंख्येयाः स्तनितकुमारा असंख्येयाः पृथिवीकायिका असंख्येया अप्कायिका असंख्येया तेजस्कायिका असंख्येया वायुकायिका अ नन्ता वनस्पतिकायिका असंख्येया द्वीन्द्रिया असंख्येयास्त्रीन्द्रिया असंख्येया चतुरिन्द्रिया असंख्येयाः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका असंख्येया मनु

रवें असंख्यात दिशाकुमार असंख्याता वायुकुमार असंख्याता स्तनितकुमार असंख्याता पृथिवीकायिक असंख्यात अप्कायिक असंख्याता तजस्का यिक असंख्याता वायुकायिक अनन्ता वनस्पतिकायिक असंख्याता बेरिन्द्री असंख्यात तेरिन्द्री असंख्याता चौरिन्द्री असंख्याता पंचेन्द्रिय तिर्यच यो निक असंख्याता मनुष्य असंख्याता वाणव्यन्तर असंख्याता ज्योतिषी असंख्याता वैमानिक अनन्ता सिद्ध ते तेवे अर्थे हे गौतम एम कह्या चोवना प

अथ पर्यायाणामानन्त्यं कथ घटते इति पृष्टे तदेव पर्यायाणामानन्त्य यथायुक्तमुपपन्नं भवति तथा निरूपणीय मास्यत्। ततः केनाभिप्रायेण भग
वानेव नियमममवादि नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्य इति ? उच्यते-एकमपि द्रव्यमनन्तपर्यायमित्यस्य न्यायस्य प्रदर्शनार्थं तत्र यस्मादि
दमपि नारकजीवद्रव्यमेकसङ्ख्याऽवरुद्धमिदमिति नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यो द्रव्यमेवार्थो द्रव्यार्थं तद्भावो द्रव्यार्थता तया तुल्य एवं तावद्द्रव्या
र्थतया तुल्यत्वमभिहित मिदानीं प्रदेशार्थतामधिकृत्य तुल्यत्वमाह-पएसट्ठयाए तुल्ले॥ इदमपि नारकजीवद्रव्य लोकाकाशप्रदेशपरिमाणप्रदेशमिति
प्रदेशार्थतयापि नैरयिको नैरयिकस्य तुल्यः प्रदेशपर्यायः प्रदेशार्थसद्भावः प्रदेशार्थता तया प्रदेशार्थतया कस्मादभिहितमितिचेत् ? उच्यत-द्र
व्यद्वैविध्यप्रदर्शनार्थं तथाहि-द्विविधं द्रव्यं प्रदेशवत् अप्रदेशवच, तत्र परमाणुरप्रदेशो द्विप्रदेशादिकं तु प्रदेशवत् एवव द्रव्यद्वैविध्य पुद्गलास्ति

एएणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—तेण णोसखेज्जा नो असंखिज्जा अणता । णेरइयाण भंते ! केवइया प
ज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—णेरइयाण अणता प
ज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! णेरइए णेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले उग्गाहणट्ठयाए सियहीणे

र्या असखेयया वाणव्यन्तरा असख्येया ज्योतिष्का असख्येया वैमानिका अनन्ताः सिद्धा तत्तेनार्थेन गौतम । एवमुच्यते-ते (जीवपर्यायाः) नै
व सख्येया नैवासंख्येया अनन्ताः । नैरयिकाणां भदन्त । कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम । अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भद
न्त । एवमुच्यते-नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम । नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया

जीव सख्याता नथी असख्याता पिण नथी अनन्ताछे । नारकी नाहि व भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र उत्तर व गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते
कवे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो व नारकी ना पर्याय अनन्ताछे प्र उत्तर हे गौतम नारकी नारकीने द्रव्याय पणे करी तुल्यछे पणि प्रदेशाथ पणे करी
पिण नारकी नारकीने समछे नारक जीव द्रव्य लोकाकाशप्रदेश परिमाण प्रदेशीक तेथी अवगाहनायतायें करी कदाचित् हीन थाको अवगाहना

च सामान्येन निर्वचनमुक्तवान् । इदानीं विशेषविषयप्रश्न गौतम आह-नेरइयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पन्नत्ता इति ॥ अथ केनाभिप्रायेणैव गौतमः पृष्टवान् ? उच्यते पूर्वं किल सामान्यप्रश्ने पर्यायाणामनन्तत्वात् पर्यायाणामानन्त्यमुक्तं यत्र पुनः पर्यायाणामानन्त्यं नास्ति तत्र कथमिति पृच्छति नरइयाणमित्यादि ॥ तथापि निर्वचनमिदमनन्ता इति अत्रैव ज्ञातव्यम् अत्र इति सेकेणट्ठेणं भंते ! इत्यादि ॥ अथ केनार्थेन कस्मात्कारणेन एवमुच्यते-नैरयिकाणां पर्याया एव अनन्ता इति भगवानाह-गोयमा ! नेरइए नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले इत्यादि ॥

असंखेज्जा सुवण्णा असंखेज्जा विज्जुकुमारा असंखेज्जा अग्गिकुमारा असंखेज्जा दीवकुमारा असंखिज्जा उदहिकुमारा असंखेज्जा दिसाकुमारा असंखेज्जा वायुकुमारा असंखेज्जा थणियकुमारा असंखिज्जा पुढविकाइया असंखिज्जा आउकाइया असंखेज्जा तेउकाइया असंखेज्जा वाउकाइया अणंता वणस्सइकाइया असंखेज्जा बेइंदिया असंखेज्जा तेइंदिया असंखेज्जा चउरिंदिया असंखेज्जा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया असंखेज्जा मणुस्सा असंखेज्जा वाणमंतरा असंखेज्जा जोइसिया असंखेज्जा वेमाणिया अणंता सिद्धा से

धिकोवा स्यात् सङ्ख्येयभागाभ्यधिकोवा संख्येयगुणाधिकोवा ऽसङ्ख्येयगुणाधिकोवा कथमितिचेदुच्यते-एकः किल नारक उत्सेधेन पञ्चधनुःशतानि अपरस्तान्येवाङ्गुलाऽसंख्येयभागहीनानि अङ्गुलासङ्ख्येयभागश्च पञ्चानां धनुःशतानामसंख्येयभागे वर्तते तेन सोऽङ्गुलासंख्येयभागहीनः पञ्चधनुःशतप्रमाणो परस्य परिपूर्णपञ्चधनुःशतप्रमाणस्यापेक्षया ऽसंख्येयभागहीन इतरस्त्वितरापेक्षया ऽसंख्येयभागाभ्यधिकः तथा एकः पञ्चधनुःशतान्युच्चैस्त्वेना ऽपरस्तु तान्येव द्वाभ्यां त्रिभिर्वा धनुर्भिर्न्यूनानि तानि च द्वे त्रीणि वा धनूंषि पञ्चानां धनुःशतानां संख्येयभागे वर्तते ततः सोऽपरस्य परिपूर्णपञ्चधनुःशतप्रमाणस्यापेक्षया संख्येयभागहीनः अपरस्तु परिपूर्णपञ्चधनुःशतप्रमाणस्तदपेक्षया संख्येयभागाधिक तथा एकः पञ्चविंशति धनुःशतमुच्चैस्त्वेना ऽपरः परिपूर्णानि पञ्चधनुःशतानि पञ्चविंशं च धनुःशतं चतुर्भिर्गुणितं पञ्चधनुःशतानि भवन्ति ततः पञ्चविंशत्यधिकधनुःश

असंखेज्जगुणहीण वा । एवं अब्भहिए असंखेज्जभागमब्भहिए संखेज्जभागमब्भहिएवा असंखेज्जगुणमब्भहिए

स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिको यदि हीनो ऽसंख्येयभागहीनो वा संख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा ऽसंख्येयगुणहीनो वा । यथा

व । असंखेज्जगुणअब्भहिएत्ति। तथा एक नारकी अपर्याप्त अवस्था मां अगुल ने असंख्यातमे भाग अवगाहनायें रह्यो अनें बीजो अन्य नारकी पांचसो धनुष अवगाहनायें रह्यो ते अंगुलना असंख्यात मा भाग असंख्यातगुणा थाय तिवार पांचसो धनुष थाय ते एक अपर्याप्त अवस्था मां अंगुलनें असंख्यातमें भाग वर्त्तता नारकी पूर्व पांचसो धनुष अवगाहनायें वर्त्तता नारकीनी अपेक्षायें असंख्यातगुणहीन कहिये। अने अब्भहिय असंखेज्जभागमब्भहिएत्ति। ज अधिक हुवै ते असंख्यात भाग अधिक हुवै, जिम एक नारकी पांचसो धनुष ... अन्य बीजो नारकी अंगुलनें असंख्यातमें भाग ऊणपणें ते अंगुलना असंख्यातमा भाग असंख्यात भागे तथो पांचसो धनुषनी अवगाहनायें वर्त्तता नारकी असंख्यातगुण अधिक कहिवाय। संखेज्जभागमब्भहिएत्ति। तथा संख्यातभाग अधिक हुवै, जिम पांचसो धनुषनी पूर्ण अवगाहना एकनी बीजानी वा तीन धनुष कम पांचसो नी अवगाहना वा तीन धनुष ते पांचसोमें संख्यात भागे हैं ते मो ही तीन धनुष न्यून पांचसो धनुष नी अवगाहना ना नारकी नी अपेक्षायें पांचसो पूर्ण धनुष ना अवगा

काय एव भवति यद्यपि तु धर्मास्तिकायादीनि द्रव्याणि नियमात् स्वप्रदेशानि ॥ ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे इत्यादि ॥ नैरयिकोऽसङ्ख्यातप्रदेशोऽपरस्य नैरयिकस्य तुल्यप्रदेशस्य अवगाहनमवगाहः शरीरोच्छ्रयोऽवगाहनमेवार्थोऽवगाहनार्थस्तद्भावो अवगाहनार्थता तया अवगाहनार्थतया ॥ सिय हीणे इत्यादि ॥ स्याच्छब्दः प्रशंसास्तित्वविवादविचारणाऽनेकान्तसंशयप्रश्नादिष्वर्थेषु अत्राऽनेकान्तद्योतकस्य ग्रहणं स्याद्धीनो नैकान्तेन हीन इत्यर्थः स्यात्तुल्यो नैकान्तेन तुल्य इत्यर्थः स्यादभ्यधिको नैकान्तेनाभ्यधिक इति भाव कथमितिचेत् ? उच्यते-यस्माद्रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भवधारणीयस्य वैक्रियशरीरस्य जघन्येनावगाहनामात्रा अङ्गुलस्यासङ्ख्येयो भाग उत्कर्षेण सप्तधनूंषि त्रयो हस्ताः षडङ्गुलानि उत्तरोत्तरासु च पृथिवीषु द्विगुणं २ यावत्सप्तमपृथिवीनैरयिकाणां जघन्यतो अवगाहनाऽङ्गुलस्यासङ्ख्येयोभाग उत्कर्षत धनुषां पञ्चशतानीति तत्र ॥ असङ्खेज्जेत्यादि ॥ यदि हीन स्ततो ऽसङ्ख्येयभागहीनोवा स्या स्सङ्ख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा स्यात् असङ्ख्येयगुणहीनोवा यद्यभ्यधिक स्ततोऽसङ्ख्येयभागाभ्य

सिय तुल्ले , सिय अब्भहिए जदि हीणे असंखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जइभाग हीणेवा संखेज्जगुणहीणे वा

कदाचित् सम कदाचित् अधिक अवगाहना हुवे ते जिम रत्नप्रभाना नारकीने भवधारणीय वैक्रीय शरीर नी जघन्य अवगाहना अंगुलने असंख्यातमें भाग उत्कृष्ट तो सात धनुष तीन हाथ छ अंगुलनी कही इम आगे आगे उत्तरोत्तर पृथिवीमां बेमणु बमणु कहवो यावत्सातमी पृथिवीना नारकीनो जघन्य अवगाहना अगुलने असंख्यातमें भाग उत्कृष्ट तो पांचसे धनुष कही । असंखेज्जइभागहीणेवा । जो हीन हुवे तो अंगुलने असंख्यातमें भागहीन हुवे एक नारकी १   से धनुषनी अवगाहनाना धणी हुवे १ नारकी अंगुलनी असंख्यात भागे न्यून होवे ते असंख्यात भाग हीन कहिये । अब्भहिए होवेति । तथा एक नारकीने ४८८ चारसे अठाणु धनुषनी अवगाहना हुवे ते ५   पांचसे धनुषनी अवगाहना ना नारकी थी संख्यात भाग हीन कहावे । संखिज्जगुण होवेवा । एक नारकी एकसो पचीस धनुष अवगाहिने अने अन्य बीजो परिपूर्ण पांचसो धनुष अवगाहिने एकसौ पचीसने चारगुणा करवाथी पांचसौ पूरा थाय ते हेतु पांचसौ धनुष अवगाहना नी अपेक्षाये एकसौ पचीस धनुष ना धणी छे नारकी ते संख्यातगुणहीन कहि

कया असंख्येयभागहीन । परिपूर्ण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमस्थितिकस्तु तदपेक्षया असंख्येयभागाऽभ्यधिक समयादि सागरोपमापेक्षया ऽसंख्येयभागमा त्रत्वात् तथाह्यसंख्येये समये एकाऽऽवलिका संख्याताभिरावलिकाभिरेक उच्छ्वासनिःश्वासकालः सप्तभिरुच्छ्वासनिःश्वासैरेकः स्तोकः सप्तभिः स्तोकै रेको लवः सप्तसप्तत्या ७७ लवानामेको मुहूर्त्तः त्रिंशता मुहूर्त्तैरहोरात्रः पञ्चदशभिरहोरात्रैः पक्षो द्वाभ्यां पक्षाभ्यां मासो द्वादशभिर्मासैः संवत्सरः पञ्चसंवत्सरैर्युगं संख्यातैर्वर्षैः पल्योपमसागरोपमादि समयावलिकोच्छ्वासमुहूर्त्तदिवसाहोरात्रपक्षमाससंवत्सरयुगैर्हीन परिपूर्णस्थितिकनारकापेक्षयाऽस ख्येयभागहीना भवति तदपेक्षयाऽन्यतरोऽसंख्येयभागाऽभ्यधिकः तथा एकस्य त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः परस्य तान्येव पल्योपमैर्न्यूनानि द शभिः पल्योपमकोटाकोटीभिरेकं सागरोपमं निष्पद्यते ततः पल्योपमैर्न्यूनस्थितिकः परिपूर्णस्थितिकनारकापेक्षया संख्येयभागहीनः परिपूर्णस्थिति कस्तु तदपेक्षया संख्येयभागाभ्यधिकः, तथा एकस्य सागरोपमस्य स्थितिरपरस्य परिपूर्णानि त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि तत्रैकसागरोपमस्थितिकः प

जहन्नागहीण या सखेज्जगुणहीणे वा असखिज्जगुणहीणे वा । अह अभ्महिए असखेज्जइभागमब्भहिए वा

मून तत्रीस सागरोपम स्थितिना नारकीथी ते तेत्रीससागरोपम स्थितिना नारकीनो अपेक्षायें असंख्यातभाग हीनछे, समय आदि ले ते सागरोपमने असंख्यातमें भागेंछे तिमज दखाडेछे—असंख्यात समयनो १ आवलिका संख्याती आवलिकानो १ उच्छ्वासनिश्वास सात उच्छ्वासनिश्वासनो १ स्तोक सात स्तोक नो १ लव सततहत्तर लवनो १ मुहूर्त तीस मुहूर्त नो १ अहोरात्र पन्नरह अहोरात्र नो १ पक्ष बाय पक्ष नो १ मास बार मासनो १ संवत्सर असं ख्यात वर्ष नो पल्योपम सागरोपम थाय छे, समय आवलिका उच्छ्वासनिश्वास मुहूर्त दिवस अहोरात्र पक्ष मास संवत्सर युग इत्यादि नो हीन ते त्रीस सागरोपम स्थितिना नारकी पूर्ण ३३ सागरोपम स्थितिना नारकी थी असंख्यात भाग हीन कहिवाय । एहनी अपेक्षायें इतर पहेला माटे समय आदि ऊन स्थितिना नारकी नो अपेक्षाय बीजा ते पण तेत्रीस सागरोपम नी स्थिति ना नारकी छे ते असंख्यात भाग अधिक छे। तथा एक नारकी नी तत्रीस सागरोपम नी स्थिति छ अने बीजाभी पल्योपम ऊन तत्रीस सागरोपम नी स्थिति-दशे दस पल्योपम कोडाकोडी नो एक सागरोपम थाय

तप्रमाणादेरस्यापरस्य परिपूर्णपञ्चधनुःशतप्रमाणस्यापेक्षया सङ्ख्येयगुणहीनो भवति तदपेक्षयाऽस्त्वितर परिपूर्णपञ्चधनुःशतप्रमाण सङ्ख्येयगुणाधि
क तथा एकोऽपर्याप्तावस्थायामङ्गुलस्य सङ्ख्येयभागावगाहे वर्तते अन्यस्तु पञ्चधनुःशतप्रमाणाद्भुवैरसङ्ख्येयभागहासपर्येन गुणितमन्
पञ्चधनुःशतप्रमाणो भवति ततोऽपर्याप्तावस्थायामङ्गुलासङ्ख्येयभागप्रमाणेऽवगाहे वर्तमान परिपूर्ण पञ्चधनुःशतप्रमाणापेक्षया असङ्ख्येयगुणहीन
पञ्चधनुःशतप्रमाणस्तु तदपेक्षया असङ्ख्येयगुणाभ्यधिकः ॥ ठिइए सियहीणे इत्यादि ॥ यथाऽवगाहनया हानी वृद्धी च चतुःस्थानपतित उक्त ए
वा स्थित्यापि वक्तव्य इति भाव । एतदेवाह–असंखेज्जइभागहीणे वा इत्यादि ॥ तत्रैवस्य किल नारकस्य त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थिति
रपरस्य तान्येव समयादिन्यूनानि तत्र यः समयादिन्यूनत्रयस्त्रिंशत्सागरोपमप्रमाणस्थितिकः स परिपूर्णत्रयस्त्रिंशत्सागरोपमस्थितिकनारकापे

सङ्खेज्जगुणमब्भहिएवा । ठिइए सियहीणे सियतुल्ले सियमब्भहिए । जइहीण असंखेज्जइभागहीणे वा संखे

स्यापेक्षा ऽसङ्ख्येयभागाभ्यधिको वा सङ्ख्येयभागाभ्यधिको वा ऽसङ्ख्येयगुणाधिको वा सङ्ख्येयगुणाधिको वा । स्थितौ स्याद्धीनः स्यात्तुल्य स्या
दभ्यधिकः । यदि हीनो ऽसङ्ख्येयभागहीनो वा सङ्ख्येयभागहीनो वा सङ्ख्येयगुणहीनो वा ऽसङ्ख्येयगुणहीनो वा । यद्यभ्यधिको ऽसङ्ख्येयभा

प्रमाणे वर्त्त । नारका अपर्याप्तपणे आहारा वर्जितयन । अमुक्तिसमगवसधिकयत्ति । असङ्ख्यातमप अधिक हुवे जिस अपर्याप्त अवस्थायें अगुलने अस
ङ्ख्यातवे भाग वर्त्तता नो अपेक्षायें पांचसा धनुष नो अवगाहनायें वर्त्तता नारको । सङ्ख्यातमप अधिक होवे । सङ्ख्यातमप अधिक जेम १२१ धनुषो
पचीस धनुषनो अवगाहनायें वर्त्तता नारको भी अपेक्षाय जे एक पांचसो धनुषनो अवगाहनायें वर्त्तता नारको ते संख्यातगुण अधिकछे एकसा पचीस
अपर्याप्तमपा ४ गुणा करता थी पांचसो पूरा थाय ते थी । ठिइए सियहीणे इत्यादि । जम अवगाहनाने विषे हानि वृद्धि कही तमज इहां स्थिति ने
विषे पिण चतुःस्थान पतित कहवो कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे । जइ हीणे इत्यादि । जो हीन हुवे तो असंख्यात भाग हीन
ते जिम एक नारकीनो ३३ तेत्रीस सागरोपम नी स्थिति अने बीजानो समय आदि न्यून तेत्रीस सागरोपम नी स्थिति हुवे तो तिहां जे समय आदि

ष्यति तत्र प्रथमतः पुद्गलविपाकिनामकर्मोदयनिमित्तजीवौदयिकभावाश्रयेण हीनाधिकत्वमाह—कालवन्नपज्जवेहिं सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अ
ब्भहिए ॥ अस्याक्षरघटना पूर्ववत् तत्र यथा हीनत्वमभ्यधिकत्वं वा तथा प्रतिपादयति ॥ जइ हीणेत्यादि ॥ इह भावापेक्षया हीनाधिकत्वचिन्तायां
हानौ वृद्धौ च प्रत्येक षट्स्थानपतितत्वमवाप्यते । षट्स्थानकं च यत् यदपेक्षया अनन्तभागहीनं तस्य सर्वजीवानन्तकेन भागे हृते यल्लभ्यते तेना
नन्ततमेन भागेन हीनं यच्च तदपेक्षयाऽसङ्ख्येयभागहीनं । तस्यापेक्षणीयस्यासङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणेन राशिना भागे हृते यल्लभ्यते तावता भागेन
न्यूनं यच्च तदधिकत्वं संख्येयभागहीनं तस्यापेक्षणीयस्योत्कृष्टसङ्ख्येयकेन भागे हृते यल्लभ्यते तावता हीनं गुणसङ्ख्यायां तु यद्यतः सङ्ख्येयगुणं तद
वधिभूतमुत्कृष्टेन सङ्ख्येयकेन गुणितं सत् यावद्भवति तावत्प्रमाणमवसातव्यं । यच्च यतोऽसङ्ख्येयगुणं तदवधिभूतमसङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणेन

संखेज्जइभागमब्भहिए वा असंखिज्जगुणमब्भहिए संखिज्जगुणमब्भहिए वा । कालवन्नपज्जवेहिं सियहीणे

गाधिको वा सङ्ख्येयभागाधिको वा ऽसङ्ख्येयगुणाधिको वा सङ्ख्येयगुणाधिको वा । कालवर्णपर्यवैः स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः । यदि

क, एकनो बीजाथी बीजो पण संख्यातगुण अधिक छे । एम एक नारकने अन्य बीजा नारकनी अपेक्षाए द्रव्यथी प्रदेशथी जो तुल्य
पणुं कह्युं । हवे जो अवगाहना मां हीनाधिक पणुं कह्यो चतुःस्थानपतित पणुं कालथी पण स्थिति मां हीनाधिक पणुं कह्यो चतुःस्थानपतित
पणुं कह्युं हवे भाव थकी हीनाधिक पणुं कहता कहेछे—ज माटे समस्त जीव द्रव्य अथवा अजीव द्रव्य परस्पर द्रव्यथी भाव भाव जो विभाविये
जेम घट द्रव्यथी एक माटीना बीजा सामाना अथवा थांदीना घटथी जीवद्रव्य तेमना जोपना एक पाटलीपुत्र ना जोपनी कालथी एक काल ना जीव
ना एक मूतकालना जीवना भाव थी एक जीवा अन्य जीवा साथ आदि एम अन्य पिण भावना तिहां प्रथम पुद्गल विपाकि नामकर्मोदय निमित्त
जीवना औदयिक भावाश्रयी हीनाधिक पणुं कहेछे—कालवन्नपज्जवेहिं सियहीणे इत्यादि । एहनो अक्षर घटना पूर्वनी परे जाणवी कदाचित् हीन

रिपूर्णस्थितिकनारकापेक्षया असंख्येयगुणहीनः एकस्य सागरोपमस्य त्रयस्त्रिंशता गुणने परिपूर्णस्थितिकत्वप्राप्तेः परिपूर्णस्थितिकस्तु तदपेक्षया असंख्येयगुणाभ्यधिकः तथा एकस्य दशवर्षसहस्राणि स्थितिरपरस्य त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि दशवर्षसहस्राण्यसंख्येयरूपेण गुणकारेण गुणितानि त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि भवन्ति ततो दशवर्षसहस्रस्थितिकस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमस्थितिकनारकापेक्षया असंख्येयगुणहीनस्तदपेक्षया तु त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमस्थितिकोऽसंख्येयगुणाभ्यधिक इति तदेवमेकस्य नारकस्याऽपरनारकापेक्षया द्रव्यतः द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया च तुल्यत्वमुक्तं क्षेत्रतोऽवगाहनां प्रति हीनाधिकत्वेन चतुःस्थानपतितत्वं कालतोऽपि स्थितितो हीनाधिकत्वेन चतुःस्थानपतितत्वमिदानीं भावाश्रयं हीनाधिकत्वं प्रतिपाद्यते यत् सकलमपि जीवद्रव्यमजीवद्रव्यं वा परस्परतो द्रव्यक्षेत्रकालभावैर्विभज्यते यथा घटः तथाहि घटो द्रव्यत एको मार्त्तिकोऽपरः काञ्चनो राजतादिर्वा क्षेत्रत एक इहत्यो परः पाटलिपुत्रकः कालत एको ऽद्यतनो ऽभ्यस्तनः पश्चात्तनो वा भावत एकः श्यामो ऽपरस्तु रक्तादिरेवम

तेत्रीसे पल्योपमने असंख्यातगुणा करवाथी ३३ सागरोपम थाय ते माटे कहियुं छे के पल्योपम न्यून ३३ सागरोपम स्थितिक नारको छे ते परिपूर्ण ३३ सागरोपम स्थितिक नारकोनी अपेक्षाए असंख्यात गुण हीन छे अने परिपूर्ण तेत्रीससागरोपम स्थितिक नारको छे ते पल्योपम न्यून तेत्रीस सागरोपम स्थितिक नारकनी अपेक्षाए असंख्यगुण अधिक छे। तथा एक नारकनी एक सागरोपम स्थिति अने बीजा नी परिपूर्ण तेत्रीस सागरोपम नी स्थिति छे एक सागरोपम स्थितिक नारको छे ते परिपूर्ण ३३ सागरोपम स्थितिक नारकनी अपेक्षाए असंख्यातगुण हीन छे कारण के १ सागरोपमने ३३ तेत्रीस गणा करवाथी परिपूर्ण ३३ सागरोपम थाय। तेथी जे परिपूर्ण ३३ सागरोपम स्थिति नारको छे ते १ सागरोपम स्थितिक नारकनी अपेक्षाए असंख्यातगुण अधिक छे। तथा एक नारकनी दस हजार वर्षनी स्थिति अने बीजानी परिपूर्ण ३३ तेत्रीस सागरोपमनी छे ते दस हजार वर्ष ने असंख्याता गुणकारे गुणवाथी ३३ सागरोपम थाय छे तेमाटे दस हजार वर्षनी स्थितिक नारको तेत्रीस सागरोपम स्थितिना नारकोनी अपेक्षाए असंख्यातगुण हीन

भागहारेण भागो ह्रियते लब्धे द्वे शते । एषोऽसंख्येयतमोभाग एवैकस्य किल नारकस्य कृष्णवर्णपर्याया दशसहस्राणि शतद्वयेन हीनानि ९८०० अपरस्य परिपूर्णानि दशसहस्राणि १०००० तत्र यः शतद्वयहीनदशसहस्रप्रमाणकृष्णवर्णपर्यायः स परिपूर्णकृष्णवर्णपर्यायनारकापेक्षया ऽसंख्येयभागहीनः परिपूर्णकृष्णवर्णपर्यायस्तु तदपेक्षयाऽसंख्येयभागाधिकः २ । तथा तस्यैव कृष्णवर्णपर्यायराशेः संख्यातलक्षणस्योत्कृष्टसंख्येयकपरिमाणकल्पितेन दशकपरिमाणेन भागहारेण भागो ह्रियते लब्धं सहस्रं एषः किल संख्याततमोभागः तत्रैकस्य नारकस्य किल कृष्णवर्णपर्यायपरिमाणं नवसहस्राणि ९००० अपरस्य दशसहस्राणि १०००० नवसहस्राणि तु दशसहस्राणि सहस्रेण हीनानि सहस्रञ्च संख्येयतमो भाग इति नवसहस्रप्रमाणकृष्णवर्णपर्यायपरिपूर्णकृष्णवर्णपर्यायनारकापेक्षया संख्येयभागहीनः तदपेक्षयात्वितरः संख्येयभागाधिकः तथैकस्य नारकस्य किल कृष्णवर्णपर्यायपरिमाणं सहस्रं अपरस्य दशसहस्राणि तत्र सहस्रं दशकेनोत्कृष्टसंख्यातकस्थानेन गुणितं दशसहस्रसंख्याकं भवतीति सहस्रसंख्यकृष्णव

ज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा अणंतगुणहीणे वा । अह अब्भहिए अणंतभागमब्भहिए वा असंखेज्ज

हीनो ऽनन्तभागहीनो वा ऽसंख्येयभागहीनो वा संख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा ऽसंख्येयगुणहीनो वा ऽनन्तगुणहीनो वा । अथवा

गुण अधिक अथवा अनन्तगुण अधिक हुय । गुणन सम्बन्धे विचे ता जह जह जो संख्यातगुण हुवे तह तदवधिभूत उत्कृष्ट संख्यातकना गुणवा जो जतला हवे तेतला जाणवा । जह जह जो असंख्यातगुणो हुवे ता तेहने तदवधिभूत हुवे असंख्य लोकाकाशप्रदेश प्रमाण गुणाकार जो गुणित गुणतां थका जतला हय तेतला जाणवा, जह जेह जो अनन्तगुण हवे तदवधिभूत हवे सर्व जीवानन्तक जो गुणतां थका जेतला हुवे तेतला प्रमाणे जाणवो, सो अत परोक्ष सूत्रनी भावना करेछे—तिहां यद्यपि पर्याय परिमाण तत्त्वथी अनन्तसंख्यात्मक छे तथापि असद्भावस्थापना जो दशहजार परिमाणे कल्पना तेहने सर्वजीवानन्तकने शत परिमाण कल्पनायें करी तहथी भाग देवा लब्ध १ तिहां एक नारकीना कृष्णवर्ण पर्याय परिमाण दशहजार करे पने बीजाने १ ऊन दशहजार हुवे एतले ९८ शत हुवे तेहने सर्वजीवानन्त भागहारकल्पना जो अनन्ततम भाग हुवे तेमाटे शत ऊन दय

गुणकारेण गुण्यते गुणितश्च सन् यावद्भवति तदवसेयं यत्र यस्मादनन्तगुणं तदवधिभूतं सर्वजीवानन्तकरूपेण गुणकारेण गुण्यते गुणितं सत् यावद्भवति तावत्प्रमाणं द्रष्टव्यं तथा चैतदेव कर्मप्रकृतिसङ्ग्रहिण्यां षट्स्थानकप्ररूपणावसरे भागहारगुणकारस्वरूपमुपवर्णितम्–सव्वजीवाणंतमसंखलोगसंखेज्जगस्स जेट्ठस्स भागो तिसु गुणणा तिसु य इति ॥ असत्कल्पनया तु षट्स्थानपतितत्वं भाव्यते–तत्र कृष्णवर्णपर्यायपरिमाणं तत्त्वतोऽनन्तसङ्ख्यात्मकमप्यसद्भावस्थापनया किल दशसहस्राणि १०००० तस्य सर्वजीवानन्तकेन शतपरिमाणपरिकल्पितेन भागो ह्रियते लब्धं शतं १०० तत्रैकस्य किल नारकस्य कृष्णवर्णपर्यायपरिमाणं दशसहस्राणि अपरस्य तान्येव शतेन हीनानि ९९०० शतं च सर्वजीवानन्तभागहारलब्धत्वादनन्ततमो भागः ततो यस्य शतेन हीनानि दशसहस्राणि सोऽपरस्य परिपूर्णदशसहस्रप्रमाणकृष्णवर्णपर्यायस्य नारकस्यापेक्षया अनन्तभागहीनः तदपेक्षया तु सोऽपरः कृष्णवर्णपर्यायोऽनन्तभागाभ्यधिकः तथा कृष्णवर्णपर्यायपरिमाणस्य दशसहस्रसङ्ख्याकस्य असत्कल्पनया लोकाकाशप्रदेशप्रमाणपरिकल्पितेन पञ्चाशत्परिमाणेन

सियतुल्ले सियअब्भहिए । जदि हीणे अणंतभागहीणे वा असंखेज्जभागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा संखि

इव कदाचित् तुल्य हुवे कदाचित् अधिक हुवे तिहां जइ जिम हीन हुवे अधिक हुवे ते किम कहइ—आलोप इत्यादि। जो हीन हुवे तो अनन्त भाग हीन हुवे अथवा असंख्यात भाग हीन हुवे अथवा संख्यात भाग हीन हुवे अथवा संख्यातगुण हीन हुवे असंख्यातगुण हीन हुवे अथवा अनन्तगुण हीन हुवे, इहां भावनो अपेक्षायें हीनाधिक भावनो चिंता मां जाणि धम टीकाने विषे भाव्यो षट्स्थान पतित हुवे, षट्स्थान मां जेह जेहनी अपेक्षाये अनन्त भाग हीन हुवे, तेहने सर्व जीवानन्तक नो भाग हार कियाथकी जे आवे तेह अनन्ततम भाग नो हीन, जे पिण जेहनो अपेक्षायें असंख्यात भाग हीन हुवे तेहने अपेक्षयोग्य अन्य द्रव्य असंख्यातलोकाकाशप्रदेशप्रमाणराशि नो भाग हार करता जे आवे तेतला भाग नो न्यून, जे पिण जेहनो अपेक्षायें संख्यात भाग हीन हुवे तेहने अपेक्षयोग्य उत्कृष्ट संख्येयकनो भागहार जे आवे तेतला भाग नो हीन। कइ कदाचित इत्यादि। जो अधिक हुवे तो अनन्त भाग अधिक हुवे अथवा असंख्यात भाग अधिक अथवा संख्यात भाग अधिक अथवा संख्यातगुण अधिक अथवा असंख्यात

वरणीयादिकर्मक्षयोपशमभावाश्रयेण तदुपपद्यते–आभिणिबोहियपज्जवेहिं इत्यादि ॥ पूर्ववत् प्रत्येकमाभिनिबोधिकादिषु षट्स्थानपतितत्वं भा वनीय एवं द्रव्यतस्तुल्यस्य वदता सम्मूर्छितगर्भजनिर्जद्वीजं मसूरापवरसवदनाभ्यन्तरेऽवगाहस्थानमप्यसंख्येयविधापनेऽपरिवर्तितयोग्य द्रव्यमि त्यावदितं अवगाहनया चतुःस्थानपतितत्वमभिदधता क्षेत्रतः सङ्कोचविकोचधर्मो आत्मा न तु द्रव्यप्रदेशसङ्ख्याया इति दर्शितम् एवमप्येतदन्यत्रा पि विवक्षितमङ्गीकृतमयो नक्षोद्रव्यप्रदेशसङ्ख्याया वृद्धिह्रासौ क्षेत्रतस्तु तावान्मध्यस्तत्समारित्वात् चतु स्थानपतितस्य वदता आयुःकर्मस्थितिर्मि वर्तमानामध्यवसायस्थानानामनुरूपापचयवृत्तिरुपदर्शिता अन्यथा स्थित्या चतुःस्थानपतितत्वायोगात्' आयुःकर्मणोपलक्षणं तच्च सर्वकर्मस्थिति मित्यतोऽध्यवसायैरपापचयवृत्तिरवसातव्या कृष्णादिपर्यायैः षट्स्थानपतितत्वमुपदर्शयिता एकस्यापि नारकस्य पर्याया अनन्ताः किम्पुन सर्वेषा

सुब्भिगंधपज्जवेहिं दुब्भिगंधपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। तित्तरसपज्जवेहिं कडुयरसपज्जवेहिं कसायरसपज्जवेहिं अंबिलरसपज्जवेहिं महुररसपज्जवेहिं य छट्ठाणवडिए। कक्खडफासपज्जवेहिं मउयफासपज्जवेहिं गरुयफासपज्जवेहिं लहुयफासपज्जवेहिं सीतफासप० उसिणफासपज्जवेहिं णिद्धफासपज्जवेहिं लुक्खफासपज्जवेहिं य छट्ठाणवडिए। आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं सुयनाणपज्जवेहिं ओहिनाणपज्जवेहिं मइअन्नाणपज्जवेहिं

तिक्तरसपर्यवैः कटुकरसपर्यवैः कषायरसपर्यवैः आम्लरसपर्यवैः मधुररसपर्यवैः षट्स्थानपतितः । कर्कशस्पर्शपर्यवैः मृदुकस्पर्शपर्यवैः गुरुकस्पर्शपर्यवैः लघुस्पर्शपर्यवैः शीतस्पर्शपर्यवैः उष्णस्पर्शपर्यवैः स्निग्धस्पर्शपर्यवैः रूक्षस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवैः श्रुत

करी कषायरस पर्यायेंकरी अम्लरस पर्यायेंकरी मधुररस पर्यायेंकरी पिण सर्वे षटस्थान पतित जाणवा । कक्खडफासपज्जवेहिं इत्यादि । कर्कशस्पर्श पर्यायेंकरी कोमलस्पर्श पर्यायेंकरी भारीस्पर्श तेहने पर्यायेंकरी लघुस्पर्श पर्यायेंकरी उष्णस्पर्श पर्यायेंकरी स्निग्धस्पर्श पर्यायेंकरी रूक्षस्पर्श पर्यायेंकरी पिण षटस्थान पतित जाणवो । आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं इत्यादि । मतिज्ञान पर्यायेंकरी श्रुतज्ञान पर्यायेंकरी अवधिज्ञान पर्यायेंकरी मतिअज्ञान

नन्यायो नारको द्यमहस्त्रमपाकष्णवर्णपर्यायमारकापेक्षया सङ्ख्येयगुणहीन स्तदपेक्षया परिपूर्णकष्णवर्णपर्यायसङ्ख्येयगुणाभ्यधिक तथा यस्य किल नारकस्य कृष्णवर्णपर्यायाग्र द्वे शते ऽपरस्य परिपूर्णानि दशसहस्राणि द्वे शते सङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशपरिमाणं प्रथमस्थितेन पञ्चाशत्परिमा णेन गुणकारगुणितम दश सहस्राणि जायन्ते ततो द्विशतपरिमाणकृष्णवर्णपर्यायो नारकः परिपूर्णकृष्णवर्णपर्यायनारकापेक्षया सङ्ख्येयगुणहीन स्तदपेक्षया त्वितरोऽसङ्ख्येयगुणाभ्यधिकः ५ तथैकस्य किल नारकस्य कृष्णवर्णपर्यायपरिमाण मपरस्य दशसहस्राणि शतेन सर्वजीवानन्तकपरि कल्पितेन गुणकारेण गुणित जायन्ते दशसहस्राणि तत शतपरिमाणकृष्णवर्णपर्यायो नारकः परिपूर्णकृष्णवर्णपर्यायनारकापेक्षया ऽनन्तगुणहीन इ तरस्य तदपेक्षयाऽनन्तगुणाभ्यधिको यथा कृष्णवर्णपर्यायानधिकृत्य हानी वृद्धी च षट्स्थानपतितत्वमुक्त मेवं शेषवर्णगन्धरसस्पर्शैरपि प्रत्येक षट् स्थानपतितत्वं भावनीय तदेव पुद्गलविपाकेनामकर्मोदयजनितऔदयिकभावमाश्रित्य षट्स्थानपतितत्वमुपदर्शित मिदानीं जीवविपाकिनाना

णागमब्भहिए वा सखज्जभागमब्भहिए वा सखेज्जगुणमब्भहिए वा असखेज्जगुणमब्भहिए वा अणतगुणमब्भहि ए वा । नीलवन्नपज्जवेहि लोहियवन्नपज्जवेहि पीयवन्नपज्जवेहि सुक्किलवन्नपज्जवेहिय छठाणवडिए ।

भ्यधिको ऽनन्तभागाधिको वा ऽसङ्ख्येयभागाधिको वा संख्येयभागाधिको वा संख्येयगुणाधिको वा ऽसङ्ख्येयगुणाधिको वा ऽनन्तगुणाधिका वा । नीलवर्णपर्यवै र्लोहितवर्णपर्यवैः पीतवर्णपर्यवैः शुक्लवर्णपर्यवै श्च षट्स्थानपतितः । सुरभिगन्धपर्यवै र्दुरभिगन्धपर्यवैः षट्स्थानपतित ।

इम।र कृष्णवर्ण पर्याय परिमाण नारको छे ते थकी पूर्व दशहजार परिमाण कृष्णवर्ण पर्यवना नारको वो अनन्त भागे हीनछे तेहनो अपेक्षासे पूर्व परिमाण पर्याय वतनो नारको अनन्तभाग अधिकोछे, एम पाछे भावना टीका थी जाणवो । नीलवन्नपज्जवेहिति । जेम कृष्णवर्ण पर्यवनो भा वना करी तेमज नीलवर्ण पर्यवनो तथा लोहितवर्ण पर्यवनो करवो तथा पीतवर्णपर्यायें करी शुक्लवर्ण पर्यायेंकरी षटस्थान पतित कहवा । सुभिगन्ध पज्जवेहिति । सुरभिगन्ध पर्यायेंकरी दुरभिगन्ध पर्यायेंकरी षट्स्थान पतित कहवा । तित्तरसपज्जवेहिं इत्यादि । तिक्तरस पर्यायेंकरी कटुकरस पर्याय

परकीयादिकमप्युपशमभावमयेव तदुपदर्शयति-आभिणिबोहियपज्जवेहिं इत्यादि, पूर्ववत् प्रत्येकमाभिनिबोधिकादिषु षट्स्थानपतितत्वं भा वनीय इह द्रव्यतस्तुल्यत्वं वदता सम्मूर्छितगर्भजनिर्जीवोऽपि मसूरादिवर्णरसगन्धनिर्व्यक्षरशकाशब्दमप्रत्ययप्रगुविशामप्रदेशपरिवर्तियोग्य द्रव्यमि त्यादिर्तं अवगाहनया चतुःस्थानपतितत्वमभिदधता क्षेत्रत सङ्कोचविकोचधर्मोपात्मा न तु द्रव्यप्रदेशसङ्ख्याया इति दर्शितम् तस्मादेतदन्यथा पि विवक्षमकोऽनयो मक्षोद्रव्यप्रदेशसङ्ख्याया वृद्धिह्रासौ क्षेत्रतस्तु तावाम्मततस्तारितत्या चतु स्थानपतितत्व वदता आयुःकर्मस्थितिर्मि व तत्कालामध्यवसायस्थानानामुरअपोपकर्षवृत्तिरुपदर्शिता अन्यथा स्थित्या चतुःस्थानपतितत्वायोगात् आयुष्कर्मोपलक्षणं तत्र च सर्वेकर्मस्थिति निश्रतकेव्यवसायेरपकृष्टवृत्तिरवगन्तव्या कृष्णादिपर्यायैः षट्स्थानपतितत्वमुपदर्शयिता एकस्यापि नारकस्य पर्याया अनन्ता किमुत सर्वेषां

सुब्भिगंधपज्जवेहिं दुब्भिगंधपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। तित्तरसपज्जवेहिं कडुयरसपज्जवेहिं कसायरसपज्जवेहिं अंबिलरसपज्जवेहिं महुररसपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए। कक्खडफासपज्जवेहिं मउयफासपज्जवेहिं गरुयफासपज्जवेहिं लहुयफासपज्जवेहिं सीतफासप० उसिणफासपज्जवेहिं णिद्धफासपज्जवेहिं लुक्खफासपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए। आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं सुयनाणपज्जवेहिं ओहिनाणपज्जवेहिं मइअन्नाणपज्जवेहिं

तिक्तरसपर्यवैः कटुकरसपर्यवैः कषायरसपर्यवैः अम्लरसपर्यवैः मधुररसपर्यवैः षट्स्थानपतितः। कर्कशस्पर्शपर्यवैः मृदुकस्पर्शपर्यवैः गुरुकस्पर्शपर्यवैः लघुस्पर्शपर्यवैः शीतस्पर्शपर्यवैः उष्णस्पर्शपर्यवैः स्निग्धस्पर्शपर्यवैः रूक्षस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः। आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवैः श्रुत

करा कषायरस पर्यायेंकरी खाटारस पर्यायेंकरी मधुररस पर्यायेंकरी पिण प्रत्येके षटस्थान पतित कहवा। कक्खडफासपज्जवेहिं इत्यादि। कर्कशस्पर्श पर्यायेंकरी कोमलस्पर्श पर्यायेंकरी भारीस्पर्श तेहने पर्यायेंकरी हलुआस्पर्श पर्यायेंकरी टाढास्पर्श पर्यायेंकरी स्निग्धस्पर्श पर्यायेंकरी रूक्षस्पर्श पर्यायेंकरी पिण षटस्थान पतित कहवो। आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं इत्यादि। मतिज्ञान पर्यायेंकरी श्रुतज्ञान पर्यायेंकरी अवधिज्ञान पर्यायेंकरी मतिअज्ञान

यथापरो नारको दशसहस्रसंख्यातकृष्णवर्णपर्यायनारकापेक्षया संख्येयगुणहीन स्तदपेक्षया परिपूर्णकृष्णवर्णपर्यायस्संख्येयगुणाभ्यधिकः तथा एकस्य किल नारकस्य कृष्णवर्णपर्यायाग्र द्वे शते ऽपरस्य परिपूर्णानि दशसहस्राणि द्वे च शते संख्येयलोकाकाशप्रदेशपरिमाण प्रकल्पितेन पञ्चाशत्परिमाणेन गुणकारगुणितेन दश सहस्राणि जायन्ते, ततो द्विशतपरिमाणकृष्णवर्णपर्यायो नारकः परिपूर्णकृष्णवर्णपर्यायनारकापेक्षया असंख्येयगुणहीन स्तदपेक्षया त्वितरोऽसंख्येयगुणाभ्यधिकः ५ तथैकस्य किल नारकस्य कृष्णवर्णपर्यायपरिमाणं शतमपरस्य दशसहस्राणि शतेन सर्वजीवानन्तकपरिकल्पितेन गुणकारेण गुणिते जायन्ते दशसहस्राणि ततः शतपरिमाणकृष्णवर्णपर्यायो नारकः परिपूर्णकृष्णवर्णपर्यायनारकापेक्षया ऽनन्तगुणहीन इतरस्तु तदपेक्षयाऽनन्तगुणाभ्यधिको यथा कृष्णवर्णपर्यायानभिसृत्य हानौ वृद्धौ च षट्स्थानपतितत्वमुक्तमेवं शेषवर्णगन्धरसस्पर्शैरपि प्रत्येकं षट्स्थानपतितत्वं भावनीयं तदेव पुद्गलविपाकिनामकर्मोदयनिमित्तमौदयिकभावाश्रयेण षट्स्थानपतितत्वमुपदर्श्य इदानीं जीवविपाकिज्ञाना

णागमब्भहिए वा संखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखेज्जगुणमब्भहिए वा अणंतगुणमब्भहिए वा । नीलवन्नपज्जवेहिं लोहियवन्नपज्जवेहिं पीयवन्नपज्जवेहिं सुक्किलवन्नपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए ।

ऽभ्यधिको अनन्तभागाधिको वा ऽसंख्येयभागाधिको वा संख्येयभागाधिको वा संख्येयगुणाधिको वा ऽसंख्येयगुणाधिको वा ऽनन्तगुणाधिको वा । नीलवर्णपर्यवैः लोहितवर्णपर्यवैः पीतवर्णपर्यवैः शुक्लवर्णपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । सुरभिगन्धपर्यवैः दुरभिगन्धपर्यवैः षट्स्थानपतितः ।

हजार कृष्णवर्ण पर्याय परिमाण नारकी छे ते अपर एक दशहजार परिमाण कृष्णवर्ण पर्यायना नारकी थी अनंत भागे हीन छे तेहनी अपेक्षाये एक परिमाण पर्याये वर्त्ततो नारकी अनंतभाग अधिक, एम बाकी भावना टीका थी जाणवी । नीलवर्णपज्जवेहिंति । जेम कृष्णवर्ण पर्यायनी भावना करी तेमज नीलवर्ण पर्यायनी तथा लोहितवर्ण पर्यायनी करवी तथा पीतवर्णपर्याये करी शुक्लवर्ण पर्याये करी षट्स्थान पतित कहवा । सुरभिगन्ध पज्जवेहिंति । सुरभिगन्ध पर्याये करी दुरभिगन्ध पर्याये करी षट्स्थान पतित कहवा । तित्तरसपज्जवेहिं इत्यादि । तिक्तरस पर्याये करी कटुकरस पर्याय

वीकादिकादीनामवगाहमाया अवगाहसङ्ख्येयनामप्रमाणतयापि चतुःस्थानपतितत्व तदसङ्ख्यासङ्ख्येयभागस्यासङ्ख्येयभेदत्वात्तस्यादवसेय स्थित्या हीनस्य
मधिकस्य च त्रिस्थानपतित न चतु स्थानपतितमसङ्ख्येयगुणवृद्धिहान्यो रसम्भवात् अथ तयोरसमय इतिचत् उच्यते–यत्र पृथिव्यादीना सवथय

केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ–असुरकुमाराणं अणंता पज्जाया पण्णत्ता ? गोयमा ! असुरकुमारे असुरकुमार
स्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवण्णपज्ज
वेहिं छट्ठाणवडिए, एवं नीलवण्णपज्जवेहिं लोहियहालिद्दवण्णपज्जवेहिं सुक्किलवण्णपज्जवेहिं सुब्भिगंधपज्ज
वेहिं दुब्भिगंधपज्जवेहिं तित्तरसपज्जवेहिं कडुयरसपज्जवेहिं कसायरसप० अंबिलरसप० महुररसपज्जवेहिं

असुरकुमारो ऽसुरकुमारस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ चतुःस्थानपतितः । कालवर्ण
पर्यायैः षट्स्थानपतितः । एवं नीलवर्णपर्यायैः लोहितहारिद्रवर्णपर्यायैः शुक्लवर्णपर्यायैः सुरभिगंधपर्यायैः दुरभिगन्धपर्यायैः तिक्तरसपर्यायैः कटुकरस

अनन्ता पर्याय कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम ! असुरकुमार असुरकुमारने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थेकरी पिण तुल्य अवगाहनाअर्थेकरी चतुःस्थान पतित
छे, स्थिति थी पिण चतु स्थान पतित कहवा । कालवर्णपर्यायेहिति । कालवर्ण पर्यायेकरी षटस्थान पतित कहवा । एम नीलवर्णपर्यवेहि इत्यादि ।
एकनीलवर्ण पर्याये करी रक्त पीत वर्ण पर्याये करी शुक्लवर्ण पर्याये करी सुगंध पर्याये तथा दुगन्ध पर्याये करी तीक्षरस पर्याये करी कटुकरस प
र्याये करी कषायरस पर्याये करी खाटारस पर्याये करी मधुररस पर्याये करी कर्कश मृदु गुरु लघु शीत उष्ण स्निग्ध पर्याये करी लूखास्पर्श पर्याये क
री मतिज्ञान पर्याय करी श्रुतज्ञान पर्याये करी अवधिज्ञान पर्याये करी मतिअज्ञान पर्याये करी श्रुत अज्ञान पर्याये करी विभंगज्ञान पर्याय
करी चक्षुदर्शन पर्याये करी अचक्षुदर्शन पर्याय करी अवधिदर्शन पर्याये करी पिण प्रत्येके षटस्थान पतित कहवा । ते तेणे अर्थे हे गौतम एम कह्यो–
जे असुरकुमारने अनन्ता पर्याय कह्या । एवं जाव इत्यादि । एम जिम नारकी भने असुरनी वक्तव्यता कही तेम नागकुमारनो पिण कहवी यावत्

नारकाणामिति दर्शितं, अथ नारकाणां पर्यायानन्त्ये पृष्टेन भगवता तदेव पर्यायानन्त्यं वक्तव्यं नत्वन्यत् ततः किमर्थं द्रव्यक्षेत्रकालभावाभिधा नमिति-तदुक्त मभिप्रायापरिज्ञानात् इह न सर्वथा सर्वे स्वपर्याया समसङ्ख्या किन्तु षट्स्थानपतिता एतदानन्तरमेव वक्ष्यतम् तत्र षट्स्थान पतितत्वं परिणामित्वमन्तरेण न भवति तच्च परिणामित्वं यथोक्तस्वरूपस्य द्रव्यस्येति द्रव्यतस्तुल्यत्वमभिहितं तथा न कृष्णादिपर्यायैरेव पर्यायवान् जीवः किन्तु तत्तत् क्षेत्रकालविशेषमेतयापि तथा तत्तदध्यवसायस्थानपुत्तमापीति स्थापनार्थं क्षेत्रकालाभ्या षट् स्थानपतितत्व मुक्तमिति कृत प्रसङ्गेन तदेवमवसित नैरयिकाणां पर्यायानन्त्यमिदानीमसुरकुमारेषु पर्यायानपिपृच्छिषुराह-असुरकुमाराणं भंते ! केवइया पज्जवा प० इत्यादि इदमपि प्रायः सर्वमप्यसुरकुमारादिषु ततः सकलमपि चतुर्विंशतिदण्डकसूत्र भाव्यज्ञापनीयं, यत्तु विशेष उपदर्शयते तत्र यत् पृथि

सुयअन्नाणपज्जवेहिं विभंगनाणपज्जवेहिं चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं ओहिदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । से तेणट्ठेणं ? गोयमा ! एवं वुच्चइ—णेरइयाणं नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता पज्जवा पण्णत्ता । असुरकुमाराणं भंते ! केवइया पज्जाया पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से

ज्ञानपर्यवैः श्रुताज्ञानपर्यवैः मत्यज्ञानपर्यवैः श्रुताज्ञानपर्यवैः विभङ्गज्ञानपर्यवैः चक्षुर्दर्शनपर्यवैः अचक्षुर्दर्शनपर्यवैः अवधिदर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतित स्तेनार्थेन । गौतम ! एवमुच्यते-नैरयिकाणां नो सङ्ख्येया नो असङ्ख्येया अनन्ताः पर्यायाः प्रज्ञप्ताः । असुरकुमाराणां भदन्त ! कियन्त प र्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-असुरकुमाराणां अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम !

पर्यायों करी श्रुत अज्ञान पर्यायोंकरी विभंगज्ञान पर्यायोंकरी चक्षुदर्शन पर्यायोंकरी अचक्षुदर्शन पर्यायोंकरी अवधिदर्शन पर्यायोंकरी पिण प्रत्यके षट्स्थान पतित कहवो । ते तबे एवं हे गौतम इम कह्या नैरयिकना पर्याय संख्याता नथी असंख्याता नथी अनन्ता छे । असुरकुमाराणं भंते केवइया पज्जवा इति । असुरकुमारने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम ! अनन्ता पर्याय कह्या । ते केणे अर्थे हेभगवन् इम कह्यो—जे असुरकुमारना

णाधि अपरस्य तान्येव समयन्यूनानि ततः समयन्यूनद्वाविंशतिवर्षसहस्रस्थितिकः परिपूर्णद्वाविंशतिवर्षसहस्रस्थितिकापेक्षया असंख्येयभागहीनस्त दपेक्षयाधिकतरोऽसंख्येयभागाधिकः । तथा एकस्य परिपूर्णानि द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि स्थिति रपरस्य तान्यन्तर्मुहूर्तादि न्यूनानि अन्तर्मुहूर्ता दिकं द्वाविंशतिवर्षसहस्राणां संख्येयतमो भागः ततोऽन्तर्मुहूर्तादिन्यूनद्वाविंशतिवर्षसहस्रस्थितिकः परिपूर्णद्वाविंशतिवर्षसहस्रस्थितिकापेक्षया

णेरइया जहा असुरकुमारा तहा नागकुमाराचि जाव थणियकुमारा । पुढविकाइयाण भंते ! केवइया पज्जया पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणठेण एवं वुच्चइ—पुढविकाइयाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! पुढविकाइए पुढविकाइयस्स दव्वठयाए तुल्ले, पदेसठयाए तुल्ले, ओगाहणठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए । जइ हीणे असंखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखिज्जगुणहीण वा । अह अब्भहिए असंखेज्जइभागअब्भहिए वा संखेज्जइभागअब्भहिए वा संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखिज्जगुणमब्भहिए वा । ठिइए सियहीण सियतुल्ले सियअब्भहिए, जइ हीण असंखिज्ज

प्ताः । एवं यथा नैरयिका यथा असुरकुमारास्तथा नागकुमारा अपि यावत्स्तनितकुमाराः । पृथिवीकायिकानां भदन्त ! कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेनैव मुच्यते—पृथिवीकायिकानाम् अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पृथिवीकायिक पृथिवीकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यः अवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः । यदि हीनो ऽसंख्येयतमा

ख्यात भागें अधिक हुवे असंख्यात भागे अधिक हुवे अथवा संख्यातगुण अधिक हुवे अथवा असंख्यातगुण अधिक हुवे । स्थितिने विषे निश्चय पृथिवी क या कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हवे । जइहीणे इत्यादि । जो हीन हुवे तो असंख्यात भाग हीन हुवे अथवा संख्यात भाग हीन हुवे अथवा संख्यातगुण हीन हुवे । अह अब्भहिए इत्यादि । जो अधिक हुवे तो असंख्यात भाग अधिक हुवे अथवा संख्यात भाग अधिक हुवे अथ

म्मायुःशुक्लजघन्यं शुक्लजघन्यस्य परिमाणमावलिकानां द्वेशते षट्पञ्चाशदधिके मुहूर्ते च द्विघटिकाप्रमाणे सप्तसङ्ख्या शुक्लजघन्यानां पञ्चषष्ठिसहस्राणि पञ्चशतानि षट्त्रिंशदधिकानि ६५५३६ " उक्तं-ईशानसयाइ नियमा खुड्डागभवग्गहणं । आवलियपमाणेण खुड्डागभव ग्गहणमेगं ॥ १ ॥ पण्णट्ठिसहस्साइ पंचेवसयाइ तहयछत्तीसा । खुड्डागभवग्गहणाणि, एवं मुहूर्तेन पक्षिमादीनां च स्थितिशतपतोपि सङ्ख्य वर्षप्रमाणा ततोमासक्षुल्लकगुणवृद्धिशाम्यो समयः सोपवृद्धिशामित्रिकभावनास्थयं-एकस्य किल पृथिवीकायस्थितिः परिपूर्णानि द्वाविंशतिवर्षसह

कक्खडफासपज्जवेहिं मउयफासपज्जवेहिं गरुयफासपज्जवेहिं लहुयफासप० सीतफासप० उसिणफासप० निद्धफासपज्जवेहि लुक्खफासपज्जवेहि आभिणिबोहियनाणपज्जवेहि सुयनाणपज्जवेहि ओहिनाणप० मइ अन्नाणप० सुयअन्नाण० विभंगनाणपज्जवेहि चक्खुदंसणपज्जवेहि अचक्खुदंसणपज्जवेहि ओहिदंसणपज्ज वेहिय छट्ठाणवडिए। से तेणट्ठेण ? गोयमा ! एवं वुच्चइ—असुरकुमाराणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता। एवं जहा

पर्यवैः कषायरसपर्यवै रसरसपर्यवै मधुररसपर्यवै कर्कशस्पर्शपर्यवै मृदुस्पर्शपर्यवै गुरुकस्पर्शपर्यवै लघुकस्पर्शपर्यवैः शीतस्पर्शपर्यवै उष्णस्प र्शपर्यवैः स्निग्धस्पर्शपर्यवै रूक्षस्पर्शपर्यवै राभिनिबोधिकज्ञानपर्यवै श्रुतज्ञानपर्यवै रवधिज्ञानपर्यवै मत्यज्ञानपर्यवैः श्रुताज्ञानपर्यवै विभङ्गज्ञा नपर्यवै चक्षुदर्शनपर्यवै रचक्षुर्दर्शनपर्यवै रवधिदर्शनपर्यवै षट्स्थानपतित इत्यनेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते-असुरकुमाराणामनन्ताः पर्यवाः प्र

स्तनितकुमार वर्गे वक्तव्यो । पुढविकाइयाणं भंते केवइया पज्जवा प इत्यादि । पृथिवी कायिकानां हे भगवन् कियन्तः पर्यायाः कथिताः प्र० हे गौ तम ! अनन्ताः पर्याय कथिताः ते कथ्यन्ते—अथ केन अर्थेन हे भगवन् इत्युच्यते पृथिवी कायिकानामनन्ताः पर्याय छे—हे गौतम पृथिवी कायिक पृथिवी कायिकने द्रव्याथ पणे तुल्य छे प्रदेशार्थ पणे पिण तुल्य छे अवगाहनार्थतायें कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिकछे । जदहीणे इत्यादि । जो हीन हुवे तो असङ्ख्यात भाग हीन हुवे अथवा सङ्ख्यात भागहीन हुवे संख्यातगुण हीनहुवे, अथवा असंख्यातगुण अधिक हुवे । जो अधिक हुवे तो अर्थ

वर्षसहस्रस्थितिकापेक्षया असंख्येयगुणहीनं तदपेक्षया तु परिपूर्णद्वाविंशतिवर्षसहस्रस्थितिकः संख्येयगुणाभ्यधिकः । एवमप्कायिकादीनामपि च तुरिन्द्रियपर्यन्तानां स्वस्वोत्कृष्टस्थित्यनुसारेण स्थित्या त्रिस्थानपतितत्वं भावनीयम् । तिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणां मनुष्याणां च चतुःस्थानपतितत्वं तेषां मुत्कर्षतः त्रीण्यपि पल्योपमानि स्थितिः पल्योपमं चासंख्येयवर्षसहस्रप्रमाणमतो ऽसंख्येयगुणवृद्धिहान्योरपि सम्भवा दुपपद्यते-चतुःस्थानपतितत्व एवं व्यन्तराणामपि तेषां जघन्यतो दशवर्षसहस्रस्थितिकत्वा दुत्कर्षतः पल्योपमस्थिति ज्योतिष्कवैमानिकानां पुनः स्थित्या त्रिस्थानपतितत्व यतो

? गोयमा ! आउकाइए आउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले, उग्गाहणट्ठाए चउट्ठाणवडिए ठिईए तिट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासमइअन्नाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए । ते उकाइयाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंतपज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! वुच्चइ—तेउकाइयाणं अनंता प ज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! तेउकाइए तेउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठाए चउ

द्रव्यार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शमत्यज्ञानश्रुताज्ञानाचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थान पतितः । तेजस्कायिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-तेजस्कायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! तेजस्कायिकस्तेजस्कायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुः स्थानपतितः स्थितौ त्रिस्थानप

द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पिण तुल्य छे, अवगाहनार्थताये चतु स्थान पतित एतले जेम पृथिवीकायिक तेमज जाणवो । स्थितिमे त्रिणेत्रिस्थान पतित जेम पृथिवीकायिकतिमज, वर्ण गन्ध रस स्पर्श मति अज्ञान श्रुत अज्ञान अने अचक्षुदर्शन पर्याये करी षटस्थान पतित कहवा । तेजस्का यार्थति । तजस्काय नो प्रश्न व हे गौतम तेजस्कायिकने अनन्त पर्याय कह्या । ते केवे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो जे तेजस्काय ने अनन्ता पर्याय छे प्र० उ० हे गौतम तेजस्काय तेजस्कायने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य छे, अवगाहनार्थे करी चतु स्थान पतित छे, स्थितिमे त्रिणे त्रिस्थान पतित

संख्येयभागहीनः तदपरया तु इतरः संख्येयभागाभ्यधिकः तथा यदा सद्द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि स्थितिरपरस्यान्तर्मुहूर्त्तमात्रो वर्षे समयवर्त्त या अन्तर्मुहूर्त्तादिक नियतपरिमाणया संख्यया गुणित द्वाविंशतिवर्षसहस्रस्थितिप्रमाणं भवति तेनान्तर्मुहूर्त्तादिप्रमाणस्थितिक परिपूर्णद्वाविंशति

भागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा । अह अब्भहिए असंखेज्जभागअब्भहिए वा संखेज्जभागअब्भहिए वा संखेज्जगुणमब्भहिए । वण्णेहिं गंधेहिं रसेहिं फासेहिं मइअन्नाणपज्जवेहिं सुयअन्नाण पज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । आउक्काइयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—आउकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता

हीनो वा संख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा ऽसंख्येयभागहीनो वा । अथाभ्यधिकोऽसंख्येयभागाभ्यधिको वा संख्येयभागाभ्यधिको वा संख्येयगुणाभ्यधिको वा ऽसंख्येयगुणाभ्यधिको वा । स्थितौ त्वाद्यन्तद्वयस्याभ्यधिकः । यदि हीनोऽसंख्येयभागहीनो वा संख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा अथाभ्यधिकोऽसंख्येयभागाभ्यधिको संख्येयभागाभ्यधिको वा संख्येयगुणाधिको वा । वर्णगन्धरसस्पर्शैर्मत्यज्ञानपर्यवैः श्रुताज्ञानपर्यवैरचक्षुर्दर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः । अप्कायिकानां भदन्त ! कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-अप्कायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अप्कायिकोऽप्कायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदे

या असंख्यातगुण अधिक हवे पृथिवी आदि पर्यायगुण ने वरनाद को विष स्थिति असंख्यातवर्ष प्रमाणे करी तेमाट असंख्यातगुण शालि धन बुद्धि संभवे मनो पतसे त्रिस्थान पतित कहया भावना टीका थी जाणवी । वर्णेहिं गंधेहिं रसेहिं इत्यादि । वर्ण पांच थी गंध थी रस थी स्पर्श थी मतिअज्ञान पर्यायें करी श्रुतअज्ञान पर्यायें करी अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित कहया । आउकाइयाणंति । अपकायने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते कण अर्थे हे भगवन् इम कह्या जे अपकायना अनन्ता पर्याय कह्या प्र उ० हे गौतम अपकायिक अपकायिकने

वयमस्रस्थितिकापेक्षया संख्येयगुणहीनं तदपेक्षया तु परिपूर्णद्वाविंशतिवर्षसहस्रस्थितिकः संख्येयगुणाभ्यधिकः । एवमप्कायिकादीनामपि च तुरिन्द्रियपर्यन्तानां स्वस्वोत्कृष्टस्थित्यनुसारेण स्थित्या त्रिस्थानपतितत्वं भावनीयम् । तिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणां मनुष्याणां च चतुःस्थानपतितत्वं तेषां प्युत्कर्षतः त्रीणि पल्योपमानि स्थितिः पल्योपमं चासंख्येयवर्षसहस्रप्रमाणमतो ऽसंख्येयगुणवृद्धिहान्यो रपि सम्भवा दुपपद्यते–चतुःस्थानपतितत्व एवं व्यन्तराणामपि तेषां जघन्यतो दशवर्षसहस्रस्थितिकत्वा दुत्कर्षतः पल्योपमस्थितिः ज्योतिष्कवैमानिकानां पुनः स्थित्या त्रिस्थानपतितत्वं यतो

? गोयमा ! आउकाइए आउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले, उग्गाहणठाए चउठाणवडिए ठिइए तिठाणवडिए, वन्नगंधरसफासमइअन्नाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहिय छठाणवडिए । तेउकाइयाण पुच्छा, गोयमा ! अणंतपज्जवा पन्नत्ता । से केणठेण भंते ! वुच्चइ–तेउकाइयाण अनंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! तेउकाइए तेउकाइयस्स दव्वठयाए तुल्ले पएसठयाए तुल्ले, उगाहणठाए चउ

प्रार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुस्स्थानपतितः । स्थितौ त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शमत्यज्ञानश्रुताज्ञानाचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थान पतित । तेजस्कायिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते–तेजस्कायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! तेजस्कायिकस्तेजस्कायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थितौ त्रिस्थानप

द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पिण तुल्य छे, अवगाहनार्थताये चतुःस्थान पतित एतले जेम पृथिवीकायिक तेमज जाणवो । स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित जेम पृथिवीकायिकतिमज, वर्ण गन्ध रस स्पर्श मति अज्ञान श्रुत अज्ञान अने अचक्षुदर्शन पर्याये करी षटस्थान पतित कहवा । तेजस्का स्यार्थति । तत्रस्थान ना प्रश्न च हे गौतम तेजस्कायिकने अनन्त पर्याय कह्या । ते केवे अर्थे हे भगवन् एम कह्यो के तेजस्काय ने अनन्ता पर्याय छे प्र० उ० हे गौतम तेजस्काय तेजस्कायने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य छे, अवगाहनाये करी चतुःस्थान पतित छे, स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित

सङ्ख्येयभागहीनः तदपेक्षया तु इतरः सङ्ख्येय भागाभ्यधिक तथा यकस्य द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि स्थितिरपरस्यान्तर्मुहूर्तं मासो वर्षं वर्षशतं वा अन्तर्मुहूर्तादिक नियतपरिमाणया सङ्ख्यया मुक्ति द्वाविंशतिवर्षसहस्रस्थितिप्रमाणं भवति तेनान्तर्मुहूर्त्तादिप्रमाणस्थितिकः परिपूर्णद्वाविंशति

भागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा । अह अब्भहिए असंखेज्जभागअब्भहिए वा संखेज्ज इभागअब्भहिए वा संखेज्जगुणमब्भहिए। वण्णेहिं गंधेहिं रसेहिं फासेहिं मइअन्नाणपज्जवेहिं सुयअन्नाण पज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । आउक्काइयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गो यमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—आउकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता

हीनो वा सङ्ख्येयभागहीनो वा सङ्ख्येयगुणहीनो वा ऽसङ्ख्येयभागहीनो वा । यद्यभ्यधिकोऽसङ्ख्येयभागाभ्यधिको वा सङ्ख्येयभागाभ्यधिको वा सङ्ख्येयगुणाभ्यधिको वा ऽसंख्येयगुणाभ्यधिको वा । स्थितौ स्याद्धीनस्स्यात्तुल्यस्स्यादभ्यधिक । यदि हीनोऽसङ्ख्येयभागहीनो वा सङ्ख्येय भागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा यद्यभ्यधिकोऽसङ्ख्येयभागाभ्यधिको सङ्ख्येयभागाभ्यधिको वा सङ्ख्येयगुणाधिको वा । वर्णगन्धरसस्पर्शमत्य ज्ञानपर्यवैः श्रुताज्ञानपर्यवैरचक्षुर्दर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतित । अप्कायिकानां भदन्त ! कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ता । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—अप्कायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अप्कायिकोऽप्कायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदे

वा असंख्यातमा भाग अधिक हुवे पृथिवी आदि पृथ्वीकाय ने बावीस हजार वर्ष की स्थिति असंख्यातवें प्रमाणे करी तेमाटे असंख्यातमा भाग अधिक हुवे सब वे करी अवे लिखाण पतित कहना भावना टीका से जाननी। वर्णेहि गंधेहि रसेहि इत्यादि । वर्ण गंध से रस से स्पर्श से मतिअज्ञान पर्यायें करी श्रुतअज्ञान पर्यायें करी अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित कहना । आउकाइयाणंति । आउकायने हे भगवन् केतला पर्याय क ह्या हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते कए अर्थे हे भगवन् इम कह्या जे अपकायना अनन्ता पर्याय कह्या प्र उ हे गौतम अपकायिक अपकायिकने

मा ! वणस्सइकाइए वणस्सइकाइयस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले । ओगाहणठयाए चउठाणवडिए ठिइय तिठाणवडिए । वन्नगंधरसफासमइअन्नाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहिय छठाणवडिए से तेणठेण ? गोयमा ! वणस्सइकाइयाण अणंता पज्जया पन्नत्ता । बेइंदियाण पुच्छा , गोयमा ! बेइंदियाण अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ बेइंदियाण अणंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! बेइंदिए बेइंदियस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले । उग्गाहणठयाए सियहीणे सियतुल्ले सियअ

अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणठेण भंते ! एवं वुच्चइ वणस्सइकाइयाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोय

एवमुच्यते-वनस्पतिकायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! वनस्पतिकायिको वनस्पतिकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शमत्यज्ञानश्रुताज्ञानाचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतित स्तते नार्थेन गौतम ! वनस्पतिकायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । द्वीन्द्रियाणां पृच्छा, गौतम ! द्वीन्द्रियाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केना

थान षटगुणगम पर्यायें करी षटस्थान पतित अथवा ते तवे अर्थे हे गौतम इम कह्या वनस्पतिकायना अनन्ता पर्याय कह्या । बेइन्द्रियाना पुच्छा । हे गौतम ब इन्द्रियना प्रश्न उत्तर हे गौतम बेइन्द्री ने अनन्ता पर्याय कह्या । ते केणे अर्थे हे भगवन् इमकह्यो बेइन्द्री ने अनन्ता पर्याय प्र० उ० हे गौतम ब (इन्द्री) बेइन्द्री ने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य छ । अवगाहनायें करी कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे, जे हीन हुवे तो असंख्या तमाम हीन हुवे अथवा संख्यात भाग हीन हुवे अथवा संख्यात गुण हीन हुवे अथवा असंख्यात गुण हीन हुवे । एम अधिक पण जाणवो । आ न अ हुवे तो असंख्यात भाग अधिक हुवे संख्यात भाग अधिक हुवे अथवा संख्यात गुणअधिक हुवे अथवा असंख्यात गुण अधिक हुवे । स्थितिये त्रिस्थान पतित हुवे । वर्ण गंध रस स्पर्श आभिनिबोधिकज्ञान श्रुतज्ञान मति अज्ञान श्रुत अज्ञान अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षटस्थान पतित हुवे ।

ठाणवडिए ठिईए तिठाणवडिए । वण्णगंधरसफासमइअन्नाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहिय छठाण वडिए । वाउकाइयाणं पुच्छा, गोयमा ! वाउक्काइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—वाउकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! वाउकाइए वाउक्काइयस्स दव्वठ्याए तुल्ले पदेसठ्याए तुल्ले ओगाहणठ्याए चउठाणवडिए ठिइए तिठाणवडिए वण्णगंधरसफासमइअन्नाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहिय छठाणवडिए । वणस्सइकाइयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा !

तितः । वर्णगन्धरसस्पर्शमत्यज्ञानश्रुताज्ञानाचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । वायुकायिकानां पृच्छा, गौतम ! वायुकायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-वायुकायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौ० । वायुकायिको वायुकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शमत्यज्ञानश्रुताज्ञानाचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । वनस्पतिकायिकानां भदन्त ! कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त !

वस्था, वर्ण गन्ध रस स्पर्श मति अज्ञान श्रुत अज्ञान अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित छे । वाउकाइयाणंति । वायुकायिक नो प्रश्न करता हे गौतम वायुकायिकने अनन्ता पर्याय कह्या । ते केवे अर्थे हे भगवन् एम कह्या वायुकायिकने अनन्ता पर्याय हे गौतम वायुकाय वायुकायने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थें करी पिण तुल्य छे अवगाहनापणाये करी चतुःस्थान पतित । स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित, वर्ण गन्ध रस स्पर्श मति अज्ञान श्रुत अज्ञान अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित छे । वणस्सइकाइयाणंति । वनस्पतिकायने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उ० हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते केवे अर्थे हे भगवन् एम कह्या वनस्पतिकायना अनन्ता पर्याय प्र० उ० हे गौतम वनस्पतिकाय वनस्पतिकायने द्रव्यार्थें तुल्य प्रदेशार्थें पिण तुल्य छे, अवगाहनापणाये चतुःस्थान पतित । स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित । वर्ण गन्ध रस स्पर्श मति अज्ञान श्रुत अ

अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ वणस्सइकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोय
मा ! वणस्सइकाइए वणस्सइकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए
ठिईए तिट्ठाणवडिए । वन्नगंधरसफासमइअन्नाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए से
तेणट्ठेणं ? गोयमा ! वणस्सइकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता । बेइंदियाणं पुच्छा , गोयमा ! बेइंदि
याणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता ? गो
यमा ! बेइंदिए बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अ

एवमुच्यते—वनस्पतिकायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! वनस्पतिकायिको वनस्पतिकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो
ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शमत्यज्ञानश्रुताज्ञानाचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतित स्तत्ते
नार्थेन गौतम ! वनस्पतिकायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । द्वीन्द्रियाणां पृच्छा गौतम ! द्वीन्द्रियाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केना

मान अवगुरुलघु पर्यायें करी षट्स्थान पतित जाणवा ते तेवे अर्थे हे गौतम इम कह्या वनस्पतिकायने अनन्ता पर्याय कह्या । बेइन्द्रियनी पृच्छा ।
हे गौतम बेइन्द्रियने अनन्ता पर्याय कह्या । ते केवे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो बेइन्द्रियने अनन्ता पर्याय प्र० ० हे गौतम ब
इन्द्रियो बेइन्द्रियथी द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य छे । अवगाहनाए करी कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे, जे हीन हुवे तो असंख्या
तमाग हीन हुवे अथवा संख्यात भाग हीन हुवे अथवा संख्यात गुण हीन हुवे अथवा असंख्यात गुण हीन हुवे । एम अधिक पण । जो अ[illegible]
हुवे तो असंख्यात भाग अधिक हुवे संख्यात भाग अधिक हुवे अथवा संख्यात गुण अधिक हुवे अथवा असंख्यात गुण अधिक हुवे । स्थितिए त्रि[illegible]
स्थान पतित हुवे । वर्ण गंध रस स्पर्श आभिनिबोधिकज्ञान श्रुतज्ञान मति अज्ञान श्रुत अज्ञान अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित हुवे ।

ब्भहिए। यदि हीणे असंखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असंखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जगुणअब्भहिए वा असंखेज्जगुणअब्भहिए वा ठिईए तिठाणवडिए। वन्नगंधरसफासआभिणिबोहियनाणसुयनाणमतिअन्नाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहिय छठाणवडिए। एवं तेइंदियाणवि। एवं चउरिंदियाणवि, णवरं दो दंसणा चक्खुदंसण अचक्खुदंसणपज्जवेहिय छठाणवडिए। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जवा जहा णेरइयाणं तहा भाणियव्वा। मणुस्साणं भंते! केवइया पज्जवा पन्नत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ मणुस्साणं अणंता पज्जवा प०, गोयमा! मणुस्सस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए

केन भदन्त! एवमुच्यते-द्वीन्द्रियाणामनन्ताः पर्यवाः? गौतम! द्वीन्द्रियो द्वीन्द्रियस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो अवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः। यदि हीनोऽसंख्येयभागहीनो वा संख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा असंख्येयगुणहीनो वा। अथ अभ्यधिकोऽसंख्येयभागाधिको वा संख्येयभागाधिको वा संख्येयगुणाधिको वा असंख्येयगुणाधिको वा। स्थित्या त्रिस्थानपतितः। वर्णगन्धरस

एवं त्रइन्द्रियाणवि। तेइन्द्रीमें पणि इमज कहवा। एवं चउरिंदियाणवि। चौरिन्द्रीमें पणि एमज कहवी एतलो विशेष दर्शन दोय चक्षुदर्शन अने अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित कहवो। पंचिंदियतिरिक्ख जोणियाणवि। पचेन्द्रिय तिर्यच योनिया ने पर्याय जिम नारकी ने कह्या तिम कहवा। मणुस्साणं भंतेत्ति। मनुष्यने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या। ते केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्या मनुष्यने अनन्ता पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम मनुष्यने मनुष्य द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पिण तुल्य अवगाहनायें करी चउस्थान पतित स्थितिये करी चतुःस्थान पतित वर्ण गन्ध रस स्पर्श मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधि मनपर्यव ज्ञान पर्यायें करी षट्स्थान पतित कहवा केवलज्ञान पर्याये

ज्योतिष्काणां जघन्यमायुः पल्योपमाष्टभाग उत्कर्षतो वर्षलक्षाधिकं पल्योपमं वैमानिकानां जघन्यं पल्योपमं उत्कृष्टं त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि दशकोटाकोटीसङ्ख्येयपल्योपमप्रमाणं च सागरोपमं ततश्च सर्वेषामपि वृद्धिहान्यसम्भवात् स्थितितः त्रिस्थानपतितता अपसूत्रभावनात् सुगमत्वात् स्वयं भावनीया तदेवं सामान्यतो नैरयिकादीनां प्रत्येकपर्यायानन्त्यं प्रतिपादितमिदानीं जघन्याद्यवगाहनाद्यधिकृत्य तेषामेव प्रत्येकं पर्यायान्

तुल्ले उग्गाहणट्ठाए चउट्ठाणवडिए । ठिइए चउट्ठाणवडिए । वन्नगंधरसफासआभिणिबोहियनाणसुयनाण ओहिनाणमणपज्जवनाणपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए, केवलनाणपज्जवेहि तुल्ले तिहिं अन्नाणेहि तिहि दंसणेहि छट्ठाणवडिए केवलदंसणपज्जवेहि तुल्ले । वाणमंतरा उगाहणट्ठाए ठिइए चउट्ठाणवडिया वन्नादीहि छट्ठाण

एवमाभिनिबोधिकज्ञानश्रुतज्ञानमत्यज्ञानश्रुताज्ञानाचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । एवं त्रीन्द्रियाणामपि । एवं चतुरिन्द्रियाणामपि, नवरं इहमाने चक्षुर्ज्ञानाचक्षुर्दर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः । पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां यथा यथा नैरयिकाणां तथा भणितव्याः । मनुष्याणां भदं० । कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः, तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते मनुष्याणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! मनुष्यो मनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ चतुःस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शाभिनिबोधिकज्ञान श्रुतज्ञानावधिज्ञानमनःपर्यवज्ञानपर्यवैः षट्स्थानपतितः । केवलज्ञानपर्यवैस्तुल्यः । त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः, केवलदर्शनपर्यवैस्तुल्यः । वानव्यन्तराः अवगाहनार्थतया स्थितौ चतुःस्थानपतिताः । वर्णादिभिः षट्स्थानपतिताः । ज्योतिष्कवैमानिकावपि एवमेव नवरं

कहे तेम कह्यां छे । वानमंतरत्ति । वानव्यन्तर अवगाहनायें करी स्थितियें करी चउठाणपतित अने वर्णादिकें करी छठाणपतित । जोइसियवेमाणियाविति । ज्योतिषी वैमानिक पिण एमज कहेवा एतलो विशेष स्थिति में त्रिठाण पतित कहेवा । जहण्णोगाहणगाणं नेरइयाणंति । जघन्य अवगाहना ना नारकीने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गो०

करी तथा चउठाण चउठाणे करी षट्स्थान पतित केवलज्ञान पर्यायें करी तुल्य छे ।

अट्ठिया जोइसियवेमाणियावि एवचेव नवर ठिईए चउट्ठाणवडिए तिट्ठाणवडिया । जहन्नोगाहणाण भंते ! णेरइयाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा प० । से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—जहन्नोगाहणगाण भंते णेरइयाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जहन्नोगाहणगाण णेरइयाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए णेरइए जहन्नोगाहणस्स णेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले उग्गाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहि तिहि नाणेहि तिहि अन्नाणेहि तिहि दसणेहि छट्ठाणवडिए । उ

स्थितौ त्रिस्थानपतितौ । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! नैरयिकाणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्तास्तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यावगाहनकानां नैरयिकाणां अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यावगाहनको नैरयिको जघन्यावगाहनकनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया च तुल्योऽवगाहनयाऽपि तुल्यः स्थितौ चतुःस्थानपतितः । वर्णरसगन्धस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । उत्कृष्टावगाहनकानां भदन्त ! नैरयिकाणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । त

तम अनन्ता पर्याय कह्या । ते कथ पर्यें हे भगवन् इम कह्या जघन्य अवगाहना ना नारकीने अनन्ता पर्याय कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य अवगाहना ना नारकी जघन्य अवगाहना ना नारकीने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य अवगाहनार्थे पिण तुल्य स्थितिर्ये करी चउ स्थान पतित वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्यायें करी त्रण ज्ञाने करी त्रण अज्ञाने करी त्रण दर्शने करी षट्स्थान पतित । उत्कृष्टोगाहनकाधिकार । उत्कृष्ट अवगाहना ना नारकी ने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या ते कथे पर्यें हे भगवन् इम कह्या उत्कृष्ट अवगाहना ना नारकी ने अनन्ता पर्याय प्र उ हे गौतम उत्कृष्ट अवगाहना ना नारकी उत्कृष्ट अवगाहना ना नारकी ने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य अवगाहनार्थे तुल्य स्थि

प्रतिपादयिपुराह-अजघन्योत्कृष्टावगाहनकानां भंते ! इत्यादि ॥ सुगमं ॥ नवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए इति ॥ जघन्यावगाहनो हि दशवर्षसहस्रस्थितिकोऽपि भवति रत्नप्रभायां मुत्कृष्टस्थितिकोऽपि सप्तमनरकपृथिव्यामुपपद्यते, स्थित्या चतुःस्थानपतितत्वात् ॥ तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं ॥ उक्

उक्कोसोगाहणयाणं भंते ! णेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—उक्कोसोगाहणयाणं णेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! उक्कोसोगाहणए णेरइए उक्कोसोगाहणस्स णेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए । यदि हीणे असंखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जइभागहीणे वा । अह अब्भहिए असंखेज्जइभागअब्भहिए वा संखेज्जइभागमब्भहिए वा वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । अजहन्नुक्कोसगाणं भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा !

एकमाधिन भवन्त । एवमुच्यते उत्कृष्टावगाहनकानां नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! उत्कृष्टावगाहनकनैरयिक उत्कृष्टावगाहनकनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तथा प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः । यदि हीनोऽसंख्येयभागहीनो वा संख्येयभागहीनो वा अथाभ्यधिकः असंख्येयभागाभ्यधिकः संख्येयभागाभ्यधिको वा, वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । अजघन्योत्कृष्टावगाहनकानां नैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः

स्थिति करी कदाचित् हीन कदाचित् सम कदाचित् अधिक । जे हीन हुवे असंख्यात भागहीन हुवे संख्यात भाग हीन हुए । जे अधिक हुवे ते असंख्यात भाग अधिक हुवे संख्यात भाग अधिक हुवे । वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्याये करी त्रण ज्ञाने करी त्रण अज्ञाने करी त्रण दर्शने करी षट्स्थान पतित कह्यो । अजघन्योत्कृष्टावगाहनावंत । मध्यम अवगाहना ना नारकी ने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय

यदा गर्भव्युत्क्रान्तिकसंज्ञिपञ्चेन्द्रिया नरकेषूत्पद्यन्ते तदा स नारकायुःसंवेदनप्रथमसमय एव पूर्वगृहीतौदारिकशरीरपरिशाटं करोति तस्मिन्नेव समये
सम्यग्दृष्टेः त्रीणि ज्ञानानि मिथ्यादृष्टेः त्रीणि अज्ञानानि समुत्पद्यन्ते ततोऽविग्रहेणाविग्रहेण वा गत्वा वैक्रियशरीरसङ्घातं करोति यस्तु सम्मूर्छिम
संज्ञिपञ्चेन्द्रियो नरकेषूत्पद्यते तस्य तदानीं विभङ्गज्ञानं नास्तीति अपर्याप्तावगाहनस्य ज्ञानानि भजनया द्वे त्रीणि वेति' उत्कृष्टावगाह
नरूपे स्थित्या हीनो वृद्धो च द्विस्थानपतितत्वं तद्यथा-असङ्ख्येयभागहीनत्वं वा सङ्ख्येयभागहीनत्वं वा तथा असङ्ख्येयभागाधिकत्वं वा सङ्ख्येयभा
गाधिकस्य वा ननु सङ्ख्येयाऽसङ्ख्येयगुणवृद्धिहानी कस्मान्न स्थितौ? उच्यते-उत्कृष्टावगाहनाहि नैरयिकाः पञ्चधनुःशतप्रमाणाः ते च सप्तमनरकपृ

अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—अजहन्नुक्कोसगाणं णेरइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता? गोयमा! अजहन्नुक्कोसए णेरइए अजहन्नुक्कोसगस्स णेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले। ठिईए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जदि हीणे असंखिज्जइभागहीणे वा संखेज्जइभागहीणे वा, अह अब्भहिए असंखेज्जइभागअब्भहिए संखेज्जइभागअब्भहिए वा वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए। अजहन्नुक्कोसोगाहणगाणं

प्रज्ञप्ताः अजघन्योत्कृष्टावगाहनकनैरयिकोऽजघन्योत्कृष्टावगाहनकनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया स्यात्
हीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः। यदि हीनोऽसङ्ख्येयभागहीनो वा सङ्ख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वाऽसंख्येयगुणहीनो वा। यथा
अधिकोऽसङ्ख्येयभागाधिको वा सङ्ख्येयभागाधिको वा सङ्ख्येयगुणाधिको वा असङ्ख्येयगुणाधिको वा। स्थितौ स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्याद

कहा, वे सभी पर्यायों से समान हैं? प्रश्न के मध्यम अवगाहना वाले नारकों के अनन्त पर्याय कहे गए हैं? उत्तर हे गौतम मध्यम अवगाहना वाले नार
को मध्यम अवगाहना वाले नारकों से द्रव्य रूप से तुल्य है प्रदेश रूप से तुल्य है अवगाहना से कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अ

यिष्या तत्र प्रथमा स्थिति द्वाविंशतिसागरोपमाणि उत्कृष्टा त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि ततो सङ्ख्येयासङ्ख्येयभागवृद्धिरेव घटेते न सङ्ख्येयगुणवृ- मिवृद्धी तथा चोत्कृष्टावगाहनानां त्रीणि धनूंषि त्रीण्यधिकानि वा नियमा द्वेवितव्यानि न प्रवचना प्रजनाह्नतो सम्मूर्च्छिमासंज्ञिपञ्चेन्द्रियोत्पा- दस्य तेषामसम्भवात् अजघन्योत्कृष्टावगाहनसूत्रे मध्यमावगाहनया चतुःस्थानपतितत्वं सर्वं-अजघन्योत्कृष्टावगाहनोऽपि जघन्याङ्गुलासङ्ख्येयभागा- त्परतो समारभ्य एकतराङ्गुलासङ्ख्येयभागा दारभ्य यावदङ्गुलासङ्ख्येयभागन्यूनानि पञ्चधनुःशतानि तावद्भवत। तत सामान्यैरपिकसूत्रवत्प्राप्नुयत

भंते ! णेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-अजहन्नमणुक्कोसोगाहणगाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए णेरइए अजहन्नमणुक्कोसोगाहणस्स णेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले उगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए । जइ हीणे असंखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखिज्ज गुणहीणे वा । अह अब्भहिए वा असंखिज्जइभागमब्भहिए वा संखेज्जइभागमब्भहिए वा संखिज्जगुणअब्भहिए

भ्यधिक। यदि हीनोऽसङ्ख्येयभागहीनो वा सङ्ख्येयभागहीनो वा असङ्ख्येयगुणहीनो वा सङ्ख्येयगुणहीनो वा। अथाभ्यधिकोऽसङ्ख्येयभागा

धिक वा। वर चोचे इत्यादि। जे हीन हुवे असंख्यात भागहीन हवे अथवा संख्यात भागहीन हुवे संख्यात गुण हीन हुवे अथवा असंख्यात गुण हो न हवे। अब अभ्यधिक। जे अधिक हुवे असंख्यात भाग अधिक हुवे अथवा संख्यात भाग अधिक हुवे संख्यात गुण अधिक हुवे अथवा असंख्या त गुण अधिक हवे स्थिति विषे कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे, जे हीन हुवे असंख्यात भाग हीन हुवे अथवा संख्यात भा ग हीन हवे अथवा असंख्यातगुण हीन हवे अथवा संख्यात गुण हीन हुवे, अन जे अधिक हुवे असंख्यात भाग अधिक हुवे संख्यात भाग अधिक हुवे अथवा संख्यातगुण अधिक हुवे अथवा असंख्यात गुण अधिक हुवे, वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्याये करी अने ज्ञाने करी अने अज्ञाने करी अने दर्शने

यदा सर्वोत्कृष्टस्थितिकसप्तमपृथ्वीनारकेषूत्पद्यते तदा स नारकायुःसंवेदनप्रथमसमय एव पूर्वगृहीतौदारिकशरीरपरिशाटं करोति तस्मिन्नेव समये सम्यग्दृष्टेः त्रीणि ज्ञानानि मिथ्यादृष्टेः त्रीणि अज्ञानानि समुत्पद्यन्ते ततोऽविग्रहेणविग्रहेण वा गत्वा वैक्रियशरीरसङ्घातं करोति यस्तु सम्मूर्च्छिमा संज्ञिपञ्चेन्द्रियो नरकेषूत्पद्यते तस्य तदानीं विभङ्गज्ञानं नास्तीति जघन्यावगाहनस्या ज्ञानानि अज्ञानानि तु त्रीणि विकल्पेन उत्कृष्टावगाहनसूत्रे स्थित्या हीनो वृद्धो च द्विस्थानपतितस्य तद्यथा-असङ्ख्येयभागहीनत्व वा सङ्ख्येयभागहीनत्व वा तथा असङ्ख्येयभागाधिकत्व वा सङ्ख्येयभागाधिकत्व वा ननु सप्तमेऽसंख्येयगुणवृद्धिहानी कस्मात् स्थितेः उच्यते-उत्कृष्टावगाहनाहि नैरयिकाः पञ्चसु प्रतरेषु न च सप्तमनरकपृ

अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-अजहन्नुक्कोसगाणं णेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! अजहन्नुक्कोसए णेरइए अजहन्नुक्कोसगस्स णेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले। ठिईए सियहीणे सियतुल्ले सियअब्भहिए। जदि हीणे असंखिज्जइभागहीणे वा संखिज्जइभागहीणे वा, अह अब्भहिए असंखेज्जइभागअब्भहिए संखेज्जइभागअब्भहिए वा वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए। अजहन्नुक्कोसोगाहणगाणं

प्रज्ञप्ताः अजघन्योत्कृष्टावगाहनकनैरयिकोऽजघन्योत्कृष्टावगाहनकनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः। यदि हीनोऽसङ्ख्येयभागहीनो वा सङ्ख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा ऽसंख्येयगुणहीनो वा। अथाभ्यधिकोऽसङ्ख्येयभागाधिको वा सङ्ख्येयभागाधिको वा सङ्ख्येयगुणाधिको वा असङ्ख्येयगुणाधिको वा। स्थित्या स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्याद

कहा, ते क्यों पर्याय हे भगवन् ! ऐसा कहा के मध्यम अवगाहना वा नारकों के अनन्ता पर्याय कहा है। उत्तर हे गौतम मध्यम अवगाहना वा नारकी मध्यम अवगाहना वा नारकी से तुल्य है द्रव्य पणे करी प्रदेश पणे तुल्य है अवगाहनाये करी कदाचित् हीन कदाचित्तुल्य कदाचित् अ

गाहणगाए णेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता । जहण्णठिईयाणं भंते ! णेरइयाणं केवइया पज्जवा प० ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहण्णठिईयाणं णेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णठितीए नेरइए जहण्णठिइयस्स णेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। ठिईए तुल्ले वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसठिइएवि। अजहन्नुक्कोसठिइएवि एवं णवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए जहण्णगुणकालयाणं भंते ! णेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ – जहण्णगुणकालयाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगु

कानां स्थितिक पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञ० । अथ केनार्थेन भ० । एवमुच्यते जघन्यस्थितिकनैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यस्थितिकनैरयिको जघन्यस्थितिकनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या तुल्यः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षस्थितिकनैरयिकोपि चतुःस्थानपतितः अजघन्योत्कर्षस्थितिकोपि नवरं स्वस्थाने चतुःस्थानपतितः । जघन्यगुणकालकानां भदन्त ! नैरयिकाणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यगुणकालकानां नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यगुणकालक

न तिन तरह का गन्ध रस स्पर्श पर्यायें करी चार ज्ञान चार अज्ञान करी चार दर्शन करी षटस्थान पतित । एवं उक्कोसठितीएवि । एमज उत्कृष्ट स्थितिवाला नारकी मे जाणना कहना । अजहन्नुक्कोसठितीएवि, मध्यम स्थितिवाला नारकी मे एवि इसप्रकार विशेष स्वस्थाने चतुस्थान पतित कहना । जहण्णगुणकालयाणंवि । जघन्यगुण कालकने हे भगवन् नारकी ने केतला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या , ते केवे अर्थे हेभग

घते पयगाहनव चतुःस्थानपतितत्वा स्थित्या चतुःस्थानपतितता तुमतोवा दशवर्षसहस्रेभ्य आरभ्यो त्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणामपि तस्या सम्यमानत्वात, जघन्यस्थितिसूत्रेऽवगाहनया चतुःस्थानपतितत्व तस्यावगाहनाया जघन्यतोऽङ्गुलासंख्येयभागादारभ्योत्कर्षतः सप्तपादोनधनुषोऽ पाप्यमानत्वात् यथापि वीस्थानानि यथापि स्थदापि स्थतमा द्वसम्भानि समूर्च्छिमासंघिपञ्चेन्द्रियेभ्य उत्पन्नानामपर्याप्तावस्थाया विभंगस्या ऽनावात् उत्कृष्टस्थितिविन्तायामवगाहनया चतुःस्थानपतितत्व मुत्कृष्टस्थितिकस्याऽवगाहनाया जघन्यतोऽङ्गुलासंख्येयभागादारभ्यो त्कर्षतः पञ्चा मा धनुःशतानां प्राप्यमानत्वात् ॥ अजघन्योत्कृष्टस्थितावपि एवंवक्तव्यादि ॥ अजघन्योत्कृष्टस्थितावपि वक्तव्य यथा जघन्यस्थितिसूत्रे उत्कृष्टस्थिति सूत्रे च नवरमय विशेषो जघन्यस्थितिसूत्रे उत्कृष्टस्थितिसूत्रे च स्थित्या तुल्यत्व मभिहित मत्रतु स्वस्थानेऽपि स्थितावपि चतुःस्थानपतित इति व

या असंखेज्जगुणअब्भहिएवा। ठिइए सियहीणे सियतुल्ले सियअब्भहिए। जदि हीणे असंखेज्जभागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असंखेज्जइभागअब्भहिए वा संखेज्जइभागअब्भहिए वा संखेज्जगुणअब्भहिए असंखेज्जगुणअब्भहिए वा वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छठाणवडिए। से तेणठेण एवं वुच्चइ ? गोयमा ! अजहन्नुक्कोसो

धिको वा संख्येयभागाधिको वा संख्येयगुणाधिको वा असंख्येयगुणाधिको वा। वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितस्तत्तेनार्थेन गौतम। अजघन्योत्कृष्टावगाहनकानां नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। अजघन्यस्थितिकानां पृच्छा। नैरयि

करो षट्स्थान पतित एवे ते तेवे अर्थे हे गौतम इम कह्या सघ अवगाहना ना नारकी ने अनन्ता पर्याय कह्या। अजघन्य स्थितिपावति। अजघन्य स्थि तिना नारकी ने हे भगवन् कितला पर्याय कह्या प्र उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या ते केवे अर्थे इम कह्यो अजघन्य स्थितिना नारकी ने अज ना पर्याय प्र० उ हे गौतम अजघन्य स्थितिना नारकी अजघन्य स्थितिना नारकी न द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य अवगाहनाये चतुःस्थान पतित, स्थिति

वा पज्जवा । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहण्णाभिणिबोहियनाणीण नेरइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता गोयमा । जहण्णाभिणिबोहियनाणीनेरइए जहण्णाभिणिबोहियनाणिस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले उग्गाहणट्ठयाए चउठाणवडिए । ठितीए चउठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं छठाणवडिए । आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले सुयनाणअन्नाणपज्जवेहिं छठाणवडिए । एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि । अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि एवचेव नवरं आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं स

प्रज्ञप्ता ? गौतम ! अनन्ता: पर्यवा: प्रज्ञप्ता इत्यत्रार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते–अघन्याभिनिबोधिकज्ञानिना नैरयिकाणामनन्ता: पर्यवा: प्रज्ञप्ता: ? गौतम ! जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनैरयिको जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्य: प्रदेशार्थतयापि तुल्योऽवगाहना र्थतया चतु:स्थानपतित: । स्थित्या चतु:स्थानपतित: । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवै: षट्स्थानपतित: । आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवै: तुल्य: श्रुतज्ञाना ज्ञानपर्यवै: षट्स्थानपतित: । एवमुत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानिनोऽपि । अजघन्यानुत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञान्यप्येवं चैव नवरमाभिनिबोधि

नारकीने केटलाक अनंता पर्याय कह्या प्र उत्तर हे गौतम अनंता पर्याय कह्या, ते कये अर्थे हे भगवन् एम कह्या—जघन्याभिनिबोधिक ज्ञानी ना रकीने अनंता पर्याय कह्या प्र उत्तर हे गौतम जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी नारकी जघन्य आभिनिबोधिक नारकी ने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य अवगाहनाये चतुस्थान पतित । स्थिति विषे चतुस्थान पतित । वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्याये करी षट्स्थान पतित । आभिनिबोधिक ज्ञान पर्याये करी तुल्य श्रुतज्ञान अज्ञान पर्याये करी षट्स्थान पतित । एम उत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानी पण । मध्यम उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी पिण एम ज ना । अजघन्यमनुत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानीपण एमज जाणवा । मध्यम आभिनिबोधिकज्ञानी ने पणि एमज जाणवा एतलो विशेष आभिनिबोधिक ज्ञान प

णकालए नेरइए जहन्नगुणकालगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए चउट्ठाणवडिए । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ – जहन्नगुणकालयाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता । एवं उक्कोसगुणकालएवि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवंचेव नवरं कालवण्णपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं अवसेसा चत्तारि वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा भाणियव्वा । जहन्नाभिणिबोहियनाणीणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्ज

नैरयिको जघन्यगुणकालनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतयापि तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ चतुःस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैः तुल्योऽवशेषैर्वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितस्तेनार्थेन भदन्त । एवमुच्यते–जघन्यगुणकालनैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । एवमुत्कृष्टगुणकालकोऽपि । अजघन्यानुत्कृष्टगुणकालकोऽप्येवमेव नवरं कालवर्णपर्यवैः षट्स्थानपतितः एवमवशेषाश्चत्वारो वर्णा द्वौ गन्धौ पञ्च रसा अष्टौ स्पर्शा भणितव्याः । जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनां भदन्त । नैरयिकाणां कियन्तः पर्यवाः

भद् इम कह्या जघन्यगुण कालक नारकी ना अनन्ता पर्याय कह्या प्र उ हे गौतम जघन्यगुण कालक नारकी जघन्यगुण कालक नारकीने द्रव्यार्थे तरह प्रदेशार्थे तस्य अवगाहनायें चतुःस्थान पतित । स्थितिने विषे चतुःस्थान पतित कालवर्ण पर्याये तस्य, अवशेष वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्याये करी त्रण ज्ञाने करी त्रण अज्ञाने करी त्रण दर्शने करी षट्स्थान पतित । तेह तेणे अर्थे गौतम इम कह्यो जघन्यगुणकालक नारकीने अनन्ता पर्याय कह्या । एम उत्कृष्ट गुण कालक पणि कहवा । अजघन्यमनुत्कृष्ट । मध्यम गुण कालकनी पणि एमज कहवा एतला विशेष काल वर्ण पर्याये करी षट्स्थान पतित । एमज अवशेष चार वर्ण दोय गन्ध पांच रस आठ स्पर्श कहवा । जघन्याभिनिबोधिकज्ञानि । जघन्य मतिज्ञानिक नारकी

स्य ममपाधिकदसवपसहस्रेन्य धारम्योरुपत समयोनत्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाया मवाप्यमानत्वात्, जघन्यगुणकालिकादिसूत्राणि सुमतीतानि

वा पण्णत्ता । से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—जहण्णाभिणिबोहियनाणीण नेरइयाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता गोयमा ! जहण्णाभिणिबोहियनाणीनेरइए जहण्णाभिणिबोहियनाणिस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेस ट्ठयाए तुल्ले उग्गाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए चउट्ठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाण वडिए । आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले सुयनाणओहिनाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसाभिणि बोहियनाणीवि । अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि एवंचेव नवरं आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं स

प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनां नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञ प्ताः ? गौतम ! जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनैरयिको जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहना र्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या चतुःस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवैः तुल्यः श्रुतज्ञाना वधिज्ञानपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञान्यपि । अजघन्यानुत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञान्यप्येवं चैव नवरमाभिनिबोधि

नारकाने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या ? उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या ते केणे अर्थे हे भगवन् एम कह्या—जघन्याभिनिबोधिक ज्ञानी ना रकीने अनन्ता पर्याय कह्या ? उत्तर हे गौतम जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी नारको जघन्य आभिनिबोधिक नारको ने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य अवगाहनार्थे चतुःस्थान पतित । स्थितिए पिण चतुःस्थान पतित । वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्याये करी षट्स्थान पतित । आभिनिबोधिक ज्ञान पर्याये करी तुल्य श्रुतज्ञान अवधिज्ञान पर्याये करी षट्स्थान पतित । एम उत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानी पिण । अजघन्य उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी पिण कहे वा । अजघन्यमनुत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानीवि एवं चेव ति । मध्यम आभिनिबोधिकज्ञानी ने पिण एमज जाणवो एतलो विशेष आभिनिबोधिक ज्ञान प

नवरं ॥ जस्स नाणा तस्स अन्नाणा नत्थित्ति ॥ यस्य ज्ञानानि तस्याज्ञानानि न सन्तीति यतः सम्यग्दृष्टेः ज्ञानानि मिथ्यादृष्टेरज्ञानानि सम्यग्दृष्टित्वं च मिथ्यादृष्टित्वोपमर्देन भवति मिथ्यादृष्टित्वमपि सम्यग्दृष्टित्वोपमर्देन भवति ततो ज्ञानसद्भावे अज्ञानाभाव एवमज्ञानसद्भावे ज्ञानाभाव तत उक्त-जहा नाणा तहा अन्नाणावि भाणियव्वा नवरं जस्स अन्नाणा तस्स नाणा न भवंति इति ॥ एष पाठविधिमेवमसुरकुमारादिसूत्रास्वपि

ठाणे छठ्ठाणवडिए । एवं सुयनाणी । ओहिनाणीवि एवचेव नवरं जस्स नाणा तस्स अन्नाणा नत्थि जहा नाणा तहा अन्नाणावि भाणियव्वा नवरं जस्स अन्नाणा तस्स नाणा नत्थि । जहन्नचक्खुदंसणीणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ । जहन्नचक्खुदंसणीणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नचक्खुदंसणीए नेरइए जहन्नचक्खुदंसणिस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउठाणवडिए । ठिईए चउठा

ज्ञानपर्ययैः षट्स्थानपतितः । एवं श्रुतज्ञान्यवधिज्ञान्यपि नवरं यस्य ज्ञानानि तस्याज्ञानानि न सन्ति यथा ज्ञानानि तथाऽज्ञानान्यपि भणितव्यानि नवरं यस्याज्ञानानि तस्य ज्ञानानि न सन्ति । जघन्यचक्षुर्दर्शनिनां भदन्त ! नैरयिकाणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यचक्षुर्दर्शनिनां नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघ

थोथे कहो छठाणे पटस्थान पतित । एम श्रुतज्ञानी कहिए । एमज श्रुतज्ञानी अने अवधिज्ञानी ने पण जाणवा कहवो एटला विशेष जेहने ज्ञान हवे तहने अज्ञान न हवे अन ज्ञान तेम अज्ञान पिण कहवा एतला विशेष जहने अज्ञान तेहने ज्ञान नथी । जघन्य चक्षुदर्शन नेरइयानीपति । जघन्य चक्षुदर्शन नारकी ने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या हे गौतम अनंता पर्याय कह्या । ते केणे अर्थे हे भगवन् एम कह्या जघन्य चक्षुदर्शन नारकी ने अनंता पर्याय कह्या हे गौतम जघन्य चक्षुदर्शन नारकी ने जघन्य चक्षुदर्शन नारकी द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पण तुल्य अवगाहनार्थे करी चउ स्था

प्रायतीयानि माय समामगमत्यात्, अपन्यावगाहमादिपरिमाणादिसूत्रे – स्थित्या त्रिस्थानपतितस्य सत्येयपर्यायुक्तत्वात्, एतस मागेव सामान्यप

णवडिए । वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं छट्ठाणवडिए । चक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसचक्खुदंसणीवि । अजहन्नमणु तुल्ले । अचक्खुदंसणपज्जवेहिं ओहिदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं अचक्खुदंसणीवि ओहिदंसणीवि । जहन्नोगा कोसचक्खुदंसणीवि एवचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । असुरकुमाराणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठे हणगाणं भंते ! असुरकुमाराणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नोगाह ण भंते ! एवं वुच्चइ—जहन्नोगाहणगाणं असुरकुमाराणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नोगाह

चक्षुर्दर्शनिनैरयिको जघन्यचक्षुर्दर्शनिनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या चतुः स्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैः षट्स्थानपतितः । चक्षुर्दर्शनपर्यवैस्तुल्योऽचक्षुर्दर्शनपर्यवैरवधिदर्शनपर्यवैः षट् स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टचक्षुर्दर्शनिनापि । अजघन्यानुत्कृष्टचक्षुर्दर्शनिनोऽप्येवमेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतिता । एवमचक्षुर्दर्शन्यपि, अवधि दर्शन्यपि एव । जघन्यावगाहनकानां प्रदन्त । असुरकुमाराणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन

म पतित, स्थितिमे भि चतःस्थान पतित छ मध्य एव स्थान पर्याये करी चव स्थाने करी चव स्थाने करी षट्स्थान पतित हुवे चक्षुदर्शन पर्याये करी तुल्य अचक्षुदर्शन पर्याये करी अवधिदर्शन पर्याये करी षट्स्थान पतित हुवे । एवं उत्कृष्ट चक्षुदर्शनीवि जाणवो । एमज उत्कृष्ट चक्षुदर्शनी पणि कहवो मध्यम चक्षुदर्शनी ने पिण एमज कहवा एतला विशेष स्वस्थान ने विषे षट्स्थान पतित हुवे । एम अचक्षुदर्शनीवि । अवधिदर्शनी पण एमज कहवा । अवधिदर्शनी पणि एमज कहवा । जघन्योगाहनावंत भंते असुरकुमारानी पृच्छा । जघन्य अवगाहना ना असुरकुमारने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र उत्तर ह गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते किणे अर्थे हे भगवन् इम कह्या जघन्य अवगाहना ना असुरकुमारने अनन्ता पर्याय कह्या प्र उत्तर

णर्दं ० यस्य नाणा तस्य अन्नाणा नत्थित्ति ॥ यस्य ज्ञानानि तस्याज्ञानानि न सन्तीति यतः सम्यग्दृष्टे र्ज्ञानानि मिथ्यादृष्टे रज्ञानानि सम्यग्दृष्टित्व च मिथ्यादृष्टित्वोपमर्देन भवति मिथ्यादृष्टित्वमपि सम्यग्दृष्टित्वोपमर्देन भवति ततो ज्ञानसद्भावे अज्ञानाभाव अज्ञानसद्भावे ज्ञानाभाव इति उक्तं जहा नाणा तहा अन्नाणावि भाणियव्वा नवरं जस्स अन्नाणा तस्स नाणा न भवंति इति ॥ शेष पाठसिद्धमेवमसुरकुमारादिसूत्राण्यपि

ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं सुयनाणी । ओहिनाणीवि एवचेव नवरं जस्स नाणा तस्स अन्नाणा नत्थि जहा नाणा तहा अन्नाणावि भाणियव्वा नवरं जस्स अन्नाणा तस्स नाणा नत्थि । जहन्नचक्खुदंसणीणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहन्नचक्खुदंसणीणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नचक्खुदंसणीणं नेरइए जहन्नचक्खुदंसणिणस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठिईए चउट्ठा

वर्णपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एवं श्रुतज्ञान्यवधिज्ञान्यपि नवरं यस्य ज्ञानानि तस्याज्ञानानि न सन्ति यथा ज्ञानानि तथाऽज्ञानान्यपि भणितव्यानि नवरं यस्याज्ञानानि तस्य ज्ञानानि न सन्ति । जघन्यचक्षुर्दर्शनिनां भदन्त ! नैरयिकाणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यचक्षुर्दर्शनिनां नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघ

वार्ये करी षट्स्थाने पतित पतित । एम श्रुतज्ञानी स्वादि । एमज श्रुतज्ञानी अने अवधिज्ञानी ने पण जाणवा करवो एतला विशेष जेहने ज्ञान छे तेहने अज्ञान न हुवे अने अज्ञान, तेम अज्ञान पिण कहवा एतला विशेष जहने अज्ञान तेहने ज्ञान नथी । जघन्य चक्षुदर्शन नेरइयाने ति । जघन्य चक्षुदर्शन नारकी ने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्या जघन्य चक्षुदर्शन नारकी ने अनन्ता पर्याय कह्या हे गौतम जघन्य चक्षुदर्शन नारकी ने जघन्य चक्षुदर्शन नारकी द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पणि तुल्य अवगाहनार्थे करी चउ ठा

से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ–जहण्णोगाहणगाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए पुढविकाइए जहण्णोगाहणगस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले । उग्गाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए तिट्ठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसोगाहणएवि । अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि एवचेव नवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए । जहण्णठितीयाणं भंते ! पुढविकाइयाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेण

प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यावगाहनकः पृथिवीकायिको जघन्यावगाहनकस्य पृथिवीकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः स्थितौ त्रिस्थानपतितः वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैर्द्वाभ्यामज्ञानाभ्यामचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टावगाहनकपृथिवीकायिकोऽपि । अजघन्यानुत्कृष्टावगाहनकपृथिवीकायिकोऽप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने चतुःस्थानपतितः । जघन्यस्थितिकानां भदन्त ! पृथिवीकायिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते–जघन्यस्थितिकानां पृथिवीकायिकानामनन

इस प्रश्न जघन्य अवगाहना वाले पृथिवीकायिक के अनन्त पर्याय कहे हैं । हे गौतम जघन्य अवगाहना वाले पृथिवीकायिक जघन्य अवगाहना वाले पृथिवीकायिक से द्रव्यार्थ करके तुल्य प्रदेशार्थ करके भी तुल्य अवगाहनार्थ करके भी तुल्य है । स्थिति करके त्रिस्थान पतित कहना स्थानक भी जानना यहाँ । वर्ण गंध रस स्पर्श पर्यायें करके दोय अज्ञानें करके अचक्षुदर्शन पर्यायें करके षट्स्थान पतित कहना । एवं उत्कृष्टावगाहना वाले । एवं मध्यम अवगाहना वाले पृथिवीकायिक भी ऐसा कहना । मध्यम अवगाहना सूत्रपि एवमेवति । मध्यम अवगाहना वाले पृथिवीकायिक के भी एसा कहना एतना विशेष स्वस्थाने चतुःस्थान पतित है । जघन्यस्थितिवाले पृथिवीकायिकका । जघन्य स्थितिवाले पृथिवीकायिकके हे भगवन्

णए असुरकुमारे जहण्णोगाहणगस्स असुरकुमारस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले उग्गाहणट्ठयाए तुल्ले ठिइए चउठाणवडिए। वण्णादीहिं छठाणवडिए। आभिणिबोहियनाणसुयनाणओहिनाणपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिय छठाणवडिए। एवं उक्कोसोगाहणएवि। एवं अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि नवरं उक्कोसोगाहणएवि असुरकुमारठितीए चउठाणवडिए। एवं जाव थणियकुमारो। जहन्नोगाहणगाणं भंते! पुढविकाइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता।

भदन्त! जघन्यावगाहनकानामसुरकुमाराणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! जघन्यावगाहनकोऽसुरकुमारो जघन्यावगाहनकस्यासुरकुमारस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः। स्थितौ चतुःस्थानपतितः। वर्णादिभिः षट्स्थानपतितः। आभिनिबोधिकज्ञानश्रुतज्ञानावधिज्ञानपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कृष्टावगाहनकोऽपि। एवमजघन्यानुत्कृष्टावगाहनकोऽप्यसुरकुमारः स्थितौ चतुःस्थानपतितः। एवं यावत्स्तनितकुमारः। जघन्यावगाहनकानां भदन्त! पृथिवीकायिकानां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते-जघन्यावगाहनकानां पृथिवीकायिकानामनन्ताः पर्यवा

हे गौतम! जघन्य अवगाहना का असुरकुमार जघन्य अवगाहना का असुरकुमारने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे पिण तुल्य अवगाहना को तुल्य छे। स्थिति मो चतुःस्थान पतित छे। वर्णादिकें करी षटस्थान पतित कहवा। आभिनिबोधिक ज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान पर्यायें करी तीन ज्ञान तीन अज्ञान तीन दर्शनें करी षटस्थान पतित हुवे। एवं उत्कृष्टावगाहनापणि। एमज उत्कृष्ट अवगाहना का असुरकुमार कहवो। एमज मध्यम असुरकुमार ने क हवा एतलो विशेष उत्कृष्ट अवगाहना को असुरकुमार स्थितिये चतुःस्थान पतित एमज यावत्स्तनित कुमार लगे कहवा। जघन्यावगाहनावाला भंते पुढ विकाइयाणंति। जघन्य अवगाहना का पृथिवीकायिक में हे भगवन् केतला पर्याय कह्या? गौतम! अनन्ता पर्याय कह्या। तेह केणे अर्थे हे भगवन्

पृथिवीकायिकसूत्रे भावितं पर्यायविचारणाप्रस्तावे एवमत्यन्तानुपयुक्तत्वेऽपि वक्तव्ये नतु ज्ञाने तेषां सम्यक्त्वपर्यायोऽपि तेषु मध्ये सम्यक्त्वरहितस्य जीवस्य

से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ–जहण्णोगाहणगाण पुढविकाइयाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए पुढविकाइए जहण्णोगाहणगस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले । उग्गाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए तिट्ठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसोगाहणए वि । अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए वि एवं चेव नवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए । जहण्णठितीयाण भंते ! पुढविकाइयाण पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेण

प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यावगाहनकः पृथिवीकायिको जघन्यावगाहनकस्य पृथिवीकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः स्थितौ त्रिस्थानपतितः वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः द्वाभ्यामज्ञानाभ्यामचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षावगाहनकपृथिवीकायिकोऽपि । अजघन्यानुत्कर्षावगाहनकपृथिवीकायिकोऽप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने चतुःस्थानपतितः । जघन्यस्थितिकानां भदन्त ! पृथिवीकायिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते–जघन्यस्थितिकानां पृथिवीकायिकानामनन्ता

इस प्रकार जघन्य अवगाहना वाले पृथिवीकायिक के अनन्त पर्याय कहे हैं ? हे गौतम ! जघन्य अवगाहना वाला पृथिवीकायिक जघन्य अवगाहना वाले पृथिवीकायिक से द्रव्यार्थ करके तुल्य प्रदेशार्थ करके भी तुल्य अवगाहनार्थ करके भी तुल्य है । स्थिति करके त्रिस्थान पतित कहना । वर्ण गंध रस स्पर्श पर्याय करके दोय अज्ञान करके अचक्षुदर्शन पर्याय करके षट्स्थान पतित कहना । एवं उत्कृष्ट अवगाहना वाले पृथिवीकायिक भी कहना । मध्यम अवगाहना वाले पृथिवीकायिक भी एवं चेव । नवरं स्वस्थाने चतुःस्थान पतित है । जघन्य स्थिति वाले पृथिवीकायिक के हे भगवन्

णए असुरकुमारे जहण्णोगाहणगस्स असुरकुमारस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले उग्गाहणट्ठयाए तुल्ले ठिइए चउठाणवडिए । वण्णादीहिं छठाणवडिए । आभिणिबोहियनाणसुयनाणओहिनाणपज्जवेहि तिहि नाणेहि तिहि अन्नाणेहि तिहि दसणेहिय छठाणवडिए । एव उक्कोसोगाहणएवि । एव अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि नवरं उक्कोसोगाहणएवि असुरकुमाराठितीए चउठाणवडिए । एव जाव थणियकुमारो । जहन्नोगाहणगाण भंते ! पुढविकाइयाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।

भदन्त ! जघन्यावगाहनकानामसुरकुमाराणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यावगाहनको ऽसुरकुमारो जघन्यावगाहनकस्यासुरकुमारस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः । स्थितौ चतुःस्थानपतितः । वर्णादिभिः षट्स्थानपतितः । आभिनिबोधिकज्ञानश्रुतज्ञानावधिज्ञानपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टावगाहनकोऽपि । एवमजघन्यानुत्कृष्टावगाहनकोऽप्यसुरकुमारः स्थितौ चतुःस्थानपतितः । एवं यावत्स्तनितकुमारः । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! पृथिवीकायिकानां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यावगाहनकानां पृथिवीकायिकानामनन्ताः पर्यवा

है सो जघन्य अवगाहना का असुरकुमार जघन्य अवगाहना का असुर कुमारसे द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे पण तुल्य अवगाहना को तुल्य है । स्थिति को चतुःस्थान पतित है । वर्णादिके करी षट्स्थान पतित कहवा । आभिनिबोधिक ज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान पर्याये करी तीन ज्ञान तीन अज्ञान तीन दर्शने करी षट्स्थान पतित हुवे । एम उत्कृष्टावगाहनाएवि । एमज उत्कृष्ट अवगाहना का असुरकुमार कहवो । एमज मध्यम असुरकुमार ने पण तथा एतलो विशेष उत्कृष्ट अवगाहना का असुरकुमार स्थितिये चतुःस्थान पतित एमज यावत्स्तनित कुमार लगे कहवा । जघन्यावगाहनाका भंते पुढविकाइयाणंति । जघन्य अवगाहना का पृथिवीकायिक में हे भगवन् केतला पर्याय कह्या ? गौतम ! अनन्ता पर्याय कह्या । ते केने अर्थे हे भगवन्

गुणकालगाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए पुढविकाइए जहन्नगुणकालगस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले उग्गाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए तिट्ठाणवडिए । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । दोहिं अन्नाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसगुणकालए वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव णवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा भाणियव्वा । जहन्नमइअन्नाणीणं भंते ! पुढविकाइयाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते !

न्यगुणकालकः पृथिवीकायिको जघन्यगुणकालकस्य पृथिवीकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ त्रिस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैस्तुल्यो ऽवशेषवर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । द्वाभ्यामज्ञानाभ्यामचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टगुणकालकोऽपि । अजघन्यानुत्कृष्टगुणकालकोऽप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । एवं पंच वर्णा द्वौ गन्धौ पञ्च रसा अष्टौ स्पर्शा वक्तव्याः । जघन्यमत्यज्ञानिनां भदन्त ! पृथिवीकायिकानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत्केनार्थेन भदन्त !

अर्थ—भगवन जघन्य गुणश्याम पृथिवीकायिक के भगवन्त पर्याय कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्यगुणश्याम पृथिवीकायिक जघन्यगुणश्याम पृथिवीकायिक से द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनार्थे करी चतुःस्थान पतित छे । स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित । श्यामवर्ण पर्याये करी तुल्य अवशेष वर्ण गंध रस फरस पर्याये करी षटस्थान पतित । दो अज्ञाने करी अचक्षुदर्शन पर्याये करी षटस्थान पतित कहवो । एम उत्कृष्टगुणश्याम ने पिण कहवो । अजघन्यअनुत्कृष्टगुणश्याम ने पिण एमज जाणवा पतला विशेष स्वस्थाने षटस्थान पतित हुवे । एम पंच वर्ण दो गंध इति । एम पांच वर्ण दोय गंध पांच रस आठ फरस कहवा । जघन्यमतिअज्ञानी भंते पृथवि

न्नते ! एवं वुच्चइ—जहन्नठितीयाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नठितीए पुढविकाइए जहन्नठितीयस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए तुल्ले । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं मतिअन्नाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए एवं उक्कोसठितीएवि । अजहन्नमणुक्कोसठितीएवि एवं चेव णवरं सट्ठाणे तिट्ठाणवडिए । जहन्नगुणकालयाणं भंते ! पुढविकाइयाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहन्न

न्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यस्थितिकः पृथिवीकायिको जघन्यस्थितिकस्य पृथिवीकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या तुल्यः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैर्मत्यज्ञानश्रुताज्ञानाचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टस्थितिकोऽपि । अजघन्यानुत्कृष्टस्थितिकोऽप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने त्रिस्थानपतितः । जघन्यगुणकालकानां भ० । पृथिवीकायिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते जघन्यगुणकालकानां पृथिवीकायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघ

केतला पर्याय प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्यस्थितिना पृथिवीकायिक ने अनन्ता पर्याय कह्या । ते केणे अर्थे हे भगवन् एम कह्या जघन्य स्थितिना पृथिवीकायिक ने अनन्ता पर्याय कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्यस्थिति ना पृथिवीकायिक जघन्यस्थितिक पृथिवीकायिक ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पिण तुल्य अवगाहनार्थे करी चउठाण पतित कहवा । स्थितिने विषे तुल्य । वर्ण गंध रस फरस पर्यायें करी मति अज्ञान श्रुत अज्ञान अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षटस्थान पतित कहवा । एवमुत्कृष्टस्थितिकोऽपि । एमज उत्कृष्ट स्थितिना पृथिवीकायिक ने कहवा । अजघन्यमनुत्कृष्टस्थितिकोऽपि एवं चेव णवरं । मध्यमस्थिति ना आलावो ने पिण एमज कहवा एतलो विशेष स्वस्थान ने विषे त्रिस्थान पतित । जघन्यगुणकालकानां भंते पुढविकाइयाणं पुच्छा इति । जघन्य गुण कालक पृथिवी कायिकने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उ० हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते केणे अर्थे हे भगवन् एम

सास्वादनात् "उभयाभावो पुढवाइएसु विगलात्" अतएवैतदेवोक्तमत्र-दोहिं पमावहि इति ॥ जघन्यावगाहनद्वीन्द्रियसूत्रे ॥ दोहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं इति ॥ द्वीन्द्रियाणामपि कयाश्चित् अपर्याप्तावस्थायां सास्वादनसम्यक्त्वमवाप्यते सम्यग्दृष्टेश्च ज्ञाने लभ्यते ज्ञानाभ्यां अज्ञाने तत उक्त-द्वाभ्यां ज्ञानाभ्यां द्वाभ्यां अज्ञानाभ्यामिति, उत्कृष्टावगाहनायांस्त्वपर्याप्तावस्थाया अभावात् सास्वादनसम्यक्त्वं नावाप्यते तत सत्र ज्ञाने मवक्तव्ये तथा चाह-

? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—जहण्णोगाहणगाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा प० ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए बेइंदिए जहण्णोगाहणगस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए तिट्ठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसोगाहणएवि नवरं णाणा नत्थि । अ

न्द्रियाणां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यावगाहनकानां द्वीन्द्रियाणामनन्ताः पर्यवाः प्र ज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यावगाहनको द्वीन्द्रियो जघन्यावगाहनकस्य द्वीन्द्रियस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः, स्थितौ त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः द्वाभ्यां ज्ञानाभ्यां द्वाभ्यां अज्ञानाभ्यां अचक्षुर्दर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टावगाह

यावत् वनस्पतिकाय सुधी पण जाणवा । जघन्यावगाहनाना बेइंद्रियोनी पृच्छा उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते शा माटे हे भगवन् एम कह्या जघन्य अवगाहना ना बेइंद्री ने अनन्ता पर्याय प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य अवगाहना ना बेइंद्री जघन्य अवगाहना ना बेइंद्रिय ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनार्थे करी तुल्य स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित । वर्ण गंध रस फरस पर्याय करी दोय ज्ञान दोय अज्ञान अचक्षुदर्शन पर्यवे करी षट्स्थान पतित । एम उत्कृष्टावगाहनापणि । एम उत्कृष्ट अवगाहना ना बेइंद्रिय पणि एतला विशेष ज्ञान नथी । अजघन्य मनुत्कृष्टावगाहना यथा उत्कृष्टावगाहन पणि । मध्यम अवगाहना ना बेइंद्री जिम जघन्य अवगाहना ना बेइंद्री एतला

एवं वुच्चइ-जहन्नमतिअन्नाणीपुढविकाइए जहन्नमतिअन्नाणिस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। ठितीए तिट्ठाणवडिए वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। मतिअन्नाणपज्जवेहिं तुल्ले सुयअन्नाणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसमतिअन्नाणीवि। अजहन्नमणुक्कोसमतिअन्नाणीवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए एवं सुयअन्नाणीवि। अचक्खुदंसणीवि एवंचेव। एवं जाव वणस्सइकाइया। जहन्नोगाहणगाणं भंते! बेइंदियाणं पुच्छा,

---

एवमुच्यते-जघन्यमत्यज्ञानिपृथिवीकायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! जघन्यमत्यज्ञानिपृथिवीकायिको जघन्यमत्यज्ञानिपृथिवीकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः। स्थितौ त्रिस्थानपतितः। वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः। मत्यज्ञानपर्यवैस्तुल्यः श्रुताज्ञानपर्यवैरचक्षुर्दर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कृष्टमत्यज्ञान्यपि। अजघन्यानुत्कृष्टमत्यज्ञान्यप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। एवं श्रुताज्ञान्यपि। अचक्षुर्दर्शन्यप्येवं चैव। एवं यावद्वनस्पतिकायिकाः। जघन्यावगाहनकानां भदन्त! द्वी

कायावन्ति। जघन्यमति अज्ञानी पृथिवीकायिक का प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या। तेह केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्या जघन्यमति अज्ञानी पृथिवी कायिकने अनन्ता पर्याय प्र० उ० हे गौतम जघन्य मतिअज्ञानी पृथिवी कायिक जघन्य मति अज्ञानी पृथिवी कायिकने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनार्थे करी चतुस्थान पतित। स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित। वर्ण गंध रस स्पर्श पर्याये करी षटस्थान पतित। मति अज्ञान पर्याये करी तुल्य। श्रुत अज्ञान पर्याये करी अचक्षुदर्शन पर्याये करी षट्स्थान पतित। एवं उक्कोसमइअन्नाणीवि। एमज उत्कृष्ट मति अज्ञानी पिण जाणवा। अजहन्नमणुक्कोसमइअन्नाणीवि। मध्यम मति अज्ञानी पृथिवी कायिक पिण एमज एतलो विशेष स्वस्थाने षटस्थान पतित। एवं सुयअन्नाणीवि। एमज श्रुतअज्ञानी पिण जाणवा। अचक्खुदंसणीवि एवंचेव। अचक्षुदर्शनी पिण एमज जाणवा। एवं जाववणस्सइकाइयावत्ति। एम

तमाज्ञाने एव सम्पते न ज्ञाने नरकाद्‌स्थितिषु पुनर्मध्ये सासादनसम्यक्त्वसहितोऽप्युत्पद्यते इति तत्सूत्रे ज्ञाने ऽज्ञाने च वक्तव्ये तथाचाह-एवं उक्को

अन्नाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जयेहिं छठाणवडिए । एव उक्कोसठितीएवि नवर दो नाणा अब्भहिया । अजहन्नमणुक्कोसठितीए जहा उक्कोसठितीए नवर ठितीए तिठाणवडिए । जहन्नगुणकालयाण भंते ! बेइंदियाण पुच्छा, गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता । स केणठेण भंते ! एव वुच्चइ—जहन्नगुणकालयाण बेइंदियाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए बेइंदिए जहन्नगुणकालगस्स बेइंदियस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले ओगाहणठयाए चउठाणवडिए ठितिए तिठाणवडिए । कालवन्नपज्जवेहि

मुत्कर्षस्थितिकोऽपि । नवरं द्वे ज्ञाने ऽभ्यधिके । अजघन्यानुत्कर्षस्थितिको यथोत्कर्षस्थितिको नवरं स्थित्या त्रिस्थानपतितः । जघन्यगुणका लकानां द्वीन्द्रियाणां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—जघन्यगुणकालकानां द्वीन्द्रियाणामनन्ताः पर्य वाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यगुणकालको द्वीन्द्रियो जघन्यगुणकालकस्य द्वीन्द्रियस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यः अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या त्रिस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैः तुल्योऽवशेषैः वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः ज्ञानाभ्यां अज्ञानाभ्यामचक्षुर्द

र्शन करो छठ स्थान पतित पन अचक्षुदर्शन पर्यायें करो छठ स्थान पतित । एव उक्कोसठितीएवि । उत्कृष्ट स्थितिक एक [illegible] [illegible] विशेष दोय ज्ञान अधिक । अजहन्नमणुक्कोसठितीए जहा उक्कोसठिति । मध्यम स्थितिक जेम उत्कृष्ट स्थितिक एतला विशेष स्थितिये करी त्रिस्थान पतित । जघ न्यगुणकालवाचति । जघन्यगुण कालक बेइन्द्री ना प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तब वली पूछे हे भगवन् इम कह्या—जघन्य गुण का लक बेइन्द्री ने अनन्ता पर्याय कह्या ? हे गौतम जघन्य गुण कालक बेइन्द्री जघन्यगुण कालक बेइन्द्री ने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अ वगाहनाये करी चउ स्थान पतित । स्थितिये करी त्रिस्थान पतित । कालवर्ण पर्यायें करी तुल्य, अवशेष वर्ण गंध रस फरस पर्याये करी बे ज्ञाने अ

मपि उत्कृष्टावगाहनायामपि नवरं भावो नास्तीति। तथा जघन्योत्कृष्टावगाहना किल प्रथमसमयादूर्ध्वं भवति इति अपर्याप्तावस्थायामपि तस्यास्सभवात् सासादनसम्यक्त्वतो ज्ञान सम्यक्तया आशाने इति ज्ञानेचाज्ञाने च वक्तव्ये तथाचाह–मजहण्णमणुक्कोसोगाहणाए जहा जहण्णोगाहणाए इति तथा जघन्यस्थितिसूत्रे द्वे अज्ञाने एव वक्तव्ये न तु ज्ञाने यत सर्वजघन्यस्थितिको लब्ध्यपर्याप्तको भवति न च लब्ध्यपर्याप्तकेषु मध्ये सासादनसम्यग्दृष्टिस्पपद्यते किं कारणमिति च दुच्यते लब्ध्यपर्याप्तकोऽपि सवसक्लिष्टः सासादनसम्यग्दृष्टिस्त मनाक्शुभपरिणाम स्तत स तेषु मध्ये नोत्पद्यते

अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए जहा जहण्णोगाहणए णवरं सट्ठाणे ओगाहणाए चउट्ठाणवडिए। जहण्णठितीयाण भंते बेइंदियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जया पण्णत्ता। से केणट्ठेण भंते एवं वुच्चइ जहण्णठितीयाण बेइंदियाणं अणंता पज्जया पण्णत्ता गोयमा ! जहण्णठितिए बेइंदिए जहण्णठितियस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। ठितीए तुल्ले। वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं

नयोऽपि नवरं ज्ञानानि नवन्ति। अजघन्यानुत्कर्षोवगाहनको यथा जघन्यावगाहनको नवरं स्वस्थाने ऽवगाहनार्थतया चतु स्थानपतित। जघन्यस्थितिकानां भदन्त ! द्वीन्द्रियाणां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्याया प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यत–जघन्य स्थितिकानां द्वीन्द्रियाणामनन्ता पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौ० ! जघन्यस्थितिको द्वीन्द्रियो जघन्य स्थितिकस्य द्वीन्द्रियस्य द्रव्यार्थतया तुल्य प्रदेशार्थतयापि तुल्योऽवगाहनार्थतया चतु स्थानपतितः। स्थित्या तुल्यो वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवै द्वाभ्यामज्ञानाभ्यामचक्षुदर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः। एव

विशेष स्थान अवगाहनाये करी चतस्थान पतित। अइम ठीतिआश्रति। जघन्य स्थितिक बेइन्द्री ने हे भगवन् केतला पर्याय प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय। तेह केणे अर्थे हे भगवन् एम कह्या जघन्य स्थितिक बेइन्द्री ने अनन्ता पर्याय ? गौतम जघन्य स्थितिक बेइन्द्री जघन्य स्थितिमा बेइन्द्रिय ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनाये करी चतु स्थान पतित। स्थितिये करी त्रिस्थान पतित। वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्या

तथाज्ञाने एव लभ्यते न ज्ञाने उत्कृष्टस्थितिषु पुनर्मध्ये सासादनसम्यक्त्वरहितोत्पद्यते इति तत्सूत्रे ज्ञाने अज्ञाने च वक्तव्ये तथाचाह-एव उक्को

अन्नाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसठितीएवि नवरं दो नाणा अब्भहिया । अजहण्णमणुक्कोसठितीए जहा उक्कोसठितीए नवरं ठितीए तिट्ठाणवडिए । जहण्णगुणकालयाणं भंते ! बेइंदियाणं पुच्छा , गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहण्णगुणकालयाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए बेइंदिए जहण्णगुणकालगस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठितिए तिट्ठाणवडिए । कालवण्णपज्जवेहिं

मुत्कृष्टस्थितिकोऽपि । नवरं द्वे ज्ञानेऽभ्यधिके । अजघन्यानुत्कृष्टस्थितिको यथोत्कृष्टस्थितिको नवरं स्थित्या त्रिस्थानपतितः । जघन्यगुणकालकानां द्वीन्द्रियाणां पृच्छा । गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यगुणकालकानां द्वीन्द्रियाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यगुणकालको द्वीन्द्रियो जघन्यगुणकालकस्य द्वीन्द्रियस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यः अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या त्रिस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैस्तुल्योऽवशेषैर्वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः द्वाभ्यां ज्ञानाभ्यां द्वाभ्यामज्ञानाभ्यामचक्षुर्द-

ये करी छठाण पतित एम अचक्षुदर्शन पर्याये करी छट्ठाण पतित । एव उक्कोसट्ठितीएवि । एमज उत्कृष्ट स्थितिक पण जाणवा एतला विशेष दोय ज्ञान अधिक । अजघन्यमणुक्कोसट्ठितीए जहा उक्कोसठिति । मध्यम स्थितिक जेम उत्कृष्ट स्थितिक एतलो विशेष स्थितिये करी त्रिस्थान पतित । जहण्णगुणकालयाणं । जघन्यगुण कालक बेइन्द्री ना प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह स्ये अर्थे हे भगवन् एम कह्या—जघन्य गुण कालक बेइन्द्री ने अनन्ता पर्याय कह्या ? उ० हे गौतम जघन्य गुण कालक बेइन्द्री जघन्यगुण कालक बेइन्द्रीने द्रव्यार्थे तथा प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनाये करी चउट्ठाण पतित । स्थितिये करी त्रिस्थान पतित । कालवर्ण पर्याये करी तुल्य, अवशेष वर्ण गंध रस फरस पर्याये करी बे ज्ञाने अ

एव एकोऽपि स्तोकावगाहनावानपि भवत् नाना मस्थितिः॥ तथा अजघन्योत्कृष्टावगाहना चित्र प्रथमसमयादूर्ध्व भवति इति अपर्याप्तावस्थायामपि तस्यास्
सभाव् सासादनसम्यक्त्वता प्राप्ने चरमयां चाचाने इति, प्राप्ने चाज्ञाने च वक्तव्ये तथा चाह-अजघन्यमुक्कोसोगाहणाए जहा जहन्नोगाहणाए इति
तथा जघन्यस्थितिसूत्रे तु अज्ञाने एव वक्तव्ये न तु ज्ञाने यतः सर्वजघन्यस्थितिको लब्ध्यपर्याप्तको भवति न च लब्ध्यपर्याप्तकेषु मध्ये सासादनसम्य
ग्दृष्टिरुत्पद्यते किं कारणमिति च दुच्यते लब्ध्यपर्याप्तकोऽपि सर्वसंक्लिष्टः सासादनसम्यग्दृष्टिश्च मनाक्शुभपरिणाम इत्यतः स तेषु मध्ये नोत्पद्यते

अजहण्णमणुक्कोसोगाहणाए जहा जहण्णोगाहणाए णवरं सट्ठाणे ओगाहणाए चउट्ठाणवडिए। जहण्णठितीयाणं भंते बेइंदियाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता। से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ जहण्णठितीयाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता गोयमा! जहण्णठितिए बेइंदिए जहण्णठितियस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। ठितीए तुल्ले। वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं

भवेऽपि नवरं ज्ञानानि भवन्ति। अजघन्यानुत्कर्षावगाहनको यथा जघन्यावगाहनको नवरं स्वस्थाने ऽवगाहनायतया चतुःस्थानपतित।
जघन्यस्थितिकानां भदन्त! द्वीन्द्रियाणां पृच्छा गौतम! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते-जघन्य स्थितिकानां
द्वीन्द्रियाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः? गौ०! जघन्यस्थितिको द्वीन्द्रियो जघन्य स्थितिकस्य द्वीन्द्रियस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतयापि
तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः। स्थित्या तुल्यो वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः द्वाभ्यामज्ञानाभ्यामचक्षुर्दर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः। एव

विमध्यमा अवगाहना में चार स्थान पतित। चरम ठितिवाचक ति। जघन्य स्थिति के बेइन्द्रियों के हे भगवन् कितना पर्याय प्रश्न उत्तर हे गौत
म अनन्ता पर्याय। तेह कैसे कहें हे भगवन् इस बात जघन्य स्थिति बेइन्द्री न अनन्ता पर्याय हे गौतम जघन्य स्थिति बेइन्द्री जघन्य स्थिति
का बेइन्द्रिय ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनार्थे करी चतु स्थान पतित। स्थिति करी तिष्ठान पतित। वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्या

मादव वुच्यते असङ्ख्येयवर्षायुष्काणि महाशरीराः कुक्षिपरिणामत्वात् पुष्टाहाराः प्रथमपातूपचया सात सोपा पूयाम् आभिनिवेशो भवति
मुखाभिनिवेशानुसारत्व च विपमभुव्याचामुत्पत्तिसमय वमाडमेति न तेषा युगलिकाना जघन्यावगाहना लभ्यते किंतु असङ्ख्येयवर्षायुषां असङ्ख्येयवर्षा
युष च स्थित्या त्रिस्थानपतिता एवम् भावित माव् तत उत्कृस्थित्या त्रिस्थानपतिता इति। दोहि नाणेहि दोहिं अन्नाणेहिं इति । जघन्याभिनिबो
धिक तिर्यक्पञ्चेन्द्रियावहुवर्षायुषाऽपर्याप्तो भवति सोपि पाश्चात्यकायेषु मध्ये समुत्पद्यमानस्ततस्तस्यावधिविभङ्गाभावात् द्वे ज्ञाने द्वे अज्ञाने
इत्ते यस्तु विभङ्गज्ञानपतितो नरकादुद्धृत्य सङ्ख्येयवर्षायुष्केषु तिर्यक्पञ्चेन्द्रियेषु मध्ये समुत्पद्यमानो वर्त्यते स महाकायपूर्वपर्याप्तको गृहणा नाल्प
कायेषु तथास्वाभाव्या दन्ययाविकल्पविशेषः, उत्कृष्टावगाहनतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसूत्रे-तिहि नाणेहिं तिहि अन्नाणेहिं इति ॥ त्रिभिर्ज्ञाने स्त्रिभि
रज्ञाने षट्स्थानपतिता त्रीस्वज्ञानानि यथामिविपद्ध्यते-इह यस्य योजनसहस्रशरीरावगाहना स उत्कृष्टावगाहन स च सङ्ख्येयवर्षायुष्क एव भवति
पर्याप्तश्च तेन तस्य त्रीणि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि च सम्भवन्ति, स्थित्यापि यासावुत्कृष्टावगाहन। त्रिस्थानपतितः सङ्ख्येयवर्षायुष्कत्वात् जघन्यो

छट्ठाणवडिए । उक्कोसोगाहणएवि एवचेत्र नवर तिहि नाणेहि तिहि अन्नाणेहि तिहि दसणेहि छठा

णवडिए । जहा उक्कोसोगाहणए तहा अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि नवर ओगाहणट्ठिनोए चउठाणवडिए

नवरं त्रिभिर्ज्ञाने स्त्रिभिरज्ञाने स्त्रिभिर्दर्शने षट्स्थानपतितो यथोत्कर्षावगाहनकस्तथाऽजघन्यानुत्कर्षावगाहनकोपि नवरं अवगाहनार्थतया
स्थित्या चतुःस्थानपतिता। जघन्यस्थितिकानां पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां प्रश्न। कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम। अनन्ता पर्यवा प्रज्ञप्ताः ।

र्थात करो व भाग करो वे भाग करो वे दशम करो पटस्थान पतित हुवे । अवगाहनार्थपणे एव भवति । उत्कृष्ट अवगाहना ना पचेन्द्रिय तिर्यच
ज्ञानिक ने पचि एमज कहवा तथा विशेष पण ज्ञान पच अज्ञान पने पच दर्शने करी पटस्थान पतित । जेम उत्कृष्ट अवगाहना ना पचेन्द्रिय तेम
अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहना नो पचेन्द्रिय तिर्यच ज्ञानिक पचि जाणवा एतला विशेष अवगाहनाथताये करी चतु स्थान पतित हुवे । ठितीए चउ

यामपि वक्तव्या नवरं चतुरिन्द्रियाणां चक्षुर्दर्शनमधिकमन्यथा चक्षुरिन्द्रियस्याऽयोगादिति तेषां चक्षुर्दर्शनविषयमपि सूत्रं वक्तव्यं जघन्यावगाह
नतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसूत्रे-ठिईए तिठाणवडिए इत्ति ॥ इह तिर्यक्पञ्चेन्द्रियश्चक्षुष्कपर्यायुष्क एव जघन्यावगाहनो भवति नो सङ्ख्येयवर्षायुष्क इति कार

चउरिंदियाणवि एवंचेव नवरं चक्खुदंसणं अब्भहियं । जहण्णोगाहणगाणं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया
णं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहण्णो
गाहणगाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए पंचिंदियति
रिक्खजोणिए जहण्णोगाहणगस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठया
ए तुल्ले ठितीए तिठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं दोहिं दंसणेहिं

इत्यनवद्यमपि । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ।
तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यावगाहनकानां पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यावगाहनकः
पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिको जघन्यावगाहनकस्य पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः । स्थित्या
त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैर्द्वाभ्यां ज्ञानाभ्यां द्वाभ्यामज्ञानाभ्यां द्वाभ्यां दर्शनाभ्यां षट्स्थानपतितः । उत्कृष्टावगाहनकोऽप्येवमेव

ति । चतुरिन्द्रिय में भी इसी प्रकार जानना विशेष चक्षुदर्शन अधिक कहना । जघन्यावगाहनावाले भंते पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिकों के कितने पर्याय हैं । जघन्या
वगाहनावाले हे भगवन् पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक के कितने पर्याय कहे हैं उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कहे । सो किस हेतु से हे भगवन् इस प्रकार—
जघन्यावगाहनावाले पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक के अनन्ता पर्याय कहे हैं उत्तर हे गौतम जघन्यावगाहनावाले पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जघन्यावगाहनावाले
पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से द्रव्यार्थे करके तुल्य प्रदेशार्थे करके तुल्य अवगाहनार्थे करके तुल्य । स्थितिये करके त्रिस्थान पतित । वर्ण गन्ध रस स्पर्श

मितिच उच्यते समुच्छिमपर्याप्तकादि महाशरीरा: वक्रमुत्पत्तिपरिणामत्वात् पुहाराशा: प्रथमपातूपचया सत सोपा भूयाम् शुक्रनिषेको भवति शुक्रनिषेकानुसारेण च तिर्यग्मनुष्याणामुत्पत्तिसमय यगाहनेति स तेषा युगलिकानां अपर्याप्तावगाहना लभ्यते किन्तु सम्मूर्च्छिमपर्याप्तानां सम्मूर्च्छिमपर्या शुच च स्थित्या त्रिस्थानपतिता एवं जाविते प्राक् तत उत्तस्थित्या त्रिस्थानपतिता इति। दोण्हि माणेहि दोण्हि अण्णाणेहि इति । अपर्याप्तावगाह मोहि तिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणां सम्मूर्च्छिमपर्याप्तो भवति सोपि तापस्वकायेषु मध्ये समुत्पद्यमानमसंख्यातवर्षायुषनिरुपक्रमायुगणास इ प्रान हे ऽज्ञान उक्ते' यस्तु विभङ्गज्ञानसहितो नरकादुद्धृत्य सम्मूर्च्छिमपर्याप्तेषु तिर्यक्पञ्चेन्द्रियेषु मध्ये समुत्पद्यमानो वर्त्यते स महाकायपूर्वमध्यमानां सूक्ष्म्या माल्प कायेषु तथास्वाभाव्यात् इत्ययाचितसूत्रविरोध , उत्कृष्टावगाहनतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसूत्रे-तिण्हि णाणेहि तिण्हि अन्नाणेहि इति ॥ त्रिस्थाने स्थिति रथानैः षट्स्थानपतिता श्रीस्वयामानि यथमितिपठ्यते-इह यस्य योजनसहस्रशरीरावगाहना स उत्कृष्टावगाहन सच सम्मूर्च्छिमपर्याप्त एव भवति पर्याप्तश्च तत तस्य श्रीणि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि च सम्भवन्ति, स्थित्यापि त्रिस्थानपतित उत्कृष्टावगाहनः त्रिस्थानपतितः सम्मूर्च्छिमपर्याप्तकत्वात्' अजघन्यो

ठाणवडिए । उक्कोसोगाहणएवि एवचेव नवर तिहि नाणेहि तिहि अन्नाणेहि तिहि दसणेहि छठा णवडिए । जहा उक्कोसोगाहणए तहा अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि नवर ठगाहणठिईए चउठाणवडिए

नवरं त्रिविधानि त्रिविधरूपाणि त्रिविधदर्शनैः षट्स्थानपतितो यथोत्कृष्टावगाहनकस्तथाऽजघन्यानुत्कृष्टावगाहनकोपि नवरं अवगाहनार्थतया स्थित्या चतुःस्थानपतित'। अथ पञ्चस्थितिकानां पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां भदन्त। कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम। अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ।

होवे करो व ज्ञान करो वे अज्ञान करो वे दर्शन करो षटस्थान पतित हुवे । अवगाहनापर्याय एव वर्तते । उत्कृष्ट अवगाहना ना पचेन्द्रिय तिर्यच वालिक ने पचि एमज कहवा एमजा विशेष चव ज्ञान चव अज्ञान चव दर्शने करो षटस्थान पतित । जेम उत्कृष्ट अवगाहना ना पचेन्द्रिय तेम अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहना नो पचेन्द्रिय तिर्यच वालिक पचि जाणवो एतला विशेष अवगाहनायतावे करो चतुःस्थान पतित हुवे । ठिईए चउठा

त्कृष्टावगाहनसूत्रे-स्थित्या चतुःस्थानपतितो यतो जघन्यौत्कृष्टावगाहनोऽसङ्ख्येयवर्षायुष्कोपि सम्भवति तत्रोपपद्यते प्रागुक्तयुक्त्या चतुःस्थानपतितस्य
जघन्यस्थितिकतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसूत्रे द्वे अज्ञाने एव वक्तव्ये न तु ज्ञाने यतोऽसौ जघन्यस्थितिको लब्ध्यपर्याप्तक एव भवति न तन्मध्ये सासादनसम्य
ग्दृष्टत्वात् इति उत्कृष्टस्थितिकतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसूत्रे ॥ दो नाणा दो अन्नाणा इति ॥ उत्कृष्टस्थितिकोऽपि तिर्यक्पञ्चेन्द्रियस्त्रिपल्योपमस्थितिको

ठितीए चउट्ठाणवडिए । जहण्णठितीयाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहण्णठितीयाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णठितीए पंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णठितीयस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए तुल्ले । वण्णगंधरस पज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं दोहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । उक्कोसठितीएवि एवंचेव नवरं दो णाणा

पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । एवमुच्यते-जघन्यस्थितिकानां पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यस्थितिकः पञ्चेन्द्रि यतिर्यग्योनिकोजघन्यस्थितिकस्य पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थि त्या तुल्यो वर्णगन्धरसपर्यवैः द्वाभ्यामज्ञानाभ्यां द्वाभ्यां दर्शनाभ्यां षट्स्थानपतितः । उत्कृष्टस्थितिकोऽप्येवमेव नवरं द्वे ज्ञाने द्वे अज्ञाने द्वे दर्शने ।

पतित है । स्थिति से वह चतुःस्थान पतित हुवे । जघन्यस्थितीयाणं भंते पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं ति । जघन्य स्थितिक पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जो है भगवन् कितने पर्याय कहा है ? हे गौतम । जघन्यस्थितिक पंचेन्द्रिय तिर्यंच के अनन्ता पर्याय कहा । सो कैसे कहते हो भगवन् इस कहने से जघ न्य स्थितिक पंचेन्द्रिय तिर्यंच के अनन्ता पर्याय कहा ? हे गौतम जघन्य स्थितिक पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जघन्यस्थितिक पंचेन्द्रिय तिर्यंच जो द्रव्यार्थ करी तुल्य प्रदेशार्थ करी तुल्य अने अवगाहनार्थ करी चतुःस्थान पतित हुवे । स्थिति करी तुल्य हुवे वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्यायें करी के मा

नवति तस्य च द्विस्थाने साव त्रिपमेन यदा पुन: पंचमासाविशेषायुर्वैमानिकेषु बद्धायुष्को भवति तदा तस्य द्वे ज्ञाने लभ्येते अत उक्त-द्वे ज्ञाने द्विस्थान इति । जघन्योत्कृष्टस्थितिकतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसूत्र-ठिईए चउठाणवडिए इति । जघन्योत्कृष्टस्थितिको हि तिर्यक्पञ्चेन्द्रियसङ्ख्येयवर्षायुष्कोपि लभ्यते, असङ्ख्येयवर्षायुष्कोपि समयाधिकपल्यापमस्थितिकः ततश्चतुःस्थानपतितता अजघन्यानुत्कृष्टस्थितिकतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसूत्रे-ठिईए चउठा

णा दो दसणा । अजहण्णमणुक्कोसठितीएवि एवचेव नवर ठितीए चउठाणवडिए । तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा तिण्णि दंसणा । जहण्णगुणकालगाण भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा , गोयमा ! अणंता पज्जया प० । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गो० ! जहण्णगुणकालगाण पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण अणंता पज्जवा प० ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए पंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णगुणकालगस्स पंचिंदि

जघन्यानुत्कृष्टस्थितिकोप्येवं नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः । त्रीणि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि त्रीणि दर्शनानि । जघन्यगुणकालानां भदन्त ! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यगुणकालकानां पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौ० ! जघन्यगुणकालकः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिको जघन्यगुणकालकस्य पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य

न व पय न करो व दयन करो षट्स्थानपतित हुव । नरकट स्थितवे करो पाप एमक पकसा विशय व ज्ञान न पय न बे दयन हुव । ममममव वामद्विनोव त्रि एवपर्शन । एमवरव एमरक स्थितवे करो पवि एमक एकवो विशेष स्थितिवे करो चतु स्थान पतित हुव । पव ज्ञान पव अज्ञान पव दयन हुव जघन्यगुणकालवाण भंते । पाचवित तिरिक्खजोणियाण पुच्छा , अपन्य गुण कालक ना हे भगवन् पंचेन्द्रिय तियच योनिक ना प्रश्न उतर हे गोतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह अर्थे पव हे भगवन् एम कह्या जे पंचेन्द्रिय तियच योनिक जघन्यगुण कालक ने अनन्ता पर्याय कह्या प्र उतर हे गोतम जघन्यगुणकालक पंचेन्द्रिय तियच योनिक जघन्यगुणकालक पंचेन्द्रिय तियच योनिक ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पण तुल्य

यतिरिक्खजोणियस्स ओगाहणट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए चउट्ठाणवडिए । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसगुणकालएवि । अजहण्णमणुक्कोसगुणकालएवि एवं चेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा । जहण्णाभिणिबोहियनाणीणं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—गोयमा ! जहण्णाभिणिबोहियनाणीपंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णाभिणिबोहियनाणिस्स पंचिं

द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या चतुःस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैस्तुल्योऽवशेषैर्वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टगुणकालकोऽपि । अजघन्यानुत्कृष्टगुणकालकोऽप्येवमेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । एवं पञ्च वर्णा द्वौ गन्धौ पञ्चरसा अष्टौ स्पर्शा ज्ञातव्याः । जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनां भदन्त ! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—जघन्याभिनिबोधिकज्ञानि

चतुःस्थान में होता पतित है । स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है । कालवर्णपर्याय की अपेक्षा तुल्य है । अवशेष वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्यायों की अपेक्षा एवं तीन ज्ञान तीन अज्ञान एवं तीन दर्शनों की अपेक्षा षट्स्थान पतित होते हैं । इसी प्रकार उत्कृष्टगुणकालवर्ण वाले हैं । अजघन्य अनुत्कृष्ट गुण कालक पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक भी इसी प्रकार होते हैं । अपितु स्वस्थान में षट्स्थान पतित होते हैं । इसी प्रकार पांच वर्ण दो गन्ध पांच रस आठ स्पर्श जानना । जघन्याभिनिबोधिकज्ञानी पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चयोनिकों के हे भगवन् कितने पर्याय कहे हैं प्र० उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कहे हैं । प्र० किस अर्थ से हे भगवन् ऐसा कहा

दियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए चउ० वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले । सुयनाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि णवरं ठितीए तिट्ठाणवडिए । तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा तिन्नि दंसणा । सट्ठाणे तुल्ले सेसेसु छट्ठाणवडिए अजहन्नमणुक्कोसाभिणिबोहियनाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि नवरं ठितीए चउट्ठाणवडिए । एवं

पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकः जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यः अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या चतुःस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवैस्तुल्यः । श्रुतज्ञानपर्यवैः षट्स्थानपतितः । चक्षुर्दर्शनपर्यवैः अचक्षुर्दर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञान्यपि नवरं स्थित्या त्रिस्थानपतितः । त्रीणि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि त्रीणि दर्शनानि । स्वस्थाने तुल्यः शेषेषु षट्स्थानपतितः । अजघन्योत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानी यथोत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानी नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः । एवं श्रुतज्ञान्यपि । जघन्या

प० ह० हे गौतम जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक न द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनायें करी चउस्थान पतित स्थितियें करी चउस्थान पतित । वर्ण गन्ध रस फरस पर्यायें करी षट्स्थान पतित । आभिनिबोधिक ज्ञान पर्याये करी तुल्य श्रुतज्ञान पर्याये करी षट्स्थान पतित । चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन पर्याये करी षट्स्थान पतित । एव उत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानी जाणवो । एम उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी पण जाणवो एतलो विशेष स्थितियें करी त्रिस्थान पतित छे । त्रण ज्ञाने करी त्रण अज्ञाने त्रण दर्शने तुल्य पर स्व स्थानके छे षट्स्थान पतित छे । अजघन्यानुत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानी । अजघन्य अनुत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी जेम उ

यतिरिक्खजोणियस्स दव्वठ्याए तुल्ले पदेसठ्याए तुल्ले ओगाहणठ्याए चउठाणवडिए । ठितीए चउठाणवडिए । कालवण्णपज्जवेहि तुल्ले अवसेसेहि वण्णगंधरसफासपज्जवेहि तिहि नाणेहि तिहि अण्णाणेहि तिहि दंसणेहि छठाणवडिए । एवं उक्कोसगुणकालएवि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवंचेव नवरं सठाणे छठाणवडिए । एवं पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अठ फासा । जहन्नाभिणिबोहियनाणीणं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–गोयमा ! जहन्नाभिणिबोहियनाणीपंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहन्नाभिणिबोहियनाणिस्स पंचि

द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या चतुःस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैस्तुल्योऽवशेषैर्वर्णगन्धर सस्पर्शपर्यवै स्त्रिभिर्ज्ञानैः त्रिभिरज्ञानैः त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टगुणकालकोऽपि । अजघन्यानुत्कृष्टगुणकालकोऽप्येवमेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । एवं पञ्च वर्णा द्वौ गन्धौ पञ्चरसा अष्टौ स्पर्शा ज्ञातव्याः । जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनां भदन्त ! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते–जघन्याभिनिबोधिकज्ञानि

अवगाहना की अपेक्षा से चतुःस्थान पतित है । स्थिति की अपेक्षा से चतुःस्थान पतित है । कालवर्णपर्याय की अपेक्षा से तुल्य है । अवशेष वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्यायों की अपेक्षा से तथा तीन ज्ञान तीन अज्ञान तीन दर्शनों की अपेक्षा से षट्स्थान पतित होते हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट गुणकालक के विषय में भी जानना । अजघन्यमनुत्कृष्ट गुणकालक के विषय में भी इसी प्रकार जानना । विशेष यह है कि स्वस्थान की अपेक्षा से पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक षट्स्थान पतित हैं । इस प्रकार पाँच वर्ण, दो गन्ध, पाँच रस और आठ स्पर्श के विषय में भी जानना । जघन्याभिनिबोधिकज्ञानी पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकों के विषय में प्रश्न–हे भगवन् पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिकों के कितने पर्याय कहे हैं ? उत्तर–हे गौतम ! अनन्त पर्याय कहे हैं । हे भगवन् ! आप ऐसा किस कारण से कहते हैं ? उत्तर

दियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए चउ० वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले । सुयनाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि णवरं ठितीए तिट्ठाणवडिए । तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा तिन्नि दंसणा । सट्ठाणे तुल्ले सेसेसु छट्ठाणवडिए अजहन्नमणुक्कोसाभिणिबोहियनाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि नवरं ठितीए चउट्ठाणवडिए । एवं

पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिको जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यः अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ चतुःस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवैस्तुल्यः । श्रुतज्ञानपर्यवैः षट्स्थानपतितः । चक्षुर्दर्शनपर्यवैः अचक्षुर्दर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञान्यपि नवरं स्थित्या त्रिस्थानपतितः । त्रीणि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि त्रीणि दर्शनानि । स्वस्थाने तुल्यः शेषेषु षट्स्थानपतितः । अजघन्योत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञानी यथोत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञानी नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः । एवं श्रुतज्ञान्यपि । जघन्या

प्र० ह० उ० गौतम जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी पंचेंद्रिय तिर्यंच जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यंच सामित द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनार्थे करी चतुस्थान पतित स्थितिये करी चतुस्थान पतित । वर्ण गन्ध रस फरस पर्याये करी षट्स्थान पतित । आभिनिबोधिक ज्ञान पर्याये करी तुल्य श्रुतज्ञान पर्याये करी षट्स्थान पतित । चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन पर्याये करी षट्स्थान पतित । एम उत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानी विण । एम उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी पण जाणवा एतलो विशेष स्थितिये करी त्रिस्थान पतित हुवे । त्रण ज्ञाने करी त्रण दर्शने करी स्वस्थाने तुल्य हुवे शेष स्थानके षट्स्थान पतित हुवे । अजघन्योत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानी पण जाणवो । अजघन्य अनुत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी जेम उ

सुयनाणीवि । जहण्णोहिनाणीणं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा प० । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोहिनाणी पंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णोहिनाणिस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए तिट्ठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं आभिणिबोहियनाणसुयनाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । ओहिनाणपज्जवेहिं तुल्ले अन्नाणा नत्थि । चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसोहि

वधिज्ञानिनो भदन्त ! पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यावधिज्ञानिपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिको जघन्यावधिज्ञानिपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो अवगाहनार्थतया चतुः स्थानपतितः । स्थित्या त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैराभिनिबोधिकश्रुतज्ञानपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । अवधिज्ञानपर्यवैस्तुल्यः ऽज्ञानानि न सन्ति । चक्षुर्दर्शनपर्यवैरचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टावधिज्ञान्यपि । अजघन्यानुत्कृष्टावधिज्ञान्यप्येवमेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । यथाभिनिबोधिकज्ञानी तथा मत्यज्ञानी श्रुताज्ञानी च । यथावधिज्ञानी तथा विभङ्गज्ञान्यपि । चक्षुर्दर्शन्यपि

रहट आभिनिबोधिक ज्ञानी तथा इतना विशेष स्थिति से त्रिस्थान पतित । एवं श्रुतज्ञानी भी जानना । जघन्यावधिज्ञानी की पृच्छा । जघन्य अवधिज्ञानी का हे भगवन् पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कहा । किस कारण ऐसा हे भगवन् इस कहा—जघन्य अवधिज्ञान अनन्ता पर्याय हे गौतम जघन्य अवधिज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जघन्य अवधिज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक के द्रव्यार्थ करी तुल्य प्रदेशार्थ करी तुल्य अवगाहनार्थ करी चतुःस्थान पतित । स्थिति करी त्रिस्थान पतित । वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्याय करी आभिनिबोधिकज्ञान श्रुतज्ञान पर्याये करी षट्स्थान पतित, अवधिज्ञान पर्याय करी तुल्य अज्ञान नहीं । चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन करी षट्स्थान पतित । एवं उत्कृष्टावधिज्ञानी । प

पर्यालिप इति ॥ यद्युत्कृष्टपर्यायुषोऽपि हि तिर्यक्पञ्चेन्द्रियस्य रत्नप्रभिकानुसारेण जघन्ये आभिनिबोधिकश्रुतज्ञाने लभ्येते तत उत्कृष्टपर्यायुषोऽपि जघन्यपर्यायुषश्च जघन्याभिनिबोधिकश्रुतज्ञानसम्भवाद्भयति स्थित्या चतुःस्थानपतितः। उत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानसूत्र स्थित्या च त्रिस्थानपतितता वाच्या यत इह उत्कृष्ट आभिनिबोधिकश्रुतज्ञाने च नियमात्संख्येयवर्षायुष्कः स्थित्या त्रिस्थानपतित एव यथा च प्राक्-अवधिसूत्रे विभङ्गसूत्रे पि स्थित्या त्रिस्थानपतितता किन्तु कारणमिति च उच्यते-असंख्येयवर्षायुषोऽवधिविभङ्गासम्भवात् "चाउद्य सूक्ष्मोऽवगाह-उद्धिविभंगसु नियमा तिट्ठाणवडिए" किं कारण मत्स्य इति विमला असंखेज्जवासाउयस्स नत्थि यति, जघन्यावगाहनमनुष्यसूत्रे-ठिइए तिट्ठाणवडिए इति ॥ तिर्यक्पञ्चेन्द्रियवन्मनुष्यापि जघन्यावगाहनो नियमात् संख्येयवर्षायुषः संख्येयवर्षायुषश्च स्थित्या त्रिस्थानपतित भवेति ॥ सिद्धिमायाति इति ॥ यदा यदा कश्चित्तीर्थकरोऽनुत्तरोपपातिकदेवो वा अप्रतिपतितेनावधिज्ञानेन जघन्यायामवगाहनायामुत्पद्यते तदाऽवधिज्ञानमपि लभ्यते इति विभङ्ग ज्ञाने विरुद्धं विभङ्गज्ञानसहितस्तु नारकादुद्धृतोजघन्यायामवगाहनाया नोत्पद्यते तथास्वाभाव्यादतो विभङ्गज्ञानं न लभ्यत इति द्वाभ्यामज्ञा

नाणीयि । अजहन्नुक्कोसोहिनाणीयि एवचेव नवर सठाणे छठाणवडिए । जहा आभिणिबोहियनाणी तहा मतिअन्नाणी सुयअन्नाणीय । जहा ओहिनाणी तहा विभंगनाणीय । चक्खुदसणी अचक्खुदसणीय जहा आभिणिबोहियनाणी । ओहिदसणी जहा ओहिणाणी । जत्थ नाणा तत्थ अन्नाणा नत्थि जत्थ अन्ना

सुरमणी च यथाभिनिबोधिकज्ञानी । अवधिदर्शनी यथावधिज्ञानी । यत्र ज्ञानानि तत्राज्ञानानि न सन्ति, यत्राज्ञानानि तत्र ज्ञानानि न सन्ति यत्र दर्शनं तत्र ज्ञानान्यज्ञानान्यपि सन्तीति भवितव्यम् । जघन्यावगाहनकाना भदन्त ! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम !

मन करहइ पर्यविज्ञानो जाणवा । पनवणाउ हिनावोविति । पचघन्य पनरहइ पर्यविज्ञानो पच एमज एतचा विगय सत्ताम ने वियं पट स्था न पतित हुवे । मम चाभिनिबोधिक ज्ञानी तिम मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी पच जाणवा । जम अवधिज्ञानी तेम विभंगज्ञानी पच जाणवा । चक्षुदर्श

सुयनाणीधि । जहण्णोहिनाणीण भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा प० से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोहिनाणी पंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णोहिनाणिस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। ठितीए तिट्ठाणवडिए। वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं आभिणिबोहियनाणसुयनाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। ओहिनाणपज्जवेहिं तुल्ले अन्नाणा नत्थि। चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसोहि

वधिज्ञानिना भदन्त! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा गौतम! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते ? गौतम! जघन्यावधिज्ञानी पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिको जघन्यावधिज्ञानिपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः। स्थित्या त्रिस्थानपतितः। वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैराभिनिबोधिकश्रुतज्ञानपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः। अवधिज्ञानपर्यवैस्तुल्यो ऽज्ञानानि न सन्ति। चक्षुर्दर्शनपर्यवैरचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षावधिज्ञान्यपि। अजघन्यानुत्कर्षावधिज्ञान्यप्येवमेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। यथाऽऽभिनिबोधिकज्ञानी तथा मत्यज्ञानी श्रुताज्ञानी च। यथाऽवधिज्ञानी तथा विभङ्गज्ञान्यपि। चक्षुर्दर्शन्यच

र्कर आभिनिबोधिक ज्ञानी तथा एतना विषय स्थितियो चतस्थान पतित। एम श्रुतज्ञानी पण जाणवा। जघन्यावधिज्ञानी। जघन्य अवधिज्ञानी हे भगवन् पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक ना प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या। तेह अर्थे प्रभु हे भगवन् एम कह्या—जघन्य अवधिज्ञानी ना अनन्ता पर्याय हे गौतम जघन्य अवधिज्ञानी पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक जघन्य अवधिज्ञानी पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनार्थे करी चतस्थान पतित। स्थितिये करी त्रिस्थान पतित। वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्याये करी आभिनिबोधिकज्ञान श्रुतज्ञान पर्याये करी षट्स्थान पतित, अवधिज्ञान पर्याये करी तुल्य अज्ञान नथी। चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शने करी षट्स्थान पतित। एवं उत्कर्षावधिज्ञानी। प

पर्वाडिए इति ॥ अजहन्नमणुक्कोसोगाहिए वि तिर्यक्पञ्चेन्द्रियस्य स्वभूमिकानुसारेण जघन्ये मतिज्ञानविपर्ययश्रुताज्ञाने लभ्येते तत् असंख्येयवर्षायुषोऽप्य संख्यातवर्षायुषश्च जघन्याभिनिबोधिकश्रुतज्ञानसम्भवाद्भवति स्थित्या चतुःस्थानपतितः । उत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानसूत्रे स्थित्या च त्रिस्थानपतितता अवसेया यत इह उत्कृष्टे आभिनिबोधिकश्रुतज्ञाने स नियमात्संख्येयवर्षायुष्क स्थित्या त्रिस्थानपतित एव यथोक्तं प्राग्-अवधिसूत्रे विभङ्गसू त्रेऽपि स्थित्या त्रिस्थानपतितता विज्ञातव्या इति कुत्र-असंख्येयवर्षायुषोऽवधिविभङ्गासम्भवात् "आह च मूलटीकाकारः-अवधिविभङ्गयोस्तु नियमा त्रिस्थानपतितत्वं किंकारणं यस्मात् अवधिविभङ्गावसर्पिण्यस्य नास्ति यतः, जघन्यावगाहनमनुष्यसूत्रे-त्रिस्थानपतितत्वमपि इति ॥ तिर्यक् पञ्चेन्द्रियमनुष्यापि जघन्यावगाहनो नियमात् संख्येयवर्षायुष्कः संख्येयवर्षायुष्कश्च स्थित्या त्रिस्थानपतित एवेति ॥ तिर्यक्पञ्चेन्द्रियश्च इति ॥ यदा यदा कश्चित्तीर्थकरोऽनुत्तरोपपातिकदेवो वा अप्रतिपतितेनावधिज्ञानेन जघन्यायामवगाहनायामुत्पद्यते तदा ऽवधिज्ञानमपि लभ्यते इति त्रिज्ञानी त्र्यज्ञानी इत्युक्तं विभङ्गज्ञानसहितस्तु नारकादुद्धृत्तो जघन्यायामवगाहनायां नोत्पद्यते तथास्वाभाव्यादतो विभङ्गज्ञानं न लभ्यते इति द्वाभ्यामज्ञा

नाणीवि । अजहन्नमणुक्कोसोगाहिणीवि एवचेव नवरं सठाणे छठाणवडिए । जहा आभिणिबोहियनाणी तहा मतिअन्नाणी सुयअन्नाणीय । जहा ओहिनाणी तहा विभंगनाणीय । चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणीय जहा आभिणिबोहियनाणी । ओहिदंसणी जहा ओहिणाणी । जत्थ नाणा तत्थ अन्नाणा नत्थि जत्थ अन्ना

श्रुतज्ञानी च यथाभिनिबोधिकज्ञानी । अवधिदर्शनी यथावधिज्ञानी । यत्र ज्ञानानि तत्राज्ञानानि न सन्ति, यत्राज्ञानानि तत्र ज्ञानानि न सन्ति यत्र दर्शनं तत्र ज्ञानान्यप्यज्ञानान्यपि सन्तीति ज्ञातव्यम् । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम !

मध जरकट पर्यविधानो कारवा । यमदसुकाशाहिनायोविशि । भमपरय यमरकड पर्यविभाग्नो पव एमज पतका विजप ससान मे विप पटसा न पतित हुवे । जेम आभिनिबोधिक ज्ञानी तेम मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी पण जाणवा । जेम अवधिज्ञानी तेम विभंगज्ञानी पण जाणवा । चक्षुदर्श

णा तत्थ नाणा नत्थि । जत्थ दंसणा तत्थ नाणावि अन्नाणावि अत्थित्ति भाणियव्वं । जहण्णोगाहणगाणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहण्णोगाहणगाणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए मणूसे जहण्णोगाहणगस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठितीए तिठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । उक्कोसोगाहणएवि

अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । प्रश्नकारणं प्रतीतम् । एवमुच्यते—जघन्यावगाहनकानां मनुष्याणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यावगाहनको मनुष्यो जघन्यावगाहनकस्य मनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः । स्थित्या त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैर्द्वाभ्यामज्ञानाभ्यां त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । उत्कृष्टावगाहनकोऽप्येवं चैव नवरं स्थित्या स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः । यदि हीनोऽसङ्ख्येयभागहीनोऽथाभ्यधिकोऽसङ्ख्येयभागाधिको [illegible]

[illegible] आभिनिबोधिक ज्ञानी [illegible] जैसा तेम जाणवा । जत्थ नाणा तत्थ [illegible] नत्थित्ति । [illegible]
[illegible] ज्ञान हवे, [illegible] ज्ञान हवे तिहां [illegible] न हवे । जिहां दर्शन हवे तिहां ज्ञान पणि हुवे अज्ञान पणि हुवे । एम कहवो । [illegible]
[illegible] । जघन्य अवगाहना ना मनुष्य ने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या ? हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । [illegible]
[illegible] जघन्य अवगाहना ना मनुष्य ने अनन्ता पर्याय [illegible] गौतम जघन्य अवगाहना ना मनुष्य जघन्य अवगाहना ना मनुष्य ने द्रव्यार्थे
[illegible] प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनार्थे करी तुल्य स्थिति करी त्रिस्थान पतित । वर्ण गन्ध रस फास पर्याये करी [illegible] ज्ञान [illegible] अज्ञाने करी [illegible]
[illegible] करी षट्स्थान पतित हुवे । उत्कृष्ट अवगाहना [illegible] एवं कहवो । [illegible] अवगाहना ना मनुष्य ने पणि [illegible] स्थिति करी [illegible]

माष्यादिरयुक्त उत्कृष्टावगाहनमनुष्यसूत्रे-ठिइए सियहीणे सियतुल्ले सियअब्भहिए जइ हीणे असंखेज्जभागहीणे जह अब्भहिए असंखेज्जभागमब्भ हिए इ उत्कृष्टावगाहना हि मनुष्या त्रिगव्यूतायुषा त्रिगव्यूतानां स्थिति श्चयतः पल्योपमासंख्येयभागहीनानि त्रीणि पल्योपमानि उत्कृष्टतस्तु स्पेव परिपूर्णानि त्रीणि पल्योपमानि "ववत्थ चीवाभिगम-उत्तरकुरुदेवकुराए मणुस्साणं भंते । केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता गोयमा । जहन्नेणं तिन्नि पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जभागेणऊणाइं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइंति" पल्योपमासंख्येयभागेन प्रधानं पल्योपमानामसंख्येय तमानाम इति पल्योपमासंख्येयभागहीनः पल्योपमत्रय स्थितिक परिपूर्णपल्योपमत्रयस्थितिकापेक्षया ऽसंख्येयभागहीन इत्यत एवापेक्षयाऽसं ख्येयभागाधिकः प्रायः पुद्गलानुगमात् न गच्छन्ति इ दो नाणा दो अन्नाणा इति उत्कृष्टावगाहना हि असंख्येयवर्षायुष्यो ऽसंख्येयवर्षायुषां चाऽज्ञ चिविनज्ञानस्य सम्भावनाया दो च एव भवे दुन्नाणा इति तथा अजघन्योत्कृष्टावगाहन संख्येयवर्षायुष्कोपि भवत्यसंख्येयवर्षायुष्कोपि सम्भूताप्रुपमूतापञ्चमसावगाहनयापि चतु स्थानपतितत्व स्थित्यापि तथाऽऽद्यैचतुर्भिर्ज्ञानैश्चतुर्विधमत्यादिरूपैर्ज्ञानैः षट्स्थानपतिता स्तेषां चतु

एयचेय नवर ठितीए सिय हीण सिय तुल्ले सिय अब्भहिए । जइ हीण असंखेज्जइभागहीणे । अह अब्भ हिए असंखेज्जइभागमब्भहिए । दो नाणा दो अन्नाणा दो दसणा । अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि एवचे व नवर ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए चउट्ठाणवडिए । आइल्लेहिं चउहिं नाणेहिं छट्ठाणवडि

मध्यमावगाहनायतया चतु स्थानपतित । स्थित्या चतु स्थानपतिता । आदिमैश्चतुर्भिर्ज्ञानै षट्स्थानपतित । केवलदर्शनपर्यवैस्तुल्याश्चिनिर

दाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हवे । जे हीन हुवे असख्यात भाग हीन हुवे, जे अधिक हुवे असख्यात भाग अधिक हुवे वे ज्ञान वे अज्ञान वे दर्शन हवे । अजघन्योत्कृष्ट पिण एव कहिवो । अवगाह्ना अवगाहना ना मनुष्यने पिण एमज एतला विशेष अवगाहनायताय करी चउ स्थान पतित हुवे । स्थितिये करी चउ स्थान पतित हुवे । भावार्थ । आदिम मति श्रुत अवधि अने मनपर्यव ज्ञान करी षटस्थान पतित

णा तत्थ नाणा नत्थि । जत्थ दसणा तत्थ माणावि श्रणाणाथि श्रत्थित्ति नाणिसव्वं । जहण्णोगाहणगाण
न्नन । मणुस्साण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! श्रणता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेण भते ! एव
वुच्चइ–जहण्णोगाहणगाण मणुस्साण श्रणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए मणूसे जहण्णो
गाहणगस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठितीए तिठाणवडिए । वण्ण
गधरसफासपज्जवेहि तिहि नाणेहि दोहि श्रन्नाणेहि तिहि दसणेहि छठाणवडिए । उक्कोसोगाहणएवि

घनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । प्रश्नमार्थेन भदन्त । एवमुच्यते-जघन्यावगाहनकाना मनुष्याणामनन्ता पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम । जघन्याव
गाहनको मनुष्यो जघन्यावगाहनकस्य मनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्य प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तस्य । स्थित्या त्रिस्थानपतितः । वर्ण
गन्धरसस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानै द्वाभ्यामज्ञानाभ्या त्रिभिर्दर्शनै षट्स्थानपतित । उत्कृष्टावगाहनकोऽप्येव मेव नवर स्थित्या स्याद्धीन स्यात्तुल्यः
स्यादभ्यधिक । यदि हीनोऽसख्येयभागहीनोऽथाभ्यधिकोऽसख्येयभागाधिको द्वाभ्यां ज्ञानाभ्यां द्वे दर्शने । अजघन्योत्कृष्टावगाहनकोऽप्येव मेव

नो जघन्यज्ञानो अन नाभिनिबोधिक ज्ञानो, मतविदज्ञानो अन श्रुतविज्ञाना कहा तेम जाणवा । जत्थ नाणा तत्थ श्रनाणा नत्थित्ति । जिहाँ ज्ञान
छ तिहाँ श्रज्ञान नहवे, जिहाँ श्रज्ञान हवे तिहा ज्ञान न हवे । जिहाँ दर्शन हवे तिहा ज्ञान पणि हुवे श्रज्ञान पणि हुवे । एम कहवो । जघन्यागाह
णाई भत मनुष्याने ते । जघन्य श्रवगाहना ना मनुष्य ने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प ब ब गौतम श्रनन्ता पर्याय कह्या । तेह केणे श्रर्थे हे
भगवन् इम कह्या जघन्य श्रवगाहना ना मनुष्य ने श्रनन्ता पर्याय प ब गौतम जघन्य श्रवगाहना ना मनुष्य जघन्य श्रवगाहना ना मनुष्य ने द्रव्यार्थे
करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य श्रवगाहनार्थे करी तुल्य स्थिति करी त्रिस्थान पतित । वर्ण गन्ध रसस्पर्श पर्याये करी त्रण ज्ञान ब श्रज्ञाने करी त्रण
दर्शने करी षटस्थान पतित हुवे । उत्कृष्टावगाहनावि एवं चेवत्ति । उत्कृष्ट श्रवगाहना ना मनुष्य ने पणि इमज कहवा एतला विशेष स्थिति करी ब

णाने उत्कृष्टस्थितिमनुष्यसूत्रे-ऽपी नावा ही वक्तव्या इति । उत्कृष्टस्थितिकाहि मनुष्या त्रिपल्योपमायुष्कत्वेन तावद्याने नियमेन यदा पुनः पल्योपमासंख्येयभागवर्धितायुषा वैमानिकत्व यद्वायुष सम्यक्त्वाभावात् द्वे ज्ञाने लभ्यते अवधिविभङ्गज्ञानाभावयत्पर्यायया न स इति नोवि ज्ञानानि श्री अपदामानीतिभोत्त अजघन्यानुत्कृष्टस्थितिकमनुष्यसूत्र मजघन्योत्कृष्टावगाहनमनुष्यसूत्रमिव भावनीय । अजघन्याभिनिबोधिकमनुष्यसूत्र ईशान म

मणुक्कोसठिईएवि एव चेव नवरं ठिईए चउठाणवडिए । ओगाहणट्ठयाए चउठाणवडिए । आइल्लेहिं चउहिं नाणेहिं छट्ठाणवडिए । केवलनाणपज्जवेहिं तुल्ले । तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले । जहन्नगुणकालयाणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए मणूसे जहन्नगुणका

एवमुत्कृष्टस्थितिकोऽपि नवरं द्वे स्थाने द्वे दर्शने । अजघन्यानुत्कृष्टस्थितिकोऽप्येवं चैव नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः । अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । आदिमैश्चतुर्भिर्ज्ञानैः षट्स्थानपतितः । केवलज्ञानपर्यवैस्तुल्यः त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः केवलदर्शनपर्यवैस्तुल्यः । जघन्यगुणकालकानां भदन्त ! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते जघन्यगुणकालकमनुष्यस्यानन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यगुणकालको मनुष्यो जघन्यगुणकालकस्य

एवं उत्कृष्टोऽपि जानवो । इम परन्तु स्थिति ने विषे पण एमज जाणवा विशेष बे ज्ञान बे अज्ञान पण बे दर्शन हुवे । अजघन्य अनुत्कृष्टोऽपि एवं जानवो । परन्तु अजघन्य स्थिति विषे पण एमज जाणवा विशेष स्थिति करी चतुःस्थान पतित । अवगाहनार्थतायें करी चतुःस्थान पतित हुवे । आदिम चार ज्ञाने करी षट्स्थान पतित हुवे । केवलज्ञान पर्यवे करी तुल्य हुवे । त्रण अज्ञान त्रण दर्शने करी षट्स्थान पतित हुवे । केवलदर्शन पर्यवे करी तुल्य हुवे । जघन्यगुणकालकाधिकार । जघन्य गुण कालक ने हे भगवन् मनुष्य ने केतला पर्याय हुवे प्र उत्तर हे गौतम

चापि प्रानामा मनद्रव्यादिभापमपयोपभमथैविभ्यतातारतम्यनाभात्कयमप्पानपयर्वैसाम्यता नि शेपसावरणक्षयतः प्रादुर्भूतस्य केवलज्ञानस्य प्रनाताबात शेप सुगम ॥ जघन्यस्थितिकमनुष्यसूत्रे-तादि यत्राधेति इति ॥ द्वाभ्यामज्ञानाभ्यां मत्यज्ञानश्रुताज्ञानरूपाभ्यां पद्स्थानपतितता यतस्तयोर्मत प्रानाभ्यां कस्मादितिचेदुच्यते-जघन्यस्थितिका मनुष्याः सम्मूर्च्छिमाः सम्मूर्च्छिममनुष्याश्च नियमतो मिथ्यादृष्टयस्ततस्तेषामज्ञानमेव न

ए। कयलनाणपज्जवेहि तुल्ले। तिहि अन्नाणेहि दसणेहि छट्ठाणवडिए। केवलदसणपज्जवेहि तुल्ले। जहण्णठितीयाणं भंते! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहण्णठितीए मणुस्से जहण्णठितीयस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। ठितीए तुल्ले। वण्णगंधरसफासपज्जवेहि दोहि अन्नाणेहि दोहि दसणेहि छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसठितीएवि नवरं दो नाणा दो अन्नाणा दो दसणा। अजहण्ण

प्रदेशार्थतया पद्स्थानपतित। केवलदर्शनपर्यवैस्तुल्य। जघन्यस्थितिकानां भदन्त! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। तत्केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते? गौतम! जघन्यस्थितिको मनुष्यो जघन्यस्थितिकस्य मनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः। स्थित्या तुल्यो वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैर्द्वाभ्यामज्ञानाभ्यां द्वाभ्यां दर्शनाभ्यां षट्स्थानपतितः।

हैं, केवल ज्ञान पर्याये करी तुल्य हुवे चव ज्ञान पने चव दर्शन करी षट्स्थान पतित हुवे। केवल दर्शन पर्याय करी तुल्य हुवे। जघन्य स्थितिमाथ भ मनुष्यादि। जघन्य स्थितिक मनुष्य ने हे भगवन् कितना पर्याय कह्या प्र ० उ ० हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या, ते कवे अर्थे हे भगवन् एम क जघन्य स्थितिक मनुष्य ने अनन्ता पर्याय कह्या प्र ० उत्तर हे गौतम जघन्य स्थितिक मनुष्य जघन्य स्थितिक मनुष्य ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे क तुल्य अवगाहनार्थे करी चतु स्थान पतित। स्थितिये करी तुल्य। वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्याये करी बे अज्ञाने करी बे दर्शने करी षट्स्थान पतित।

स्थाने उत्कृष्टस्थितिमनुष्यसूत्रे-ऽपी नाता ही वक्तव्या इति। उत्कृष्टस्थितिका हि मनुष्या त्रिपल्योपमायुष्कास्ते च तावद्यावत् नियमेन यदा पुनः पश्चात् पर्याप्तावस्थायां चैमानिक पद्मापय ज्ञा सम्यक्त्वमासात् द्वे ज्ञाने लभ्यते अथ पिविजङ्गाप्रवासस्यपत्रपर्यायुषा न सा इति श्रीणि ज्ञानानि श्री णि अज्ञानानीतिभाव। अजघन्यानुत्कृष्टस्थितिकमनुष्यसूत्र मजघन्योत्कृष्टावगाहनमनुष्यसूत्रमिव भावनीयं। जघन्याभिनिबोधिकमनुष्यसूत्रे द्वे ज्ञाने च

मणक्कासठितीएवि एव चेव नवर ठिइए चउठाणवडिए। ओगाहणट्ठयाए चउठाणवडिए। आइल्लेहि च उहि नाणेहि छठाणवडिए। केवलनाणपज्जवेहि तुल्ले। तिहि अन्नाणेहि तिहि दसणेहि छठाणवडिए केवलदसणपज्जवेहि तुल्ले। जहन्नगुणकालयाण भते! मणुस्साण केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता। से केणठेण भते! एव वुच्चइ? गोयमा! जहन्नगुणकालए मणूसे जहन्नगुणका

एवमजघन्योत्कृष्टस्थितिकोऽपि नवरं द्वे ज्ञाने द्वे अज्ञाने द्वे दर्शने। अजघन्यानुत्कृष्टस्थितिकोऽप्येवमेव नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः। अवगाहनतया चतुःस्थानपतितः। आदिमैश्चतुर्भिर्ज्ञानैः षट्स्थानपतितः। केवलज्ञानपर्यवैस्तुल्यस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः केवलदर्शनपर्यवैस्तुल्यः। जघन्यगुणकालकानां भदन्त! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। तत् केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते जघन्यगुणकालकमनुष्याणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! जघन्यगुणकालको मनुष्यो जघन्यगुणकालकस्य

एवं अजघन्योत्कृष्टोऽपि भवति। इस उत्कृष्ट स्थिति न विषे पण एमज एतला विशेष वे ज्ञान वे अज्ञान वे दर्शन हुए। एवं अजघन्योत्कृष्टोऽपि एम भणवो। अजघन्य अनुत्कृष्ट स्थितिवाला विषे पण एमज एतलो विशेष स्थिति करी चतःस्थान पतित। अवगाहनायतावे करी चतःस्थान पतित हुवे। पहिला चार ज्ञाने करी षट्स्थान पतित हुवे। केवलज्ञान पर्याये करी तुल्य हुवे। त्रण अज्ञान त्रण दर्शने करी षट्स्थान पतित हु वे। केवल दर्शन पर्याये करी तुल्य हुवे। जघन्यगुणकालावार्त्ति। जघन्य गुण कालक ने हे भगवन् मनुष्य ने केतला पर्याय हुवे प्र उत्तर हे गोतम

चामपि ज्ञानाभ्यां मत्यज्ञानश्रुताज्ञानपर्यवैश्च तारतम्यभावात्षट्स्थानपतितत्वमा नि शेषावरणक्षयतः प्रादुर्भूतस्य केवलज्ञानस्य प्रदानाभावात् शेष सुगम ॥ अपश्चिमस्थितिकमनुष्यसूत्र-दोहि नाण चाउ इति ॥ ज्ञानाभ्यामज्ञानाभ्यां मत्यज्ञानश्रुताज्ञानरूपाभ्यां षट्स्थानपतितता चक्षुर्दर्शनाचक्षुर्दर्शनाभ्यां कस्मादिति चेदुच्यते-अपश्चिमस्थितिका मनुष्याः सम्मूर्छिमाः सम्मूर्छिममनुष्याश्च नियमतो मिथ्यादृष्टयस्ततस्तेषामज्ञानद्वय म

ए । कयरनाणपज्जवेहि तुल्ले । तिहि अन्नाणेहि दसणेहि छठाणवडिए । केवलदसणपज्जवेहि तुल्ले । जहण्णठितीयाण भंते । मणुस्साण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणठेण भंते । एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठितीए मणुस्से जहण्णठितीयस्स मणुस्सस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले ओगाहणठयाए चउठाणवडिए । ठितीए तुल्ले । वण्णगंधरसफासपज्जवेहि दोहि अन्नाणेहि दोहि दसणेहिं छठाणवडिए । एवं उक्कोसठितीएवि नवर दो नाणा दो अन्नाणा दो दसणा । अजहण्ण

दर्शनाभ्यां षट्स्थानपतितः । केवलदर्शनपर्यवैस्तुल्यः । जघन्यस्थितिकानां भदन्त । मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम । अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत्केनार्थेन भदन्त । एवमुच्यते ? गौतम । जघन्यस्थितिको मनुष्यो जघन्यस्थितिकस्य मनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या तुल्यो वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैर्द्वाभ्यामज्ञानाभ्यां द्वाभ्यां दर्शनाभ्यां षट्स्थानपतितः ।

दर्शन, केवल ज्ञान पर्याय करो तथा पूर्व वत ज्ञान वने वन दर्शन करो षटस्थान पतित हुन । केवल दर्शन पर्याय करो तथ्य हुव । जघन्य स्थितिवाले मनुष्योंकी । जघन्य स्थिति मनुष्य न हे भगवन् कितना पर्याय कहा प्र ० हे गौतम अनन्ता पर्याय कहा, तब क्यों ऐसे हे भगवन् इस कहा जघन्य स्थिति मनुष्य ने अनन्ता पर्याय कहा प्र उत्तर हे गौतम जघन्य स्थिति मनुष्य जघन्य स्थिति मनुष्य ने द्रव्यार्थ करो तुल्य प्रदेशार्थे करो तुल्य अवगाहनार्थे करो चतु स्थान पतित । स्थितिये करो तुल्य । वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्यायें करो दो अज्ञाने करो दो दर्शने करो षटस्थान पतित ।

णमे द्वे दर्शने विचारयमितिप्ट दुष्यते जघन्याभिनिबोधिकादि जीवो नियमाद्वपिमम पर्यवस्थानविस्तः प्रथमज्ञानावरणकर्मोदयमप्रायादन्यथा परमाभिनिबोधिकज्ञानत्वायोगात तथ प्रपथामदक्षमाषप्रवादाभिनिबोधिकज्ञानपयवे सुल्यश्रुतज्ञानपयवै द्वाभ्यां दर्शनाभ्यां च षट्स्थानपतित ता उक्ता उत्कृष्टाभिनिबोधिकसूत्रे-ठिइए तिठाणवडिएइति ॥ उत्कृष्टाभिनिबोधिकोऽपि नियमा स्वद्रेयपर्यायुरवद्रुयपर्यायुप स्तथा जघन्यज्ञाप्या

गोयमा ! अणंता पज्जया पण्णत्ता । से केणठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नाभिणिबोहियनाणी मणुस्से जहन्नाभिणिबोहियनाणिस्स मणुस्सस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले ओगाहणठयाए चउठाण वडिए । ठितीए चउठाणवडिए । वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छठाणवडिए । आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले । सुयनाणपज्जवेहिं दोहिं दंसणेहिं छठाणवडिए । एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि नवरं आभि णिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले । ठितीए तिठाणवडिए । तिहिं नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छठाणवडिए । अ

वतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतित । स्थित्या चतुःस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतित । आभिनिबोधिकज्ञा नपर्यवैस्तुल्यः श्रुतज्ञानपर्यवैर्द्वाभ्यां दर्शनाभ्यां षट्स्थानपतित । एवमुत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञान्यपि नवरं आभिनिबोधिकज्ञानपर्याये स्तुल्य स्थित्या त्रिस्थानपतित । त्रिभिर्ज्ञानै त्रिभिर्दर्शनै षट्स्थानपतितः । अजघन्यानुत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञानी यथोत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञानी

नो मनुष्य के भगवन् कितना पर्याय कहा प्र उ हे गौतम ! अनन्ता पर्याय कह्या । तद कवे पर्ये हे भगवन् इम कहो प्र उत्तर हे गौतम जघ न्य आभिनिबोधिक ज्ञा नी मनुष्य जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी मनुष्य ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पण तुल्य अवगाहना करी चतु स्थान पतित हुवे । स्थिति करी चतु स्थान पतित हुवे । वर्ण गंध रस फर्श पर्याये करी षटस्थान पतित हुवे । आभिनिबोधिक ज्ञान पर्याये करी तुल्य हु वे । श्रुतज्ञान पर्याये करी बे दर्शने करी षट्स्थान पतित हुवे । एम उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी पण एतला विशेष आभिनिबोधिक ज्ञान पर्याय

एगस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । चउहिं नाणेहिं छट्ठाणवडिए । केवलनाणपज्जवेहिं तुल्ले तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले । एवं उक्कोसगुणकालए वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा भाणियव्वा । जहण्णाभिणिबोहियनाणीणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता

मनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैस्तुल्योऽवशेषैर्वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । चतुर्भिर्ज्ञानैः षट्स्थानपतितः । केवलज्ञानपर्यवैस्तुल्यः त्रिभिरज्ञानैः त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । केवलदर्शनपर्यवैः तुल्यः एवमुत्कृष्टगुणकालकोऽपि । अजघन्यानुत्कृष्टगुणकालकोऽप्येवमेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । एवं पञ्च वर्णा द्वौ गन्धौ पञ्च रसा अष्टौ स्पर्शा भणितव्याः । जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनां भदन्त ! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिमनुष्यो जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिमनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशा

अनन्ता पर्याय कहे । तब फिर पूछे हे भगवन् इम कह्या तेहिज कहवा ? हे गौतम एकगुण कालक मनुष्य एकगुण कालक मनुष्य से द्रव्यार्थ करी तुल्य प्रदेशार्थ करी तुल्य अवगाहनायतासे करी चउ स्थान पतित कहे । कालवर्ण पर्याय करी तुल्य अवशेष वर्ण गंध रस स्पर्श पर्याय करी षटस्थान पतित । चार ज्ञाने करी षटस्थान पतित । केवल ज्ञान पर्याय करी तुल्य तीन अज्ञान तीन दर्शने करी षट्स्थान पतित हुए । केवलदर्शन पर्याय करी तुल्य कहे । एवं उत्कृष्टगुणकालक भी । एम अजघन्यगुणकालक पण जाणवा । अजघन्य अनुत्कृष्टगुणकालक पण एमज एतला विशेष स्वस्थाने षट स्थान पतित हुवे । एम पांच वर्ण बे गन्ध पांच रस आठ स्पर्श कहवा । जघन्याभिनिबोधिकज्ञानी भंते ! मनुष्यानी । जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञा

तम्मे द्वे दर्शने किंकारणमितिरिह उच्यते अपन्याभिनियोधिकाणि जीवो नियमादवचिमम पर्यवज्ञानविकलः मयसरबानावरणकर्मोदयसद्भावादन्यथा अपन्याभिनियोधिकज्ञानपर्यवे सुत्यश्रुतज्ञानपर्यवे द्वाभ्यां दर्शनाभ्यां च षट्स्थानपतित अपन्याभिनियोधिकज्ञानत्वायोगात्, तत आपधामदर्शनासमवादाभिनियोधिकज्ञानपर्यवे तुल्यश्रुतज्ञानपर्यवे... ता उक्ता उत्कृष्टाभिनियोधिकसूत्रे-ठिइए तिठाणवडिएइति उत्कृष्टाभिनियोधिकाणि नियमा रसकुपयर्पापुरसकुपयर्पोपुप दाया जघन्यज्ञानाभ्या

गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नाभिणिबोहियनाणी मणुस्से जहन्नाभिणिबोहियनाणिस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए चउट्ठाणवडिए । वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले । सुयनाणपज्जवेहिं दोहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि नवरं आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले । ठितीए तिट्ठाणवडिए । तिहिं नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । अ

यतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या चतुःस्थानपतित । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवैस्तुल्यः श्रुतज्ञानपर्यवैर्द्वाभ्यां दर्शनाभ्यां षट्स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञान्यपि नवरं आभिनिबोधिकज्ञानपर्यायैः स्तुल्यः स्थित्या त्रिस्थानपतित । त्रिभिर्ज्ञानैः त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । अजघन्यानुत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानी यथोत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानी

भो भगवन् हे भगवन् उनका पर्याय कहा म प ह गोतम ! अनन्ता पर्याय कहा । तब कहे पर्व ह भगवन् इस कहो प्र उत्तर हे गोतम जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी मनुष्य जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी मनुष्य से द्रव्यार्थ करी तुल्य प्रदेशार्थ करी पण तुल्य अवगाहनाय करी चतु स्थान पतित कहे । स्थिति करी चतु स्थान पतित कहे । वर्ण गंध रस स्पर्श पर्याय करी षटस्थान पतित कहे । आभिनिबोधिक ज्ञान पर्याय करी तुल्य कहे । श्रुतज्ञान पर्याय करी बे दर्शने करी षट्स्थान पतित कहे । एम उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी पण इतलो विशेष आभिनिबोधिक ज्ञान पर्याय

एगस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। चउहिं नाणेहिं छट्ठाणवडिए। केवलनाणपज्जवेहिं तुल्ले तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए। केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले। एवं उक्कोसगुणकालएवि। अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवं चेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा भाणियव्वा। जहन्नाभिणिबोहियनाणीणं भंते! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता

मनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्य: प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतु:स्थानपतित:। कालवर्णपर्यवैस्तुल्योऽवशेषैर्वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवै: षट्स्थानपतित:। चतुर्भिर्ज्ञानैः षट्स्थानपतित:। केवलज्ञानपर्यवैस्तुल्य: त्रिभिरज्ञानैः त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतित:। केवलदर्शनपर्यवैस्तुल्य एवमुत्कृष्टगुणकालकोऽपि। अजघन्यानुत्कृष्टगुणकालकोऽप्येवमेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतित:। एवं पञ्च वर्णा द्वौ गन्धौ पञ्च रसा अष्टौ स्पर्शा भणितव्या:। जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनां भदन्त! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवा: प्रज्ञप्ता:? गौतम! अनन्ता: पर्यवा: प्रज्ञप्ता:। अथ केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते? गौतम! जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिमनुष्यो जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिमनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्य: प्रदेशा

अनन्ता पर्याय कहे। तब फिर पूछे हे भगवन् इस का तेहिक कहना हे गौतम जघन्यगुण कालक मनुष्य जघन्यगुण कालक मनुष्य से द्रव्यार्थ करी तुल्य प्रदेशार्थ करी तुल्य अवगाहनार्थताय करी चतुःस्थान पतित होवे। कालवर्ण पर्याये करी तुल्य अवशेष वर्ण गंध रस स्पर्श पर्याये करी षटस्थान पतित। चार ज्ञाने करी षटस्थान पतित। केवल ज्ञान पर्याये करी तुल्य तीन अज्ञान तीन दर्शने करी षटस्थान पतित होवे। केवलदर्शन पर्याये करी तुल्य होवे। एवं उत्कृष्टकालकवर्णवि। एम अजघन्यअनुत्कृष्टकालक पण जाणवा। परन्तु अनुत्कृष्टगुणकालक पण एमज पण विशेष स्वस्थाने षटस्थान पतित हुवे। एम पांच वर्ण बे गन्ध पांच रस आठ स्पर्श कहवा। जघन्याभिनिबोधिकज्ञानी भंते! मनुष्याणंति। जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञा

णत्वे द्वे दर्शने त्रिकारणमितित्व दृश्यते जघन्याभिनिबोधिकादि कौतो नियमात्सविमम पर्यवहानबिवल: प्रथमधानावरवकर्मोदयमन्नायादन्यथा जघन्याभिनिबोधिकज्ञानत्वायोगात् तत जघन्यामरज्ञनावप्रवादाभिनियोधिकज्ञानपयवै सुत्यसुतज्ञानमयवे द्वाभ्या दर्शनाभ्यां च षट्स्थानपतित ता उक्ता उत्कृष्टाभिनियोबिकसूत्रे-ठिइए तिठाणवडिएइति । उत्कृष्टाभिनियोधिकोहि नियमा स्खङ्कुयवर्षायुस्खङ्कुयवर्षायुष तथा जघन्यानाम्या

गोयमा ! अणता पज्जाया पण्णत्ता । से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नाभिणिबोहियनाणी मणुस्स जहन्नाभिणिबोहियनाणिस्स मणुस्सस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले ओगाहणठयाए चउठाण वडिए । ठितीए चउठाणवडिए । वन्नगंधरसफासपज्जवेहि छठाणवडिए । आभिणिबोहियनाणपज्जवेहि तुल्ले । सुयनाणपज्जवेहि दोहि दसणेहि छठाणवडिए । एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि नवरं आभि णिबोहियनाणपज्जवेहि तुल्ले । ठितीए तिठाणवडिए । तिहि नाणेहि तिहि दसणेहि छठाणवडिए । अ

यतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतित । स्थित्या चतुःस्थानपतित: । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवै: षट्स्थानपतित: । आभिनिबोधिकज्ञा नपर्यवैस्तुल्य: श्रुतज्ञानपर्यवैर्द्वाभ्या दर्शनाभ्या षट्स्थानपतित । एवमुत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञान्यपि नवरं आभिनिबोधिकज्ञानपर्याये स्तुल्य स्थित्या त्रिस्थानपतित: । त्रिभिर्ज्ञानै: त्रिभिर्दर्शनै: षट्स्थानपतित: । अजघन्यानुत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञानी यथोत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञानी

नो मनुष्य के भगवन् कतना पर्याय कह्या प्र प उ गौतम ! अनन्ता पर्याय कह्या । तेह यो अर्थे ए भगवन् इम कह्यो प्र उत्तर हे गौतम जघ न्य आभिनिबोधिक ज मो मनुष्य जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी मनुष्य ने द्रव्यार्थ करी तुल्य प्रदेशार्थ करी पण तुल्य अवगाहना करी चतु स्थान पतित हुवे । स्थितिये करी चतुःस्थान पतित हुवे । वर्ण गंध रस फास पर्यवे करी षट्स्थान पतित हुवे । आभिनिबोधिक ज्ञान पर्यवे करी तुल्य ए वे । श्रुतज्ञान पर्यवे करी बे दर्शने करी षट्स्थान पतित हुवे । इम उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी पण एतला विशेष आभिनिबोधिक ज्ञान पर्याय

गस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । चउहिं नाणेहिं छट्ठाणवडिए । केवलनाणपज्जवेहिं तुल्ले तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले । एवं उक्कोसगुणकालए वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा भाणियव्वा । आभिणिबोहियनाणीणं भंते । मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता

मनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैस्तुल्योऽवशेषैर्वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । चतुर्भिर्ज्ञानैः षट्स्थानपतितः । केवलज्ञानपर्यवैस्तुल्यः त्रिभिरज्ञानैः त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । केवलदर्शनपर्यवैस्तुल्य एवमुत्कृष्टगुणकालकोऽपि । अजघन्योत्कृष्टगुणकालकोऽप्येवमेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतित । एवं पञ्च वर्णा द्वौ गन्धौ पञ्च रसा अष्टौ स्पर्शा भणितव्याः । आभिनिबोधिकज्ञानिनां भदन्त । मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ता । अथ केनार्थेन भदन्त । एवमुच्यते ? गौतम । आभिनिबोधिकज्ञानिमनुष्य आभिनिबोधिकज्ञानिमनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशा

अनन्ता पर्याय छे । ते केम भगवन् एम कह्यो तेहिज कहवा छे गौतम जघन्यगुण कालक मनुष्य जघन्यगुण कालक मनुष्य ने द्रव्यार्थे करी प्रदेशार्थे करी तथा अवगाहनापणाये करी चउठाण पतित छे । कालवर्ण पर्याये करी तुल्य अवशेष वर्ण गंध रस फास पर्याये करी छठाण पतित । चार ज्ञाने करी छठाण पतित । केवल ज्ञान पर्याये करी तुल्य त्रण अज्ञान त्रण दर्शने करी छठाण पतित छे । केवलदर्शन पर्याये करी तुल्य छे । एम उत्कृष्टगुणकालक पण जाणवा । अजघन्य अनुत्कृष्टगुणकालक पण एमज पण विशेष स्वस्थाने छठाण पतित छे । एम पांच वर्ण बे गंध पांच रस आठ फरस कहवा । आभिनिबोधिक ज्ञानी भते । मनुष्यने । अनन्त पर्याय । आभिनिबोधिक ज्ञा

णमे है इणमे विचारणमितिथ दुष्यते जघन्याभिनिबोधिकोपि जीवो नियमाद्वधिमन पर्यवज्ञानविकलः प्रथमज्ञानावरणकर्मोदयसद्भावादन्यथा जघन्याभिनिबोधिकज्ञानत्वायोगात् तत अपधानदर्शनासनवादाभिनिबोधिकज्ञानपयवै स्तुल्यमुतज्ञानपर्यवे द्वाभ्यां दर्शनाभ्यां च षट्स्थानपतित ता तथा उत्कृष्टाभिनिबोधिकसूत्रे-ठिइए तिठाणवडिएत्ति । उत्कृष्टाभिनिबोधिकादि नियमा स्वकुमपर्यापुरसकुमपर्यापुप तथा प्रयस्थानाभ्या

गोयमा ! अणंता पज्जया पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नाभिणिबोहियनाणी मणुस्से जहन्नाभिणिबोहियनाणिस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउठाण वडिए । ठितीए चउठाणवडिए । वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छठाणवडिए । आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले । सुयनाणपज्जवेहिं दोहिं दंसणेहिं छठाणवडिए । एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि नवरं आभि णिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले । ठितीए तिठाणवडिए । तिहिं नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छठाणवडिए । अज

यया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या चतुःस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । आभिनिबोधिकज्ञा नपर्यवैस्तुल्यः श्रुतज्ञानपर्यवैर्द्वाभ्यां दर्शनाभ्यां षट्स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञान्यपि नवरं आभिनिबोधिकज्ञानपर्यायैः स्तुल्यः स्थित्या त्रिस्थानपतितः । त्रिभिर्ज्ञानैः त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । अजघन्यानुत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानी यथोत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानी

गो मनुष्य के भगवन् कितना पर्याय कह्या प्र उ हे गोतम ! अनन्ता पर्याय कह्या । तक कवं अर्थ हे भगवन् इम कह्यो प्र उत्तर हे गोतम जघ न्य आभिनिबोधिक प्र गो मनुष्य जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी मनुष्य ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पण तुल्य अवगाहनाए करी चतु स्थान पतित हुवे । स्थितिये करी चतु स्थान पतित हुवे । वर्ण गंध रस फास पर्याये करी षट्स्थान पतित हुवे । आभिनिबोधिक ज्ञान पर्याये करी तुल्य हु वे । श्रुतज्ञान पर्याये करी बे दर्शने करी षट्स्थान पतित हुवे । एम उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी पण एतला विशेष आभिनिबोधिक ज्ञान पर्याय

एगमेगस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । चउहिं नाणेहिं छट्ठाणवडिए । केवलनाणपज्जवेहिं तुल्ले तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले । एवं उक्कोसगुणकालए वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा भाणियव्वा । जहण्णाभिणिबोहियनाणीणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता

मनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैस्तुल्योऽवशेषैर्वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । चतुर्भिर्ज्ञानैः षट्स्थानपतितः । केवलज्ञानपर्यवैस्तुल्यः त्रिभिरज्ञानैः त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । केवलदर्शनपर्यवैस्तुल्य एवमुत्कृष्टगुणकालकोऽपि । अजघन्यानुत्कृष्टगुणकालकोऽप्येवमेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । एवं पञ्च वर्णा द्वौ गन्धौ पञ्च रसा अष्टौ स्पर्शा भणितव्याः । जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनां भदन्त ! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिमनुष्यो जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिमनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशा-

नन्ता पर्याय हैं । तब फिर पूछे हे भगवन् इस का क्या निमित्त कहना हे गौतम जघन्यगुण कालक मनुष्य जघन्यगुण कालक मनुष्य से द्रव्यार्थ करो ल्य प्रदेशार्थ करो तुल्य अवगाहनायताये करो चउ स्थान पतित हुवे । कालवर्ण पर्याय करो तुल्य अवशेष वर्ण गंध रस स्पर्श पर्याय करो षट्स्थान तित । चार ज्ञान करो षट्स्थान पतित । केवल ज्ञान पर्याय करो तुल्य तीन अज्ञान तीन दर्शन करो षट्स्थान पतित हुवे । केवलदर्शन पर्याय करो य हुवे । एवं उत्कृष्टगुणकालक [illegible] । एवं अजघन्य अनुत्कृष्टगुणकालक पर एमज एतला विशेष स्वस्थाने षट् थान पतित हुवे । एम पांच वर्ण बे गन्ध पांच रस आठ स्पर्श कहना । जघन्याभिनिबोधिक [illegible] भंते । मनुष्य [illegible] । जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञा

इममा त्रिस्थानतितो वक्तव्यः यत' सर्वप्रपञ्चोऽपि यथोक्तस्वरूपो मनुष्याणां पारभविको न भवति किंतु तद्भवभावी सोऽपि च पर्याप्तावस्थाया ऽ पर्याप्तावस्थायां तद्योग्यविशुद्धभावात्' उत्कृष्टोऽप्यवधि र्नोपशान्तरिति स्वामी अपप्रमादपि उत्कृष्टावधावसगाहनया त्रिस्थानपतित अजघन्या

पज्जवेहिं छठाणवडिए । तिहिं दसणेहिं छठाणवडिए । सठाणे छठाणवडिए । एवं उक्कोसोहिनाणीवि । अजहन्नमणुक्कोसोहिनाणीवि एवंचेव नवरं ओगाहणठयाए चउठाणवडिए । सठाणे छठाणवडिए । जहा ओहिनाणी तहा मणपज्जवनाणीवि भाणियव्वो । नवरं ओगाहणठयाए तिठाणवडिए जहा आभिणिबोहिय नाणीतहा सुयअन्नाणीवि भाणियव्वो । जहा ओहिनाणी तहा विभंगनाणीवि भाणियव्वो । चक्खुदसणी अच क्खुदसणी य जहा आभिणिबोहियनाणी ओहिदसणी जहा ओहिनाणी । जत्थ नाणा तत्थ अन्नाणा नत्थि,

मिथोऽपि तुल्यापि । अजघन्यानुत्कर्षोऽवधिज्ञानोऽप्येवमेव नवरं अवगाहनया चतुःस्थानपतित । स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । यथावधिज्ञानी तथा मनःपर्यायज्ञान्यपि वक्तव्यो नवरमवगाहनया त्रिस्थानपतित । यथाभिनिबोधिकज्ञानी तथा श्रुताज्ञान्यपि वक्तव्य । यथावधिज्ञानी तथा विभङ्गज्ञान्यपि वक्तव्यः । चक्षुर्दर्शन्यचक्षुर्दर्शनीच यथाभिनिबोधिकज्ञानी । अवधिदर्शनी यथाऽवधिज्ञानी । यत्र ज्ञानानि तत्रा

...ो चउस्थान पतित छे । अवधिज्ञान पर्याय करी तथा अनघन्यज्ञान पर्याये करी षटस्थान पतित हुवे । त्रण दर्शने करी षटस्थान पतित हुवे । एवं ...अवधिज्ञानी विति । एम उत्कृष्ट अवधिज्ञानी पण भाखवा । अजघन्य अनुत्कृष्ट अवधिज्ञानी पण एमज एतला विशेष अवगाहनाये चउ स्थानप ...तित हुवे । स्वस्थाने षटस्थान पतित । जेम अवधिज्ञानी तेम मनपर्यवज्ञानी पण कहवा, एतला विशेष अवगाहनाय त्रिस्थान पतित छे । जेम म ति ...ज्ञानी तेम श्रुत अज्ञानी पण कहवा । जेम अवधि ज्ञानी तेम विभंग ज्ञानी पण कहवा । चक्षु दर्शनी अने अचक्षुदर्शनी जेम आभिनिबो ...धिक ज्ञानी कह्यो । अवधि दर्शनी जेम अवधिज्ञानी । जिहां अवधि दर्शनी तेम अवधि ज्ञानी । जिहां ज्ञान हुवे । तिहां अज्ञान न हुवे जिहां अज्ञान न हुवे

तृ० सर्वोत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानसद्भावात्, सद्भेदपर्यायैश्च मानुष्यत्वे स्थित्या त्रिस्थानपतिता इति ॥ जघन्यावधिसूत्रे उत्कृष्टावधिसूत्रे च यावता

जहन्नमणुक्कोसाभिणिबोहियनाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहियनाणी नवरं ठिईए चउठाणवडिए । सट्ठाणे वि छट्ठाणवडिए । एवं सुयनाणी वि । जहन्नोहिनाणीणं भंते ! मणूसाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नोहिनाणी मणूसे जहन्नोहिनाणिस्स मणूसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तिठाणवडिए । ठिईए तिठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं छट्ठाणवडिए । ओहिनाणपज्जवेहिं तुल्ले मणपज्जवनाण

नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः । स्वस्थानेऽपि षट्स्थानपतितः । एवं श्रुतज्ञान्यपि । जघन्यावधिज्ञानिनां भदन्त ! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यावधिज्ञानी मनुष्यो जघन्यावधिज्ञानिनो मनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यः अवगाहनार्थतया त्रिस्थानपतितः । स्थित्या त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैर्द्वाभ्यां ज्ञानाभ्यां षट्स्थानपतितः । अवधिज्ञानपर्यवैस्तुल्यो मनःपर्यवज्ञानपर्यवैः षट्स्थानपतितः । त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षोऽपि

की तरह । स्थितिये करी त्रिस्थान पतित हुवे । स्व स्थान भव इसमें करी षट्स्थान पतित हुवे । जघन्यानुत्कृष्टाभिनिबोधिक ज्ञानी जेम उत्कृष्ट अभिनिबोधिक ज्ञानी तथा किन्तु स्थितिये करी चतुस्थान पतित हुवे । स्वस्थानेवि छट्ठाणवडिए । स्वस्थान मे पिण षट्स्थान पतित हुवे । एम श्रुतज्ञानी पण जाणवा । जघन्यावधिज्ञानीना भंते । मनुष्याणि । जघन्य अवधिज्ञानी न हे भगवन् मनुष्य ने केटला पर्याय कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह केवे अर्थे हे भगवन् इम कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम । जघन्यावधिज्ञानी मनुष्य जघन्यावधिज्ञानी मनुष्य ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पण तुल्य अवगाहनार्थे करी त्रिस्थान पतित हुवे । स्थितिये करी त्रण स्थान पतित हुवे । वर्ण गंध रस फरस पर्याय वी य ज्ञाने क

इतया त्रिस्थानपतितो वक्तव्यः ' अतः सर्वत्रपत्योवधि यथोक्तस्वरूपो मनुष्याणां पारजविको न नवति किंतु तद्भवतायी सोपिच पर्योप्तावस्थाया ऽ पर्योप्तावस्थाया तद्योग्यविशुध्यजावात् ' तत्कृतोप्यवधि नोयतवारित्रिय सतो अपन्यावपिवस्कृष्टार्यपयाऽवगाहनया त्रिस्थानपतित भवषम्यो

पज्जवेहि छठाणवडिए । तिहि दसणेहि छठाणवडिए । सठाणे छठाणवडिए । एव उक्कोसोहिनाणीवि । अजहन्नमणुक्कोसोहिनाणीवि एवचेव नवर ठगाहणठयाए चउठाणवडिए । सठाणे छठाणवडिए । जहा ठहिनाणी तहा मणपज्जवनाणीवि नाणियव्वो । नवर ठगाहणठयाए तिठाणवडिए जहा आनिणिवोहिय नाणीतहा सुयअन्नाणीय नाणियव्वो । जहा ठहिनाणी तहा विनगनाणीवि नाणियव्वो । चरकुदसणी अच रकुदसणी य जहा आनिणिवोहियनाणी ठहिदसणी जहा ठहिनाणी । जत्थ नाणा तत्थ अन्नाणा नत्थि,

निधाधिकधाम्यपि । यजघन्यामुरकर्षोतिनिवोधिकधाम्यप्येवमेव नवर् अयगाहनया चतुःस्थानपतितः । स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । यथाव धिज्ञानी तथा मनःपर्यवज्ञान्यपि नवितव्योनवरमयगाहनया त्रिस्थानपतित । यथाभिनिवोधिकज्ञानी तथा श्रुताज्ञान्यपि नावितव्य । यथावधि ज्ञानी तथा विनङ्गज्ञान्यपि नवितव्य । चक्षुर्दर्शन्यचक्षुर्दर्शनीच यथाभिनिवोधिकज्ञानी । अवधिदर्शनी यथाऽवधिज्ञानी । यत्र ज्ञानानि तत्रा

रो षटस्थान पतित हुवे । अवधिज्ञान पर्याय करी तथा मनपर्याय ज्ञान पर्याये करी षटस्थान पतित हुवे । त्रण दर्शने करी षटस्थान पतित हुवे । एव उत्कृष्टा अवधिज्ञानी पिण कहिवो । एम अजघन्य अनुत्कृष्ट अवधिज्ञानी पण जाणवा । ...अवगाहना चउठाणपतित हुवे । स्वस्थानि षटस्थान पतित । जेम अवधिज्ञानी तेम मनपर्यवज्ञानी पण कहवा, परंतु विशेष अवगाहनाये त्रिस्थान पतित हुवे । जेम अ भि निवोधिक ज्ञानी तेम श्रुत अज्ञानी पण कहवा । जेम अवधि ज्ञानी तेम विभंग ज्ञानी पण कहवा । चक्षु दर्शनी अने अचक्षुदर्शनी जेम आभिनिवो धिक ज्ञानी कह्या । अवधि दर्शनी जेम अवधि ज्ञानी । जिहां ज्ञान हुवे । तिहां अज्ञान न हुवे जिहां अज्ञा न हुवे

द्वयस्थानाऽपि पारत्रिकोपि सम्भवति ततोऽपयाप्तायत्यायामऽपि तस्य सम्भवात् पञ्चपर्योरकृष्टायविरयगाहमया चतुःस्थानपतित स्थित्या तु त्रस्थायविकरात्रावधिरजपन्यात्कृष्टायचिया त्रिस्थानपतित । मसस्यैवपर्यायुपामवपऽरसम्भवात् यस्यैवयपर्युपा च त्रिस्थानपतितत्वात् वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवज्ञानी मतज्ञानपर्यवज्ञानी सम्यक्त्वात्कृष्टमनःपर्यवज्ञानी स्थित्या त्रिस्थानपतित चारित्रिणामेव मनःपर्यवज्ञानसद्भावात् चारित्रि णश्चस्येपत्रवायुकत्वात् चतस्ताममूत्रतु-ओगाहणट्ठयाए चउठाणवडिएइति ॥ केवलिसमुद्घात प्रतीत्य तथापि-केवलिसमुद्घातगतः केवली सर्व व्यापित्वो ऽनहुँमनुवाऽवगाहमसदयतया ज्ञेयाः केवलिनो ऽसहुँयतवदीनावगाहनाः स्वस्थाने ज्ञेयाः कपलिनात्रिस्थापतिता इति स्थित्वा

जत्थ अन्नाणा तत्थ नाणा नत्थि । जत्थ दंसणा तत्थ नाणानि अन्नाणावि । केवलनाणीण भंते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ— केवलनाणीण मणुस्साण अणंता पज्जवा पण्णत्ता, गोयमा ! केवलनाणी मणुस्से केवलनाणिस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठिईए तिट्ठाणवडिए । वण्णगंधरसफा

ज्ञानानि न सन्ति यत्राज्ञानानि तत्र ज्ञानानि न सन्ति । यत्र दर्शनानि तत्रज्ञानान्यप्यज्ञानान्यपि । केवलज्ञानिनां भदन्त ! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-केवलज्ञानिमनुष्याणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! केवलज्ञानिमनुष्यो केवलज्ञानिमनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यः अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतित । स्थित्या त्रिस्था

जहाँ ज्ञान न हो । जहाँ दर्शन हो वहाँ ज्ञान भी अज्ञान भी हो । भगवन् मानते हैं । मनःपर्यवसे । केवलज्ञानी से हे भगवन् मनुष्य के कितने पर्याय कहे गए हैं ? गौतम अनन्त पर्याय कहे । तब कहे क्यों हे भगवन् ऐसा कहा—केवलज्ञानी मनुष्य के अनन्त पर्याय कहे ? गौतम केवल ज्ञानी मनुष्य केवल ज्ञानी मनुष्य से द्रव्यार्थ करके तुल्य प्रदेशार्थ करके तुल्य अवगाहनार्थ करके चार स्थान पतित होवे । स्थि

त्रिस्थानपतितस्य षट्स्थानपतितत्वात् व्यन्तरा यथा असुरकुमाराः ज्योतिष्का वैमानिका अपि तथैव नवरं ते स्थित्या त्रिस्थानपतिता वक्तव्याः एतच्च भाष्य गाथितं उपसंहारमाह-सेत्तं जीवपज्जवा ॥ ते जीवपर्यायाः [ग्रन्थाग्र ५०००] सम्प्रत्यजीवपर्यायान् पृच्छति-अजीवपज्जवाणं इत्यादि ॥ रूविअजीवपज्जवा य अरूविअजीवपज्जवा य इति ॥ रूपमिति उपलक्षणमेतत् वर्णगन्धरसस्पर्शा विद्यते येषां ते रूपिणस्ते च ते अजीवाश्च रू पिअजीवा तेषां पर्याया रूप्यजीवपर्याया एवमेव तद्विपरीता अरूप्यजीवपर्याया अमूर्त्यजीवपर्याया इति भाव ॥ धम्मत्थिकाए इत्यादि ॥ धर्मा

सपज्जवेहिं छठाणवडिए । केवलनाणपज्जवेहिं केवलदसणपज्जवेहिं तुल्ले । एवं केवलदंसणीवि मणुस्से भा णियव्वे । वाणमंतरा जहा असुरकुमारा एवं जोइसिया वेमाणिया नवरं सट्ठाणे ठिइए तिठाणवडिए भाणियव्वे । सेत्तं जीवपज्जवा । अजीवपज्जवाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा प०, तं० रूविअजीवपज्जवा य अरूविअजीवपज्जवा य । अरूविअजीवपज्जवाणं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गो यमा ! दसविहा पण्णत्ता, तंजहा—धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थिकायस्स पदेसा । अधम्मत्थि

गपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । केवलज्ञानपर्यवैः केवलदर्शनपर्यवैस्तुल्यः । एवं केवलदर्शन्यपि मनुष्यो भणितव्यः । वान व्यन्तरा यथाऽसुरकुमाराः । एवं ज्योतिष्का वैमानिका नवरं स्वस्थाने स्थित्या त्रिस्थानपतिता भणितव्याः ॥ समाप्ता जीवपर्यवाः ॥ अजीवपर्यवा भदन्त । कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-रूप्यजीवपर्यवाश्चारूप्यजीवपर्यवाश्च । अरूप्यजीवपर्यवा भदन्त ! कतिवि

तिथे करी त्रिस्थान पतित कहे । वर्ण गन्ध रस फरस पर्याये करी षट्स्थान पतित ज्ञान दर्शन पर्याये करी एने केवल ज्ञान पर्याय करी तुल्य कहे । एम केवलदर्शनी मनुष्य पण कहवा । वाणमन्तरनि । वाणव्यन्तर जेम असुरकुमारने कह्या । एम ज्योतिषी एने वैमानिक पण जाणवा एतला विशेष स्वस्थान स्थितिये करी त्रिस्थान प तित कहवा । सेत जीवपज्जवा । एतले जीव पर्याय कह्या । हिवे अजीव पर्याय कहे छे—अजीव पज्जवाण भंते । अजीव पर्या

स्तिकाय इति परिपूर्णमप्यवि द्रव्य धर्मास्तिकायस्य देश इत्यवं वाद्यादिरूपो विभागः धर्मास्तिकायस्य प्रदेशाः तस्यैव निर्विभागा भागा एव

काए अधम्मत्थिकायस्स देसे अधम्मत्थिकायस्स पदेसा । आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे आगासत्थिकायस्स पदेसा अद्धासमए । रूविअजीवपज्जवा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा प०, खंधा खंधदेसा खंधपदेसा परमाणुपोग्गला । ते णं भंते ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नोसंखेज्जा नोअसंखेज्जा अणंता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नोसंखेज्जा नोअसंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! अणंता परमाणुपोग्गला अणंता दुपएसिया खंधा जाव अणंता दसपदेसिया खंधा अणंता

पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! दशविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-धर्मास्तिकायो धर्मास्तिकायस्य देशो धर्मास्तिकायस्य प्रदेशा अधर्मास्तिकायोऽधर्मास्तिकायस्य देशोऽधर्मास्तिकायस्य प्रदेशा आकाशास्तिकाय आकाशास्तिकायस्य देश आकाशास्तिकायस्य प्रदेशा अद्धा समय १० । रूप्यजीवपर्यवा भदन्त ! कतिविधा प्रज्ञप्ताः ? गौ० ! चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः—स्कन्धाः स्कन्धदेशाः स्कन्धप्रदेशाः परमाणुपुद्गलाः । ते भदन्त ! किं संख्येयाः असंख्येयाः अनन्ताः ? गौतम ! नोसंख्येया नोऽसंख्येया अनन्ताः । तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-नोसंख्येया नोऽसंख्येया अनन्ताः ? गौतम ! अनन्ताः परमाणु

हे भगवन् कितने भेद कह्या प्रश्न छ हे गौ० बे प्रकार ना कह्या ते कहे छे—रूपी अजीव पर्याय अने अरूपी अजीव पर्याय । अरूपी अजीव पर्याय हे भगवन् कितने भेद कह्या प्रश्न छ हे गौ० दश भेद कह्या ते कहे छे धर्मास्तिकाय धर्मास्तिकाय देश धर्मास्तिकाय प्रदेश, अधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय देश अधर्मास्तिकायप्रदेश, आकाशास्तिकाय आकाशास्तिकायदेश आकाशास्तिकाय प्रदेश अद्धा समय १० । रूवि अजीवपज्जवाणं भंते कतिविहा प० । रूपी अजीव पर्याय हे भगवन् कितने भेद कह्या प्रश्न छ हे गौ० चार प्रकार कह्या ते कहे छे—खंध खंधदेश खंध प्रदेश अने परमाणु पुद्गल । ते भंते किं संखेज्जा । ते हे भगवन् सू संख्याता असंख्याता अनन्ता प्रश्न छ हे गौ० ! नथी संख्याता नथी असंख्याता अनन्ता छे । ते कयें न्यायें

घिद्रमयमासिकाये धाकाशादिकाये च भावनीयं, एतावता धर्मास्तिकायमाख्यायपर्यायस्वरूपं धर्मास्तिकायादिकं वस्तिवि प्रतिपादितं दर्शितं च। नन्वत्र पर्यायाः वस्तुभूपत्राः सत्वप द्रव्यमात्रोपन्यासः कृत, उच्यते-पर्यायपर्यायिणो कथञ्चिद्भेदस्याभावार्थं, एवमुत्तरोपि ग्रन्थ भाव च सूत्रदीकाकार यत्र यत्र पर्यायपर्यायिणो कथञ्चिद्भेदस्याभावाभिमत्य तुल्योपन्याय इति परमार्थतस्त्वेवंद्रष्टव्य धर्मास्तिकायस्य धर्मास्तिकायप्रदेशत्वं धर्मास्तिकायप्रदेशत्वमित्यादि ॥ तथ मत। किं धसंख्या इत्यादि ० स्कन्धाश्च प्रत्यक्ष किं चक्षुषा अचक्षुषा अनन्ता ० अनन्ताः ष-अनन्ता एतदेव भावयति-से केणट्ठेणं भंत। इत्यादि पाठसिद्धं सम्प्रति दशकक्रमेण परमाणुपुद्गलादीनां पर्यायाभिधानीयाय एकप्रदेशावगाढा प्रथ मतः सामान्येन परमाणुवादयादननीया तदनन्तरं एव एकप्रदेशावगाढा तत एकसमयादिस्थितिका तदनन्तरमेकगुणकालत्वादय ततो घच व्याख्यानाप्रकारेण तदनन्तरं अपन्नस्थित्यादिजेदन ततो अपन्यगन्धासादिग्रमेण तदनन्तरं अपन्यप्रदेशादिना जदमति उत्कृष्ट-अनुमार्गे दिया एतादिपदर्शनार्थं च। तद्व्याख्यानार्थं च चेयज्ञात्वादिदेशाय ०१५ यस्यां यथारममनिका प्रथमतोऽस्यादीनाञ्चितार्त्थां तदनन्तरं

सखिज्जपदेसिया खधा अनंता असंखिज्जपदेसिया खधा अणंता अणंतपदेसिया खधा से तेणट्ठेण ? गो यमा ! एवं वुच्चइ-तेण नो संखेज्जा नो असंखिज्जा अणंता । परमाणुपोग्गलाणं भंते ! केवइया पज्जवा

पुद्गला अनन्ता द्विप्रदेशिकाः स्कन्धा यावदनन्ता दशप्रदेशिकाः स्कन्धा अनन्ता संख्येयप्रदेशिका स्कन्धा अनन्ता असंख्येयप्रदेशिका स्कन्धा अनन्ता अनन्तप्रदेशिकाः स्कन्धास्तेनार्थेन ? गौतम ! एवमुच्यते ते नो संख्येया नो असंख्येया अनन्ताः । परमाणुपुद्गलानां भदन्त ! कियन्तः

... स च नवा नवो संख्याता नवो असंख्याता अनन्ता केम च ... अनन्ता परमाणु पुद्गल अनन्त द्विप्रदेशिक एवं यावत् अनन्ता दशप्रदेशिक ... अनन्ता संख्यातप्रदेशिक एवं अनन्ता असंख्यातप्रदेशिक एवं अनन्ता अनन्तप्रदेशिक एवं तेष तेवे सर्वेह गो ... एस नवा नवो संख्याता नवो प ... संख्याता अनन्ता च। परमाणु पुद्गलमें हे भगवन् केतला पर्याय कह्या छे ... हे गो० परमाणुपुद्गलने अनन्ता पर्याय कह्या। तेह कवे एवं ... एस च

एकादिप्रदेशप्रभूतानां यथादिप्रदेशावगाहनायपरिग्रहः ततोऽयमर्थः प्रथमतः एकप्रदेशे द्रव्यादिभिः चिन्तामाश्रित्य कर्तव्या तदनन्तरं कालप्र
देशैरपादिगुणैः ततो भावप्रदेशैरेकगुणकालकादिभिरिति तदनन्तरं जघन्यावगाहनादीनामिति अत्रापि शब्देन मध्यमोत्कृष्टावगाहना जघन्यमध्य
मोत्कृष्टस्थिति जघन्यमध्यमोत्कृष्टगुणकालकादीनां परिग्रहः ततो जघन्यादिप्रदेशानां जघन्यप्रदेशानां मध्यमप्रदेशानाम् जघन्योत्कृष्टप्रदेशानामि
ति अत्र प्रथमतः क्रमेण परमाणूनां चिन्ता पुच्छाइ—परमाणुपोग्गलाणं भंते । इत्यादि । स्थित्या तु स्थानपतितत्वं । परमाणोः समयादार
भ्यासंख्येयकालमवस्थानभावात् कालादिवर्णपर्याये षट्स्थानपतितत्वता एकस्यापि परमाणोः पर्यायानन्त्याविरोधात् ननु परमाणुत्वम्

पण्णत्ता ? गोयमा ! परमाणुपोग्गलाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—परमाणुपोग्गलाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठिइए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए । जइ हीणे संखेज्जइभागहीणे

प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! परमाणुपुद्गलानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-परमाणुपुद्गलानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! परमाणुपुद्गलः परमाणुपुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः । स्थित्या स्याद्धीनः स्यात्तु
ल्यः स्यादभ्यधिकः । यदि हीनः संख्येयभागहीनो वाऽसंख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वाऽसंख्येयगुणहीनो वा । यद्यभ्यधिकोऽसंख्येयभागाधि

ना—परमाणु पुद्गल के अनन्त पर्याय कहा गया है ? गौतम ! परमाणुपुद्गल परमाणुपुद्गल से द्रव्यार्थ से तुल्य है प्रदेशार्थ से तुल्य है तथा अवगाहनार्थ से
तुल्य स्थिति से कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक होवे, जो हीन हुवे तो संख्यात भाग हीन हुवे अथवा असंख्यात भाग हीन हुवे अथवा
संख्यात गुणहीन हुवे अथवा असंख्यातगुणहीन हुवे । अब जो अधिक हुवे असंख्यात भाग अधिक हुवे अथवा संख्यात भाग अधिक हुवे अथवा संख्यात
गुण अधिक हुवे अथवा असंख्यातगुण अधिक हुवे । कालावर्ण पर्यवे करी कदाचित् हीन हुवे कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे । जे हीन हुवे अनन्त

देशो गीयते ततः कथं पर्यायानन्त्याविरोध पर्यायानन्त्ये नियमना सर्वदेशत्वमद्यात्वे सर्वपुर्द्ध वस्तुनस्त्यपरिज्ञानात् । परमाणुरपि अपदेशी गीयते

णेवा असंखेज्जभाग० संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा । अह अब्भहिए असंखेज्जइभागमब्भहिए वा संखेज्जइभागमब्भहिए वा संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखेज्जगुणमब्भहिए वा । कालवन्नपज्जवेहिं सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए जइ हीणे अणंतभागहीणे वा असंखेज्जभागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणेवा असंखेज्जगुणहीणे वा अणंतगुणहीणे वा । अह अब्भहिए असंखेज्जइभागमब्भहिए वा संखेज्जइभागमब्भहिए वा संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखेज्जगुणमब्भहिए वा अणंतगुणमब्भहिए वा एवं अवसेसवन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । फासाणं सीयउसिणनिद्धलुक्खेहिं छट्ठाणवडिए से तेण

को वा संख्येयभागाधिको वा संख्येयगुणाधिको वा ऽसंख्येयगुणाधिको वा । कालवर्णपर्यवैः स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः यदि हीनोऽनन्तभागहीनो वा ऽसंख्येयभागहीनो वा संख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा ऽसंख्येयगुणहीनो वा ऽनन्तगुणहीनो वा । अथाभ्यधिकोऽसंख्येयभागाधिको वा संख्येयभागाधिको वा संख्येयगुणाधिको वा ऽसंख्येयगुणाधिको वा ऽनन्तगुणाधिको वा एवमवशेषवर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः स्पर्शानां शीतोष्णस्निग्धरूक्षैः षट्स्थानपतितस्तत्तेनार्थेन ? गौतम ! एवमुच्यते परमाणुपुद्गलानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । द्वि

ाग हीन हुवे अथवा असंख्यात भागे हीन हुवे अथवा संख्यात भाग हीन हुवे अथवा असंख्यात गुणे हीन हुवे अथवा अनन्तगुण हीन हुवे । जो अधिक हुवे असंख्यात भाग अधिक हुवे संख्यात भाग अधिक हुवे अथवा संख्यात गुण अधिक हुवे अथवा असंख्यात गुण अधिक हुवे अथवा अनन्तगुण अधिक हुवे । एवं अवशेष वर्णगन्ध । रस स्पर्श पर्यवे करी षट्स्थान पतित हुवे । स्पर्श । शीत उष्ण स्निग्ध रूक्ष पर्यवे षट्स्थानपतित तेह तणे अर्थे गौतम इम कह्यो परमाणु पुद्गल अनन्ता पर्याय कह्या । द्वि प्रदेशिकानां पृच्छा । द्विप्रदेशिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम अन

षेशादिप्रदेशमङ्गानां यथादिशाब्दारकासनामपरिग्रहः ततोऽपमर्थः प्रथमतः षेत्रप्रदेशो देशादिनि सङ्गतामान्यामसा कर्तव्या तदनन्तर कालप्र
ग्रौरआग्निमर्षकातोमावप्रदेशैरगुणकालकादिमिरिति, तदनन्तर जघन्यावगाहनादीनामिति अत्राविशदेन मध्यमोत्कृष्टावगाहना जघन्यमध्य
मात्कर्षमिति जघन्यमध्यमात्कृष्टगुणकालिकादियवाः परिग्रह तता जघन्यादिप्रदेशामा जघन्यप्रदेशामा मध्यमप्रदेशामाम जघन्योत्कृष्टप्रदेशानामि
ति वा प्रथमतः प्रमच परमाणुशादीनां चिन्ता क्रियते-परमाणपाग्गलाण भंते । इत्यादि ॥ स्थित्या चतु स्थामपतितस्य । परिमाणो समयादार
भ्यारभ्यतो ऽनुष्टुपकासमवत्यामनाद्यात् कालादिषपर्याये षट्स्थानपतितत्वता एकस्यापि परमाणो पर्यायानन्त्याविरोधात् ननु परिमाणुरम

पण्णत्ता ? गोयमा ! परमाणुपोग्गलाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—परमाणु
पोग्गलाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेस
ट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठिईए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए । जइ हीणे असंखेज्जइभागहीणे

पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! परमाणुपुद्गलानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-परमाणुपुद्गलानामनन्ताः पर्यवाः
प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! परमाणुपुद्गलः परमाणुपुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः । स्थित्या स्याद्धीनः स्यात्तु
ल्यः स्यादभ्यधिकः । यदि हीनः असंख्येयभागहीनो वाऽसंख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा ऽसंख्येयगुणहीनो वा । अथाभ्यधिकोऽसंख्येयभागाधि

अ—परमाणु पुद्गलने अनन्ता पर्याय कह्या प्रभु ! हे गौ परमाणुपुद्गल परमाणुपुद्गलने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पण तुल्य अवगाहनार्थे करी
तुल्य स्थितिये करी कदाचित् [illegible] कदाचित् अधिक हुवे जे हीन हुवे ते असंख्यात भागे हीन हुवे अथवा असंख्यात भागे हीन हुवे अथवा
असंख्यात भागहीन [illegible] अथ जे अधिक हुवे असंख्यात भागे अधिक हुवे अथवा असंख्यात भागे अधिक हुवे अथवा असंख्यात
भाग अधिक [illegible] पर्याये करी कदाचित् हीन हुवे कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे । जे हीन हुवे अनन्त

एगहीणे वा। अह अब्भहिए पदेसमब्भहिए वा एवं जाव दसपदेसिए नवरं ओगाहणाए पदेसपरिवुड्ढी काय व्वा जाव दसपदेसिए नवरं पदेसहीणेत्ति। संखेज्जपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता पज्जवा प०। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—गोयमा! संखिज्जपदेसिए संखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए एवं चेव ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए, ठितीए चउट्ठाणवडिए, वण्णादिउवरिल्ल चउफासपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए। असंखेज्जपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता पज्जवा प०। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—गोयमा!

एवं यावद्दशप्रदेशिका नवरं प्रदेशहीन इति। संख्येयप्रदेशिकानां पृच्छा गौतम! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते—? गौतम! संख्येयप्रदेशिकः संख्येयप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः यदि हीनः संख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा, यथाभ्यधिक एवं चेवावगाहनार्थतयापि द्विस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः। वर्णादिभिरुपरितनैश्चतुर्भिः स्पर्शैश्च षट्स्थानपतितः। असंख्येयप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थेन भदन्त! ए

हवे। वा अधिक हवे ना प्रदेश अधिक हवे एम यावत् दश प्रदेशिक सम कहवा एतला विशेष अवगाहनाने विषे प्रदेश परिवृद्धि करवी यावत् दशप्रदेशिक लगे एतला विशेष प्रदेशहीन कहवा। संख्यात प्रदेशियानी पृच्छा। संख्यात प्रदेशिक ना प्रश्न उत्तर हे गौतम अनंता पर्याय कह्या। ते केणे अर्थे हे भगवन् एम कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम संख्यात प्रदेशी संख्यातप्रदेशी ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हवे। जे हीन हवे संख्यात भाग हीन हवे अथवा संख्यात गुण हीन हवे। अधिक पिण एमज अवगाहनाये करी पिण द्विस्थान पतित हवे। स्थितिये करी चतुः स्थान पतित हुवे। वर्णादिक करी उपरिला चार स्पर्शे करी षट्स्थान पतित हुवे। असंख्यातप्रदेशियानी पृच्छा। असंख्यात

द्व्यणुकतया योगो न भवतीति मतं शासनाशान्यामिति "परमाणुपुद्गलानां इतिप्रवमात्," ततः कालाणुभ्यां सप्रदेशत्वेऽपि न कश्चिद्दोषः तथा परमाणु दीनामसङ्ख्यातप्रदेशकस्कन्धपर्यन्तानां कथञ्चिदनन्तप्रदेशकानामपि स्कन्धानां तथा एकप्रदेशावगाढानां यावत्सङ्ख्यातप्रदेशावगाढानां स्तोक

ठेणं ? गोयमा ! एवं वुच्चइ–परमाणुपोग्गलाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता। दुपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–गोयमा ! दुपदेसिये दुपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, उग्गाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे पदेसहीणे। अह अब्भहिए पदेसमब्भहिए। ठितीए चउट्ठाणवडिए। वन्नादीहिं उवरिल्लेहिं चउफासेहिं य छट्ठाणवडिए। तिपएसिएवि नवरं उग्गाहणट्ठाए सिय हीण सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीण पदेसहीणे वा दुप

प्रदेशिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यायाः प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! द्विप्रदेशिको द्विप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः। यदि हीनः प्रदेशहीनः। अथाभ्यधिकः प्रदेशाभ्यधिकः। स्थित्या चतुःस्थानपतितः। वर्णादिभिरुपरितनैः चतुःस्पर्शैः षट्स्थानपतितः। त्रिप्रदेशिकोऽप्येवं नवरमवगाहनया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः। यदि हीनः प्रदेशहीनो वा द्विप्रदेशहीनो वा। अथाभ्यधिको वा प्रदेशाभ्यधिको वा एवं यावद्दशप्रदेशिको नवरमवगाहनार्थतया प्रदेशपरि

का पर्याय कहा। तब फिर यहि हे भगवन् इस कथा म उत्तर हे गौतम म प्रदेशी अन्य म प्रदेशी अपेक्षा द्रव्यार्थ करी तथा प्रदेशार्थ करी पण तुल्य अवगाहना हे करी कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे। जो हीन हुवे प्रदेशे करी हीन हुवे। जो अधिक हुवे तो प्रदेशे अधिक हुवे। स्थितिये करी चार स्थान पतित छे। वर्णादिक ते। वर्णादिके करी पण उपरिला चार स्पर्शे करी षट्स्थान पतित हुवे। त्रण प्रदेशिक अपि पण ए मत एतला विशेष अवगाहनाये करी कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे। जो हीन हुवे तो प्रदेश हीन हुवे अथवा द्विप्रदेश हीन

एगहीणे वा। अह अब्भहिए पदेसमब्भहिए वा एवं जाव दसपदेसिए नवरं ओगाहणाए पदेसपरिवुड्ढी कायव्वा जाव दसपदेसिए नवरं पदेसहीणेत्ति। संखेज्जपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा प०। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—गोयमा ! संखिज्जपदेसिए संखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए एवं चेव ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए, ठितीए चउट्ठाणवडिए, वन्नादिउवरिल्ल चउफासपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए। असंखेज्जपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा प०। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—गोयमा !

वृद्धिः कर्तव्या यावद्दशप्रदेशिको नवरं प्रदेशहीन इति। संख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-? गौतम ! संख्यातप्रदेशिकः संख्यातप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः यदि हीनः संख्यातभागहीनो वा संख्यातगुणहीनो वा यद्यभ्यधिक एवं चैवावगाहनार्थतयापि द्विस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः। वर्णादिभिरुपरितनैश्चतुर्भिः स्पर्शैश्च षट्स्थानपतितः। असंख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थेन भदन्त ! ए

हुवे। जो अधिक हुवे तो प्रदेश अधिक हुवे एम यावत् दश प्रदेशिया लग कहवा एतला विशेष अवगाहनाने विषे प्रदेश परिवृद्धि करवी यावत् दशप्रदेशिक लगे एतला विशेष प्रदेशहीन कहवा। संख्यात प्रदेशियानी पृच्छा। संख्यात प्रदेशिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या। ते केणे अर्थे भगवन् इम कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम संख्यात प्रदेशी संख्यातप्रदेशी ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे। जो हीन हुवे संख्यात भाग हीन हुवे अथवा संख्यात गुण हीन हुवे। अधिक पिण एमज अवगाहनाए करी पिण द्विस्थान पतित हुवे। स्थितिये करी चतुःस्थान पतित हुवे। वर्णादिक करी उपरला चार स्पर्शे करी छस्थान पतित हुवे। असंख्यप्रदेशियानी पृच्छा। असंख्यात

स्पर्शैश्चतुःस्थानपतिता स्पर्शा इति तैरेव परमाण्वादीनां षट्स्थानपतितता वक्तव्या न शेषैः द्विप्रदेशकस्कन्धसूत्रे-'ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए' इत्यादि । यदा द्वावपि द्विप्रदेशकौ स्कन्धौ द्विप्रदेशावगाढावेकप्रदेशावगाढौ वा भवतस्तदा तुल्यावगाहनौ यदा त्वेको द्विप्रदेशावगाढस्तदा एकप्रदेशावगाढो द्विप्रदेशावगाढापेक्षया प्रदेशहीनो द्विप्रदेशावगाढस्तु तदपेक्षया प्रदेशाभ्यधिकः शेषं प्राग्वत् । त्रिप्रदेशस्कन्धसूत्रे 'ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे' इत्यादि । यदा द्वावपि त्रिप्रदेशकौ स्कन्धौ त्रिप्रदेशावगाढौ द्विप्रदेशावगाढावेकप्रदेशावगाढौ वा तदा तुल्यौ यदा त्वेकस्त्रिप्रदेशावगाढो द्विप्रदेशावगाढो वा अपरस्तु द्विप्रदेशावगाढ एकप्रदेशावगाढो वा तदा द्विप्रदेशावगाढैकप्रदेशावगाढौ यथाक्रमं त्रिप्रदेशावगाढद्विप्रदेशावगाढापेक्षया एकप्रदेशहीनौ त्रिप्रदेशावगाढद्विप्रदेशावगाढौ तु तदपेक्षया एकप्रदेशाभ्यधिकौ यदा त्वेकस्त्रिप्रदेशावगा

असंखेज्जपदेसिए खंधे असंखेज्जपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । वन्नादिउवरिल्ले चउफासेहि य छट्ठाणवडिए । अणंतपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जया पं० । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—गोयमा ! अणंतपदेसिए खंधे अणंतपदेसि

वमुच्यते ? गौतम ! असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धः असंख्येयप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया चतुःस्थानपतितः । अवगाहनतया चतुःस्थानपतितः । वर्णादिभिरुपरितनैश्चतुर्भिः स्पर्शैश्च षट्स्थानपतितः । अनन्तप्रदेशिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धोऽनन्तप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानप

पर्शिक मा प्रश्न उत्तर हे गौतम असंख्याता पर्याय कह्या। ते केने अर्थे हे भगवन् इम कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम असंख्यात प्रदेशी खंध असंख्यात प्रदेशी खंध ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी चउ स्थान पतित । अवगाहनार्थे करी चउस्थान पतित । वर्णादिक करी ऊपरले चार स्पर्शे करी षट स्थान पतित छै । अनंतप्रदेशीयानी पृ० । अनंतप्रदेशीया प्रश्न उत्तर हे गौतम अनंता पर्याय कह्या । ते केने अर्थे हे भगवन् इम कह्या प्रश्न उत्तर

यस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठितीए चउट्ठा
णवडिए वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। एगपदेसोगाढाणं पोग्गलाणं पुच्छा, गोयमा ! अण
ता पज्जवा प०। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—गोयमा ! एगपदेसोगाढे पोग्गले एगपदेसोगाढस्स पो
ग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठितीए चउट्ठाणवडिए वन्नादिउव
रिल्लचउफासेहिय छट्ठाणवडिए एवं दुपएसोगाढेवि जाव दसपदेसोगाढे। संखेज्जपदेसोगाढाणं पुच्छा, गो

तितः। अवगाहनायतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यायैः षट्स्थानपतितः। एकप्रदेशावगाढानां पुद्ग
लानां पृच्छा गौतम! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते? गौतम! एकप्रदेशावगाढः पुद्गलः एकप्रदेशावगाढस्य
पुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितः। अवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या चतुःस्थानपतितः। वर्णादिभिरुपरितनैश्चतुःस्प
र्शैः षट्स्थानपतितः। एवं द्विप्रदेशावगाढा अपि यावद्दशप्रदेशावगाढाः। संख्येयप्रदेशिकानां पृच्छा गौतम! अनन्ताः प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थे

हे गौतम एकप्रदेशी एक एकप्रदेशी पुद्गलने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी षट्स्थानपतित छे। अवगाहनार्थे करी चतुःस्थानपतित छे स्थि
तिये करी चतुःस्थानपतित छे। वर्णगंधरसस्पर्श पर्यायैकरी षट्स्थानपतित छे। एकप्रदेशावगाढाना पुद्गलनी पृच्छा। एक प्रदेशावगाढ पुद्गलनी प
ृच्छा हे गौतम एकप्रदेशावगाढ पुद्गलना अनन्ता पर्याय कह्या तेह किणे अर्थे हे भगवन् इम कह्या प ... उत्तर हे गौतम एकप्रदेशावगाढ पुद्गल एकप्रदेशा
वगाढ पुद्गलने द्रव्यार्थेकरी तुल्य प्रदेशार्थेकरी षट्स्थानपतित छे। अवगाहनार्थेकरी तुल्य छे स्थितियेकरी चतुःस्थानपतित छे वर्णादिकेकरी पछे चउ
स्पर्शेकरी षट्स्थानपतित छे। इम यावत् द्विप्रदेशावगाढथी दसप्रदेश अवगाढपणे कहवा। संख्यातप्रदेशावगाढ पृच्छा। संख्यात प्रदेशावगाढ
ना प्रश्न कीधा उत्तर हे गौतम संख्यात प्रदेशावगाढना अनन्ता पर्याय कह्या तेह किणे अर्थे भगवन् इम कह्या प्र उत्तर हे गौतम संख्यातप्रदेशावगाढ

त्रिप्रदेशत्वस्या चत्वारश्च स्पर्शा इति तैरेव परस्परवादीनां षट्स्थानपतितता वक्तव्या न शेषैः द्विप्रदेशस्कन्धसूत्रे-द्वयोर्घचतुपाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए इत्यादि ॥ यदा द्वावपि द्विप्रदेशौ स्कन्धौ द्विप्रदेशावगाढावेकप्रदेशावगाढौ वा भवतस्तदा तुल्यावगाहनौ यदास्त्वेको द्विप्रदेशावगाढस्तदा एकप्रदेशावगाढो द्विप्रदेशावगाढापेक्षया प्रदेशहीनो द्विप्रदेशावगाढस्तु तदपेक्षया प्रदेशाभ्यधिकः शेष प्राग्वत् त्रिप्रदेश स्कन्धसूत्रे द्वयोर्घचतुपाए सिय हीणे इत्यादि ॥ यदा द्वावपि त्रिप्रदेशकौ स्कन्धौ त्रिप्रदेशावगाढौ द्विप्रदेशावगाढावेकप्रदेशावगाढौ वा तदा तु ल्यौ यदात्वेकस्त्रिप्रदेशावगाढो वा द्विप्रदेशावगाढोवा ऽपरस्तु द्विप्रदेशावगाढ एकप्रदेशावगाढो वा तदा द्विप्रदेशावगाढैकप्रदेशावगाढौ यथाक्र म त्रिप्रदेशावगाढद्विप्रदेशावगाढापेक्षया एकप्रदेशहीनौ त्रिप्रदेशावगाढद्विप्रदेशावगाढौ तु तदपेक्षया एकप्रदेशाभ्यधिकौ यदात्वेकस्त्रिप्रदेशावगा

असंखेज्जपदेसिए खंधे असंखेज्जपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ओगा हणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । वन्नादिउवरिल्ले चउफासेहिय छट्ठाणवडिए । अणंतपदेसियाणं पुच्छा, गो यमा ! अणंता पज्जया प० । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—गोयमा ! अणंतपदेसिए खंधे अणंतपदेसि

वमुच्यते ? गौतम ! असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धः असंख्येयप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया चतुःस्थानपतितः । अवगाहनत या चतुःस्थानपतितः । वर्णादिभिरुपरितनैश्चतुर्भिः स्पर्शैश्च षट्स्थानपतितः । अनन्तप्रदेशिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ता । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-? गौतम ! अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो ऽनन्तप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानप

तित है या नहीं? उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या तब कोई पूछे है भगवन् इम कह्या प्रश्न उत्तर है गौतम असंख्यात प्रदेशी खंध असंख्यात प्रदे शी सामने द्रव्याथ करी तुल्य प्रदेशार्थ करी चतु स्थान पतित । अवगाहनाये करी चतुस्थान पतित । वर्णादिक करी पाछे पंडिता चार स्पर्शे करी षट स्थान पतित हवे । अनन्तप्रदेशियाव ति । अनन्तप्रदेशाना प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह केणे अर्थ हे भगवन् इम कह्या प्रश्न उत्तर

यस्स रसधस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए ठठाणवडिए ठगाहणठयाए चउठाणवडिए ठितीए चउठाणवडिए वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छठाणवडिए । एगपदेसोगाढाण पोग्गलाण पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा प० । स केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—गोयमा ! एगपदेसोगाढे पोग्गले एगपदेसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए छठाणवडिए ठगाहणठयाए तुल्ले ठितीए चउठाणवडिए वन्नादिउवरिल्लचउफासेहिय छठाणवडिए एवं दुपएसोगाढेवि जाव दसपदेसोगाढे । संखेज्जपदेसोगाढाण पुच्छा, गो

तितः । अवगाहनायतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यायैः षट्स्थानपतितः । एकप्रदेशावगाढाना पुद्गलानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! एकप्रदेशावगाढः पुद्गलः एकप्रदेशावगाढस्य पुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितः । अवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या चतुःस्थानपतितः । वर्णादिभिरुपरितनैश्चतुःस्पर्शैः षट्स्थानपतितः । एवं द्विप्रदेशावगाढादपि यावद्दशप्रदेशावगाढाः । संख्येयप्रदेशिकाना पृच्छा गौतम ! अनन्ताः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थे

हे गौतम अनन्तपर्यायो कह्या अनन्तपर्यायो कहने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी षटस्थानपतित हुवे । अवगाहनार्थे करी चतु स्थानपतित हुवे स्थितिये करी चतु स्थानपतित हुवे । वर्णगंधरसस्पर्श पर्यायेकरी षटस्थानपतित हुवे । एकप्रदेशावगाढा पुद्गलनो प्रश्न । एक प्रदेशावगाढपुद्गलना प्रश्न उत्तर हे गौतम एकप्रदेशावगाढपुद्गलना अनन्ता पर्याय कह्या तेह कवे पर्याय हे भगवन् इम कह्या प्र उत्तर हे गौतम एकप्रदेशावगाढपुद्गल एकप्रदेशावगाढ पुद्गलने द्रव्यार्थेकरी तुल्य प्रदेशार्थेकरी षटस्थानपतित हुवे । अवगाहनार्थेकरी तुल्य हुवे स्थितियेकरी चतु स्थानपतित हुवे वर्णादिकवडी पर्ने चतु स्पर्शेकरी षटस्थानपतित हवे । इम यावत् द्विप्रदेशावगाढथी दशप्रदेश अवगाहनो कहवो । संख्यातप्रदेशावगाढनी पृच्छा । संख्यात प्रदेशावगाढना प्रश्न चौथा उत्तर हे गौतम संख्यात प्रदेशावगाढना अनन्ता पर्याय कह्या तेह कवे पर्याय भगवन् इम कह्या प्र उत्तर हे गौतम संख्यातप्रदेशावगाढ

यमा ! अणंता प०। से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ गोयमा ! संखेज्जपदेसोगाढे पोग्गले संखिज्जपदेसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए । उगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए । ठिईए चउट्ठाणवडिए । वण्णादिउवरिल्लचउफासेहिय छट्ठाणवडिए । असंखेज्जपदेसोगाढाण पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा प० । सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ गोयमा ! असंखेज्जपदेसोगाढे पोग्गले असंखेज्जपदेसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए उगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठा

न प्रदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! संख्येयप्रदेशावगाढः पुद्गलः संख्येयप्रदेशावगाढपुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितः । अवगाहनार्थतया द्विस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः । वर्णादिभिरुपरितनैश्चतुःस्पर्शैः षट्स्थानपतितः । असंख्येयप्रदेशावगाढानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! असंख्येयप्रदेशावगाढः पुद्गलोऽसंख्येयप्रदेशावगाढस्य पुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितः । अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या चतुःस्थानपतितः । वर्णाद्यष्टस्पर्शैः षट्स्थानपतितः । एकसमयस्थितिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! एकसमयस्थिति

पदेश संख्यातप्रदेशावगाढपुद्गलने द्रव्यार्थें करी तुल्य प्रदेशार्थें करी षट्स्थानपतित हवे अवगाहनार्थें करी द्विस्थानें पतित हुवे स्थितियें करी चतुःस्थानपतित हवे वर्णादिकें करी पछिला चार स्पर्शें करी षट्स्थान पतितहवे। असंख्येयप्रदेशावगाढाण पृच्छा । असंख्यात प्रदेशावगाढना प्र० उत्तर हे गोतम अनन्ता पर्याय कह्या । तद केणे अर्थ हे भगवन् इम कह्यो प्र० उत्तर हे गौतम असंख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गल असंख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गलने द्रव्यार्थेंकरी तुल्य प्रदेशार्थें करी षट्स्थान पतित हवे। अवगाहनार्थेंकरी चतुःस्थान पतित हवे, स्थितियेंकरी चतुःस्थान पतित हवे वर्णादिकेंकरी पर्ने आठ स्पर्शेंकरी षट्स्थान पतित हुवे। एकसमयठिइयाणवि । एकसमयस्थितिक ना प्र० उत्तर हे गौतम अनन्त कह्या तेह कवे अर्थे हे गौतम इम कह्या प्र०

—। उपर यत्प्रदेशावगाहनापेक्षया द्विप्रदेशावगाढे द्विप्रदेशावगाढं तु तदपेक्षया द्विप्रदेशाद्यवधिक यावदसंख्येयप्रदेशपरिग्रहः ततःप्रद
शादिष्वेकन्यूनत्वादसंख्येयत्वात् एतावदेव वा यावद्दशप्रदेशकस्कन्धः तास्य च दशप्रदेशकस्कन्ध एव वक्तव्य—

णवडिए, वण्णादिअट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिए। एगसमयठिइयाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केण
ट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! एगसमयठिइए पोग्गले एगसमयठिइयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले
पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिइए तुल्ले, वण्णादिअट्ठफासेहिं छट्ठाणवडि
ए। एवं जाव दससमयठिइए। संखेज्जसमयठिइयाणं एवं चेव नवरं ठिइए दुट्ठाणवडिए। असंखेज्जसम
यठिइयाणं एवं चेव ठिइए चउट्ठाणवडिए। एगगुणकालगाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणट्ठेणं भंते!

क) पुद्गल एकसमयस्थितिकस्य पुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितः। अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः। स्थित्या तु
ल्य। वर्णाद्यष्टस्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवं यावद्दशसमयस्थितिकः। संख्येयसमयस्थितिकानामेवं चैव नवरं स्थित्या द्विस्थानपतितः। असं
ख्येयसमयस्थितिकानामप्येवं चैव नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतिताः। एकगुणकालकानां पृच्छा गौतम! अनन्ताः। अथ केनार्थेन भ

न्ते! हे गौतम एकसमयस्थितिक पुद्गल एकसमयस्थितिक पुद्गल से द्रव्यार्थता से तुल्य प्रदेशार्थता से षट्स्थान पतित अवगाहनार्थता से चतुःस्थान पतित
है। स्थिति से तुल्य है। वर्णादि से एवं आठ स्पर्शों से षट्स्थान पतित है एवं यावत् दस समय स्थितिक तक कहना। संख्यात समय स्थि
तिक पुद्गल भी इसी प्रकार किन्तु स्थिति से द्विस्थान पतित हैं। असंख्यात समय स्थितिक पुद्गल भी इसी प्रकार किन्तु स्थिति से चतु
स्थान पतित हैं। एकगुणकालकपुद्गल। एकगुण कालक पुद्गल कितने हैं? हे गौतम एकगुण काला पुद्गल अनन्त प्रकार के हैं। तब
... भगवन् ऐसा क्यों कहा? हे गौतम एकगुण काला पुद्गल एकगुण काला पुद्गल से द्रव्य से तुल्य प्रदेशार्थता से षट्स्थान पतित, अवगाह

यमा ! अणंता प० । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ गोयमा ! संखेज्जपदेसोगाढे पोग्गले संखिज्जपदेसोगा
ढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए । उगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए । ठिईए चउट्ठा
णवडिए । वण्णादिउवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिए । असंखेज्जपदेसोगाढाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता
पज्जवा प० । सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ गोयमा ! असंखेज्जपदेसोगाढे पोग्गले असंखेज्जपदेसोगाढ
स्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए उगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठा

न भदन्त । एवमुच्यते ? गौतम ! संख्येयप्रदेशावगाढः पुद्गलः संख्येयप्रदेशावगाढपुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितः । अवगाहनार्थतया द्विस्थानपतितः, स्थित्या चतुःस्थानपतितः । वर्णादिभिरुपरितनैश्चतुर्भिः स्पर्शैः षट्स्थानपतितः । असंख्येयप्रदेशावगाढानां प्रश्ना गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! असंख्येयप्रदेशावगाढः पुद्गलोऽसंख्येयप्रदेशावगाढस्य पुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितः । अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या चतुःस्थानपतितः । वर्णादिस्पर्शैः षट्स्थानपतितः । एकसमयस्थितिकानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः प्रज्ञप्ताः । तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! एकसमयस्थिति

पदेश संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी षट्स्थानपतित हवे अवगाहनार्थेकरी दोय स्थाने पतित हुवे स्थितीयेकरी चउःस्था
नपतित हवे वर्णादिके करी पछिला च्यार स्पर्शे करी षट्स्थान पतित हवे । असंखेज्जपदेसोगाढाणं पुच्छा । असंख्यात प्रदेशावगाढना प्र० उत्तर हे गौ
तम अनन्ता पर्याय कह्या । ते केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो प्र० उत्तर हे गौतम असंख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गल असंख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गलने द्रव्या
र्थेकरी तुल्य प्रदेशार्थे करी षट्स्थान पतित हवे । अवगाहनार्थेकरी चउःस्थान पतित हवे, स्थितिकेकरी चउःस्थान पतित हवे वर्णादिकेकरी पांचे आठ
स्पर्शेकरी षट्स्थान पतित हुवे । एकसमयठिइयाणं । एकसमयस्थितिक ना प्र० उत्तर हे गौतम अनन्ता कह्या तेह कहे अर्थे हे गौतम इम कह्या प्र०

वोंलानुमारेण स्यप कव्याः सङ्ख्यातप्रदेशस्कन्धसूत्रे उगाहवठ्याए तुल्लामन्नलिए इति ॥ सङ्ख्येयनागेन सङ्ख्येयगुणेनवेति, असङ्ख्यातप्रदेशकस्कन्धे- तुगाहवठ्याए चउठाणवलिए इति ॥ असङ्ख्यातनागेन सङ्ख्यातनागेन सङ्ख्यातगुणेनाऽसङ्ख्यातगुणेनेति । अनन्तप्रदेशस्कन्धे प्यवगाहनायतया चतु स्था नपतितता अनन्तप्रदेशावगाहनया ऽसम्भवतो ऽनन्तनागानन्तगुणाभ्यां वृद्धिहान्यसम्भवात् मगपप्तोगाहाव पोग्गलाव मत वत्यादि ॥ अत्र द्व प्याव तह पम्भट्टयाव छठाणवलिए इति । इदमपि त्ववितैकप्रदेशावगाढ परमाण्वादिक द्रव्यमिद मप्यपरैकप्रदेशावगाढ द्विप्रदेशादिकं प्र ख्यमिति । द्रव्यायतया तुल्यता प्रदेशायतया पद्स्थानपतितता अनन्तप्रदेशकस्यापि स्कन्धस्यै कसिमाकाशप्रदेशऽवगाहसम्भवात् सेव सुगम । एव स्थितिभावाश्रयाण्यपि सूत्राणि उपपत्त्या नावनीयानि । जहण्णोगाहणाव णत दुपएसियाण मित्यादि ॥ अपन्या द्विप्रदेशकस्य स्कन्धस्या वगा

साणवि वणगंधरसफासाण यत्तव्वया नाणियव्वा जाव अणंतगुणलुक्खे । जहण्णोगाहणगाण नंते ! दुपदेसि याण पुच्छा, गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेण नंते ! एव वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए दुपदेसिए खंधे जहण्णोगाहणगस्स दुपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ठिइए चउठाणवडिए कालवण्ण

गन्धरसस्पर्शानां वक्तव्यता नावितव्या यावदनन्तगुणरूक्ष । जघन्यावगाहनकानां भदन्त । द्विप्रदेशिकानां पृच्छा गौतम । अनन्ता पर्यवा प्रज्ञप्ता । अथ केनार्थेन भदन्त । एवमुच्यत ? गौतम । जघन्यावगाहनको द्विप्रदेशिको जघन्यावगाहनकस्य द्विप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थ तया तुल्य प्रदेशार्थतया तुल्यः स्थित्या चतुःस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवै पद्स्थानपतितः शेषवर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः पदस्थानपतितः । शी

मन यपदासवाच पच्छा गायमा । जघन्य पवगाहनाना के भगवन् द्विप्रदेशानि वतया पयाव इ गौतम । अपता पत्रवा प सेवनह इ मत । अनन्ता पर्याव तमाडे हम बच्चो । प गायमा जहणोगाहणद्रव्यइमिप खधे । हे गोतम जघन्य पवगाहनाना बेप्रदेशीखध । जहणोगाहणस दुपदसियस्स खंध स्स । जघन्य पवगाहनाना द्विप्रदेशीकस्य । दव्वठ्याए तुल्ल पएसठ्याए तुल्ले । द्रव्यार्थसरीषा प्रदेशार्थसरीषा । अमाहणठ्याए तुल्ले ठिइए चउठाणवडिए

एवं वुच्चइ ? गोयमा ! एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालगस्स पुग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। अट्ठहिं फासेहिं छट्ठाणवडिए। एवं जाव दसगुणकालए। संखेज्जगुणकालएवि एवं चेव नवरं सट्ठाणे दुट्ठाणवडिए। एवं असंखेज्जगुणकालएवि नवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए एवं अणंतगुणकालएवि नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं जहा कालवण्णस्स वत्तव्वया भणिया, तहा से

दन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! एकगुणकालकः पुद्गल एकगुणकालकस्य पुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितोऽवगाहनया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः। कालवर्णपर्यवैस्तुल्योऽवशेषैर्वर्णगन्धरसपर्यवैः षट्स्थानपतितः। अष्टभिः स्पर्शैः षट्स्थानपतितः एवं यावद्दशगुणकालकः। संख्येयगुणकालकोऽप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने द्विस्थानपतितः। एवमसंख्येयगुणकालकोऽपि नवरं स्वस्थाने चतुःस्थानपतितः। एवमनन्तगुणकालकोऽपि नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। एवं यथा कालवर्णस्य वक्तव्यता भणिता तथा शेषाणामपि वर्ण

नावडे चतुःस्थान पतित छे। स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे। कालवर्ण पर्यायो वडे तुल्य छे अवशेष वर्ण गंध रस पर्यायो वडे षट्स्थान पतित छे। आठ स्पर्श वडे षट्स्थान पतित छे एम यावत् दश गुण काळा सुधी कहेवुं। संख्यातगुणकाळाने विषे। संख्यातगुणे काळो पुद्गल पण एमज एटलो विशेष स्वस्थानने विषे द्विस्थान पतित छे। एम असंख्येयगुणकाळाने विषे। एमज असंख्यातगुणे काळो पुद्गल पण जाणवो एटलो विशेष स्वस्थानने विषे चतुःस्थान पतित जाणवो। एम अनंतगुणकाळाने विषे। एमज अनंतगुणे काळो पुद्गल जाणवो एटलो विशेष स्वस्थाने षट्स्थान पतित कहे एम जेम काळावर्णनी वक्तव्यता कही तेमज शेष वर्ण गंध रस अने स्पर्शनी वक्तव्यता कहेवी यावत् अनंतगुणे रूक्ष सुधी कहेवुं। [illegible]

शात्मिका मध्यमा द्विविधा द्वियिप्यप्रवेशात्मिका त्रिप्रदेशात्मिका च एव च यवि मध्यमावगाहन चतु प्रदेशको मध्यमावगाहनचतुःप्रदेशका पेव

सोगाहणएवि एवचेव, एव अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि। जहण्णोगाहणगाण भंते ! चउपदेसियाण पुच्छा १ गोयमा ! जहन्नोगाहणए दुपदेसिए तहा उक्कोसोगाहणए चउप्पएसिएवि एव अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि चउप्पदेसिए णवर उग्गाहणठयाए सियहीण सियतुल्ले सियमब्भहिए जइहीण पदेसहीणे अह अब्भहिए पदेसअब्भहिए एव जाव दसपदेसिए णेयव्व । नवर अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए पदेसपरिवुड्ढीकाय

रूपावगाहनकोपि। जघन्यावगाहनकाना भदन्त ! चतु प्रदेशिकाना पृच्छा गौतम ! यथा जघन्यावगाहनको द्विप्रदेशिका तथा उत्कृष्टावगाहनक चतुःप्रदेशिकापि । एवमजघन्यानुत्कर्षावगाहनकापि चतु प्रदेशिको नवर अवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्य स्यादभ्यधिकः यदिहीनः प्रदेशहीन यद्यभ्यधिक प्रदेशाभ्यधिक एव यावद्दशप्रदेशिक ज्ञातव्य-नवरमजघन्यानुत्कर्षावगाहनक प्रदेशपरिवृद्धि कर्तव्या यावत् दशम

योने जघन्य अवगाहन कह्या उत्कृष्ट अवगाहना कही तिम । उक्कोसोगाहणाएवितचेव एव अजहन्नमणुक्कोसोगाहणाएवि । तिम मध्यमाविषा इम चतु प्रदेशिक पिण कहवा। जहण्णोगाहणाण भन चउपएसियाण पुच्छा गोयमा । जघन्य अवगाहनाना ४ प्रदेशीखंधने प्रश्न पूछे छे गोतम । जहण्णोगाहणए दुपदेसिए तहा उक्कोसोगाहणए चउप्पदेसिएवि । जघन्य अवगाहनानाप्रदेशी तिम जघन्य अवगाहनाना चतु प्रदेशीखंधना एव सर्व उक्कोसोगाहणएदुपदेसिए तहा उक्कोसोगाहणए चउपदेसिएवि। इम जिम उत्कृष्ट अवगाहनाना दुप्रदेशी तिम उत्कृष्ट अवगाहनाना चतु प्रदेशी पिण कहिवा । एव अजहण्णमणुक्कोसोगाहणाएवि चउपदेसिए णवर। इम मध्यम अनुत्कृष्ट अवगाहनाना चतु प्रदेशीन ए विशेष । उगाहण ठयाए सियहीण । अवगाहनायें करि हीन । सिय तुल्ल सियमब्भहिए जाइहीणे पएसहीण । अह अब्भहिए पएसमब्भहिए एव जाव दसपएसिए णेयव्व न वर । अवगाहनाइ तो पिण प्रदेशे अधिक इमज्ञ दशप्रदेशीताई कहिवा ए विशेष । अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पएसपरिवुड्ढीकायव्वा । जाव

ना पुक्खरदशासिका उत्कृष्टा द्विप्रदेशासिका यष पर्यातराल नास्तीति मध्यमा न लभ्यते सत उक्त-मजहन्नमणुक्कोसोगाहणए नत्थि इति ॥ त्रिप्र
देशकस्य जघन्यावगाहना एकप्रदेशरूपा मध्यमा द्विप्रदेशरूपा उत्कृष्टा त्रिप्रदेशरूपा चतु प्रदेशस्य जघन्या एकप्रदेशरूपा उत्कृष्टा चतु प्रदे

पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए समवन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए सीतउसिणणिद्धलुक्खफासेहिं छट्ठाणव
डिए सेतेणट्ठेणं ? गोयमा ! एवं वुच्चइ-जहन्नोगाहणगाणं दुपदेसियाणं पोग्गलाणं अणंता पज्जवा प०,
उक्कोसोगाहणएवि एवचेव अजहन्नमणुक्कोसोगाहणओ नत्थि । जहन्नोगाहणगाणं भंते ! तिपदेसियाणं पुच्छा,
? गोयमा ! अणंता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहा दुपदेसिए जहन्नोगाहणए उक्को

स्थानाच्चित्वरूपस्पर्शपर्यायैः षट्स्थानपतित इत्येतेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते-जघन्यावगाहनकानां द्विप्रदेशिकानां पुद्गलानामनन्ताः पर्यवाः प्र
ज्ञप्ताः । उत्कर्षावगाहनकोऽप्येवं चैव अजघन्यानुत्कर्षावगाहनको नास्ति । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! त्रिप्रदेशकानां पृच्छा, गौतम ! अन
न्ताः प्रज्ञप्ताः अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! यथा द्विप्रदेशिका जघन्यावगाहनको उत्कर्षावगाहनको एवमेव एव मध्यमावगाहु

नवगाहनावि सरखा स्थितिकी चतुःस्थानपतित । वर्णगंधरसस्पर्श छठाणवडिए । वर्णादिकनें पर्याय षट्स्थानपतित हुवे । सेवाय वर्णगन्धरसफासप
ज्जवेहि छट्ठाणवडिए । एमनला वर्णगंधरस स्पर्शने पर्याय षट्स्थानपतित हुवे । शीतोष्णस्निग्धरूक्षफासपज्जवेहि छट्ठाणवडिए । शीत उष्ण स्निग्ध रूक्ष
स्पर्शनें पर्याय ए षट्स्थानपतित हुवे । सतेणट्ठेण गोयमा एतावता एम कहिए । तेमाटे इम हे गौतम दुपदेशीयखंधनें । जघन्यावगाहना
वि एवमेव । मध्यमा पर्याय कह्या उत्कृष्ट अवगाहनामा पिण इमहीज । मध्यमअणुक्कोसोगाहणा नत्थि । जघन्य उत्कृष्ट अवगाहनाहें नथी मध्
तेमाटे । अवगाहनावाला भंते तिपदेसियाखंध पृच्छा जा । जघन्य अवगाहनामां त्रिप्रदेशीने केतला पर्याय हे गौतम । अनंता ए सेवाय हुवे भंते एव
गोयमा । अनंता पर्याय कह्या तेहमाटे भगवन् इम कह्या जे अनंता हे गौतम । जघन्यदुपदेसिए जघन्यावगाहनावाए भनिया तद्यमा । त्रिप्र प्रायकदे

नात्मिका मध्यमा द्विविधा द्वियिध्यप्रदेशात्मिका त्रिप्रदेशात्मिका च यत्र च सति मध्यमावगाहन यत्तु प्रदेशाको मध्यमावगाहनयत्तु प्रदेशका पेच

सोगाहणएयि एवचेव, एव अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि। अहन्नोगाहणगाण न्ते। चउपदेसियाण पुच्छा १ गोयमा। जहन्नोगाहणए दुपदेसिए तहा उक्कोसोगाहणए चउप्पएसिएवि एव अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि चउप्पदसिए णवर उग्गाहणठयाए सियहीण सियतुल्ले सियमब्भहिए जइहीण पदेसहीणे अह अब्भहिए पदेसअब्भहिए एव जाव दसपदेसिए णेयव्वं। नवर अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए पदेसपरिवुड्ढीकाय

रूपावगाहनकोपि। जघन्यावगाहनकाना प्रदन्त। चतु प्रदेशिकाना पृच्छा गौतम। यथा जघन्यावगाहनको द्विप्रदेशिका तथा उत्कृष्टावगाह नत्र यतःप्रदेशिकापि। एवमजघन्यानुत्कृष्टावगाहनकापि चत प्रदेशिको नवर अवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्य स्यादभ्यधिकः यदिहीनः प्रदेशहीन यद्यभ्यधिकः प्रदेशाभ्यधिक एव यावद्दशप्रदेशिक प्रासव्य नवरमजघन्यानुत्कृष्टावगाहनक प्रदेशपरिवृद्धि कर्तव्या यावत् दशम

योगे पञ्च अवगाहन कम्मा उत्कृष्ट अवगाहना अष्टो तिम। अवगाहनाएवितथेव एव अजहन्नमणुक्कोसोगाहणाएवि। तिम अवगाहना दस पत पञ्च अवगाहनै विच दसप्रदेशिका। ... पुच्छा गोयमा। जघन्य अवगाहनाना ४ प्रदेशोद्भवे यातका पर्याय दे गोयम। ... दुपदसिए तहा ... चउप्पदसिएवि। जघन्य अवगाहनानाप्रदेशो तिम जघन्य अवगाहनाना चतु प्रदेशोत्पाविता एव अहा ... दुपदसिए तहा ... चउपदसिएवि। एम जिम उत्कृष्ट अवगाहनाना दुप्रदेशो तिम उत्कृष्ट अवगाहनाना पद प्रदेशो पिच कहिवा। एव अजहन्नमणुक्कोसोगाहणाएवि चउपदसिए नवर। एम अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहनाना चतु प्रदेशोन ए विषय। ... विरचोव। अवगाहनार्थे केर होम। सिय तुल्ल सियमब्भहिए जाच्चेवि पदसहीण। ... पदसमब्भहिए एवं जाव दसपएसिए ... परे। ... समये अधिक दसमा ... सारिखा प विषय। अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए पएसपरिवुड्ढीकायव्वा। ...

या यदि हीन सार्द्धे प्रदेशतो हीनो भवति । यथा व्यधिक सात प्रदेशतो ऽधिका एव पञ्चप्रदेशादिषु स्कन्धेषु मध्यमावगाहना मधिकृत्य प्रदे शपरिवृध्या वृद्धि हानिश्च तावद्वक्तव्या यावद् दशप्रदेशक स्कन्ध सप्तप्रदेशपरिवृद्धि साधं च वक्तव्या । मजहन्नमणुक्कोसोगाहणय दसपएसिय खंध स्सअणुक्कोसोगाहणस्स दसपएसियस्स खंधस्स ओगाहणठ्याए सियहीणे सियतुल्ले सिय अब्भहिए जइ हीणे पएसहीणे दुपएसहीणे जावसत्तपएस हीणे । अह अब्भहिए पएसमब्भहिए दुपएसमब्भहिए जाव सत्तपएसमब्भहिए इति ॥ शेष सूत्र स्वय मुपपरिज्ञावनीय सुगमत्वात् मयर मनन्तप्रदे

ह्मा आय दसपदेसियस्स सत्तपएसा परिवुड्ढिज्जति । जहन्नोगाहणगाणं भंते ! संखेज्जपदेसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए संखेज्जपएसिए जहन्नोगा हणगस्स संखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए दुट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाण वडिए वन्नादिचउफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए एवं उक्कोसोगाहणए वि । अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए वि एवं

दशकस्य सप्तप्रदेशा परिवर्द्धन्ते । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! संख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ता तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्य ते ? गौतम ! जघन्यावगाहनकः संख्यातप्रदेशिको जघन्यावगाहनस्य संख्यातप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्य प्रदेशार्थतया द्विस्थानपतितः अवगा हनार्थतया तुल्यः स्थित्या चतु स्थानपतितः वर्णादिचतु स्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतित एवमुत्कर्षावगाहनकोपि । अजघन्यामुत्कर्षावगाहनको

ऽप्येवमेव नवरं स्वस्थाने द्विस्थानपतितः परिवर्द्धन्ते । संख्यातप्रदेशस्कन्धे संख्यातप्रदेशावगाहित्वात् द्वयादिप्रदेशहानिवृद्धया संख्यातप्रदेशविस्तारत्वात् । असंख्यातावगाहनानां भदन्त ! असंख्यातप्रदेशिका नां पृच्छा गौतम ! जघन्यावगाहनानां संख्यातप्रदेशानां अनन्ता पर्याय गौतम । अनन्ता ए सन्ति भदन्त ! अनन्ता पर्याय तेषामेव इस जघन्यो । ऽवगाहनाया असंख्यातप्रदेशिक । जघन्य अवगाहनाये संख्यातप्रदेशाने । जघन्यावगाहनस्यासंख्यातप्रदेशिकस्य ... । जघन्य अवगाहनायें स ख्यातप्रदेशाने द्रव्यार्थ तयोपा । प्रदेशार्थ द्विस्थानपतित । स्थित्या चतुःस्थानपतित तुल्ये । वर्णादि षट्स्थानपतित । अवगाहना

चेव नवरं सट्ठाणे दुट्ठाणवडिए । जहन्नोगाहणगाणं भंते ! असंखिज्जपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए असंखिज्जपदेसिए खंधे जहन्नोगाहणगस्स असंखिज्जपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णादिउवरिल्लफासेहिं छट्ठाणवडिए एवं उक्कोसोगाहणएवि, अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि एवं चेव नवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए । जहन्नोगाहणगाणं भंते ! अणंतपदेसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए अणंतपदेसिए खंधे जहन्नोगाहणगस्स अणंतपदेसियस्स

एवं चैव नवरं स्वस्थाने द्विस्थानपतितः । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! असंख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः, तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यावगाहनकोऽसंख्यातप्रदेशिकः स्कन्धो जघन्यावगाहनकस्यासंख्यातप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया चतुःस्थानपतितः । अवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णादिमष्टस्पर्शैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षावगाहनकोऽपि । अजघन्यानुत्कर्षावगाहनकोऽप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने चतुःस्थानपतितः । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! अनन्तप्रदेशिकानां पृच्छा,

---

व बरोबर (अतिरिक्त) चतु स्थानपतित हुवे । वर्णादि व अष्ट स्पर्श से षट्स्थानपतित । वर्णादि 8 स्पर्श से षट्स्थानपतित हुवे । एवं उत्कृष्टावगाहना वाले । इस प्रकार अवगाहना वाले भी । [illegible] एवं च नवरं स्वस्थान चतुःस्थानपतित । [illegible] अवगाहना वाले भी इसी प्रकार स्वस्थान में द्विस्थानपतित हुवे । जघन्य अवगाहना वाले भंते असंख्यात प्रदेशी की पृच्छा गौतम । जघन्य अवगाहना वाले असंख्यातप्रदेशी कितने हैं ? गौतम । अनंता हैं । अहो भंते किस कारण से ऐसा कहा ? गौतम । जघन्य अवगाहना वाले असंख्यात प्रदेशी जघन्य अवगाहना वाले असंख्यातप्रदेशी से [illegible] जघन्य अवगाहना वाले असंख्यातप्रदेशी स्कंध । द्रव्यार्थ तुल्य प्रदेशार्थ चतुः

तेत्कृष्टावगाहनाभिस्तायां स्थितावपि तुल्ये इति ० उत्कृष्टावगाहनः त्रिप्रदेशावगाढः स्कन्धः स उच्यते यः समस्तलोकव्यापी स चा चित्तसम न्यः केवलिसमुद्घातकसमस्कन्धा वा तयो द्वयो रपि एकसमयस्थितिकत्वादस्यतम स्थितौ तु समयप्रमाणते ति तुल्यता शेष सूत्र माप रिभाव्यः प्राग्वदावगाहनानुसारेण स्वय मुपयुज्य परिभावनीय नवर अजघन्यप्रदेशका स्कन्धा द्विप्रदेशका उत्कृष्टप्रदेशा सर्वोत्कृष्टानन्तप्रदेशाः,

खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिइए चउट्ठाणवडिए वण्णादिअट्ठ फासेहि छट्ठाणवडिए। उक्कोसोगाहणएवि एवचेव नवर ठिइएवि तुल्ले। अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगाण भंते! अणंतपदेसियाण पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणट्ठेण? अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए अणंतपदेसिए खधे अ जहन्नमणुक्कोसोगाहणगस्स अणंतपदेसियस्स खधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहण

गौतम। अनन्ताः। अथ केनार्थेन भदन्त। एवमुच्यते? गौतम। अजघन्यावगाहनकानन्तप्रदेशिकस्कन्धो अजघन्यावगाहनकस्यानन्तप्रदेशिकस्य स्क न्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्य प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतित अवगाहनार्थतया तुल्य स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णादिचतुर्भि स्पर्शैः षट्स्थानप तित। उत्कृष्टावगाहनका अप्येव चैव नवर स्थित्या तुल्य। अजघन्यानुत्कृष्टावगाहनकाना भदन्त। अनन्तप्रदेशिकाना पृच्छा गौतम। अन न्ताः पर्यवाः। अथ केनार्थेन भदन्त। एवमुच्यते? अजघन्यानुत्कृष्टावगाहनकानन्तप्रदेशिकस्कन्धो अजघन्यानुत्कृष्टावगाहनकस्या नन्तप्रदेशि

र्डिए। द्रव्य च पर्यायाः प्रदेशाः चतःस्थानपतित तुल्ये। उग्गाहणट्ठयाए तुल्ल ठिइए चउट्ठाणवडिए। अवगाहनाय पर्याया स्थितिवशी चतस्थानपतित ा। वर्णादिवर्णरसगन्धस्पर्शाः छट्ठाणवडिए। वर्णादिपरिचे षट्स्थान पर्याये षट्स्थानपतितश्च। एव उक्कोसोगाहणएवि। एव जहन्न अवगाहना पिय उत्कृष्टावगाहनापि नवर। अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहना जिय एमञ्चेव ए विषय। सट्ठाणेचउट्ठाणवडिए। अवगाहने चतु स्थाने पति तश्चे। अपयोगावगाहनाय भंते अनन्तपर्यायार्थ पुच्छा गोयमा। अजघन्य अवगाहनायै अनन्तप्रदेशिक केतना पर्याय कथा हे गौतम। अनन्ता प

ठयाए चउठाणवडिए ठिईए चउठाणवडिए वन्नादिअट्ठफासेहि छठाणवडिए । जहन्नठिईयाण भंते ! परमाणुपोग्गलाण पुच्छा, गोयमा ! अणंता। से केणट्ठेण ? गोयमा ! जहन्नठिईए परमाणुपोग्गले जह न्नठिईयस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले उग्गाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए तुल्ले वन्नाइ दुफासेहिय छठाणवडिए एव उक्कोसठिइएवि । अजहन्नमणुक्कोसठिइएवि एवचेव नवर ठिईए चउठाण वडिए जहन्नठिइयाण दुपदेसियाण पुच्छा, गोयमा ! अणंता। से केणट्ठेण ? गोयमा ! जहन्नठिईए दुप

कस्य । एकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितः अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णाद्यष्टस्प र्शैः षट्स्थानपतितः । जघन्यस्थितिकानां भदन्त । परमाणुपुद्गलानां पृच्छा, गौतम । अनन्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त । एवमुच्यते ? गौत म । जघन्यस्थितिकपरमाणुपुद्गलो जघन्यस्थितिकस्य परमाणुपुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या तु ल्यः वर्णादिद्विविधस्पर्शैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षस्थितिकोऽपि अजघन्यानुत्कर्षस्थितिकोऽप्येवं चैव नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतित । ज

[illegible]

देसिए जहन्नठिईयस्स दुपदेसियस्स खधस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले उग्गाहणठयाए सियहीणे

जघन्यस्थितिकानां द्विप्रदेशिकाना पृच्छा गौतम। अनन्ता। अथ केनार्थेन प्रश्न। एवमुच्यते ? गौतम। जघन्यस्थितिकद्विप्रदेशिको जघन्य स्थितिकस्य द्विप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्य प्रदेशार्थतया तुल्याऽवगाहनार्थतया स्याद्धीन स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः यदि हीन भवे

तमसवामायावमम पवतपएसियस्स खधस्स। पवमग्ग पवरवरो पवनाहमाना पवम्मपदेसोरवधमे। दव्वठयाए तुल्ले पएसठयाए छट्ठाणवडिए। दृष्या वैमरोवाद्दे मवर्यार्थेसामपतित हुवे। वमाहवट्ठाए पवट्टाणवडिए। पवगाहनार्थे चतु स्थानपतित हुवे। ववाद्दिपट्ठाणवेदि छट्ठाणवडिए। वर्णादि ८ अथ मजामवतित हुवे। जहन्नठिइयाण भते परमाणपमवाणं पुच्छा गोयमा। जघन्य स्थितिना परमाणपदवने वतवा पर्याय हे गौतम। पवते पज्जवा सवड्ढुवं भते प गोयमा। पमन्नापवीव तमाटे एम वणो व गौतम। जहन्नठिइपरमाणपरगसस। जघन्य स्थितिमापरमाणपदव। जहन्नठि इयस्स परमाणपरमसस। जघन्य स्थितिनापरमाण पदवने। दव्वठयाए तल पएसठयाए तल। द्रव्यार्थेवरोया प्रदेशार्थेवरोया। उगाहवट्ठाए तुल ठिई एतस। पवमाहमार्थेमरोया स्थितिवरो वरोया। ववाद्दिठुवासठियवट्ठाणवडिए। वर्णादिदृष्यों छस्थामपतित हुवे। एव ववासठिइएवि। एम उरकट स्थिति पिण। पवहएमववासठिइएवि एववम मवर ठिइएववट्टाणवडिए। पवमग्ग पवरकट स्थितिना पिण एमहोज ए विशेष चतु स्थानपातत हुवे जहन्नठिइयाण भते दुपएसियाण पुच्छा गोयमा। जघन्य स्थितिना द्विप्रदेशिको प्र वे गौतम। पवता प सेवडुर्ष भते प गोयमा। अमन्ता पवाय तमाटे एम वणो हे गौतम। जहन्नठिइए ढुपएसिएखध। जघन्य स्थितिनाढप्रदेशोपम्म। जहन्नठिइयढुपएसियस्स खधस्स। जघन्य स्थितिनाद्वि प्रदेशमने। दव्वठयाए तुल्ले पएसठयाए तुल। द्रव्यार्थेवरोया प्रदेशार्थेवरोयाद्वे। उगाहवट्ठाएसियहीणे सियतम सियमयहिए। पवमाहमाने पर्यैवरो वा बहीन वाधिका वेदरोया। वर दोवे पवम वावे। जहोम तपवगोहीन। पव पवाडिए पएसमवाडिए ठिइए तल। पव पविव प्रदेश पविव स्थितिवो वरोवा। ववादिपवप्पासेडिय छट्ठाणवडिए। वर्णादि ४ वर्णे छस्थामपतितहुवे। एवं ववासठिइएवि। एम उरकृष्टी स्थितिना पिण। पवजघन्य

सियतुल्ले सियअब्भहिए जइहीणे पदेसहीणे अह अब्भहिए पदेसठयाए अब्भहिए ठिईए तुल्ले वन्नादिचउ फासेहिय छट्ठाणवडिए एव उक्कोसठिईएवि अजहन्नमणुक्कोसठिइएवि एवचेव नवर ठिइए चउठाणवडिए एय जाव दसपदेसिए नवर पदेसपरिवुड्ढीकायव्वा, ओगाहणठयाए तिसुवि गमएसु जाव दसपदेसिए नव पदेसा वुड्ढिज्जति । जहन्नठिईयाण भंते ! सखेज्जपदेसियाण पुच्छा, गो० ! अणता । से केणट्ठेण ? गो० ! जहन्नठिइए सखेज्जपदेसिए जहन्नठिईयस्स सखेज्जपदेसियस्स खधस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए दुठा

हीनः यथाऽभ्यधिकः प्रदेशाभ्यधिकः स्थित्या तुल्यः वर्णादिचतुर्भिः स्पर्शैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टस्थितिकोऽपि । अजघन्यानुत्कृष्टस्थिति कोऽप्येव चैव नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतित । एव यावद्दशप्रदेशिके नवर प्रदेशपरिवृद्धिः कर्तव्याऽवगाहनायतया त्रिष्वपि गमकेषु यावद्दश प्रदेशिक नव प्रदेशा परिवर्द्धन्ते । जघन्यस्थितिकाना भदन्त । सख्यातप्रदेशिकाना पृच्छा , गौतम । अनन्ता । तत्केनार्थेन भदन्त । एवमु च्यत ? गौतम । जघन्यस्थितिकः सख्यातप्रदेशिको जघन्यस्थितिकसख्यातप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया द्विस्थानपतित

पआयठिएवि पवमव नवर ठितो० चउठाणवडिए। जघन्य अनुत्कृष्ट स्थितिमा पिण ए विशेष स्थितिकरी चउ'स्थानपतितहुवे। एव जाव दसपएसिए नवर पएसपरिवुड्ढोकायव्वा। इम जाणवो१ प्रदेशरबद ए विशेष प्रदेश २ वृद्धिकरवो। ओगाहणठयाए०तिसुवि गमएसु जाव दसपएसिए नवपएसावड्ढिज्जति। पवगाहनाओ तीने पालावेकरी जाणवो१ प्रदेश तांलमे २ प्रदेशमधारीने कहिवो। जहन्नठिईयाण भंते सखिज्जपएसियाण पुच्छा गोयमा। जघन्य स्थितिमा सख्यातप्रदेशमे, कतलापर्याय हे गौतम। अनता प सखपडुई भते प मायमा। अनन्तापर्याय तमाटे इम कह्यो हे गौतम। जहण्णठिइपसखि ज्जपदेसिएपध जहन्नठिइयस्स। जघन्य स्थितिमा सख्यातप्रदेशने जघन्य स्थितिमें। संखिज्जपएसियस्स खधस्स। संख्यातप्रदेशीस्कधने। दव्वट्ठाए तुल्ले पएसट्ठाए दुट्ठाणवडिए। द्रव्यार्थे सरीखा प्रदेशार्थे चउ स्थानपतितहुवे। ओगाहणठयाए दुट्ठाणवडिए। अवगाहनार्थे चउ'स्थानपतितहुवे। ठिएतुल

पज्जवेहिं ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए ठिईए तुल्ले वण्णादिचउफासेहिय छट्ठाणवडिए एव उक्कोसठिईएवि अजहन्नमणुक्कोसठिईएवि एवचेव नवर ठिईए चउट्ठाणवडिए। जहन्नठिईयाण भंते! असंखिज्जपदेसियाण पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणट्ठेण? गोयमा! जहन्नठिईए असंखिज्जपएसिए जहन्नठिईयस्स असंखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिइए तुल्ले वन्नादिउवरिल्लचउफासेहि छट्ठाणवडिए एव उक्कोसठिईएवि। अजहन्नमणुक्कोसठिईएवि एवचेव नवर ठिईए चउट्ठाणवडिए। जहन्नठिईयाण अणंतपदेसियाण पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणट्ठेण? गोयमा!

अवगाहनायतया द्विस्थानपतितः स्थित्या तुल्यः वर्णादिचतुर्भि स्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षस्थितिकोपि। अजघन्यानुत्कर्षस्थितिको प्येवं चैव नवर स्थित्या चतुःस्थानपतितः। जघन्यस्थितिकाना भदन्त! असंख्यातप्रदेशिकाना पृच्छा, गौतम! अनन्ताः। तत्केनार्थेन भद न्त! एवमुच्यते? गौतम! जघन्यस्थितिकोऽसंख्यातप्रदेशिको जघन्यस्थितिकस्याऽसंख्यातप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया चतु स्थानपतितो ऽवगाहनायतया चतुःस्थानपतित स्थित्या तुल्यः वर्णादिमधमचतुर्भिः स्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षस्थितिकोपि। अ जघन्यानुत्कर्षस्थितिकोपि एवमेव नवर स्थित्या चतुःस्थानपतितः। जघन्यस्थितिकानामानन्तप्रदेशिकाना पृच्छा, गौतम! अनन्ताः। अ

वगा।दिवरिल्लेहिं चउफासेहिंछट्ठाणवडिए। स्थितिर्यै सरोपा वर्णादिउपरितनैः स्पर्शैः षट्स्थानपतितश्च। एव उक्कोसठिइएवि अजहन्नमणुक्कोसठिइएवि। इम उत्कर्षेण स्थितिश्च एवं अजघन्यानुत्कृष्टेप्येवं। एवचेव नवर चउट्ठाणवडिए। इसमेव ए विषय स्थितिकर चतुःस्थानपतितश्चेति। जहन्नठिइयाण भंते अणंतपदेसियाणं पुच्छा गोयमा। जघन्य स्थितिका हे भगवन् असंख्यातप्रदेशिका प्र हे गौतम। अनन्ताः एव इव भंते प गोयमा। अण न्तपर्याय तस्मात इम कथ्यते हे गौतम। जहन्नठिइए असंखिज्जपएसिए अथ। जघन्य स्थितिक असंख्यातप्रदेशीस्कन्ध। जघन्यस्थितीयस्स असंखिज्जपएसि

जहन्नठिइए अणंतपदेसिए जहण्णठिईयस्स अणंतपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिइए तुल्ले वन्नादिअट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिए एवं उक्कोसठिइएवि। अजहन्नमणुक्कोसठिईएवि एवं चेव नवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए। जहन्नगुणकालयाण परमाणुपोग्गलाण पुच्छा,

यत्नार्थेन ग्रहणं। एवमुच्यते? गौतम! जघन्यस्थितिकानन्तप्रदेशिको जघन्यस्थितिकस्यानन्तप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितो अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या तुल्यः वर्णाद्यष्टस्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षस्थितिकोऽपि। अजघन्यानुत्कृष्टस्थितिकोऽप्येवमेव नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः। जघन्यगुणकालकानां परमाणुपुद्गलानां पृच्छा, गौतम! अनन्ताः। अथ केनार्थेन

तेम जे प्रदेशार्थ तुल्य। जघन्यस्थितिना असंख्यातप्रदेशी स्कंध द्रव्यार्थपणाए। प्रदेशार्थ चउट्ठाणवडिए। प्रदेश य चतु स्थानपतित हुवे। अवगाहनट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिइए तुल्ल। अवगाहनार्थे चतु स्थानपतित हुवे स्थितिवेसराया। वर्णादिक अने अष्टफासेहिं छट्ठाणवडिए। वर्णादिकपरि- वार ६ स्थान छस्थानपतित हुवे। एवं उक्कोसठिइएवि। इम उत्कृष्ट स्थितिना पिण। अजहन्नमणुक्कोसठिइएवि एवं चेव नवरं ठिइए चउट्ठाणवडिए। अजघन्य अनुत्कृष्टस्थितिना पिण इम जाणवु। विशेष स्थितिवंतो चतु स्थानपतित हुवे। जहन्नगुणकालयाणं भंते परमाणुपोग्गलाणं पुच्छा गोयमा। जघन्य स्थितिना हे भगवन् अनन्तप्रदेशीना स्कंध पूछ्यो। अणंता पज्जवा पन्नत्ता। अनन्तापर्याय तेमाटे इम कह्यो हे गौतम। जहन्नठिइए अणंतपएसिए जहन्नठिइयस्स। जघन्य स्थितिना अनन्तप्रदेशी स्कंध। अजहन्नठिइयस्स अणंतपएसियस्स दव्वट्ठयाए। जघन्य स्थितिना अनन्तप्रदेशीने। दव्वट्ठयाए तुल्ल दव्वार्थपणे। द्रव्यार्थे करीताते प्रदेशार्थे छस्थानपतित हुवे। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। अवगाहनार्थे चतु स्थानपतित हुवे। ठिइए तुल्ले वन्नादिअट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिए। स्थितिवंतो सरीखा वर्णादिक ८ स्पर्शे छस्थानपतित हुवे। एवं उक्कोसठिइएवि अजहन्नमणुक्कोसठिइएवि एवं चेव नवरं ठिइए चउट्ठाणवडिए। इम उत्कृष्टस्थितिना पिण अजघन्य अनुत्कृष्टो स्थितिना पिण इम जाणवु ए विशेष स्थितिवंतो चतु स्थानपतित हुवे। जह-

गोयमा ! अणंता। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए परमाणुपोग्गले जहन्नगुणकालगस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसा वन्ना नत्थि गंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणकालएवि। एवं अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। जहन्नगुणकालयाणं भंते ! दुपदेसियाणं पुच्छा ? गोयमा !

भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यगुणकालकः परमाणुपुद्गलो जघन्यगुणकालकस्य परमाणुपुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या चतुःस्थानपतितः। कालवर्णपर्यवैस्तुल्यः अवशेषवर्णा नास्ति गन्धरसद्विविधस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कृष्टगुणकालकोऽपि। एवमजघन्यानुत्कृष्टगुणकालकोऽपि नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। जघन्यगुणकालकानां भदन्त ! द्विप्रदेशिकानां पृच्छा ? गौतम ! अनन्ताः। भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यगुणकालकद्विप्रदेशिको जघन्यगुणकालकस्य द्विप्रदेशिकस्य

[illegible] गौतम ! जघन्य गुणकाला परमाणुपुद्गलों के [illegible] । भगवन् ! [illegible] गौतम ! [illegible] गुणकाला परमाणुपुद्गल [illegible] परमाणुपुद्गल [illegible] । [illegible] द्रव्यार्थपने [illegible] प्रदेशार्थपने [illegible] अवगाहना [illegible] स्थिति [illegible] चतुःस्थानपतित [illegible] । [illegible] वर्ण [illegible] गंधरसस्पर्श [illegible] षट्स्थानपतित हैं । [illegible] उत्कृष्ट गुणकाला [illegible] अजघन्यअनुत्कृष्ट गुणकाला [illegible] । [illegible] स्वस्थान में षट्स्थानपतित हैं । जघन्य गुणकाला [illegible] भगवन् ! द्विप्रदेशिक [illegible] गौतम ! [illegible] हैं । भगवन् ! [illegible] हैं ? [illegible] पर्याय [illegible]

अणंता से केणट्ठेणं? गोयमा! जहण्णगुणकालए दुपदेसिए जहण्णगुणकालगस्स दुपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए जइ हीणे पदेसहीणे अह अब्भहिए पदेसमब्भहिए ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसवण्णादिउवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणकालएवि अजहण्णमणुक्कोसगुणकालएवि एवं चेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं जाव दसपदेसिए नवरं पदेसपरिवुड्ढी ओगाहणा तहेव। जहण्णगुणकालयाणं भंते! संखेज्जपदेसियाणं पुच्छा,

द्व्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः यदि हीनः प्रदेशहीनः अथाभ्यधिकः प्रदेशाभ्य[illegible] स्थित्या चतुःस्थानपतितः कालवर्णपर्यवैस्तुल्यो [illegible]परितनचतुःस्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कृष्टगुणकालकोऽपि [illegible] मध्यमगुणकालको ऽप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। एवं यावद्दशप्रदेशिको नवरं प्रदेशपरिवृद्धिरवगाहना तथैव। जघन्य

[illegible] जघन्यगुणकालक द्विप्रदेशिकस्य। जघन्यगुणकालका द्विप्रदेशिकोऽन्यस्य। जघन्यगुणकालकद्विप्रदेशिकस्य [illegible]। जघन्यगुणकालका द्विप्रदेशो [illegible] [illegible]। द्व्यर्थतया [illegible] च प्रदेशार्थे तथा। [illegible] सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। [illegible] [illegible] परिवार [illegible] पदिका। [illegible] एव पर्याय [illegible] [illegible] चतुःस्थानपतितः। [illegible] [illegible] प्रदेश [illegible] [illegible]
स्थितितो चतुःस्थानपतित इति। [illegible] तथा परिशेषाश्चापि [illegible] [illegible]। [illegible] परीत्य [illegible] [illegible]
[illegible] षट्स्थानपतित इति। एवं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] एवं चैव नवरं [illegible]
[illegible] षट्स्थानपतित इति। [illegible] नवरं [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] भंते संखिज्जपदेसियाणं पुच्छा [illegible] [illegible]

गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए संखेज्जपदेसिए जहण्णगुणकालगस्स संखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए दुट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णादिउवरिल्लचउफासेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसगुणकालए वि, एवं अजहण्णमणुक्कोसगुणकालए वि । एवं नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । जहण्णगुणकालयाणं भंते ! असंखेज्जपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए असंखेज्जपदे

गुणकालकानां भदन्त ! संख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यगुणकालकः संख्यातप्रदेशिको जघन्यगुणकालकस्य संख्यातप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया द्विःस्थानपतितो ऽवगाहनार्थतयापि द्विस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः कालवर्णपर्यवैः तुल्यो ऽवशेषैर्वर्णादिभिरुपरितनचतुःस्पर्शैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षगुणकालकोऽपि । एवमजघन्यानुत्कर्षगुणकालकोऽपि नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । जघन्यगुणकालकानां भदन्त ! असंख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः तत्केना

जघन्यगुणकाले संख्यातप्रदेशी स्कंधोना केटला पर्याय [illegible] । [illegible] । अनन्तापर्याय [illegible] । जघन्यगुणका-
ला संख्यातप्रदेशिक स्कंध । जघन्यगुणकालगस्स संखेज्जपदेसियस्स [illegible] । जघन्यगुणकालनो संख्यातप्रदेशी स्कंध । जघन्यगुणकालनो संख्यातप्रदेशी
स्कंधने [illegible] द्विस्थानपतित । द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे द्विस्थानपतित छे । [illegible] । अवगाहनार्थे द्विस्थानपतित
छे । स्थितिथी चतुःस्थानपतित छे । [illegible] । कालवर्णे पर्यायसरीखा पाक-
[illegible] । [illegible] नवर [illegible] ।
[illegible] । [illegible] स्थानपतित छे । जघन्यगुणकालना [illegible]

सिए जहण्णगुणकालगस्स असंखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठा णवडिए कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णादिउवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणकालए वि। अजहण्णमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। जहन्नगुणकालयाणं भंते! अणंतपदेसियाणं पुच्छा, अणंता। से केणट्ठेणं? भंते! गोयमा! जहण्णगुणकालए अणंतपदेसिए जहण्णगुण

र्थम प्रदत्त! एवमुच्यते? गौतम! जघन्यगुणकालकः सङ्ख्यातप्रदेशिको जघन्यगुणकालकस्य असंख्यातप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः कालवर्णपर्यवैः तुल्यः अवशेषवर्णादिप्रथमचतुर्भिः स्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कृष्टगुणकालकोऽपि। अजघन्यानुत्कृष्टगुणकालको एवं चेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। जघन्यगुणकालकानामनन्तप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम! अनन्ताः। अथ केनार्थेन प्रदत्त! एवमुच्यते? जघन्यगुणकालकानन्तप्रदेशिको जघन्यगुणकालकस्य अनन्तप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदे

शिकार्थ पृच्छा गा। जघन्यगुणकालका असंख्यातप्रदेशी केतनापर्याय प्र ... । भगवन् ... भते ... । अनन्तापर्याय हैं। इस कथा हे गौतम। ... । जघन्य गुणकालका असंख्यातप्रदेशी ... गुणकाल। असंख्यातप्रदेशी द्रव्यार्थ स्वरूप से प्रदेशार्थ चतुःस्थानपतित हुवे। स्थिति ... चतुःस्थानपतित हुवे। ... । ... हुवे। ... । इस ... स्वस्थाने षट्स्थानपतित हुवे। जघन्यगुणकालका ... भंते अनन्तप्रदेशी पृच्छा गौतम। जघन्य गुणकालका अनन्तप्रदेशी केतनापर्याय हैं गौतम। ... भंते ... । अनन्तापर्याय हैं इस कथा हे गौतम। जघन्य

कालगस्स अणंतपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णादिअट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणकालएवि, एवं अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं नीललोहियहालिद्दसुक्किलसुब्भिगंधदुब्भिगंधतित्तकडुयकसायअंबिलमहुररसपज्जवेहि य वत्तव्वया भाणियव्वा नवरं परमाणुपोग्गलस्स सुब्भिगंधस्स दुब्भिगंधो न भण्णति दुब्भिगंधस्स सुब्भिगंधो न भण्णति तित्तस्स अवसेसा न भण्णति,

---

र्थतया षट्स्थानपतितः। अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः कालवर्णपर्यवैस्तुल्यः अवशेषैर्वर्णाद्यष्टस्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवं मुत्कृष्टगुणकालकोऽपि अजघन्यानुत्कृष्टगुणकालकोऽप्येवमेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। एवं नीललोहितहारिद्रशुक्लसुरभिगन्धदुरभिगन्धतिक्तकटुककषायाम्लमधुररसपर्यवैर्वक्तव्यता भावता नवरं परमाणुपुद्गलस्य सुरभिगन्धस्य दुरभिगन्धो न भण्यते दुरभिगन्धस्य सुरभिगन्धो न भण्यते तिक्तस्यावशेषा न भण्यते। एवं कटुकादीनि विज्ञाय तथैव। जघन्यगुणकालकानां कर्कशानामनन्तप्रदेशिकाना

गणकालक अनंतप्रदेशिय पूछे। जघन्य गुणकालनो अनंतप्रदेशीस्कंध। जघन्यगुणकालकस्स अनंतप्रदेशीकस्स पृच्छा। जघन्यगुणकालनो अनंतप्रदेशी स्कंधने। द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे छट्ठाणवडिए। द्रव्यादि सरीखा प्रदेशार्थे असंख्यात पतित कहे। अवगाहनाये चउट्ठाणवडिए। अवगाहना ना चतुःस्थानपतित कहे। ठिइए चउट्ठाणवडिए। स्थितिमां चतुःस्थानपतित कहे। कालवर्णपर्यवे तुल्ल अवसेसेहिं वण्णादी अट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिए। कालवर्णपर्यवे सरीखा जाणवा। वर्णादिक बीजा वली षट्स्थानपतित कहे। एवं उक्कोसगुणकालएवि। इम उत्कृष्टगुणकालना पिण। अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवं चेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। अजघन्य अनुत्कृष्ट गुणकालक पिण इम बोल ए विशेष स्वस्थानमें षट्स्थानपतित कहे। एवं नीललोहियहालिद्दसुक्किलसुब्भिगंधदुब्भिगंधतित्तकडुयकसायअंबिलमहुररसपज्जवेहि य। इम नीलवर्णादिक पांच वर्ण सुगंध दुर्गंध तिक्तरस कटुरस कषाय आंबिल मध

एवं कडुयादीनि विसेसं तचेव। जहन्नगुणकक्खडाणं अणंतपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणट्ठेणं? गोयमा! जहन्नगुणकक्खडए अणंतपदेसिए जहन्नगुणकक्खडस्स अणंतपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णगंधरसेहिं छट्ठाणवडिए कक्खडफासपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं सत्तफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणकक्खडे

पृच्छा गौतम! अनन्ताः स्कन्धाः प्रज्ञप्ताः। तत् केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते? गौतम! जघन्यगुणकर्कशोऽनन्तप्रदेशिको जघन्यगुणकर्कशस्यानन्तप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितः अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्यापि चतुःस्थानपतितः वर्णगन्धरसैः षट्स्थानपतितः कर्कशस्पर्शपर्यवैः तुल्यः अवशेषैः सप्तस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षगुणकर्कशोऽपि। अजघन्यानुत्कर्षगुणकर्कशोऽप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने

[illegible]

वि उक्कोसगुणकक्खडेवि एवं चेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं मउयगुरुयलहुयावि भाणि-
यव्वे। जहन्नगुणसीयाणं भंते! परमाणुपोग्गलाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणट्ठेणं? गोयमा!
जहन्नगुणसीयाणं परमाणुपोग्गले जहन्नगुणसीयस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले
ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णगंधरसेहिं छट्ठाणवडिए सीयफासपज्जवेहिं तुल्ले उसिणफासे
न भवति निद्धलुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणसीएवि, अजहन्नमणुक्कोसगुणसी-

---

षट्स्थानपतित । एवं मृदुगुरुलघवोऽपि वक्तव्याः। जघन्यगुणशीतानां भदन्त! परमाणुपुद्गलानां पृच्छा, गौतम! अनन्ताः। स केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते? गौतम! जघन्यगुणशीतः परमाणुपुद्गलो जघन्यगुणशीतस्य परमाणुपुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णगन्धरसैः षट्स्थानपतितः शीतस्पर्शपर्यवैः तुल्यः उष्णस्पर्शो न भवति स्निग्धरूक्षस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कृष्टगुणशीतोऽपि। अजघन्यानुत्कृष्टगुणशीतोऽप्येवं नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। जघन्य

स्थान पतित हुवे स्वस्थान। एवं मउयगरुयलहुयावि। इम मृदुगुरुलघु पण कहिवा। जघन्यगुणसीयाणं भंत परमाणुपुद्गलनी पुच्छा। गोयमा। जघन्यगुणशीत परमाणुपुद्गलना अनंता पर्याय छे गौ। पर्यना प सम्मइप भंत प। अनंतापर्याय समाटे इम कह्या। जघन्यगुणशीत परमाणुपुद्गल। जघन्यगुणशीतना परमाणुपुद्गल। जघन्यगुणशीत परमाणुपुद्गलनें। जघन्यगुणशीत परमाणुपुद्गलनें। द्रव्यार्थपणे प्रदेशार्थपणे अवगाहनाइं तुल्य छे। ठिईए चउट्ठाणवडिए। इम वर्णादिकें पट्ठ वें सरीषा। पर्याय में सरीषा स्थितिइं चउ स्थानपतित हुवे। शीतस्पर्शपर्यायें सरीषा। उष्णस्पर्शना पर्याय न कहिवो। निद्धलुक्खफासपज्जवेहिं छ ठाणवडिए। स्निग्धरूक्षपर्याय षट्स्थानपतित हुवे। एवं उक्कोसगुणसीएवि। इम उत्कृष्टगुणशीत पण कहिवा। अजहन्नमणुक्कोसगुणसीएवि एवं चेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। अजघन्यानुत्कृष्ट

तेयि एयचेव नवर मठाणे छठाणवडिए । जहन्नगुणसीनाण दुपदेसियाण पुच्छा, गोयमा ! अणंता । से केणठेण जते । गोयमा ! जहन्नगुणसीते दुपदेसिए जहन्नगुणसीयस्स दुपदेसियस्स दब्बठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले ओगाहणठयाए सियहीणे सियतुल्ले सियअब्भहिए जदि हीण पदेसहीण, अह अब्भहिए पदेसमब्भहिए ठिईए चउठाणवडिए वण्णगंधरसपज्जवेहिं छठाणवडिए सीयफासपज्जवेहिं तुल्ले उसिणणिद्धलुक्खफासपज्जवेहिं छठाणवडिए । एव उक्कोसगुणसीतेवि अजहन्नमणुक्कोसगुणसीतेवि एवचेव नवर

जघन्यशीतानां द्विप्रदेशिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः । अथकेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यगुणशीत द्विप्रदेशिको जघन्यगुणशीतस्य द्विप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यः अवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः यदि हीनः प्रदेशहीनः यथा अभ्यधिकः प्रदेशाभ्यधिकः । स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णगन्धरसपर्यवैः षट्स्थानपतितः शीतस्पर्शपर्यवैः तुल्यः उष्णस्निग्धरूक्षस्पर्शपर्यवैः षट्

[illegible]गुणशीतानां [illegible] षट्स्थानपतितत्त्वे । [illegible] गोयमा । जघन्यगुणशीतानां [illegible] गौतम । [illegible] भदन्त [illegible] गौतम । [illegible] तस्मात् [illegible] गौतम । [illegible]

[illegible] तृल्यस्वे । [illegible] षट्स्थानपतितत्वे । [illegible] गौतम । एवं उत्कृष्टगु [illegible] । [illegible] गुणशीतमा [illegible] । [illegible]

वि अजहण्णमणुक्कोसगुणकक्खडेवि एवं चेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं मउयगुरुयलहुयावि भाणि
यव्वा। जहन्नगुणसीयाणं भंते! परमाणुपोग्गलाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणट्ठेणं? गोयमा!
जहन्नगुणसीयाणं परमाणुपोग्गले जहन्नगुणसीयस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले
ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णगंधरसेहिं छट्ठाणवडिए सीयफासपज्जवेहिं तुल्ले उसिणफा
सो न भवति निद्धलुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणसीतेवि, अजहन्नमणुक्कोसगुणसी

षट्स्थानपतितः। एवं मृदुगुरुलघवोऽपि वक्तव्याः। जघन्यगुणशीतानां भदन्त! परमाणुपुद्गलानां पृच्छा, गौतम! अनन्ताः ते
नार्थेन भदन्त! एवमुच्यते? गौतम! जघन्यगुणशीतः परमाणुपुद्गलो जघन्यगुणशीतस्य परमाणुपुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्र
देशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णगन्धरसैः षट्स्थानपतितः शीतस्पर्शपर्यवैः तुल्यः उष्णस्पर्शो न भवति
स्निग्धरूक्षपर्यवैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कृष्टगुणशीतोऽपि। अजघन्यानुत्कृष्टगुणशीतोऽप्येवं नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। जघन्य

प चउत्थानपतित हुवे स्वस्थानें। एम मउयगरुयलहुयविभा । एम मृदुगुरुलघुना पण कहिवा । जघन्यगुणसीयाणं भंते परमाणुपोग्गलाणं पृच्छा
गोयमा। जघन्यगुणशीत परमाणुपुद्गल शीतस्पर्शना प्र ... हे गो । अनंता पण । से केणट्ठेणं भंते प्र । अनंतापर्याय समाटे एम कह्यो। जघन्यग
णशीतपरमाणुपुद्गल। जघन्यगुणशीतनापरमाणुपुद्गल। जघन्यगुणशीतना परमाणुपुद्गलस्य। जघन्यगुणशीतपरमाणुपुद्गलने। द्रव्यार्थपणे प्रदेशार्थपणे तुल्य उगा
हनापणे तुल्य ठिइए चउट्ठाणवडिए। द्रव्य वर्णरसादिके प्रदेशार्थे सरीखा। अवगाहना में सरीखा स्थितिकरी चतुःस्थानपतित हुवे । सीयफासपज्जवेहिं
तुल्ल उसिणफासो न भवति। शीतस्पर्शना पर्यायें सरीखा उष्णस्पर्श न कहिवो। निद्धलुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। स्निग्धरूक्षना पर्यायकरी षट्स्था
नपतित हुवे। एम उक्कोसगुणसीएवि। एम उत्कृष्टनमाम कहिवा। अजहन्नमणुक्कोसगुणसीएवि एवं चेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। अजघन्यमनुत्कृष्ट

एवचेव नवर सठाणे छठाणवडिए । जहण्णगुणसीयाण असंखेज्जपदेसियाण पुच्छा, गोयमा ! अणंता से केणठेण भंते ? गोयमा ! जहण्णगुणसीते असंखेज्जपदेसिए जहण्णगुणसीतस्स असंखेज्जपदेसियस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए चउठाणवडिए ओगाहणठयाए चउठाणवडिए ठिइए चउठाणवडिए वण्णादिपज्जवेहि छठाणवडिए सीतफासपज्जवेहि तुल्ले णिद्धउसिणलुक्खफासपज्जवेहि छठाणवडिए । एवं उक्कोसगुण

एव भजनिमिमवपयवैः पट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षगुणशीतोपि अजघन्यानुत्कर्षगुणशीतो प्येव म्येव । अजघन्यामुत्कर्षगुणशीतो प्येव म्येव नवर स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । जघन्यगुणशीतानां संख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः । अथ केनाऽर्थेन भदन्त ? गौतम ! जघन्यगुणशीता संख्यातप्रदेशिको जघन्यगुणशीतस्य संख्यातप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्य प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितो ऽवगाहनार्थतया चतुः

स्थानपतित । वर्णादिभि षट्स्थानपतित हुवे । शीतफासपज्जवेहि तुल्ल उसिण निद्धलुक्खेहि छठाणवडिए । शीतस्पर्शे पर्याये सरीषा उष्ण स्निग्ध रुक्ष षट्स्थान पतित हुवे । एव उक्कोसगुणसीतेवि अजहण्णमणुक्कोसगुणसीतेवि एवचेव नवर सठाणे छठाणवडिए । इम उत्कृष्टगुणशीत पिण अजघन्य अनुत्कृष्टगुणशी तनैपिण इमहीज ए विशेष स्वस्थाने षट्स्थानपतित हुवे । जहण्णगुणसीयाण असंखेज्जपदेसियाण पुच्छा गोयमा । जघन्यगुणशीतना असंख्यातप्रदेशीया च वे ३ मो । अनंतपज्जवा प सेणठेणं भंते प भा । अनन्तापर्याय तसाटे इम कह्यो ए सो० । जहण्णगुणसीए असंखिज्जपदेसीएस्स । जघन्य गुणशीतना असंख्यातप्रदेशीयांधना । जहण्णगुणसीयस्स असंखिज्जपदेसियस्स एहवान । जघन्यगुणशीतना असंख्यातप्रदेशीयांधने । द्रव्यार्थपणे तुल्ले पदेसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । प्रदेशार्थपणा प्रदेशार्थे चतु स्थानपतित हुवे । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । अवगाहनार्थे चतु स्थानपतित हुवे । ठिइए चउट्ठाणवडि ए । स्थितिरो चतु स्थानपतित हुवे । वण्णादिपज्जवेहि छट्ठाणवडिए । वर्णादिपर्याये षट्स्थानपतित हुवे । सीयफासपज्जवेहि तुल्ल उसिण निद्धलुक्खफास पज्जवेहि छट्ठाणवडिए । शीतस्पर्श पर्याये सरीषा उष्ण स्निग्ध रुक्ष स्पर्शे पर्याये षट्स्थानपतित हुवे । एव उक्कोसगुणसीएवि । इम उत्कृष्टगुणशीत पिण ।

सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं जाव दसपदेसिए नवरं ओगाहणट्ठयाए पएसपरिवुड्ढी कायव्वा जाव दसपदेसियस्स नवपदेसा वुड्ढिज्जंति। जहन्नगुणसीयाणं संखेज्जपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणट्ठेणं? गोयमा! जहन्नगुणसीते संखेज्जपदेसिए जहन्नगुणसीयस्स संखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए दुट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए वन्नादीहिं छट्ठाणवडिए सीयफासपज्जवेहिं तुल्ले उसिणनिद्धलुक्खेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणसीतेवि अजहन्नमणुक्कोसगुणसीतेवि।

स्थानपतिताः। एवमुत्कर्षगुणशीतोऽपि। अजघन्यानुत्कर्षगुणशीतोऽप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। एवं यावद्दशप्रदेशिको नवरं अवगाहनार्थतया प्रदेशपरिवृद्धिः कर्त्तव्या यावद्दशप्रदेशिकस्य नवप्रदेशाः परिवर्ध्यन्ते। जघन्यगुणशीतानां संख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा गौतम! अनन्ताः तत्केनार्थेन प्रश्न। एवमुच्यते? गौतम! जघन्यगुणशीतः संख्यातप्रदेशिको जघन्यगुणशीतस्य संख्यातप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया द्विस्थानपतितः अवगाहनार्थतया द्विस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णादिभिः षट्स्थानपतितः शीतस्पर्शपर्यवैः तु

[illegible] हीन होता है। [illegible] स्वस्थान में षट्स्थानपतित होते हैं। इसी प्रकार यावत् दशप्रदेशी स्कन्ध तक कहना चाहिए। विशेष यह है कि अवगाहना की अपेक्षा से प्रदेशों की वृद्धि करनी चाहिए। यावत् दशप्रदेशी स्कन्ध के नौ प्रदेश बढ़ाये जाते हैं। [illegible] जघन्यगुणशीत संख्यातप्रदेशी स्कन्धों के पर्यायों की पृच्छा। गौतम! अनन्त [illegible]। भगवन्! ऐसा किस कारण से कहा जाता है? गौतम! जघन्यगुणशीत संख्यातप्रदेशी स्कन्ध [illegible] जघन्यगुणशीत संख्यातप्रदेशी [illegible] द्रव्य की अपेक्षा से तुल्य है। प्रदेशों की अपेक्षा से द्विस्थानपतित होता है। अवगाहना की अपेक्षा से द्विस्थानपतित होता है। स्थिति की अपेक्षा से चतुःस्थानपतित होता है। वर्णादि की अपेक्षा से षट्स्थानपतित होता है। शीतस्पर्श के पर्यायों की अपेक्षा से [illegible]

णयवडिए ठिइए चउठाणवडिए वण्णादिअठफासपज्जवेहिं छठाणवडिए। जहन्नोगाहणगाणं भंते! पोग्गलाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणठेणं? गोयमा! जहन्नोगाहणए पोग्गले जहन्नोगाहणगस्स पोग्गलस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए छठाणवडिए ओगाहणठयाए तुल्ले ठिइए चउठाणवडिए वण्णादिउवरिल्लफासेहिय छठाणवडिए। उक्कोसोगाहणए वि एवं चेव नवरं ठिइए तुल्ले। अजहन्नमणुक्कोसोगाहणगाणं भंते! पोग्गलाणं पुच्छा, गो०! अणंता। से केणठेणं? गो०! अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए पोग्गले अज

स्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितोऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णाद्यष्टस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः। अथ जघन्यावगाहनकानां भदन्त! पुद्गलानां पृच्छा गौतम! अनन्ताः। अथ केनार्थेन? गौतम! जघन्यावगाहनकपुद्गलो जघन्याऽवगाहनकस्य पुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितोऽवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णादिप्रथमस्पर्शैश्च षट्स्थानपतितः। उत्कृष्टावगाहनकोऽप्येवमेव नवरं स्थित्या तुल्यः। अजघन्यानुत्कृष्टावगाहनकानां भदन्त! पुद्गलानां पृच्छा गौतम! अनन्ताः। अ

न ऊठाणवडियापदमितवा छवम। [illegible] उत्कृष्टप्रदेशोत्कृष्टम। दव्वठयाए तई पएसठाए छठाणवडिए। द्रव्यार्थे सरीखा प्रदेशार्थे सरीखा चउठा
णवडित हवे। ओगाहणठयाए चउठाणवडिए। अवगाहनाए चउठाणपतित हवे। ठिइए चउठाणवडिए। स्थितिकरी चउठाणपतित हुवे। वर्णादि
४ स्पर्शमध्ये पहिले छठाणवडिए। वर्णादि पाठमध्ये पर्यायें छठाणपतित हवे। जघन्यावगाहनाए पृच्छा गोयमा। जघन्य अवगाहनाना पुद्गला
अनंता हे गौतम। केणठेणं गोयमा। [illegible] तेमांटे एम हे गौतम। जघन्यावगाहनाए पुद्गल जघन्यावगाहनावन्त पुद्गलनी। जघन्य
अवगाहनावन्त जघन्य अवगाहनानो पुद्गलने। दव्वठयाए तई पएसठाए छठाणवडिए। द्रव्यार्थे सरीखा प्रदेशार्थे छठाणपतित हवे। उग्गाहणठयाए
तुल्ले ठिइए चउठाणवडिए। अवगाहनार्थे सरीखा स्थितिकरी चउठाणपतित हवे। वण्णादि उवरिल्लफासेहिय छठाणवडिए। वर्णादिकपरिल्लेस्पर्शकरी छ

णवडिए । उक्कोसपदेसियाणं भंते ! खंधाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! उक्कोसपएसिए खंधे उक्कोसपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णादिअट्ठफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । अजहण्णमणुक्कोसपदेसियाणं भंते ! खंधाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसपदेसिए खंधे अजहण्णमणुक्कोसपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठा

वर्णगन्धरसोपरिस्पर्श चतुःस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतित । उत्कृष्टप्रदेशिकानां भदन्त ! स्कन्धानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः । अथ केनार्थेन ? गौतम ! उत्कृष्टप्रदेशिकः स्कन्धः उत्कृष्टप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यः अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णादिअष्टस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । अजघन्यानुत्कृष्टप्रदेशिकानां भदन्त ! स्कन्धानां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! अजघन्यानुत्कृष्टप्रदेशिकः स्कन्धः अजघन्यानुत्कृष्टप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तु

वर्णादि चतुःस्पर्शपर्यायैः छट्ठाणवडिए । वर्णगंधरस स्पर्शना ४ स्पर्शना पर्यायें करी छट्ठाणपतित हवे । उक्कोसपएसीयाणं भंते खंधाणं पुच्छा गोयमा । उत्कृष्टप्रदेशीया स्कंधने केटला पर्याय छे गौतम । अणंताए सेकेणट्ठेणं भंते ए गोयमा । अनन्ता पर्याय तेना कहे छे ते कह्या छे गौतम । उक्कोसपएसिए खंधे उक्कोसपएसियस्स खंधस्स । उत्कृष्ट प्रदेशीयो उत्कृष्ट प्रदेशीयाने । दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । द्रव्यार्थे प्रदेशार्थे सरीखा । अवगाहनार्थे चतुःस्थानपतित हुवे । ठिइए चउट्ठाणवडिए । स्थितिकरी चतुःस्थानपतित हवे । वण्णादि अट्ठफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । वर्णादि ८ स्पर्शने पर्यायें छट्ठाणपतित हवे । अजहण्णमणुक्कोसपएसीयाणं भंते खंधाणं पुच्छा गोयमा । अजघन्य अनुत्कृष्टप्रदेशीया केटला पर्याय कह्या छे भगवंत गौतम । अणंताए सेकेणट्ठेणं गोयमा । अनन्तापर्याय तेना छे गौतम । अजहण्णमणुक्कोसपएसिए खंधे । अजघन्य अनुत्कृष्टप्रदेशीया स्कंध ।

णकालएवि अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं जहा कालवन्नपज्जवाणं वत्तव्वया भणिया तहा सेसाणवि वन्नगंधरसफासाणं वत्तव्वया भाणियव्वा, जाव अजहन्नमणुक्कोसलुक्खे सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । सेत्तं रूविअजीवपज्जवा, सेत्तं अजीवपज्जवा । इति पन्नवणाए विसेसपय सम्मत्तं ॥ ५ ॥ बारसचउवीसाइ सतरयएगसमयकत्तोय उव्वट्टणपरभवियाउयअट्ठेवआग

नपतितः । एवं यथा कालवर्णपर्यवाणां वक्तव्यता भणिता तथैव शेषाणामपि वर्णगन्धरसस्पर्शानां वक्तव्यता भणितव्या यावदजघन्यानुत्कृष्टरूक्षः स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । समाप्ताः रूप्यजीवपर्यवाः समाप्ता अजीवपर्यवाः ॥ इति श्रीमहोपाध्याय रामचन्द्रगणिविनेयेन नामच चन्द्रेण विरचित श्रीप्रज्ञापनानुवादे पञ्चमं विशेषपदं समाप्तम् ॥ ५ ॥ द्वादश च चतुर्विंशतिः सान्तरमेकसमये कुतश्च । उद्वर्त

उत्कृष्टगुणे छट्ठाणवडिए । मध्यगुणमाहें पण स्थानपतित हवे । ठिइए चउट्ठाणवडिए । स्थितिवडे पण स्थानपतित हवे । कालवन्नपज्जवेहिं तवे वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । कालवर्ण पर्याये करीने जावता । वर्णगन्धरस स्पर्शन पर्यायवडे स्थानपतित हवे । सेतवहुय र मावमा । तमाटे इम हे गौतम । जघन्यगुणकालानाएं पन्नवणाए । मध्यतापन्नवा य एव उक्कोसगुणकालएवि । जघन्य गुणकालना पुद्गले । घन तापर्याय कह्या इम उत्कृष्टगुणकालना पिण । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । मध्यम अनुत्कृष्ट गुणकालना पिण इम होय ० विशेष स्वस्थाने स्थानपतित हुवे । एम जहा कालवर्णपज्जवाण वत्तव्वया भणिया । इम जघन्य कालवर्णना पर्यायनी वक्तव्यता कही । त हा सेसाणवि वन्नगंधरसफासाणं वत्तव्वयाभा । तिम शेष जावता वर्णगन्धरसस्पर्शनी वक्तव्यता कहवी । जाव अजहन्नमणुक्कोसलुक्खे सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । मध्यम अनुत्कृष्ट रूक्ष स्वस्थाने स्थानपतित हुवे । सेत्तं रूवी अजीवपज्जवा । सेत्तं अजीवपज्जवा । इति पन्नवणाए पंचमपदं सम्मत्त । इहां अजीवपर्याय मति अनुसारे कहिया । इति रूपी अजीवना पर्याय कह्या अजीवना अनन्ता पंचमें पांचमा पद पर्याय विशेष समाप्त थया । ५ । बारसच